



کشف (الباری عمانی صمیع (البخاری

كتابالعلم (دوم)

تاليف ← صدروفاق المدارس مولانا سليم الله خان مد ظله العالى شخ الحديث جامعه فاروقيه كراجى ترقيب و تحقيق ← مولانا نور البشرصاحب استاذ جامعه فاروته كراجى ترجيه ← مولانا شاكافيصل فاضل وفاق المدارس، امداد العلوم

خصوصات

٠ داحاديثو تخريج

- 🕝 د تعلیقات بخاری تخریج کول
- د اسماء الرجال مختصر تعارف
- د الاول الفاتو لغوى صرفى او نحوى حل
- 🕲 ماقبل باب سره د ربط په باره کښې پوره نحفيق
- 🕤 د شرحي د هرې خبرې په حاشيه کښې حواله ورکول
- ۵ د ترجمهٔ الباب مقصد په بیانولو کښې پوره تحقیق
- ن د مختلفو مذاهبو تحقیقی بیان او بیا د مذهب حنفی ترجیح
- ن دحدیث اطراف بیانول چه په بخاری کښی داحدیث په کوم کوم ځائی کښې دې .

خورونکی فیصل کتب خانه محله جنګی پیښور

يوماكل:-

د کنات ټول هغوق د مصف او نانر بره محفوظ دی

دكنات يوم كشف البارى مماني صعيع البغارى

طد: کتاب (فورم)

شاح: صدروقاق الهدارس شيخ الحديث مولاتا سليم الله عان مد قله العالى

قرقيب وتعقيق : مولانا نور البشر صاحب بارك اشمل عبرة

ينتو مترجم: مولانا شاة فيصل فاضل امداد انعنوم ووفاق المدارس إيدا _اسلاميات وعربي بيينو ريونيورستي

د کنف الباري د پخو اور فارسځ د نرهمې د حقوقو په حقله وصاحت

دا خبره دې پددهار کښې وي چې فيصل کتب خانه د صدر وفاق العدارس اغربيه مهنمه د معه فاروفيه نسخ الحديث مولات سليه الله خان مد ظله العداي خفه د کشف الباري بښتو او فارس الح کښې د بر حمو حقوق ترلاسه کړل اود حقوقو معاوضه نې ورته ورکړه ددې خفه روسته هيڅ خانه د کشف الباري پښتو او فارسي د ترجمه کولو او چهاپ کولو اجازت نشته او د هر يو خلد رحستريشن نې هم د حکومت پاکستان سره شوې دي

د ملاويدو پتي. د فيصل ڪتب خانه پيسور څخه علاوه

→ شديه كتب خانه اكوره ختك

معلميه كتب خانه اكوره خبك ٩٢٣۶٣٠٥٩٠ ·

مكتبه رشيديه كونته ۸۱۲۶۶۲۲۶۳

مكتبه عُثمانية كأنسى رود كونته ٢٠١٢٧٣٧٠٣٠

مكتبه يوسفيه كانسى رود كوئته ٥٣٢١٠٨٢٨٩٣٠

🗝 راشد کتب خانه چمن ۲۲۰۰۳۸۹۶۳۵۳۰

→مكتبه عمريه تاج مير روډ چمن بلوچستان

→مكتبه علوم اسلاميه تاج مير رود چمن بلوچستان ٩٨٦٩٦

→مكتبه حقانيه جمن ٣٣٣٧٧٥٢٢١٩٠

◄ صداقت كتب خانه قندهار افغانستان ١ ٧٨٧٧ ٢٣٦١٠

مكتبة رحمانيه قندهار افغانستان ۱۸۹۰۷۲۰۲۸۱

→مكتبه عبدالحي قندهار افغانستان ٧٠٠٠٨٢٤٣٣٤.

◄ اسداله كتب خانه فندهار افغانستان ٧٠٧٤٧٧٦٢٧.

→مكتبة غفاريه قندهار افغانسيان ٧٠٠٣٤١٧٤٩

۲۷۷۲۲۱۰۷۰۹ مكتبة رشيديه فندهار افغانستان ۲۰۷۹۹۱۹۰۹ ميد.

م كتبه العدس قندهار افغانستان ٥٩ م ١٩٤٨ · ٠٧٠

◄ فدرت كتب خانه كابل افغانسيان ٣٠٧٩٩٢١٩٧٠٠
 ◄عيد المحيد كتب خانه خلال آناد ٢٠٨١٩٧٧٤٩

عدالفجيد لتنافقه جرن ياد من كنب مانه خوست افعانسان

للالكتب فانه خوست افغانسنان

اللهمي كتب خانه خوست افغانستان ٧٩٩٣١٠٢٢٠

<u>"</u> فهرست مضامین

| صفحه | بره مضمون | شب |
|-------------------|---|------------|
| ** | . د مرتب | عرض |
| | بأب:عظةالامـأمرالنسـأءوتعليمهن | |
| 44 | مة الباب مقصد | |
| ۳. | الحبيث | |
| ۳٠ | لميمان بن حرب | _ |
| ۳. | · | ∸ ⊙ |
| ۲. | · - | ⊙اي |
| ۳٠ | طاء | ⊙ ع |
| 44 | سابت | |
| 44 | :قالاشهدعلىالنيى ﷺ اوقال عطاء:اشهدعلى ابن عباس: | |
| 44 | ان رسول الله تراجع ومعه بلال فظن انه لويسم النساء: | |
| ٣٢ | : فوعظهن وامرهن بالصدقة: | |
| 44 | : فجلعت المراة تلقى القرط والخــاً تعديلال يأخِذ فس طرف ثوبه: | |
| 74 | خه د خاوند د اجآزت نه بغیر په خپل مال کښې تصرف کولې شي؟ | ایان |
| T7 : 街し | وقال اسماعيل عن ايوب عن عطاءوقال عن ابن عباس: اشحد على النبر | |
| 47 | . کوره تعلیق تخریج: | |
| ۳7 | . كوره تعليق مقصد | د مد |
| , , | . 0 . 0 | |
| T 7 | ٣٠- بأب:الحرص على الحديث | |
| , . T 7 | ى باب سرە مناسبت ۱۱ ا | |
| rv | يند د ترجمة الباب - شات ما المالام مات | |
| rv | دیث لغوی.عرفی او اصطلاحی معنی ۱۳ میرید | |
| "V | ا ل الحديث ال | |
| ~^ ^^ | عبدالعزيز بن عبدالله | ω |
| 4 | به | <u>سب</u> |
| · ·4 | سليمان | - |
| Y | اعمرو بن ابی عمرو ند | |
| , Y | سعيد بن ابى سعيد المقبرى | |
| |)حضرت ابوهريره كالفئز | ③ |

۵٩

(ج)هشاه سن عروه

| صفحه | شميره مضمون |
|------------------------|--|
| ۵٩ | <u>م</u> عروة |
| 7. | ق عبدانة بن عمر بن العاص الماشي . و عبدانة بن عمر بن العاص الماشي . |
| 7. | فالده |
| نينبض | وله معتارسول الله المُشْرِيقول: ان الله لايقبض العلو انتزاعاً ينتزعه من العب دولكم |
| 7. 71 | العلم يقبض العلماء: |
| 71 | د علم د اوچتولو به څمصورت وی؟ د سال او د از د د د د د د د د د د د د د د د د د |
| 7 * | فوقه حتى اذالم يبق عالما اتخذالناس رؤوساجها لافا فتوابغير علم فضلوا واضنوا |
| 74 | رجال الحديث |
| 7 7 | ⊕فربری |
| 74 | ⊙ عباس |
| 74 | ⊕نتيبه |
| 78 | ⊙جرير |
| | وهشام ودا ودا ودا دوس کا دوس کا دوستان |
| 75 | و اللهِ المِلْمُ اللهِ المِلْمُ اللهِ المِلْمُ اللهِ المُلْمُ اللهِ المِلْمُ اللهِ المُلْمُ اللهِ المِلْمُ اللهِ المُلْمُ اللهِ المُلْمُ اللهِ المُلْمُ اللهِ اللهِ اللهِ المُلْمُ اللهِ اللهِ اللهِ المُلْمُ اللهِ اللهِ المُلْمُ اللهِ اللهِ اللهِ المُلْمُ اللهِ المَالِمُلْمُلْمُ اللْ |
| 7 * | تولم: "على حدة" اي على انفراد: |
| 7# | مخكتبي باب سره مناسبت: |
| 74 | مقصد د ترجمة الباب |
| 75 | د هل سره ترجمه منعقد كولو وجه |
| 70 | ر جال الحديث . م |
| 70 | <u>ن</u> ادم |
| 70 | ⊕شعبه داد اد |
| 77 | ©ابن الاصبهاني حاسال نکال |
| 77 | ⊙ابوصالح ذكوان |
| _ا عدهن يوما | وحضرت ابوسعید خدری الگائی فوله: قالت النساء للنبی تالیل: غلبنا علیك الرجال فاجعل لنا یومامی نفسك فوله: |
| 77 | المالية |
| ن الغار: 17 د د | قوله فكان فيماقيال لهن: مامنكن امراة تقدم ثلاثة من ولدها الأكان ها عجما بام |
| 7 Y 7 V | قوله فقالت امراة: واتنين ؟فقال : واثنين : |
| 7 A | دلته د امرأة نه څوک مراد ده؟ |
| 7. | فانده |
| | د حجاب جوړلو دپاره يو شرط عدم بلوغت دې |

| صفحه | مضمون | شميره |
|--------------------|--|--------------------|
| :74 | | تنسه |
| (44 | جوريدلو دويم شرط | د ححاب د |
| ٧. | · 1 - • | رجال الحدي |
| V . | | صعمدبـ صعمدبـ |
| ٧. | <i>y</i> .0 | ⊙ ∂غندر |
| V. | | <u>،</u> |
| ٠Ý٠ | حمن بن الاصبهاني | صعدالر. صعدالر. |
| · v . | | ©ذکوان |
| ٧. | ابوسعید خدری نگافت | |
| ٧. | | ابوحاز. |
| ٧١ | ······································ | فائده |
| ٧١ | ا بو هريره ملائد | ⊙حضرت |
| ٧١ | دواړو طرقو د ذکر کولو مقصد: | د مذکوره |
| ٧١ | | تنبيه |
| | ٣٠. باب: مَنْ سَمِعَشَيْثُ افَرَاجَعَحَتَّى يَعْرِفَهُ | |
| ٧٢ | بسره مناسبت | |
| ٧٧ | رجمة الباب: | |
| ٧٢ | - | رجال الحد |
| ٧٢ | بن ابی مریم: | _ |
| ٧۴ | | ⊙نافعبر |
| ۷۵ | | ⊕ابن ابي |
| ٧۵ | = | ⊙عانشه |
| ٧۵ | عائشة زوج النبي ظ衛 كانت لاتىمىرشىئالا تعرفه الاراجعت فيه حتى تعرفه: | |
| الله(فيوف ،: ۷۲ | ن النبى نَايِّمُ قَالَ:من حوسب عذب،قالت عائشة:فقلت :اوليس يقول ا سابايـيزا)?قالت:فقال:ائماذلكالعرض،ولكن من نوقش الحساب يملك | مولد : وارد |
| ¥ / | كى يېيىزە)، ئاكىنىڭ ئالىرى ئالىرى ئالىلىكى ئالىرى ئالىرى ئالىرى ئالىرى ئالىرى ئالىرى ئالىرى ئالىرى ئالىرى ئالى 77 - بال-يالىرى ئالىرى ئالى ئالىرى ئالىرى ئا | يحسب |
| ٧٧ | اب سره مناسبت | دماقبلبا |
| V7 | بباب مقصد | د ترجمقال |
| VV | بيث | رجال الت |
| VV | نەبن يوس ف | •عبدالأ |
| V¶ | | ⊙الليث |

| صفحه | شميره مضمون |
|---------------------------------------|---|
| V4 | <i>-</i> سعید |
| V4 | ⊙ابوشريح كالثاثة |
| ۸٠ | ولم انەقباللەمرىن سعيد. وھويبعث البعوث الى مكة: |
| ۸٠ , | حضرت ابوشریح دنصیحت تاریخی پس منظر مصارت ا |
| | وله. انذن لي ايها الامير احدثك قولا قـأمرية النبي ﴿إِلَيْهِ الغرامِي يَوْمِ الفتح، معته اذَ ** - المصادرة المحادثة على المصادرة المحادثة الفراية النبي الإلامات المحادثة المحادثة المحادثة المحادثة المحادثة |
| ۸۳ | نابی وابعر ته عینـای حین تکلم به: مرابع در الاسلام میارد و تالیم |
| ۸۴ ۸۴ | وله:حمالله:واثنيعليه:ثيرقال: معانده المادم ماليد الآتمام المالية |
| ۸۴ | وله، فلايحل لامرءيومن بالله واليومالآخران يسفك بهادما: كفار دفروع مخاطب دى او كه نه؟ |
| ۸.5 | تقار دفروغ محاصيادي و تمايد: :شوافع په نزد دري اقوال دي |
| ۸۲ | بصوتع په نود درې خون دی. یا حدیث الباب د کفارو په مخاطب بالفروع نه کیدوباندې دلیل کېدې شي؟ |
| ۸۲ | ي مديد په چاه مدرري ده دې په مروع د ميدرې منې مين ميدې مني. بانده |
| ۸۲ | نوله:ان ينفك بهادما: |
| ۸۶ | بدره مكه كبسي دقتال حكم |
| ۸¥ | به حرم مکه کښي دقتل او دقصاص حکم |
| ۹. | يواشكال او دهغي جواب |
| ۹. | نوله ولايعضد مها شجرة: |
| ۹. | دحرم مکه د وونو بوټو کټ کولو حکم |
| ۹۱ : ۹۱ | غوله: فيأن احد توخص لقتال دسول الله تغيره فيها فقولوا: ان الله قداذن لرسوله |
| 7 ' 4 Y | مكەمكرمە عنوة فتح شوي دە يا صلحًا؟ - مىدىدىدىد |
| 4 4 | نوله: وانمااذن لي قبهاساعة من نهار: قبل شهران ميريال كيم ميراناد |
| 17 | قولە: ثىرعـادت-رمتــااليومـڪـــرمتــا بالامـــــ: قولە: وليبلغ/الشــاھد/الغــانب: |
| 14 | |
| \ T | قولمەن قىيل لايى شريع: ماقال عمرو؟: - م - يالاردار داردارلىلىدارلىلىدى ئالىلىدى ئالىلىدى ئالىلىدى ئالىلىدى ئالىلىدى ئالىلىدى ئالىلىدى ئالىلىدى ئال |
| · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | قولم: قبال: انا اعلم منك يا ابا شريع: معرف من الله الله الله الله الله الله الله الل |
| ۴ | قوله: لا يعيذ عاصيًا ولا فارًا بدم ولا فارًا بغربة: |
| ۰, ا | رجال الحديث |
| ۵ | عبدالله بن عبدالوهاب |
| ٥ | ⊙حماد |
| ۵ | <u>⊚</u> ايوب |
| | ⊙معبد |

| صفحه | شميره مضمون |
|-------|---|
| 90 | (۱۳۵۵ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ - ۱۳۵۰ |
| 90 | ن بن بني با برد () حضرت ابو بکره المائن |
| 90 | ب سرت بوب ر ماد دحدیث دسندمتعلق یو تنبیه |
| 47 | ٠ نوله ذکرالنبی ﷺ قال: |
| 47 | قوله:الالبالمالسالهامنكمالغائب: |
| 4 7 | قوله: وكان تحمد يقول: صدق رسول الله نكل كان ذلك: |
| 97 | دمحمد بن سيرين مُشَرِّحُ د قول مختلف توجيهات |
| ٩٨ | قوله: الاهل بلغت؟مرتين: |
| 99 | نوټ |
| | ٣٨ باب: _إثْيِرِمَنْ كَذَبَ عَلَى النَّبِي صلى الله عليه وسلم |
| 99 | د بابسابق سره مناسبت . |
| 99 | مقصد د ترجمة الباب |
| 4 4 | رجال الحديث |
| 99 | 🕥 على بن الجعد : |
| 99 | ⊕شعبه |
| 99 | 🕜 منصور : |
| ١ | @ربعىبنحراش: |
| ١.٢ | حضرت على بن ابى طالب تلائد |
| ۱.۵ | قولە:قالالنبى ﷺ:لاتكذبواعلى،فانەمنكذبوعلى فليلجالنـار: |
| ١. ٧ | آيا د شريعت دتائيد د پاره د حديث وضع جائز ده؟ |
| ۸ ۰ ۸ | قول ه: فليلج النار: |
| ١.٩ | رجال الحديث |
| ١ - ٩ | آبوالولید : |
| ١١. | ⊕شعبه: |
| ١١. | ⊕جامع بن شداد |
| ٠,١١ | @عامرين عبدالله بن الزبير |
| 117 | عبدالله بن الزبير الماشق |
| ۱۵ | ۞حضرتزبير بن العوام تأثيث |
| ٠ ١ ٩ | اسنادي لطائف |
| ر: ۱۹ | قوله: قال: قلت للزبير: إنب لااسمعك تحدث عن رسول الله كالم كالمحدث فلان وفلار. |
| 114 | نول ه:قال:اماانی لمافارقه: |

آیا د مذکوره حدیث مصداق جوړیدو دپاره حضورپاک ﷺ په خپل اصلی شکل کې لیدل

180

دخوب قسمونه

ضروری دی؟

| . 5.16 | |
|------------|---|
| لتأب العدم | المِنْ البَارِي المِنْ البَارِي المِنْ البَارِي المِنْ البَارِي المِنْ البَارِي المِنْ البَارِي المِنْ المِنْ |
| صفحه | شميره مضمون |
| 147 | خوب په حالت کښي دحضور ناځ ارشاد حجت شرعيه دې که نه ؟ |
| ١٣٨٠ | يًا په خوب کښې دحضوراکرم کالله زيارت کولو والابد صحابي وي؟ |
| ١٣٨ | حضوراكرم كالم بها بداري كنبي زيارت ممكن دي كهنه؟ |
| 14. | يًا شيطًان پِه خُوبُ كښې دالله تعالى په صورت كښې متشكل كيدوسره راتلې شي؟ |
| 14. | نوقه من كذب على متّعبدافليتبوا مقعدة من النبار! |
| 141 | من کذب علی متعمدا تواتر |
| 143 | . و اضع حدیث حکم |
| 147 | حضور اكرم نائم په احاديثو كښې دروغ ونيلو والاتوبه به قبوله وي كه نه؟ |
| 147 | بانده |
| 141 | فانده |
| | ٣٩ باب:كتابةالعلم |
| 140 | د سابقه باب سر د مناسبت |
| 147 | مقصد ترجمة الباب |
| 147 | د حدیثو کتابت |
| 149 | رجال الحديث |
| 149 | · محمد بن سلام |
| 149 | @وكيع |
| 104 | ت تی ⊕سفیان |
| 100 | صطرف صطرف |
| 107 | ©الشُعبى @الشُعبى |
| 101 | ت ⊙ابوجعیفه |
| ۱۵۸ | @حضرت على رض، @حضرت على رض، |
| ۱۵۸ | قوله: ه ل عندگمگتاب؟: |
| 109 | قوله: قال: لاالاكتاب الله او فه ما عطيه رجل مسلم او ما في هذه الصعيفة: |
| 109 | آيا د فهم نه مراد څه ليکونکي څيز دې ؟ |
| ١7. | توله:اومافي هذهالصحيفة: توله:اومافي هذهالصحيفة: |
| .17 • | قوله: قال قلت فما في هذه الصعيفة؟: |

17.

17.

17.

قوله: قال العقل:

فوله ولايقتل مسلم بكافر:

آیا یو مسلمان به د کافر بدله کښې قصاصا قتل کولې شي که نه؟

قوله: وفكاك الاسير:

| دانمه ثلاثه دليل جواب دانمه ثلاثه دليل جواب دانمه ثلاثه دليل جواب داخافر دلاتل داخافر دلاتل داخافر دلاتل داخافر دلاتل داخال الضيث داشكالات او دهغي جوابونه داخل الضيث داخل الضيث داخل الضيث داخل الضيث داخل الخمية داخل الخمية داخل دخي خوابونه داخل دخي خوابونه داخل دخي داخل المحابة المحاب | صفحه | مضمون | شميره |
|---|------|---|----------------------------------|
| مذکوره جوابباندې اشکال او د هغې جواب مذکوره جوابباندې اشکال او د هغې جواب د د د د د د د د د د د د د د د د د د د | | <u> </u> | - |
| داخافو دلاتل دهني جوابونه داخل المدائل المدين و دهني جوابونه داخل المدين دهني جوابونه داخل المدين داخل داخل المدين داخل داخل داخل داخل داخل داخل داخل داخل | | | |
| جه اشكالات آو دهغي جوابونه حوالوا العديد حوالوا العرب المالة المنافق ا | | | |
| رجال العديث رجال العديث رجال العديث () ابونعيم الفضل بن دكين () أبونعيم الفضل بن دكين () أبونعيم الفضل بن دكين () يعيى () إبوسلمة () ويحيى () إبوسلمة () وحضرت ابوهريره الماشي المنت عام فتع مكة بقتيل منه قتلوه: () حضرت ابوهريره الماشي ليث عام فتع مكة بقتيل منه قتلوه: () حضرت ابوهريره الماشي حلى الله عليه وسلم فريا سره؟ () حمله: فقال: ان الله حيس عن مكة القتل اوالفيل، شك ابوعبد الله: () حمله: فقال: ان الله حيس عن مكة القتل اوالفيل، شك ابوعبد الله: () حمله كه چرى درواياتو په لفظ كنيى غلطى راشي نو ده هني تصحيح كول پكار دي كنه؛ () حمله كي د علماء دوه مذاهب دي | | | |
| ۱۸۷۸ ۱۸۷۸ ۱۸۷۸ ۱۸۷۸ ۱۸۷۸ ۱۸۷۸ ۱۸۷۸ ۱۸۷۸ ۱۸۷۸ ۱۸۷۸ ۱۸۵۸ | | ت او دهغی جوابونه .^ | حداشخالار دادا العدد |
| ۱۸۷۸ واسیان ۱۸۷۸ ۱۸۲۰ ۱۸۲۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰ ۱۸۰۰< | | | |
| الده المحلمة المحلمة المحلمة المحلمة المحلمة المحلمة المحلمة المحلمة | | م الغصل بن د كين | |
| بوسلمة ابوسلمة ابوسلمة حضرت ابوهريره الشيئة وقهد ال خزاعة قتلورجلاه من بني ليث عام فتح مكة بقتيل منه قتلوة: المخزاعة بدلاسو نو د قتل شوي سري د نوم تحقيق د قبيله خزاعه پدلاسو نو د قتل شوي سري د نوم تحقيق د مقتول تعلق د بنو ليث سره و و او كه بنو هذيل سره؟ المه نقال د بني صلى الله عليه وسلم ، فركب راحلته فخطب: المه نقال : ان الله عبس عن مكة القتل اوالفيل ، شك ابوعبد الله: المه د بي الله عبس عن مكة القتل اوالفيل ، شك ابوعبد الله: المه بي على د وه مذا هب دي | | | |
| ك بوسلمة ك بوسلمة ك حضرت ابوهريره التنويز تولهد ال خزاعة قتلورجلاه من بني ليث عام فتحمكة بقتيل منه قتلوة: ك المداه خزاعه بدلاسو نو د قتل شوي سرى د نوم تحقيق دمقتو ل تعلق د بنو ليث سره وو او كه بنو هذيل سره؟ ك المداه خزاعه بدلال الله عليه وسلم، فركب راحلته فخطب: ك المداه خلف الله عليه وسلم، فركب راحلته فخطب: ك المداه خلف الله عليه وسلم، فركب راحلته فخطب: ك المداه خلف الله عليه وسلم، فركب راحلته فخطب: ك المداه خلف الله عليه وسلم، فركب راحلته فخطب: ك المداه خلف المداه على راشي نو د هغي تصحيح كول بكار دى كنه؛ ك المداه خوه مذاهب دى | | | _ |
| ك | | | _ |
| قوله: ان خزاعة قتلورجلامن بنی لیت عامقتع مکة بقتیل منه قتلوه: د قبیله خزاعه پدلاسو نو د قتل شوي سړی د نوم تحقیق د مقتول تعلق د بنو لیث سره وو او که بنو هذ یل سره؟ د تعارض لرې کولو راجع صورت قوله: فاخبربذلك النبی صلى الله عليه وسلم ، فرک الفیل ، شك ابوعبد الله: د فیل د حبس واقعه: | | | |
| د مقتول تعلق د بنو ليث سره وو او كه بنو هذيل سره؟ د مقتول تعلق د بنو ليث سره وو او كه بنو هذيل سره؟ د تعارض لري كولو راجع صورت و المهد في اخبر بذلك النبي صلى الله عليه و سلم ، فراحلته فخطب: و المهد فقال: ان الله حبس عن مكة القتل اوالفيل ، شك ابوعبد الله: د فيل د حبس واقعه: | | | |
| د مقتو ل تعلق د بنو ليث سره وو او كه بنو هذ يل سره؟ د تعارض لري كولو راجح صورت وله: في أخبر بذلك النبي صلى الله عليه وسلم ، فركب راحلته فخطب: وله: فقال: ان الله حبس عن مكة القتل اوالفيل ، شك ابوعب الله: د فيل د حبس واقعه | | | |
| د تعارض لري كولو راجع صورت قوله: فاخبر بذلك النبي صلى الله عليه وسلم، فركب راحلته فخطب: قوله: فقاخبر بذلك النبي صلى الله عليه وسلم، فركب راحلته فخطب: د فيل د حبس واقعه: | | | |
| قولمه: فاخبر بذلك النبي صلى الله عليه وسلم، فركب راحلته فغطب: قولمه: فقالي: را لله حبس عن مكة القتل اوالفيل، شك ابوعبد الله: د فيل د حبس واقعه: | | | |
| قوله: فقال: ان الله حبس عن مكة القتل اوالفيل، شك ابوعبد الله: د فيل د حبس واقعه | | | |
| دفيل دحبس واقعه: دفيل دحبس واقعه: ۸۷ که چرې د رواياتو په لفظ کښې غلطي راشي نو د هغې تصحيح کول پکار دی کنه؛ ۸۷ که چرته په کتاب کښې غلطي واقع شي نو هغه په خپل حال باند ي پرښودل پکار دی او کنه ۸۸ هغه تصويب پکار دی؟ ۸۹ قوله: وسلط عليه عرسول الله والنومنين: قوله: والا الله عليه و ساعة من نهار، الا ، وانها ساعتي هذه حرام: ۹۰ د حرم مکې د نبا تا ت او د اشجار و د قطع څه حکم دې؛ وله: ولا تلتقط ساقط الالينشه: ۹۰ وله: ولا تلتقط ساقط الالينشه: ۹۰ د حرم د لقطي حکم | | | |
| د حرم د لقطي حکم د در مداها الله الدخت و د هغې تصحيح کول پکار دی کنه؟ که چرې د رواياتو په لفظ کښې غلطی راشی نو د هغې تصحيح کول پکار دی کنه؟ که چرته په کتاب کښې غلطی واقع شی نو هغه په خپل حال باند ی پرښودل پکار دی او کنه هغه تصويب پکار دی؟ هغه تصويب پکار دی؟ فوله: وسلط عليه عرسول الله واليؤمنين: ۹۸ قوله: الابواني علت لی ساعة می نهار، الا، وانها ساعتی هذه حرام: وله: الابومن د نبا تا ت او د اشجار و د قطع څه حکم دې؟ ۹۸ د حرم د لقطي حکم د نبا تا تا و د اشجار و د قطع څه حکم دې؟ ۹۸ د حرم د لقطي حکم د نبا تا د اشجار و د قطع څه حکم د دې؟ ۱ د حرم د لقطي حکم د نبا تا د د مرم د لقطي حکم د نبا تا د د مرم د لقطي حکم د نبا تا د د مرم د لقطي حکم د نبا تا د د مرم د لقطي حکم د نبا تا د د مرم د لقطي حکم د نبا تا د د مرم د لقطي حکم د نبا تا د د مرم د لقطي حکم د نبا تا د د مرم د لقطي حکم د نبا تا د د مرم د لقطي حکم د نبا تا د د مرم د لقطي حکم د نبا تا د د مرم د لقطي حکم د نبا تا د د مرم د لقطي حکم د نبا تا د د د مرم د لقطي حکم د نبا تا د د د مرم د لقطي حکم د نبا تا د د د مرم د لقطي حکم د نبا تا تا د د د مرم د لقطي حکم د نبا تا تا د د د مرم د لقطي حکم د نبا تا تا د د د مرم د لقطي حکم د نبا تا تا د د د مرم د لقطي حکم د نبا تا تا د د د د د د د د د د د د د د د د | | | |
| په دې مسئله کې د علما | | يس واقعة: | د فیل د حا |
| که چرته په کتاب کښې علطی واقع شی تو هغه په خپل خال باند ی پرښودل پخار دی او کنه هغه تصویب پکار دی ؟ هغه: وسلط علیه مرسول الله والبؤ منین: وله: ولایه الایوانی ساعة من نهار، الا ، وانها ساعتی هذه حرام: وله: ولایتفتن: وله: ولا تلتقط ساقطها الالینشن: وله: ولا تلتقط ساقطها الالینشن: و حرم د لقطی حکم دی د خراه د المطبح حکم دی ؛ | | روايانو په لفظ کښي غلطي راسي نو د هغې تصحیح نول پخار دی کنه. پارې د ما او د د د او د ده پ | تەچرىد |
| هغه تصويب پكار دى؟ قوله: وسلط عليه مرسول الله والمؤمنين: • ٩ قوله: الا بوانما حلت لى ساعة من نهار، الا بوانها ساعتى هذه حرام: • ٩ قوله: لا يعضن: • ٥ حرم مكي د نبا تا ت او د اشجار و د قطع څه حكم دې؟ • ٩ قوله: ولا تلقط ساقط با الالمنشن: • ٩ د حرم د لقطي حكم • ١ ما المارات من د مناحت | | يله دي د علماء دوه مداهب دي ٢-١٠ ک من غلما ملقوث منده فريد خيا جال باندې بر شو دا يکار | پەدىمىت كىمتىن |
| قوله: وسلط عليه مرسول الله والمؤمنين: 9 . 9 . 6 . 9 . 9 . 9 . 9 . 4 . 5 . 6 . 6 . 9 . 9 . 9 . 9 . 9 . 9 | ٨٨ | ، کتاب کښې عملي واتع شي تو عقب په خپل دار بات ي پرېبودن پا در کا. دم ؟ | حەچرىد پە ھەمەتەرىي |
| فوله: الا اوانما حلت لى ساعة من نهار الا اوانها ساعتى هذا حرام: 9 . 9 . 9 . د حرم مكي د نبا تا ت او د اشجار و د قطع څه حكم دې؛ 9 . 10 . 10 . 11 . 12 . 13 . 14 . 15 . 16 . 16 . 17 . 18 . 19 . 19 . 10 . 10 . 11 . 12 . 13 . 14 . 15 . 16 . 17 . 18 . 18 . 18 . 19 . 10 . 10 . 11 . 11 . 12 . 13 . 14 . 15 . 16 . 16 . 17 . 18 . | ۸۹ | | |
| و هو او ای خدیاری سال مدین به و از در او به استان او می استان در او در استان | ۹. | د عليه هر رسول الله والتوصيص. في الرسال المام من عند أبيالا براند أن أعن الهذام: | جونه .وسلط قدار الدراة |
| هوله: لا يعضا: د حرم مكي د نبا تا ت او د اشجار و د قطع څه حكم دي؟ • وله: ولا تلتقط ساقط ها الالبنش : . • د حرم د لقطي حكم د اقط قالحات مداردك و ضاحت | | | |
| د حرم محي د بيانات و د اسجار و د قطع حد صحاري. • ه • د حرم د لقطي حکم د اقبار الدام مدارد کند و صاحت | • | ليلان: - العالم المالم العالم على العالم | نونه :لايعظ |
| هوله: ولا تلتقط سافطها الالبنشلان. د حرم د لقطی حکم د اقط قالحال می در مصاحب | | ر د نباتا تا تاو د استجار و د قطع خه حکم دي. از دراه دراه درود | د حرم مکو |
| د حرم د لقطی حکم د اقط قال حاص بیار د کی بی مضاحت | - | | |
| ۱ افظه الحاج بديا و ۲۰ به وضاحت | • | طیحکم | د حرم د لقا |
| 7.5 は には は は は は は は は は は いま いま かい かい は は かい かい は は は は は は は は は は は は | 44 | عاج پەبارە كېنىي يو وضاحت . قَتَلَ ـَفَهُمُ مِحْمُوالنَّظُورُ بِي إِمَّا أَنْ يُفِقِل، وَإِمَّا أَنْ يُفَادَأُهُلُ الْقَتِيلِ: | د لفطة الح - • • • • • • |

| اللواقوا جنعاني بيويت ومبروا | قوله: فَقَالَ رَجُلُ مِنْ قَرَيْشِ إِلَّا الْإِدْخِرِيارُ سُوكَ |
|---|---|
| | موله: فَقَالَ النَّبِي صلى الله عليه وسلم: إلاَّ الإذُخِرَ |
| دة حاصل و ٢٠٣ | . نونه: نون البيق صلى الله طلية وتسعد برد ترد يون |
| ۲۰۴ | آیا حضور اکرم نگل تدیداحکامو کسی داجتهاد |
| Y. F | د مانعينو دلائل: د مانعينو دلائل |
| Y.V | د مجوزينو دلائل: |
| ىهد نېنې ترق | د حضور اکرم نظا په احتهاد کښې او د امت په اجه |
| لأَم عَبْداللَّهُ أَي شَم عِكَتْبَلُّهُ قَالَ كَتَبَ | دمانعينو د دلائلو جوابونه قوله: قَالَ أَبُوعَبُدِ اللَّهِ يُقَالُ يُقَادُ بِالْقَافِ فَقِيلَ |
| روبي عبني مند النظامي و تنب بات النظام ا | |
| 7.9 | لَهُ هَذِهِ الْخُطْبَةَ: |
| Y. 4 | سبيه |
| Y. 4 | رجال الحديث |
| • | ① على بن عبدالله |
| 7.9 | ⊕سفيان: |
| ۲۱. | 🕝 عمرو : |
| 717 | تنبيه |
| ************************************** | ⊙وهبېن،منبه |
| Y\& | @اخيه |
| Y\Y | صحيفه همام بن منبه : |
| Y\Y | وحضرت ابوهريره المائيز |
| - أَحَدُّ أَكُثُرُ حَدِيثًا عَنْهُ مِنِي، إلاَّ مَا كَانَ مِنْ | قوله: مُامِنُ اصْحَابِ النّبِي صلى الله عليه وسلم |
| Y 1 Y | عَبْدِ اللَّهِ بْنِي عَمْرُو: |
| Y\Y | نوله فَإِنَّهُ كَانَ يَكْتُبُ وَلاَ أَكْتُبُ: |
| Y17 | اشكال اود هغي جواب |
| ************************************** | يوبل اشكال اودهغي جواب |
| Y\A | وله تَابَعَهُمُعُنُرُّعَنْ هَبَّامِعَنْ أَبِي هُرِيْرَةً: |
| | |

| صنحه | مضمون | شميره |
|------------|---|----------------------|
| Y1A | <u> </u> | رجال الحدي |
| 717 | | ()معمر |
| 271. | | ⊙همام |
| 441 | وابوهريره كالمثن | |
| 771 | ربان متابعت تخریج | |
| 771 | نابعت لره دذكر كولو مقصد | مذكورهما |
| 441 | ريف دترجمة الباب سره مطابقت | |
| *** | | رحال الحد |
| *** | بنسلیمان | • . • |
| 277 | | ں یہ سیای ⊙ابنوہ |
| 277 | | ب بن رد ©يونس |
| 774 | | ⊕يوس ⊙ابنشه |
| 774 | ياب. للدين عبدالله | |
| 774 | | ⊕عبيد. ⊙ابنء |
| 774 | آءُ النَّهُ وَمَا الله عليه والمعالم مَحَقِّقُهُ الْ | ال جن ال |
| 774 | بَّنَّ الشَّنَةَ بِالنَّبِي - صلى الله عليه وسلم - وَجُعُهُ قَالَ: وَنَى بِكِتَا إِذَّ كُتُّ الْكُمْ كِتَا بَالاَ تَضِلُوا لِعُدَّهُ»: | موجه. دارد |
| 440 | ومي پښت په احتج مستر کيت پار نفومو بهناه ۱۰۰۰ م تاريخ څه ليکل غوستل | وسته: «الد حمد اک |
| *** | م مهم حد ليد من عوصت مر الأنتو مخالفت ولي او كړو؟ | حضوراتر |
| 777 | سر رونو سات بنت و تود پاس : | مصرتء واقعدقاط |
| *** | على خلاف سيدنا حضرت ابوبكر صريق الأنتخ | استحقاق |
| 242 | ساعده كښې د ابوبكر الله په لاس باندې د خلافت بيعت | سقىفەن |
| 749 | | سعتعاه |
| 40. | على او حضرت زبير الماني المستنسب | دحضرت |
| 757 | ت على ظاهر شيرو مياشتو پورې بيعت نه وو کړې؟ | آیا ح ضرن |
| Y 0 0 | سعد بن عباده المائي بيعت | د حضرت |
| 707 709 | مسئله باندې د اهل سنت او د اهل تشيع منشاء د اختلاف | د خلافت |
| Y 29 | لباب سره مناسبت | د ترجمة ا |
| ,,,,, | 18th mar to 1 th | فانده |
| | ٠ ٤. باب: الْعِلْمِ وَالْعِظَةِ بِاللَّيْلِ | |
| 77. | باب سره مناسبت | تير شوې |
| 44. | لبابمقصد | دترجمةا |
| | | |

| 5.4.7 | | |
|------------|---|----------------------------|
| كتأب العلم | 1.6 | كشف الباري |
| صفحه | مضبون | شميره |
| 771 | | رجال الحديث رجال الحديث |
| 771 | | رجان الله ()صدقه |
| *** | | ⊙ابنعيينه ⊙ابنعيينه |
| *** | | ص بن حييد صمعمر |
| *** | | © عمرو ⊙عمرو |
| *** | فيد | ے سرر ⊙یحیی بن س |
| *** | - | ے۔ تنبیه |
| ** | | ⊙الزهري |
| *** | | صور رق |
| *** | | تنبيه |
| 775 | ć | ﴿ أم سلمه في ﴿ |
| ** | رقة اخبرنا ابن عيينة،عن معبر،عن الزهري،: | |
| ** | | ق وله: وعمروويحي |
| 777 | بى نۇرداتلىلە: | |
| ** | | قوله: فقال: . |
| 777 | _ _الليلةمن الفتن ومأذافتحمن الخزانن؟: | _ |
| *** | | قوله:ابقظوصوا |
| 479 | · · | فأنده |
| 779 | ة في الدنباعارية في الاخرة: | قوله:فربكاس |
| ۲۷. | | دلفظ كأسية ت |
| ۲۷. | ب مفهوم | د حديث شريف |
| ۲۷. | ب نەاخستلى شوي څە فاندې | د حدیث شریف |
| | ٤١ باب التَّمَرِفِي الْعِلْمِر | |
| ** | | دلفظ سمر تح |
| 441 | | تیر شوې باب |
| 441 | مقصد | د ترجمة الباب |
| W 1.7 W | | A |

رجال الحديث

٠ سعيد بن عفير ⊙الليث

@عبدالرحمن بن خالد

271 271 277

277

777

277

| كتاب العلم | \ 0 | كشف البارى |
|------------|-----|------------|
| | | |

| صفحه | مضمون | شميره |
|--------------|---|----------------------------|
| 777 | اب | ⊙ابنشه |
| 272 | | @سالم |
| 7 7 4 | بن سلیمان بن اب <i>ی حثمه</i> | ابوبکرہ |
| 444 | بن عمر الله: | @عبدالله |
| 774 | بنيارسول الله ترييم العشاء في آخر حيياته: | ق وله: صلی |
| 448 | سلمقام،فقال: | ئولە: فلمأ، |
| 440 | رأس مائةسنة منها لايبقى مين هوعلى ظهرالارض احد: | ف وله:ف ار |
| 440 | ريف مفهموم او مقصد | |
| 777 | | تنبيه |
| *** | پیشن <i>گویئ تحقیق</i> | د ڏکر شوءِ |
| 444 | بر | حياتخض |
| *** | باب د ترجمة الباب سره مطابقت ` | دحديثال |
| 777 | بث | رجال الحد |
| 444 | | ⊙آدم |
| 444 | | ()شعبه |
| 444 | | صالحكم |
| ۲۸. | | زورنه: |
| 171 | نجيير | |
| 444 | | ں۔ ⊚ابنعبا |
| 474 | تالحارث المنافظة المستسبب | مىمونەن |
| 777 | للنبيّ تَنْظُمُ العشاء ثعرجاءالي منزله فصلى اربعر كعات ثعرناً م | - ت . ق وله :فصل |
| 7 | | قوله: نأمرا |
| 449 | • | تنبه |
| TAD | نأمرحتي سمعت غطيطه اوخطيطه ثمرخرج الى الصلاة: | |
| 444 | | |
| TAD | برجالي الصلاة: : ترجمة الباب سره مناسبت | اويه نوح |
| YAY | : برجمه ابناب سره مناسبت هلق څه روايات | |
| YAA | عنی خدروریت راو دهغی حل | |
| | ، و دفعي عن ۴۲. باب:حفظ العلم | يو سدر |
| YA9 | • • | . - |
| YA4 | رباب سره مناسبت. ۱۱ ما تعمل | |
| | لباب مقصد | دىرجمه |

| صفحه | مضمون | شميره |
|-------|--|-------------------------------|
| 791 | .^. | رحال الحد |
| 441 | ۔ بزیز بن عبداللہ | • • • • |
| 191 | فرير بن عبدالله | ()عبدالغ ⊙مالك |
| 791 | .1 | |
| 191 | | ⊙ابزشه ⊙الاد - |
| 191 |) ت. ابوهریره کلاند ت. ابوهریره کلاند | ⊙الاعرج ⊙ متن |
| 791 | ت بوحريره نصر النـاس_يقولون: اكثرابوهريرة: | ون خصرت قولامال |
| 797 | التامل يقونون.اكر بومرود. آيتان في كتاب الله ماحدثت حديثاً: | توند ان تولدان |
| 444 | ، بيان في كتاب الله عن المانيات الله الله الله الله الله الله الله ال | تونه : وبولا خوانده |
| 797 | يو.ان الدين ينامون في الوقت من البياث على عود مو المنطق المنامون المهاجرين كان يشغلهم الصفق | تونه : نمرية |
| 797 | المن المهجرين ٥٠ يعلم الله على المام | مودد : ان |
| 794 | ابأهريرة كأن يلزمرسول الله صلى الله عليه وسلم يشبع بطنه وبحضر: | قوله: وان د |
| 794 | _اباًهويوة كأن يلزمرسول الله ت <u>ؤخ</u> ر بشبع بطنه: | |
| 794 | • | نبيه |
| 794 | ى پ بنابىبكرابو مصعب: | رجال الحد |
| 447 | | |
| 447 | ـ بن ابرهیم بن دینار : ۱۰ : | (ج) محمد (ج) ابن ابر |
| T . T | ى دىب | |
| 4.4 | ت العميري ت ابو هريره كافئة | |
| T . Y | ت بوطريره الله، انع اسمع منك حديث أكثير النسأة: | ران مستر قولم قلم |
| ٣.٢ | ي البيطارداءك فبسطته: | |
| ٣.٢ | ر به بستار در در | |
| ٣٠٢ | ر عرف بيانيا مدت انسيت شيئا بعده: | |
| ۳۰۲ | اسيت سيم بماه. باب پدمختلف طرق كښي تعارض او دهغې حل | رجديث |
| ۳۰۴ | ب ب په دده د روي بي دروي په د ل او دهغي جواب | |
| ٣٠٧ | کال او دهغی جواب کال او دهغی جواب | |
| ۳٠٧ | | رجال الد |
| ۳۰۷ | يم بن المنذر | |
| ۳۰۷ | ر فدیک . | ⊕ابر ار |
| ۳۰۸ | ق لره دذکرکولو مقصد | دی طریق |

| صفحه | شميره مضمون |
|--------------|--|
| 4.4 | رجال الحدث |
| 4.4 | ں ⊙اسماعیل |
| 4.4 | ِ <u>۞</u> اخي |
| 411 | ⊙ابن ابی ذنب |
| 411 | 🕥 سعید المقبری |
| 411 | حضرت ابو هريره المثنة |
| 411 | نول ه: حفظت من رسول الله صلى الله عليه وسلم وعاءين: |
| 414 | قوله: فأما احدهما فبثثته: |
| 717 | قوله: واماً الاخرفلوبثنته قطع هذا البلعوم: |
| 414 | پەدېنوع ثانى كښى څەوو |
| 414 | قوله قال ابوعبدالله البلغوم عجرى الطعام |
| 414 | داحاديث باب د ترجمةالباب سره مطابقت |
| | ۴۳_ بأب:الانصاتللعلماء |
| 212 | د تیرشوی باب سره مناسبت |
| 412 | مقصد دترجمة الباب |
| 7 \ 7 | رجال الحديث |
| 717 | ⊕ بجاج |
| 7 17 | ⊕شعبه |
| T17 T17 | <i>⊕</i> على بن مدرک |
| T1V | ⊙ابوزرع ه |
| T 1 V | • جرير |
| " | قوله أن النبي نهي قال له في حجة الوداع: |
| T \ | قوله :استنصتالناس: |
| " \ | انصات واستماع كنبي فرق |
| r\4 | قوله فقال: لاترجعوابعدى كفارايفرب بعضكم رقاب بعض: |
| 719 | اهل السنة والجماعة ددي مختلف توجيهات كوى |
| 719 | قوله: يضرب بعضكم رقاب بعض: |
| 4111 11 | يو اشكال او دهغي جواب |
| إلى الله | يو اسكال و دععي جو اب ۴۴ ـ باب: ما يستحب للعالم اذستل: اى الناس اعلم ؟ فيكل العلم |
| | دتیرشوی باب سره مناسبت |

| صفحه | مضبون | شميره |
|------------|--|------------------------|
| 441 | جمةالباب | مقصد دتر |
| 444 | ÷ | رجال الحدب |
| 444 | بنمحمد | ()عبدالله |
| 444 | | 🕝 سفيان |
| 444 | | 🕝 عمرو |
| 444 | | ⊙سعيدبر |
| 444 | ابن عباس گُونا | |
| 444 | | نوفباً |
| 444 | | () ابی بن |
| | (بن عباس:ان نوفاً البكالي يزعدان موسى ليس بموسى بنى امدانيا | |
| 444 | | موسى اخر: |
| 444 | كذب عدوالله: | _ |
| 442 : | أابي بن كعب عن النبي صلى الله عليه وسلم: قيام موسى النبي خطيباً | قوله:حد تنا |
| 773 | ونو پهمينڅ کښې تعارض اودهغې ازاله : | ددوو روایت آاد ده |
| 773 | ت موسى عليه السَّلام د آعلُم نفي كوُّل درست دي ؟ | آیا د حصرر فائده |
| 770 | الله عليه اذلم بر دالعلم اليه: | |
| 444 | مناصية التوزير العمورية. _الله اليه ان عبدا من عبادي بمجمع البحرين هو اعلم منك: | |
| 444 | ے اعدالیہ ان عبدالی مجمور البعرین هواعدم منك! : يارب،وكيف به؟: | مولم: قال مولم: قال |
| 444 | .يوربونيت به: .له:احمل حوتاً فو مِمكتل: | _ |
| 444 | .ب.، شىخوناقى مىنىن. قىدتەفبوئىر: | - |
| 440 | | |
| 444 | لق وانطلق بفتـالايوشەبى نون وحملاحوتافى مكتل: پالحوت من المكتل: | |
| 227 | | |
| 227 | سبيلەفى البعرىدىياوكان لبوسى وفتـاه عجبـا: - ا - ترىرىل | |
| ۳۲۸ | قابقية ليلتهما ويومهما: | |
| ٣٢٨ | سبع قال موسى لفتاه: آتنا غداء نالقد لقينا من سفرنا هذا نصبا: | فوله فساه |
| TTA | را مسامن النصب حتى جاوزاله كان الذَّى امريه: | ق وله ولمریجا |
| TT9 | له فتاة ارايت اذاوينا الى الصغرة فأني نسيت الحوت، قبال موسى | توله: مق ال |
| ٣٢4 | اعلى آثارهما قصصا: | |
| | رين په کوم ځانې کښې واقع دي؟ | مجمعالبح |

| - | <u></u> | تف الباري |
|--------------|--|--------------------------------|
| صفحه | مضمون | شميره |
| 444 | الصغرةاذارجل مسجى بثوب اوقىال: تسجى بثوبه: | قوله فلمأانتهماال |
| 444 | : واني بأرضك السلام؟: | فوله فقال الخضر |
| | دي؟ َ | آیا دا روایت وهم |
| 44. | يىنى: | تول ه: فقـأل: انأم |
| 44. | ر بنی اسرانیل؟قال:نعم: | ئولە:فقال:موس |
| 221 | اتبعك على ان تعليني مهاعليت رشدا: | |
| 441 | ن تستطیعرمعی صبرا: | نوله: ق ال: انك ا |
| ىليە: ٣٣١ | على علىرمن على الله علمنيه لاتعلمه انت، وانت على على على علم علم كه لااء | قوله: يأموسي: الر |
| 441 | ي.جواب | يو اشكال او دهغ |
| 444 | بنى ان شاءالله صابراولااعصى لك امرا: | فوله:قال:ستج |
| 444 | ئيان على ساحل البحر،ليس لهما سفينة،فمرت بهما سفينة | قوله: فأنطلقاً يما |
| 444 | فوقع على حرفالسفينة،فنقرنقرةاونقرتين في البحر: | توله: فج اءعصفور |
| ٠٠٠ : | ر: يأموسي، مانقص على وعلمك من علم الله الاكنقرة هذا العصفور | قوله: فقال الخ ف |
| 444 | م الوحور الواح السفينة فنزعه: | قوله: فعبدالخضراا |
| 444 | _ _ قومرحملوناً بغيرنول عمدت الى سفينتهم فخرقتها لتغرق اهلهاً: | توله:فقال موس |
| 444 | قُلِ لك انك لن تستطيع معى صبرا؟: | قوله: قال: الما |
| 444 | اخذنى بمأنسيت: | قوله:قال:لاتۇ |
| MAR | ی می موسی نسیانا: | ق ول ه: فكانت الاول |
| 770 : | ك الماريلعب معرالغلمان، فأخذالخضربراسه من اعلاه فأقتلعراسه بيدة | تولد: فأنطلقاً، ف |
| 44.4 44.4 | ى جواب | يو اشكال اودهغ |
| 444 | كَ :اقتلت نفسازكية بغيرنفر ؟: | |
| | إقل لك انك لن تسطيع معى صبرا ؟: | فوله: قال: الم |
| 444 | عيينة: هذااوكد: | نوله قال ابن |
| 444 | يتم ذااتيااهل قرية استطعما اهلها فأبواان يضيفوهما: | قولم فانطلقا، |
| ٣٣٢ | اجداريريدان ينقض فاقامه،قال الخضربيده فاقامه: | قملم فيحداف |
| 777 | الفالة بن مبينك: | |
| TTV :(| ا الله على مسلم أن حم الله موسم الوددنالو صارحتي يعلق عليك | . 11 - 11 |
| TTV; | يرورا مواس خشرم اقال التناسفيات بن عيينا بعود | . 16 |
| TTV | ر ملیه السلام دحضرت موسی علیه السلام نه افضل وو؟ | توبه.دن آبا حضہ ت خط |
| | | - , , |

| صفحه | شميره مضمون |
|--------------|--|
| FFA | أيا أحكام شريعت لره نظر أنداز كولو محنجانش شنه؟ |
| 779 | دحضرت موسى او خضرعليما السلام دقصي نه مستنبط څو فواند |
| | أُ اللَّهُ ا |
| 779 | دباب سابق سره مناسبت |
| 774 | دترجمة الباب مقصد |
| 441 | رجال الحديث |
| 441 | ٠ عشمان |
| 4k1 | ۞ جرير |
| PF 7 | ⊕منصور |
| 444 | ⊙ابو وانل |
| 44.4 44.4 | ©حضرت ابو موسی اشعری در ض; - مع - ال |
| 444 | قوله: قال: جاعرجل الى النبي نزيخ: ما الله الله الله الله الله الله الله ال |
| 444 | رجل مبهم، نه څوك مراددې ؟. - د الله الله الله الله الله الله الله ال |
| 747 | قوله: فقال: يأرسول الله، مأ القتال في سبيل الله؟ في الحدثانيق تل غضباً: قوله: فرفع اليه راسه: |
| 744 | مومه، فرفعراتيه راسه. قوله: قال: ومارفعراسه الاانه كارن قائماً: |
| 747 | توقة: كان. وقار فعراسة الألفاطات كانها. قوله: فقال: من قاتل لتكون كلمة الله هي العلياً فهو في سبيل الله: |
| 444 | تولە . تقال. من قاتل نىڭون كىلمەانلەشى ئىلىنى قېۋقى سېيىل نىد. پەقتال كېنى داغلاء كلمةاللەنە علاوە دخەبل غرض نىت |
| met | پەدىن ئېتى داغىر- ئىققاند ئەغىرودۇ دىدىن غىرقى ئىت دابوالولىد بن الشىچنەخلېي چنقى يوە واقعە |
| .,, | ى بو توقيد بن كسف تابئي ملى يوار صاء ۴۶. باب السُّوَّال وَالْفُتْيَا عِنْدَرَمُ عِ الْجِمَارِ |
| 744 | د سابق باب سره مناسبت |
| 444 | دترجمة الباب نه مقصد |
| 447 | رجال الحديث |
| 441 | ⊕ابو ثعيم |
| 447 | عبد العزيز بن ابى سلمه |
| ۲۴۷ | د لفظ ما جشون تحقیق |
| ۲ ۴۸ | () الزهرى |
| ۳۴۸ | @عيىسى بن طلحه |
| ۳۴۸ | عبدالله بن عمرو |
| ۲۴۸ | قوله: قال: رايت النبي صلى الله عليه وسلم عند الجبرة وهويستل: |

| صفحه | شىيرە مضمون | | |
|------------|---|--|--|
| 444 | به ترجمة البا بباندي اشكالات | | |
| 444 | دحديث په ترجمة الباب با ندې انطبيا ق | | |
| | و و و و و و و و و و و و و و و و و و و | | |
| 444 | دسا بق با ب سره منا سبت | | |
| 444 | دترجمة الباب مقصد | | |
| 49. | د مذکوره باب او د تیر شوی باب په مینځ کښې فرق | | |
| 491 | رجال الحديث | | |
| 701 | قيس بن حفص | | |
| 421 | عبدالواحد | | |
| 757 | @الاعمش سليمان بن مهران | | |
| 757 | ⊙ابرا هیم | | |
| 491 | @علقمه: | | |
| 707 | ⊙عبدالله | | |
| 201 | قوله: قال: بيناً انأ امثى مع النبي صلى الله عليه وسلم في خرب المدينة: | | |
| 737 | خرب: | | |
| 202 | قوله :وهويتوكأعلى عسيب معه: | | |
| 404 | قوله :فبرينفرمن اليهود: | | |
| 704 | واقعەمذ كورەپەمدىنەمنورەكنبىشوى وەاوكەپەمكەمكرمەكنبى؟ | | |
| 700 | خلاصه د کلام | | |
| 707 | دروح متعلق يو څو مباحث بحث اول | | |
| 70V 70V | دحافظ ابن القيم يُوَتَّظِيُّ وائي دحافظ ابن القيم يُوتَثِيُّ به رائي باندي تبصره | | |
| TDV | د حافظ ابن القيم ﷺ په راتي باندي تبصره د | | |
| 701 | دونم بحث نبی کریم تاکی ته دروح حقیقت خودلی شوی وو که نه ۴ | | |
| 209 | دريم بحث نبي كريم تلكم يهوديانو ته د سوال جوآب وركړې وو كه نه؟ | | |
| 47. | څلورم بحث په ځلق او ام کښې فرق په د د اړ کې څه نه ته دې ؟ | | |
| 777 | پەدواړو كښې څەفرق دې؟ ق ولە :قالالاعش:ھكذافي قراءتنا: | | |
| | ا موله الحال الأحمل المعتبان المواجعة المواجعة المواجعة المواجعة المواجعة المواجعة المواجعة المواجعة المواجعة | | |
| | وَ اللَّهُ مَا لَكُ اللَّهُ مَا لَكُ اللَّهُ مَا لَا خَتِيَا وَهَا فَقَالَ لَيْقُصُرَ مُنْهُ بَعْضِ النَّاسِ عَنْهُ فَيَقَعُوا فِي أَشَدَّمِنْهُ فَهُمُ يَعْضِ النَّاسِ عَنْهُ فَيَقَعُوا فِي أَشَدَّمِنْهُ | | |
| ۳۷۲ | وهر بعض الناس عنه فيتعواني الله المناب | | |
| 777 | وراندي باب سره مناسبت د ترجمة الباب مقصد | | |

| صفحه | شميره مضمون |
|-------------|--|
| 444 | د ترجمة الباب په مقصدباندي يو اشكال او د هغي جواب |
| 474 | رجال العبيث |
| 474 | عبيدالله بن موسى |
| 474 | ⊙اسرانيل |
| 447 | @ ابواسحاق |
| 477 | @الاسود |
| ۳۷۰ | الزبير الزبير |
| ۲۷. | ⊙عائشه |
| | د عبدالله بن زبير الماتخ د كعبي تعمير |
| | د حجاج بن يوسف كعبه نړول او د عبدالملك بن مروان افسوس |
| | د مهدی د نوی تعمیر اراده اود امام مالك حكیمانه مشوره د مهدی د نوی تعمیر ایراده اود امام مالك حكیمانه مشوره |
| ۳۷. | قوله: قال: قال لى ابن زبير: كانت عائشة تسراليك كثيراف احدثتك في الكعبة؟: |
| 441 | قوله: قلت: قالتالي: ∴. و موسيال المراسطين التاليم و مراسطين التاليم و مراسطين التاليم و مراسطين التاليم و مراسطين التاليم و التاليم و م |
| 777 | قوله: قال النبي عَلَيْمُ : يَاعَانُه الله الله والمنافعة على الله على الله الله على الله الله الله الله الله ا قال الله الله الله الله الله الله الله ا |
| 777 777 | قوله :قال ابن الزيبريكفر: آيا په دې روايت كښي ادراج دي؟. |
| | ىي پەدېرورىك ئېيىي داراجدى ق ولە :لىقىنىدالكىية قېعلى لھا بابىين بابىيدىل النىاس وباب يخرجون ففعلە ابن الزبير: |
| 777 777 | و حدیث الباب د ترجمهٔ الباب سره مطابقت د حدیث الباب د ترجمهٔ الباب سره مطابقت |
| ,,, | ٢٩ باب: مَنْ خَصَّ بِالْعِلْمِ قَوْمًا دُونَ قَوْمِكَ رَاهِيَةً أَنْ لاَيَفْهَمُو |
| TV# | محكتين بأب سره مناسبت |
| 774 | مقصد د ترجمة البّاب او مخكنيي باب كښي او دې باب كښي فرق د متن په سند باندې د مخكنيي والي څه وجه ده؟ |
| 444 | د متن په سند باندې د مخکښي والي څه وجه ده؟ ا |
| 444 | رجال الحديث |
| 444 | • عبيدالله بن موسى |
| 444 | ٠ معروف ابن خرُبوذ: |
| TV A | |
| ۳۸۰ | ⊕ حضرت على المُثَوَّةُ |
| ۳۸٠ | رجال العديث |
| ۲۸. | اسحاق بن ابراهیم |
| ٣٨٠ | ⊙ معاذبن هشام |
| TA1 | ابی |
| | |

| ناب العلم | ع <u>۲۳</u> د | كشف البار |
|----------------|---|--------------------|
| صفحه | ی ۳۳ د | شميره |
| 441 | | ⊙قتاده |
| 441 | ن مالک طالعتی | @انس بر |
| ٣٨٢ | النبى كاللهومعياذرديفه على الوحل قيال: يأمعياذبن جبل: | |
| ٣٨٣ | ىعاد بن جېل <i>ئالغۇ</i> | |
| | _:لبيك يأرسول الله وسعديك، <i>ق</i> ال: يأمعاذ، قال: لبيك يأرسول الله وسعديك | |
| 444 | ر:مأمن احديثهدان لااله الاالله وان محمد ارسول الله صدقا من قلبه: | نوله:قا ل |
| ٣٨٧ | البابنه د مرجئو استدلال او دهغي رد | |
| 444 | ل: يأرسول الله افلا اخبر به الناس فيستبشرو؟: | |
| 711 | <u>َ</u> ن:اذَايتكلوا: | ق وله :قال |
| 274 | بربهامعاذعندموته تأثما: | |
| 44. | لو باوجود حضرت معاذ ﴿ اللَّهُ وَاحديث د خلقو مخكښي ولي بيان كړو؟ | د منع کو |
| 441 | ض او د هغې جواب: | يو اعترا |
| 444 | نيث | رجال الد |
| 444 | د- | <u> </u> |
| 444 | مر | ⊙معت |
| 490 | | () ابی |
| 444 | رت انس المليخة بيرين | ⊙حضہ |
| 444 | الَ ذُكِرَلِي أَنَّ النَّبِي -صلى الله عليه وسلم-قَ الَّ لِمُعَاذِ: | قوله: قُ |
| 247 | نُ لَقِي اللَّهَ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْشًا دَخَلَ الْجَنَّةَ: | ق وله : مَر |
| 49 | ىَالَ أَلاَ أَبَيْرُ النَّـاسَ: | |
| 499 | بال:لأ»: | قوله: قُ |
| 499 | لِي أَخَافُ أَنْ يَتَكِلُوا: | توله: [|
| 799 | كالباب دترجمة الباب سره مناسبت | دحديث |
| | ٥٠ باب: الْحَيَّاءِفِي الْعِلْمِ | |
| 799 | ابق سره مناسبت | باب |
| ~44 | دترجمة الباب | مقصد |
| ٠.١ | وَعَالَ مُجَاهِدٌ لاَيَتَعَلَّمُ العِلْمَ مُسْتَصْ وَلاَمُسْتَكُيرٌ | توله: |
| ٠, ٢ | مجاهد رحمة القددي اثر تخريج | دامام |
| • • • | ئورواثر مطلب | د مذک |
| ن: ۳۰۲ ز. ا | وَقَالَتُ عَائِشَةُ نِعْمَ النِّسَاءُ نِسَاءُ الأَنْصَادِ لَمُ تَمَنَّعُهُنَّ الْحَيَاءُأَنُ يَتَفَقَّهُنَ فِي النِّينِ | ئولە: |

د حافظ ابن حجر محظیم تسامح د علامه قرطمي *بُونان* د تاويل مرجوحيت 411 دتر حمة الباب سره دحديث مطابقت 419 رجال الحدث 44. اسماعیل 44. ج مالک 44. @عبدالله بن عمر الملكة 44. قَولَه: أُنَّ رَسُولَ اللَّهِ-صلى الله عليه وسلم-قَالَ: 44. د حدیث الباب د ترجمة الباب سره مطابقت FYI

| صفحه | مضمون | شميره | |
|-----------------|---|------------------|--|
| | ٥١ - باب مَن اسْتَعْيَا فَأَمَرَ غَيْرَةُ بِالسَّوَّالِ | | |
| 477 | ر سره مناسبت | دىابسايق | |
| 411 | آب مقصد | | |
| 444 | ث | رجال الحدي | |
| 414 | | () مسدد | |
| 474 | ، بن داو د | 🕝 عبدالله | |
| 444 | · الاعمش · | | |
| 444 | | ⊙منذراا | |
| 444 | بن الحنفيه سن | | |
| 447 | د على طافئة : | وحضرت | |
| 447 | كُنْتُ رَجُلاً مَدَّاءً: | قوله: قال | |
| 479 479 | تُ الْمِقْدَادَأُنُ يَسُأَلُ النَّبِي صلى الله عليه وسلم فَسَأَلُه: | قوله: فَأَمَرُهُ | |
| F7. | گرم ناخ نه دمدې په باره کښې سوال کو لو والا څوک وو ؟ ناځ و ه ه د مدې په باره کښې سوال کو لو والا څوک وو ؟ | دحضور اک نیک | |
| | آب«فِيهِ الْوُضُوءُ»: | قوله: فقار | |
| ری. ۲۳۱ | ے۔۔۔۔ ی پدموررت کبنی بدجمیع ذکروینځلی کیږی یابدموضع اصابت وینځل کافی و ۱۰۱۰ | دحروج مد: | |
| 444 | دلائل دطرفندمخالفينرتهجواب | د جمهورو | |
| دی؟ ۴۳۳ | ر عرف بالت تعلیون بوب دی به صورت کشیر داویو استعمال ضروری دی که استجمار بالاحجار کافی : | دخوحمذ | |
| | ، پەمسورت كېنىي داوبواستىعمال ضرورى دې كەاستىجمار بالاحجار كافى، ۵۲ - باب ذِكْرِ الْعِلْمِ وَالْفُتْيَا فِي الْمُسَجِ دِ | - حردج | |
| 477 | ى مەناسىت . ق سرەمناسىت . | | |
| 444 | ى بىرى باپ مقصد : | | |
| 477 | · • | ر. رجال الحد | |
| 477 | | ن. () تنبه | |
| 447 | | © الليث | |
| 444 | بولی عبدالله بن عمر | | |
| 444 | ت عبد الذبن عمر المنتخ | | |
| 427 | , رَجُلاً قَامَ فِي الْمُسْجِدِ: ﴿ مِنْ مَا أَنَّ مُنْ أَنَّ الْمُعْرِدُ وَ مُعْلَمُ مُنْ أَنَّهُ م | قوله:أنَ | |
| 444 146 9 4 | اْلَ يَارَسُولَكَ الِلَّهِ، مِنْ أَيْنَ تَأْمُرُنَا أَنْ نُولِ : ﴿ وَمِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ وَ | توله: فَقَ | |
| يېل اهل ۳۸ س | ال يُدينون العَبِينِ عِن عِلَيْهِ وسلم- "«عَبِلُ أَهْلُ الْمَدِينَةِ مِن ذِي الْحَلَيْفَةِ، وَ ال رَسُولُ اللَّهِ - صِلْ الله عليهِ وسلم- "«عَبِلُ أَهْلُ الْمَدِينَةِ مِن ذِي الْحَلَيْفَةِ، وَ | | |
| · 1 / | َ الْكِحْفَةِ، وَيُهِلِ أَهْلُ نَجْدِهِ مِنْ قُرُنٍ »: | الشأميعن | |

| - | بالعلم | لتك | | كشفّالبّارى |
|----|--------------|---------------------------|--|---|
| ٦ | سفحه | | مضمون | شميره |
| L- | 444 | <u> </u> | | ذوالحليفه |
| | 444 | | | الجحفه |
| | ۴۳۹ | | | قرن |
| | | مِ قَالَ »وَيُهِلَ أَهْلَ | كِ اللَّهِ صلى الله عليهِ وسل | فوله: وَقِيالَ الْبِي عُمَرَ وَيَذْعُمُونَ أَنَّ رَسُوا |
| | 444 | سلى الله عليه وسلم: | إَفْقَهُ هَذِهِ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ- م | مِنْ يَكُنْكُمُ». وَكَانَ ابْنُ عُمَرَيْقُولُ لَمُ |
| | f f . | | | يلملم: |
| | f f . | | | د مواقیت احرام تحدید |
| • | t & / | م ريخه | | داهل عراق ميقات |
| | | ميتباسانه | بَابَالسَّابِلَ بِأَكْثَرَ | ٥٣- باب:مَنْ أَجَ |
| | ck.h | | | دبابسابق سره مناسبت |
| | 44 | | | دترجمة الباب مقصد |
| | ** | | | يو اشكال اودهغي جواب:كال |
| | 40 | | | رجال الحديث |
| | 40 | | | ⊙آدم: |
| | 49 | | ******** | ابن ابی ذئب |
| | 40 | | ********** | 🕝 نا فع : |
| ۴ | 40 | | | ⊕ الزهري |
| ۴ | 40 | | | ⊚سالم: |
| | 40 | | | 🕥 حضرت عبد الله بن عمر 📆 🔐 |
| ۴ | 40 | | | د حدیث دسند وضاحت |
| ۴ | 47 | | | قوله: أَنَّ رَجُلاً سَأَلَهُ: |
| ۴ | 47 | ىرَا و يلَ: | القبيص ولاالعبامة ولاالأ | قوله: مَا يَلْبَسُ الْمُحْرِمُ فَقَالَ » لاَ يَلْبَسِ |
| ۴ | 47 | | | دحضور اكرم تلام فصيح او بليغ جواب |
| ۴ | 47 | | | د, وایت د ترجمة الباب سره مطابقت |
| ۴ | ۲۷ | | | دحديث الباب نه مستنبطه قاعده |
| - | 47 | | | السرأويل: |
| | ۴۷ | | | البرنس |
| | ۴۸ | | | الورس: الورس: |
| ۴۱ | ۴۸ | | | براعت اختتام الله |

عرض د مرتب

اللهم لك الحيد لا احصى ثناء حليك، انت كها اثثيت حلى لقسلت اللهم لك الحيد كيا يتبقى لجلال وجهك و عظيم سلطانات اللهم مـا اصبح في من تـعبة او يـأحد من علقك فينك وحدك لاشريك لك، اللهم لك الحيد ولك الشكه. اللهم صل و سلم و يا رك حلى سيدنا وحبيبنا و مولانا محيد التي الامي وعلى آله و صحبه و تابعيهم و

منتبعهم أجبعين

اما بعدد الله رب العزت ډير زيات كرم او د هغه ډير احسان دې چې هغه محض په خپل فضل سره توفيق راكړو چې نن مونږ ستاسو په لاسونو كښې د بخاري شريف د شرح "كشف البارى،، څلورم جلد چې د "كتاب العلم، د نصف اخر په وضاحت او تشريع باندې مشتمل دې د پيش كولو سعادت حاصلوو اهل علم حضراتو ته چې د دې جلد د انتظار كولو چې كوم تكليف ملاو شو په هغې باندې مونږ معدرت خواه يو د دې په تاخير كښې چه كوم عدرونه مخي ته وو دهغې او ږد د كركول بې فاندې دې او په دې خښې ددې احقركه علمي او ناروغتيا او ده مختلف بيمارو ډير دخل وو خو بيا هم كوشش كړي شوئ دې چې په مباحثو كښې څه كمي پاتى نه شي او د تحقيق معيار د مخكيني جلدونو پشان بلكم د هې نه هم نه دوي حضرت شيخ الحديث صاحب دامت بركاتهم سره د بوه اوالي مختلفو بيمارو. مصروفياتو اومختلفو دمه دارو سره سره د دې جلد په يو يو حرف باندې نظر اچولي دې كوم امور چې المالاح وو هغه ني راته په نښه كړل د كوم مباحث چې نامكمل وو د هغې طرف ته ني قابل د اصلاح وو هغه ني راته په نښه كړل د كوم مباحث چې نامكمل وو د هغې طرف ته ني خويږ توجه كړله او د كومو چې وضاحت پكار وو دهغې د وضاحت حكم يي او كړو او الحمدللة په دې ټولو حكمونو باندې عمل وكړي شو الله دې حضرت مدظلهم ته عافيت تامه نصيب كړى او د حضرت دغه علمي كوشش دې هم دهغوئ په مبارک ژوند كښې بورا تامه نصيب كړى او د حضرت دغه علمي كوشش دې هم دهغوئ په مبارک ژوند كښې بورا

كړى و ما ڏلك على الله يعزيز

مونږ د هغې علماؤ شکر ګزار يو چا چې د مخکينې جلدونو مباحث اندازترتيب وتحفيق تعريف وکړو او زمونږ حوصله افزاني يې اوکړه دغه رنګ د هغه حضراتو شکريه هم ادا کوو چا چې د مضامينو په سلسله کښې مونږ سره خط و کتابت وکړو الله دې ټولو ته بهترينې بدلې ورکړي ـ

په تيرو شوو جلدونو کښې هم مونږ علماو ته درخواست کړې وو اوس هم دغه درخواست دې چې دا يو خالص علمي کار دې چې په مختلفو فنونو کښې د مهارت او صلاحيت تقاضا کوي د دې سلاحيتونو د نش والي د وجه نه ممکن ده چې د دې په ترتيب او تحقيق کښې په غلطي سره څه کوتاهياني راغلي وي د علماؤ په ذمه لارم ده چې د هغې نشاندهي او فرماني ان شاالله مونږه ته به دخپلو غلطيانو په اصلاح کښې خوشحالي محسوسيږي مونږ به ني ډير شکر گزار يو د دې جلد پروف ريدينګ او د زر نه زر منظر عام ته د راوستو سهرا د عزيز

گرامی مولاتا جبیب الله زکریا سلمه الله تعالی په سر ده که د هغوی مکمل توجه محنت او کوشش نه وو نو پته نشته چی نور به پدی کنبی څومره تاخیر کیدوانله تعالی دی هغه ته به بهترینی بدلی ورکړی د هغه علمی او عملی بهترینی بدلی ورکړی د هغه علمی او عملی دی برکت واچوی او د هغه علمی او عملی سلاحیتونو ته دی ترقی ورکړی د دی نه علاوه عزیزان گرامی مفتی سید زاهد حسین الحسینی سلمه ،فاضل دارالعلوم کراچئ او مفتی عبدالغنی سلمه ،فاضل جامعه فاروقیه و رفیق دارالتصنیف جامعه فاروقیه، هم شکرگذار یم چه دی دواړو حضراتو خصوصی طور باندې د پروف ریډنګ په سلسله کنبې د دې احقر ډیر امداد وکړو جزاههاالله تعالى غیرالجزام و وقتههاله یوهاله الله تعالى غیرالجزام

.....

په آخر کښې ټولو ويونکو په خدمت کښ درخواست دې چه حضرت شيخ الحديث صاحب دامت برکاتهم له پاره دی خصوصی دعا کوی چې الله تعالي دوی ته د صحت او عافيت سره لوې عمر ورکړي حضرت شيخ الحديث حفظهم الله تعالي و رعاهم د ژوند هر يو باب او خاص طور باندې د شيخوخيت د زمانې کارنامې چې په هغن کښې د درس او جامعه فاروقيه د اهتمام نه واخله تر وفاق المدارس العربيه او اتحاد تنظيمات مدارس دينيه د ذمه داريانو سره سره په ملک کښې هر وخت د اسلام خلاف راوچتيدونکو چغو سورو په عزيمت او عاجزئ سره مقابله هم شامله ده چې دغه ټول کارونه د ځوانانو له پاره د رشک قابل نموني دی

الله تغَّاليَّ د دې حضرت ته د ټولو ذمه داريانو په ښه طريقې سره د پوره کولو توفيق - /

ورکړي....

نيز اٌحقرمرتب او دده معاونينو له پاره هم د خصوصی دعاګانو درخواست دې چې انذ تعالي ورته دا کار آسان کړی. او د زر مکملولو توفيق ورکړی. او په خپل دربار کښې دې ورته د قبوليت شرف ورکړي

دا کار دې د احقر دپاره. د احقر د استاذانو مشائخ. مور پلار او متعلقینو له پاره د آخرت ذخیره جوړه کړي-آمین

وكتهه

نور البشرامحيد،نور الحق استأذ الحديث وعلومه بالجامعة الفاروقية تاربيخ الاول۱۳۲۸ه په مطابق ديكم اپريل ۲۰۰۷

٣٢- بأب:عظةالامأم النساء وتعليمهن

د مخکینی باب سره مناسبت مخکینی باب کنبی د انسان د خپل کور والو ته علم ښودل ذکر وو او په دې باب کنبی د امام عام زنانو ته تعلیم ورکول ذکر دی دغه رنګ په دواړو بابونو کنبی مناسبت اوموندلی شود ا

د توجمه الباب مقصد حضرت کنگوهی کیلی فرمانی چې زنانو سره خلوت او د هغوی سره اجتماع چونکه منع ده ځکه د دې باب په قانمولو سره امام بخاری کیلی وضاحت او کړو چې دا ممانعت په هغه صورت کښې دې چې د فتنه يره وی چې د فتنه وي و نو نصيحت ورته کيدي شي ()

حُضرت شَیخ الهند مُرکمی فرمانی چی د دې باب مقصد دمخکینی دوه بابونو پشان د تعلیم ضرورت اود تعلیم عام والی دې (آ)

حافظ ابن حجر وسلام فرمانی چی آمام بخاري و اول دا اوونيل چی انسان لره د خپلی بی بی او د و د خپلی بی بی او د و ينځئ د مانی چی آمام بخاري و اوس په ترقئ سره دا خبره ذکر کوی چی امير المؤمنين يا د هغه نائب ته پکار دی چی د عام زنانو لپاره د وعظ او نصيحت او د هغوی د تعليم انتظام او اهتمام او کړی، خلاصه دا ده چی اوله ترجمه خاص وه چی د کور والو او وينځی د تعليم متعلق وه او دا عام ده چی د عام زنانو متعلق ده د مخکئ ترجمه تعلق د مالکانو او خاوندانو سره وو او د دې ترجمې تعلق د امام سره دې رگ

[14] حَدَّنْتَاسُلُهُمُّاكُ بُرِّ حُزُبُ قَالَ حَنَّنْتَاشُهُبَةً عَنُ أَيُّوبُ قَالُ سَمِعْتُ عَطَاءَقَالَ سَمِعْتُ إبْرَى عَبَّاسِ ﴿ قَالَ أَنْهَمُدُعَلَى النَّبِي -صلى الله عليه وسلم --أَوْقَالَ عَطَاءَأَنُّهُمُدُعَلَى

^{ً)}عمدةَ القارى(ج٢ص١٢٢)

⁾ لامع الدراري (ج٢ص٣٣١.٣٣٢)

^{ً)} الابواب و التراجم (ص٥٣)

ا) فتع الباري (ج١ ض١٩٢)

^{° ،} وقياد: ابن عباس رضى الله عنهما: العديث اخرجه البخارى ايضاً في صحيحه (ج ١ ص ١٩) كتاب الأذان. باب وضوء الصبيان ومتى يجب عليهم الفسل والطهور؟ وحضورهم الجماعة والعيدين والجنائز. وصغوفهم، رقم (١٩٥٣). و(ج ١ ص ١٩٦) كتاب العيدين. باب الخطبة بعدالعيد. رقم (١٩٧٩) و(٤٩٩). وباب خروج الصبيان الى المصلى. رقم (١٩٧٧) وباب موعظة الامام النساء يوم الصبيان الى المصلى. رقم (١٩٧٧) وباب موعظة الامام النساء يوم العيد. رقم(١٩٧٧) و(ج ١ ص ١٩٥) كتاب الزكاة. واب التعديق والمدارة و ١٩٨٩) و(ج ١ ص ١٩٦) كتاب الزكاة. باب العرض في باب التحديث على الصدةة والشفاعة فيها. رقم (١٤٣١). و(ج ١ ص ١٩٥٥) كتاب الزكاة. باب العرض في الزكاة. رقم (١٤٤٩) و(ج ٢ ص ١٩٧٧) كتاب النكاح. باب: (والذين لم يبلغوا العلم) رقم (١٩٤٩). و(ج ٢ ص ١٩٥٤) ورج ٢ ص ١٩٥٤) و(ج ٢ ص ١٩٥٤) و(ج ٢ ص ١٩٥٤) و(ج ٢ ص ١٩٥٤) و(ج ٢ ص ١٩٥٤). و(ج ١ ص ١٩٥٤) و(ج ٢ ص ١٩٥٤)

أَبْنِ عَبَّاسٍ - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ - صلى الله عليه وسلم - خَرَجَ وَمَعَهُ بِلاَكُ، فَظَنَّ أَنَّهُ لَمُ يُلْعِمِ النِّسَاءَ وَعَظَلْمَ أَنَّ وَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ، فَجَعَلَتِ الْمَزَّ أَقْلُقِسَ الْفُرْطَ وَالْخَاتَمَ وَبِلاَكُ يَأْخُدُ فِي طَرْفِ وَوْبِهِ. وَقَالَ إِنْهُمَا عِيلُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عَطَاءِ وَقَالَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنْهُدُ عَلَى النَّبِي صلى الله عليه وسلم - (١٣٨١ ، ١٣٨١ ، ١٣٣، ١٣٣، ١٣٣، ١٣٥، ١٣٤، ١٣٥٠ ، ١٣٤٠ ، ١٣٨١ ، ١٣٨٠ ، ١٣٨٠ ، ١٣٨٠ ، ١٣٨٠ ،

رجال الحديث

سليمان بن حوب دا ابو ايوب سليمان بن حرب بن بجيل ازدى بصرى مُخفى دې . ددوى حالات په کتاب الايمان ۲۰ پاپ من کړه ان يعودل الکفر کما يکړه ان يلال في النار من الايمان ۲۰ کښې تير شوى دى ()
 شوى دى ()

شعبه دا امير المومنين في الحديث امام شعبه بن الحجاج عتكى بصري يُحيَّ دي د ده حالات هم په كتاب الايان (۱۹ پاب البسلم من سلم البسلمون من اسانه ديده) كښي تير شوى دى آلم.

ا يوب: دا ايوب بن ابي تميمه كيسان سختياني بصري الله دي دده حالات هم په كتاب الايان (پاكودة الايان)، كښي تير شوى دى آ

عطاء دا ابو محمد عطاء بن ابي رباح مكي قرشي پينځ دې د ده پلار ابو رباح نوم اسلم وو د د معلن موالي سره وورځ د د معلن موالي سره وورځ

د حضرت عثمان الله وخلافت به دونم كال ديمن به علاقه "جند.. كنبي پيدا شوي وو. او په مكه مكرمه كنبي پيدا شوي دوره وي د حضرت عائشه. حضرت ام سلمه. حضرت ام هاني.حضرت ابوهريره،حضرت ابن عباس،حضرت حكيم بن حزام.حضرت رافع بن خديج، حضرت زيد بن ارقم، حضرت زيد بن خالد الجهيني. حضرت صفوان بن

بقيه حاشيه د تيرمخ] كتاب الاعتصام بالكتاب والسنة. باب ما ذكر النبي (صر) وحض على انفاق الحل العلم..... رقم (٧٢٢) واخرجه مسلم في صحيحه، في فاتحة كتاب صلاة العيدين. رقم (٢٠٤٤ – ٢٠٤٤). وباب ترك الصلاة قبل العيد وبعدها في المصلى. رقم (٢٠٥٧، ٢٠٥٨) والنسائي في سننه في كتاب صلاة العيدين. باب الخطبة في العيدين بعد الصلاة. رقم (١٥٧٠) وباب موعظة الامام النساء بعد القراغ من العيدين. رقم (١٨٤٧ وباب الخطبة يوم العيد. رقم (١١٤٢ و ١١٤٢) وابن ماجه في سننه. في كتاب القاطئة يوم العيد. رقم (١١٤٢ و ١١٤٢) وابن ماجه في سننه. في كتاب القاطئة الصلاة. باب الخطبة يوم العيد. رقم (١٢٤٣)

⁾ کشف الدری (ج۲ص۱۰۵)

⁾ کشف الدری (ج ۱ ص۶۷۸) ا

^{ً)} كشف البارى (ج٢ ص٢۶) أ) تهذيب الكمال (ج٢٠ص ٤٩٠.٧٠)

د) تهذيب الكمال (ج ٢٠ ص ٧٠)

آمیه.حضرت عبدالله بن زبیر،حضرت عبدالله بن عمر،حضرت جابر،حضرت معاویه،او د حضرت ابوسعید خدری گلگ نه روایت ذکرکوی

د ده نه روایت کونکو کښې امام مجاهد. ابو اسحاق سبیعي.ابو زبیر، عمروبن دینار، زهري، قتاده، عمرو بن شعیب،ایوب سختیاني،منصور بن المعتمر، او امام ابوحنیفه گلگه او دغه رنگ نور حضرات شامل دی، ابن سعد گلگه فرمانی ۱۰ و کان تقد تقیها مالیا کثیرا العدیث کا امام ابو جعفر الباقر گلگه فرمانی در اهم فرمانی ۱۰ منادامن مطاء ما استطعتم، ک

ابن حبار به فرمائي و كان سود، اهور، اشل، اهر جه، ثم حبى في آخر، حبود، و كان من سادات التابعين، ققها، وعلما، وورما، وفسلا، ور

امام ابو حنيفه محطية فرمائي "ما دائت فيبن لقيت افضل من عطامين إلى دياح،، ()

امام عجلي والمنطقة فرمائي وتابعي تقدين

امام ابوزرعه ميني فرمائي "داهة،، ث

د عطاء بن ابی رباح میمی په باره کښې مونږدلته یو څو اقوال ذکر کړل خو اصحاب سیر و رجال د دوی ذکر په تفصیل سره لیکلی دي. د دوی په لوئ شان او امامت او تفقه باندی د علماء اتفاق دی

البته امام على بن المديني رُوَّيُهُ فرمائيلي دي چي "كان عطاء اعتلط بأخرة، تركه ابن جريج وقيس بن سعد،، رُ

⁾ دده د شیوخو او شاګردانو د تفصیل معلومولو له پاره وګورئ تهذیب الکمال (ج۲ ص ۷۰....۷۰) سیراعلام النبلاه(ج۵ص ۷۹٬۸۰) ۲-

^{&#}x27;) الطبقات لابن سعد(ج۵ص۴۶) ') تهذیب الکمال(ج۲۰ ص۷۷) و سیر اعلام النبلاء(ج۵ص ۸۱)

⁾ هم دغه پورتنی حوالا جات *) هم دغه پورتنی حوالا جات

هُ النَّفَات لابَنْ حَبَّان(ج٥ص ١٩٨٠١٩٩)

⁾ تهذیب الکمال(ج ۲۰ص ۷۹٬۸۰)و سیر اعلام النبلاء(ج۵ص۸۳) () تعلیقات تهذیب الکمال(ج ۲۰ص۸۵)

م تعليقات تهذيب الكمال (ج ٢٠ص٨٥) نقلا عن الجرح و التعديل (۶) رقم (١٨٣٩)

⁾ سير اعلام النبلاء (ج ۵ص ۸۶،۸۷) و ميزان الاعتدال (ج ۳ص ۷۰)

لیکل پریخودل د دوی الفاظ دی ۲۰ لم یعن علی بقوله "ترکه هذان" الترك العربی، و لکنه کپروضعفت حواسه، وکانالادتکفیا منه و تفقها و اکثر عنه، فیطلا، فهذا مراده بقوله: ترکامه، د)

نيز هغه فرماني "لم يعن الترك الاصطلاح، يل على انهما بطلا الكتابة عنه، و الاقعطاء ثبت رض، ﴿ ﴾

دغه رنگ امام ابو داود پیشیخ مانی"ان این مون ترک مطاء و فاوسا من اجل فتیاهم فی الصرف............................ یعنی" ابن طاعون عطاء او طاوس د هغوی په عقد صرف کښی د فتوی د وجه نه پریخودل..

خُو دَده جَرَح هم مَضَر نه دَهُ خُکُه چِی دلتَهُ دُ پریخُودو سبب یو اجتهادی امر دې. او په دئ کښی د اختلاف د وجه نه کلام شوئی دې ً -

دلته دا خبره دې واضح وي چې عطام بن ابي رباح په کثرت سره مرسلاً روايت کوي او علمو تصريح کړئ ده چې دئ د هر قسم راويانو نه ارسال کوئ دې وجه نه د ده مراسيل به ضعيف ګڼولي شي.(⁶)

د عطاء بن ابى رباح انتقال ۱۱۴ ه يا ۱۱۵ كنبى شونې دې. الم وحمه الله تعالى رحمة واسعة هابن عباس: د حضرت عبدالله بن عباس الله عالات د بدء الوحى په څلوره حديث او كتاب الايمان "باب كفران العشراوكفر بعد كفر. . كنبى تير شوئ دى. "،

حاصل دا دې چې د اشهد باره کښې تردد دې چې دا د ابن عباس قول دې که د عطاء، په دغه سلسله کښې د شغېه د شاګردانو اختلاف دې سليمان بن حرب په تردد سره نقل کوي کما في حديث الباب. ابوداود طيالسي دغه روايت د "شعبه عن ايوب..په طريقه نقل کړې دې او هغه يقيني طور باندې دې ته د عطاء قول ونيلې دې ^او د شعبه په شاګردانو کښي محمد بن جعفر غندر د بغير د شک نه جزما د

^{`)} سير اعلام النبلاء(ج٥ص٨٧)

⁾ ميزان الاعتدال (ج ٣ص ٧٠)

[&]quot;) تعليقات الكاشف (ج٢ص٢٢) نقلا عن سواالات الاجرى(٢٥٧)

¹) تعليقات الكاشف(ج٢ص٢٢)

⁽⁾ تهذیب الکمال (ج ۲۰ص ۸۳)

^{ً)} تهديب الكمال(ح ٢٠ص٨٥)

۱) کشف الباری (ج ۱ ص۲۳۵) و (ج۲ص۲۰۵)

⁾ حدثنا ابو داود قال حدثنا شعبه عن ابوب:قال سمعت عطاء يقول اشهد على ابن عباس انه قال خرج مسول انه منظم الله عليه عليه داود الطبالسي (ص ٣٤٤) احاديث عطاء بن ابي رباح. [بقيه حاشبه به راروانه صفعه.

دواړو د قول په طرز ذکر کړې دې.۱

بيا د شعبه په رفقاؤيعني ايوپ سختياني په شاګردانو کښي لر اختلاف دي. اسماعيل بن عليه ".. سفيان آاو وهيب آ، دي دري واړو دي ته د ابن عباس قول وانيلي دي ليکن حماد بن رید د ایوب نه نقل کولو په وخت کښي تردد نقل کوي .٨ امام بخاري پيځيو د روایت باب په آخر کښي د اسماعيل بن عليه تعليق راوړو سره غالبا خپل رجحان ظاهر کړو چي دا

د حضرت ابن عباس قول دی م

خو مناسبه معلوميږي چې يو ته د ترجيح ورکولو په ځانې دا اوويلي شي چې دا قول د ډواړو نه ثابت دي.چې د هغې دليل د محمد بن جعفر روايت دې.بيا بعضو راويانو دې لره د تردد

سره نقل کړو او بعضو د ابن عباس گنا قول اوګرځولو او بعضو د عط، والله اعلم

قوله: ان رسول الله تاييم خرج ومعه بلال فظر انه لم يسمع النساء: حضور تيم عر تشريف راوړلو هغوی سره حضرت بلال هم وو .هغوی دا گمان اوکړو چې حضورپاک پیځ ښځو تەخطىدواۋ نەرولە.

حضورياك 微ته دا خيال راغلو چې زنانو ته د دوي آواز اونه رسيدلو ځكه ني هغوي طرف ته تشریف پوړلو او هغوي ته ني نصيحت او کړو

قوله:فوعظهن وامرهن بالصدقة: حضورياك ﷺ هغوى ته نصيحت اوفرمانيلو او هغوي ته ئې د صدقې ورکولو حکم اوکړو.

ترجمة الباب ددي نه ثابتيري چي د 'وعظهن' نه عظة الامام او 'امرهن بالصدقة' نه تعليم په پوهه کښي راځي.۲)

هغوى نصيحت اوفرمائيلو چې افي رأيتكن اكثرالنار،لانكن تكثن اللعن وتكفرن العشير او د صدقه

بقيه حاشيه د تيرمخ] عن ابن عباس، رقم(٢۶٥٥)

تنبيه: د ابوداود طيالسي د دې روايت نه واضحه ده چې د اشهد قول د عطاء دې نه د اين عباس خو حافظ ابن حجر تختلط فرمائي ``و ارادبهذا التعليق انه جزم عن ايوب بان لفظ اشهد من كلام ابن عِباس فقط و كذا جزم به ابو داود الطيالسي في مسند، عن شعبه.... فتح الباري(ح\ص١٩٣) ده د حافظ *مُحَلِّظًا*

۱) مسند احمد (ج۱ص۲۲۰)

⁾ اخرجه البخاري طريقه تعليقا تحت حديث الباب. و اخرجه موصولا في صعيعه(ج١ ص١٩٥) في كتاب الزكاة. باب العرض في الزكاة. وقم (٩٤٤٩) و اخرجه احمد في مسند (ج ١ص٢٢٤)

⁾ اخرج حدیثه احمد فی مسنده (ج ۱ ص ۲۲۰)

⁾ اخرج حدیثه احمد فی مسنده (ج ۱ ص ۲۲۰)

أخرجه أبو نعيم في المستخرج، كذا في الفتح (ج أص١٩٣) ً) فتح الباري(١٩٣/١)-

حکم نې ورکړلو.او تعلیم نې ورکړو چې د دوی د ګناهونو کفاره په د صدقاتو په ذریعه کـــي (والهاملم

قوله: فجلعت المراة تلقى القرط والخاتم وبلال بأخذ في طرف ثوبه: بنخو والئ او گوتم كيبودلي او حضرت بلال هغه د خپلې كپرې په يو گوټ باندې راجمعه كولې او اي شخه د خاوند د اجازت نه بغير په خپل مال كښې تصرف كولې شي؟ په دې خبره كښې اختلاف دې چې آيا ښخه د خاوند د اجازت نه بغير په خپل مال كښې تصرف كولې شي يا ناه د جمهورو علماؤ مسلك دادې چې دې ته په خپل مال كښې د پورا تصرف كولو اختيار دې او امام مالك كښځ فرماني. چې هغې ته صرف د ثلث مال پورې د تصرف اجازت دې ددې نه د نات امار احازت نشته

ريات اجارت نست. د امام احمد پُرينځ هم يو روايت دادې.او د هغوي دويم روايت د جمهورو مطابق دې.

د امام مالک کشت استدلال د سنن نسانی سنن ابی داود او سنن ابن ماجه د عبدانه بن عمروبن العاص لائت د مرفوع روایت نه دې لا یجوز لامراة امرق مانها اذا ملك زوجها عستها آن یعنی ښځې ته په خپله خپل مال کښې اختیار نشته هر کله چې خاوند د هغې د عزت مالک جوړ شی. په دویم طریق کښې دی لاتجوز لامراة علیة الابادی زوجهار آ

بور سیمې په نورې سیمی کې که کې که کې کې د کعب ابن مالک ۱۳۶۵ د روایت نه دې چې د هغوی بی بی خیره د حضوریاک ۱۳۶۲ په خدمت کښې خپل کالئ راوړل او صدقه کول نې اوغښتل حضوریاک ۱۳۶۲ اوفرمائیل لایجوزللمراقۍ مالها الاباذن زوجهافهل استاذنت کعها؟

يعنى د ښځې د پاره په خپل مال کښې د تصرف اجازت نشته خو دا چې کله خاوند هغې ته اجازت ورکړی.نو آيا تا کعب نه اجازت اخستې دې؟ هغوی اوفرمائيل 'نهم بيا حضورپاک عليه د تصديق د پاره کعب اللي ته پيغام اوليږلو.چې کله هغوی تصديق او کړو نو هغوی گه هغې صدقه قبوله کړه.ه

امام مالک سره په تُلْتُ مال کښې د تصرف اختيار باره کښې څه واضحه دليل نشته،البته هغوى فرمانى چې څنګه د يو مريض په مال کښې د وارثانو حق متعلق کيږى دغه شان د ښځې په مال کښې د خاوند حق متعلق کيږى ځکه چې حضورياک ﷺ فرمانى تتکح البرأة

كثف البارى

^{`)} حواله بالا.

⁾ المغنى لابن قدامة (\$ / ٢٩٩،٣٠٠) كتاب الحجر رقم المسالة (٣٤٧٤) -

[&]quot;) سنن آبي داود كتاب البيوع ياب في عطية العراة بغير اذن زوجها رقم(٣٥٤۶) وسنن ابن ماجه كتاب الهبات باب عطية العراة بغير اذن زوجها رقم(٣٣٨)-

أ) سنن ابي داود كتاب البيوع باب عطية العراة بغير اذن زوجها رقم (٣٥٤٧) وسنن النسائي كتاب الزكاة باب عطية العراة بغير اذن زوجها رقم (٢٥٤١)-

[&]quot;، سنن ابن ماجه كتاب الهيات باب عطية المراة بغير اذن زوجها رقم (٢٣٨٩)-

لاريح: لبالها، ولحسبها، وجبالها، ولديتها ن

د دي نه دا معلومه شوه چي د ښځي په مال کښي د خاوند حق وي.او دغه وجه ده چي ښځه مالداره وي نو خاوند د هغي د مال نه فائده اخستلو د پاره په مهر کښې اضافه کولو سره د هغي د حاصليدو کوشش کوي.")

لهذا د مريضٌ په شان ښځې ته هم په ثلث مال کښې د تصرف حق ورکولي شي.مريض چې ځنګه په ثلث مال کښې وصيت کولې شي دغه شان ښخه هم په ثلث مال کښې تصرف کولې شي ددې په مقابله کښې د جمهورو دلاتل دادي

ن د الله تعالى ارشاد دي «فان انستم منهم رشدا فادفعواليهم اموالهم» X

یقنی چې تاسو په دوی کښلې عقل او هدایت اومونۍ. نو هغوی ته د هغوی مال ورکړنی د دی آیت نه دا خبره واضح کیږی چې په دوی باندې پابندی نشته او بله دا چې هغه په تصرف کښي آزاده ده

الساء تصدقن (٥٠٠ حضرت ابوسعيد خدري المعمرة مرفوع حديث دي يامعمر النساء تصدقن

دلته هم د صدقی حکم مطلق دی د څه قسم اجازت ذکر نشته

ترڅو چې د امام مالکمیکه د دلاللو تعلق دې نو په هغې کښې د حضرت کعب والاحدیث ضعیف دې ځکه چې په هغې کښې یحیي الاتصاري مجهول دې (۱

باقی دواړه روایتونه د عموو عن ایپه عن جده په طریق سره مروی دی او محدثینو په دې سند باندې کلام کړې دې(۱)

او که بالفرض دا سند قابل د احتجاج وی بیا هم اولاً د جمهورو د صحیح احادیثو مقابله نشی کولی.

ثانياً داسې ډيرو احاديثو په باره کښې امام بغوی فرمانی چې دا عيررشيده باندې محمول دي^

⁾ صحيح البخاري(٧۶١/٣) كتاب النكاح باب الاكفاء في الدين رقم(٥٠٩٠)-

⁾ المغنى (٢٠٠/٤)-

["]) النساء/۶-^{*)} البغنى(۳۰۰/۶) وعمدة القارى(۱۲٤/۲)-

⁾ الفعلي (١ / ١٠٠٠) و صده الحروي (١٠٠٠) 2) صعيح البخاري (١/ ٤٤) كتاب العيض باب ترك الحائض الصوم رقم (٣٠٤)-

⁾ تقريب التهذيب(٥٩٩)رقم(٧٤٨١) وخلاصة الخزرجي(ص٤٣٠)-

⁾ تعليقات الكاشف(٢/٧٩و ٨٠)-

م) شرح الكرماني(٩٢/٢)-

بعضي علما، فرمائي چي دا حكم په بنا، د حسن معاشرت او د آدابو د قبيلي نه دي. يعني دا مناسبه نه ده چې ښځه او سړې په يو ځانې کښې اوسيږی او ښځه د ځاوند د ځوښې معلومولو ندبغير خپل مال خرچ كړي او د خاوند نه تپوس اونه كړي `.والله اعلم

قوله وقال اسماعيل عن إيوب عن عطاء وقال عن ابن عباس: اشهد

على النبي ترفيل: د اسماعيل نه مراد اسماعيل بن عليمين دي دوي حالات كتاب الايمان باب حب الرسول من الايمان و لاندى تير شوى دى --=

د مذکوره تعلیق تخریج د مذکوره تعلیق په خپله امام بخاری *پینه* په کتاب الرکوه کښی موصولاتخريج كري ديأ

د مذكوره تعليق مقصد دي تعليق ذكر كولو نه امام بخاري دا ونيل غواړي چې د اسماعيل بن عليه په دې طريق کښې جزم سره د اشهد جملي نسبت ابن عباس پايخ طرف ته شوې دې ^۵

دا حمله د چا ده؟ ددې تفصيل مونږ روستو ذکر کړې دې

تنبيه علامه كرماني ميلي اولادا خبره ذكر كړې ده بيا نې يو احتمال دا هم بيان فرمانيلې دې چې د تال اسهاعيل عطف په حداثنا شعبة باندې وي. داسې شوه چې سليمان بن حرب څنګه د شُعْبِه شاګرد دې دغه شان د اسماعيل بن عليه نه هم روايت کوي. دغه شان به دا تعليق پاتې

خو دا احتمال صحیح نه دي ځکه چي اسماعیل بن علیه نه سلیمان بن حرب څه روایت نه كوى ٧) والله سبحانه و تعالى اعلم.

٣٣-بأب: الحرص على الحديث

اولنی باب سره مناسبت علامه عینی گئی فرمائی چی په مخکښی باب کښی څنګه چی د خاص تعليم ذكر دي. د دغې خاص تعليم ذكر په دې باب كښې هم دې چې د ابوهريره څيځ په سوال کولو ٰ باندې هم هغه تُه په خاص خطاب سره حضورپاک تریخ جواب ورکړو .چې دا هم تعلیم دی 🖒

مقصد د توجمة الباب حضرت شيخ الهند كالله فرماني چي ددې باب نه د حرص على الحديث

⁾ عمدة القارى(٢/ ١٢٤)-

^{ً)} فتع الباري(١٩٣/١)-

⁾ کشف الباری(۱۲/۲)

⁾ صحيح البخاري(١٩٥/١) كتاب الزكوة باب زكواة العرض رقم(٤٩٩) -

^د) فتح الباري(١٩٣/١) وعمدة القاري(١٢٥/٢)-

م) شرّح الكرماني(٩٢/٢)-

^{&#}x27;) فتح الباري(١٩٣/١) وعمدة القاري(١٢٥/٢)-

م عمدة القارى(١٢٥/٢)-

فضیلت او تحسین بیانول مقصود دی او د حدیث نه حدیث رسول الله پیم مراد دی. په مخکښې ابوابو کښې او تیر شوې احادیثو کښې د مطلق علم ذکر وو.اوس د حدیث تصریح او تخصیص مقصود معلومیری (اوالله اعلم.

مُطُلب دادې چې آمام بخارې پيلا د علم فضيلت.ددې د حاصلولو طريقي.ددې آداب او نعليه وتبليغ مطلق اوسه پورې ډير تراجم ايښودې دی.اوس خاص طور سره دترجمي متعلق ترجمه منعقد کوی او دا خبردارې ورکوی چې د ټولو نه اهم فن حديث دې چې د هغې د حاصلولو د پاره طالب علم لره حريص کيدل پکار دی

د حديث لغوي، عرفي أو اصطلاحي معنى حديث به لغّت كښي جديد ته وئيلي شي. به عرف كښي دا لفظ د كلام د ياره استعماليري ()

د اهل شریعت په نیز حدیث وئیلی شی هر هغه څیز ته چې نبی کریه پی ته منسوب وي. اګرچې هغه اقوال وی یا افعال. تقاریروی یااحوال.د بیدارئ سره تعلق لری یا د خوب سره ". د حدیث د وجه تسمیه په باره کښې مونږ تفصیلا په مقدمه کښې ذکر کړی دی ".

[٩٩]حَدَّثَنَاعُبُدُالْعَوِيزِبُنُ عَبُدِاللَّهِ قَـالَ حَدَّثَنِي سُلَيُمَانُ عَنُ غَمُّووبُنْ أَبِي غَمُوعَنُ سَعِيدِ بْنِي أَمِي سَعِيدِالْمَعِقْبُوعَيْ أَبِي هُرَيْرَةَالْلُهُ قَالَ:

قِيْلَ يَآرَسُولَ اللَّهِ، مَنْ أَسْعَلُ النَّاسِ بِعَفَاعَتِكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ-صلى الله عليه وسلم- «لَقَلُ ظَنَنُكُ يَا أَيَّا هُرَيْرَةً أَنْ لاَيَنُ أَلَيْ عَنْ هَذَا الْحَدِيثِ أَحَدٌ أَقِلَ مِنْكَ لِسَارَأَيْتُ مِنْ حِرْصِكَ عَلَى الْحَدِيثِ، أَسْعَدُ النَّاسِ بِشَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ هَنْ قَالَ لا إِنّهَ إِذَّ اللَّه، خَالِصًا مِنْ يَقْلِيهِ أَوْنُفُسِهِ « (٢٠١١)

رجال الحديث

دوی د ابرآهیم بن سعد زهری.سلیمان بن هلال، عبدالرحمن بن ابی الزناد. عبدالرحمن بن ابی الموال. عبدالعزیز بن ابی حازم. عبدالعزیز بن ابی سلمه الماجثون.لیث بن سعد. مالک بن انس او محمدبن جعفربن ابی کثیر هنځ نه روایت کوی

دده نه روايت كوونكو كښي امام بخاري. هارون الحمال، محمد بن يحيي. ذهلي. ابوذرعه. ابوحاتم. عبدالله بن شعيب او محمدبن اسماعيل ترمذي تشخ وغيره دي. ،

الابواب والتراجم(ص٥٣) -

⁾ عبدة القاري(٢٠ د١٢٥) -

⁾ حواله بالا ا، كواله بالا

^{*)} كشف الباري(۸.۹/۱) -*) تهذيب الكمال(۱۶۰/۱۸) وسير اعلام النبلاء(۲۸۹/۱۰) -

⁾ تهديب الكمال(١٨/١٨/١٨) وسير اعلام النبلاء(٣٨٩/١٠)-

```
امام ابوحاتم والم فرماني صدوق أ
```

يعقوب بن شيبه سدوسي الله فرمائي الله ن

امام دار قطني بكيلة فرماني حجة

امام خليلي ورمائي ثقة متفق عليه ر

امام ابوداود يمين فرماني ثقة ن

حافظ ذهبي فرمائي لقةمكثرن

بيا فرماني الامام الحجة ...من تهلاء الرجال ٢٠

دغه شان هغوي فرمائي ثقة جليل ٢٠

ابن حبار گهنه و وی په کتاب الثقات کښي ذکر کړی دی (^) تنبيه :دوی باره کښې د امام ابوداود توثيق مونږ نقل کړې دې خو هم د امام ابوداود نه حافظ ذهبي او حافظ بن حجر رحمهماالله ددوي تضعيف نقل كري دي . ` ،

حافظ ابن حجر کالی په هدی الساری کښې د جرح نه انکار کولو سره ليکلې دي

وقعل سؤالات إي عبيد الجرى عن إلى داود قال: عهد العزيز الاديس ضعيف. فأن كأن عنى هذا ففيه نظر لانه لقة في موضع آخي، وروى عن هارون الحمال عنه ولعله ضعف رواية معينة له وهم فيها، اوضعف آخر، اتفى معه في اسم، وفي الجيلة فهوجرح مردود (")

مطلب دادې چې په سوالات عبيدالاجرۍ کښې دی چې امام ابوداود کونځي دې ضعيف ګرخولې وو.که چرې د امام ابوداود مراد هم دغه عبدالعزيز اويسې وي نو قابل د کتلو ده.خکه چې په بل ځائې کښې هغه په خپله په دې توثيق کړې دې. او د هارون الحمال په واسطې سره دده نه

⁾ تهذيب الكمال(١٤٣/١٨)-

^{ً)} حواله بالا

⁾ تهذيب التهذيب(٣٤۶/۶)-

^{ً)} حواله بالا

نُ تهذيب الكمال(١۶٢/١٨) وسير اعلام النبلاء(٣٨٩/١٠) وحاشية سبط ابن العجمي على الكاشف (۶۵۶/۱) - رقم(۳۳۹۷) -

م) الكاشف (۶۵۶/۱) رقم (۳۳۹۷) -

⁾ سيراعلام النبلاء ١٠ /٣٨٩)-

^{^)} ميزان الاعتدال(٢/٣٠/)-

[&]quot;) كتاب النقات لابن حبان(٣٩۶/٨)-') او گورئ ميزان الاعتدال (ج٢ ص ٤٣٠) و تهذيب النهذيب (ج٤ ص٣٤٧)_

[&]quot;) هدى السارى(٢٠٤)-

نې روايتونه هم کړې دی.ممکنه ده چې ددې تضعيف وجه څه معين روايت وی چې په هغې کښې هغه ته وهم شوې وی يا ددې نه يو بل عبدالعزيز مراد وی.چې د نوم د اشتراک د وجې اشتباه اوشوه.بهر حال دا جرح مردود ده.قابل قبول نه ده

دده د وفات كال معلوم نه دې غالبا ۲۲۰ هجري پورې ژوندې وو ١٠ رحية الله تعالى رحية واسعة

اليمان دا ابومحمد سليمان ابن بلال تيمي قرشي مدني پيشيد دي. ددوي حالات د کتاب الايمان باب امور الايمان د لاندې مختصراً او کتاب العلم باب طرح الامام البسالة على اصحابه ليختبر

مامندهم من العلم د لاندې تفصيلا تير شوي دي، "،

⊙عمرو بن ابن عمرو دا عمرو بن ابی عمرو میسره مولی المطلب بن عبدانه بن حنطب قرشی مخزومی مدنی گفت دی ابوعثمان ددوی کنیت دی ۲.

دوی د خپل مولی مطلب بن عبدالله بن حنطب، حضرت انس بن مالک تائی، سعید بن جبیر. سعید بن ابی سعید المقبری، عاصم بن عمر بن قتاده، عبدالرحمن بن هرمز الإعرج او عکرمه مولی ابن عباس تنظر وغیره نه روایت کوی

دده نه روایت کوونکو کښي ابراهیم بن سوید ، اسماعیل بن جعفر بن ابی کثیر . سلیمان بن بلال، عبدالرحمن بن ابی الزناد ، عبدالعزیز بن محمد دراوردی . یزید بن عبدات بن الهاد او یعقوب بن عبدالرحمن اسکندرانی هیچ وغیره دی ؟

اماء احمد بخر فرمائی لیس به باس ()

امام ابوزرعميك فرماني ثقة

امام ابوحاتم وينه فرماني الاباس به رئ

ابن حبانﷺ دوی په کتاب الثقات کښې ذکر کړی دی.او لیکلې ښې دی رسا انحا،یعتبر حدیثهمن روایةالثقاتعنه ۸۰

امام عجلي مُن في فرماني ثقة ينكر عليه حديث الههيمة

) سیراعلام النبلاء(۲۸۹/۱۰)) کشف الباری(۶۵۸/۱)و (۲۱۷/۳) -

رُ تهذيب الْكَمَالُ (١٩٨/٢٢)-

ٍّ) تهذيب الكمال(١٤٨.١۶٩/٢٢)-

^دٍ) تهذيب الكمال(١۶٩/٢٢)-

ٌ) تهذیب الکمال(۲۲/۱۷۰)۔ ''ر

°) حواله بالا

ً) تهذيب التهذيب (٨٣/٨)-

ساجى يولية فرمائي صدوق الااته يهم ()

حافظ ابن حجر فرمائي لكة ديمادهم ()

ددې توثيقاتو په مقابله کښې د دوي باره کښې د جرح او تعديل عالمانو نه جرح هم منقوله ده

چنانچەامام يحيى بن معين فرمائي الايحتج بحديثه () -

بيا فرمائي كان مالك يروى عن عبود بن إن دمرو وكان يستضعفه ()

دغه شان هغوى فرماني عبروين الى عبرو الذي يروى عن عكرمة اليس بالقوى ٢٠٠

دَغه شان د هغوي نه نقل دي مبروين ابي عبروليس بحجة ٢٠٠

جوزجاني من فرماني مضطهب الحديث

امام نسائي ومنائي عبروين إلى عبودين المعبود ليس بالقوى في الحديث وان كان قدروى عنه مالك ﴿

أمام ابوداود وركية فرماني ليس هوبذاك ()

خو حقیقت دادې چې په عمرو بن ابي عمرو باندې دا تنقید دهغه د عامو احادیثو د وجه نه دې بلکه هغوی د عکرمه نه یو حدیث نقل کړې دې.د هغې تردید د لاندې محدثینو په ده باندې کلام کړې دې.

چنانچه د امام بحیی بن معین نه اس ابی مریم نقل کوی عبره بن ان عبره لقة ینک علیه حدیث عکرمة عن ابن عباس ان النبی منظ قال: اقتلوا الفاعل والبفعول به ر"

دغه شان امام عجلي مُنظة فرمائي كتدينكم عليه حديث المهيمة ()

امام نسائی چې څه فرمانیلې دی چې لیس **بالقوی فی الحدیث** نو دا دې مطلق تضعیف نشی ګنړلې.امام نسان*ۍ پن*ځ دا قسم جملې د هغه کس په باره کښې فرمانی چې حافظ نه وی.

^{&#}x27;) حواله بالا

⁾ تقريب التهذيب(ص٢٥) رقم(٥٠٨٣)-

⁾ الضعفاء الكبير للعقيلي (٢٨٩/٣) رقم (١٢٨٩)-

^{&#}x27;) حواله بالا

^د) حواله بالا

^{*)} الكامل لابن عدى(١١۶٩/٥)-

۷) الكامل(۱۱۶٬۵) وميزان الاعتدال(۲۸۳٬۳) رقم (۶٤۱٤)-

[^] السنن الصغرى كتاب المناسك الحج باب اذا اشار المحرم الى الصيد فقتله الحلال رقم (٢٨۶٩) ـ. ') تهذيب الكمال(٢٢ . ١٧٠) -

^{&#}x27;) الكامل لابن عدى(١١٤/٥)-

^{`)} تهذيب التهذيب(٨٣/٨)-

مطلقا ضعیف گنرل مقصود نه دی (۱)

دغه شان د امام ابوداود *کوشتهٔ* تنقید هم ددې ح**دیث**الههیم**هٔ** په بنا باندې دې.چنانچه هغوی چې چرته ليس هوېنلك اوفرمائيل نو هلته ئې دهغې نه پس د علت په طور ددې خبرې وضاحت اوكرو روى عن عكهمة عن ابن عباس من الى بهيبة فالتلوادن

دغه شان امام بخاري ركيلي هم فرمائي وي عن عكم مة في تصة البهيبة فلا ادرى سبح امرلاري دغه وجه ده چې امام ابن عدي پيميلا په دې کښې اکثر اقوال په خپل سند سره نقل کولو نه پس اوفرمائيل:

عبروبن إب عبروله احاديث عن انس غيرما ذكرت و روى عنه مالك وهوعندى لا باس به لان مال كالايروى الا عن لقة اوصلاوق ()

یعنی د عمرو بن ابی عمرو د حضرت انس اللئونه د مذکوره حدیث نه علاوه نور هم روایات دي،د هغوي نه امام مالک گرینه هم روایت کړې دې،هغه ځما په نیز ۷ باس په دي خکه چي امام مالک د ثقه نه يا د صدوق نه روايت کوي ' بيا حافظ ابن حجر الله فرماني چې علماء ته اصل كلام د ده د عكرمه نه روايت باندې دې. او امام بخاري مُؤللة دده د عكرمه په طريق سره يو روايت هم نه دې اخستې،بلكه په صحيح بخاری کښې دده صرف شپږ احادیث نقل دی څلور د حضرت انس گاتئ په واسطې سره. یو حدیث د سعید بن جبیر عن ابن عباس په طریق سره او یو د سعید بن ابی سعید مقبری عر ابو هريره لاللئ په طريق سره. او د عکرمه عن ابن عباس په طريق سره امام بخاري يو حديث هم اخستی نه دی، (۵)

حافظ ذهبي ټول احوال مخکښې راوستلو سره ددوي باره کښې فيصله کړې ده چې حديث صالح حسن منحط من الدرجة العليا من الصحيح () يعنى دده احاديث حسن دى، خو بيا هم صحيح د اوچتې درجې نه کم دی ت

اګرچه حافظ ابن حجرﷺ فرماني چې حق دا دې چې عليا لفظ حذف کول پکار دي.٧،

^{ً)} عن امام نسائي ينقل هكذا اي(ليس بذلك القوى" في حق احمد بن بشير الكوفي. وفي هذا ق الحافظ" فأما تضعيف النسائي له فمشعر بانه غير حافظ" هدى الساري(ص٣٨٤)-

^{ً)} تهذيب الكمال(١٧٠/٢٢)-

^{ٔ)} تهذیب التهذیب(۸۳/۸)-

⁾ الكامل لابن عدى(١١٧/٥)-

د ۲) هدی الساری(ص۴۳۲)-

ميزان الاعتدال(٢٨٢/٣)-

^{΄)} تهذیب التهذیب(۸۳/۸)-

دغه شان ابن القطان ﷺ اوفرمانيل الرجل مستضعف واحاديثه تدل على حاله رأيعني ددې سړي تضعيف شوې دې دده حديثونه دده په حال باندې دلالت کوي نو حافظ ذهبي الله فرمائي ما هوبمستضعف ولابضعيف نعم ولاهولى الثقة كالزهرى وذويه ()

يعني نهخو دده تضعيف شوي دي او نه په واقع کښي ضعيف دې البته هغه د امام زهري او د

هغوی د طبقی د راویانو په شان نه دی ګویا د هغه په باره کښې انصاف والارائې داده چې دوی زیات قوی خو نه دی خو ددوی احادیث د رد قابل هم نه دی،بلکه د احتجاج اود استشهاد قابل دی. دغه رنګې د اصول سته ټولو مصنفينو ددوي روايات اخستي دي (۲) والله اعلم

د ابوجعفر منصور د خلافت په شروع كښې ددوي وفات شوې وورځ رحمة الله تعالى رحمة واسعة سعید بن ابی سعید المقبری دا آبوسعید بن ابی سعید کیسان مقبری مدنی کیشید دی. ددوی حالات د کتاب الایان باب الدین پسم دلاندې تیر شوې دی ۵،

@حضوت ابوهريوه المُتَلِيَّة وحضرت ابوهريره المُتَلِيَّة حالات دكتاب الايمان باب امور الايمان و لاندې تیر شوی دی(۱)

قوله: اَنهُ قَالِ: قِيل: يارسول الله: حضرت ابوهريره الله ﷺ فرماني چې تپوس او کړې شو چى يا رسول الله...

د ابوذر او کريمه په نسخو کښې تيل دې، او په نورو نسخو کښې تيل نشته، او دا صحيح ده چې د د دې د دې د دې د دې، اد دې، غالبا چې قلت وو نو د يو راوى يا د کوم کاتب د تصرف نه

سين سور . ځکه چې په خپله امام بخاري دا روايت مخکښې کتاب الرقاق کښې ذکر کړې دې،په هغې

کښې دی انعقال: قلت: يا رسول الله. رژ دغه شان سنن نساني کېرې کښې هم قلت دې (^

) ميزان الاعتدال(٢٨٢/٣)-

⁾ حواله بالا

⁾ تهذيب الكمال(١٧١/٢٢) وهدى السارى(ص٤٣٢)-

⁾ تهذيب الكمال(١٧١/٢٢) وتفصيله في(التدييل على كتاب تهذيب التهذيب(ص٣٠٥_٣٠٧)_ ^د) کشف الباری(۳۳۶/۲)-

 ⁾ کشف الباری(۱۶۵۹)-

^{&#}x27;) فتح الباري(١٩٣/١)-

[^] صحيح البخاري(٩٧٢/٢) كتاب الرقاق باب صفة الجنة والنار،رقم(٤٥٧٠)_) السنن الكبرى للنساني (٤٤٢/٣) كتاب العلم باب الحرص على العلم رقم (٢٥٤٢)_

كثفُ البَاري ٣ ع كتابُ العلم

د اسماعیلی په روایت کښې دی انهسال. دل

د ابونعيم په روايت كښې دى ادااهاهريو قال:يا رسول الله ... د)

لهذا دا خبره آخری ده چې تيل تصحيف دې، والماملم

. قوله: من اسعال الناس بشفاعتك يوم القيامة؟: د قيامت به درخ سنا د شفاعت د تولو نه زيات حقد ارسعادت مند به څوك وي؟

د شفاعت باره کښې د اهل سنت والجماعة او معتولؤ اختلاف:ددې حدیث نه دا معلومه شوه چې حضورپاک ته به د قیامت په ورخ د ډیرو خلقو شفاعت کوی،او دا د اهل سنة والجماعة مذهب دې،خوارج او بعضې معتزله د شفاعت نه انکار کوی،"،

خوارج او معتزله د قرآن کریم آیتونو (ف**ما تنفعهم شفاعة الشافعینx**۲) او (**ما للظلبین من ح**یم ولا**شفیع یطام۲**۴)نه استدلال کوی او د حدیث باب او ددی پشان د نورو د شفاعت د حدیثونو تاویل کوی چی ددی ندمراد د درجاتو اوچتوالی او زیاتوالی د ثواب دی^۲)،

خو اوّل خو ددوی د آیت نه استدلال صحیح نه دنی خکه چې په دې کښې د کفارو د شفاعت نغۍ ده،او اهل سنة د مذنبینو او د ګناهګارو د شفاعت قائل دی()

او بیا احادیث د شفاعت صریح سره سره متواتر هم دی ۸ لهّذا نه خو د هغې بې ځایه تاویل کیدې شي او نه د هغې نه انکار کیدې شي.

دشفاعت قسمونه قاضى عياض والمراكب فرمائى چى د شفاعت بنخه قسمونه دى

۵. د ټولونه اول شفاعت شفاعت عظمی دی چې حضورپاک کی به د خلقو د محشر د ویړې ند د پې کولو د پاره او د حساب کتاب شروع کولو د پاره کوی

٠ دويم شفاعت به د هغوى د څه خلقو جنت ته بغير حساب داخليدو د پاره وي

 دريم شفاعت به د هغه خلقو باره کښې وی چې د خپلو اعمالو په وجه به د اور قابل جوړ شوی وی،نو د شفاعت نه پس به هغوی بغیر د شفاعت نه جنت ته داخل کړې شی

څلورم شفاعت به د هغه ګڼه ګارو په باره کښې وی چې جهنم ته به داخل کړې شوې وی
 او د سفارش نه پس به د هغه ځانې نه راویستلې شي

^{&#}x27;) فتح البارى(١٩٣/١)-

^{ً)} حواله بالا

⁾ شرّح العقائد النسفية مع شرحه النبراس(٢٣٨ و ٢٣٩)وعمدة القارى(١٢٧/٢)-

^{ً)} المدَّثر ٤٨) –

^د) سورة غافر /۱۸)-

مُ عَبِدَةَ القَارِي(٢/٢٧)-

^{&#}x27;) حواله بالا

^{^)} حواله بالا)-

نخم سفارش به د جنتیانو په جنت کښی د درجو د اوچتولو د پاره وی.ددې معتزلد

علامه قرطبي الله و اووم شفاعت هم اضافه كړې ده، چې حضورباک تلل به د خپل امت د

پاره سفارش کوی چې د ټولو خلقو نه دې مخکښې جنت ته داخل کړې شي. حافظ *کولځ* فرمانۍ چې په کوشش سره ماته يو اتم سفارش هم ميلاؤ شو، هغه دا چې د کومو خلقو نيکئ او ګناهونه برابر شوې وي، د هغوی د جنت ته د داخليدو سفارش به کولې شي.

دغه شان به يو بل سفارش د هغه خلقو باره كښې وي چاسره چې د لااله الاالله نه سوا بله نيكي نه وي (١) والله اعلم

قوله: قال رسول الله 微: لقد طننت يا ابا هريرة، ان لا يسالني عن هذا الحديث احد أول منك؟ لما رأيت من حرصك على الحديث: حضورباي الحديث الحديث المورباي الم

اهل رفع او نصب دواړه وئيلې شي، رفع د احد صفت يا ددې بدل ګرځولو سره. او نصب خو یا به د ظننت مفعول ثانی ګرځولو سره یا د 'احد'نه حال ګرځولو سره وی، 'احد' اګرچه نکره ده خو د نفي راتلو سره كيدلو د وجه دې لره ذوالحال جوړول صحيح دي، څنګه چې ونيلې شي ماكان احدمثلك دغه شان اول د ظرفيت د وجه منصوب كرخولي شي (٢) والله تعالى اعلم قوله: اسعد الناس بشافعتي يوم القيامة من قال: لا اله الا الله، خالصا من قلبه او نفسه: خما د سفارش به د قيامت په ورخ هغه كس زيات مستحق وي چا چې په اخلاص د زړه نه لااله الاالله ونيلې وي

په تلهه اونفسه کښي او د شک د پاره دې،خو مراد او مطلب د دواړو يو دې،^۲،

يو اشكال او د هغې جواب دلته يو اشكال دا كيږي چې اسعد اسم تفضيل دې،چې ددې خبرې تقاضا كوى چې مفضل او مفضل عليه په نفس فضيلت كښې شريك وي،لهذا دلته به دا معنى راوځى چې څوک د ٧ اله الاالله منونكې وي هغه به مطلقا د هغوي ﷺ د شفاعت قابل

⁾ شرح النووى لصحيح مسلم(١٠٤/١) كتاب الايمان باب اثبات الشفاعة واخراج الموحدين من النار وفتح الملهم(٣۶١/١) وعمدة القاري (٢٧/٢. ١٢٨)-

⁾ عمدة القاري(١٢٤/٢) وفتح الباري(١٩٣/١) ً) فتح البارى(١٩٣/١)-

وي.او څوک چې د زړه د اخلاص نه منونکې وي هغه به زيات حقدار وي.حالانکه چې څوک نَی د زَرِه د اخلاص نهٔ نه وانی،صرف په ژبه سَره آووانی او د هغه په زره کَنِی دا خبره نه وی ّنو هغه به چرې هم د هغوی ﷺ د سفارش قابل نه وی.خکه چې هغه منافق دې

ددې جواب دادې چې دلته اسعه د سعيه په معنى باندې دې څنګه چې وئيلې شي الناتهن والاشج اعدلا بق مردان ای عاد لا بق مردان ناتص د يزيد بن وليدبن عبدالملک لقب دي، او اشج حضرت عمر بن عبدالعزيز ته وليلي شي.دلته اعدلا د عادلا په معني كښي دي، كني باقى بنومروان خو به ټولو ظلم كولورا،

دويم جواب دادې چې په اصل كښې لااله الاالله په اخلاص سره ونيلو والا: پاره مختلف درجې به وي.يو د خلوص ابتدائي درجه ده چې دکومې نه د نفاق نفي کيږي.هغه خو د خلاصي موندلو د پاره د هر چا په حق کښې شرط ده، که چرې هغه نه وي نو سړې خو بالکل مومن نهٔ دې،ددې نه پس د خلوص مختلفي درجې دی.د بعضو خلوص د اولې درجې نه اوچت وی.او د بعضو د دويمې درجې نه اوچت وی وهکذا. اوس چې د کوم سړی خلوص په لااله الاالله کښې اوچتې درجې والا وي هغه به د ټولو نه زيات حقدار وي.او که د چا کم وي نو د دې نه پس به د هغی نمبر راځی ۲

په حديث باب من قال لا اله الا الله خالصا من قلبه کښي د خلوص نسبت چې قلهه طرف ته

شوې دې،نو ددې نه هم دغه مبالغه په خيال کښې راځی، علامه زمحشری ليکلی دی چې د کوم اندام نه يو کار اوشی،نو که ددې کار نسبت دې اندام طرف ته اوشي نو دا به د مبالغې د پاره مفيد وي څنګه چې ونيلې شي هذا مما ايصرته عيلي ومماسمعته انن ومماع فه قلبي ()

دلته هم د خلوص اضافت قلب طرف ته شوې دې په دې کښې به هم مبالغه وي او مبالغه زيادت فعل ته مستلزم ده والله اعلم

تنبيه: په حديث باب كښې اګرچې صرف لااله الاالله ذكر دې خو دا د ټولې كلمې د پاره عنوان او شعار جوړ شوي دي، لهذا من قاللااله الاالله سره محمد رسول الله هم لګيدلي دي، والله اعلم نکته په دې حدیث کښي من قال لااله الاالله قید سره د مشرک نه احتراز راغلو،او عالصا من قلهه ندمنافق يقيني طور سره بهر شورع والله سهحانه وتعالى اعلم وعلمه اتم واحكم

⁾ عمدة القارى(١٢٧/٢)-

⁾ فتح الباري(١٩٤/١)-

^{ً)} الكَاشف عن حقائق غوامض التنزيل وعيون الاقاويل في وجوه التاويل(٣٢٩/١) تحت تفسير قوله تعالى:فانه اثم قلبه) (البقرة /٢٨٣)-

^{ً)} حواله بالا

٣٠-باب: كَيْفَ يُقْبَضُ الْعِلْمُ

دا دويم باب دې چې کوم لره امام بخاري اصالهٔ د کيف نه شروع کړې دې امام بخاري ددې ترجمه الباب د لاندې چې کوم روايات او آثار ذکر کړي دی د هغې نه معلوميږي چې د علم د اوچتولو صورت به دا وي چې عالمان به اوچت کړې شي او د هغوي علم به هغوي سره سره اوچتشي ځکه چې د هغوي ناتبين به نه پيدا کيږي ()

د اول باب سوه مناسبت او مخکښې باب کښې د حرص حدیث ذکر دې او مذکوره باب کښې د د رفع حدیث ذکر دې او مذکوره باب کښې د د رفع حدیث ذکر دې په دواړو کښې د ضدیت نسبت دې وېضدهاتټین الاشیاء نو دېباب لره د مخکښې باب نه پس په دې خبره باندې د زور اوړلو د پاره راوړلې شو چې د علم د حاصلولو اهتمام دې اوکړې شي، ځکه چې علم به اوچت کړې شي لهذا ددې د اوچتولو نه حاصلولو اهتمام دې اوکړې شي. نگه دې يا مام په کارې شي لهذا ددې د اوچتولو نه

مخکښي دې دا حاصلول او ددې نه فانده اخستل پکار دی (^۲) مقصد د ترجمة الباب: د امام بخاری مقصد د تعلیم اوتذکیر په اهتمام باندې خبردارې ورکول دی، ګویا دا وئیل ني مقصود دی چې خلقو له د علماؤ نه د علم حاصلولو اهتمام کول پکار دی، ځکه چې د علم اوچتیدل د قیامت د قائم کیدلو سبب دې او قیامت به قائمیږی د الله د ناراضګئ په وخت کښې ،هر کله چې ګناهونه زیات شی، لهذا د ګمراهی د سبب اختیارولو نه

بچ کیدل ضروری دی، ٔ

گويا چې امام بخاري صورة دا فرمائيلې دی چې دعلم د ضائع کيدلو صورت به څه وي،نو روايت نه نې اوښودل چې عالمان به ختم شي،او دې سره سره به د هغوى علم هم او چټ شي،خو په حقيقت کښې امام بخاري دا فرمائيل غواړي، چې علم حاصلول پکار دى او علماء له د تعليم او تبليغ اهتمام کول پکار دى،خکه چې کله د علم ختميدل د عالمانو ختميدل دى نو اوس خلقو له پکار دى چې د عالمانو د او چتولو نه پس د هغوى نه علم حاصل کړى او علماء له دا پکار دې چې خپل علمونه نورو ته اورسوى.

حضرت شيخ الهند يُرَيِّنُهُ في هم ذا خبره أرشاد فرمائهلي ده، چنانچه هغوى فرمائي:

مولف گینگ د علم د او چتولو حالت ښودل غواړی، نو په حدیث کښې صفا موجود دی لایقیش استواماولکن یقیض بقیض به به به به به به به به کاره معلومه شوه، چې د عالم نه د علم د تلو منشاء تبلیغ او اشاعت شروع وی نو دا حالت به منشاء تبلیغ او اشاعت شروع وی نو دا حالت به څنګه راشی کمامرف به با به به بالجمله د مولف غرض بلکه د حدیث منشا د اشاعت علم تاکید او تعمیم دی، د عبربن عبدالعزیز د ارشاد نه ددې ترجعې غرض صفا ښکاره علم تاکید او د مخکښې ترجعې تشریح هم او شوه د اول باب پورا والې په دویم باب کښې د کړی. او د د کې تروو کړ د وی ارشاد نه دا هم ښکاره شوه چې د علم خورولو د پاره د

ا) الكنز المتوارى (٣٣٣/٢)-ا) عمدة القارى(١٢٨/٢)-

عالمانو په ذمه علانيه علمي مجلسونه قائمول ضروري دي،په دې کښې د متعلقينو د پاره آسانتياً ده او د هغوی د پاره ډير ترغيب او تحريص دې،ددې مقابله کښې چې د يو مجلس خاصوالي اوشي او بل څه قسم قيد اولګولي شي نو په دې صورت کښي صحيح طريقي سره استفاده او افاده نشي كيدلي، او دا د علم هلاكت دي فالعدر الحدر "ل

وَكَتَبَ عُرُبُنُ عَبْدِالْعَزِيزِ إِلَى أَبِي بَكْرِبْنِ حَزْمِ الظُّوْمَا كَانَ مِنْ حَدِيثِ رَسُولِ اللَّهِ-صلى الله عليه وسلم - فَأَكُتُهُمُّ فَإِلِّي خِفْتُ ذُرُوسَ الْعِلْمِ وَذَهَا بَ الْعُلَمَاءِ، وَلاَ تَقْبَل إِلاَّ حَدِيثَ النَّبِي - صلى الله عليه وسلم-، وَلَتُفَفُّوا الْعِلْمَ، وَلَتَغْلِسُوا حَتَّى يُعَلِّم مَنْ لاَ يَعْلَمُ، فإنَّ الْعِلْمَ لاَ يَهُلكُ حَتَّم يَكُونَ سِرًّا.

حضوت عمر بن عبدالعزيز: دوى امام العادل الحافظ العلامة المجتهد الزاهد امير المومنين عمربن عبدالعزيزين مروان بن الحكم بن إلى العاص بن امية بن عبد الشبس بن عبد مناف بن قمى بن كلاب ميد پينتودي()

دوى د عبدالله بن جعفر بن ابي طالب،سائب بن يزيد، سهل بن سعد تُفكُّم نه روايت كوي. حضرت انس للشيء د دوى شاته مونخ اوكړو او او وئى فرمائيل ما رايت احدا اشبه صلاة برسول

الله والمنظم من هذا الفتى ر) يعني په مونځ كښې ددې ځوان نه زيات د حضور 微 مشابهت اختيارولو والاما څوك ليدلي

ددې نه علاوه د سعيد بن المسيب، ابوسلمه بن عبدالرحمن بن عوف، ابوبكر بن عبدالرحمن. عامرين سعد. يوسف بن عبدالله بن سلام راحمهم الله) نه روايت كوي

دده نه ابوسلمه روهو شیخه ایشا ابوبکر بن حزم، رجابن حیوة، امام زهری، ایوب سختیانی، حميد الطويل او يحيى بن سعد الانصاري تينغ وغيره ډير حضرات روايت نقل كوي "ً،

حضرت عمربن عبدالعزیز کیشکر ۲۱ یا ۲۳ هجری کښې پیدا شور۵،ددوی د مور بي بي نوم بعضي حضراتو ام عاصم حفصه بنت عاصم بن عمر بن الخطاب سودلي دي،او بعضي حضراتو ليلى بنت عاصم بن عمر بن الخطاب (٢)

په ماشوم والي کښې يو ځل اصطبل ته لاړو .هلته يو اس ورته لته ورکړه ،چې د هغې نه نې په تندي باندې زخه راغملو .د هغه وخت نه د اشج لقب پې کيښودې شو .چنانچه هغوي ته

⁾ الأبراب والتراجية (ص٥٣، ٥٤)-

مُ) تهديب الكمال(٢١ ٤٣٣. ٤٣٣) وسير اعلام النبلاء (٥/ £ ٢٦٪ عند

⁾ تهذيب الكمال(٢١/٤٣٤)- وسير اعلام النبلاء(٥/٤٠٤هـ

[&]quot;) تهذيب الكمال(٤٣٤/٢١ ع-٤٣۶)وسيراعلام النبلاء(١١٤/٥. ١١٥.

د) تهذيب الكمال(٤٣۶/٢١)-

⁾ تهذيب الكمال(٤٣٣/٢١)-

اشجهنى امية هم ونيلي شين

نقل دی چې حضرت عمر الله اوفرمائيل ان من ولدی دجلابوجهه شتر) يملاً الاد ضعدلا د)خما بد اولاً کښې به يو کس داسې وي چې د هغه په مخ به زخم وي هغه به زمکه د انصاف نه ډکړ كړى دې اوس لا وړوكې وو چې قرآن ئي ياد كړو .يو خل په مآشوم والي كښې په جړا شو ،مور

ترې نه تپوس اوکړو نو ونې ونيل چې ماته مرګ راياد شوې وو ، ځکه مې اوژړلد؟ د ده پلاړ ته چې کله د مصر ولايت ميلاؤ شو نو دې لابالغ نه وو ،دوی چې کله د هغه ځانې نه د خپل كور والاسره روان شو،نو دوي اوفرمائيل چې تاسو ما مدينې ته اوليږني خه به هلته د علماؤ فقهاؤ په خدمت کښې اوسيږم.د هغوي آداب به زده کوم،چنانچه هغوي هلته کښې اولیږلې شو.هلته مدینه منوره کښې لې علم حاصلولو.او د ماشوم والي نه په دوي کښې علمي استعداد او د پوښوالي نښې پيدا شوې ت

داود بن ابي هند فرماني يو ورځ چې کله عمر بن عبدالعزيز د مسجد نبوي په يو دروازه باندې داخل شو نو يو سړي اونيل چې اوګوره فاسق عبدالعزيز بن مروان، خپل خوې مونږ ته راوليږلو،چې فرائص او سنن زده کړی،او هغه دا ګنړی چې د هغه نه پس به دې خليفه جوريدي، أو د عمر بن الخطاب به سيرت باندى به چليري داود بن ابي هند فرماني چي به الله قسم چې دا ټولې خبرې د مرګ نه مخکښې مونږ اوليدلې (١)

د پلار د وفات نه پس عبدالملک بن مروان حضرت عمر بن عبدالعزیز راوغښتلو او د خپل اولاد پشان ئي اوساتلو، او بيا د خپلي لور فاطمه بنت عبدالملک سره ورله ئي نکاح اوکړه، چې د هغې په باره کښې يو شاعر وئيلې دي:

بنت الخليفة، والخليفة جدها:: اخت الخلائف، والخليفة زوجها (V

حافظ ابن كثير مُن على كوى چى څوك زنانه ددې صفتونو مالكه وى او څوك نه وى 🗥 د ولید بُن عبدالملک په زمانه کښې ۸۲ نه ۹۳ هجری پورې د مدینې منورې ګورنز وو،په دې دوران کښې د هغه ځانې د علماؤ او فقهاء سليمان بن يسار.قاسم،سالم، خارجه پښځ وغيره پهرانې او مشورې سره کار کولور^

ً) سير اعلام النبلاء(١١٧/٥. ١١٨) و تهذيب الكمال(٤٣٩/٢١)

⁾ تهذيب الكمال(٤٣٧/٢١) وسيراعلام النبلاء (١١٥.١١٤/٥)-

⁾ شتر (س) شتر ا (شليدل) القاموس الوحيد (ص ١ ٨٤)-

⁾ سيراعلام النبلاء (١١٤/٥)-

أ) تهذيب الكمال(٤٣٧/٢١) وسير اعلام النبلاء(١١۶)-

ن) سيراعلام النبلاء(١١٧/٥)-

م تهذيب الكمال(٤٣٨/٢١) وسير اعلام النبلاء ١١٤/٥)-

⁾ البداية والنهاية (٣٣٢/۶) وسيراعلام النبلاء (١١١٧/٥)-

^{^)} البداية والنهاية (٣٣٢/۶)-

د ولید بن عبدالملک نه پس سلیمان بن عبدالملک خلیفه جوړ شو.نو حضرت عمر بن عبدالعزیز هغوی خپل خصوصی مقرب او وزیر جوړ کړو. چنانچه هم د هغوی د مشورې مطابق د حجاج بن یوسف مقرر شوې کارکنان ئی معزول کړل،د مونځ وختونه روستو کړې شوې وو هغې لره نی په خپل وخت باندې د کولو پابندی اوکړي شوه. ()

چې کله سلیمان په مرض الموت کښې مبتلا شو او آخر وخت ته اورسیدلو نو دا غم ورته راغلو چې څوک خلیفه جوړ کړې شی، دهغه یو خونې د قسطنطنیه په مهم کښې تلې وو، ډویم خونې نې وړډکې وو، په دغه وخت کښې الله تعالى د عالم اسلام لونې محسن عالم رباني رجامن حیو د مختلف به دریعه سره کار واخستلو، هغوی ډیر هوښیارتیا سره د حضرت عمر بن العزیز نوم پیش کړو او هغه خلیفه مقرر شور آ

دغهشان يو ځل بيا خلافت راشده قائم شو

د خليفه جوړيدلو نه پس هغوى د خاندان ټول مال په بيت المال کښى جمع کړو، آاو بيا نې هغه د ملک تدبير او کړو چې په حقيقت کښى ازمرى او چيلئ د يو ګودر نه اوبه څکل شروغ کړل ...

په خدیث او علم کښې د هغوی مرتبه څه وه؟ ددې اندازه د عالمانو ددې قول نه کیږی ابن سعد پینتی فرمانی وکان **لتقه** ماموناله فقه وعله وورع، وروی حدیثاکثیرا وکان امام عدل<u>کینی</u>ژ،

امام مجاهد ﷺ فرمائی اتیناه انعلیه فیا برحناحتی تعلینامنه () ایوب ﷺ فرمائی الانعلم احدا مین ادرکناکان آخذ عن بی تی ایمی عبرین عهدالعزیزز) یعنی مونډ چې خومره عالمان لیدلې دی په هغې کښې د حضرت عمر بن العزیز نه زیات مو ځوک طالب حدیث لیدلې نه دې '

عمروبن ميمون ويُراك فرمائي ماكانت العلماء عند عبرين عبد العرير الاتلامدة ()

میمون بن مهران کینی و رمانی اتیناعبرین عبدالعوزونون بزی انه یعتاج الینا نها کنامعه الاتلامذة ، *، حافظ ذهبی کینی دوی په ژوند باندې یو جامعه تبصره کړې ده هغوی فرمانی

قدكان هذا الرجل حسن الخلق والخُلق. كامل العقل حسن السبت، جيد السياسة، حيصاعلى العدل بكل

 ⁽۱۲۵/۵)- سيراعلام النبلاء (۱۲۵/۵)-

⁾ سيراعلام النبلاء (١٢٣/٥، ١٢٣)-

⁾ سيراعلام النبلاء(١٢٩/٥)-

⁴⁾ البداية والنهاية (٣٤٢/۶)-

د) تهذیب الکمال(۲۱/۴۳۶)-

⁾ تهذیب الکمال(۲۱/۸۱)-) تهذیب الکمال(۲۱/۵۱)-

^{&#}x27;) تهذيب الكمال (١٧٥/۶) رقم الترجمة (٢٠٧٩)-

⁾ فهدیب الکمال(۱۲۰/۶) وقع الترجمه(۲۰۱۰)) تهذیب الکمال(۲۱/۵۶) وسیراعلام النبلاء(۱۲۰/۵)-

⁾ سيراعلام النبلاء(١٢٠/٥)-

ميكن، وانى العلم فقيه النفس، ظاهر الذكاء والفهم، اواها منيها، قانتا لله، حنيفا، واهدا مع الخلافة، داطقا بالحق مع قلة البعين وكثرة الامراء الظلبة الذين ملولا، وكرهوا محاققته لهم ونقصه اعطياتهم واخذاه كثيرا مهافي ايديهم مها اخذو لا بغير حق فها ذالوا به حتى سقولا السم فحصلت له الشهادة والسعادة و عداعنداهل العلم من الخلفاء الراشدين والعلماء العاملين ()

یعنی دا سری د صورت او سیرت په لحاظ سره ښه، په عقل کښی پورا، په آدابو کښی بهتر، د سیاست په اعتبار سره جید، د هر ممکن عدل او انصاف حریص، په علم کښی اکثره حصه لرونکی، فقیه النفس، په سوچ او عقل کښی ممتاز، جریدونکی او الله ته رجوع کولو والا، د الله تابعدار، د هر قسم بی دینی نه بیزاره، د خلافت باوجود د دنیا نه بی شوقه وو، باوجود د مدګارانو د کمی او د ظالمانو د زیاتی نه، رښتیا ویونکی وو، دا ظالمان بادشاهان د هغه نه تنگ شوې وه، دوی سره به نی تعاون نه کولو، هغوی ددوی په وظیفو کښی کمی او کړو، او څه چی نی په زور د خلقونه اخستلی وو هغه نی ترې واپس واغښتل، خکه خلق دده نه تنگ راغلل تر دی چی هغوی ته نی زهر ورکړل. دغه شان هغوی ته شهادت او سعادت حاصل شه د داه الله علم ده نه ند دده شد، د اها علم عالمانو کښی اوشو،

شو.د اهل علمو په نيز دده شمير په خلفاني راشدين او باعمل عالمانو کښې اوشو. د علماو يو جماعت چې په هغې کښې اهام احمد بن حنبل پر هم دې واني چې حضرت عمر بن عبدالعزيز هغه مجددين د دين نه ووراېچې د هغوی باره کښې حضور که اوفرماليل

ى چې اناللەيىعىڭلەن، الامةعىلى راس كل مائة سنة مىن يجددلها دينهاز كىعنى الله تعالى به په دې امت كښې د هر سل كالو نه پس يو داسې سركې رالپېږى چې هغه به د هغه دين تازه كوى

ددوى د خُلافت وخَت تقريبًا دُوه نيم كالْهُ وُورْ أَنَّ

دووی وفات په د سل په مرض سره اوشو، او دا هم وئيلې شوې دی چې حاسدينو د دوی غلام ته زر ديناره ورکړل او ددې په ذريعه سره ئي هغه ته زهر ورکړل، چې د هغې نه دوی بيمار شول، او هم کله چې ورته اوئيلې شوو چې دوی ته خو زهر ورکړې شوې دی، نو وئې فرمانيل چې په کومه ورخ زهر راکړې شوې وو ماته هغه ورخ پته ليکيدلې وه، دې نه پس چې هغوی ترې پپوس او کړو چې تا داسې ولې او کړل؟ نو هغه صفا صفا اووئيل چې ماته زر ديناره ميلاؤ شوې دی، وئې فرمائيل چې هغه دينار راوړه، د هغه نه ئې دينار واخستل او بيت المال کښې جمع کړل، او ورته ئې اوفرمائيل چې ته يو داسې ځائې ته لاړ شه چې هلته او نه نه له سه شه بې

تیونی سی. ۲ د حضرت عمربن عبدالعزیز په تجدیدی کارناموکښی یو لویا کارنامه د حدیث د حفاظت

⁾ سيراعلام النبلا(١٢٠/٥)-

⁾ البداية والنهاية (٣٤٧/۶)-

[&]quot;) سنن ابي داود فاتحة كتاب الملاحم باب ما يذكر في قرن المائة رقم (٤٩٩١)-

ا) تهذيب الكمال(٢١/٢١)-

^دم البداية والنهاية(٤٣٩/۶)-

انتظام او اهتمام ده،چنانچه د حديث د جمع كولو او د حديث د ليكلو باقاعده او منظم

اهتمام دو وی په حکم او مشرئی کښې اوشور آ ۱۰۱ یا ۱۰۲ هجری کښې د خلیفه راشد حضرت عمربن عبدالعزیز پین انتقال اوشو . (۲)

رحمه الله تعالى ورض عنه واجزل مثويه واكرمه في دار الكرامة والرضوان.

ا**بوبکو بن هزم**:دا ابوبکر بن محمد بن عمرو بن حزم انصاری خزرجی نجاری مدنی پرینیا دې،ابوبکر ددوي نوم دې،بعضي حضراتو ددوي کنيت ابومحمد ذکر کړي دي^{٠٠}٠

دوي د خپل پلار نه علاوه د عباد بن تميم. سلمان الاغر،عبدالله بن قيس بن مخرمه. عمرو بن سليم زرقي، ابوحبه بدري الله او د خپلې خاله عمره سپيم نه روايت کړې دې.

ُدُده نه رُوایت کوونکو کښي د ده د دوه خامنو عبدالله او محمد نه علاود آمام اوزاعي. يحيي بن سعيد الاتصاري او اسامه بن زيد ليشي پينج وغيره دي. گ

امام يحيى بن سعيد كيليك او عبدالرحمن بن يوسف بن خراش وغيره فرماني التقة " ابن حبان دوي په خپل کتاب الثقات کښي ذکر کړې دی. ۲٪

امام نووى فرمائى وهوانسارى مدن من تابى التابعين وثقات البسلبين واثبتهم

واقدى مينة فرمائى وكان ثقة كثير الحديث ()

ابوبكر بن حزَّمُ ﷺ سليمان بن عبدالملك او حضرت عمر بن عبدالعزيز په زمانه كښي د مدینه منوره آمیر هم پاتی شو،او قاضی هم،دغه شآن هغوی د موسم حج آمیر هم پاتی شوّی دې() د ده د د وفات په کال کښې ډیر اقوال دی ()حافظ ذهبی پخت ۱۲۰ هجری ته ترجیح

تنبيه: مونږ بره ذکر کړې دی چې دده نوم ابوبکر دې او کنيت نې ابومحمد دې.حافظ ابن حجر الله عبدالملک ده د حجر الله عبدالملک نقل کړې دې (۲۰ چې سبقت قلمي ده ، ابوعبدالملک دده د

⁾ كشف الباري(٢٨/١)-

⁾ تهذيب الكمال(٤٤/٢١) و تاريخ الاسلام للذهبي (١٨٧/٧، ٢٠٤)-

⁾ تهذيب الكمال(١٣٧/٣٣)-

⁾ تهذيب الكمال(٣٣/٣٣) -

ن) تهذيب الكمال(١٣٩/٣٣)-

⁾ كتاب الثقات لابن حبان(٥٤١/٥)-

⁾ تهذيب الاسماء واللغات(١٩۶/٢)-

أ) تهذيب الكمال(١٤٢/٣٣)-

⁾ تهذيب الكمال(١٣٧/٣٣)-

١٤٢/٣٣)- الكمال(٢/٣٣) ١٤٣٠)-") الكاشف(١٢/٢ ٤)رقم(٤٥٣٧)-

^{&#}x27;) فتح الباري(١/٤/١)-

پلار كنيت دې نه چې د ابوبكر الرحيه الله تعالى رحية واسعة

قوله: انظر ما كان من حديث رسول الله نظم فاكتبه فأني خفت دروس العلم وذهاب العلماء: اوكوره چي د حضور پاکنه نه چي كوم حديثونه تاته ميلاؤ شوي در حذه ادار كه خكه حي ماته ويره دوجي د دين علم به ختم شي او عالمان به لاړ شي

دى هغه اوليكه خكه چې مانه ويره ده چې د دين علم به ختم شي او عالمان به لاړ شي. د هضرت عمر څخوه د كوره اثر تخويج امام بخارى د حضرت عمر بن عبدالعزيز دا اثر دلته معلق اخستلي دې او مخكښې ئې ددې سند ذكر كړې دې،دغه شان نې دا موصول كړو.

دا اثر امام محمد پیشته به موطا كښي ذكر كړې دې اخبينا مالك اخبينا يحيى بن سعيدان عبربن عبدالعيزكت الى ان بكربن عبروبن حوران: انظرماكان من حديث رسول الله نظيم او سنته او حديث عبراو تحوهذا فاكتهل فان خفت دروس العلم وذهاب العلماء)

يعنى حضرت عمربن عبدالعزيز حضرت ابوبكر بن عمرو بن حزم ته اوليكل چى د حضور ﷺ احاديث.د هغوى سنت يا د حضرت عمر للسُّ سنتونه تلاش كړه،او هغه ماته راوليږه.خكه چې ماته د علم د ختميدلو او د علماء د اوچتولو ويره ده

دغه شان امام دارمي يُسَيِّدُ په خپل سنن کُښي دا موصولانقل کړې دې. د هغې الفاظ دادي

كتب عبرين عبدالعزيز الى ابى بكرين محبدين عبردين حزم ان: اكتب الى بما ثبت عندك من الحديث عن رسول الله ﷺ وبحديث عبر، فالقدر خشيت درس العلم وذهابه `زَّ

دغه شان د دارمي په روايت کښي دا الفاظ دی:

كتب عبرين عبدالعزيز الى اهل المدينة ان:انظروا حديث رسول الله عَرَيْجٌ فاكتبوة فان خفت دروس العلم وذهاباهله: ()

رامهرمزي كيليم هم په خپل سند سره نقل كړې دې

كتب عبر بن عبد العزيز الى اهل المدينة: انظروا ما كان من حديث رسول الله ترييم فاكتبوة فانى خفت دروس العلم وذهاب العلماء (*)

علامه هروى على في دم الكلام كنبى د عبدالله بن دينار على نه نقل كړي دى

لم يكن الصحابة ولا التابعون يكتبون الحديث انبا كانويؤدونها لفظا وياخذونها حفظا الاكتاب الصدقات والش اليسيدالذى يقف عليه الهاحث بعد الاستقصاء حتى خيف عليه الدوس واسرع في العلماء البوت فامر

^{&#}x27;) تقريب التهذيب(۴۹) رقم(۴۸۸) ترجمة محمد بن حزم الانصارى نبه على هذه المسامحة الشيخ محمد عوامة في تعليقاته على الكاشف(۴۱۲/) رقم(۴۵۲۷) -

⁾ الموطأ للامام محمد (ص ٣٩١) ابواب السير باب اكنتاب العلم رقم (٩٣٤)-

[]] سنن الدارمي(١٣٧/١) المقدمة باب من رخص في كتابة العلم رقم(٤٨٧)-

^{*)} حواله بالارَقم(٤٧٧)-^{لم} المحدث الفاضل بين الراوى والواعى(ص٣٧٣، ٣٧٤)-

البومنين مدين مهدالعيرابابكرالحوق فيها كتب اليه ان: انظرماكان من سنة اوحديث عدواكتهه در المومنين مدين مهدالعيرابابكرالحوق فيها كتب اليه ان: انظرماكان من سنة او حديث و نه بيانول او يه حافظه كبني به ني محفوظ كول، البته كتاب الصدقات او نور څه لږ معمولي احاديث. چي د هغي علم د بحث او تلاش كولو نه پس كتونكي ته كيږي، تر دې چه د علم د ختميدلو ويره پيدا شوه او عالمان په تيزني سره رخصت كيدل شروع شول. نو امير المومنين عمر بن عبدالغيز ابوبكربن حزم ته په يو فرمان كښي حكم اوكړو، چې سنت يا د حضرت عمر شخ احاديث چي ميلا فين و اوليكه المان الهادال دا المان مي ميلا في المان الهادال در الميال المان كې ميلا المان الميان المان كې ميلا المان كې ميلا د المان كې كې كې د المان كې د كې د المان كې كې د المان كې كې د المان كې كې د المان كې كې د د د كې د د د كې د د كې د د كې د د د كې د د د كې د كې د كې د د كې د كې د د كې د ك

امام ابونعيم مُسِيدٍ به تاريخ اصبهان كبني دا الفاظ نقل كړي دي.

كتب عمرين عبدالعزيز الى الافاق: انظروا حديث رسول الله ترافي فاجمعوة واحقظوة قانى خفت دروس العلم وذهاب العلماء رن

د تدوين ابتداء او د يوې شبهې از اله حافظ ابن حجر عسقلاني پينځ ليکلې دی چې ددې نه د تدوين حديث ابتداء معلوميږي () يعني د عمر بن عبدالعزيز د دور نه تدوين حديث شروع شو په مقدمه کښې تفصيل ذکر شوې دې چې د کتابت حديث کار د حضورياک کاچ په زمانه کښې شروع شوې وو ،صحابه کرامو ددې باره کښې مستقلي تحتى تيارې کړې وې . البته په دې سلمه کښې سرکاري اهتمام حضرت عمربن عبدالعزيز اوکړلو ()

بعضي خلقو دلته دا اوتخنوله چې امام بخاري دې اثر راوړلو سُره دي خبرې ته اشاره کړې ده چې ابوبکر بن حزم د ټولو نه ړومېي مدون د حديث دې (۶)

خُو امام بخاري ﷺ ته دا نسبت کول صحیح نه دی، هغوی خو اول د تدوین مسئلی ته توجه هم نه ده کړې.

چې تحقیقی طور سره اوکتلې شي نو مونږ په مقدمه کښې بیان کړې دی چې د ټولونه ړومبې ابن شهاب زهري گينځ مدون دې ()

عبدالعزيز بن محمد در اوردي المن فرماني اول من دون العلم و كتبه ابن شهاب ر ٧٠

دغه شان امام زهری مُنَيِّلَةٍ فرمائی امرناعرین عبدالعوریجه السنن، فکتبناها دفترافیعث الى كل ارض له علیها سلطان دفترا (^حافظ سیوطی مُنَیِّلَةِ فرمائی:

^{′)} مقدمة تنوير الحوالك على موطا مالك(ص۵) الفائدة الثانية)-

 ⁾ تعليق التعليق (٨٩/٢)-

^{ً)} فتح الباري(١٩٥/١)-

^{&#}x27;) کشف الباری(۲۶/۱. ۲۷)-

د) مقدمة الساري(٧/١)-

مُ) جامع بيان العلمُ وفضَّله(٩١/١)-

^۷) جامع بيان العلم وفضله (۸۸/۱)-[^]) جامع بيان العلم وفضله (۹۱/۱ ، ۹۲)-

اول جامع الحديث والاثر:: ابن شهاب آمرله عمرا '،

صاحب نيل الاهاني يُنطِيُّ فرماني لعل ابن شهاب اول من جدع على الاطلاق وتبعه هؤلاء (٢٠ البته په دې خاني كښي د حافظ ابن حجر ميني د كلام نه معلوميږي چې اول مدون ابوبكر بن

هم دا خبره علامه قسطلانی په مقدمه ارشاد الساری کښې هم لیکلې ده. ً،

خو دې دواړو حضراتو مخکښې پاپ کتاب العلم کښې اعتراف او وضاحت کړې دې چې د ټولو نه ړومبې د حديثو جمع کونکې او ترتيب ورکونکې هم زهری دې چنانچه حافظ ابن حجر *پوليو* فرماني

اول من دون الحديث شهاب الزهرى على راس البائة بأمر عبو ابن عبدالعزيز ثم كثر التدوين ثم التصنيف، وصل بذلك خيرا كثيرا، فلله الحمد (٥)

يعني د اولې صدئي په آخره کښې د ټولو نه مخکښې حديث د عمر بن عبدالعريز په حکم سره مدون كولو والآابن شهاب زهري دي،بيا تدوين أو تصنيف ډير شو.او ددې نه الحمدننُ **ډیر خیر خور شو**٠

بالكل هم داسي عبارت قسطلاني هم نقل كړې دې, ٧,

علامه حازمي په خپله د امام زهري يُحطين نه نقل كړې دى لم يدون هذا العلم احد قهلي تدويني (٢ تر څو چې د ابوبکر بن حزم تعلق دې نو په دې کې څه شک نشته چې حضرتِ عمر بن عبدالعزيز دوي ته د تدوين حديث حكم كړي وو، بلكه صرف ده ته نا، په هغه دور كښي اهل مدينه او اهل آفاق ته ئي هم ليكلي وو چي د حضورپاک ﷺ احاديث له ترتيب وركړني، څنگه چې دانصوص روستو مونږ د حضرت عمر بن عبدالعزيز په اثر کښې د تخريج په ضمن کښې ذُكّر كړې دى.ددې حكم په نتيجه كښې ابن شهاب هم حديثونه جمع كړّل او او ابوبكر هم،البته د ابن شهاب احادیث حضرت عمر بن عبدالعزیز ته راورسیدلو،او د ابن حزم حديثونه راونه رسيدل، چنانچه امام ابن عبدالبر ميلية ليكلي دى فتونى عبروقد كتب ابن حزم قبل ال يعثبها اليه ث

⁾ الفيه الحديث للسيوطى (ص٧)-

[&]quot;) مقدمة اوجز المسالك (١٤/١)-

[&]quot;) الفاظه" يستفاد منه ابتداء تدوين الحديث النبوى "فتح البارى(١٩٤/١)-

⁾ مقدمة ارشاد السارى للقسطلاني(صY)-

د) فتح الباري(۲۰۸/۱)کتاب العلم،باب کتاب العلم)-

⁾ ارشاد السارى(٢٠٧/١) كتاب العلم باب كتاب العلم)-) الاعتبار في الناسخ والمنسوخ من الأثار (ص٤٥)-

^{^)} التمهيد لابن عبدالبر(٨١/١)-

ددې ټول تقریر نه دا خبره ښه واضحه شوه چې ابن شهابگیتی علی الاظلاق ړومبې مدون دي، او په دغه دور كښې تدوين كولو والو كښې ابوبكر بن حرم هم دې والله اعلم بالصواب

قوله: ولا تقبل الاحديث النبي شريخ ولتفشوا العلم ولتجلسوا حتى يعلم من لا يعلم

فأن العلم لا يهلك حتى يكون سرا إسوا د حضور باك الله دحديث ندبل څه مه قبلوني٠ او علم خور کړنی او تعلیم د پاره کینی، دا چې څوک نه پوهیږی هغه ته دې اوښودلې شې ځکه چې د هغه وخت پورې په علم ضائع کيږي نا تر څو چې هغه پټ نه کړې شي.

ديو روايت مطابق الاتقبل تاء مثناه مفتوحه سره د نهي واحد حاضر معروف صيغه ده.دغه شَانُ لَتَفْسُوا ۚ الْفَشَاء مِنه آمر حاضر معروف صيغه ده ، چې په هغې باندې الام داخل دې، او التجلسوا هم د حلوس نه د امر حاضر معروف صيغه ده، په دې باندې هم لام راغلي دي. دا دري وارد افعال لا يقبل ليفشوا او ليجلسوا ونيلي شوي دي()

دا عبارت د حضرت عمر بن عبد العزيز عملية د اثر جزء دكي يا د امام بخاري خبل كلام دي؟ د ابن بطال د کلام نه معلوميږي چې دا حصه هم د عمر بن عبدالعزيز کلام دې.خکه چې هغوي فرمائي:

في امرعس بن عبد العزيز بكتاب حديث النبي كليم خاصة وان لا يقبل على اتباع السنن وضبطها ٠٠٠٠

يعني خاص طور سره د حضرت عمر بن عبدالعزيز د حضورباك ﷺ احاديثو د ليكلو حكم ورکولو،او ددې نه علاوه د نه قبلولو حکم کښې د سنتو اتباع او او ضبط کولو طرف ته

خو صحیح داده چې دا د امام بخارۍ خپل قول دې ددې دلیل دا دې چې په خپله امام بخارۍ ددې نه مخکښې چې کوم سند ذکر کړې دې په هغې کښې ښکاره دی چې د عمربن عبدالعزيز قول صرف د دهاب العلماء پورې دې

ددې نه عُلاوه روستو مونږ دې اثر لره مُختَلفو حوالو سره نقل کړې دې،په هغې کښې چا هم دې کلام لره ذکر کړې نه دې

بيا حافظ ابن حجر را د مستخرج ابن نعيم به حوالي سره وضاحت كړې دې، چې دا د عمربن عبدالعزيز كلام نه دي، د هغوى كلام دهاب العلماء باندى ختم شوراً،

د امام بخاری د ذکر شوی قول مقصد امام بخاری فرمائی چی صرف د حضوریاک الله احادیث

دې واخستلې شي، باقي د صحابه کرامو وغيره آثار دې وانځستلې شي، دامطلب خو يا خو په دې خبره باندې مېني دې چې د امام بخاري په نظر کښې د عمرين

^{&#}x27;) فتح الباري(١٩٥/١)وارشاد الساري(١٩۶/١)-) شرح صحيح البخاري(١٩٥/١)-ً) فتح الباري (١٩٥/١)-

دا د امام بخار*ی پیځی* مقصد دې چې د آستدلال او احتجاج په خانې کښې دې صرف مرفوع احادیث واخستلې شی،تر څو چې د نورو آثار صحابه او تابعینو تعلق دې نو هغه به د استشهاد او د استیناس په ځانې کښې اخستلې کیږی،نه چې د استدلال او احتجاج په طور سره، دا توجیه ډیره ښه ده ځکه چې امام بخاری خپله په سوونو د صحابه کرامو څهکتم او تابعینو نیځ آثار نقل کړې دی،والله اعلم

قوله: فران العلم لا مهلك حتى يكون سراً: علم چې كله راز جوړ كړې شي او د خانداني تحتو باندې اوليكلې شي، او ددې عاموالې نه كيږي نو ضائع شي. دغه شان علما، له پكار دى چې علمي او كرانې مسئلې دې پتې نه كړى، بلكه عام طور سره دې خورې كړى، څكه په داسې ځائې كښې دې كيني كوم خانې ته چې خلق راخي، لكه

مسجدونه او مدرسي وغيره() حَدَّثَنَا الْعَلاَءُمُنُ عَبُدِ الْجَنَّا وَقَالَ حَدَّثَنَا عَبُدُ الْعَزِيزِ مُنُ مُسْلِمٍ عَنْ عَبُدِ اللَّهِ مُنِي دِينَا رِ بِذَلِكَ، يُعْنِى حَدِيثَ عُرَبُنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ إِلَى قَوْلِهِ ذَهَا بَ الْعُلَمَاءِ.

رجال العديث

العلاء بن عبدالجبار دا ابو الحسن العلاء بن عبدالجبار عطار بصرى المسلام دي، ولاء انصارى كالتركي المساري كالتركي

دوی د جریر بن حازم، حماد بن سلمه، حمّادبن زید، عبدالله بن جعفر مخزومی، عبدالعزیز بن مسلم او ابوعوانه منظم نه روایت کوی

دده نه امام بخارى.ابراهيم بن يعقوب جوزجانى.ابوخيشمه زهير بن حرب،عبدالله بن الزبير الحميدي.دده خوني عبدالجبار بن العلاء او ابن سعد ﷺ روايت كوي، ()

⁾ ارشاد السارى(۱۹۶/۱) والكنز المتوارى فى معادن لامع الدرارى وصحيح البخارى(۳۳٤/۲)-أ) تهذيب الكمال(۵۱۷/۲۲)-

[&]quot;) تهذيب الكمال(٢٢/ ٥١٨ . ٥١٨) وتهذيب التهذيب(١٨٥/٨. ١٨٤)-

امام بخاري پينځ ددوی نه صرف دوه احاديث اخستې دی ۱۰ او په صحيح بخاری کښې صرف په دې ځانې کښې دده په واسطې سره نې موقوف اثر مروی دې بل ځانې کښې دده تذکره نشته ۱

امام عجلي بينية فرماني ثقة ٣٠

امام ابوحاته مُؤلِثُة فرمائي صالح الحديث (۴)

امام نسائى يخطيج فرمائى ليس پەياس 🖎

ابن سعد مُراك فرماني وكان كثير الحديث (

حافظ ابن حجر الله فرمائي القة (٧)

امام یحیی بن معین فرمائی لیس به باس (^)

سمیدی بی میں تعلق کو تعلق بیشن کی در کری دی (*) ابن حبان دوی په خپل کتاب الثقات کښی ذکر کړی دی (*)

په ۲۱۲ هجري كښي ددوى وفات اوشو (۲۱۰ محمه الله تعالى رحمة واسعة

(عبدالعزيز بن مسلم: دا ابو زيد عبدالعزيزبن مسلم قسملي (١٠)مروزي الله دي ٢٠٠

دوی د حصین بن عبدالرحمن، امام اعمش، سهیل بن ابی صالح، عبدالله بن دینار ، یحیی بن سعید انصاری او ابوهارون عبدی مختج وغیره نه روایت حدیث کری.

ددوى نه روآيت كوونكو كنبى حرمى بن حفص، شيبان بن فروخ، عبدالرحمن بن مهدى. عبدالصمد بن عبدالوارث، العلاء بن عبدالجبار، يونس بن محمد المؤدب او ابوعامر عقدى تليج وغيره حضرات دى ٢٠٠٠)

⁾ وفى الزهرة "روى عنه البخارى حديثين تهذيب التهذيب(١٨۶/٨)-أي تهذيب الكمال(١٨٥/٨) وعمدة القارى(١٣٠/٢)-

⁾ تهذيب الكمال(١٩/٣٢)-أ) تهذيب الكمال(١٩/٣٢)-

⁾ فهديب الكمال)-*) تهذيب الكمال)-

⁾ تهذیب الکمال)-د) تهذیب الکمال)-

م) الطبقات الكبرى لابن سعد(٥٠١/٥)-

⁾ تعليقات تهذيب الكمال(٥١٩/٢٢)-^) تعليقات تهذيب الكمال(٥١٩/٢٢)-

⁾ للثقات لابن حبان(٥٠٣/٨)-

^{· (}٣٠٠ ص - ٣٠٠)-

⁾ خلاصة العزرجي_ص من "). ``) ضبطه بعض العلماء بفتح القاف وسكون السين وفتح الميم بعدها لام وقال بعض العلماء بكسر القاف. انظر تعليقات الكاشف(٣١٧/١) ترجمة حرمى بن حفص القسملى رقم(٩٧٩)-

۱۲) تهذیب الکمال(۲۰۲/۱۸)-

^{ً&}quot;) تهذيب الكمال(تهذيب الكمال(٢٠٢، ٢٠٢)-

```
امام يحيى بن معين كيلية فرمانى ثقة ()
امام ابوحات كيلية فرمانى "صالح الحديث ثقة ()
```

امام عجلي والمائي بصرى لقة ٦٠

امام نسائى كى فرمائى لىس بەباس را

ابن نمير كلي فرمائي لقة ٥٠٠

ابن خراش فرمائی صدوق ۲٫۰

حافظ ذهبي والم في في في الله المراكر المراكز المراكز

ابوعامر عقدى ويشيخ فرمائى وكان من العابدين (^)

يحيى بن اسحاق ميد فرمائي وكان من الابدال (^)

ابن حبان دوى په كتاب الثقآت كښي ذكر كړې دى. ۱۰،

ددې ټولو توثيقات نه باوجود امام عقيلي گُني ددوى باره كښې ليكى نىحديثه بعض الوهم ('') خو حافظ ذهبي گُني دې جرح لره رد كړې ده،او فرمانى هناه الكلمة صادقة الوقوع على مثل مالك وشعمة ''')

امام عقیلی د وهم ثابتولو د پاره ددوی یو حدیث هم نقل کړې دې،چې په هغې کښې نورو حضراتو دده مخالفت کړې دې،۲۲ خو حافظ ذهبې کالله فرمانۍ ثم ساق العقیل له حدیثا واحدا محفوظاتد خالفه فیه من هو درده في الحفظ ۲۰۰۰)

() تهذيب الكمال(٢٠٤/١٨) وتاريخ الدارمي (ص١٨٥) رقم (۶۶۶)و (۶۶٧) ـ

ً) تهذيب الكمال(٢٠٤/١٨)-

] تعليقات تهذيب الكمال(٢٠٤/١٨) وتهذيب التهذيب (٣٥٧/۶)-

) تهذيب التهذيب(٣٥٧/۶)-

^د) حواله بالا

^ع) حواله بالا

۷) الکاشف(۲۵۸/۱) رقم(۳٤۱۰)-

^) تهذيب الكمال(٢٠٤/١٨)-

۱) تهذیب الکمال) –

'') الثقات لابن حبان(١١٤/٧)-

) النفاك دين حبار (۱۷/۳)-``) الضعفاء للعقيلي(۱۷/۳) رقم(۹۷۳)-

۱٬ ميزان الاعتدال(۶۳۵/۲) رقم (۵۱۳۰)-

") الضعفاء للعقيلي(١٨/٣)-

۱۱ ميزان الاعتدال(۶۳۵/۲) رقم(۵۱۳۰)-

یعنی بیا عقیلی ددوی یو محفوظ حدیث نقل کړې دې،چې په هغې کښې دده نه کمې حافظې والاکس دده مخالفت کړې دې

لهذا دوی په اتفاق سره نقه دی، او کله نا کله چې وهم کیږی نو ددې د وجه ددوی په ثقاهت او ضبط کښې څه اثر نه غورزیږی

۱۲۷ هجري كښې د دوي انتقال اوشور ۱، رحمه الله تعالى رحمة واسعة

⊕عبدالله بن دينار دا مشهور محدث ابوعبدالرحمن عبدالله بن دينار قرشى عدوى مدنى مُؤخد دى.ددوى حالات دكتاب الايمان باب امورالايمان د لاندى مختصرا، آماد كتاب العلم باب قول المحدث: حدثنا اداخبرنا وادمانا د لاندى تفصيلا تير شوى دى، آ،

[١٠٠] حَدَّثَنَا اِسُمَاعِيلُ بُنُ أَبِي أُونُسِ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةً عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبُواللَّهِ بُنِ ثَمْ وِبْنِ الْعَاصِ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهُ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ «إِنَّ اللَّهَ لاَ يَقْبِضُ الْعِلْمَ الْتَرَاعًا، يَلْتَزِعُهُ مِنَ الْعِبَادِ، وَلَكِنْ يَقْبِضُ الْعِلْمَ بَقَبْضِ الْعُلَمَاءِ، حَتَّى إِذَا لَمُ يُبْقَ عَالِمًا، أَتَّخَذَ النَّاسُ رُعُوسًا جُهَّالاً فَسُبُوا، فَأَفُوْ ابِعَلْمِ الْمِقَلُو أَوْلَمُ لُوا».

رجال العديث

- ⊕اسماعیل بن ابی اویس:دا ابوعبدالله اسماعیل بن ابی اویس عبدالله بن اویس بن مالک بن ابی عامر اصبحی مدنی منافع دی،ددوی حالات دکتاب الایبان باب تفاضل اهل الایبان فی الامبال دلاندی تیر شوی دیرگ
- مالک د امام مالک مُحَتَّلَة حالات هم کتاب الايمان باب من الدين الغمار من الغتن د لاندې تير شوي دي د ٥
- @هشام بن عووه:دا هشام بن عروة بن الزبير بن العوامﷺ دي،ددوى حالات د بداء الوحى د دويم حديث لاندې مختصرار آاد كتاب الايبان باب احب الدين الى الله ادومه د لاندې تفصيلا راغلي دى (۲)
 - 🇨 عروة: د حضرت عروه بن الزبير بن العوام المحاليج حالات هم د مهاء الوحي د دويم حديث لاندې

⁽⁾ تهذيب الكمال(١٨ /٢٠٤) -

⁾ كشف الباري (۶۵۸/۱)-

⁾ كشف الباري(١٠۶/٣)-

⁾ کشف الباری(۱۱۳/۲)-د. .

^ن) کشف الباری(۸۰/۲)-^{*}) کشف الباری(۲۹۱/۱)-

ر) کشف الباری(۴۳۲/۲)-

مختصرا (او كتاب الايمان باب احب الداين ال الله ادومه د لاندې تفصيلا راغلي دي ٢٠

﴿ عبدالله بن عمر بن العاص الثُّؤاد حضرت عبداللَّه بن عمرو بن العاص الثُّلثُو حالات د كتاب

الايهان باب البسلم من سلم البسلبون من لسائه ديده دلاندې تير شوې دى 🖰 ،

فائده حافظ ابن حجر مُرات فرماني چي دا حديث د هشام بن عروه په طريق سره ډير مشهور دي تر دې چې د اويا نه زيات کسانو دده نه دا حديث واوريدلو، ۴،

او دې حديث کښې د عروه نه روايت کولو کښې د هشام موافقت ابوالاسود مدنی کړې دگې،چې د هغوي د روايت تخريج په صحيحينو کښې شوې دې ۵،دغه شان امام زهري هم د عروه نه روايت کولو سره د هشام موافقت کړې دې، او ددوي د دې روايت امام نساني تخريج کړې دې کادغه شان يحيي بن ابلي کثير هم د هشام موافقت کولو سره دې حديث لره د عروه

نه نقل کړې دې،ددوي دا روايت په صحيح ابي عوانه کښي دې. ۲ بيا دا روآيت چې څنګه عبدالله بن عمرو ته عروه نقل کوي.دغه شان عمر بن الحکم بن ثوبان هم نقل کوی، ددوی دا روایت په صحیح مسلم کښې دې.^،

قوله: سمعت رسول الله ﷺ يقول: إن الله لا يقبض العلم انتزاعاً ينتزعه من العباد ولكر .. يقبض العلم بقبض العلماء: ما د رسول الله ﷺ نه واوريدل.هغوي فرمائيل چې الله تعالى به علم داسې د خلقو د سينو نه وانخلي بلكه د علما، په او چتولو سره

علم به اوچت کړي. حضورياک ﷺ دا خبرې د حجة الوداع په موقع کښې فرمانيلې وې چنانچه امام احمد او امام طبراني رحمهماالله روايت نقل كړي دى:

عن إن امامة الباهلى قال: لما كان في حجة الوداع قام رسول الله كر اله عرفي من مردف الفضل بن عماس على جمل آدم، فقال: يا ايها الناس خدوا من العلم قبل ان يقبض العلم وقبل ان يرفع العلم ...قال: فاتينا اعرابيا .. قال: ثم قلنا له : سل النبى وَيُمْ قال : فقال له: يا نبى الله وَيُمْ كيف يرقع العلم منا وبين اظهرنا البصاحف وقد تعلبنا ما فيهاو علمناها نساءنا وذرارينا وخدمنا؟ فرفع النبي الني راسه وقد علت وجهه

^{&#}x27;) كشف البارى(٢٩١/١)-

⁾ كشف الباري(٤٣٢/٢)-

⁾ كشف البارى(۶۷۹/۱)-

⁾ فتح البارى(١٩٥/١)-

ثُم صحیح البخاری(۱۰۸۶/۲) کتاب الاعتصام باب ما یذکر من ذم الرای وتکلف القیاس رقم(۷۳۰۷) وصحيح المسلم كتاب العلم باب رفع العلم وقبضه وظهور الجهل والفتن في آخر الزمان رقم(٤٧٩٩)-

م سن النساني الكبري (٤٥٤/٣) كتاب العلم باب كيف يرفع العلم؟ رقم (٨- ٥٩)-الماري(١٩٥/١) وعمدة القاري(١٣٠/٢)-

^{^)} صحّيح المسلم كتاب العلم باب رفع العلم وقبضه وظهور الجهل والفتن في آخر الزمان رقم(٤٧٩٨)-

حموقه من الغضب قال: قال: ای ثکلتك امك، هذا الیهود والنصاری بین اظهرناهم البصاحف لم یصه حوا
پیمنته الهنمی عما جامتهم به انبیا قدم الاوان ذهاب العلم ان پذهب صلته، ثلاث مواد (اللفظ لاحمد)
بعنی حضرت ابوا مامه شاش فرمائی چی د حجة الوداع به موقع کنبی حضور پاک ش په خپل
غنم رنگی او ښ باندی سور وو، او خطبه ئی ورکړه، دهغوی شاته په دغه ورخ فضل بن عباس
ناست وو، حضور پاک ش او فرمائیل ای خلقو؛ علم د او چتولو نه مخکنبی دا حاصل کړنی.
مونږ یو اعرابی طرف ته راغلو، مونږ هغه ته او نی چی د حضور ش نه معلوم کړه، هغه عرض
اوکړو چی ای د الله نبی علم به څنګه او چت کړی شی مونږ سره خو د قرآن نسخی دی، په قرآن
کنبی چی څه دی هغه مونږ زده کړی دی، خپلو زنانه، ماشومانو او خادمانو ته هم ورزده کړی
دی؛ حضور پاک تش خپل سر مبارک او چت او کړو، دهغوی په مخ مبارک باندی د غصی سور
والی ښکاره کیدلو، هغوی او فرمائیل ای ته د مور نه روک شی؛ دا یهود او عیسایان دی،
دی سره کتاب هم عمل کولو والانه دی، واورنی؛ د علم د او چتول د علم د حاملینو او چتول

دی، دا هغوی هم درې ځل اوفرمائيل د علم د اوچتولو به څه صورت وي؟ بيا د رفع علم صورت چې کوم په حديث باب کښې بيان کړې شوې دې. هغه ښکاره دې چې علما ، به اوچت کړې شي. او ددوي ختميدلو سره سره به علم هم اوچتولي شي.

او دبعضي روایاتو نه معلومیږي چې علم او قران به د خلقو د سینو نه وران کړې شي. روستو

۱ باب رفع العلم وظهور الجهل د لاندې هم مونږ داسې روايات په تفصيل سره ذکر کړې دی ددې دواړو قسمو احاديث په مينځ کښې تعارض لرې کولو د پاره يا خو د ترجيح طريقه دې اختياره شي او دا دې اووئيلې شي چې د صحيحينو روايت راجح دې. او د نورو کتابونو روايات مرجوح، يا دې داسې اووئيلې شي چې دواړه صورتونه به وي. اول به علماء اوچت کړې شي او دوي سره سره به علم هم اوچت شي، او بيا په آخره کښې به يو دم د خلقو د سينو

نه علم ختم كړى شى والله اعلم بالصواب

قوله: حتى إذا لهريبق عالما اتخذ الناس رؤوساً جهالا، فأفتوا بغير علم فضلوا

<u>واضلوا: تر دې چې کله الله تعالى يو عالم باقى پاتې نه کړى نو خلق به جاهلانو</u> لره سرداران جوړکړى اوهغوى به بغيردعلم نه فتوې ورکوى.په خپله هم ګمراه وى او نوربه هم ګمراه کوى.

لم يه عالمها د ابقاء نه دې. د اصيلي نه سوا باقي نورو نسخو کښې لم يه عالم د مجرد نه راغلي دې.

دغه شان دلته رؤوسا (د راس جمع) مروی دی، او د ابوذر په نسخه کښې ووسارد رئيس

^{ً)} العسند لاحمد(۲۶۶/۵) مسند ابي أمامة الباهلي المُنْتُقُو وانظر مجمع الزوائد (۱۹۹۱/۱، ۲۰۰) خاتمه كتاب العلم باب ذهاب العلم)-

جمع) منقوله ده(

قَالَّ الْفِرَبُرِي حَدَّنَتَاعَبَّاسٌ قَالَ حَدَّنَتَ افْتَيْبَةُ حَدَّنَتَ اَجْرِيرٌ عَنْ هِضَامِ تَعَوَّهُ ١٧٨٧١ فربرى فرمانى چى مونږته عباس كائر حديث واورولو هغه فرمانى چى مونږته قتيبه بيان كې دې، هغه فرمانى مونږته جرير حديث واورولو ، هغه د هشام نه دا شان روايت كوى. دا د علامه فربرى راوى د صحيح بخارى اضافه ده او دا ښودل مقصود دى چې داحديث ماته د امام بخارى نه علاوه د عباس نه هم ميلاؤ شوې دې، هغه د قتيبه بن سعد نه روايت كوى. هغه د جرير نه او جرير د هشام نه روايت كوى.

رجال الحديث

افرېري دا راوي د صحيح بخاري محمد بن يوسف بن مطر الفرېري پيليدې،ددوي حالات په مقدمة الكتاب كښي تير شوې دي،

عباس: عباس نه مراد څوک دي؟

په عمدة القارى كښى د عباس په ترجمه كښى بياض دې،ناشرينو د حافظ بن حجر كيله يوعدرت نقل كړې دې چې كوم هغوى په تقريب التهذيب كښى ليكلې دې، آ و يوعبارت نقل كړې دې چې كوم هغوى په تقريب التهذيب كښى ليكلې دې، آ ددې عبارت په اعتبار سره دا عباس بن الفضل بن زكريا هروى بصرى دې،د ثقه او مشهور راويانو نه دې،د دولسمي يا د دولسمي نه پس طبقې سره ددوى تعلق دې،صاحب الكمال ال اسلام الرجال ته وهم شوې دې چې هغوى دا اوليكل چې ابن ماجه دده نه روايت اخستلې دې.خكه چې د هغوى پيدانش د ابن ماجه د وفات نه پس شوې دې () د ابن ماجه استقال په حجري كښى اوشو او وفات نې په ۲۷۳ هجري كښى اوشو او وفات نې په

۳۷۲ هجری کښې شوې دې ^(۴) خو د غور قابله خبره داده چې آيا هم دغه عباس دلته مراد دې؟

په ظاهره دلته د فربری شیخ عباس بن الفضل نه دې ځکه چې فربری دده نه په عمر کښې زیات دې او د فربری پیدانش په ۲۲۱ هجری کښې اوشو او وفات نې په ۳۲۰ هجری کښې آ) او عباس بن ماجه بن الفضل ۲۷۳ هجری نه بعد پیدا شوې وو او د دوی انتقال ۳۷۲ هجری کښې اوشو، ګویا چې عباس د فربری نه څلویښت کاله بلکه ددې نه هم زیات کشر وو اګر چې روایة الاکابرعن الاصاغی ناممکن نه دې خو دلته ددې څه وضاحت یا قرینه

۱) فتح البارى(۱۹۵/۱)-

⁾ عمدة القارى(١٣٢/٢)-*) عمدة القارى(١٣٢/٢)-

⁾) تقریب التهذیب(ص ۲۹ ک) رقم(۳۱۸۶) -

^{ً)} تقريب التهذيب(ص ١٤٥٤)رقم (٥١٤)-

^ن) تقریب(ص ۲۹۴) رقم(۳۱۸۴)-^{*}) الانساب للسمعانی(۳۵۹/۶) الفربری)-

موجود نهده

موجود الماه چې دلته د عباس اوستاذ قتيبه مراد دې،د قتيبه وفات ۲۴۰ هجري کښې شوې وور ااو د عباس پيدانش د ۲۷۳ نه روستو دې،لهذا دلته د عباس نه عباس بن الفضل پن زکريا مراد نه دې.

برووی کرد. و معلومیږی چې دلته د عباس نه عباس بن عباس بن عبد العظیم عنبری مراد دی، راجع دا معلومیږی چې دلته د عباس نه عباس بن عباس بن عبد العظیم عنبری مراد دی، چې د اصولي سته د اصحابو استاذ دې، امام بخاری ددوی روایت تعلیقا نقل کې دې، او دې د تیبه د شاګردانو نه دې، او دډوی د وفات تاریخ د راجح قول مطابق ۲۴۳ هجری د، د، اماله اعلم بالعواب c

هتیبه: دا امام قتیبه بن سعید کری دی ددوی حالات دکتاب الایمان بهاب افشام السلام من الاسلام دی χ^{γ}

جویودا جریر بن عبدالحمیدضیی الله دی،ددوی حالات د کتاب العلم باب من جعل لاهل العلم ایاب من جعل لاهل العلم ایامامعلومة د لاندی تیر شوی دی

هشام: هشام بن عروه بن الزبير التي حالات د بدءالوحى د دويم حديث او كتاب الايمان بالديات الدين الدين الدين بن شدى دى ٧٠

هاب احب الدين ال الله اورمه " د لاندې تير شوې دی (^۷) د امام قتيبه دا روايت امام مسلم المين په خپل صحيح کښي تخريج کړې دي ^{(۸})

ra..باب: هَلُ يُجْعَلُ لِلنِّسَاءِيَوُمٌ عَلَى حِدَةٍ فِي الْعِلْمِرِ لِ

د كريمه او اصيلي په نسخو كښي د يجعل صيغه مجهول ده، او ييوم مرفوع ناتب فاعل دى، او يوما دى او يوما دى، او يوما مصوب دى او يوما مصوب دى او يوما مصوب دى ا

قوله: "علمي حدة" اي علمي انفراد: حدة د حاء كسرې سره او د دال مفتوحه مخففه سره دې په اصل كښې وحد دې او څنګه چې د وعد نه عدة جوړ شو دغه شان د وحد نه

^{ً)} تقريب التهذيب(ص ٤٥٤) رقم(٥٥٢٢)-

^{ً)} الكاشف(٥٣٥/١) رقم(٢۶٠١)-

⁾ انظر صحيح البخاري(٩٤٩/٢) فاتحة كتاب الرقاق باب ما جاء في الرقاق وان لا عيش الا عيش الاخرة رتم(٤٩٢٩)-

^{·)} تهذيب الكمال(٥٢٧/٢٣) ترجمه قتيبة بن سعيد رقم(٤٨٥٢)-

⁾ تهذيب الكمال (٢٢٥/١٤) ترجمة عباس بن عبدالعظيم العنبري، رقم (٣١٢٨)-

⁾ کشف الباری (۱۸۹/۲)-

⁾ كشف البارى(٢٩١/١) و(٤٣٢/٢)-

⁾ صحيح مسلم.كتاب العلم باب رفع العلم وقبضه،وقم(۶۷۹۶)-) عمدة المقارى(۱۳۲/۲)وفتح البارى(۱۹۶/۱)-

حدة جوړ شور) مخکښ باب سوه مناسبت: تير شوې باب کښې د علم د اخستلو بيان وو او د هغې فانده دا وه چې دې سره خلقو ته د علم د حاصلولو ترغيب ورکړې شوې وو. ددې باب په فواندو کښې وه چې دې سره خلقو ته د علم د حاصلولو ترغيب ورکړې شوې

وه چې دې سره خلقو ته د علم د حاصلولو ترغیب ور تړې سوې وو ۱۹ مې به د د د د د د د د د د د د د د د کاله الله د د ک کله ښخو حضور پاک کاله ته د د د د د د د د د د کیر چاپیره ناست وی، هغوی ته هر وخت تاسو نه ګیر چاپیره ناست وی، هغوی ته هر وخت د فائدې شکایت او کړه ، چې سړی هر وخت تاسو نه ګیر چاپیره ناست وی، هغوی وعدد اوفرمائیله او اخستلو موقع میلاویږی، خمونږ د پاره هم یو ورځ خاص کړنی، نو هغوی وعدد اوفرمائیله او اخستلو موقع میلاویږی، خمونږ د پاره هم یو ورځ خاص کړنی، نو هغوی وعدد اوفرمائیله او

هغه مخصوص وخت کنبی هغوی نظم تشریف راوړو او هغوی ته نی نصیحت او کړود ک مقصد د ترجمه الباب: حضرت شیخ الهند کینی فرمانی چی امام بخاری پیچ مقصد د ذکر شوی ترجمی نه دادې چی کوم سړی د عام علمی مجلسونو کنبی د شریکیدلو نه معذور وی لکه ښځی. نو دهغوی د تعلیم او تبلیغ دې هم خیال اوساتلې شی. دهغوی د حالت مطابق په خاص وختونو کنبی علمی خبری هغوی ته اورسولې شی. د تعلیم عاموالې چونکه ضروری کار دې، عام او خاص، تعلیم یافته او بې تعلیمه، ښځه او سړو ټولو ته حصه رسول پکار

دي (۲) والله اعلم

د آهل سره اترجمه منعقد ګولو وجه دلته سوال دا پیدا کیږی چې د روایت نه د ښخو مخصوص مجلس جائز دې نو امام بخاری د هل په ذریعې سره ولي باب منعقد کړو ؟چې په تردد باندې دال دې؟

د دې جواب دا دې چې په اصل کښې دا يو جزئي واقعه ده کيدې شي چې دا اونيلي شي چې دا واقعه خو د يو وخت خبره ده، د دې نه څه عمومي قاعده اخستلې نه شي، ځکه امام بخاري په

·هل سره باب قائم او فرمانيلور[†]،

یا به دآسی اوونیلی شی چی امام بخاری لفظ د هل ذکر کولو سره تفصیل ته اشاره کړی ده که چرې واقعی د ښځو د پاره د مستقل ورخ مقرر کولو ضرورت وی او مقرر کولو سره د څه فتنی ویره نه دی نو بیا څه بده خبره نه ده، او که ضرورت نه وی یا د څه فتنی خطره وی نو بیا ځان ساتل پکار دی. حضوریاک تاگل د ښځو په درخواست سره بطور ضرورت یو ورځ مقرر کړې وه نو دا څه د همیشګیر کار نه وو، او بیا خو د هغوی په حق کښی د څه خطرې لرې لرې پورې ویره نه وه و الله سهاله وتعالى اعلم

ِّدُّ ، ﴿ ١٠ ۚ ١٠ ُ عَدَّ تَنَا آدَمُوَّا لَ حَدَّ ثَنَا أَهُعَبَهُ قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ الأَصْبَهَ انِي قَالَ سَمِعْتُ أَبَا صَالِيمِ ذَكُوَانَ يُعَيِّنُ عَنْ أَبِي سَعِيدِ الْخُدُونِ قَالَتِ النِّسَاءُ لِلنَّا عَلِيهُ الله عليه وسلمٍ-عَلَبْنَا عَلَيْكَ الرِّجَالُ، فَاجْعَلُ لَنَا يَوْمًا مِنْ نَفْيكَ . فَوَعَدَهُنَ يَوْمًا لَقِيَّهُنَّ فِيهِ، فَوَعَظُمْ ۖ :

^{ٔ)} حواله بالا

^{ً)} عمدة القاري(١٣٢/٢)-

^{&#}x27;) الابواب والتراجم(ص ٥٤)-

الكنز المتوارى(٢٢٥/٢)-

وَأَمْرَهُنَ، فَكَانَ فِهَاقَالَ فَنَ «مَامِنْكُنَ امْرَأَةً ثُقَيِّمُ ثَلاَئَةً مِنْ وَلَدِهَا إِلاَّكَانَ لَحا جِبَابًامِنَ النَّارِ». فَقَالَتِامُرَأَةُ وَالْنَيْنِ فَقَالَ «وَالْنَيْنِ».

رجال المديث

الدم دا ابوالحسن آدم بن ابى اياس عبدالرحمن العسقلاني كين دووى حالات دكتاب العسام من سلم المسلمون من السانه ويدار دلاندي تير شوي دى ١٠

ن شعبه: دا امير المومنين في الحديث امام شعبه بن الحجاج عَتْكَي بصري المجادي دي. ددوي حالات هم د ذكر شدي كتاب المرادي الزاع ما فالمردي للمرادي المرادي الزاع ما فالمردي للمرادي المرادي المراد

حالات هم د ذکر شوی کتاب او او باب لاندی راغلی دی ۲ **آبان الاصبهانی** دا عبدالرحمن بن عبدالله بن الاصبهانی کوفی جهنی پینی دی ددوی اقامت

@ابن الاصبهاس دا عبدالرحمن بن عبدالله بن الاصبهائي كوفي جهني تحليه دې ددوي اقامت په كوفه كښي وو او اصبهان ته ئې د تجارت په غرض تل راتلل وورا

دوی د حضرت انس بن مالک المُنْتُو نهٔ علاوه دُکوان ابوصالح السمان،زید بن وهب جهنی. سعید بن جبیر، ابوحازم سلمان الاشجعی،عامر شعبی،عبدالله بن معقل،عکرمه مولی ابن عباس او ابوسلمه بن عبدالرحمن بن عوف شیخ وغیره نه روایت کوی.

دده نه روايت كوونكو كښي اسماعيل بن ابي خالد، زكريا بن ابي زانده. سفيان ثوري. سفيان بن عيينه، شعبه بن الحجاج. ابوعوانه او ابوحمزه سكري پينځ وغيره دي.^د

امام یحیی بن معین، ابوزرعه، او نسانی ﷺ فرمانی لقة ﴿ ﴾ امام ابوحاتم ﷺ فرمانی لاباس به صالح الحدیث ﴿ ﴾

اهام ابوحارم مختلقة قرمانی لا باس به صاف امام عجلی منتقة فرمانی ثقة (^)

حافظ دهبی گفته فرمائی ثبت (^) حافظ ابن حجر کشه فرمائی ثقة ('')

⁾ کشف الباری (۶۷۸/۱)-

^{ً)} حواله بالا

^{ً)} تهذيب الكمال(٢٣٢/١٧)-

¹⁾ عمدة القارى(١٣٣/٢)-

⁾ عنده العارى(١١١/١)-دم تهذيب الكمال(٢٣٢،٢٤٣/١٧)-

ر) تهذيب الكمال (٢٤٣/١٧)-

⁾ تهدیب الکمال(۱۷ /۱۵ م ۷) تهذیب الکمال)-

⁾ تهذيب الكمال(٢١٧/۶)-

⁾ تهدیب الکمال(۲۱۷/۶)-۱) الکاشف(۲۲۴/۱) رقم(۲۲۴۶)-

⁾ تقريب التهذيب (ص مُ ٣٤٤) رقم (٣٩٢۶) -

ابن حباز ميني دوي په خپل كتاب الثقات كښي ذكر كړې دي ()

اصحاب اصول سته دده نه روايتونه اخستي دي ١٥ رحمه الله تعالى رحمة واسعة

ابوصالع دكوان: دا ابوصالح دكوان السمان كيلية دى ددوى حالات كتاب الايمان باب امور الايمان دكتاب الايمان باب امور الايمان د لاندې تير شوي دى آ

وحضوت ابوسعید خدری الله دحضرت ابوسعید خدری الله حالات د کتاب الایمان بهاب من الدین الغیان بهاب من الدین الغیاد من الفتن د لاندی تیر شوی دی آ)

قوله: قالت النساء للنبى على: غلبنا عليك الرجال فاجعل لنا يوما من نفسك، فوعده من يوما لقيهن غلبنا عليك الرجال فاجعل لنا يوما من نفسك، فوعده من يوما لقيهن فه فوعظهن اولموهن نبخو حضور باكري تاسو دخيل طرف نه زمون د پاره يو ورخ مقلا يدلو اراده اوفرمانيله، به هغه ورخ هغوى دوى ته نصيحت اوكوو او د شريعت حكم ني ورته اوكوو

مطلب دا دې چې سړي خو هر وخت تاسو سره اوسيږي او مونږ تاسو ته نشو در رسيدلې. لهذا د خپل طرف نه زمونږ د پاره يو مستقل ورځ مقرر کړني.

قوله: فكان فيماقال طرب: ما منكر امراة تقدم ثلاثة من ولدها الاكان لها حجاباً من النار: هغوى چى دوى سره كومي خبري اوكړې په هغې كښې دا خبره وه چې په تاسو كښې څوک ښځه درې بچى مخكښې اوليږي نو هغه به ددې د پاره د دوزح د پاره ديوال حر شه .

کان لهاحجابا من النار کښې د کان اسم التقدیم دې، یعنی الاکان التقدیم لهاحجابا من النار ا مخکښې جناتو کښې دا روایت راروان دی، په هغې کښې د کن لفظ دې، چې د هغې ضمیر به انفس طرف ته راجع کیږی، او کتاب الاعتصام کښې کانوا دې، ضمیر جمع اولاد طرف ته به راجع وی ۵،

قوله: فقالت امراق: واثنير ؛ فقال : واثنين : يو ښخې تپوس او کړو او چې د چا دوه بچې مخکښې اوليږلې شي نو هغې ته به هم دافضيلت حاصل وي ؛ هغوي نا اوفرمائيل چې آو. په دوو باندې به هم دا فضيلت حاصل وي.

[']) الثقات لابن حبان(۶۷/۷)-

⁾ اً) تهذيب الكمال(٢٤٣/١٧)-

⁾ كشف البارى (۶۵۸/۱)-

⁾ كشف البارى(٨٢/٢)-

⁴) فتح البارى(١٩٤/١) وعمدة القارى(١٣٤/٢<u>)</u>

دلته د امراة نه څوک مراد ده؟؛ بعضي رواياتو نه پته لګي چې دا ام سليم ده.بعضي روايتونو نه دا معلَّومیږی چې دا ام مېشر انصاریه وه،او بعضي روایاتو کښي سانله نوم ام ایمن ده بعضي کښې د عانشه نوم راغلې دې او بعضي روایاتو کښې د ام هاني نوم راغلې دې () واثنين کښې واو عطف د پاره دې،او دا عطف تلقيني دې.ګويا چې هغه ښځې حضورپاک نهل ته تلقين اوكړو چې يا رسول الله ثلاثة سره اثنيين هم اوفرمايي.نو حضورپاک، للم اوفرمائيل وا**ثنين (٢**٠)

وبرانسين برسان . د جامع ترمذی په بعضي رواياتو کښې د يو هم ذکر راغلې دې . ګويا چې حضورپاک ۱۳ يو ځل د دريو ذکر اوکړو او بيا نې د دوو .بيا د يو .په دې کښې څه تعارض نشته .ځکه چې په غهوم د عدد په حديث کښې معتبر نه دې .يو عدد ذکر کولو سره د دويم عدد نفي نه رازي ۴٪.

بله خبره دا ده چې حضورياک ﷺ ته ورخ په ورخ نور علم حاصليدو.د الله تعالى په هغوي باندې مسلسل احسان زياتيدلو .لهذه ډيره ممکنه ده چې مخکښې خو دا زيرې د دريو بچو په وفات کیدلو باندې صبر کول د اور نه د بچ کیدو سبب دې،او دا ماشومان به د اور نه پرده جُورٍ شى،بَيا آلله تعالى نور احسان هم آوكړو،يو عدد ني كم كړو.او دوه ني كافى اوګرخول.او بيا نې نور احسان اوكړو او يو نې كافى اوګرخولو

خلاصه دا شوه چې نبيي کريم په اول درې اوفرمائيل، د ښځې په وينه سره په هغوي پېچ باندې وحي راغله.نو هغوي ته د دوو متعلق علم اوشو ،او بيا څه وخت ورته د يو علم اوشو .نو کوم كوم وخت چې د وحي په ذريعه به څه معلوميدل نو هغوي پي به هغه بيان قرمانيلور^{هي}

لهذا پەدى كېنى خەتعارض نشتە

دا هم کیدلې شي چې دا اختلاف د مختلفو ښځو په اعتبار سره وي اصل کښې حجاب من النار د پاره د صبر يو مخصوص درجه شرط دي،ددې يو خاص مقدار پکار دي.نو اوس څه ښځې داسې دی چې د هغوي تد په يو بچې باندې هغه مقدار حاصل شي،داسې غم وي چې د

 ⁾ فتح الباري(١٢١/٣) كتاب الجنائز باب فضل من مات له ولد فاحتسب)-

⁾ عمدة القاري(١٣٤/٢) وشرح الكرماني(٩٩/٢)-

^{ً)} عن عبدالله بن مسعود قال:قال رسول الله كَالْتِيْمُ من قدم ثلاثة لم يبلغوا الحنث كانوا له حصناحصينا من النار قال:ابوذر:قدمت النبن؟قال:ابي بن كعب سيدالقراء:قدمت واحدا؟قال:واحدا.ولكن انما ذاك

عن ابن عباس انه سمع رسول الله ﷺ يقول:من كان له فرطان من امتى ادخله الله بهما العبنة فقالت له عائشة: فمن كان له فرط من امتك؟ ومن كان له فرط يا موفقة.قالت:فمن لمن يكن فرط من امتك؟ قال: فانا فرط امتى لن يصابوا بمثلى"اجامع الترمذي كتاب الجنائز باب ما جاء في ثواب من قدم ولدا. رقم (۱۰۶۱) و۱۰۶۲)-

أ) فتح الباري(١٢٢/٣)كتاب الجنائز باب فضل من مات له ولد فاحتسب)-

^ت) حواله بالا

هغې څه انتها نشته.او بعضې ښځو ته په دوو باندې صبر کول دې مفدار ته اورسوي.او

بعضي د پاره په درېو باندې صبر کولو سره، والعلم عندالله سيحانه و تعالى.

فائده ښکاره دې وَی چې وفات َشوی ماشومانو سره د مونث یا مذکر قید لګول ملحوظ نه دې، بلکه دا فضیلت هر ماشوم باندې حاصلیږي، که مذکر وي یا مونث ()

بياً حديث باب کې اګرچی ښخو ته خطاب کولو سره دافضيلت بيان کړې شوې دې.خو دا صرف دوی سره خاص نه دې.بلکه سړو ته هم دافضيلت به حاصل وی.ځکه چې کتاب الجنائز كنبى دحضرت انس للأثر ووايت راروان دي مامن الناس يتوبى له ثلاث لم يبلغو الحنث الإ ادځله له الجنة بقضل رحيته اياهم ١٠ يعني چې د كوم مسلمان درې بچي وفات شي نو الله تعالى په دې بچو باندې رحم کولو سره هغه جنت ته داخل کړي .

د حجاب جوړلو دپاره يو شرط عدم بلوغت دې ددې نه پس زده کړنی چې د دوزح د اور نه حجاب جوړيدلو د پاره دوه شرطونه ضروري دي.

يو شرط مخکښي روايت کښي د کر دې لم پيلغوا الحنث د حنث زماني ته رسيدلي نه وي.د حنث نه مراد بلوغت دې، په اصل کښې د حنث معني کناه ده او د بلوغ نه مخکښې کناه نه كيږي،نوګوياً چې دبلوغ زمانه د ګناه شوه، ځكه ګنآه وئيلو سره د بلوغ مراد اخستلې شي. ۲، بعضي حضرات وائي چې د بلوغ حنث نه مراد دا دې چې داسې زمانې ته اورسي چې په کښې د قسم دماتولو او حانث کیدلو باندې نیول وي، او ښکاره ده چې دا د بلوغت ندپس وي ، ٢ خو ملا علي قاري ﷺ فرمائي چي دلته د حنث معني هم د ګناه ۲ ده،او مطلب دادي چي چا يو ګناه اونه کړه او هغه وفات شي، او د هغه په وفات باندې مور پلار صبر اوکړي. نو هغوي ته اجر او ثواب ميلاوېږي،د ملا على قارى دا رائي ده چې دا قيد احترازي نه دې بلکه اکملي دي، چونکه د ماشوم مرګ ډير د صبر تقاضه کوي، او د هغوي د شفاعت هم ريات اميد دي. ځکه دا قيد لګولې شوې دې ګنې د غټو په وفات باندې هم دا فضيلت به حاصليږي. چنانچه چې څنګه په ماشومانو بچو باندې صبر کول جنت ته د رسولو او د اور نه پرده ده. دغه شان په غټو بچو باندې صبر کول به هم پرده وي، ه،

خِو ظُاهره ده چې دا قَید اکملی نه دې بلکه احترازي دې خکه چې حاجب خو به هغه کس كيږي چې په ځان باندې مطمئن وي، او بالغ ته خو به خپل فكر وي هغه به د نورو د پاره څه

^{&#}x27;) شرح الكرماني(٩٩/٢)-

⁾ صعيع البخاري (١٤٧/١) كتاب الجنائز باب من مات له ولد فاحتسب رقم (١٢٤٨) -

⁾ قال ابن الاثير "الحنث الذنب والاثم المعنى:انهم لم يبلغو حتى تكتب عليهم الذنوب التي يعملونها جامع الأصول(٥٨٩/٩)- كتاب الفضائل فضل المرض والنوانب والموت الفصل الثاني في موت الاولاد.رقم

^{ً)} فتح الباری(۱۲۰/۳)کتاب الجنانز باب فضل من مات له ولدا فاحتـــب)__

⁽⁾ مرقاة المغاتيح شرح الكرماني المصابيح (٩٢/٤) كتاب الجنائز باب البكا على الميت آخر الفصل الاول)

حاجب جور شي

تنبيه ابن قرقول د علامه داودي گينت نقل كړې دى چې دا لفظ عهث بقتح الخاه المعجهة والهاء الموجهة والهاء الموجهة والهاء الموحدة هم وئيلي شوې دې،ددې مطلب هغوى الم يعلقوا ان يعملوا المعامى ښودلي دي،ابن قرقول فرمانى چې دا ضبط داودى نه علاوه بل چا ذكر كړې نه دې،بهرحال محفوظ حث عث بالحاء المهملة والتون دې،نه چې خبث (مالله المهملة والتون دې،نه چې خبث (مالله المهم

د حجاب د جوړيدلو دويم شرط: د حجاب د جوړيدلو د پاره دويم شرط چې دلته ذكر دې هغه احتساب كوي، يعني په احتساب كوي، يعني په قضا باندې به راغلې دې چې هغه به احتساب كوي، يعني په قضا باندې به راضي وي، او په خپل صبر باندې د ثواب اميد ساتي، بغير د احتساب نه اجر او ثواب نه ميلاويږي.

چنانچه حضرت جابر گلتُونه روایت دې سبعت رسول الله کلتی یقول:من مات له ثلاثة من الولد، فاحتسبهم دخل الجنة: ۲)

یعنی د چاچی دری بچی وفات شی او هغه د ثواب امید ساتی نو هغه به حنت ته داخلیپی دغه شان د ابوهریره گناتو نه روایت دی آن رسول الله تقرق قال لنسوة من الانصار:لایبوت لاحداکن ثلاثة من الولدفتحتسمه الادخلت الجنة گ

يعني حضور ﷺ د انصارو ښځو ته اوفرمانيل چې په تاسو کښې که د يوې درې بچې وفات شي او دا په هغوی باندې د ثواب اميد ساتي،نو جنت به داخليږي

حافظ ابن حجر پیشهٔ فرمانی چی د احتساب شرط خکه هم ضروری دی خکه چی د شریعت دا عام قاعده ده چی بغیر د نیت نه ثواب نه میلاؤیږی، لهذا په حدیث کښی د راغلی فضیلت حاصلولو د پاره د احتساب شرط دی چنانچه هغه احادیث چی په هغی کښی دا شرط نشته هغه به هم په مقید احادیث و سره ګنړلی شی، گاه اعلم

(١٠٠١عَدَّ ثَنَا الْمُعَدَّدُ بُنُ بَشَادٍ قَالَ حَدَّ ثَنَا غُنُدَدَّقَالَ حَدَّ ثَنَا اللَّهُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْنِ بْنِ الأَصْبَهَ النِي عَنْ ذَكُوَانَ عَنْ أَبِي سَعِيدِ الْخُدْدِي عَنِ النَّبِي -صلى الله عليه وسلم- بِهَذَا أُ وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الأَصْبَهَ انِي قَالَ سَمِعْتُ أَبَاحًا زِمِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةً قَالَ « ثَلاثَةً لَمُ اللهُ وَانظر: ١١٩٣ع المَا اللهُ ال

^{&#}x27;) فتح البارى (١٢٠/٣) كتاب الجنائز باب فضل من مات له ولد فاحتسب)-

^{ً)} رواد احمدورجاله ثقات قاله الهيئمي في مجمع الزواند(ش٧/٣)كتاب الجائز باب فيمن مات له ابنان)-ً) صحيح المسلم،كتاب البر والصلة باب فضل من يعوث له ولدا فيحتسبه رقم(٩٨/۶۶)-

⁾ وقد عَرف من القراعد الشرعية ان الثوابُّ لا يَترتَب الا على النية فلا بدمن قيد الاحتساب والاحاديث المطلقة محمولة على العقيدة "فتح الباري(١١٩/٣)كتاب الجنائز باب فضل من مات له ولد فاحتسب)-

رجال الحديث

<u> محمدین بشار</u> دا مشهور محدث محمدین بشار بندار پینه دی.د دوی حالات په کتاب

العلم كنسي د باب ماكان النبي المنظم الموحلة والعلم كيلاينفروا: د لاندې تير شوې دي ()،

ا عندر دا مشهور محدث أبوعبدالله محمدبن جعفر هذلي يخته دي. چې د غندر په لقب سره

مشهور دې.ددوی حالات هم د کتاب الايمان باب ظلم ددن الظلم د لاندې تير شوې دی 🏅

ا شعبه د اماء شعبة بن الحجاج حالات د كتاب الايبان باب البسلم من سلم البسلمون من لسانه ويدلا دلاندي تير شوي دي ، ،

⊙عبدالرحمن بن الاصبهائي ددوى حالت تير شوى حديث لاندى تير شوى دى.

د کوان د ابوصالح ذکوان السمان حالات د کتاب الايمان باب امور الايمان د لاندې تير شوې دی گ

و حضرت ابوسعید خدری الله د حضرت ابوسعید خدری الله عالات د کتاب الایمان باب من الدین الفهار من الفتن دلاندی تیر شوی دی د

ا العاد المنان الاشجعي الكوفي مولى عزة الاشجعية الشيخية دي 🖔

دوى د خضرت ابوهريره،عبدالله بن عمر حضرت عبدالله بن اُلزبير،حضرت سعيد بن العاص، حضرت حسن او حضرت حسين گاهرنه روايت كوي

ددوى نه روايت كوونكو كنبي ابومالك سعدبن طارق اشجعى. سليمان الاعمش. سيار ابوالحكم. طلحه بن مصرف، عبدالرحمن بن الاصبهائي، عدى بن ثابت الاتصارى، منصور بن المعتمر او يزيد بن كيسان تنظ وغيره دى، ()

امام احمد .امام يحيى بن معين او امام داود كريم فرماني ثقة ^.

اماء ابن سعد كُنَّالَةُ فرماني وكان لقة وله احاديث صالحة من

اماه عجلي و ماني تعدد ا

۱) کشف الباری (۳ ۲۲۱) -

⁾ کشف الباری(۲ ۲۵۰)-

^{ً)} كشف الباري (١ ٤٧٨)-

¹⁾ كشف الباري (١ ٥٤٨)-

د) کشف الباری (۲ ۸۲)-

⁾ تهذیب الکمال(۱۱ ۲۵۹) -۷

 ⁽۲۶۰ ۲۵۹ ۱۱) تهذیب الکمال(۱۱ ۲۵۹ ۲۶۰)-

^{^)} تهذيب الكمال(٢٥٠ -٢٥٠) -أ) الطبقات لابن سعد(٤/ ٢٩٤) -

⁾ تهذيب التهذيب(٤٠/٤)-

ال عدالبر ويلك فرماني اجمعوا على اندلكة ، ١

ابن غبدانېرونو کو تاکي مهمو علی مصحبه . این حیان دوی په کتاب الثقات کښې ذکر کړې دی. ^۲ .

ابن خیان دوی په ساب منطات طبعی د مرا مړی دی. د ابوحازم انتقال د حضرت عمرین عبدالعزیز په دور خلافت کښی اوشود⁷ ،

فانده د اوسلمه يو بل راوی سلمه بن دينار الاعرج دي.په دې دواړو راويانو کښې اشتباه کېږي. ځکه چې په کنيتونو کښې يوشان والې دې.دواړه تابعي دي.دواړه د صحابه کرامو نه روايت کوي.او دواړه ثقه هم دي

البته په دواړو کښې فرق دادې چې دابوحازم سلمان الاشجعي انتقال د اولي صدني په آخره کښې يعني د حضرت عمر بن عبدالعزيز په دور خلافت کښې اوشو.او ابوحازم سلمة بن دينار انتقال په ۱۳۵ هجري کښې اوشو.

دريم قرق دادې چې دابوحازم سلمان الاشجعي روايتونه په صحيحينو کښې صرف د ابوهريره الله نه دي. او آبوحازم سلمة بن دينار سوا د سهل بن سعد نه د بل صحابي نه روايت افستې نه دي. او ايت نه روايت افستې نه دي. او ايت افستې نه دي. او ايت نه دي. افستې نه دي. او ايت نه دي. ايت نه دي. ايت نه دي. او ايت نه دي. او ايت نه دي. ايت نه دي

۞حضوت ابوهريوه اللي د حضرت ابوهريره اللي حالات د كتاب الايبان باب امور الايبان د لاندې تير شوې دی (م

پیرسوې دی () **د مذکوره دواړو طرقو د ذکو کولو مقصد** امام بخاری گینگ ذکر شوې حدیث په دوو طرقو سره راوړلو نه دوه اهمو فائدو طرف ته اشاره کړې ده .یو دا چې د باب په اولنی حدیث کښې 'اپن الاصبهانی مبهم وو ،امام بخاری گینگ دلفظ شیخ د حفاظت په غرض دغه شان برقرار ساتلې وو ، په دې دویمي طریقې کښې د 'اپن الاصبهان' د نوم وضاحت راغلو چې هغه 'عبدالرحمن' دې دویمه فائده د حضرت ابو هریره گیانگ والا روایت کښې لم پیلغوالعث قید دې ،چې په ړومبی

تنبیه علامه کرمانی پیشته فرمانی وهذا تعلیق من الهخاری عن عبدالرصن یعنی امام بخاری په آخره کښی وعن عبدالرحین بن الاصبهال قال: سبعت ایا حازم عن ای هویولا په سند سره چی کوم روایت نقل کری دی هغه تعلیق دی ۷ ،

د علامه كرماني وينه د روايت تهيك نه دې بلكه دا موصول روايت دې او د وعن عهدالرحين

حدیث کښی نشته (۱)

^{ً)} حواله بالا

⁾ حواله بالا

⁾ سيراعلام النبلاء(٨/٥)-

⁾ عسدة القارى(١٣٥/٢)-

⁽⁾ كشف الباري (٢/٩٥٩)-

⁾ عمدة القارى(١٣٥/٢)وفتح البارى(١٩۶/١)-) شرح الكرمانى(٩٨/٢)-

علف ددې نه مخکتبې روایت کښې چې کوم راغلې دې په هغې کښې په میدالرمین باندې دې.یعنی امام شعبه دې لره د عبدالرحمن بن الاصبهانۍ په واسطې سره په دوو طرقو سره نقل کوی.یو طریق شعبه من میدالرمین بن الامبهال من ذکوان من لي سعید الغدری دې.او دویم طریق شعبه من میدالرمین بن الامبهال قال:سبعت ایاحازم من ای هدیون دې ()

سوې دې . بيا امام بخاری دا حديثونه په دوه طرقو سره نقل کوی، په يو کښې د ده او د شعبه په مينځ کښې يو واسطه ده، يعني آدم بن اياس، او په دويمې واسطه کښې دوه واسطې دی، يو محمد بن بشار بندار او بل محمدبن جعفر غندر پومبئ طريق چونکه عالى ده، څکه ئې دا اول راوره واشه املم.

٣٠- بأب: مَنُ سَمِعَ شَيْئًا فَرَاجَعَ حَتَّى يَعْرِفَهُ

وړاندې باب سره مناسبت په مخکښې باب کښې د ښخو د وعظ آو د هغوی د تعلیم ذکر وو. چونکه د هغوی په پوهه کښې کموالې وی ځکه د مراجعتعالم ضرورت راتلی شو. په دې باب کښې د عدم فهم د وجهمراجعت ذکردې نودغه شان په دواړو بابونو کښې مناسبت ښکاره شو، آم مقصد د ترجمه الباب حضرت شیخ الحدیث صاحبه شخ فرمانی چې خما په نیز ددې باب غرض هغه دې چې کوم ابن المنیر د ابها من اعاد الحدیث ثلاثا په طور بیان کړې دې. چې که چرې د طالب علم په پوه کښې د استاذ سبق رانشي او طالب علم د دوباره وئیلو درخواست او کړې نو دا څه د بې ادبئ او کم عقلتوب خبره نه ده.د امام بخاری غرض ددې خلقو تردید دې چې د احادیث دوباره وئیل نه خوښوی. او دا بلادت او کم پوهی ګنری، ۴

حضرت شیخ الهند کاله فرمانی چی ددې باب نه د پوهې په غرض چی کوم مراجعت دې د هغی فضیلت بیانول منظور دی.یا دا مطلب دې چی په مراجعت کښې د عالم د بی ادبئ او د شاګرد سبکاوې نه وی.ځکه نه عالم لره خفګان پکار دې او نه شاګرد لره حیا کول مناسب دی دی د والله اعلم.

⁽⁾ عمدة القارى(٢/ ١٣٥) وفتح البارى(١٩۶/١) ـ

[†]) حدثنا محمد بن البثنى وابن بشار قال:حدثنا محمد بن جعفر وحدثنا عبيدالله بن معاذ.حدثناابى قالدحدثنا عبيدالله عن معاذ.حدثناابى قال:حدثنا شعبة عن عبدالرحمن بن الاصبهائى فى هذا الاسناد بشل معنا،وزادا جميعا عن شعبة عن عبدالرحمن بن الاصبهائى قال:سعمت اباحازم يحدث عن ابى هريره قال:ثلاثة لم يبلغو الحنث "صحيح المسلم كتاب البر والصلة باب فضل من يعوت له ولد فيعتسبه رقم(٤٧٠٠).

⁾ الكنز المتوارى(٣٣٤/٢) ـ

⁽⁴⁾ الابواب والتراجم(ص 04)

خود ترجمة الباب واضح مقصد چې كوم په عقل كنبي راځى هغه دادې كه چې طالب علم د استاذ په يو خبره پوهه نه شي يا خو پوه شو خو څه اشكال ورته راغلو .نو د دغه خبرې زده كولو او د خپل اشكال د لرې كولو په غرض مراجعت كولي شي. او بلكه مراجعت پكار هم دې جې سړې په دې اشكال كې انځښتې پاتې نه شي. او ګوره نبى كريم ۱۴ چې كله ارشاد او فرمائيلو من حوسب عنب نوحضرت عائشه ۱۳ فورا تپوس او كړو اوليس يقول الله تعالى الحمولي يعاسب حسايا يسيرا، مطلب دادې چې يا رسول الله چې تاسو خو على الاطلاق موسب عنب فرمائي .چې د هغې نه معلوميږي چې حساب يسير والابه مفلحين او فائزين وي حضوريا ك ۱۶ دې جو اب دا و ور كړې وو .چې په ايت كنبې د حساب نه مراد بل دې او خما په كلام كنبي بل. په آيت كنبي د حساب نه مراد بل دې او بانړې كلام كنبي بل. په آيت كنبي د حساب نه مراد دې نو دلته د كلام كنبي .او هغه به پريښودلي شي. او ما چې كوم خوسب منه و وليل دې نو دلته د حساب نه مراد مناقشه د مه او كي دې نو دلته د حساب نه مراد امناقشه د مولوري چې د اولې حساب نه مراد اكبري .چې دا ولي

اوشو؟او داسى ولى اوشو؟والله اعلم [١٠٣] حَذَّ ثَنَا اَسْعِيدُ بُنُ أَبِي مَرْيَمَ قَالَ أَغْبَرَنَا نَافِهُ بُنُ عُمَرَ قَالَ حَذَّ ثَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّ عَائِشَةَ وُوَجُ النَّبِي صلى الله عليه وسلم - كَانَتُ لاَ تَنْهُ شَيْفًا لاَ تَعْوِفُهُ إِلاَّ رَاجَعَتُ فِيهِ حَنَّى لَعْرِفُهُ، وَأَنَّ النَّبِي صلى الله عليه وسلم - قَالَ «مَنْ حُوسِبَ عُدِّبَ» قَالَتُ عَالَتُ عَالَتُ فَقُلُتُ أَوَ لَئِي يَعُولُ اللَّهُ تَعَالَى (فَسُوفَ مُحَاسَبُ حِسَابًا يَبِيرًا) قَالَتُ فَقَالَ « إِنْمَا ذَلِكَ الْعُرْضُ، وَلَكَ يَعُولُ اللَّهُ قَعَالَ « إِنْمَا ذَلِكَ الْعُرْضُ، وَلَكَ يَعْرَفُ الْعَرْضُ، وَلَكَ يَعْرَفُ الْعَرْضُ، وَلَكَ يَعْرُفُ الْعَرْضُ، وَلَكَ الْعُرْضُ، (١٩٤٥ - ١٩٧٤)

رجال الحديث

اسعید بن ابی مویم دا سعید بن الحکم بن محمد بن سالم جمحی مصری پیم دی.دده کنیت ابومحمد دی او د سعیدبن ابی مریم په نوم سره مشهور دی د

حیا ابوعاعد دی او حسیب بن بی تربی به از اهم بن عقبه سلیمان بن بلال. ابراهیم بن مود عبدالله بن عمر عمری اسماعیل بن ابراهیم بن عقبه سلیمان بن بلال. ابراهیم بن سوید. امام مالک. لیث بن سعد عبدالعزیز بن محمد در اوردی عبدالعزیز بن ابی حازم. ابوغسان محمد بن مطرف. مغیره بن عبدالرحمن حزامی او سفیان بن عیینه شخ وغیره نه روایت کوی

روایت توی ددد نه روایت کوونکو کښې امام بخاری.ابراهیم بن یعقوب جوزجانی.ابوحاتم. ابوعبید القاسم بن السلام. عثمان بن سعیدالدارمی، اسحاق بن منصورالکوسج، محمدبن یحیی ذهلی او یحیی بن معین تنظیم فغیره حضرات دی."

^{ً)} تهذيب الكمال((٣٩١/١٠)-

⁾ تهذيب الكمال(٢٠١٠/٣٩=٣٩٤) وتهذيب التهذيب(١٨/١٧/٤)-

امام نسانی گفته فرمائی سعید بن عقیرصال و سعید بن الحکم لایاس به وهواحب الی من این عقیر ز () امام ابود او دکوشته فرمائی این الی مربم عندی حجه تر ()

امام عجلى يمين فرمائي ثقة رق امام ابوحاتم يمين فرمائي ثقة رق

ابن معین پخت فرمائی تقة من الثقات (ه)

ابن معین پیونه درمانی تعمین انتقال () د اصول سته مصنفینو ددوی روایات قبول کړې دی (')

۳۳ هجري كښي ددوي انتقال اوشور ۷) رحمه الله تعالى رحمة واسعة

ا منافع بن عمودا نافع بن عمر بن عبدالله جمحی قرشی مکی منافع دی ۸،

دوی د عبدالله ابی ملیکه امیه بن صفوان جمحی . بشربن عاصم ثقفی .عبدالملک بن ابی محذوره ،عمر بندینار ، سعیدبن حسان او سعیدبن ابی هند تنیز وغیره نه روایت د حدیث کوی دده نه روایت کوونکو کنبی عبدالله بن المبارک ، یحیی القطان . ابواسامه حماد بن اسامه عبدالرحمن بن مهدی . امام وکیع ،یزید بن هارون ، عبدالله بن مسلمه القعنبی . سعید بن ابی مریم ، محمدبن یوسف فریابی او ابوسلمه تبوذکی شیخ وغیره حضرات دی . ()

عبد الرحمن بن مهدى يُنطيخ فرمائي كان من اثبت الناس (١٠)

امام احمدبن حنبل مينية فرمائي ثهت ثهت صحيح الحديث دار

دغه شان هغوی فرمانی نافع بن عبراحب ال من عبدالجباد بن الودد دهو اصح حدیثاً دهو لی الثقات لَّقَة '``) امام یحیی بن معین پیشتی فرمائی 'لَقَة' 'ز'') امام نسانی پیش فرمائی 'لَقة'،'')

') تهذيب التهذيب(١٨/٣)-

") تهذيب الكمال(١٠/٣٩٤)-

ً) حواله بالا ً) حواله بالا

1) حواله بالا

د) تهذیب التهذیب(۱۸/٤)-

) تهذيب الكمال(٢٩٥/١٠) -أ) تهذيب الكمال(٢٩٥/١٠) -

) حواله بالا) حواله بالا

مُ تهذيب الكمال(٢٨٧/٢٩)-

أُ تَهْدُيْبُ الكَمَالُ (٢٨٧/٢٩ . ٢٨٨) وسيراعلام النبلاء (٢٣٣/٧)-

'') تهذيب الكمال(٢٩/٢٩)-

'') حواله بالا

`) حواله بالا

) حواله بالا

") حواله بالا

ابن ابی حاته پیشته فرمانی ستل این صنه فقال: لگفة دسالت این صنه: پیمتیج بعدیشه: بخال تعم (`` حافظ ذهبی پیشته دده تذکره کولو سره فرمانی الامام العافظ الثبت (`` این حبان دوی په کتاب الثقات کښې ذکر کړې دی '`

المنه ابن سعد يُحَيِّهُ فرماني كان تقة قليل الحديث فيه شهاء الم

خو حافظ ذهبی پیشهٔ دا رد کولو سره فرمانی هذا نوع من العنت والرجل فکها قال الامام احبد، وکها قال این مهدی فیه: کان من اثبت الناس وقال این معین والنسا فی وابرحاتم: نُقَقَة ' (⁶)

يعنى داسې ثقه سړى په باره كښې ځ**يه شپ**وه وئيل سره تضعيف كول يو قسم سختې دې.دا چې د هغه ټولو انمه توثيق كړې دې

دغه شان حافظ ابن حجر پیش د ابن سعد کلام رد کولوسره لیکی احتج به الاته و و و و و و منان تنمیف این سعد فیه نظرا، لاعتباد عمل الواقدی (۱)

يعني دې ټولو انمه احتجاج کړې دې، مونږ وليلې دی چې د ابن سعد به دې تضعيف کښې نظر دې ځکه چې هغه په واقدي باندې اعتماد کړې دې ا ايزا د اين سود کالا م شام ايند ته پر افساد م شد شده است سود

لهذا د آبن سعد د کلام هیخ اعتبار نشته نافع بن عَمر تقد ثبت او حجت دی د نافع ابن عمر کشار انتقال ۱۲۹ هجری کښی اوشود ۷

ابن ابى مليكه دا عبدالله بن عبيدالله بن ابى مليكه تيمى قرشى و دوى حالات د كتابالايان باب عوف المؤمن من ان يحبط عبله وهولايشعر د لاندې تير شوې دى ^

﴿عائشه ﷺ و حضرت عائشه ﷺ حالات و بده الوى دوويم حديث لاندې تير شوې دى أ قوله: ان عائشة زوج النبي ﷺ كانت لاتسمع شيئاً لا تعرفه الا راجعت فيه حتى

تعرفه: حضرت عائشه گاگاد حضوریاک تاگا بی بی چی به کله یو داسی خبره واوریدله چی د څه په باره کښی به هغوی ته علم نه وو نو د هغی په باره کښی به نی تپوس کولو .چی هغه ښی طریقی سره زده کړی

^{&#}x27;) حواله بالا والجرح والتعديل لابن ابن حاتم(٥٢٠/٨)رقم(١٥٣٩٥-٢٠٨٨).

⁾ سيراعلام النبلاء (٤٣٣/٧)-

⁾ الثقات لابن حبان(٥٣٣،٧) -

^{*)} الطبقات لابن سعد(١٤/٤)-دميزان الاعتدال(١٤/١٤٤) رقم(٨٩٩٤)-

م) هدی الساری(ص۲۶۶)_

⁾ الكاشف(٣١٥/٢) رقم(٥٧٨٥)) كشف الباري(٥٤٨/٢)-

۲۹۱/۱) کشف الباری (۲۹۱/۱)-

قوله: وان النبى تاثير قال: من حوسب عذب، قالت عائشة: فقلت: اوليس يقول الله (فسوف يحاسب حساباً يسيراً) وقالت: فقال: انما ذلك العرض، ولكن من نوقش الحساب يهلك: حضورياك تاثير او فرمانيل چي چاسره حساب او كړي شي نو هغه ته عذاب وركولي شي. حضرت عائشه في فرماني چي ما عرض او كړو چي الله تعالى دا نه واني چي دې خلقو سره به اسان حساب كيږي؟ حضرت عائشه فرماني چي هغه خو صرف پيشي وي. البته چاسره چي مناقشه او كړي شي هغه معلك شي

مطلب دادې چې يو ورځ دا قصه اوشوه چې حضورپاک نه من حوسېعنب اوفرماليل. يعني د چاسره چې حساب اوکړې شي هغه ته به عذاب وي

ه پاسواپې د اشکال راغلو چې يو طرف ته خو تاسو فرماني چې چاسره هم حساب حضرت عائشه شه ته به عذاب ورکيږي. بل طرف ته الله د هغې خوش نصيبو تذکره کړې ده چاته چې په ښي لاس باندې عمل نامه ورکړې کيږي. هغه به کامياب خلق وي. د هغوي باره کښې راغلي دي چې هغوي سره به هم محاسبه کيږي اګرچې هغه به آسانه وي.

رفاما من اول کتابه بيبينه، فسوف يحاسب حساباً يسيرا، وينقلب الى اهله مسروراى (أ كويا چې په دوى باندې به خوى باندې به خوى باندې به خو عد اب نه وي.

حضورياک الله ددې اشکال دا جواب ورکړو چې په آيت کښې د حساب نه مراد عرض او مخامخ کيدل دی. او خما په کلام کښې د حساب نه مراد مناقشه بحث، دې . چې داسې د ولې او کړل؟ او داسې ولې او کړل؟ وغيره والله اعلم بالصواب

٣٧_باب لِيُبَلِّغِ الْعِلْمَ الشَّاهِدُ الْغَابِبَ

حُصُرِتُ شَيخ آلهند پينځ فرماني چه په دې کښي د علم تبليغ صريح تاکيد او تعميم دي، څوك چه دعلم مجلس کښي حاضر وي هغه ته پكار دي چه څومره احكام واوري هغه دې غانبينو ------

⁾ الانشقاق ٧-٩)-) عددالقارم (- ٧

⁾ عمدةالقارى(ج ٢ص١٣٨)_

[&]quot;) صعيح البخاري (ج ١ ص ٤٩١)كتاب احاديث الانبيآء.باب ما ذكر عن بني اسرائيل.رقم(٢٤٤١)_

نه اورسوي.په اهل علمو باندې تبليغ کول بالاستفلال لازم دي.چه په دې کښي دسانل سوال بادحاجت مند ضرورت نشته او کم یا زیات چې څومره علم وی هم دهغې دتبلیغ دمه دار دې 🖒 دَّاماء بخاري بينا خرض ددې باب نه دا هم کيدې شي چه که ديومسنلي دبيانولو ضرورت _{وابین}ن شی او حاضر خلقوته معلوم نه وی نو دسوال انتظار دې نه کوی.بلکه مسئله دې بیان کړی. اوګورئ حضرت ابوشریح خزاعی څانځ ته چه معلوم شوه چه عمروبن سعیدپه مکی مگرمي باندي حمله کول غواړي.هغه دحضرت ابوشريح نه څه سوال نه وو کړې.ځکه چه هغهٔ ته حديث معلوم وو .پس هرکله چه هغه ته حديث معلوم وو نو هغوي دسوال انتظار اونه کړل

اولاړو او هغې ته يي حديث واورولو والله اعلم

امام بخاري پوشتې چه کومه ترجمه دلته قانمه کړي ده هغه حديث پاك دي.ددې حواله هغوي تعلىقاقاله اين عياس عن النبي ناتي سره وركري ده

پخپله امام بخاري پينځ داحديث په کتاب الحج کښې موصولاذکر کړې دې ()

خو ددې روايت په يو طريق كښي هم دالعلم لفظ موجودنه دې.حافظ ابن حجر پيځ فرماني چونکه مقصود او مراد هم د دې ،علم، تبليغ دې.په دې وجه داقيد يي زيات کړو 🖒

(١٠٤) حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بُنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ حَدَثَنِمَ سَعِيدٌ عَنْ أَم ي هُرَيْج أَنَّهُ قَالَ لِعَبْرُوبْنِ سَعِيدٍ وَهُوَيَبْعَثُ الْبُعُوثَ إِلَى مَكَّةَ الْذَنْ لِي أَيُّهَا الأَمِيرُ أَحَدِثُكَ قَوْلاً قَامَيهِ النِّبي - صلى الله عليه وسلم - الْغَدَمِنُ يُومِ الْفَتْحِ، سَمِعَتْهُ أَذْنَا ي وَوَعَاهُ قَلْبِي، وَأَبْعَرَتْهُ عَيْنَاي، حِينَ تَكَلَّمَ بِهِ، حَيِدَاللَّهَ وَأَنْنَى عَلَيْهِ ثُمَّقًا لَ «إِنَّ مَكَّةً حَرَّمَهَ اللَّهُ، وَلَمُ يُحِيْمُ النَّاسُ، فَلاَ يَمِلُ لِإِمْدِءٍ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ أَنْ يَنْفِكَ بِهَا دَمَّا، وَلاَ يَغْضِدَ بِهَا شَجَرَةً، فَإِنْ أَحَدٌ تَرَخَّصَ لِقِتَالِ رَبُولِ اللَّهَ - صلى الله عليه وسلم - فِيهَا فَقُولُوا إِنَّ اللَّهَ قَدْ أَذِنَ لِرَسُولِهِ، وَلَمْ يَأَذُنَّ لَكُمْ ۚ وَإِنَّمَا أَذِنَ لِي فِيهَا سَاعَةً مِنْ نَهَا، ثُمَّ عَادَثَ خُرْمَتُهَا الْيُوْمَ كَحُرْمَتِهَا الأِزْمُ فِ وَلُبُيَنِيرَالشَّاهِدُالْغَابِبَ». فَقِيلَ لأبِي ثُمَرِيْجِ مَا قَالَ عُمْرٌوقَالَ أَنَاأَعْلَمُ مِنْكَ يَاأَبَأَثْمُزَيْجِ، لأَيْقِيدُ عَاصِيًا، وَلاَ فَازَّا بِدَمِ وَلاَ فَازَّا بِغَرْبَةِ ١٧٣٥ . ١٢٠٤١

رجال العديث

اعبدالله بن يوسف , اله مشهور امام ومحدث ابومحمد عبدانذ بن يونس كلاعى

⁾ الابواب والتراجم (ص \$ 0 و ٥٥)_

⁾ اوگوري صعيع البغاري (ج ١ص ٢٣٤) كتاب العج باب الخطبة ايام مني رقد (١٧٣٩)

⁾ فتع البادي (ج ١٩٨٨).

اً) ددوی مختصر حالات په کتاب بده الوحي کيبي د دويم حديث په ذيل کښي ذکر شوی دی. اوگورني کشف الباري (ج۱ ص ۲۸۹)

دمشقی پیمینیوری ، ` ،

دوی دسعید بن عبدالعزیز ،سعید بن بشیر ،امام مالك ،امام لیث بن سعد ،صدقة بن خالداو دیگر بن مضر شیخ نه روایت كوی

دې و پښ سر د سيد. د دوی نه روايت کونکوکښي امام بخاری،امام يحی بن معين،امام محمدبن يحی ذهلی. ابو اسحاق جوزجانی.ربيع بن سليمان پينم مرادی وغيره ډيرلولی محدثين دی د ،

اماء عجلي مينيج فرماني لكة"،

امام بخاری میشیخ فرمانی کان من اثبت الشامیین 🔭

ابومسهر مُرَيَّة فرماني عبدالله بن يوسف الثقة البقنع، ٥

اماه يحى بن معين گُولُو فهما في ما بقي على اديم الارض احداد ثق في البوطا من عبدالله بين يوسف التنيسي ، آ ، يعني په مخ دزمكي دموطا په روايت كښي دعبدالله بن يوسف تنبسبي گُولُونه زيات مضبوط څوك نه دې پاتي شوې

امام ابوحاتم مُرْهُمُ فرمائي هواتقن من مردان الطاطرى، دهولقة . ٧،

ابن يونس مُونِيَّةِ فرماني وكان **ثقة حسن** الحديث ، ^،

امام خليلي رئيلة فرماني ثقة متفق عليه ()

حافظ ابن حجر مينية فرمائى ثقة متقن من اثبت الناس في الموطأ ()

ابن حبان ﷺ دهغوي ذكر په كتاب الثقات كښي كړې دې (')

ددې ټولو توثيقاتوپه مقابله کښي ابن عدي گُنگودهغوي تذکره دضعفاء دپاره ليکلې شوې مخصوص کتاب الکامل، کښي کړې ده ر) ددې وجه داده چه يحي بن بکير گُنگه دهغوي په

۱۶) تهذیب الکمال(ج۱۶ ص۳۳۳)_

⁾ دشیوخواو تلامذو تفصیل د پاره اوګورئ نهذیب الکمال (ج۱۶ص۳۳۳ و ۳۳۴). وسیر اعلام النبلاد(ج۱۰ ص۳۵۸و۲۵۸)_

م) تهذيب الكمال (ج ۱۶ ص ۳۳۵)_

^{ً)} حواله بالا)_

^د) حواله بالا) _

^{ً)} حواله بالا)_ ۷.

[&]quot;) حواله بالا)_

م) تهذیب التهذیب(ج۶ص۸۷)_ ۱/ ساد ۱۱۲

^{ً)} تقریب النهذیب(ص ۳۳۰)،رقم (۳۷۲۱)_ ٔ) النقات لابن حبان (ج۸ ص۳٤۹)_

^{ً)} الكامل لابن عدى (ج ٤ ص٢٠٥)_

```
باره كنسي واني مق سبع من مالك؟ ومن را احتد مالك؟ ن
```

راد میسی در این عدی چه کله دا واقعه نقل کړه نو ورسره یې دمحمد بن عبدالله بن

بن عبدالحكم واني چه ما داخبره ابن بكيرته ذكركره. دې نه پس هغوى څه اونه ونيل رئ حافظ ذهبي ﷺ فرماني اسام اين مدى په كي قل الكامل "،

نیزهغوی وائی - ابن یوسف اثبت فی البوطا من این بکیر واوثق بکثیر،وداهیك ان یعی بن معین قال:مایقی علی ادیم الارش اوثق من این یوسف فی البوطا ."

يعني ابن يوسف په موطا كښي دابن بكير په مقابله كښي اثبت او ډيرزيات ثقه دې. داخبره كافي ده چه ابن معين وائي چه د زمكښي په مخ باندې دابن يوسف نه زيات ثقه كس دموطاپه باره كښي باقى نه دې پاتې شوې

پخپله ابن عدى مُوَلِيُّهُ فرمائي وصدالله بن يوسف، هوصدوق لا باس به ، والبخارى مع شدة استقسائه اعتبد عليه في مالك وغيره ، ومبد الله بن احتياد عليه في مالك وغيره ، ومبد الله بن يوسف صدوق لا ياس به دي امام بخارى باوجود دشديد استقصاء نه دامام مالك به روايتونو كبي هغوى باندي اعتماد كوى ، هم د هغوى نه دوى دموطا سماع اوكره ، دهغوى ډير

احادیّث دی،هغوی ٔصاحب خیر او فاضٰل دی دعبدالله بن یوسف تنیسی انتقال ۲۱۸ هجری کښی اوشو ۲٬۰

الليث: دامشهورامام ليث بن سعدبن عبد الرحمن فهمي مصري مُثلث دي. دهغوي حالات د

بده الوسی د دریم حدیث دلاندي تیرشوی، ۲۰۰۰

ا ابوسعد سعیدبن ابی سعید مقبری مدنی گزشتا دی.ددوی حالات کتاب الایهان، پارستان، پارس

@ابوشویح ناتی دا خضرت ابوشریح خزاعی عدوی کعبی ناتی دی 🖒

⁾ حوالا بالا. او اوګوري ميزان الاعتدال(ج۲ص۵۲۸).رقم (۳۷۱۳)_ 'رسېر ...

⁾ الكامل (ج£ص٢٠٥)_ أن ما دالا ما الارتاد الله الله الله الله الله

^{ً)} ميزان الاعتدال(ج ٢ص ٥٢٨).رقم (٢٧١٢) _ أ) حوالا بالا)

⁾ الكامل (ج £ص٢٠٥)_

⁾ الكاشف (ج اص ٤٠٠). رفم (٣٠٤٩)

⁾ كشف البارى (١ص ٣٢٤) __

^{^)} کشف الباری (ج۲ص۳۳۳)_

⁾ تهذيب الكمال (ج٣٣ ص ٤٠٠)

ددوی په نوم کښي ډير اختلاف دي.خويلدېن عمرو،عبدالرحمن ېن عمرو،عمروبن خويلد وغيره يوڅو نومونه راغلي ددي.ليکن مشهورخويلدېن عمرودې د ، _

دوی دفتح مکه نه وړاندې مسلمان شوي وو.دفتح مکه په موقع باندې دبنی کعب دريوجهنهو كښي يوه جهنډه ددوي په لاس كښي وه 🗟 دوي دښي 衛 نه علاوه دحضرت عبدالله بن مسعوَّد گاتلتا نه هم روایت کوی ددوی نه روایت کونکوکښي ابوسعید مقبری ّ سعيدين آبي سعيد مقبري سفيان بن ابي العوجاءاونافع بن جبيرين مطعم ﷺ دي 🖔 أمام واقدى يَعْظُ فرمائي كان ابوشهيح الغزاع من عقلاء اهل المدينة .. أن دحضرت ابو شريح نه تقريبا شل روايات نقل دِي چه په هغي کښي دوه روايتونه متفق عليه دي اويوحديث کښي امام بخاري متفرد دې ۴۸ دحضرت آبوشریح لالئ انتقال په مدینه منوره کښي په ۴۸ هجری کښی اوشو (١) رض الله تعالى عنه وارضاة

قوله:انه قـال لعبرير .. سعيد _ وهويبعث البعوث الى مكة: _ حضرت ابوشريح ﴿يُوُّوَ <u>عمروبن سعيدته اوفرمائيل په هغه وخت كې كله چه هغه مكې مكرمې ته فوج ليږلو</u> دحضرت ابوشريح دنمبيحت تاريخي پس منظر دحضرت معاويد المنظوفات به في رجب ٠٠

هجرئ کښي اوشو،هغوي دخپل ژوندپه آخر کښي يزيدبن معاويه خپل ولي عهـدجوړ کړو اوټولو خلقو نه دهغي دپاره بيعت واخستلو.

حضرت معاويه ﷺ انتقال په وخت ضحاك بن قيس اومسلم بن عقبه خپل وصي جوړ كړل.

هغه وخت يزيد د ښکار دپاره تلي وو ،هغوي ته يي اووئيـل چـه کلـه يزيدراشـي نوهغـه تـه زمـ سلام اووائي او داهم ورته اووائي چه د اهل حجاز او داهل شام خيال ساته. دابن عمر نه ځه ويره نشته البته دحسين او دعبدالله بن الزبير دبيعت اهتمام اوكره

كله چه يزيد راغلونوهغه ته داپيغام اورسولي شو .يزيد دمديني منوري امير وليدبن عتمه بن ابي سفيان ته خط اوليكلو .هغه حضرت حسين اوحضرت عبد الله بن ربير گار اوغوستل حضرت عبدالله بن زبير كالثؤفورا داخيره اخوا ديخوا كړله،اوحضرت حسين كالتؤ خپل خادمانو يوجماعت سره هلته آورسيدو. هغوى ني باهركينول او وې فرمانيل كه دخطري څه خبره واورئ نودننه راشئ اوپخپله ئي دننه تشريف يوړلو

⁾ اوكوري تهذيب الكمال (ج٣٣ ص٠٠٠) والاستيعاب بهامش الاصابة(ج١ ص١٤١ و٤٢٠) حرف الخاء و (ج ٤ ص ١٠١ و ١٠٢) الكني. والاصابة (ج ٤ ص ١٠١ و ١٠٢)

⁾ آوگورئی طبقات ابن سعد(ج £ص۲۹۵)ومراجع مذکوره بالا)_

⁾ دشيوخواً اودتلامذو تفصيلً دپاره اوګورني تَهذيب الکمال(ج٣٣ص ٤٠١)_

اً) الاستيعاب بهامش الاصابة(ج ٤ ص١٠٢)__

^م اوګوری عمدة القاری (ج^۲ص۱<u>۳۹).خلاصةالخزرجي(ص۴۵</u>۲)کښې دی له عشرون حدیثا.اتفقاعلی حديثين وانفرداخ م)بحديث.دي كنبي د ام، رمز بظاهرصحيح له دي،اومحوري تعفة الاشواف (ج٩ص ٢٢٣و ٢٢٤)

⁾ اوگورئ الكاشف (ج٢ص ٤٣٤) رقم(۶۶٧٤)_

حضرت حسین نگانتی ته ولید د یزیدپیغام واورولو .حضرت حسین نگانتی و فرمائیل زمایه رنگ کس نه بیعت او داسې په تنهائي کښي مانه په مجمع عام کښي بیعت واخله. ولید امن پسند سری وو ،هغی اووئیل ډیره ښه هلته مروان هم ناست وو ،هغه اووئیل دوی نه سمدستی هم بيعت واخله، كه بيعت نه كوى نوداقتل كړه، اوس كه دوي دى ځاني نه لاړل نوستا او د هغړي په مينځ کښي به ډيرلوني جنګ اوشي،حضرت حسين اللي دهغه ځاني نه راپاسيدو او وي فرمانيل: ابن الزرقاء اانت تقتلق ام هو؟كذبت والله ولومت،دي نه پس هغوي واپس خپل كورته راغلل

دهغوي دتلونه پس مروان وليدته اووئيل چه تازماخبره اونه منله،اوس به ټول ژوند ته دهغوي مغنيوې نشي كولي، وليد اووئيل چه:

ويحفيرك بامروان، والله ما احب ان ل ما طلعت عليه الشبس وغربت عنه من مال الدنيا وملكها، وال تتلت

حسيناان قال: لا ابايع، والله الى لاظن ان امرايحاسب بدم الحسين لخفيف الميزان عند الله يوم القيامة. يعني اې مروان افسوس دې په خدائي قسم که ماسره ددنيا اموالوکښي هرڅه وي چه په هغه باندې نمر راخيري او غورزيږي، ماته داخوښ نه دې چه ددې په مقابله کښي د حسين دبيعت نەدانكار پەوجەحسىن قىلكرم، پەخدائي قسم زەدا پوھيږم چەدكوم كس نەدحسين قتلولو حساب واخستلي شو هغه به دالله په نزد قيامت كښي دډير سپك وزن والاوي

مروان هم په ظاهره دوليد تائيد او کړو

حضرت ابن الزبير الله وحالاتو نه خبريدو،هغوي پسي وليد خپل كسان برابرليرل ليكن هغوى موقع موندلوسره په پتپه مکي مکرمي ته لاړل

بل طرف ته حضرت حسين كالتؤهم خپلواحبابوسره مشوره اوكره اومكي مكرمي ته اووتل وليدحضرت ابن عمر ﷺ ته پيغام اوليږلو .هغوي جواب وركړو چه كله ټول خُلق بيعت اوكړي نو زه به هم اوکړم،ارباب اقتدارته دهغوي دطرف نه څه خاص خطره هم نه وه ديوروايت مطابق هغوي بيعت كړې وو

يزيدته چه كله ددي ټولو خبرو علم اوشو .نوهغه پوهه شوچه دوليدنه څه كوتاهي شوي ده .پس

هغه يي معزول كړو اودمكي ګورنر عمروبن سعيديي دمدينې ګورنر جوړ كړو عمروبن سعيد رمضان ۴۰هجري كښي مديني طيبې ته اورسيدو او دذوالقعده ۴۰هجري نه ئى دامارت امور سنبهال كړل

ي - ر ـ اور ـ اول کلو اوخپل طرف ته يي بل طرف ته دااوشوچه حضرت حسين گائزته دکوفي خلقو خط اوليکلو اوخپل طرف ته يي راوبللو حضرت ابن عباس گائزاونورو ملګرو دوی منع هم کړو،ليکن چونکه مقدرغالب وو، کوفي ته يي تشريف يوړلو،اوبيا هلته په ۱۰ محرم ۶۱ هجری کښي دهغوی دشهادت واقعه

بل طرف ته حضرت عبدالله بن الزبيير فأكاددي واقعي به بنيياد خلقوته دشام والوظلم اوستم ښودلوسره براګيښته کړل. ډيروخلقو دهغوي په لاس بيعت او کړو

عمروبن سعيد دحضرت عبدالله بن الزبير دمقابلي أومحاصري دپاره يولښكر تيار كړو،كله

چه مروان ته ددې اطلاع اوشوه نوهغه راغلواو وې وئيل ګوره مکې باندې دحملي دېاره لښکر مه ليږه. عمربن سعيدپه دې خبره پوهه شو، اوهغه منع شو،خو عمروبن الزبير چه د عبدائله بن الزبير دپلار دطرف نه ورور وو،هغه دعبدالله بن الزبير گاڅودشمن وو، اوهغه دعمرو بن سعيد شرطبانو سردار وو،هغه اووئيل والله لنفوونه في چوف الکمية هلى دهم اتف من دهم. يعني څوك چه څومره هم سوزى،مونږه خوضروربالعشرور كه دكعبي شريفي دننه هم دجنگ نوبت

راشی نو جنگیگوبه

مضرت ابوشريخ خزاعي المستحدة كله ددې لښكر دمقصد علم اوشونوهغوى تشريف راوړلو . دهغوى نه اجازت يي اوغوښتلو اودنبى كريم الله هغه حديث يي واورولو كوم چه مخكښي راروان دې عمروبن سعيدته يزيدتاكيدى حكم اوليږلو . لهدا دالښكر مكې مكرمى ته روان شو

هلته مکی والوهم تیباری او کولو، حضرت عبدالله بن الزبیس انتخاد عبدالله بن صفوان په ماتحتی کینی فوج دمقابلی دپاره اولیږلو. ددواړولښکرونو مقابله اوشوه دعمروبن الزبیر فوج ته شکست اوشو. دهغه خوی قتبل شو اوپخپله ګرفتارشو. دګرفتاری نه پس ني

دکوروسزا ورکړه.او هم په هغې کښي مړشو

بن محمدي لري كړو او عبدالله به محتمه په دس يي بنديد او لود د او اعمد د اهېری ده يزيد ته چه كله داهل مدينه د بيعت ختمول معلوم شرنوډير غصه شواوډ پر دغصي اظهاريي او كړو. هغه دخپل خواصو سره مشوره او كړه .حضرت معاويه تاتوه م حكبني داوصيت كړې كړه لهذا دافيصله او شوه چه مسلم بن عقبه په ماتحتى كښي مدينې منورې ته لښكر اوليږلي شي. داكس بوډا او بيمار وو .يزيدهدايت او كړوچه كه دامړشي نوددې په ځانې دې حصين بن نمير امير جوړ كړې شي اودا يي اوونيل چه مدينې والو ته ددرې ورځې مهلت ور كړي. كه هغوى اومنل نوفها و نعمت كني مدينه طيبه نعوذبالله مباح ده

دالبُکر مدینی ته آورسیدو .مدینی والوته ددرې ورخې مهلت ورکړې شو ،هغوی اونه منله . بیا په طرفینو کښي جنګ اوشو .اهل مدینه ډیر نرتوب سره مقابله اوکړه .لیکن دا اوشو چه بنو حارثه شامیانو ته په مدینه کښي دداخلیدوموقع ورکړه .کله چه دښار دمینځ نه دتکبیر آواز اوچت شونواهل مدینه ډیر بدحواسه شول.اوهغوی مسکینان مجبورشول.بیاخوشام والو ډیرخونززی اوکړه،تقریبا اوو سوه مهاجرین اوانصارشهیدان شول اوتقریبا لس زره غلامان شول. داهم ونیلی شی چه شامیانودزنا اود فجوربازارهم گرم کړوتردې چه یوزرباکره ښځي حامله شولي واشعامهالصواب.

دى نه پس هغه په دې شرط دمدينې والونه بيعت واخستوچه هغوی به ديزيد غلامان وي. که آزاد وي. او که خرڅوي، اوبيامکې ته روان شو . داواقعه د ۴۴ هجري ده

تر اوسه هغه پدلاره کښي ووچه مقام (مشلل)يا (ثنية هرش)ته اورسيدو اومړشو . دمرګ په وخت هغه حسين بن نمير سکوني راوبللو او ورته يي اوونيل که دامعامله زماپه اختيار کښې وې نومابه کله هم ته خپل جانشين نه جوړولي خوچونکه ديزيد حکم دي . خکه تاخپل جانشين جوړوم . دې نه پس يي ورته څه وصيتونه او کړل اومړشو

دهغه دمرك نه پس خصين بن نمير په ۴۴هجرى دمحرم دمياشت په آخر كښي مكې ته اورسيدو. د حضرت عبدالله بن الزبير اودهغوى دملكرو محاصره يې او كړه . مقابله شروع شوه . حتى چه د ربيع الاول شروع كيدوسره په بيت الله باندې دمنجنيق په ذريعه كانړى اوورولي شو او دې سره هغوى په بيت الله شريف باندې اور هم او ورولو . اودې سره د كعبې غلاف اوسوزيدو . تردې چه په ربيع الاول كښي ديزيد مرك هم واقع شو. په ربيع الشاني كښي د اخبر دشاميانو نه وړاندې حضرت عبدالله بن الزبيرته اورسيدو . هغوى شاميانوته اوونيل چه تاسوولي جنگ كوئ ستاسوطاغيه خو مړشو ابتدا . هغوى داخبره اونه منله . خوبيايي يقين اوشو . دغه شان دالښكر واپس شو.

اوس حضرت عبدالله بن الزبير المستخدد دخپل دعوت چلولوموقع ملاوشو اوډيروخلقودهغوی سره ببيعت او کړلو . ليکن دلته په شام کښي اول دمعاويه بن يزيد بن معاويه بيعت اوشو . څومياشتو کښي دهغه انتقال اوشو ، دې نه پس مروان بن الحکم خليفه شو . دمروان نه پس عبدالملك خليفه شو . داډيراعتماد والاکس وو . هغه ورو و دو دارالاسلام ټولې علاقي قبضه کړې اوپد ۲۷هجري کښي يي د خپل سپه سالار حجاج بن يوسف تقفي په دريعه حضرت

عبدالله بن الزبير الأثن قتل كړو (۱) داټوله واقعه ددې دپياره ذكر كړې شوه چه داټوله ديوبيل سره مربوط ده. ګنى مقصودخو ابتدائى قصه وه.چه پكښي دعمروبن سعيد په مكې باندې دلښكرليږلو قصه وه

قوله: الندر لى ايها الاميراد وثك قولاف ميه النبي المراف من المراف من المراف الفد من يوم الفتح، سمعته اذناي ووعاه قلبي وابصرته عيناي حين تكلم به: اي امير تاسوماته ديوي خبري اورولوا جازت راكړي . چه په هغي باندې نبي الله ونځ به دلاړه

⁾ د تولو تفصیلاتودپاره او گوری الکامل لاین الائیر (ج۳ص۲۵۸ و ۳۵۰ ومابعدها). والاصابة (ج۳ ص۴۶۳) و ۴۹۵) القسم الثالث. ترجمه مسلم بن عقبة وقم (۴۵ ۸۵) ووفیات الاعیان لاین خلکان (ج۶ص۲۷۶) ترجمهٔ بزیدبن القعفاع القاری)_

خطبه ورکړې وه،زمدواړو غوږونوهغه خبره واوريده،زمازړه هغه خبره محفوظه کړه، اوکله چەنبى ارشاداوفرمانىلە نوزماسترگو ھغوى تەكتل حضرت ابوشریح بایش عمروبن سعید دمتاثره کولودپاره دتلطف لاره اختیاره کړه او وي فرمانيل اثذن لم ايهاالامير....

احدثك دجواب امرپه وجه مجزوم دي.

دقام به النبى نهيم مطلب دى قام به عطيها.

د سمعته اذنای ووعاه قلبی واهمه ته عینای و نیلواو په دې سره حدیث اور ولومقصد داباور کول دی چەماتە څەقسىم دەول نە دېشوى اونە پە اوريدوكښي مانە څەغلط فهمى شوى دە

قوله: حمدالله، واثنى عليه، ثعرقال: نبي كريم نلك دالله تعالى حمدوثنابيان اوفرمائيله اوبيايي اوفرمائيل، انمكة حهمهاالله ولم يحهمهاالناس

بَي شُكَّه الله مكه حرام ترخولي ده،خلقو حرام نه ده ترخولي. مخكنيي دحضرت عبدالله بن زيد تأثي حديث راروان دي () هم دغه شان دحضرت انس تأثير حديث هم راروان دي، اوبه هغي كښي تصريح دې ان ايراهيم حمرمكة اوبه هغه روايت كښي ان مكةحرمهااللهولم يحرمهاالناس راغلي دي. په ظاهره باندې په دواړو روايتونو كښي تعارض دي په دواړو روايتونو کښي د تطبيق صورت دادې چه اصل تحريم دالله تعالى په حکم سره اوشو. حضرت ابراهيم تيئيًا په خپل اجتهادنه،نود ان ابراهيم حمدمكة مطلب داشو ان ابراهيم حمدمكة بامرالله تعالى لاباجتهادة.

يا دا مطلب دې چه حضرت ابراهيم تيځاد طوفان نوح نه پس چه کله دمکې تحريم پټ شوې وو نو بيا يي دمكي د تحريم اعلان اوكرو.

يادي داسى اووانيلى شى چه انالله قض يوم غلق السمادات والارض ان ابراهيم سيحم مكة. يا دامطلب دې ان ابراهيم اول من اظهرتحريمها بين الناس وكانت قبل ذلك عندالله حراما. ('

قوله: فلا يحلُّ لامرءيومر. بالله واليوم الآخر ان يسفك بها دمياً: پس يوسړي د باره هم چه په الله اوپه ورخ داخرت باندې ايمان ساتي حلال نه دې چه هلته وينه اوبهيوي دلته دايمان قيد اولکولي شو .دې ندېد دې مسئله باندې استدلال کړې شوې دې چه کفار دفروع مخاطب نددي

. گفار دفووع مخاطب دی او که نه؟ دامستله مختلف فیها ده،د احتافویه دي کښي پوڅو

⁾ صعبح البخاري(ج١ص٢٨٤).كتاب البيوع. باب بركة صاع النبي كلي ومدهم. رقم (٢١٢٩). و (ج اص ٤٧٧) كتاب أحاديث الانبياء باب(بدون ترجمة بعدياب يزقون النسلان في المشي)، وقم(٢٣۶٧)_) اوگوري فتح الباري (ج ٤ ص ٤٣) كتاب جزاء الصيد بباب لايعضد شجر العرم)_

اقوال دی ابن نجیم پیشایه شرح المنار کښي لیکلی دی چه کفار دایمان مخاطب خودی.هم دغه شان دحد شرب نه علاوه دباقی عقوباتوهم مخاطب دی.هم دغه شان دمعاملا توهم مخاطب دی

البته دعباداتومخاطب دى كه نه؟ علماء سعرقند واني چه كفار دعباداتونداعتقادا مخاطب دى اوند اداء مخاطب دى

علما ، بخارا وائي چه هغوى اعتقاداخومخاطب دى البتدادا ، مخاطب نددى

اوفقها عراق وآتي چه هغوی دعباداتو اعتقاداهم مخاطب دی او اداء هم لهذا په آخرت کښي به د دواړو سوال کیږي.دمشائخ بخارا په نزدصرف په ترك ایمان باندې خوبه مواخذه وی باقی دعباداتو په ترك باندې به څه مواخذه نه وی،نه په ترك اعتقادباندې اونه په ترك اداءباندۍ ()

البته حضرت کشمیری گیافوفرمائی چه کفارولره چه مون په معاملاتوکښي مکلف ګرخوددې په مطلب که داوی چه په آخرت کښي به په دي باندې ثواب او عقاب مرتب کیږي نوددې په صحیح والی کښي څه شك نشته .او که دامطلب وی چه په دنیوی احکامو کښي به دصحت او فساد حکم لگی، یعني څنګه چه دیومسلمان دمعاملاتو په باره کښي مونږد صحت و فساد حکم لگوو هم دغه رنګ د کفاروپه معاملاتوباندې به هم په دنیا کښي دی چه که یو کافر بغیر لگی نودې کښي دا عموم صحیح نه دې .ولی چه په هدایه کښي دې چه که یو کافر بغیر د گواهانونه یادبل کافر د معتده سره نکاح او کړی اوداسی کول دهغوی په مذهب کښي جائز وو ، بیادادواړه مسلمانان شی نو دا مام ابو حیفه کیاچ په نزدهغوی به هم په دغه نکاح بر قرار ساتلی شی، ددې وجه صاحب هدایه دا بیانوی چه دلته بطور شرع حرمت ثابتول ممکن نه دی ،ولی چه کفار دحقوق شرع مخاطب نه وی . اونه بطور حق زوج عدت واجب کیدي شی . دی ولی چه زوج ددې معتقد نه دې .

هم دغه شان ابن الهما منه تصریح کړې ده چه که یومسلمان حربی ته مردار،خنزیر یا مدغه شان ابن الهما منه تصریح کړې ده چه که یومسلمان حربی ته مردار،خنزیر یا منککورې خرخوی او ددې به مقابله کښي مال ګټی نودا دامام ابوحنیفه اوامام محمد صوبماالله په نزد حلال دې مکلف وي نواول صورت کښي به نکاح نه صحیح کیدي او به دویم صورت کښي به مال نه حلالیدي،ددې نورنظائر هم شته چه په تتبع او تلاش سره ملاویدي شی.لهذا خنګه چه دعقوباتونه دحد شرب استثناه اوشوه هم دغه شان په معاملا تو کښي دي هم داسې قیداولګولي شی.چه دهغې نه په کتب فقه کښي صراحة واردشوې فروعو استثناه کیدي شی، اواله اعلم،

پ کتب چه نبین عفرات واردندو کی طرفتو است. **دشوافع په نزد درې اقوال دی**: دیوقول مطابق کفارد منهیاتومخاطب دی.دماموراتونه دی.

^{&#}x27;) اوگوری ردالمعتار (ج۳ص ۴ ۲۶)کتاب الجهاد.مطلب فی ان الکفارمخاطبون. اواوگوری کشف الاسرار شرح السنار (ج۱ص۹۵و ۹۶).وکشف الاسرار علی اصول البزدوی (ج ۴ص۲ ۲۴ و ۴ ۲۴)بیان مایجب علی الکافر و مالم یجب)

^{*)} اوگورئ فتع العلهم(ج ١ص ١ ٥٤ و ٢ ٥٤) كتاب الايعان،باب الدعاءالي الشهادتين وشرائع الايعان) _

دويم قول دادې چه د يوڅيزهم مخاطب نه دي

دريم قول چه دمحققينودي او اكثر حضرات هم ددي قائل دى چه دمامور اتو او دمنهياتو د ټولو

مخاطب دی 🖒

امام نووي پينيا آخري دواړواقوالو کښي تطبيق ورکړې دې چه کفارپه دنياکښي مخاطب نه دى ځكه چه ددوى نه په حالت د كفر كښي دمونغ روژې وغيره مطالبه نشي كيدې اوكه هغوی مسلمانان شی نوپه هغوی باندې قضاواچې نه ده اوپه آخرت کښي مخاطب دی. يعني

په ترك باندې به په آخرت كښي مطالبه كيږي 🖒 دامام احمد پرهیونه هم دوه روایتونه منقول دی.پوداچه هغوی مخاطب دی.دویم داچه هغوی

ايا حديث الباب دكفارو په مخاطب بالفروع نه كيدوباندې دليل كيدې شي؟ ليكن حديث الباب د کفارو غیرمخاطب کیدوباندې دلیل نه دې ولي چه دلته دایمان قیدممکن دې خکه یي د کوارو لګولې وي چه هم اهل ايمان احکام دشريعت مني. ياداسې دې اوونيلې شي چه داقيد د برانګيخته کولودپاره دې اوداښودلودپاره دې چه ايمان ددې خبرې تقاصا کوي چه ددې دحلال کيدو دي اعتقاد د اونکړې شي.

فائده يومن بالله واليوم الآخر كنسي صرف دمبدا او دمعاد تذكره اوكره . دايمان بالله نه يي مبدا طرف ته اشاره اوفرمائيله او دايمان باليوم الآخر نه يي معادطرف ته.ددې په ضمن كښي باقى ټول ايمانيات يخيله داخل شول

قوله: ان يسفك مها دما : چه هلته د وينه او بهيولي شي

يسفك دباب مربنه دي.دا معروف هم وئيلي شوې دې اومجهول هم 🖒

په حرم مکه کښي دقتال حکم: مکي مکرمي باندې حمله کول. هلته اوسيدونکوسره جنګ او قتال كول جائزدي او كهنه؟

علامه ماوردي شافعي ﷺ فرمائي چه دمكي مكرمي دخصوصياتونه داخبره ده چه په اهل مكه باندي دي حمله اونكړې شي.هغوي سره دي قتال اونكړې شي. كه اهل مكه بغاوت

اوکړي او بغير دقتال نه هغوي په لاره راوستل ممکن وي نوقتال صحيح نه دي. اوكة بغير دقتال نه هغوي دبغاوت نه نه منع كيږي نوجمهور علماء والي چه هغوي سره دي قتال او كړې شي. ولې چه اهل بغي سره قتال دحقوق الله نه دې، چه تلف كول يي صحيح نه دي. نورعلما ، فرماني چه په دې صورت کښي هم دهغوی سره قتال صحيح نه دي، البته هغوي

^{&#}x27;) اوكوري شرح النووي على صحيح المسلم(ج ١ص٣٧) كتاب الايمان باب الدعاء الى الشهادتين وشرائع الاسلام)

^{ً)} واختلف اهل العلم في خطابه بفروع الاسلام في حال كفره مع اجماعهم على انه لا يلزمه قضاءها بعد اسلامه. حكى عن احمد في هذا روايتان المغنى لابن قدامة(ج١ص٣٣٩)_

^{&#}x27;) فتح البارى (ج اص١٩٨)_

باندې دي داسې تنگي اوکړې شي چه هغوي اطاعت طرف ته واپس شي اود بغاوت نه منع شي المام نووي پُښتي فرماني چه دامام شافعي پيتي قول دجمهورو مطابق دې ۱

دامام شافعي گنشگ بوقول د تحريم القتال في مكة هم دي جه هغه قفال گنشگ اختيار كړي دي او بعض علماء شافعيه او مالكيه هم دغه اختيار كړې دي . پس دابن العنير . ابن دقيق العيد . امام طبرى او ابن العربى شيخ هم دغه راني ده . ٢ . په احنافوكښي علامه سندهى گنتگ هم دغه اختيار كړي دي . ٢ . دامام بخارى گنگ په نزدهم دغه مختار دي ٢ . .

جمهورعلما چه دقتال دجوازقانل دی هغوی دحضرت ابوشریخ تشیده دی حدیث کنبی تاویل کوی او وائی چه هلته دقتال دحرامیدونه مراد د قابل مخصوص کیفیت دی مثلا منجنیق وغیره نصب کولوسره دی قتال اونکری شی چه دهغی نقصان عام وی اودقتال دحرمت قابلین وائی چه حدیث مطلق دی به دی کنبی خه قسم تخصیص نشته اوبیا چه نبی تشته دکوم قتال اجازت ملاو شوی ووهغه دمطلق قتال اجازت وو دمخصوص قتال اجازت نه وو الهذامذ کوره تاویل نشی چلیدی ددی نه علاوه دحدیث سیاق دلات کوی چه حرمت دقتال ددغه زمکی دحرمت داظهار د پاره دی چه به هغی کنبی مطلقا سفك دما حرام ده اوداظاهره ده چه سفك دماء عام ده دی لره د عمومی ضرر رسونكو والا آلاتوسره مخصوص كول څه معنی نه لری (۱)

په حرم مکه کښي دقتل آودقمصاص حکم دلته يو مسئله داده چه که يوکس جنايت اوکړي نوآيا په حرم کښي د هغې نه قصاص اخستې شي؟

دې سلسله کښي دا تفصيل دې چه که يوکس څه جنايت او کړي او حرم کښي پناه واخلي نوکه ددې جنايت مادون النفس وي نوبالاتفاق ددې قصاص به حرم کښي احسنې شي

اوكه جنايت دقتل وي نو كتلي به شي چه هغه داجنايت په كوم ځاني كښي كړې دې؟

كه جنايت د قتل په حرم كښي كړې وى نود دې په باره كښي هم اتفاق دې چه د هغه نه هم په حرم كښي قصاص اخستې شي او كه د قتل د جنايت ارتكاب يي د حرم نه باهر كړې وى اوبيا په حرم كښي يي پناه واخستله نو

او که دقتل دجنایت ارتکاب یي دحرم نه باهر کړې وی اوبیا په حرم کښي یي پناه واخستله نو د هغه په باره کښي اختلاف دې

شوافع أومالكيه دهغه په باره كښي هم داستيفاء قصاص قائل دى

 ⁾ اوگورئ فتح الباری (ج ٤صـ ٤٨) كتاب جزاء الصيد.باب لايحل القتال بمكة.واعلاء السنن (ج١٢ ص٣٥٥ و٣٣).كتاب السير.باب لايجوزقتل من لجا الى الحرء مسلما كان اوذميا او حربيا.واحكام القرآن للعلامة ظفر احمد العثماني(ج ١ص ٧٠)_

رً) فتع الباري(ج ٤ ص٤٩)_

^{ً)} حواله بالا)__

⁾ حاشية السندهي على صحيح البخاري (ج ١ص ٣٣٤) كتاب جزاء الصيد باب لايحل القتال بمكة)_ أ حواله بالا)

⁾ اوگورئ فتح الباری(ج£ص٤٨). واعلاءالسنن(ج١٢ص٣٥٥و٥٣٣).وحاشيةالسندی علی البخاری (ج1ص ٣٣٤)_

او حنفيه او حنابله وائي چه دهغه نه به په حدود د حرم کښي قصاص نه اخستلې کيږي،بلکه د هغه خور اك څکاك به بند کړې شي، تردې چه هغه د حدود حرم نه پخپله باهر لاړ شي،بيا به هغه نه قصاص اخت م

نه قصاص احستی شی د، شافعيه ارمالكيد اولادي خبري نه استدلال كوي چه زاني ته كوړې لگول، دغل لاس كټكول. اوهم دغه شان دقاتل نه قصاص اخستو حكم دې. په دې امورو كښي ديو مكان تخصيص

نشته هم دغه رنګ دهغوی استدلال د الحرمرلايميد عاصيا دلافارا بدم دلافارا بخرية نه هم دي ښي کريم کالله دابن خطل د قتلولو حکم ورکړو . په دې حال چه هغه د کعبې غلاف سره لګيدلې وو ن

بله دا چه هغوی واني چه داسړې چه جنايت يي او کړواو حرم ته او تختيدو .چه دهغه قتلول دمعصيت د وجې نه مباح شوې دې،هغه د کلب عقور په شان دې،لکه څنګه چه کلب عقور په حرم کښي هم وژلې شي،هم دغه شان دې سړې ته به هم په حرم کښي پناه نه ملاويږي ۲۰

دحنفيه او دحنابله استدلال دقرآني آيت ومن دخله كان امنا رئينه دي. دا الحركه خبر دي خو مراد

هم دغه شان دحدیث الباب نه هم استدلال کوی

ان مكة حرمهاالله ولم يحرمها الناس، فلا يعل لا مرئ يومن بالله واليوم الآخران يسفك بها دما، ولا يعضد بها شجرة، فان احد ترخص لقتال رسول الله كليِّ فيها فقولوا: ان الله قد اذن لرسوله ولم ياذن لكم، وانها اذن لي فيها ساعة من نهاد، ثم عادت حرمتها اليوم كحرمتها بالامس، وليهلخ الشاهد الغائب.

دنبي كريم 微 ارشاد هذا بلدحهمه الله يوم خلق السبوات والارض......، ، نه هم حنفيه اوحنابله

ترڅو پورې چه د شوافع ومالکيه داستدلل تعلق دې چه زاني ته کوړې لګول. دغيل لاس كتكول او دقاتل نه قصاص اغستو حكم دى اوددوى دياره دمكان څه تخصيص نشته پس دا خبره خو مسلمه ده چه په دې امورو داجرا ، دپاره دامکنه وازمنه عموم دي، هريوځائي او هريوزمانه کښي د دوي اجراءکيدي شي.ددې دپاره غير متعين طورباندي هريومکان کافي دې،لهذا ددې اجراء په غير حرم کښي کيدې شي

⁾ اوګورئ المغنی لابن قدامة (ج٩ص٩٠...٩٢).واوجز المسالک(ج٨ص١٧٤)کتاب العج. باب جامع العج. واحكام القرآن للعلامة ظفر احمد العثماني(ج1ص٤٩)وبدانع الصنائع(ج٧ص١١٤).وَاعلاء السنن(ج١٢ ص٥٣٥..٥٣٢)، كتاب السير،باب لايجوزقتل من لجا الى الحرم.....)_

^{ً)} اوګورئ موطا امام مالک(مع اوجزالمسالک ج۸ص۱۷۲)کتاب الحج.باب جامع الحج)_ ") دتفصیل دپاره اوګورئ المغنی لابن قدامة (ج ۹ ص ۹۰ و ۹۱)_

[&]quot;) آل عمران ٩٧)__ ۵) المغنی(ج ۹ ص ۹۱)_

⁾ صعيع البخاري (ج١ص٢٤٧)كتاب الصيد باب لا يعل القتال بمكة رقم (١٨٣٤)_

بیا که عموم امکنه اخستوسره په حدود حرم کښي داجرا ، قصاص جواز ثابت کړی ، نوبياهم زمونږه مذکوره رواياتونه به په دې کښي تخصيص ضروری وی ، خاص طور باندې چه پخپله دا حضرات حامله اوهغه مريض چه د چاد صحت اميدوی ، دهغوی سزامؤخر کوی ، حالاتکه دعموم تقاضا خو داده چه بغير د تاخير نه سزاجاری کړې شی ، چه هغوی ددې تخصيص کولې شی نود دلانلو په رنړ اکښي مونږه دمذکوره صورت تخصيص هم کولې شو

-دشافعيه الحام لايعيد حاصيا.....الخانه استدلال كول هم صحيح نه دي ولي چه دا حديث نه دي. بلكه داخو دعمروبن سعيدقول دي

اوترڅو پورې چه دابن خطل دقتل تعلق دې.نوهغه په دې رخصت کښي داخل دې چه دکوم ذکريه حديث باب کښي راغلې دې.واشا افتال فيهاسلعة من بهار، شهادت مرمته اليوم کهممتها امس. شافعيه په دې باندې وائي چه ښي کريم ۱۸ مکې مکرمې ته په داخليدوسره مکمل قبضه کړې وه اوټول مطيع شوى وو .هغه وخت يعني يوساعت دحرمت نه مستثنى وو .دې نه پس بيا حرمت راغلي وو چه وروستو دابن خطل دقتل حکم ورکړې شو .معلومه شوه چه نبي ۱۸ پخ در کښي د در کښي د در کښي د در کښي د درې د درې کښي در کښي د در کښي د درې د دې درې کښي در کښي د درې د کښي در کښي د درې کښي د درې د دې د دې درې کښي د درې کښي د درې کښي د درې کښي د درې د کې در کړي وو در

ددې جواب دادې چه نبي کريم کالم ته چه ديو رساعت پورې دقتال اجازت ملاوشوې وو . دهغي نه مراد اصطلاحی ګهنټه نه وه .بلکه دسحرنه واخله ترمازيګرپورې وخت وو . دې وخت کښي دننه دننه ابن خطل قتل کړې شو . د عبوين شعيب عن اييه عن جده دطريق نه امام احمد روايت نقل کړې دې چه دا اجازت تر مازيګرپورې وو ()

بياپه گُلُب عُقُورباندې قياس هم صحيح نه دې،ولې چه دکلب عقور په طبيعت کښي ايذا رسانی ده. ددې وجې نه حرم دهغه دايذارسانۍ نه بچکيدلودپاره هغه ته پڼاه نه ده ورکړې. اوپه انسان کښي اصل حرمت دې اودهغه حرمت هم ډيرعظيم دې لهذاداقياس مع الفارق دې. بيا سړی جنايت باهر کړې دې اوهغه په حرم کښي دننه څه قسم انتهاك نه دې کړې.بلکه دحرم دحرمت لحاظ يي اوساتلواو دهغې پناه ئي واخستله (آ)

باقی پاتی شوپه حدود حرم کښي قتل یادموجب حداثناه دارتکاب تعلق، پس مونږه مخکښي بیان کړی دی چه دتمام علما، په نزدبالاتفاق دده نه به هم هغه ځاني کښي قصاص اخستې شي اوپه ده باندې به حدجاري کولي شي

وجه داده چه څنکه دحل والو ته دجراتم نه ایسارولو ضرورت وی، هم دغه شان حرم والو ته هم د زاجر ضرورت دی. که دهغوی په حق کښي حدود زنانا فذنشی نودالله تعالی حقوق به معطل شی. دې نه علاوه داوجه هم ده چه هغی دجنایت ارتکاب کولو سره دحرم حرمت انتهاك او کړو. لهذا حرم ددې صیانت ذمه دارنه دې. په خلاف دهغه صورت چه هغې د قتل ارتکاب د حدود

⁾ اوگورئ شرح النووی علی صحیح مسلم(ح ۱ ص ٤٣٩). کتاب العج بباب جواز دخول مکة بغیر احرام]_) اوگورئ مسنداحد(ح ۲ ص ۱۷۹). وفتح الباری (ج ۱ ص ۱۹۸). واوجز المسالک (ج۸ ص ۱۷۵ و ۱۷۶). کتاب العج بهاب جامع العج]_

⁾ دتفصيل دپاره او كورى المغنى لاين قدامة (ج٩ص٩١). وزاد المعاد (ج٣ص٤٤... ٤٤٩)_

حرم نه باهر کړې وی اوبيايي په حرم کښي پناه اخسېې وی نوچونکه دحرم دحرمت انتهال ر دې شوې. ځکه حرم په دې پخپل پناه کښي واخلی 🖒

اوڅومره پورې چه دمادون النفس جناياتو تعلق دې نوددې سزابه هلته نافديږي، اګرکه جنايت په غيرحرم کښي شوې وي.ولي چه دښي کريم ﷺنه هلته دقتل نهي خوتابت ده.فرمانيلر دى قلايحل لامرئ يومن بالله واليوم الاخران يسفك بها دما سفك دم دقتل نه كنايه دي. ظاهره دو

چە دمادون النفس مرتبە دىفس نەبھر حال كمە دە 🖒 بیامادون النفس او داطرافومعامله اموالوپه شان ده.څنګه د مالي معاملا توتصفیه هلته

كيدي شي دمادون النفس تصفيه هم هلته كيدي شي والله اعلم

يواشكال او دهغې جواب بعضي حضرات دحنفيه دليل ان **ي**سفك بها دماچه مطلق دخونريزی په حرمت دال دي. ددې دتاويل کوشش کړې دې چه ددې نه ناجانز خونريزي مراد ده. لهذا کوم کس چه دقتل جنایت اوکړي او حرم کښي داخل شي دهغه قتلول ناجانزنه دي.لهذادهغه نه هلته قصاص اخستي شي

ليکن ددې جواب دا دې چه دې کښې دحرم څه تخصيص دې؛ناجانزخو نريزي خوچه چرته هم وى جائز نه ده .نيز نبي كريم گرخ مخكنبي فرمائي قان احد ترخص لقتال رسول الله ترخيخ فيها...... دې نه معلومه شوه چه نبي كريم كرخ الله هلته قتال اوسفك دم كړې دې .ظاهره ده چه هغوى ترخيخ ناجانزخونريزي نه ده كړې،مخكنبي هم ددې جانزقتال تخصيص بيان كړې شوې دي فقولوا:ان الله قد اذن لوسوله ولم ياذن لكم نوجه جائز قتال او جائز سفك دم دهغوى نايخ مره خاص شو نو مخکنبي دبل دپاره دجواز څه صورت پاتې کيږي ،"،والله سمحانه و تعالى اعلم

قوله: ولايعضلجها شجرة:اوهلته به وني نه كټكولي كيږي

عفديعفندباب ضرب نه دې. ددې معنی ده کټکول معفند کټکولو آله , ^۴, **دحرم مکه د وونو بوټو ګټ کولو حکم** دحرم مکه اشجار ونباتات په درې قسمونه دی دونوبوتويوهغه قسم چه يوكس په خپل محنت سره كرلي وي. دهغوي كټكول يادويخ نه

راويستل بالاتفاق جائزدي

دويم هغه چه چا كرلي خونه وي ليكن هغه هم دهغي ښاتاتودجنس نه وي. كوم چه خلق عام طور سره کری.

ددې دويم قسم نباتاتو كټكول او دويخ نه راويستل هم جائزدي دريم قسم دخودرو وني اود محياوغيره دي. په دې قسم کښې صرف د اذخر محيا کټکول او د

^{&#}x27;) حواله جات بالا)__

^{&#}x27;) حواله جات بالا)_

^{ً)} اوگورئالىغنى (ج٩ ص٩١)_

⁾ فتع البارى (ج١ ص١٩٨)_

ویخ نه راویستل جائزدی، بیاقی دیوڅیزهمکټکول او دویخ نه راویستل جائزنه دې،البته دخودرو ګیا یا د ونو نه که کومه ونه وغیره مړاوې شوي وی، یا سوزیدلي وی.یامات شوې وی نودهغې کټکول هم جائزدی

حاصل داچه ولايعشديها شجرة كښې دشجره نه مرادهغه كيا او ونې وغيره دى چه پخپله راختلې وى.هغه نه خو د ماانتههالئاس دجنس نه وى.نه ماتې شوې وى.نه سوزيدلې وى اونه دمړاوې شوې وى.نيزاذخر هم نه وى.دداسې ونو او ګياګانو وغيره كټكول جائز نه دى اودكټكولوپه صورت كښې په جزاء واجبيرى شاواهلم.

توله: فأن احد ترخص لقتال رسول الله ترفق فيها فقولوا: ان الله قد اذن لرسوله: ولم يأذن لكم: كه يوكس درسول الله تلقيه ممك مكرمه كنبي دقتال دوجي ته د

لرسوله، ولهر یادری لحمر: ده یو دس د رسول الله ۵۳ په محده محرمه دینی دفتال دوجي سه د رخصت حاصلولو کوشش کوی نو تاسو اوواني چه الله تعالی خپیل رسول لره اجازت ورکړې دی، تاسوته ني اجازت نه دې درکړي

یعنی که څوڭ د رسول الله نالل په مکه مکرمه باندې د حملي کولو نه استدلال او کړې او دا اووانی چه نبی نالل حمله کړې ده لهذا مونږه هم حمله کوو. مونږ دپاره هم جانز دې نو تاسودا اووانی چه الله تعالی نبی کریم نالل ته اجازت ورکړې وو. تاته نبی اجازت نه دې درکړې لهذا ته حمله نشي کولي

محمد سبي مومي. ددې نه معلوم شوه چه په مکه باندې حمله کول اوهلته قتال کول په يوحال کښې هم جانزنه دی، هم دغه دامام بخاري کيليځ مسلك دي، کېاسېق تقعيله.

مکه مکرمه عنوة فتح شوی ده یا صلحاً؟ بیا دا روایت پددی خبره صراحة دلالت کوی چه مکه مکرمه عنوة فتح شوی وه، هم دغه دجمهور علماو رانی ده، ددی په مقابله کښی امام شافعی مکره عنوة فتح شدی وه، مکرمه صلحا فتح شوی وه، د امام احمد کالی په دې سلسله کښی دوه توله دی. یوقول د امام شافعی مطابق دی اویوقول دجمهورو موافق

امام غزالی گولئه دمکی صلحاً فتح کیدو قول مدلل گنړلوسره خپل کتاب وسیط کښی د امام شافعی داقول نقل کړې دې چه مکه مکرمه عنوة فتح شوې ده او وې فرمائیل چه هم دا دهغوی مذهب دې د ۲

موله: وانما اذن لي فيها ساعة من نهار: مادپاره خوهلته صرف د ورخې يوساعت پورې دقتال اجازت وو

اذن معروف هم اووئیلی شو ای اذن اللهل او مجهول هم مروی دی 🗥

سامت دوخت یو مقدار ته وئیلی شی. دی نه مرادیوم الفتح ده 🖒

ت صفاور تما یو متند (صوبیتی شی، دی مه سردیوم متنی ۱۹۰۰) په یوم الفتح کښی دسحر طلوع شمس نه واخله تر مازیگرپورې وخت مستثنی وو . چه پکښی نبی کریم ﷺ ته دقتال اجازت ورکړي شوي وو ۲۰

. . ق**وله: ثيرعاً دت حرمتها اليومر كحرمتها بالامس** نبيا نن ددې حرمت هم هغه شان واپس راغلو څنګه حرمت چه پرون وو

راغلو ځښت ترمت چه پرون وو. یعنی څنګه حرمت چه دنن نه مخکښې ووهم هغه شان ددې حرمت بیا راغلو

قوله: وليبلغ الشاهد الغائب: او پكار دى چە حاضر غائب ته اورسوى

هم دغه مقصود بالترجمه دي. قوله: فقيل لايي شريح: مأقال عمرو؟:دابوشريح الأثؤنه پوښتنه او کړې شوه چه عمرو

مطلب دا دې چه چا د حضرت ابو شريح (انتخاب کارو جه دا حديث او روي شوه چه عمرو مطلب دا دې چه چه اورولونه پس

عصروبن سعید څه جواب ورکړلو؟ عمروبن سعید څه جواب ورکړلو؟ قملمه قال ۱۰ اناکا ما ماد د اور الراغم، صنعت او ماد ماد او مده می مداره داده

قوله: قبال: انا اعلى رمنى كالباشريح: هغه اوونيل چه اې ابوشريح خمستانه زيات پوهيږم - مراده خرار اگرار د اگرار سرد د اگرار -

قوله: لا يعين عاصيًا ولا فارًا بده ولا فارًا بخرية: حرم يوعاصى تدپناه نه وركوى، اونه هغه كس له چه قتل او كړى او اوتښتى او نه هغه كس له چه غلااو كړى او اوتښتى عامى: د عيان نه دې. خوه عن الطاعة ته حيان وانى، ګويا چه د عاصى نه مراد باغى دې. د فار بالدم نه مراد د قتل كولو نه پس تښتيدو والارًً

ځپه خاه معجمه او د را مهمله په فتحې سره دې، دې ندپس باء موحده ده ره ...

ابن الاثیر کیلیک فرمائی خربه اصل کښې عیب ته وانی، دلته د خربه مفهوم دادې چه یوسړې یو څیز داسې ځان ډېاره مختص کول او په هغې باندې غالب کیدل غواړی چه شریعت دهغې

⁾ فتع الباری (ج۱ ص۱۹۸)_ ا

^{ً)} حواله بالا. مسنداحمد(ج۲ ص۱۷۹) كښې دې عن عمروبن شعيب عن ابيه عن جده قال:لما فتحت مكة على رسول الله گُلِيُّظ قال:كفواالسلاح الاخزاعة عن بنى بكر.فاذن لهم حتى صلى العصر.ثم قال: كفوا السلاح) أ) فتح البارى (ج٤ ص٤ ١٩٥٤) كتاب جزاءالصيد. باب: لايعضد شجرالحرم)_

م عسدة القارى (ج٢ ص ١٤٠). وفتح البارى (ج١ ص١٩٨)__

احازت نه ورکوی ۱۰

هم دغه شان د خمهه معنی سرفه هم ده. په خاص طور د اوښانو په غلا په د خرهه اطلاق کیدلو، بیا توسعا په عام غلا باندې هم ددې اطلاق اوکړې شو ۱۰ امام ترمذي کمه ددې تفسیر په جنایت سره کړې دې ۱۰

بعض حضرات دې نه ځهه (بهتاح الغاماليعجية وسكون الراءاليهيلة وبعدها يام موحدة) ښو دلې دي. رځ، اين بطال ﷺ فرماني چه ددې معنى د فساد ده (٥٠)، په صحيح بخارى كښې يو خاني كښې ددې معنى بلية مذكور ده (٠)

امام تُرمَدُى گُنَالِيَّهُ فرمائى ويوى: ولافارايخية . ٧٠ يعنى دا لفظ په خا-معجمه مكسوره او زاي معجمه مكسوره او زاي معجمه ساكنه او ددې نه پس يا مثناة سره هم روايت كړې شوې دې . چه معنى يي رسواكبدل او دباعث عار امر دي ٠٠

علامه كرماني كيلي دالفظ په جيم او ازاى سره جزيه هم نقل كړې دې ١٠، ليكن دا روابة ثابت نه دي، ١٠ واله ثابت نه دي، ١٠ والله اعلم

ابن بطال گیشهٔ فرماني چه حضرت ابوشريح گاتا دحديث دعموم نه اسندلال کړې دې.لبکن عمرو بن سعيدانکار او کړو او دا يي اوونيل چه ته دا حديث عام ګنړې.حالاتکه دا حديث خاص دې. مجرم او عاصى چه جرم او کړى اوبيا په حرم کښې پناه واخلى نوهغه ته به پناه نه ملاويږي (۱۰)

^{ً)} جامع الاصول(ج ٩ ص٢٨٧)_

^{ً)} جامع الاصول(ج ٩ ص٢٨٨)_

[&]quot;) جامع الترمذي. فاتحة ابواب العج. باب ما جاء في حرمة مكة)_

م شرح صعیح البخاری لابن بطال (ج ۱ ص ۱۸۲)_

⁾ صعبح البخاري (ج ١ ص٢٤٧). كتاب جزاءالصيد. باب الا يعضد شجرالعرم. رقم (١٨٣٧)_

⁾ جامع الترمذي.فاتحة ابواب العج،باب ماجاء في حرمة مكة. رقم (٨٠٩)_

⁾ جامع الاصول (ج٩ ص٢٨٨)__

^{ّ)} شرح الکومانی(ج ۲ ص۱۰۵)_ [ً) فتع الباری (ج ٤ ص ٤٥)__

⁾ اوگوری شرح صحیح البخاری لابن بطال(ج ۱ ص ۱۸۰)_

خطاکار دي او حره عاصي اوخطاکار ته پناه نه ورکوي ۱

ليكن دعمرو بن سعيد دا جواب غلط دي.ولي چه حصرت عبدالدين الزبير نه خو بناغي وو .نه عاصي وو اونه هغوي دچا قتل کړې وو

ابن بطال يخت فرماني واين الزييرعند علماءاهل السنة اولى بالغلافة من يصدوعهد الملك، لانه يعيع لاين

الزييرقيل هولاء، وهومن اصحاب رسول الله نزيل، "، والله سيحانه اعلم

يعنى دعلماء اهل سنت پدنزد عبدالله بن زبيرد يزيد او دعبدالملك پدمقابله كښي دخلافت زيات حقدار وو .ولي چه ددې خلقونه مخکښي دهغوي په لاس بيعت شوې وو. او بيا هغوي دىسى كريم ئريخ دصحابه نەھم وو

و١٠٠ حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا تَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّد عَنِ الْبن أْبِي بَكْرَةً عَنْ أَبِي بَكِرَةً ذُكِرَ النَّبِي صلى الله عليه وسلم - قَـالَ « فَإِنَّ دِمَاءُكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ - قَالَ مُحَمَّدٌ وَأَحْبِهُ قَالَ وَأَغْرَاضَكُمْ - عَلَيْكُمْ حَرَامٌكُ فُرْمَةٍ يَوْمِكُمْ هَذَا فِي ثَهُركُمْ هَذَاهُ أَلاَ لِيُبَيِّزِ الشَّاهِدُ مِنْكُمُ الْغَابِبَ». وَكَانَ مُحَمَّدٌ يَقُولُ صَدَقَ رَسُولُ اللَّهِ-صلى الله عليه وسلم - كَانَ ذَلِكَ «أَلاَ هَلُ بَلَّغُتُ» مَرَّتَيْن ار ٤٠٧

رجال الحديث

🕥 عبدالله بن عبدالوهاب داابومحمد عبدالله بن عبدالوهاب حجبي بصري يُشِيَّ دي 🖒

دوی د بشرین المفصل.حمادین زید .حاتم بن اسماعیل.عبدالعزیزین ایی حازم. عبدالعزیز بن محمددراوردي.امام مالك اوابوعوانه ﷺ نه روايت كوي

ددوي نه روايت كونكو كښي امام بخاري.يعقوب بن شيبه.امام محمدبن يحي ذهلي.علي بن عبدالعزيز بغوي اوعمروبن منصورنساني ﷺ وغيره حضرات دي 🖔

اماء يحى بن معين كيلة فرمائي لعد. ٥٠

اماء ابوحاتم مُعَمَّةُ فرماني لَقَقَصدوق، ١٠

ابن حبان مُنظِّ دهغوي ذكَّر په كتاب الثقات كښي كړي دي ،٧،

) الكانف عن حقائق السنن (ج ٥ ص ٣٤٢). كتاب المناسك. باب حرم مكة حرسهاالله تعالى)_

ً) شرح صعيع البخاري لابن بطال(ج ١ ص ١٨٠)_

) تهذيب الكمال (ج ١٥ ص ٢٤٤)_) دشيوخو اوتلامذود تفصيل دباره اوګورئ تهذيب الکمال(ج١٥ ص٢٤٤.٢٤٨). وتهذيب

> التهذيب (ج د ص ٢٠٤و ٢٠٥)_ تهذیب الکمال(ج ۱۵ ص۲٤۷و۲٤۸)_

) حواله بالا و تهذيب التهذيب (ج ٥ ص٣٠٥)_

") النقات لابن حبان (ج۵ ص۳۵۳)_

حافظ ابن حجر بينية فرمائي لكله. ١٠

حافظ ذهبي بينيج فرماني ثبت. "،

په ۲۲۸ هجري کښې د هغوي وفات اوشو ۳۰، رحبه الله تعالى رحبة واسعة

 حماد دوی حمادبن زیدبن درهم بصری بیشی دی. ددوی حالات کتاب الایان، پاپ: وان خاتمتان من المومنین اقتشلوا فاصلحوا بینها دلاندی تیرشوی دی ۴.

ا ايوب دوى ايوب بن ابى تميمه كيسان سَخْتَيانى بصرى كَيْلَة دى. ددوى حالات هم د كتاب الايمان، باب حلاقة الايمان، د لاندي تير شوى دى ، ٥٠

محمد دوی امام محمد بن سیرین بصری میشه دی. ددوی حالات هم د کتاب الایهان، پاپ
 اتهاوالجنائزمن الایهان، دلاندی تیر شوی دی ر/

ابن ابن بکرة : دوی عبدالرحمن بن ابی بکره مینی دی. ددوی حالات به کتاب العلم کبنی
پاپ قول النبی پیچی: رب میلی اوعی من سامی، دلاندی تیر شوی دی. ۱/م

حضرت ابو بكره الله : دحضرت ابوبكره الله حالات په كتاب الايمان، پاپ: (دان طاتفتان من المومنين اقتتلوا فاصلحوا بينهما) دلاندي تيرشوي دي. (^

دهديث دسندمتعلق يو تنبيه. دلته د دې حديث په سندکښې دمستملی او کشمهينی په نسخو کښې دمحمد نه پس د اين اپې که واسطه ده بعينه هم دغه سند په کتاب التفسير. سورهٔ براء کښې هم وارد شوې دې د او په کتاب العلم کښې د عبدالرحين بن اپې که تصريح موجود ده د د کې صورت کښې به دا سند منظع شي ولي چه محمد بن سيرين ته د حضرت ابوبکره الله نه سماع حاصل نه ده

) تقریب التهذیب (ص۳۱۲)، رقم (۳٤٤٩)_

^{ً)} الكاشف (ج ١ ص ٥٧٠).رقم (٢٨٣٤)_. "ا

أ) حواله بالا)_

^{ً)} کشف الباری (ج ۲ ص۲۱۹)_

کم) کشف الباری (ج ۲ ص ۲۶)_

⁾ كشف الباري (ج ٢ ص ٥٢٤)_

⁾ کشف الباری (ج ۳ ص ۱۹۶<u>) _</u>) کشف الباری (ج ۳ ص ۱۹۶<u>) _</u>

[`] `) كشف البارى (ج ٢ ص ٢٢٥)_

⁾ تسف الباري (ج ٢ ص ١٦٥). أي صعيع البغاري (ج ٢ ص ٧٤٢).كتاب التفسير.سورة براءة.باب(ان عدة الشهورعنداله اثنا عشر

شهرا....). رقم (۲۶۶۲)_ ``) صحیح البخاری (ج ۱ ص۱۶).کتاب العلم.باب قول النبی تاکیزارب مبلغ اوعی من سامع.رقم(۴۷)_

په بعضي نسخوکښې من محدين اي پکه امن اي پکه الفظ راغلي دي. چه غلط دي. په دي نسخه کښې د محمد نه پس د من لفظ ساقط شوې دي 🖒

حاصل دا چه معمد بن اې بکه غلط دې، من معمد عن ابن اې بکه اعن اې بکه صحيح دې، او د کتاب العلم په طريق کښې د دې (ابن اې بکه ۴) تعيين هم کړې شوي دي چه هغه عبد الرحمن بن ابي بکره دې والله اعلم.

و المرابعة و المرابعة المرا

فان دمام کم واموالکم_قال محمد: واحسهه قال: واعراضکم_علیکم حرام کحرمة يومکم هذا افل شهرکه هذا بيشکه ستاسو خانونه اوستاسو اموال محمد بن سيرين واني چه خما گمان دا دې چه هغوى د آبرو لفظ هم فرمانيلي وو په تاسو باندې حرام دې .ستاسو ددې ورځي او ددې مياشتى دحرمت پشان

مطلب دا دې چه محمد بن سيرين ته شک دې چه ابن ابى بکره خپل روايت کښې قان دماه کم واموالکم نه پس واعراضکم هم فرمانيلي وو او که نه (^۲)

ليكن وړاندې باپ قول الئيمن ﷺ : رپ مهلځ اوحى من سامع په ذيل كښي حديث تير شو . په هغه كښي جزم سره بغير دشك نه واعماضكم هم مذكور دې د ً،

قوله: الاليبلغ الشاهد منكم الغائب: واورى په تاسو كښې چه څوك حاضر دى هغوى دي غانب ته اورسوي

ابن جریر طبری ﷺ فرمائی چه ددې نه معلومه شوه چه دخبرواحد قبلول جائز دې ولي چه نبی کریم ﷺ هر کس ته دتبلیغ کولو حکم ورکړې وو، که دهریو کس خبره بیله بیله معتبرنه وې نو د نبی ﷺ هر سړی لره دتبلیغ مکلف ګرخولو په څه فائده وه؟،)

قوله: وكان محمد يقول: صدق رسول الله كلي كان ذلك: محمد بن سيرين كني به فرمانيل، رسول الله كلي ربتيا أوفرمانيل أو دا واقع شوي دي

دمحمد بن سيرين مُتَلَّة دقول مختلف توجيهات محمد بن سيرين مُتَلَّة دخه څيز تصديق كوى؟ په خاص طور دا سوال خكه هم پيداكيږي چه دلته ليماغ دامر صيغه ده او تصديق يا تكذيب

⁾ فتح الباری (ج ۱ ص۱۹۹).وعدة القاری (ج۲ ص ۱٤۵)__) فتح الباری (ج ۱ ص۱۹۹)_

[&]quot;) صحيح البخاري (ج ١ ص ١٥). كتاب العلم، باب قول النبي تاهيم: رب مبلغ اوعي من سامع. رقم (٤٧) ") فتح الباري (ج ٤ ص ٤٤) كتاب جزاء الصيد. باب: لا يعضد شجرالحرم)_

د خبر کولې شي، امر، نهي، وغيره چه د انشاء دقبيل نه دې دهغې تصديق يا تکذيب نه کيږي. بله دا چه په کان ذلك کښې ذلك اشاره کوم څيز طرف ته ده؟

يري، بيت . علامه كرماني مُنظَّة په دې سلسله كښې مختلف آحتمالات ذكر كړى دى. هراحتمال ګويا چه مستقل يوقول دې

- یو احتمال دا دې چه دلته ممکن ده چه روایت دامر دصیغې سره نه وی. بلکه پیداغ په شروع کښې لام مفتوح وی. ګویا ښی کریم تلا خبر ورکوی کیبلغ الشاهدمتکم الفائې په تاسو کښې چه څوک حاضر دې هغه به غائب ته رسوی
- په تاسو کښې چه څوک حاضر دې هغه به غائب ته رسوي محمدبن سیرین گڼځ ددې خبرې تصدیق کوی او واني نبي کریم ﷺ چه دا خبر ورکړې دې صحیح خبرئي ورکړې دې کان ډلك واقعی تبلیغ شوې دې
- دويم احتمال دا دې چه دلته ليماغ د امرصيغه ده .ليكن دا بمعنى الخبر دې . ګويا نبى نظم فرمائى (سيقع التمليغ بعد) امام ابن سيرين پخت هم ددې خبرې تصديق او ددې د وقوع خبر وركوي.
- ش...... دریم احتمال دا دې چه ددې نه پس چه کوم (الاهل پلفت) راغلې دې. دهغې په ضمن کښې چه کوم د تبلیغ مفهوم دې دهغې طرف ته اشاره مقصود ده. اوس به د ابن سیرین پیشو د قول مطلب داشي چه دنبي کریم پیشو د طرف نه امت ته تبلیغ شوې دې

اخفط اوختل (۱) علامه عینی گینی فرماني چه اول احتمال وجیه دي، لیکن دا په هغه صورت کښې معتبر دې علامه عینی گینی فرماني چه اول احتمال وجیه دې، لیکن دا په هغه صورت کښې معتبر دې چه کله دمحمد بن سیرین نه د لام دفتحه روایت ثابت شی. اوتر څو پورې چه دبل احتمال تعلق دې، نود امر په معنی دالخبر کیدو کښې څه قرینه پکار دې. اوهغه دلته نشته (۱)

بلدداچدهغوي فرماني چه دا عين ممكن ده چه د ذلك اشاره هغه تهليغ طرف تدوي چه د

⁾ صحیح البخاری (ج ۱ ص ۱۶) کتاب العلم. باب قول النبی گگی: رب مبلغ اوعی من سامع. رقم (۶۷)) اوگوری شرح الکرمانی (ج ۲ ص ۱۰۸)_) عمدة القاری (ج ۲ ص ۱۶۶)_

. ليبلغ په ضمن كښې مفهوميږي. اوس د كان ذلك مطلب به داشي وقع ذلك التبليغ الباموريد من الشاهدال الفائب. ()

حضرت شاه ولى اند گوشته فرمانى چه د صدق مطلب دې وقام ما امریه یعنی نبی گاه چه کوم حکم ورکړي وو دهغې تعمیل اوشو او اهل عرب په داسې موقعو باندې صدق استعمالوی. حکم ورکړي وو دهغې تعمیل اوشو او اهل عرب په داسې موقعو باندې صدق استعمالوی. خما په نز ظاهر داده چه دا د تتمه حدیث رېمها او او مناه عطفا تصدیق دې. نورو شارحینو شیخ الاسلام گوشته فرمانی چه دا د نبی کریم گاه د ارشاد مطلقا تصدیق دې. نورو شارحینو چه کومه خبره کړې ده چه دا د جز ماخیر (الاهل بلغت) سره متعلق دې. یا د تتمه محذوف وفان الشاهد صبي ان پهلغ من هو او چی له منه سره متعلق دې. ددې په مقابله کښې دا توجیه زیاته به تره ده آ

حضوت كنكوه*ى يُتِيَّدُ فو*ما ئى. صدق رسول الله تَنِيُّرُا اى فيها كان يخاف على قومه وامته من وقعة سيوفهم فيهم ويوكد حرمات دماڻهم واعراضهم فكان كها اعبر. ر⁴ ،

كويا ابن سيرين كين د صدق وئيلو سره چه كوم تصديق كړې دې.دهغې تعلق دهغه قتل و نهب او دسفك دماء سره دې چه دهغي ويره نبى كريم 湖 ته وه او چه دهغي دحرمت تاكيد نبى كل كرې وو.او نبى 水湖 ته چه دڅه ويره لكيدلى وواخر هغه اوشو. لكيدلى وواخر هغه اوشو.

قوله: الاهل بلغت؟مرتی<u>س:</u>واوری آیا ما اورسولو؟نبی گیردوه خله اوفرمانیل دا هم دحدیث جز، دې او دنبی کریم گر فرمان دې او د روکان مصدریقولی نه واخله تر د رکان ذلك پورې دحدیث په مینځ کښې دابن سیرین قول جمله معترضه ده ، ۲ ،والله اعلم پالسواپ

^{ٔ)} حواله بالا)_

⁾ شرح تراجم ابواب البخاري (مطبوعه مع صحيح بخاري ج ۱ ص ۱۵)_

^{&#}x27;) شرح شیخ الاسلام فارسی (مطبوعه بر حاشیه تبسیر القاری ج ۱ ص ۱۶۷)_ ') لامع الدراری مع الکنزالستواری (ج ۲ ص ۳۵۱ و ۳۴۲)_

^ن) اوگورئ لامع الدراري (ج ۱ ص ۱۹۹<u>) _</u>

⁾ فتح الباري (ج ١ ص ١٩٩)_

زوټ دا حدیث په باب قول النبی نا درب میلغ اوی من سامع، دلاندي تیر شوې دي. د تفصیلی تشریح دپاره دمذکوره پاپ ته مراجعت او کړئ

سابق سره مُناسبت تير شوى باب كښى النَّيى صلى الله عليه وسلم د باب سابق سره مُناسبت تير شوى باب كښى دا ذكر شوى ووچه څوك نه پوهيږى هغه پوهول او هغه ته علم رسول پكار دى او دى باب كښى د كذب فى التبليغ نه تعذير دى چه په هغه علم رسولو كښى د دروغو نه مكمل احتراز اوكړې شى. دې سره دواړو ابوابو كښې

مقصد د توجمه الباب حضرت شیخ الهند گفت فرمانی چه دابواب سابقه متعدده نه تبلیغ اوتعلیم وتعمیم وتکثیر معلوم شواو په دی کنبی دکذب خطره ضرور شته بالاراده وی یا بلا اراده . خکه دا ترجمه الباب بیانولو سره نی تنبیه او کړه چه په تعلیم اوتبلیغ کنبی نهایت احتیاط و اهتمام لاژم دی دتخمین او دمجازفت نه دی کار وانخستلی شی ۱ ، ادالله تعلی اعلم احتیاط و اهتمام لاژم دی دنبی کریم تکل طرف ته فه غلطه خبره منسوبول بالاتفاق حرام او گناه کبیره ده امام بخاری گناه دتعلیم و تبلیغ درغیب دپاره متعدد ابواب منعقد کړی وی اوس امام بخاری گناه دا بنائی چه دتعلیم و تبلیغ اگرچه اهتمام پکار دی لیکن احتیاط هم ضروری دی . کمه چه که نبی کریم تکلی طرف ته چا فه غلطه خبره منسوب کړه او داسی بی احتیاطی یی اوکړه نوهغه به د (من کذب) وعید دلاندی داخل شی . خکه د دروغونه بچ کیدل ډیر

ضرورى دى. (١٠ ١ عَدَّاتَنَا عَلِى بْنُ الْجَعْدِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُغْبَةُ قَالَ أَخْبَرَنِى مَنْصُورٌ قَالَ سَمِعْتُ دِبْعِى بْنَ حِرَاشِ يَغُولُ سَمِعْتُ عَلِيًّا يَقُولُ قَالَ النَّبِى صلى الله عليه وسلم- «لاَ تَكْذِبُوا عَلَى، فَإِنَّهُ مَنْ كَذَبْ عَلَى فَلِيَلِجِ النَّارَ

رجال المديث

① على بن الجعد : دوى ابوالحسن على بن الجعد بن عبيد جوهرى بغدادى يُخطُّ دى. د دوى حالات به كتابالايبان، پاپادامالخيس من الايبان د لاندي تير شوي دي ⁷،

حادت په تتاب اديان، باب ادام محس سن ريان دياي غير طرياني . • شعبه دوی امير المومنين شعبة بن الحجاج عنکی بصری مُنظَّ دی.د دوی حالات په کتاب الايان، باب البسلم من سلم البسلمون من لسانه ويده دلاندې تيرشوي دي ، أ،

المناس به بالمناس معدث منصور بن المعتمر السلمي الكوفي المناه دي، د دوى حالات المناس مشهور محدث منصور بن المعتمر السلمي الكوفي المناه المناس معدث منصور بن المعتمر السلمي الكوفي المناه المناس المناسبة ا

⁾ عبدة القاري (ج ٢ ص ١٤٧)__

⁾ الابواب والتراجم (ص ٥٥)_

⁾ اوگوری کشف الباری (ج ۲ ص ۶۹۷)_

⁾ کشف الباری (ج ۱ ص ^{۶۷۸)}_

يدهم كتاب العلم كنبي باب من جعل زهل العلم اياما معلومة دلاندي تير شوي دي ن ربعي بن حواش راء مهملة مكسورة. باء ساكن، عين مهملة مكسورة، دي نه پس ياء وربعي بن حواش راء مهملة مكسورة وربعي به بس ياء مشدده ده ن

هم دغدشان حراش جاء مهمله مكسوره او راء مهمله سره دي 🖒 دوی مشهور تابعی بزرگ ربعی بن حراش بن جحش بن عمرو غطفانی عبسی کوفی گیر

ابوالربيع ددوی کنيت دې. ربيع بن حراش او مسعود بن حراش ددوی ورونړه دی. 🖒 دوى دخصرت حديقه، حضرت ابوموسى اشعرى، حضرت عبدالله بن مسعود، حضرت ابو مسعود بدري.حضرت على،حضرت عمرين الخطاب،حضرت عمران بن حصين او د حضرت ابويکره تُلگُرُ وغيره نه روايت کوي.

د دوي نه ابراهيم بن مهاجر ،سعدبن طارق اشجعي، عامر شعبي، ابوالنصر كثيربن ابي كثير، منصورين المعتمر او نعيم بن ابي هند المنظ وغيره روايت كوي ٥٠،

امام عجلى كين فرمانى تابى تقة من خيارالناس، لميكنب كنبة تطهد

امام ابن سعد كيون فرمائى وكان تقةله احاديث صالحة. (٧)

لالكائي يُشَارُ فرمائي مجاعل تقته. (^)

حافظ دهبي كين فرمائي: حجة قانت شهلم يكذب قط. (^)

حافظ ذهبي يو خائي كبسى ليكي الامام القدوة الم الحافظ الحجة

حافظ ابن حجر كيلي فرمائي ثقة عابد مخضره . (١٠) ابن حبان كين دهغوى ذكريه كتاب الثقات كنبى كري دي ٢٠٠٠

ٔ) المغنی (ص ۳۲)__

ً) المغنى (ص ٢٠)__

ا) تهذیب الکمال (ج ۹ ص ۵۵ر۵۵)_

ً) حواله بالا)_

نُ دشيوخو او تلامذو تفصيل دپاره اوګورئ تهذيب الکمال (ج ۹ ص ۵۵.۵۶)_ ُ) تهذیب الکمال (ج ۹ ص ۵۶)_

الطبقات الكبرى لابن سعد (ج ۶ ص ۱۲۷)_

^) تهذیب التهذیب (ج ۳ ص ۲۳۷)_

الكاشف (ج ١ ص ٣٩٠).رقم (١٥٢١)_

) سير اعلام النبلاء (ج ٤ ص ٣٥٩)_ '') تقريب التهذيب (ص ٢٠٥)، رقم (١٨٧٩)_

°) النقات لابن حبان (ج £ ص ۲٤٠و ۲٤١)_

دربعي بن حراش په باره کښې دهغوي سوانح ليکونکو دا ليکلي دي چه هغوي کله هم دروغ نه دې ونيلې، هغوي باندې ډير آزمانشونه راغلل. ليکن د رشتيا په وجه الله تعالى هغوي

دهغوي يو واقعه ليکلې ده چه دهغوي دوه ځامن دحجاج بن يوسف معتوب وو او حجاج دهفوي سزا پسې ډير بې چين وو او هغوي په لاس نه راتلل.حجاج چا پوهه کړو چه دهغوي والد کله هم دروغ نه والی،دهغوی نه تپوس اوکړه چه دهغوی خامن چرته دی؟ حجاج دهغوی نه پوښتنه او کړه نو هغوي بلا تامل اووئيل ههافي البيت، والله البستعان حجاج بن يوسف حيران

پاتی شو او دیلار دعظیم صداقت دوجی نه خامن یکی معاف کول ۱۰ الله تعالی هغوی ته د آخرت دفکر عظیم دولت ورکړې وو . کله یمي نه وو خاندلي حتی چه هغوي قسم اوخوړو چه کله پورې زه دا معلومه نه کړم چه زما انجام به څه وي ترهغه وخت پورې به نه خاندم،بيا په پوره ژوند کښې ئي اونه ځندل.حتى چه کله دهغوى انتقال اوشو نوهغوي ته غسل ورکونکو اووئيل چه هغوي به مسلسل تېسم کولو.تر دې چه مونږ دغسل نەفارغشول 🖔

د ربعتی بن حراش یو ورور ربیع بن حراش وو .ونیلی شی چه دهغوی انتقال اوشو .هغوی سيده اوڅملولي شول او د بره نه پري څادر واچولي شو. لږ ساعت پس هغوي دخپل مِخ نه څادر لرې کړو او سلام يي او کړو . خلقو دسلام جواب ورکړو او تپوس يي او کړ چه دمرات نه پسهم خبري کيدي شي؟ هغوي جواب ورکړو

ال لقيت بي بعدكم، فتلقال بروح وريعان، ورب غير غدمان، وكسال اثوابا عضرا من سندس واستوق، ووجدت الامرايسي مما في انفسكم، ولا تفتوه ا، فاني استاذنت به لابشي كم، فلحملوني الى رسول الله كري، فاتم

ومدن ان لايسبقني حتى ادركه.

تاسو نه پس چه كله ما د خپل رب سره ملاقات اوكړو نو زما استقبال په خوشبيو او رحمتونو سره اوکړو او ما ته داسي رب ملاو شو چه ناراضه نه وو .ما ته يې د نرې او دپير ريښمو جامي واغوستولي او ما تدمعلومه شوه چه معامله ته چه ته څومره خپل زړه کښي مشکل محنړي د هغي نه ديراسانه ده. البته ته په دهوکه کښې مه اوسه، ما دخپل رب نه ستاسو د زيرې وركولو دپاره اجازت اخستي وو . اوس ما دنبي كريم را الله عدمت كښي يوسي. ولي چه هغوي الله ماسره وعده كړې ده چه ما نه بغير به محكښې نه ري

دا وئيلو نه پس بيا خاموش شو ٢٠٠٠ والله اعلم بالصواب

] اوگورئ سير اعلام النبلاء (ج ٤ ص ٣٤٠و ٣٤١). وتهذيب الكمال (ج ٩ ص ٥٤)_

^{ً)} حواله جات بالا)_

[&]quot;) اوگورئ طبقات لابن سعد (ج ۶ ص ۱۵۰). وسير اعلام النبلاء (ج ٤ ص ٣٤١). والثقات لابن حيان (ج £ ص ٧٣٧] واضحه دى وى چه د تكلم بعد الموت دا واقعه په تهذيب الكمال (ج٩ ص ٥٥) او عمدة القاري (ج ۲ ص ۱٤۷) کښې د مسعود بن حراش طرف ته منسوب کړې شوې ده

۱۰۰ هجری یا ۱۰۱ هجری یا ۱۰۴ هجری کښې اوشو ۱۰۰محمد دربعي بن حراش ميلي وفات

الله تعالى رحبة واسعة

⑥ حضوت على بن ابى طالب الله العربي دوى اميرالمومنين سيدنا على بن ابي طالب بن هاشم بن عيدمناف هاشمي مكي مدنى فأثلا دي. ابو الحسن ئي كنيت دي () نبي كريم كله دابو تراب په کنيت سره رابللي وو ۲۰،

د نبي نلكه د تره خوې وو . د نبي نلكه زوم . يعني دحضرت فاطمه الزهراء تلكؤ خاوند وو دډيرو اهل علمو په نزد د ټولو نه اول اسلام رآوړنکې هم دوی دی. هغه وخت دهغوی عمر اته كالو نه د پنخلسو كالو پدمينځ كښې وو . دمختلف حضراتو ندمختلف اقوال مروى دى 🖔

د حصرت على المُنظِّرُ مناقب بي شماره دي. امام احمد بن حنبل سيطي فرماني چه خوم و مناقب د حضرت على تُلَيِّقُ په باره كَنْبي منقول دي د چا په باره كښې هم منقول نه دى.ددې وجه دا ده چه د بنو امیه خلقوبه دحضرت علی اللئي سره د بغض اظهار کولو.په دي وجه چا سره چه کوم روایت هم وو هغه یی نقل کړو.نو چه څومره قدرې دهغوی فضائل ختمولِو کوشش اوکړي شو هم هغه قدر دهغوي مناقب اوفضائل خورې او منتشر شو٠٥،

اګر چه روافضو د حضرت علی څایځ په مناقب کښې کړیر خرافات او بې سند خبرې ذکر کړی دى. ليكن دهغوى چه كوم حقيقى فضائل دى هغه كم نه دى. امام نسانى ﷺ د خصائص على پەنوم يوكتابلكلى دى.چەد ھغى اكثر روايات جيد دى 🖒

حضرت على الله ته تعد الله تعالى څنګه نسبي شرافت او نبوي قرابت عطا کړې وو ، دغه شان هغوى په علم وعرفان او شجاعت او بهادرئ كښې هم بې مثال وو

عبدالله بن عياش وكلي فرمائي ان عليا كان له ما شئت من خرس قاطع في العلم، وكان له السطة ، كل العشيرة، والقدم في الاسلام، والصهر برسول الله تريم، والفقه في السنة، والنجدة في الحرب، والجود في الماعون،(^)

يعني حضرت على الثان ته انتهائي مضبوط علم حاصل وو ، هغوى ته د حسب نسب اعتبار سره ډير اوچته مرتبه حاصل وه. په اسلام کښې هغوي ته ډير اوچت مقيام حاصل شو . دنبي كريم الله دروم جوړيدلو شرف ورته حاصل شو ،د فقه حديث لويـه حصه ورتـه حاصله

 ⁾ سير اعلام النبلاء (ج ٤ ص ٣۶٢)_

^{ً)} تهذیب الکمال (ج ۲۰ ص ۴۷۲)_

⁾ أوكوري الاصابة في تمييز الصحابة (ج ٢ ص ٥٠٧). و تهذيب الكمال (ج ٢٠ ص ٤٨٠....٢٨٢)_

م) الاصابة (ج ۲ ص ۵۰۷ و ۵۰۸)_

لتوسط في العشيرة حسبا ونسبا، تعليقات تهذيب الكمال (ج ٢٠ ص ٤٨٧)_

م تهذیب الکمال (ج ۲۰ ص ٤٨٧)_

شوه،هغوی په حالت جنګ کښې دشجاعت وبسالت او خلقو تیه د ضروریات څیزونه ورکولو كبنى دسخاوت سره متصف وو'

حضرت على كُلُّكُ د بنو هاشم اول خليفه وو .هغوى ته د احدالعشرة البيشرة بالجنة، احدالستة اصحاب الشورى، احد الخلقام الراشدين، احد العليام الريائيين، احد الشجعان البشهورين أو أحد السابقين الى الاسلام كيدلو شرف حاصل دي 🖒

د نبي كريم ﷺ سره ټولو غزواتو او مشاهد كښې شريك وو. البته په غزوه تبوك كښې ښي کريم ﷺ هغوي په مدينه منوره کښې خپل نائب جوړ کړې وو. ځکه ني په دې کښې عملا

د حضرت عثّمان ذوالنورين مكالئ دشهادت نه پس امت دهغوي په لاس بيعت اوكړو او هغوي ځليفه منتخب کړي شول، دي نه فورا پس حضرت طلحه. حضرت زېير او حضرت عانشه هُلُهُ دحضرت عشمان الله و قبصاص مطالبه اوكره . ددي په نتيجه كښي واقعه د جمال اوشوه،بيا حضرت معاويه ݣْالْجُ داهل شام راوستلوسره هم دغه مطالبه اوكره. چه دهغي په تتيجه كنبى واقعه صفين اوشوه

دحضرت علَّى لَلَّالِيَّ دا رائي وه چه هغه ټولو حضراتو ته پکار وو چه اول ني بيعت کړې وې او په طاعت کښي داخل شوې وي،بيا دحضرت عثمان اللي اوليا، د قصاص مطالبه کړې وې نو بيا په حکم د شريعت باندي عمل کيدې شو. او دهغوي دمخالفينو دا وين وه چه اُولُ دي د قاتلینو نه قصاص واخستی شی. دحضرت علی اللهٔ دا موقف وو چه قصاص بغیرد دعوی ّ او بغير د اقامت بينه نه صحيح نه دې هر يو قريق په دې سلسله کښې مجتهد وو. بعض حضرات صحابه د دواړو فريقونو نه جدا وو، د حضرت عمار اللي د شهادت نه ظاهره شو چه حضرت على الله على وو نو يه ابتداء كنبي داختلاف نه پس د اهل السنت والجماعة په

دحضرت علی نام په خصائص کښې يودا هم دی چه نبی ﷺ د خيبر په موقع اوفرمانيل لادفعن الراية عدا الى رجل يحب الله ورسوله، ويحمه الله ورسوله، يقتح الله على يديه .

يعني صبا سحر به زه داسي كس له جهنده وركوم چه دالله او دهغي رسول سره محبت لري. او الله أو د هغې رسول هغه سره محبت كونكې دى، أو هم ددې په لاس به فتح كيږي

كله چه صبآ شو نو ډير حضرات په دې الميد وو چه ممكنه ده جهنډ په زماً لاس ته راشي. ليكن نبي 微 تپوس اوكړو على بن ابي طالب چرته دې خلقو اووليل چه دهغوي په سترگو كښې تكليف دې، هغوي راغلل، ښي كريم ﷺ دهغوي په سترګو كښي خپلي لاړې اولګولي او دعا يي اوکړه. هغوي ټيک شو . او هغوي ته نبي گاڅ جهنده ورکړه 🧦

⁾ عمدة القارى (ج ٢ ص ١٤٧)_

تهذيب الكمَّال (ج ٢٠ ص ٤٨٣)_

اوگورئ الاصابة (ج ۲ ص ۵۰۸) الاصابة (ج ۲ ص ۵۰۸). نيز اوگورني صحيح البخاري (ج ۱ ص ۵۲۵). كتاب فضائل اصحاب النبي الاصابة (ج ۲ ص ۵۰۸). كالم باب مناقب على بن ابي طالب)_

حضرت عمر شاکل فرمانی چه مانه کله هم د امارت اخستو خواهش اونشو، البته هغه ورخ ددې فضائلو د وجې نه زما په زړه کښې دا خواهش پيدا شو چه کاش دا شرف ما ته حاصل شي (۱)

سي . نبي کريم ۱۳۵۶ هم دوی د حج په موقع باندې د اعلان براءت دپاره ليږلي وو او فرمانيلې ني وو لاينهپهاالارجلمفيوانامنه .(۲)

رد كله چد داآيت كريمه نازل شورتقل تعانوانده ايناه نادايناه كم ونساه ناوكسناه كم دانفسنا دانفسكم الله چد داآيت كريمه نازل شورتقل تعانوانفسكم الله خضرت على ، حضرت فاطمه او حضرات حسنين تُنكُن راوبلل او وي فرمانيل اللهم مولاء اهلى . أ

دغزوه تبوک په موقع کله چه نبی کریم نظم هغوی خپل نائب جوړ کړو او په مدینه منوره کښې . ني دپاتي کیدو حکم ورکړو نو حضرت علی نظائ عرض اوکړل علقتنی مع النساء دالمبیان ؟ یعنی تاسو ما د ښځو او د ماشومانو سره شاته پریږدی ؟ نبی نظم اوفرمائیل اماترض ان تکون منی پینزلة مارون من موسی، الاانه لانبوة بعدی ؟ (یعنی آیا ته دا نه خوښوي چه تا ته زما د نسبت سره هغه مقام حاصل شی، کوم چه حضرت هارون ته دحضرت موسی عام په نسبت سره حاصل ورد د ابیله خبره ده چه ما نه پس د نبوت سلسله نشته

حضرت عمر الله به د داسي واقعاتو او مشکلاتو نه د الله تعالى نه پناه غوښتله چه د هغي د حل د پاره به حضرت على الله نه وو.

د علمى مقام يى دا حال وو چه پخپله فرمائى سلون، سلون، سلون، وسلون كتاب الله تعالى، قوالله ما من آية الا وانا اعلم او تهار، وانته ما كن د الله د كتاب په باره كښى ښه پوښتني كونى، په خدې قسم يو آيت هم داسى نشته چه دهغي په باره كښى ما ته علم نه وى چه هغه په شپه كښى نازل شوى دى يا په ورځ كښى امام مسروق بن الاجد ع كتك فرمانى ما امام مسروق بن الاجد ع كتك فرمانى

وجدت علم اصحاب محمد نظر ينتهل الى ستة : ال على، وعبدالله، وعبر، وزيد بن ثابت، ولي الدردام، ولي بن كعب، ثم وجدت علم هولاء الستة انتهل ال على وعبدالله. (^

⁽⁾ صحيح مسلم. كتاب فضائل الصحابة. باب من فضائل على بن ابى طالب المائية. رقم (٣٣٢٢)___

⁾ مسند آحمد (ج ۱ ص ۳۳۱)، مسند عبدالله بن عباس گاگا_

^اً) آل عمران ۶۱<u>) _</u>

⁾ صحيح مسلم. كتاب فضائل الصحابة. باب من فضائل على بن ابى طالب كالمُنزّ. رقم (٢٠٢٠)_ "/ حواله بالا)

مُ الاصابة (ج ٢ ص ٥٠٩)_

^{&#}x27;) مقدمة نصب الراية (ص ٥٥)_

يعني ما دنبي ﷺ داصحابوعلم په شپر حضراتو باندې ختم اومونده . يعني علي. عبدالله. يسى عمر، زيد بن ثابت، ابوالدرداء، أو ابي بن كعب تأكم، بيا دهغي شبرو علوم به دوه حضراتو كنبي راغوند شول، يو حضرت على أو دويم حضرت عبدالله بن مسعود الله

حضرت على الله د نبى كريم الله نه علاوه د حضرت ابوبكر صديق. حضرت عمرين الخطاب، حضرت مقدادين الاسود او د خيلي بي بي حضرت فاطمة الزهراء ثوليًا نه روايت

حدیث کړې دې

د هغوی نه دبعض صحابه کرامو نه علاوه ډیرو تابعینو روایت کړې دي. په صحابه کرامو کښې د هغوي د صاحبزادګانو حضرت حسن او حضرت حسين گان، نه علاوه حضرت عبدالله بن مسّعود ، حضرت ابوموسی اشعری، حضرت عبدالله بن عباس، حضرت ابو رافع، حضرت عبدالله بن عمر ، حضرت ابوسعيدخدري، حضرت صهيب رومي، حضرت زيد بن ارقم، حضرت جريربن عبدالله بجلي، حضرت ابوامامه، حضرت ابو جحيفه، حضرت برا ، بن عـازب او حضرت ابو الطفيل ثفالة روايت كوى

په تابعين مخضرمين يا چا ته چه دنبي كريم ﷺ رويت حاصل دي. په هغوي كښې عبداند بن شداد بن الهاد، طَّارِق بن شهاب، عبدالرحمن بن الحارث بن هُشَام، عبدالله بنَّ الحارث بن نوفل، مسعود بن الحكم أو مروان بن الحكم وغيره د حضرت على على على عرف دوايت كوي. دې نه علاوه د تابعينو يو جم غفير دهغوي نه روايت کوي 🖒

د حضرت على الله الدوريا بنخه سوه شپږ اتبا حديثونه مروى دى. په دي كښې متفق عليه شل احادیث دی، بله دا چه امام بخاری په نهه احادیثو کښې او امام مسلم په بنخلس احاديثو كښې متفرد دې (٠)

رمضاً نَنَّ ۴۰ هجری کینی یو شقی القلب کس عبدالرحمن بن ملجم مرادی په هغوی باندی حمله اوکړه او په دې واقعه کښې هغوی شهید شول. (۲)

هغري خلافت دري نيمي مياشتي كم پنخه كاله وو , ۴ , رض الله تعالى عنه وارضا ٢

قوله: قال النبي ﷺ: لاتكذبواعلى، فأنه من كذب على فليلج النار: سي كريم ﷺ اوفرمانيل چه په ما باندې دروغ مه وايي. ولي چه څوک په ما باندې دروغ واني

هغه بهجهنم ته داخليري

مطلب دا دې چه ما طرف ته دڅه قسم دروغو نسبت مه کوني. ځکه چه کوم سړې ما طرف ته داسي خبره منسوب كړي چه ما نه وي وليلي، نو هغه به جهنم ته ځي. دنبي كريم کلم طرف ته يوه غُلطه خبره منسوب کول حرام دي. که ددين په تائيد کښي وي يا په ترديد کښي

⁾ د شیوخ او تلامذه د تفصیل دپاره اوگوری الاصابة (ج ۲ ص ۵۰۸). وتهذیب الکشال (ج ۲۰ ص

^{ً]} اوگورئ عمدة القاری (ج ۲ ص۱۹۷). وخلاصة الغزرجی (ص ۲۷۴)_

^{ً)} عمدة القارى (ج ٢ ص ١٤٨)_

^{ً)} الاصابة (ج ٢ صّ ٥١٠)_

به دې روایت کښې چه فرمانیلې دی لاتکنهوامل په دې کښې د حل مفهوم مخالف مقصور او معتبر نه دې،ولې چه د رکنډ له، څه تصور دلنه نشنه، ځکه دا نهی دمعلل کذب ده ایا د شریعت دتانید د پاره د حدیث وضع جائز ده ۲ بعضي جاهل صوفیه وانی چه نبی ک_{ریم} گنام د کنډ حل النبی کلام منع فرمانیلې ده.د کنډ لنبی کالا نه تي منع نه ده فرمانیلې،لهذا

کړې شی نو جانز دې،ولې چه دا ،کټې له، دې ، رکټې طلیه، نه دې ، ۲۰

فائدي دې. دا فرق ددې مدعينو پخپله جوړ کړې دې. دلغټ نه ددې څه تانيد نه کيږي کا د حافظ ابن حجر کو د ماني چه دا ددې خلقو د جهالت دليل دې. ولي چه هغوی په ترغيب و ترغيب کښې چه کوم حديثونه وضع کړی دی او دهغې نه ني کوم ندب ثابت کړې دی نو هغه مندوب هم چونکه داحکامونه دې. ځکه هغه په وضع داحکامو کښې ګويا الله تعالي طرف ته غلطه خبره منسوب کړه، هم دغه شان په دې حکم کښې هغه تمام اخبار او روايات داخل دی چه په هغوي کښې د الله تعالى طرف نه په مخصوص عمل باندې دمخصوص ثواب و عده نقل کړې شوې ده. او په حقيقت کښې هغه ثابت نه دې رځ

ددې جاهلانو يو استدلال ديو روايت نه هم دي،چه هغې کښې دې من کټپ علىمتعبداليشل پهالناس فليتېوامقعدلامن التار، ⁶)

په دې روايت کښې کڼې متعمدا ته ګناه او باعث عذاب په هغه صورت کښې ونيلې شوې دې چه د خلقو دګمراه کولو په نيت دروغ اوونيلې شي،دې نه معلومه شوه چه که دخلقو د

۱) اوګورئ فتح الباری (ج ۱ ص ۱۹۹). و فتح المغیث (ج ۱ ص ۳۰۶)_

^{*)} حواله جات بالا)_

آ) اوګورئ المعجم الوسیط (ج ۲ ص ۷۸۰). والقاموس الوحید (ص ۱۳۹۵)_
 أ) اوګورئ النکت علی کتاب ابن الصلاح (ج۲ ص ۵۵۸و۸۵۵)_

 ⁽⁴⁾ كنف الاستار عن زواند البزار (ج ١ ص ١١٤). كتاب العلم. باب التحذير من الكذب على رسول الله على المسلم الله على المسلم المسلم

محراه کولو نیت نه وی نو دروغ ولیلی شی نو دا خلق والی چه کوم روایات ددې قیدنه مطلق دى هغه به هم دې مقيد روايت باندې محمول کولي شي آ

_{ددې ځو}اب دا دې چه المه حديث په دې باندې متفق دی چه دا زيادتی ضعيف دې.ددې ټولو نه قوی ترین طریق هغه دې کوم چه امام حاکم *پیچا* په المدخل کښې نقل کړې دې او بیبائي ددې تضعيف کړې دې، هغه طريق دا دې پونس پن پکورعن الاميش عن طلحة پن مصرف عن عبودين

شهبيل عن ابن مسعود هم په دې طريق سره امام بزار پينځ هم نقل کړي دي

امام حاکم فرمانی چه دلته دیونس بن بکیرنه په دوه خایونو کښی غلطی شوی ده پوه غلطي دا اوشوه چه هغوي د طلحة بن مصرف او د عمروبن شرحبيل په مينځ کښې دابوعمار واسطه ساقط كره

دويمه غلطي دا اوشوه چه دعبدالله بن مسعود تايخ نوم اخستوسره يي دا موصول وګرخونو. حالاتکه دا مرسل دي 🖒

اوكه دا زيادت ثابت هم شي بياهم ددې نه استدلال صحيح نه دي.ولي چه لاء به د عليل به ځاي د عاقبت دپاره اوګنړلي شي.لکه څنګه چه داند تعالى ارشاد رفالتقطه آل فرعون ليکون له عدواوحونل ۲٪ کښې د کیکون لام لام عاقبت دې ولي چه د لام تعلیل په صورت کښې ددې معنی په وی چه آل فرعون د حضرت موسی تغیی التقاط ځکه کړې ووچه هغه ددوې دیره دشمن او د پریشانئ باعث جوړشي.ظاهره ده چه دې غرض لره هغوي ددوي انتقاص نه وو کړي،ځکه به لام دعاقبت دپاره وي او دايت مطلب به دا وي چه ال فرعون چه دحضرت موسي عَيْثِمُ التقاطُ اوكرو نو ددي انجام او مآل داشو چه هغوي دپاره دشمن نور هم باعث د پريشاسي

هم دغه شان په - من کټپ على متعبداليضل په التاس...... کښې هم لام دعاقبت دپاره دي او مطلب دا دې چه چا په ما باندې دروغ اووليل. چه دهغي انجام او مآل دا دې چه په ځنفو کښې به ګمراهي خوريږي،نو داسې کس دي جهنم کښې خبله ټهکانه جوړه کړي

د. ليشل په الثان دويمه معنی دا کيدې شي چه داجمله دلته دتاکيدپه طور راوړلې شوې ده،چدددې نه مفهوم مخالف مقصود دې او نه معتبر او دا هم داسي دې چه ځنگه د آننه تعالی په ارشاد دفين اظلم مين افاترى على الله كذيا ليشل الناس بغيرعلم، "، كنبي ليشل د تاكيد دبار ه دي.كه ددي مفهوم مخالف معتبر او مقصود وي نو مطلب به دا وو چه افتراء على انه كولو

⁾ النكت على كتاب ابن الصلاح (ج ٢ ص ٨٥٥)_

⁾ اوگورئ النکت علی کتاب آبن الصلاح(ج ۲ ص ۸۵۵مو۸۵۶). نیز اوگوری شرح مشکل الآثار (ج ۱ ص ۳۷۱و ۳۷۲). باب بیان مشکل ما روی عن رسول الله کاری من قوله: من کذب علی متعمدا <u>| _</u> *

^{ً)} القصص ٨)__ ') الانعام ££1)__

والاظالم نه دي.حالاتكه افتتاءالكنب على الله بهر صورت حرام دي. كه په دې كښې اضلا مقصود وى اوكه نه وى والله اعلم('،

ددې توجیه د وضاحت په طور ځان پوهه کړنی چه جاهلان دحدیث وضع کولو جواز په لیطل په النال کښې دمفهوم مخالف راویستلو سره کوی چه که دګمراه کولو په نیت حدیث وضع کړې شی نو ګناه ده لیکن که نیت بنه وی او مقصود په دین باندې عمل کولو دپاره آماده کول وی نوبیا حدیث وضع کړې شی. چه دعمل خیر تحریک اوشی او دعذاب حدیثونه دې وضع کړې شی چه دګناهونونه ځان اوساتلې شی نوبه دې کنبې ګناه نشته

مونږه وايو چه دلته مفهوم مخالف نه مقصود دې او نه معتبر، کنه على النبى بهرصورت حراه او ګناه ده. د ليشل په الناس جمله کنه على النبى قباحت او دبدني د تاکيددپاره ارشاد فرمائيلي شوي دي، دا بالکل هم دغه شان دې څنګه چه په قرآن مجيد کښې رهبن اظلم مين افترى على الله کنهاليشل الناس په پرهباي فرمائيلي شوي دي، په آيت کښې د ريشل الناس په پرهباي مفهوم مخالف اعتبار او کړې شي نو مطلب به دا وي چه دخير غرض دپاره ، دنيک کارد ترغيب او دګناه نه دنفرت دپاره ، که دافتراء على الله بهرصورت الله ارتکاب او کړې شي نو افتراء على الله بهرصورت ظلم دې او حرام دې ، خکه به په آيت کښې رليشل الناس په پرهباي د تاکيد دپاره او ګوړلي شي. ګويا چه ددې جملي نه دافتراء على الله مشاوت موکد او مضبوط کول مقصود دې . هم دغه شان په حديث کښې هم ليشل په الناس په تاکيد باندې محمول دې ، ددې مفهوم مخالف نه مقصود دې ، ده معتبر والله تمال اعلم وعلمه امکم

قوله: فليلج النار:دا د ولوج نه د امر غائب صيغه ده.

دا آمریا خوپهٔ معنی د دعا دې ګویا نبی کریم ۱۱۸ هغه کس دپاره کوم چه د کذب علی النبی ۱۲۶ ارتکاب کوی بددعافرمائی چه هغه دي په جهنم کښې واچولې شی یا دا آمر په معنی د خبر دي. لکه څنګه چه دمسلم شریف په روایت کښې من پیکنپ علی پلج النار راغلې دي، آ) او د ابن ماجه په روایت کښې دا الکنپ علی پیلج النار، آ، الفاظ دی، ۴

⁾ النكت على كتاب ابن الصلاح (ج ٢ ص ٨٥٤) وتوضيح الافكار (ج ٢ ص ٤٣). وفتح المغيث (ج ٢ ص ٢٠٠). وفتح المغيث (ج ٢ ص

[]] صحيح مسلم. المقدمة. باب تغليظ الكذب على رسول الله على رقم (٢)_

[&]quot;) سنن آین ماچه المقدمة. باب التفلیظ فی تعمد الکذب علی رسول الله گُورِّرَوّم (۳۱)_ ") اوگوری فتح الباری (ج ۱ ص ۲۰۰)_

ر. ١ عَذَّتَنَا أَبُوالْوَلِيدِ قَالَ مَنْ ثَنَا شُعْبَةً عَنْ جَامِعِ بْنِ فَذَادِ عَنْ عَامِرِ بْنِ عَبْدِاللَّهِ بْنِ الزَّبْذِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ قُلْتُ لِلزَّبْثِرِ ، ، إلَّى لاَ أَمْمُلْكَ ثَمْنَ فَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ - صلى الله عليه وسلم - كَمَا يُعَرِّثُ فُلاَنَ وَفُلاَنَ . قَالَ أَمَا إِلَى لَمْ أَفَارِقُهُ وَلَكِنْ سَمِعْتُهُ يَقُولُ « مَن كَنْ بَعَلَى فَلْبَتَوَا مُتَعْدَدُهُ مِنَ النَّارِ

رجال المديث

ن ابوالولید : دوی مشهور محدث امام ابوالولید هشام بن عبدالملک باهلی طبالسی می مختله دی ۲٪ . نصری مختله دی ۲٪

دوی د ابراهیم بن سعد، اسحاق بن سعید قرشی، عکرمه بن عمار، جریربن حازم، مهدی بن میمون، امام شعبه، امام مالک، امام لیث بن سعد، سفیان بن عیینه، هشام الدستوانی او د زانده بن قدامه تفتیج وغیره نه روایت کوی

د دوی نه روایت کونکو کښی امام بخاری. امام ابوداود ابراهیم بن یعقوب الجوزجانی.اسحاق بن راهویه ابوحاتم رازی او محمدبن یحی دهلی میزدی ن

امام احمد بن حنبل وكله فرمائي ابوالوليد متقن . أ

نيز هغوى فرمانى وابوالوليداليوم شيخ الاسلام، ما الدم عليه اليوم احدامن المحدثين. ٥٠ ابن واده ينطق فرمانى حدثتى ابوالوليدوما اداني اوركت مثله، ٧٠

رور المستور المستورين المستوري المستورين المس

احمدبن سنان مُعَلَيْهُ فرمائي حدثنا ابوالوليد اميرالبحدثين و^،

امام ابوزرعه تنطيح فرمانی ۱ درك تصف الاسلام، وكان اماما في زمانه، جليلاعند الناس. (*) امام ابوحاتم تنطيح فرمانی ابوانواليد امام، فقيه، حالل، ثقة، حافظ، ما دايت في ده كتابا تنظ. (`

⁾ قوله قلت للزبير : الحديث اخرجه ابو داو دفي سننه في كتاب العلم باب التشديد في الكذب على رسول الله تحقيق المؤلم الله تحقيل رقم (٣٤٥١). وابن ماجه في سننه في المقدمة . باب التغليظ في تعمد الكذب على رسول الله تحقيق . قد (٣٤) .

^{ً)} تهذيب الكمال (ج٣٠ ص٢٢۶)_

⁾ دشيوخ او تلامذه دتفصيل دباره او كورئ تهذيب الكمال (ج ٣٠ ص ٢٢٧)_

⁾ تهذيب الكمال (ج ٣٠ ص ٢٢٩)_

مُ حواله بالا)_

يُ تهذيب الكمال (ج ٣٠ ص ٢٣٠)_

⁾ حواله بالا)_

⁾ حواله بالا)_) حواله بالا)_

^{ً)} حواله بالا)

معاويه بن عبد الكريم زيادي مُوسِّدُ فرماني ادركت البعدية، والتأس يقولون: ما بالبعدية اعقل من إلى الماليد، وبعدة الويكرين خلاد، ()

عرفتا دېسته يې کابل خده. يعنی ما بصره په داسې حال کښې اوموندله چه خلقو په ونيل چه په بصره کښې د ابوالوليد نه زيات څوک عقلمندنشته، او دهغوی نه پس ابوبکرين خلاددې

ابن سعد كيني فرماني كان تقدمجة ثبتا..٠

ابن حبان پینیچ دهغوی ذکرپه کتاب الثقات کښې کړې دې او فرمانیلې ني دې وکان من ظلام الناس. آ،ابن قانع پینیچ فرمانی ثقة مامون ثبت. آ

په ۲۲۷ هجري كښې دهغوي انتقال اوشو ،^۵، رحمه الله رحمة واسعة.

شعبه دوى اميرالمومنين في الحديث شعبه بن الحجاج عتكى بسطامي المخودي. ددون

حالات کتابالایبان، پاپالیسلممن سلمالیسلیون من لسانه دیده په ذیل کښې تیر شوي دي . ^۲ (**جامع بن شداد**: دوی ابوصخره جامع بن شداد محاربی کوفی گئند کی ^{۲۸}

ر پا چه چه بخوان محرز ، طارق بن عبدالله محاربی، عبدالرحمن بن یزید نخعی ، ابوبرده بن ابی دوی د صفوان محرز ، طارق بن عبدالله محاربی، عبدالرحمن بن یزید نخعی ، ابوبرده بن ابی موسی او دعامربن عبدالله بن الزبیر شخ وغیره نه روایت کوی

ددوی نه روایت کونکو کښتي امام اعمش.مسعر بن کدام.شعبه.سفیان ثوری.عبدالرحمن بن عبدالله المسعودی او عمرین ایی زانده منظوغیره دی ۸۰

امام يحي بن معين، امام ابوحاتم او امام نسائي ﷺ فرمائي تقد، ٨٠٠

يعقوب بن سفيان المن فرمائي لقة متقن والمرائي

امام عجلى مُنطَّة فرمانى وهوشيخ عال ثقة ... من قدماء شيوخ سفيان، وكان شيخاعا قلا ثقة ثبتا كوفيا، ``

```
') تهذيب الكمال (ج ٣٠ ص ٢٣١)_
```

^{ً)} الطبقات الكبرى لابن سعد (ج ٧ ص ٣٠٠)_

⁾ الثقات لابن حبان (ج ۷ ص ۵۷۱)_

⁾ تهذيب التهذيب (ج ١١ ص ٤٧)_

^د) حواله بالا)

مُ) كشف الباري (ج ١ ص ٤٧٨)_

⁾ کشف الباری (ج ۱ طن ۲۱۸ ٪)_ ۲) تهذیب الکمال (ج ٤ ص ۴۸۶)_

شيوخ اوتلامذه دتفصيل دپاره اوګورئ تهذيب الکمال (ج ٤ ص ٤٨٧و٤٨٧). وتهذيب التهذيب (ج ۲ ص ١٥٤)_

⁾ تهذيب الكمال (ج ٤ ص ٤٨٧)_

⁾ تهذیب التهذیب (ج ۲ ص ۵۶)_

[&]quot;) تهذيب التهذيب (ج ٢ ص ٥٤). وتعليقات تهذيب الكمال (ج ٤ ص ٤٨٧)_

كنف البارى كتاب العلم

ابن حبان کیلیج دهغوی ذکر په کتاب الثقات کښې کړې دې 🖒

حافظ ذهبي مُشَيِّة دهغوى تذكره كولوكبني ليكي الامام،العجة،ابوسغية البحاري، احد، حليام الكوفة."

دوی سن وفات بعض حضرات ۱۸ ۱هج،بعض حضرات ۱۲۷هج،او بعض حضرات ۱۲۸ هجری بیانوی ۲٫ رحمه الله تعال رحمهٔ واسعه.

. ما مربن عبدالله بن الزبير دوى عامر بن عبدالله بن الزبير بن العوام قرشى اسدى مدنى من المنطقة عبدالله بن الزبير بن العوام قرشى اسدى مدنى المنطقة عبدالله بن ابوالحارث ددوى كنيت دى وقل المنطقة عبدالله بن المنطقة عبدالله المنط

دوّی دُخیل پلارحضرت عبدالله بن الزبیر گانونه علاوه دحضرت انس.حضرت صالع بن خوات بن جبیر،عمروبن سلیم زرقی،عوف بن الحارث بن الطفیل او دخیل ماما ابو پکربن عبدالرحمن بن الحارث بن الهشام نه روایت کوی

ددوی نه روایت کونکو کښې جامع بن شدادمحاربي.دهغوي ورور عمربن عبدالله بن الزبير،عمروبن دينار،مالک بن انس،محمدبن عجلان،مصعب بن ثابت بن عبدالله بن الزبير او يحي بن سعيدانصاري پينيوغيره حضرات دي. أه

امام احمدبن حنبل مُخطَّ فرمائي تُقادّمن اوثق الناس. (*)

امام يحي بن معين او امام نسائي ﷺ فرمائي لگقه. (٢) امام نسائي ﷺ

امام ابوحاتم مَثَنَّةُ فرمائي ثقة صالح. ^ امام عجلي مُثَنِّةُ فرمائي مد**ن تابي ث**قة. ^ .

امام عجلی پیوز فرمانی مدون به به در این منطقه در حضرت این سعد به باد فرمانی کان عادیث پسیرده ...`،

خليلي مُنظِيَّ فرمائي احاديثه كلهايحتجبها. (١١)

^{ْ)} تهذیب التهذیب (ج ۲ ص ۵۷)_

^{&#}x27;) سيراعلام النبلاء (ج ٥ ص ٢٠٥)-

⁾ اوگورئ سير اعلام النبلاء (ج ۵ ص ۲۰۶)، وتهذيب التهذيب (ج ۲ ص ۵۶و۵۷)، وتهذيب الكمال (ج ٤ ص ۶۸۷ (۸۸۵)_

⁾ تهذيب الكمال (ج ١٤ ص ٥٧)_

⁶ . هشيوخ اوتلامذه دتفصيل دپاره اوګورئ تهذيب الکمال (ج ۱۶ ص ۵۷ه۵۰). وتهذيب النهذيب (ج ۵ص ۷۷<u>) .</u>

رٌ) تهذيب الكمال (ج ١٤ ص ٥٨)_

⁾ حواله بالا)__ م

⁾ تهذیب التهذیب (ج ۵ ص ۷۶)_ ر

⁾ حواله بالا)_ ') حواله بالا)_

^{``)} حواله بالا)_ ``) حواله بالا)_

امام نووى يُولِيُهِ فرماني وكان عابدافاضلام جمعاعلى توثيقه وجلالته. ()

حافظ ذهبي تشطيخ فرماني مجاعلي لقته الم

فلااچيه؟ چهزه دالله تعالى طرف ته رابلونكي اواز واورم او لبيك اونه وايم؟ نوخلقو هغوى ته سهارا وركړه او د ماښام په جماعت كښې شريك شو. لا يو ركعت يي ادا كړې ووچه روح ئي دقفس عنصري نه پرواز اوكړو د ...

دعبادت او د دعا داسې شوق وو چه هوش به يي نه پاتې کيدل او بعض وختونه دماسختن نه واخله تر سحر پورې به دعاکښې مشغول وو ۴٥

په ۱۲۱ هجري كښي دهغوي انتقال اوشو ۲۰ ، رحمه الله تعالى رحمة واسعة.

چيدالله بن الزبيو الالليء وى مشهور صحابى. امير المومنين عبد الله بن الزبير بن العوام بن خويلد بن اسدالقرشى الاسدى المدنى الالليء ويكر دهغوى كنيت دي او بعض حضراتو كنيت ابوخيب خولى دي. (')
 كنيت ابوخيب خولى دي. (')

حضرت عبدالله بن الزبیرته الله تعالی ډیر خصوصیات او فضائل ورکړی وو دهغوی پلاز حضرت زبیربن العوام دی، چه په دعشره مبشره کښې وواو ورسره د نبی کریم گاه دحواری په نوم معروف وو . دهغوی والده حضرت اسماء گاه ذات النطاقین بنت ابی بکرالصدیق گاه ده . ده دهغوی نیا حضرت صفیه بنت عبدالمطلب گاه ده، چه دنبی کریم گاه حقیقی ترور وه ، حضرت خدیجه گاه ده هغوی دپلار ترور وه ، دهغوی ترور ام المومنین حضرت عائشه گاه ده ، () دحضرت عبدالله بن الزبیر گاه ولادت دهجرت نه پس اوشو ، بعضو په ۲ هجری کښې ولادت خودلې دې ، او حافظ ابن حجریکه ۱ هجری ته ترجیح ورکړې ده . ()

هغوي ته د اول مولودق الاسلام يعدالهجرة كيدوشرف حاصل دي، دهغوي ولادت اهل اسلام

^{&#}x27;) تهذیب الاسماء واللغات(ج ۱ ص ۲۵۶)_

^{ً)} الثقات لابن حبان (ج ۵ ص ۱۸۶)_

⁷) سبر اعلام النبلاء (ج ۵ ص ۲۲۰)_

^{*)} حواله بالا)_ دم - اله بالا)

نُّ) حواله بالا)__

⁾ النقات لابن حبان (ج ۵ ص ۱۸۷)_) تهذیب الکمال (ج ۱۶ ص ۵۰۸و(۵۰۹)_

⁾ المديب الكفتان (ج 18 ص 14 و10.4)_ ^) الوكوري تهذيب الاسماء واللغات للنووي (ج 1 ص 156)_

^{ً)} اوکوری تهذیب التهذیب (ج ۵ ص ۲۱۳و ۲۱۶). والاصابة (ج ۲ ص ۳۰۹)_

دپاره د ډير خوشالئ سبب اوګرځيدو .ددې وجه دا وه چه يهودو دا مشهوره کړې وه چه مونږه دې مهاجرينو باندې جادو کړې دې ،ځکه ددوې په کورونو کښې به ولادت نه کيږي .نوچه کله دوې پيدا شول نو ديهودو په ترديد او ذلت باندې مسلمانان طبعا خوشاله شول ()

روي. کله چه دوی پېداشول نو دنېی کریم 微 په خدمت کښې راوړلې شول.نبی گل کهجوره اوچوپله او ددې کهجوری نه یې تحنیک اوکړو.نو دټولو نه اول څیز چه دهغوی په خیټه کښې لاړو هغه دنېی کریم گل لعاب مبارک وو ۱

دنبي کريم نهد وصال په وخت دهغوی عمر اته يا نهه کاله وو. کله چه دوی د اوه کاله عمرته اورسيدل نودخپل پلاپه اشاره باندې د نبي کريم نه په لاس بيعت دپاره حاضر شول.نبي نه چه هغوي په راتلواوکتل نو مسکې شو اوبيا يي بيعت اوفرمانيه ، "،

الله ، خُنگُه جَه هَغُوىَ ته نَسَبَى شرافتٌ ورکړى ووهّم داسې ذاتى قابليت او صلاحيت يي هم ورکړى وو ، دير موک په جنګ کښې ورکړي وو ، دير موک په جنګ کښې شريک شو او د اس سورلى يي اوکړه ، *)
شريک شو او د اس سورلى يي اوکړه ، *)

يو خله حضرت عبدالله بن الزبيردنبي كريم الله خدمت ته لاړو.نبي كريم الله هغه وخت حجامت لكولو.د فراغت نه پس نبي الله اوفرمائيل اې عبدالله دا وينه يوسه او داسې خاني كنبي واچوه چه تا څوك اونه وينه يي اوڅكله.په كنبي واچوه چه تا څوك اونه ويني .كله چه دوى هلته نه روان شول نوهغه وينه يي اوڅكله په واپسئ باندې نبي الله پوښتنه اوكړه چه وينې سره دې څه اوكړو؟ عرض يي اوكړو چه ماته ډير پټ خاني معلوم وو .هلته مې پټه كړه .نبي الله اوفرمائيل شايد چه تا هغه وينه اوڅكله؟ عرض يي اوكړو چه آو نبي نله اوفرمائيل ولم شهريت الدم؟ ويل للتاس منك، دويل لك من التاس . تا دا وينه ولي اوڅكله؟ اوس به ستا دطرفه خلقو ته تكليف رسي او دخلقو دطرف نه

موسی تبوذکی رآوی حدیث نقل کوی چه ما دا حدیث ابو عاصم ته واورولونوهغوی اوفرمانیل چه دخلقو خیال دادې چه په هغوی کښې کوم ډیرزیات قوت وو هغه هم ددې وینې د وجې نه وو ^۵

دحضرت عبدالله بن سعد بن ابی سرح ظائل په ماتحتی کښې دافریقی جهاد کښې شریک شول. په موقع کښې د افریقی د کافرانوسره وو. شول. په د موقع کښې د مسلمانانو شل زره لښکر مقابله د یو لکه شل زره کافرانوسره وو. حضرت عبدالله بن الزبیر په دی موقع باندې د بې مثال بهادرئ او دنهایت هوښیارئ نه کار و اخستو. او ددشمن په فوج بالکل په مینځ کښې یي حمله او کړه او په لږ وخت کښې د کفارو د سردار سر پخپل نیزې باندې واپس راوړلو، نورو مسلمانانو په دې موقع ډیره سخته او په د

بەتاتەتكلىفرسى

⁾ سير اعلام النبلاء (ج ٣ ص ٣٤٥). والاصابة (ج ٢ ص ٣٠٩)_

⁾ تهذيب الاسماء واللَّفات (ج ١ ص ٢۶۶) _

⁾ سير اعلام النبلاء (ج ٣ ص ٣٤١ و ٣٤٥) _

⁾ صحیح البخاری (ج ۲ ص ۵۶۶) کتاب المفازی،باب قتل ایی جهل.رقم (۳۹۷۵)_

م) سبر اعلام النبلاء (ج ٣ ص ٣۶۶). والاصابة (ج ٢ ص ٣١٠)_

يو ځلي حمله او کره نو د کفارو لښکر ايسارپاتي نه شو او او تختيدو ١٠٠

د واقعه جمل پدموقع باندې دحضرت عانشه ما سره شریک شول او داسې بهادری سره یې . جنګ او کړو چه د څلویښت نه زیات زخمونه پرې راغلل ۱۰

مضرتُ عَبُداُلَدُ بن الرَّبِيرِ كُلِّئُو دَعَبادتَ خاصَ ذُوقَ لرلو . حضرت عمروبن دينار كُلِيَّة به فرمائيل مارايت مصليا قط احسن صلاة من عبدالله بن اللهد.")

ابن ابی ملیکه پینهٔ فرمانی چه ماته حضرت عمربن عبدالعزیز پینهٔ اوفرمانیل ات فی قلبات من ابن الایلاد من این الایلاد نو ما ددی خدشی دازالی په طور اوونیل لورایته ما رایت مناجیا دلا مصلیا مثله. آ یعنی که تا هغوی لیدلی وی به بوهه شوی به وی چه دهغوی نه زیات څوک مناجات کونکی او مونخ کونکی نشته.

ر کري کوري و که مختله داوه اوه ورخې صوم وصال کولو. بياهم دټولو نه مضبوط وو ۴۰ حضرت ابن الزبير تاڅو به اوه اوه ورخې صوم وصال کولو. بياهم دټولو نه مضبوط وو ۴۰ امام مجاهد کيلځ فرمانۍ چه کله به حضرت عبدالله بن الزبير مونځ ته اودريدو نوداسي به ښکاريدو ګويا چه هغوي يولرګي دې ۲٪

خضرت عبد الله بن الزيير گاتو خپلې شپې داسې تقسيم کړې وې چه يوه شپه ترسحر پورې به ني صرف دقيام په حالت کښې عبادت کولو.يوه شپه صرف درکوع په حالت کښې او يوه شپه به صرف دسجدي په حالت کښې به عبادت کښې مصروف وو (١)

وړاندې د پاپلیملغ العلم الشاهدالفاتپ دلاندي حضرت ابوشریح گانژ عمروبن سعیدته چه کوم نصیحت کړې وو دهغې په ذیل کښې دحضرت عبدالله بن الزبیر بعض حالات راغلل. هغه هم ملاظه اوکري شي

حضرت عبدالله بن الزبير المنظر ديزيد دخلافت په اوائل كښې دمدينې منورې نه مكې مكرمې طرف ته راغلي وو. هم دلته دهغوى سره دجنگونو سلسله جاړي وه، تردې چه په ۲۴ هجري كښې د يزيد انتقال اوشو اوس دحضرت عبدالله بن الزبير طائخ په لاس خلقو بيعت او كړو، نودشام لړى علاقې نه بغير باقي ټولو ملكونو كښې دحضرت عبدالله بن الزبير طائخ خلافت قانه شه

دټولو نه مخکښې مروان بن الحکم بغاوت اوکړو او دشام په علاقه باندې ئي قبضه اوکړه اوبيا په مصر باندې قابض شو .دې نه پس دمروان انتقال اوشواو عبدالملک بن مروان مشر

⁾ سير اعلام النبلاء (ج ٣ ص ٣٧١). وتهذيب الاسماء واللفات (ج ١ ص ٢٤٤)_

⁾ سير اعلام النبلاء (ج ٣ ص ٢٧١)_

ا) سيراعلام النبلاء (ج ٣ ص ٣٤٧)_

^{ً)} حواله بالا)_

⁽) سير اعلام النبلاء (ج ٣ ص ٣۶٨)-

⁾ حواله بالا)__

ا) سير اعلام النبلاء (ج ٣ ص ٣٤٩)_

شو اوپیش قدمی یی اوکره، حتی چه حجاج بن یوسف دمکی مکرمی شدید محاصره اوکره، په بیت الله شریف باندې نی دمنجنیق په ذریعه حمله اوکره، په دغه موقع باندې حضرت عبدالله بن الزبیر گاتؤ په ډیره بې جګرئ سره اوجنګیدو، حتی چه په ۱۷جمادی الاولی ۷۳ هجری کښي شهیدشو (\والحدیث فوشمون،

حضرت عبدالله بن الزبير تالئو دنبي كريم تهم نه علاوه دخپل پلار حضرت زبيربن العوام. سفيان بن ابي زهير . حضرت عثمان بن عفان . حضرت على بن ابي طالب . حضرت عمربن الخطاب . دخپل نيكه حضرت ابوبكر الصديق او دخپلي ترور حضرت عائشه تالگه نه روايت كوي ددوي نه روايت كونكو كنبي ثابت بناني . ابوالشعثاء جابربن زيد . ابو ذبيان خليفة بن كعب تميمي . عامربن عبدالله بن الزبير . عبادبن عبدالله بن الزبير . عامربن شراحيل شعبي . عروة بن

الزبير . عمروين دينار . ابوالزبيرمكي . ابواسحاق سبيعي . هشام بن عروة او فاطمة بنت المنذر بن الزبير شيوغيره ډير حضرات دي . . دحضرت عبدالله بن الزبير گانگو نه تقريبا درې ديرش حديثونه مروي دي . په دي كښي متفق

دخصرت عبدالله بن الربیر لهو مه تعریب درې دیرس صیفوت موړی دی چې دي علیه صرف یو حدیث دې.بله دا چه امام بخاری پُولله په شپږ حدیثونو کښې او امام مسلم پُولله په دوه حدیثونو کښې متفرد دی (^۲)

حضرت عبدالله بن الزبير تُنْ په عهادله اربعه کښې يو دې، د عبادله اربعه تفصيل مونږ د پره الوی دڅلورم حديث دلاندي دحضرت عبدالله بن عباس تُنْ په حالاتو کښې ذکر کړی دی ځ رښالله تعالى عنه دارضا ه

و حضرت زبير بن العوام نائلًا: دوی حواری رسول الله الله حضرت زبيربن العوام بن خويلد بن اسد بن عبدالعزی بن قصی قرشی اسدی مدنی نائل دی، ابوعبدالله ددوی کنيت دی، آ حضرت زبير نائل دنبی کريم نظم د ترور حضرت صفيه نائل خوی دی، آد حضرت خديجه نائل وراره دی () حضرت زبير نائل بالکل دابتداء نه مشرف باسلام شوی وو، بلکه هغوی خلورم يا پنځم کس وو (^

⁾ د تفصيل دپاره او محوری الکامل لابن الاثير (ج ٣ ص ٢٥٩..... ٣٥٠). وتهذيب الاسماء واللغات (ج ١ ص ٢٥٧). والاصابة (ج ٢ ص ٣١١)_ ص ٢٤٧

⁾ دشيوخ اوتلامده دتفصيل دپاره اومحورئ تهذيب الكمال (ج ۱۴ ص ۵۰۰هـ ۵۱۰). وسيراعلام النبلاء (ج ۱ ص ۴۶۴)_

⁾ اوگوری سیر اعلام النبلاء (ج ۳ ص ۳۶۳).وخلاصة الخزرجي (ص ۱۹۷)_

⁾ اوگورئ کشف الباری (ج ۱ ص ^{۱۳۶})_

⁽م) تهذیب الکمال (ج ۹ ص ۳۱۹و ۳۲۰)_

 ⁾ تهذیب الاسماء واللفات (ج ۱ ص ۱۹۹)_
) زوجته خدیجة بنت خویلد عمتی قاله الزبیر نگافتاً، انظر تهذیب الکمال (ج ۹ ص ۲۲۵)_

^{^)} تهذيب الاسماء واللغات (ج ١ ص ١٩٤)__

دنبی کریم گدد دفاع دپیاره دټولو نه اول توره راویستونکې هم دوي وو ، یو خل دا افواه اوچته شوه چه نبی کریم گل دشمنانو گرفتار کړو ، حضرت زبیر گنگ فور ا توره راوویستله اوهم په دې حال کښې اووتو او په تلاش تلاش کښې نبی کریم گل ته اورسیدو ، نبی گل چه کله دوی په دې حال کښې اولیدل نود وجې یبي تپوس او کړو ، هغوی ټول صورتحال بیان کړو ، نبی کریم کل د هغوی او د هغوی د تورې د پاره د عااو فرمانیله ، هغه وخت ددوی عمر صرف دولس کاله وو ()

حضّرت زَبیر نَکُتُو تَه اَسلام راوړلونه پس ډیرتکالیف اورسیدل، دهغوی تره به دهغوی نه پوړ راتاو کړو او رازوړند به یي کړو اوبیا د لاندې نه به یي اور بل کړو او دهغې لوګئ به ورکولو، لیکن حضرت زبیر نُکُتُو چه دعزم نه پوخ وو . دا به یي وئیل لااکلمالهذا ۱۰۰

هم داشان حضرت زبیر گانئز هغه دشپرو اصحاب شوری نه وو چه دهغوی نه یوکس حضرت عمر گانئز د خلافت دپاره منتخب کړې وو او فرمانیلې وو چه داهغه حضرات دی چه دچا نه نبی کریم تا گارتر آخر وخت پورې راضی وو د آ

خَصْرَتْ زَبِيرِ ثَاثِةً دَحَيشي طَرَفَ تَهُ دُوآرٍه هجرتونه کړي دي.ليکن هلته ډير وخت ايسار نشو. بيا مديني طرف ته يي هجرت اوکړو رگ

په مکه مگرمه کښې تبې کريم کالله دوی او حضرت ابن مسعود الگئو پخپل مينځ کښې ورونړه جوړ کړې وو. (^۸) او چه کله مدينې منورې ته هجرت يي اوکړو نو هلته دحضرت سلمه بن سلامه الگئوسره يي د مواخات رشته قائمه کړه (^۲)

دحضرت زبیر گائئ فدائی کارونو کتلوپه وجه نبی کریم تانی فرمائیلی وو هماك بی او امی.(^) نبی تانیم هم دغه شان دحضرت سعدبن وقاص تانیخ به حق کنبی هم ارشاد فرمائیلی وو.(^)

نبی کریم ﷺ دبنی قریظه خبر راوړلو په سلسله کښی تپوس کړې وو من یاتینا پخورالقوم؟ ښی ﷺ هم دا شان درې ځله تپوس او کړو، درې واړه ځله حضرت زبیر ﷺ خپل نوم پیش کړو، نبی ﷺ خوشاله شو او وي فرمانیل ان لکل بی حواریا دحوادی الویور ()

⁾ سير اعلام النبلاء (ج ١ ص ٤١)_

⁾ تهذیب الکمال (ج ۹ ص ۳۲۱)_

^{]ً)} تهذیب الاسماء واللغات (ج ۱ ص ۱۹۶)_

^{&#}x27;) الطبقات الكبرى لابن سعد (ج ۳ ص ۱۰۲)_ ^{(د}) انظرالطبقات (ج ۳ ص ۱۰۲)، وقبل : آخی بینه وبین طلحة. کما فی الطبقات)_

[﴾] تعذیب الاسماء (ج ۱ ص ۱۹۶)، وقبل: آخی بینه وبین کعب بن مالک. انظر الطبقات (ج ۳ ص ۱۰۲)_) صحیح البخاری (ج ۱ ص ۵۲۷) کتاب فضائل اصحاب النبی کاری باب مناقب الزبیر بن العوام کاری رقم (۲۷۲)_

⁾ سنن أبن ماجه المقدمة. باب فضائل اصحاب رسول الله كَلِيْنِ فضل الزبير كُلِيْنَ وقم (١٢٢)_

حضرت عثمان الله تلا تعلق عرض او كرو چه تاسو حضرت زبير خپل خليفه جوړ كړئ نو حضرت عثمان الله اوفرمائيل اماوالذى لقى بيده، اندلغويهم ماعليت، وان كان لاحبهم الى دسول الله الله (١٠) يعنى په هغذ دات قسم : چه د دچا په قبضه كنيى زما خان دې زما د علم مطابق هغه

د دې ټولو نه افضل دې اوهغه دالله د رسول ۱۳۸ په نزد د ټولو نه محبوب وو حضرت زبير ۱۳۶۵ د بدر اواحد سره سره د نبي کريم ۱۳۸۴ ټولو غزواتو کښې شريک وو، په غزواتو کښې به داسې پهادرئ سره جنګيدو چه دهغوي دجسم يو حصه هم د زخم نه خالي نه وه ۲ حضرت حسان ۱۳۶۱ د حضرت زبير ۱۳۶۱ په تعريف کښې فرماني

> فكم كربة ذب الزبير بسيقه عن البصطفى والله يعطى فيجزل قبا مثله فيهم و لا كان قبله وليس يكون الدهر مادام يذبل ثناؤك غير من قمال معاشر وفعلك يا ابن الهاشية افضل (⁷)

رڅومره اذیتونه دی چه زبیر دخپلي تورې په دریعه د نبی کریم ﷺ نه لرې کړل. اند تعالی به د دې صله ورکوی او ښه په ورکوی، ددوی په شان نه په دي خلقو کښې شته او نه دهغوی په وړاندې خلقو کښې وواو د از مانه په تیریږی لیکن څوک په دهغوی په شان نه وی، د ډیرو د د د د د د د از مانه په تیریږی لیکن څوک په دهغوی په شان نه وی، د ډیرو

خلقو دعملي کارونو په مقابله کښې ستا دژبې تعریف بهتر دې او اې این الهاشمیه ستاسو عملي کار خو دټولو نه افضل دي،

د حضرت ربير الله تا تعب اوجود د طول صحبت نه زيات حديثونه مروى نه دى. دحضرت عبدالله بن الزبير الله نه کله ددې متعلق تپوس او کړې شو نو وې فرمانيل

یابنی، کانت مندی امك، وعند رسول الله گلظ خالتك ماثشة، ویینی و بینه من القرابة و الرحم ما قد علبت، وعبقی امرحبیه قبنت اسد جدته، وعبته امی، وامه آمنة بنت و هب بن عبد مناف، وجدتی هالة بنت اهیب بن عبد، مناف، وزوجته خدیجة بنت خویلد عبق، ولقد نلت من صحابته افضل ما نال احد، ولكنی سبعته یقول: من قال علی مالم اقل تبوا مقعد؛ من النار فلا اصبان احدث عنه در ً،

یعنی هغوی آوفرمائیل چه ای زما خویه ما سره ستا مور وه، او دنبی کریم گلسره ستا ترور عائشه وه او ماته د نبی گلسره چه کومه قرابت او رشته داری ده هغه تاته معلومه ده، زما ترور ام جبیبه بنت اسد دهغوی نیا ده، دهغوی ترور زما مور ده، دهغوی مور آمنه بنت وهب بن عبد مناف ده او زما نیا هاله بنت اهیب بن عبدمناف ده، دهغوی بی بی خدیجه بنت خویلد زما ترور ده، دهغوی په اصحابو کښی چا چه دهغوی نه څه حاصل کړل ما د ټولو نه

⁾ صحيح البخارى (ج ١ ص ٥٢٧). كتاب فضائل اصحاب النبي شَقِيلُ، باب مناقب الزبيربن العوام وَلََّمُونَّدُ قد (٣٧١٧)

[]] سير اعلام النبلاء (ج ١ ص ٥٢). وتهذيب الاسماء (ج ١ ص ١٩٤)_

^{ً)} تهذيب الكمال (ج ٩ ص ٣٢٢)__

⁾ تهذیب الکمال (ج ۹ ص ۳۲۵و ۳۲۶)_

بهتر حاصل کړل، لیکن ما د نسی کریم ناننده اوریدلې دې فرمانی دکوم کس چه په ما باندې داسې خره جوړه کړې چه ما نوی وئیلې نوهغه دي خپل ټهکانه جهنم کښي جوړ کړی ځکه زه دا نه غواړم چه ده نبی کریم نانن نویات حدیثونه بیان کړم

د حضرت زبير تاتئو نه تقريبا آته ديرش حديثونه مروى دى، په هغي كښې متفق عليه دوه دى. او اوه احاديثو كښې امام بخاري توليو متفرد دى ()

او اوه احادیتو کښې امام بحارې پښټه متمرد دی ۱ ؟ حضرت زبیر گانځ د جمل په واقعه کښې د حضرت عانشې څڅخا د طرفه شریك شوې وو . لیکن حضرت عُلی تانځ هغوى ته یو حدیث یاد کړو . چه په دې باندې هغوى هلته واپس شولد په لاره کښې عمروبن جرموز نومې بدبخت او دهغې ملګرو حضرت زبیر تانځ شهید کړلا یدا د

سن ۳۲ هجري واقعه ده 🖒

دقتَّل نەپسَ ابن جرموز پەدې خيال حضرت على ﷺ تەراغلو چەھغوى بەددې كارنامې نە خوشالەشى. ليكن حضرت على ﷺ اوفرمائيل ليدهلقاتلاللىيدالنارى^م

ددې نه پس ابن جرموز ته سکون ملاو نه شو. تردې چه دحضرت عبدالله بن الزبير تاڅخ په دور خلافت کښې دې دهغوى محور نر مصعب بن الزبير ته راغلو او دخپل خان محوفتارى يي پيش کړل او وې وئيل چه ما نه قصاص واخله، مصعب حضرت عبدالله بن الزبير ته اوليکل. هغوی ځواب ورکړو چه زه د بنوتميم يو اعرابي نه د زبير قصاص څنګه واخلم؟هرموز نه بلکه د

هغوی دڅپلو د تسمو برابرهم هغه نه ګنړم، دا فورا پريګده ن

نو دې پريخودې شو ، دې د هلته نه يو اوچت محل ته لاړو اوخود کشي يي او کړه ونيلې شي. چه هغه په دې قتل باندې ډيرپريشان وو ، ولي چه هغه ته به ويرونکي خوبونه راتلل ژځ حضرت زيږ د دند کر په ناملانو ده ايت کړي . او دهغې د دو او ترک کې د پروند و در او او

حضرت زبیر دنبی کریم گی نه روایت کوی، او دهغوی نه روایت کوننگو کبنی حضرت عبدائه بن الزبیر، مالک بن اوس بن الحدثان، عبدالله بن عامر، حضرت حسن بصری، مسلم بن جندب، میمون بن مهران، نافع بن حبیربن مطعم، ابو حروالمازنی منظ وغیره دی ث

^{ً)} سير اعلام النبلاء (ج ١ ص ٤٧) وخلاصة الخزرجي (ص ١٢١)_

[†]) عن ابى جروالمازنى قال: شهدت عليا والزبير حين توافقا. فقال له على: يا زبير، انشدك الله اسمعت رسول الله كالله إلى الله على الظرف الله الله الله الله الله على الله على الله على الله الله الله الله الله الله الله على الله ع

⁾ سيراعلام النبلاء (ج ١ ص ٤٤)__

^د) تهذیب الکمال (ج ۹ ص ۳۲۸)_

⁾ سير اعلام النبلاء (ج ١ ص ۶٤)__ () حاله الا متمدر بالكيال (ح ٩ ص

⁽⁾ حواله بالاً. وتهذيب الكمال (ج ٩ ص ٣٢٨و ٣٢٩)_ ام الله مديد الله الكمال (ج ٩ ص ٣٢٨و ٣٢٩)_

اوګورئ تهذیب الکمال (ج ۹ ص ۳۲۰)_

حضرت زبير ناتم په جمادي الاولى يا په رجب ٣٧ هجري کښي شهيد شول ن

وض الله تعالى عنه وارضاه

اسنادی لطائف په دې سند کښې دوه لطائف دی

يو دا چه په دې سند کښې دوه تابعي دي.جامع بن شدادمحاربي او عامربن عبدالله الزبير او دوه صحابيان دي حضرت عبدالله بن الزبير او حضرت زبيربن العوام څانه

دو صحابیان دی عصرت عبد نمه بن تربیر او عصرت ربیربر العوام عهم دا سند اگرچه سداسی دی. یعنی تر نبی کریم گلاپوری شپک واسطی دی لیکن معنی رباعی دی.ولی چه دوه تابعی هم دیوی طبقی کیدلوپه وجه ګویا یو واسطه ده.هم دغه شان دوه صحابه دیوی طبقی کیدلو په وجه یو واسطه ده واله اهلم.

دويمه لطيفه دا ده چه په دې کښې د روايةالابناء من الاباء بغصوص رواية الاب من الجدخصوصيت دي ()

قوله: قال: قلت للزبير: انى لا اسمعك تحدث عرب رسول الله تهيم كما يحدث فلاب وفلان: حضرت زبير ته عرض اوكرو جه نه نازيير ته عرض اوكرو چه زه تاسو ته دنبى كريم تهي نه روايت كونكي نه اوورم، څنگه چه فلان فلان صحابى د نبى كريم تهي نه روايت كونكي نه او ورم، څنگه چه فلان فلان صحابى د نبى كريم تهي نه كثرت سره روايت كوى

د سنن ابن ماجه او مسند احمد په روايت كښې دحضرت عبدالله بن مسعود الله و تصريح هم موجود د لار) يعني څنګه چه حضرت ابن مسعود او فلان فلان حضرات روايت كوى داسې تاسوهم كثرت سره روايت ولى نه كوئ؟

قوله: قال: اما انع لعراف رقه: وي فرمانيل. واؤره زه دنبي 微نه جدا نه وم مطلب دا دي چه د روايت نه بيانولو منشا دا نه ده چه ما ته دنبي كريم 微 په صحبت كنبي كثرت سره اوسيدلو موقع ملاو نشو. ما د نبي 微 نه حديثونه نه دي اوريدلي. بلكه زه خو د نبي 微 ديو ارشاد دخوف د وجي نه احتياطا حديث نه بيانوم او هغه دنبي 微 ارشاد دې

من کنې على فليتېوامقىد لامن النار. معلومه شوه چه حضرت زېير گانځ او د هغوى په شان نور صحابه د احتياط د وجې نه به حديث نه بيانول. هغوى ته دا خيال وو چه چر ته په نقل کښې کمې بيشې اونه شى او کومو حضراتو صحابه کرامو چه حديثونه بيان کړى دى يا خو هغوى ته په خپل ځان باندې وثوق او يقين وو چه څه هم هغوى بيانئ پورا پورا بغير دڅه کمې زياتى نه بيانئ او يا يي

⁾ اوگورئ تهذیب الکمال (ج ۹ ص ۲۲۹). وسیراعلام النبلاء (ج ۱ ص ۶۹)_

⁾ اوگورئ فتح الباری (ج ۱ ص ۲۰۰)_) سنن ابن ماجه. المقدمة باب التغليظ فى تعمد الكذب على رسول الله تقطير (۳۶). ومسند احمد (ج ١ ص ۱۶۵) مسند الزبير بن العوام تفاضح

ځکه بیانولو چه دهغوی عمرونه طویل شول. دهغوی نه سوالات اوکړې شول او هغوی تړ مجبورا د جواب نوبت راغې زاوالله اهلم.

بیا چه حضرت زبیر گاژ دلته اوفرمائیل اماان امافارته د ابن ماجه او مسند احمد په روایت کنبی ددې نه پس متذاسلبتهم مذکور دې (٪دې ظاهری مطلب خو دا جوړیږی چه کله نه ما اسلام راوړي دې د هغی وخت نه کله هم دنبی ته نه خدا شوې نه یم، لیکن دا ظاهری مطلب مقصود نه دې، ولی چه حضرت زبیر گاژ د حبشی طرف ته هجرتونه کړی وو. هم دغه شان کلم چه نبی کریم تا د مکې مکرمي نه هجرت او کړو او مدینې منورې ته تشریف ویوږو نو هغه وخت هم حضرت زبیر گاژ نبی تا سره نه وو لهذا ددې واضح مطلب دا دې چه ما ته په عام احوالوکنبي دنبی کریم تا صحبت نصیب شوې دې، زه دنبی کال نه جدانه یم پاتې شوې () قوله: ولکر. سمعته یقول: مر. کذب علی فلیتبوا مقعن د مر. النار: البته ما د نبی تا نه نوره کړی دې چه یه به باندې دروغ وائي هغه ته پکار دې چه به جه نم کنبی خپله ته کانه جوړه کړی.

دبخاری شریف دا روایت د ایوانولیدهن شعبه د طریق نه مروی دی. چه په دی کښی د من کنب علی سره د متعبدا قید نه دې، هم دا شان دا روایت اسماعیلی د غندر عن شعبه د طریق نه هم نقل کړې دی. چه په هغي کښي دا قید نه دې د)

نیز زَبیِّرَ بَن بَکار پِه خپلَ (کتاب النسب، کبنی خپل طریق سره چه کوم روایت نقل کړې دې په هغی کښی هم دا قید موجود نه دېژه هم دا شان امام دارمی گیتی هم یو دوه طریقو سره دا روایت نقل کړې دې، چه دهغې الفاظ دا دی منحدث عثی کنها په دې کښې هم د تعبد قید موجود نه دې ن

هرکله چې ددې رواياتو په مقابله کښې ابن ماجه د غندرعن شعبة د طريق نه روايت نقل کړې دې. چه په هغې کښې د متعبدا اضافه هم شتبځ نيز اسماعيلي د معادعن شعبة د طريق نه حديث ذکر کړې دې، په هغې کښې هم دا قيد موجود دې ژ

^{&#}x27;) فتع الباري (ج ١ ص ٢٠١)_

[&]quot;) مسند أحمد(ج ١ ص ١٤٥). وسنن ابن ماجه. المقدمة. باب التغليظ في تعمد الكذب على رسول الله * الله الله (٣٤)_

رًا فَتَعَ البَّارِي (ج ١ ص ٢٠٠).وعدة القاري (ج ٢ ص ١٥١)_

^{ً)} فتح الباري (ج ۱ ص ۲۰۰)_ لم حداله مالا)

^{&#}x27; سنّن الدارش (ج ۱ ص ۸۸) المقدمة. باب اتقاء الحديث عن النبي ﷺ والتثبت فيه. رقم (٣٣٣)_ ') سنن ابن ماجه المقدمة. باب التغليظ في تعمد الكذب على رسول الله ﷺ رقم (٣۶)_

مُ فتع الباري(ج ١ ص ٢٠١)__

حاصل دا دې چه په اکثر طرق او رواياتو کښې د تعمد قيد نشته. او په بعضې طرق کښې دا

ا په مناب د مداقید لازمی دي. يا دا چه کنه عام دې که عمدا وي يا عمدا نه وي؟ کنه کښې د ميداقيد لازمي دي. يا دا چه کنه عام دې که عمدا وي يا عمدا نه وي؟

صحيح او مختار قول د اهل سنت دې چه كذب: الاغبار بالشيخ على علاف ماهومليه سوام كان مدا او خلاف ماه ومليه سوام كان مدا او خلاق د دې روايت به اكثر طرق كښې د حيدا اضافه نشته ن دديث شريف اطلاق خو عامد اوخاطي او ساهي او ناسي تولو ته شامل دې، البته په دې

باندي اجماع ده چه دعامد نه علاوه باقی خلقو باندې ګناه نشته ن) او د ال داکې د حم که د خطا له نسان په حالت کند کند

دلته سوال پیدا کیږی چه که د خطا آو نسیان په حالت کښې ګناه نه وی نوبیا حضرت زبیر څنځ ته د مذکوره وعیدخوف ولې وو؟

ددې جواب دا دې چه اصل کښې هغوی ته د اکثارفي الرواية نه خوف محسوسيدو چه چرته هغوى لاشعورى توګه باندې په غلطئ کښې واقع نشى.اګرچه مخطئ ګناه ګار نه وى ليکن چونکه اکثار مظنه خطا ده.ځکه به هغې داکثار د وجې نه ګناه ګار کيدې شي اوکله چه يو ثقه کس خطا غلط روايت بيان کي نودهغې په نقل باندې د وثوق دوجې نه به خلق هميشه هميشه د پاره به په هغې باندې به عمل کوي.نوهغه ثقه کس دداسې عمل سبب به اوګرځي کوچدد شارع نه ثابت نوي

لهذا کوم سری ته چه داکتار د وجې نه د وقوع فی الخطا اندیشه وی نو په داسې کس باندې د تعمد اکثارپه صورت کښې اطمینان نشی کیدې.هم دغه وجې نه حضرت زبیر څکتو او بعضي نورو حضراتو صحابه کرامو څکک د کثار نه احتراز اوکړو رکوالله تعالی اعلم

قوله: <mark>فلیتبوا مقعی۵ مرے النــار:</mark> نو هغه ته پکار دی چه خپله ټهکانه دې په جهنم کښې حد د کې

بوره سوی. دا صیغه اگرچه د امر ده خو ددې معنی د خبر ده، ګویا نبی کریم ﷺ دا فرمانی چه کوم کس ماطرف ته دروغه خبره منسوب کړی الله تعالی به دهغه ته کانه جهنم راګرخوی هم دغه شان ددې معنی امکان هم شته چه څنګه دې بالقصد د کذب ارتکاب کړې دې نو ددې نتیجه دا دې چه بالقصد خپل خان دپاره ټه کانه هم تلاش کړی نیز په معنی د دعا هم مراد کیدې شی، ګویا نبی کریم ﷺ ددې دپاره بدد عافرمانی چه چا د کذب علی النبی ﷺ دفعل شنیع ارتکاب او کړو نو الله تعالی به هغه ته په جهنم کښې ټه کانه

ورکوی ن

^۱) اوګورئ فتع الباری(ج ۱ ص ۲۰۱)_

^{ً)} فتح الباري (ج ١ ص ٢٠١). وعمدة القارى (ج ٢ ص ١٥٢)_

^{ً)} حواله جات بالا)_

⁾ اوگورئ فتح الباری (ج ۱ ص ۲۰۱). وعمدة القاری (ج ۲ ص ۱۵۱)_

رجال العديث

- ابو معمو دوى ابومعمر عبدالله بن عمروبن ابى الحجاج منقرى بصرى دى.ددوى حالات په هم كتاب العلم كنبى د پاپ قول النبى ﷺ: اللهم عليه الكتاب لاتدې تير شول ()
- عبدالوارث دوى أبو عبيده عبدالوارث بن سعيد بن ذكوان تميمى عنبرى تنورى بصرى بين بين المسلم الكتاب لاثدى تير بين بين المسلم كالمسلم كالمسلم كالمسلم كالمسلم الكتاب لاثدى تير شول رئى
 شول رئى
- عبدالعزیز دوی عبدالعزیزبن صهیب بنانی بصری گیشه دې ددوی مختصر حالات په کتاب الایان، پاپعه الرسول کالل من الایان لاندې تیر شول ()

قوله: انه لیمنعنی آن احدثکم حدیثا کثیرا آن النبی نظیم قال: من تعمید علی کزرا فلیتبوا مقعده من النار: ره جه تاسو ته ډیر حدیثونه نه بیانوم په دې سلسله کښی ما لره مانع دا دې چه نبی کریم نظار اشاد اوفرمائیل چه کوم کس ما باندې قصدا درغ اووانی هغه د خپله تهکانه په جهنم کښې جوړه کړی

انه کښي ضمير شان دي.

پېتام دوه مفعوله غواړی، ددې يو مفعول خوپه ليېنعنې کښې ضميرمتکلم دې او دويم مفعول ان احديثکم حديثاکثيرا دې، بيا رحديثا چونکه جنس دې ځکه ددې صفت رکثيراي را وړل صحيح دي. او دا دراحد تکمې مفعول مطلق دي. مخکښې ران النبي پنه قال الخې د رصنع مفاعل دي. ن

⁾ کشف الباری (ج ۳ ص ۳۰۹)__) کشف الباری (ج ۳ ص ۳۰۹)__

⁾ كشف الباري (ج ٢ ص ١٢)_

ئی کشف الباری (ج ۲ ص ٤)_) اوګورئ عمدة الفاری (ج ۲ ص ۱۵۲)_

دحضرت انس 始增 ارشاد مطلب واضع دي.هغه دا چه زه کثرت سره احادیث بیانولو نه ځکه اجتناب کوم چه نبی کریم 始 وعیدارشاد فرمائیلی دي.نو د کذب علی النبی 光 وعید د ویري نه زه کثرت سره احادیث نه بیانوم

ویړې داوه عرص د کایک کې په کوم. دی نه معلومیږی چه کذب مطلقا د خلاف واقعه خبرې ته وانیلې شی.نیز دا خو یقینی خبره ده چه صحابه کرام د نبی کریم ۱۲ طرف ته څه غلطه خبره منسوبولې نشی. اوس چه هغوی د کذب علی النبی ۱۲ نه نه ویریدل او دکوم ویړې د وجې نه به هغوی کثرت سره احادیث نه بیانول هغه صرف ددې وجې نه چه دهغوی په نزد کذب خلاف واقعه خبرې ته وانی. که عمدا

اوكړې شي يا سهوا والله اعلم.

یو اشکال او دهغې جواب دلته حضرت انس ناشخ فرمانی چه زه زیات حدیثونه نه بیانوم ولې چه ما ته دهغې وعید ویره ده. او دحضرت انس ناشخ شمار په مکثرینو صحابو کښې دې ن ددې جواب دا دې چه په حقیقت کښې حضرت انس ناشخ شروع کښې به زیات حدیثونه نه بیانول. لیکن هغوی له الله تعالی لوئي عمر ورکړې وو. خلقو دهغوی نه تپوسونه اوکړل. ځکه هغوي لره د کتمان ګنجانش نه وو. ځکه دې نه پس د سوالا تو مطابق هغوی حدیثونه

بیان دړلور) داهم ممکن دې چه هغوی څه بیان کړل هغه د هغه احادیثو په مقابله کښې څه چه هغوی دنبی کړیم نځښ نه اوریدلی وو ډیر قلیل وی، که د ټولو روایت به یې بیان کړې وې نودهغوی د روایت کړی احادیثوتعداد د موجوده روایاتو په مقابله کښې ډیر زیات وو رک والله سهحانه وتعالی اعلم

١٠٠١عَذَّ ثَنَا مَكِّى بُنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بُنُ أَبِى عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةً أَ قَالَ سَمِعْتُ النَّبِي صلى الله عليه وسلم- يَقُولُ «مَنْ يَقُلُ عَلَى مَا لَمُ أَقُلُ فَلَيْتَبَوَّأُ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّالِ» النَّارِ»

 ⁾ د مکثرینو صحابه نه دعلما، اصول حدیث په نزد هغه حضرات مراد دی چه دهغوی روایتونه د یوز نه متجاوز وی. د هغوی ترتیب او دحدیثونو تعداد درج ذیل دی (۱) حضرت ابوهریرة [۲۷۵] (۱) حضرت عبدالله بن عمر [۲۶۳] (۳) حضرت انس بن مالک [۱۲۸۶] (۱) حضرت عائشه صدیقه (۲۱۰] (۵) حضرت عبدالله بن عباس [۱۶۶۰] (۶) حضرت جابر بن عبدالله [۱۵۶۰] (۷) حضرت ابو سعید خدری آثار [۱۵۴] (۱۷) د فتح المغیث للعراقی (ص ۳۵۰)، وفتح المغیث للسخاوی (ج ۴ ص ۲۰)، وفتح المغیث للسخاوی (ج ۴ ص ۲۰)، وظفرالامانی (ص ۵۴۳).

رُّ) فتع الباري (ج ۱ ص ۲۰۱)_

^{ً)} فتح البارى (ج ١ ص ٢٠١)_ *) قوله: عن سلمة هو ابن الاكرع. والعديث لم يخرجه احد من اصحاب الاصول الستة سوى البخارى كلظم *

رجال العديث

 مكل بن ابواهيم، دوى مشهور امام حديث مكى بن ابراهيم بن تميمى حنظلى بلخى يُمينه دى، ددوى حالات هم په كتاب العلم كښى د پاپ من اجاب الفتيا باشارة اليدوالواس لاندې تير شول ن/

و یزید بن ابی عبید دوی مشهور تابعی بزرگ د حضرت سلمه بن الاکوع نام مولی ابو خاند بزید بن ابی عبید اسلمی حجازی مین د

ر مستم بن روایت در رویت بری ددوی نه روایت کونکو کښی بکیربن الاشج. یحی بن سعید القطان حاتم بن اسماعیل. مغیره بن عبدالرحمن مخزومی مکی بن ابراهیم او ابوعاصم النبیل نیخ وغیره دی ری

. ابن سعد مُنْ الله فرمائي (وكان لَقَةَ كثيرالحديث (

امام ابو داؤد مُنظه فرمائي (تقةير)

امام يحى بن معين مُرين فرمائي (تقة)

امام عجلي ميلي فرمائي رحجازي تابعي ثقة ن

حافظ ذهبي مُشارِ فرماني (من بقايا التابعين الثقات x)

حافظ ابن حَجِر مُنِينَةً فرماني (كَقَلَى)

حافظ ذهبی وَمُنْهُ فرمائی (وحدیثه من عوالی الهغاری الثلاثیات، (') په ۱۴۷ هجری کښی دهغوی انتقال اوشو. (') رحیه الله تعالی رحیه واسعة

کشف الباری (ج ۳ ص ۱۶)_

ً) اوګورئ تهذیب الکمال (ج ۳۲ ص ۲۰۶)_

") دشيوخ او تلامذؤ تفصيل دپاره اوګورئ تهذيب الکسال (ج ٣٢ ص ٢٠٠)، وتهذيب التهذيب (ج ١١ ص ٣٤٩)_

أ) تهذيب التهذيب (ج ١١ ص ٣٤٩)_

مُ تهذيب الكمال (ج ٣٢ ص ٢٠۶). و سير اعلام النبلاء (ج ۶ ص ٢٠٠)_

مُ تهذیب التهذیب (ج ۱۱ ص ۳٤۹)_ ۷ سند سند

^۷) حواله بالا)_ ^۸) سیر اعلام النبلاء (ج ۶ ص ۲۰۶)_

°) تقریب التهذیب (ص ۶۰۳) رقم (۷۷۵٤)_

ا) سير اعلام النبلاء (ج ۶ ص ۲۰۶)_

") سير اعلام النبلاء (ج ۶ ص ۲۰۶)_

<u> صعفوت سلمه بن الاكوع ظائمًا</u> دوى مشهور صحابي حضرت سلمه بن الاكوع اسلمي مدني 📆 دی. ددوی د پلار په نوم کښې نور هم ډیر اقوال دی. او ددوی نیکه داکوع نوم سنان بن عبدالله بن قشير دي نُ

حضرت سلمه ثالثًا دنبي كريم على نه علاوه دحضرت ابوبكر ، حضرت عمر .حضرت عثمان او دحضرت طلحة بن عبيدالله تأكأن ندروايت كوى

دووي نه روايت كونكو كښي اياس بن سلمة بن الأكوع،بريده بن سفيان. الحسن بن محمد بن الحنفيه.زيدبن اسلم.سفيان بن فروه.عبدالرحمن بن عبدالله بن كعب بن مالك. عطاء مولى السائب بن يزيد ، ابوسلمه بن عبدالرحمن بن عوف اويزيد بن ابي عبيده 🖼 وغيره دي 🖒 حضرت سلمه المُثَمَّرُ به بيعت الرضوان اغزوه حديبيه،كښي شريك وو.هغه ورځ هغوي دښي كريم ﷺ په لاس مبارك باندي درې ځله بيعت على الموت اوكړو رَيّ

هغوی دیرزیات بهادر وو .په تیراندازی کښی به نی زبردست مهارت لرل.)یو جماعت دنبی کریم علله د اوښانو غلا کولو کوشش اوکړو نو حضرت سلمه بن الاکوع ثلاث تنها دې ټول جماعت ته شکست ورکړو، حالانکه هغوی پیاده وو.په هغه موقع بآندې ښی کریم ﷺ

فرمائیلی وو دهیررجالتناسلمیة٪گیزمونره په پیادو کښې سلمه د ټولو نه بهتر دې حضرت سلمة بن الاکوع گلتی دنبی کریم گلتی نه په کلي کښې داوسیدو اجازت مخکښې نه

اخستى وو () چنانچە دحضرت عثمان ئاڭ دشهادت نەپس فتنونه دىچكىدو پە غرض هغوى دمديني منوري نه په رېده کښي سکونت اختيار کړې وو.هم هلته هغوي نکاح اوکړه. اولاد

يي اوشول او د انتقال نه څه موده مخکښې مدينې منورې ته واپس راغلل ئ

وَحَضَرَتَ سَلَمَةَ بِنِ الْأَكُوعِ ثُلِيْقٌ نَهُ تَقْرِيبًا أَوْهُ أَوْيَا وَ٧٧٪ خَدِيثُونَهُ مُرُوي دَى بِه هغوى كنبي متفق عليه شپارلس دي. امام بخاري گڻڙ په پنځو حديثونو کښې او امام مسلم گڻڙ په نهه حديثونو كښې متفرد دي 🖒

⁾ اوگورئ تهذیب الکمال (ج ۱۱ ص ۳۰۱). و تهذیب الاسماء واللغات (ج ۱ ص ۲۲۹)_) دشیوخ او تلامذو تفصیل دپاره او گورئ تهذیب الکمال (ج ۱۱ ص ۳۰۲)_

⁾ أوكوري تهذيب الكمال (ج ١١ ص ١٠٦)_) كان شجاعا، راميا، محسنا خيرا فاضلا. تهذيب الاسماء واللغات (ج ١ ص ٢٢٩)_

د واقعي تفصيل دپاره اوګورئ صحيح مسلم. کتاب الجهاد. باب غزوة ذي فرد وغيرها.رقم (45٧٨) عن سلمة بن الاكوع أنه دخل على العجاج. فقال: ياأبن الاكوع ارتددت على عقبيك. تعربت؟ قال: لا. ولكن رسول الله كُلُّيْلُمُ أذن لي في البدو. صحيح البخاري (ج ٢ ص ١٠٥٠) كتاب الفتن. باب التعرب في الفتنة.رقم (٧٠٨٧). وانظر صحيح مسلم. كتاب المفازى.باب تحريم رجوع المهاجر الى استيطان وطنه. رقم (٤٨٢٥). ومسند احمد (ج ٤ ص ٤٧و ٥٤)_

إ) اوكورئ صعيح البخاري (ج ٢ ص ١٠٥٠). كتاب الفنن باب التعرب في الفتنة ، رقم (٧٠٨٧)_ ^) اوگورئ تهذیب الاسماء واللغات (ج ۱ ص ۲۲۹). وخلاصة الخزرجي (ص ۱۹۸)_

دحضرت سلمة بن الاكوع المنتخال به ۲۴ هجرى يا په ۷۴ هجرى كښې اوشو ، بعض حضراتو د حضرت معاویه المنتخ د دور خلافت په آخر كښې د هغوى انتقال ښودلي دې () رض اللمعندوارضا ، فانده واضحه دې وي چه دا حديث دامام بخارى پينځ د ټولو نه اول ثلاثى حديث دې دثلا ثياتو بحث په مقدمه كښې تير شو . چه دهغې خلاصه دا ده چه دامام بخارى پينځ ټولون عالى سند ثلاثى يعنى درې واسطوسره نبى كريم ناه شاته رسيدلو والاحديث دې

په صحیح بخاری کښی د ثلاثیاتو کل تعداد په لحاظ د سند سره دوه ویشت دی او په لحاظ د روایت سره اوولس دی. ولی چه پنځه روایات مکور دی

دې دوه ویشتو کښې یولس روایات دامام بحاری تیکه عظیم شیخ مکی بن ابراهیم نه مروی دی نم شپږ حدیثونه دامام ابوعاصم ضحاک بن مخلدالنبیل کیک نه مروی دی د) او دا دواز، حضرات دامام ابوحنیفه کیک خصوصی شاګردان دی ر) درې روایتونه دمحمدبن عبداند انصاری کیکا نه مروی دی ر)

^{ً)} اوګورئ الاصابة (ج ۲ ص ۶۷)_

⁾ اوگورئ صعيح البخارى (ج ۱ ص ۲۱). كتاب العلم، باب اثم من كذب على النبي تركيخًا، رقم (۱۰۹)، و (ج ۱ ص ۷۱) كتاب الصلاة، باب قدر كم ينبغى ان يكون بين البصلى والسترة؟ رقم (۱۹۹۷). و (ج ۱ ص ۷۷) كتاب الصلاة، باب اقتدر كم ينبغى ان يكون بين البصلى والسترة؟ رقم (۱۹۹۷). و (ج ۱ ص ۷۹) كتاب مواقيت الصلاة، باب وقت المغرب، رقم (۱۹۷۵)، و (ج ۱ ص ۲۶۸)، و (ج ۱ ص ۴۵۵)، و (ج ۱ ص ۴۵۵)، كتاب المغرب، رقم (۱۹۲۵). و (ج ۱ ص ۴۵۵) كتاب الحوالات، باب ان احال دين الميت على رجل جاز، رقم (۲۲۸۹). و (ج ۱ ص ۴۵۵) كتاب الجهاد والسير، باب البيعة في الحرب ان لا ينفروا، وقال بعضهم: على الموت، رقم (۲۹۶۰). و (ج ۲ ص ۲۷۸) كتاب الذبائع ص ۲۷۷) و (ج ۲ ص ۱۹۷۵) كتاب الذبائع والصيد، باب أنية المجوس والميتة، رقم (۱۹۵۷). و (ج ۲ ص ۱۹۲۵) كتاب الذبائع والصيد، باب أنية المجوس والميتة، رقم (۱۹۵۷). و (ج ۲ ص ۱۱۰۷) كتاب الدبات، باب اذا قتل والصيد، باب أنية المجوس والميتة، رقم (۱۹۵۷). و رج ۲ ص ۱۱۰ (۱۹ ۱۸ کتاب الدبات، باب اذا قتل نفسه خطا فلا دية له رقم (۱۹۸۹). واضح شمي چه دا يولس واړه روايتونه هم يوسند يعني مكي بن ايراهيم عن يزيد بن ابي عبيد عن سلمة بن الاكوع دطريق نه مروى دى.)

[&]quot;) او تورئ صحيح البخارى (ج۱ ص ۲۵۷)، كتاب الصوم، باب اذا نوى بالنهار صوما. رقم (۱۹۲۴). و (ج۱ ص ۳۰۶) كتاب الكفالة، باب من تكفل عن مبت دينا فليس له أن يرجع، رقم (۱۹۲۵). و (ج۱ ص ۳۲۶) كتاب المظالم والغضب، باب هل تكسرالدنان التى فيهاالخبر......... رقم (۱۹۲۷)، و (ج۲ ص ۴۲۸) كتاب المغازى، باب بعث النبى ترايش اسامة بن زيد الى العرقات من جهينة، رقم (۱۹۷۳)، و (ج۲ ص ۳۸) كتاب الاضاحى، باب ما يؤكل من لحوم الاضاحى وما ينزود منها، رقم (۱۹۷۵)، و (ج۲ ص ۱۰۷ كتاب الاحكام، باب من بابع مرتين، رقم (۱۹۲۷)، واضحه ده چه دا شهر و اړه روايتونه هم د يو سند يعنى ابوعاصم الضحاک بن مخلد عن يزيد بن ابى عبيد عن سلمة بن الاكرع دطريق نه مروى دى.)_
الضحاک بن مخلد عن يزيد بن ابى عبيد عن سلمة بن الاكرع دطريق نه مروى دى.)_

نم) اوگوری صحیح البخاری (ج۱ ص۳۷۳) کتاب الصلح باب الصلح فی الدیدوقم (۲۷۰۳). و (ج۲ ص۴۶۶) کتاب التفسیر، سورة البقرة. باب ایاابهاالذین آمنوا کتب علیکم القصاص فی القتلی الحر بالحر_ الی قوله_ عذاب الیم)، رفم (۴۹۹ £)، و (ج۲ ص۲۰۸ کتاب الدیات... [بقیه حاشیه به راروانه صفحه...

او دوی د امام زفر او امام ابویوسف شاگرد دی ن یو روایت د عصام بن خالدحمصی کلیلی نه ز کو یو روایت د خلاد بن یحی کوفی کلیلی نه مروی دی ن

ا کریا دامام بخاری دوه ویش قُلا ثی روایاتو کښې شل روایات دحنفی مشایخو نه مروی دی. او آخیرنئ دوه حضرات چا په حنفی علماء کښې نه دې شمار کړې دامام ابو حنیفه کُشید اکثروبیشتر روایات ثلاثی دی.او هغوی کښې ثنانی روایات هم په

داَمام اَبُو حنیفه ﷺ اکثروبیشتر روایات ثُلاً ثی دنی،او هَغْوَی کښی ثنائی روایات هم په کثرت سره شته بلکه بعض وحدانیات هم شته پُهم دغه حیثیت نه بعضی حضراتو فقه حنفی وحدانی مرخولی دی.

لیکن تحقیقی خبره دا ده چه امام ابو حنیفه گید رؤیة خو تابعی دی. په روایة تابعی کیدلو کښې اختلاف دې ۱۵مام ابومعشر گید د امام ابوحنیفه گید چه کوم وحدانیات جمع کړی دی دهغوی اسانید معلول دی ۱

داماً بخاری ثلا ثیاتر بعض حضراتو داسی اهتمام کړې دې چه دهغوی مستقلا شروحات نی لیکلې دی. صاحب کشف الظنون فرمانی چه ثلا ثیات باندې محمدشاه بن الحاج حسن متوفی ۹۳۹ هجری یو لطیف شرح لیکلی دی.()

هم دغه شان ملا على قارى كِينُو هم حاشيه ليكلي ده ٢٠

مولوي عبدالباسط قنوجي په فارسي کښې شرح ليکلې ده ن

نواب صديق حسن خان بهوپالي په اردو کښي شرح تحريرکړي ده 🖒

بقيه حاشيه د تيرمخ] باب: (السن بالسن)، رقم (۴۸۹٤). واضح شي چه دا درې واړه حديثونه محمدبن عبدالله الاتصاري عن حميد عن انس د طريق نه مروى دى.

) او گورئ سير آعلام النبلاء (ج ٩ ص ٥٣٧)________ الما الم النبلاء (ج ٩ ص ٥٣٧)_

) اوگوری صحیح البخاری (ج۱ ص۵۰۲) کتاب السناقب. باب صفة النبی تُرَاثِينًا، رقم (۳۵۴) دا روایت عصام بن خالد عن حریز بن عثمان عن عبدالله بن بسر گرائز دطریق نه مروی دې)_

) اوگورئ صحیح البخاری (ج۲ ص ۲۱۰۶) کتا پالتوحید باب (وکان عرشه علی الماء). رقم (۷۲۲۱). دا روایت خلاد ابن یحی عن عیسی بن طهمان عن انس بن مالک (آلائق دطریق نه مروی دې)_

أو الوكورئ مقدمة لامع الدراري (ج١ ص ١٩١) الفائدة الخامسة في خصائص الكتاب غير التراجم)_

کم اوګورئ ترجمان السنة (ج۱ ص۲۲۵)_

 $\sqrt{}$ أومحورئ فتح المغيث (ج \sqrt{r} ص r 3)، والرسالة المستطرفة (ص r)

ً) كشف الظنون (ج١ ص٥٢٢)_

) دهغي نوم تعليقات القاري على ثلاثيات البخاري دي. اوگورئ البضاعة النزجاة (ص ٨٨). ومقدمة لإمع الدراري (ج١ ص ٢٤٠)_

) مقدمة لامع الدراري (ج١ ص ٢٤٠)_

ً') حواله بالا)__

قوله: قال: سمعت النبى ناتی بقول: من يقل على ما لحراقل فليتبوا مقعل م من النار: حضرت سلمة بن الاكوع ناتی فرمانی چه ما نبی كريم ناتی به دا فرمانيلو و اوريدو چه كوم كس به ما باندي هغه خبره اولگوی چه ما نوی كړې هغه د خپله ته كاه به دوزخ كښې

(من يقل) په اصل کښې (من يقول) وو ، شرطيت د وجې نه ريقل) شو ر

دمانم اقل کښي دمار شینای په معنی دې او د رام اقل نه پس رشینای طرف ته ګرخیدو والاضمیر محذوف دې . ګویا پورا جمله به داسې وی **رمن یقل علی شینالم اقله.....**)

دلته اګرچه صرف د (هول ذکر دې دفعل ذکر نه دې لیکن (هعل) هم په (هول) کښې داخل دې ولې چه د ممانعت په علت کښې دوانړه شریک دی . یعنی چه دکوم علت په وجه د قول نسبت ممنوع او حرام دې . بییا وړاندې چه دحضرت ممنوع او حرام دې . بییا وړاندې چه دحضرت زبیراود حضرت انس نځا حدیثونه تیرشول په هغوی کښې عموم ډې . ولې چه په هغوی کښې زبیراود حضرت انس نځا حدیثونه تیرشول په هغوی کښې عموم ډې د قول سره فعل هم داخل دمن کښې علی یاد رمن تعبدعل کنهای الفاظ دی . چه په هغوی کښې د قول سره فعل هم داخل دې ، هم دغه شان دحدیث راروان دې په هغوی کښې هم دغه قسم عمومی الفاظ دی ، لهذا که یو کار ښی کریم نځا نوی کړې نو دهغې په باره کښې (هعل دسول الله نځا و وئیل هم داسې ګناه او مستوجب وعید دې څنګه چه هغه په باره کښې (هعل دسول الله نځا و وئیل هم داسې ګناه او مستوجب وعید دې خنګه چه هغه

خبره په باره کښې هال د سول الله کې وئيل چه هغوی کا ارشاد نوی فرمائيلي رگ

ایا روایت بالمعنّی صحیح دی؟ ددې حدیث دظاهری الفاظو نه بعضې حضراتو د روایت بالمعنی ناجائز کیدو باندې استدلال کړې دې. څنګه چه ظاهر دي

او دمجوزینو وینا دا ده چه ددې نه د نبی کریم گه په ارشآداتو کښې داسې الفاظ راؤړلو ممانعت دې چه حکم بدلوی.او څومره پورې چه د روایت بالفظ تعلق دې نو ددې په غوره کیدو کښې دچا کلام نه دې ر)واله اعلم

ا ﴿ ١ اَ كَنْ تَمْنَا مُوسَى قَالَ حَدَّتُمَا أَبُو عَوَانَةً عَنْ أَبِي حَصِينِ عَنْ أَبِي صَالِيمِ عَنْ أَبِي هُرُيُّرَةً (عَنِ النَّبِي صلى الله عليه وسلم - قَالَ «تَنْتَمُوْ الْمِانْمِي وَلاَ تَكْتَنُوا إِكْنَيْتِي، وَمَنْ

⁾ فتع الباري (ج١ ص٢٠٢)_

⁾ حواله بالا)__

["]) حواله بالا)_

اً) حواله بالا)__ د م

ن) قوله: عن ابى هريرة (التشريخ: الحديث.اخرجه البخارى ايضا فى صحيحه (ج١ ص٥٠١) كتاب المناقب.
 باب كنية النبى التفريخ رقم (٣٥٣٩). و(ج٢ ص ٩١٤) كتاب الادب. باب قول النبى التفريخ.
 بنكنية النبى التفريخ رقم (٤١٨٨). و(ج٢ ص ٩١٥) كتاب الادب. باب من سعي....[بقيه حاشيه به راروانه صفحه..

رَآنِي فِي الْمَنْـَامِ فَقَدْ رَآنِي، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لاَ يَتَمَثَّلُ فِي صُورَتِي، وَمَنْ كَذَّبَ عَلَى مُتَعَبِّدُ الْلِيَتِبَوَّا مُقْعَدَهُ مِنَ النَّادِ» (١٩٨٣-١

رجال العديث

- ن موسى دوى ابوسلمه موسى بن اسماعيل تبوذكى بصرى مُنتُكُ دى،ددوى مختصر حالات په دېدهالوجى، كنبي خلورم حديث د لاندې دى ١٠ او لږ تفصيل سره په كتاب العلم بهاپ من اجاب الفتيابا العلم بهاپ من اجاب الفتيابا القاراس د لاندې تيرشوي دى ١٠ ،
 - ا ابوعوانه دا ابوعوانه وضاح بن عبدالله دې.د دوي حالات د په الوس د څلوره نمبر حديث الادې تير شوې دي. ۲ الادې تير شوې دي. ۲ ا
 - @ ا**بوحصين** دا ابوحصين بقتام العام المهملة وكس الصاد المهملة عشمان بن عاصم بن حصين _ بالتمقير اسدكوفي رُونُونُدي، بعضي حضراتو د نيكه نوم يي دحصين به خالي زيد ابن كثير خودلي دي. أ

دوی په صحّابه گرامو کښې د حضرت جابر بن سمره، عبدالله بن زبیر ، عبدالله بن عباس. حضرت انس. زید بن ارقم او د حضرت ابوسعیدخدری گلآزنه روایت کوی ³ وا**نه تعال** املم.

بقيه حاشيه د تيرمخ] باسماء الانبياء، رقم (٤٩٧٧)، و (ج٢ ص٢٠١٥) كتاب التعبير، باب من رأى "سي من تشخيخ في المنام. رقم (٩٩٩٣)، واخرجه صلم في المقدمة، باب تغليظ الكذب على رحول الله من أخرج أرفه (٤٤)، و في كتاب الاداب، باب النهي عن التكني بابي القاسم وبيان ما يستحب من الاساء، رقم (١٩٩٥)، وأبوداؤد في منته، في كتاب الادب، باب في الرجل يتكني بابي القاسم، رقم (١٩٩٤)، وابن ماجه في سنه، في المناب الادب، باب رفيه المنابط في تعدد الكذب على رسول الله تؤخير رقم (٤٩٥)، وفي كتاب الادب، باب الجمع بين المم النبي من المنابع، رقم (٣٧٣)، وفي كتاب تعبير الرؤيا، باب رؤية السي مؤجيم في السام، رقم (٣٠٠)،

) کشف الباری (ج اص۱۹۳ و ۲۳۱)

) كشف الباري (٣ ٣٠٤) -

) كشف الباري (١ ٤٣٤)-

اً) تهذيب الكمال(٢٠١٩) -[2] قال الحافظ بُوَشِيرٌ في تهذيب التهذيب(٨ ١٢٨):وذكره ابن حبان في النقات في انباع التابعين فروايته

) کان العالق پوروز کی تهدیب الهدیبار/ ۱۸۰۸) بوطره بن کیان که کست کی کیار عند الصحابة عند این حیان مرصلة، وهو الذی یظهرلی " در الصحابة عند این حیان مرصلة

قال الدكتوربشارعواد معروف مُتَاهَدُ في تعليقاً نه على تهذيب الكمال (ج ١٩ص ٤٠٨) -

"بدا ذالك لابن حجر لان ابن حيان ذكره في طبقة اتباع التابعين زعم أن ابن حيان لم يتكلم فيه بما يشير ألى ذالك.و لم نقف على اي قول للمتقدمين ينفي روايت عن الصحابة الاقول يحى ابن معين أنه لم يلق ابن عباس. فالرجل ثقة أن شاء أنه وروايته مقبولة ولايصح أن ينفي ملاقاته للصحابة لكون أبن حيان ذكره في طبقة اتباع التابعين.

البته امام يحي ابن معين مُركز د دوئ د حضرت عباس تأثينه د سماع انكار كړي دي (د دې نه علاوه د اسود بن هلال ابوعبد الرحمن سلمي ، ابووائل ، سويد بن غفله ، سعد بن عبيده.سعيد بن جبير ،عامرشعبي.ابوالصالح السمان او د عميربن سعد كيني نه هم روايت

كوى ـ ددوى نه روايت كونكوكښي امام شعبه. سفيان ثوري سفيان ابن عيينه قيس بن ربيع. مالک بن مغول، مسعربن كدّام.ابوالعوانه او ابوالاحوصي الم المامل دي م

عبد الرحمن بن مهدى يُولِي فرمائي لم يكن بالكوفة اثبت من ادبع: منصور، ابو صين، وسلبه بن

کهیل، وحبروین مرة (۲)

بل خائى فرمائى لاترى حافظا يختلف على الى حدين رئى

امام احمدبن حنبل رئيلة نهچه كله د دوى باره كښې تپوس او كړې شو نو هغوى يې تعريف

امام عجلي مُنْ الله فرماني ابوحمين كان شيخاعاليا وكان صاحب سنة '١'

بل خائى فرمائى ابوالحدين: كولى ثقة وكان عثمانيا دجلاصالحا . ٧٠

دغه رنګي بل ځائي د دوي ارشاد دې کان لته ثبتاني الحديث (^،

يعقوب بن عثمان يُرين فرماني حدثنا ابونعيم، قال حدثنا سفيان عن الى حدين اسدى، شريف ثقة ثقة

كن ﴿ امام ابن عبدالبر وَيُنْ فرمائي اجمعوعلى انه لَقة حافظ ﴿ ` `

حافظ ذهبي فرمائي ثقة ثبت ساحب سنة (١٠)

حافظ ابن حجرفرمائي القة ثبت سفي و ربها دلس (۲۰)

) انظر تعليقات تهذيب الكمال (ج ٩ اص ١٠٤) - نقلا عن تاريخ الدوري (٣٩٣١٢) -

) د شيوخو اوتلامذه تفصيل دپاره اوګورئ تهذيب الکمال(ج١٩ص٤٠١.٤٠١)وتهذيب التهذيب (ج٧ص١٢۶)

آی تهذیب الکمال(۱۹/۱۹ ٤).وسیراعلام النبلاء(ج۵ص۱۳) -

) تهذيب الكمال(٤٠٣/١٩)-

دم حواله بالا

ً) تهذيب الكمال (ج١٩ص ٤٠٤)-^۷) حواله بالا

^) حواله بالا

) تهذيب الكمال(ج١٩ص٤٥)-

') تهذيب الكمال(١٢٨/٧)-

") الكاشف(ج/٨)رقم(٣٧٠٨)-

") تقريب التهذيب(٣٨/٤) رقم(٤٨٤٤) قال شيخ محمد عوامة حفظ الله وقول الحافظ في التقريب (٤٩٨٤) ربيها دلس "أماخوذ من كلام للاعمش فيه وقدكان بينهما على امامتهما إبقيه حاشيه په راروانه صفحه كشفالبارى

۲۷ با ۲۸ کښي د دوي انتقال اوشو، ۱

ابوصالح دا مشهورتابعي ابوصالح ذكوان السمان الزيات كين دي، د دوى مختصر حالات ي كتاب الايمان، باب امور الايمان ولاندي تيرشوي دي ١٠

﴿ حَضُوتَ البِوهُويُوهُ ثُمُّاتُمُ وَ حَضَرَتَ البُوهُ رِيرَهُ ثُمُّ تُكَالُّوا الايبان باب امورالايبان ولاندي

نوله: عن النبي كالله قال: تسمو بأسمى ولاتكننوا بكنيتي: حضرت ابوهريره اللهُ د

نبی کریم اللہ نه روایت کوی چی حصور پاک الله اوفرمائیل خما په نوم باندې خپل نوم ایږدی خو خما کنیت مه ږدئ

دباب دروایت شان ورود: د دې روایت شان ورود دا دې چې یوځل حضورپاک د دې بازار كښى وو چې چا په يا اياالقاسمسره آواز اوكړوچې حضورپاك تا پارورته متوجه شو نو هغي كس عَرْضُ اوْكُرُو ۚ چَى مَا تَاسُو تُهُ نَهُ فَلَانْكُى كُسُ تَهُ آوَازٌ كُولُويَهُ دَي بَانْدَي حَضُورِياكُ ﷺ اوفرمائيل سبوباسى ولاتكنوبكنيتن رأ

دحضواکرم ﷺ په نوم مبارک باندې نوم او د هغوی کنیت باندې کنیت ایښودل دې مستله كبيى دعلماؤ مختلف مداهب دى اول مدهب دامام شافعي او داهل ظواهرو دى دا حضرات فرمائي چې هيچا دپاره د ابوالقاسم كنيت ايښودل درست نه دى كه د هغه نوم محمديااحمد وي يانه وي

ددې حضراتو استدلال د حديث پاک د ظاهر نه دې ه

كدويم مذهب دامام مالك اوجمهورو علماؤ دې دوى فرماني چې دابوالقاسم كنيت ایښودل مطلقاجائز دي که د چا نوم محمد او احمد وي يا نه ګوياچه دوي دا حديث دحضور پاک ناپیم ژوندسره خاص ګرځوي او د وفات نه پس يې منسوخ بولي. '،

ددې حضراتو وينا ده چې د زمانه اول نه تر ننه پورې ځلق د ابوالقاسم کنيت ايږدي خو چاهم ددې نه منع نه ده فرمانلي ^۷۰.

بقيه حاشيه د تيرمخ] ما يكون بين المنعاصرين فلا ينبعي اعتماده ولم يدخل الحافظ نفسه في رسالته "مراتب الممدلسين" انظر تعليقاته على الكاشف (٨/٢) رقم (٣٧٠٨)-

⁽⁾ الكاشف٧/٢) رقم(٣٧٠٨) -رحمة الله رحمة واسعة

⁾ كشف الباري (ج ١ ص ٤٥٨)

⁾ كشف الباري (ج ١ص ٤٥٩)-

صعيع البخاري(ج١٢ص٢٨٥)كتاب البيوع باب ما ذكرفي الاسواق رقم ٢١٢٠، و٢١٢١ و إج اص ٢٠٠١) كتاب السّاقب باب كنية النبي مُلَيِّ أَرْقم (٢٥٣٧)-

⁾ شرح النووي لضحيح مسلم(٢٠۶/٢)كتاب الاداب باب النهي عن التكني بابي القاسم وبيان ما يستحب من الاسماء)-

^{ً)} حواله باله

⁾ حواله بالا

اما آ این بخریر گزاری دمانی چه دحضور پاک تا پاخصرت علی گانونه اجازت ورکول او دحضرت علی گانوبیا خپل خوی له ابوالقاسم کنیت اینبودل دی خبری ته اشاره ده چه دنهی روایات په کراهه تنزیهی باندی محمول دی نه چی په حرمت باندی، او دا اهل علمو ته پته ده چه نهی تنزیهی د جوازیوه شعبه ده دی ته به زیات نه زیات خلاف اولی وئیلی شی خو بیا هم اهل علم مشران کله کله د عوامو نه تنګی لری کولو دپاره په کراهة تنزیهی یا خلاف اولی باندې هم عمل کوی اودلته هم دغه رنګی ده.

هغوی دا فرمانی چې د دې خبرې تائیددې نه هم کیږي که چرې دانهی دتحریم دپاره وه نوصحابه کرامو به په دې ضرور منع فرمائیلي وه اودا به یې کنیت ګرخولو نه.نومعلومه شوه چې صحابه کرامو دا په نهی تنزیهی محموله کړې ده(۲

پې څلورم مذهب د بعض سلفو دې چه دابوالقاسم کنيت د هغه چا دپاره منع دې چه د چانوم محمد يا احمد وي او چې دچا نوم دې کښي يو هم نه وي دهغه دپاره دې کنيت کښي هيڅ ګناه نشتهرا

د دې حضراتو استدلال د حضرت جابر گانگومرفوع حدیث دې من تسبی باسی فلایکنی پکنیتی ومن اکتنی پکنیتی فلایتسمی باسمی ز^۴

(پ پنځم مذهب دا دې چې ابوالقاسم کنيت بالکل ممنوع دې که نوم يې محمد وي يا نه وي دغه شان دچا قاسم نوم ايښودل هم منع دی ځکه چې دهغه پلار ته ابوالقاسم اونه ونيلې شي مروان بن حاکم خپل ځوی عبدالملک له اول نوم ابوالقاسم ايښودلې وو خو چې کله داحديث هغوي ته اورسيدلو نو نوم ئې ورته بدل کړو او عبدالملک ئې ورته کيښودو بعض انصار حضرات نه هم منقول دي چې هغوي هم دارنګې کارکړي ووره

^{ً)} فتح البارى (٥٧٣/١٠) كتاب الادب باب قول النبي المُظارِسموباسمي ولاتكنوبكنيتي) ــ ً) شرح النووي لصحيح مسلم(٢٠۶/٢) ـ

^{) (}اللفظ لابی داود)کتاب الادب باب فیمن رأی ان لا یجمع بینهما رقم(۴۹۶۶) وجامع ترمذی.ابواب الادب.باب ماجاء فی کراهیة الجمع بین اسم النبی تاکیر کنیته رقم(۲۸۵۲)۔

²) شرح النووی (ج۲ص۲۰۶) -

شهوم مذهب دا دې چې محمد نوم ایښودل بالکل منع دی دغه شان ابوالقاسم کنیت هم مطلقاً منع دی دغه شان ابوالقاسم کنیت هم

دغه رنګې دحضرت انس اللخانه مرفوع روايت دې تسبونهم محمداتم تلعثونهم ال

كثف البَادي

امام نووي پاک امام مالک او د جمهورو علماؤ مذهب غوره گرخولوسره فرمائی واما اطباق الناس علی فعله مع ان فی البتکنین به والبکنین الائمة الاهلام، واهل الحل والعقد والذین یقتدی بهم فی مهبات الدین نفیه تقیید تقیید البذه مالک فی جواز تامطلقا ویکونون قد فهبومن النامی الاعتصاص بحیاته تاقیل می یعنی مطلقا دا بوالقاسم کنیت اینبودل جائز دی د تولو خلقو به دی اتفاق دی بله دا چی ددی کنیت اینبود و والا نور لونی لونی امامان اهل حل او عقد دی او داسی خلق دی چی د دین به اهم کارونو کنیی د امامان حیثیت لری او دی سره د امام مالک مذهب ته تقویت ملاویگی چه مطلقا جائز دی همدارنگی دا معلومه شوه چی دی تولوحضراتو دا نهی صرف د حضور پاک تاگروند پوری خاص گنری ده واقعاعلم

قوله: ومن رآني في المنام ففدرآني، فأن الشيطان لايتمثل في صورتي: چاچي څه په خوب کښي اوليد م نو په حقيقت کښي يې هم زه اوليد م خکه چې شيطان خما په ۴ کاس دره کارند ميروا

شکل سره، شکل نشی جوړولې دخوب حقیقت: تفسیرمظهري کښي قاضي ثناءالله پاني پتې پښتافرمانی چه د خوب حقیقت دادې چې څه وخت د انسان نفس د خوب یا د بیهوشی دوجې دظاهری بدن نه فارغ شی نو ده ته د خیالي قوت په لار کښې څه تصویرونه ښکاره شی، نو دغې ته خوب وئیلې شی (م

دخوب قسمونه دخوب دری قسمه دی دوه خو پکښي بالکل باطل دی چی دهغی څه حقیقت او اصلیت نشته او بل دریم دخپل ذات اواعتبار سره صحیح او رشتونی دی خوبه دی صحیح قسم کښی هم بعض څه عوارض شامل شي چی هغی سره دا فاسد او بی اعتباره کوی، تفصیل ددی دادی چی انسان خوب کښی کوم مختلف صورتونه او واقعات ګوری کله خو داسی اوشی چه دبیداری په وخت انسان کوم صورتونه ګوری هم هغه په خوب کښی په شکل په نظر راځی او کله داسی هم اوشی چی شیطان څه صورتونه او واقعات دده په دهن کښی ورواچوی کله د خوشالئ او کله د ویرې،خو دا دواړه قسمونه باطل دی چه ددې نه څه حقیقت

⁾ شرح النووى(٢٠۶/٢)وفتح البارى(٥٧٢/١٠) كتاب الادب باب قول النبي مُلَيَّظُ سعوباسعى ولانكنوا بكنيتى)] فتح البارى(٥٧٢/١٠) -

⁾ المطالب العالية بزوائدالمسانيد(٣١/٠٣)كتاب البروالصلة باب باحة التسمى باسماء الانبياء وما جاء في كراهية ذالك رقم(٢٧٩۶) وكشف الاستارعن زوائد البزار(٢١٣١٤)كتاب الادب باب كرامة اسم النبي المنظر قم(١٩٨٧) ومجمع الزوائد(٤٨/٨)كتاب الادب باب ما جاء في اسم النبي المنظر كنيته)-إ كتاب الاذكار مع شرحه الفنوحات الربانية (٤/٤/٤)كتاب الاسماء باب النهي عن الهكني بابي القاسم)-

^د) تفسيرالمظهري(١٣٧/٥)-

شته او نه څه اصلیت او نه ددې څه تعبیر کیدې شي،دې کښې اول قسم ته حدیث النفس

دونم قسم ته تسويل شيطاني ونيلي شي دريم قسم چه صحيح او برحق دې هغه دالله دطرف نه يو قسم الهام دې چه د خپل بنده

دخَبَرداريٰ أو د خوشخبَرَيْ دَپاره كُولي شي،الله تعالى دَخَيِل خَزانه غَيبٌ نَهُ بعض خَيْرُون دهغه په زړه او دماغ کښي واچوي

دطبراني يُو حديث كښي رسول الد تاهفرماني چې خوب يو كلام دې چې په هغې سره دې د خپل رب سره د خبرو كولو شرف حاصلوي ()

ددې تحقیق د صوفیانوکرامو دبیان مطابق داسې دې چې په دنیا کښې څومره څیزونه په وجود کښې راتلو والادي ددې د وجود نه وړاندې يو خاص شکل په عالم مثال کښې موجود وي او په دغه عالم مثال کښکې چه څنګه دجواهرو اود ثابت شوي حقیقتونو صورتونه او شکلونه وي دغه رنګې د معانۍ اود اعراض پکښې هم خاص شکلونه وي.خوب کښې چه كله نفس انسان دظاهري بدن نه فارغ شي نو بعضي وخت ددې تعلق عالم مثال سره اوشي نو هلته كښمي چې د كاننات كم شكلونه دى هغة ده ته په نظر راشكي بيا دا صورتونه دعالم غيب نه ده ته ښکاره شي،خو بعضي وخت په دې کښي هم څه عوارض راشي چې هغې سره په اصل حقيقت كښي څه باطل خيالات هم شامل شي نو ځكه بيا تعبير ويستونكي ته هم تعبير ويستلو كښي مشكلات راځي اوبعضي وخت هغه د ټولوعوارضو نه خالي وي نو دا اصل حقیقت وی خّو په دې کښي بعض خوّلونه د تعبیر محتاجه وی ځکه چې په هغی کښي حقیقت واضح نه وی اوس که په داسې حالت کښې تعبیر غلط شي نو واقعه به مختلفه شى. ځکه به صرف هغه خوبونه الهام من الله او حقيقت ثابته وي چې کوم دالله د طرف نه وي

او په هغي کښې څه عوارض هم شامل نه وي او تعبيريي هم صحيح ويستلي شوې وي د انبياء کُرام خوُبونه هم دارنګي وي ځکه دهغوي خوب د وحي درجه لري. دعامو مسلمانانو خوبونه کښې هر قسم احتمالات وي ځکه هغه د چا دپاره حجت او دلیل نشي کیدلی دي خوبونو کښې بعض وختونه طبعی او نفسانی خواهشاتو ملاوټ وی او یا بعض وختونه دګناهرنو نحوست او تياره په صحيح خوب غالب راشي او ناقابل اعتماد يې کړي. بعض

وخت تعبير هم به عقل كښي نه راخي ٦٠ دخوب چې دا درې قسمونه دکر شول دا د رسول اکرم 微 نه هم منقول دي.حضورياک 徽 اوفرمانيل چه دخوب درې قسمونه دي يوقسم شيطاني دې چې په هغې کښې د شيطان د

') قال الحاقظ في الفتح(٣٥٤/١٢)كتاب التعبير باب اول ما بدا به رسول الله تُؤَيِّظُ من الوحي:الروية الصالحة :ذكر ابن قيم حديثا مرفوعا غيرمغزو "ان رويا المومن كلام يكلم به العبد ربه قي المنام. ووجد الحديث المذكور في نوادر الاصول للترمذي من حديث عباده بن الصامت اخرجه في اصل الثَّامن والسبعين وهو من روايته عن شيخه عمربن ابي عمر وهو واه وفي سنده جنيد وانظرمجمع الزواند كتاب التعبير ياب الرؤيا الصالحة قال الهيشمي روايت الطبراني وفيه من لم اعرفه وانظرالتفسير المظهري (١٣٧/٠٥)قال الفاني فتي يُحَيِّلُهُ "رواه الطبراني بسند الصحيح والضياء")-اً) تفسير مظهري (١٣٧/٥ - ١ ٤١) ومعارف القرآن (١٨/٥ - ٢٠)-

طرف نه څه شکلونه په ذهن کښې راشي.او دويم هغه چه انسان دبيداري حالت کښې څه اويني او بيا هغه صورتونه په خوب کښې راشي.او دريم هغه حالت دې چې بالکل صحي^تح او برحق دي هغه دنبوت په اجزاز کښې څلوپښتم جزه دې يعني دالله دطرف نه الهام دي 🖒 ایا د مذکوره حدیث مصداق جوړیدو دپاره حضورپاک نظریه خپل اصلی شکل کی لیدل ضروری

دي؟ حضورياکنه لايدل د چې کښ ليدل د هغوي د وينا مطابق هم هغوي ليدل دي خو په دي كنبي اختلاف دي چې په كوم حالت كښي هم كتونكو اوليدلو نوبس هم دغه به حضور پاک نهم وي يا په دې کښي څه تفصيل شته؟

امام بخاري په کتاب التعبير کښې د ابن سيرين گولانه نقل کړي دي چې هغه به فرمانيل الاا راهل مبودته ٬ ۲، چه حضورپاک 微 یې په خپل شکل اوصورت کښې لیدلې وی نوهم هغوی یې

م دغه رنګي چه ابن سيرين کينځ ته به څوک راغلو او ورته به ني اوئيل چه ما حضور پاک ﷺ په خوب کښکې لیدلکی دې نو هغوی په ترې دهغه حلیه تپوس کوله چې خوب کښکې په یې لیدلې وو که خلاف معهود حلیه په یې اوونیله نو ورته په یې اوفرمانیل چه تا حضور پاک الله نه دېلىدلى (٢)

ددې خبرې تائيدد ابن عباس الله داثر نه هم كيږي عاصم ابن كليب فرماني حدثني اي قال: قلت لاين عباس: رأيت النبي 微 في البنام قال صفه لي قال ذكرت حسن ابن على قشبهته يه،قال قد رايته:راً

يعني ما ابن عباس ته اوئيل چي ما حضورپاك ﷺ په خوب كښې ليدلې دې هغوي اوفرمانيل چې په کوم شکل کښې دې ليدآلي دې هغه بيان کړه ماته حضرت حسن بن علی راياد شو ما

هغوی سره تشبیه ورکره نوگوی فرمانیل چه او یقینا چه تا لیدلی دی. حالاتکی امام نووی پیشاو نور علماء فرمانی چه حضور پاك این کوم شکل کښې هم لیدلې

وى هم حضور نالله به ني ليدلي وي ٥٠٠٠

⁾ عن عوف بن مالك عن رسول الله مُؤكِيمٌ قال:إن الرؤيا ثلاث منها أهاويل من الشيطان ليحزن بها إبن آدم ومنها ما يهم به الرجل في يقظته فيراه في منامه ومنها جزءمن ستةواربعين جزء من النبوة.سفين ابن ماجه كتاب تعبيرالرؤيا باب الرؤيا ثلاث رقم(٣٩٠٧)-

[]] صعيح البخاري(١٠٣٥/٠٢)كتاب التعبير باب من راي النبي مُلِيَّةً في السنام رقم(٤٩٩٣)-] فتح البغاري(١٢/ ٣٨٤) كتاب التعبير باب من راى النبي كُلُكُم في المنام)-

[&]quot;) حواله بالا)-

[&]quot;) اوگورئ شرح النووی لصحیح مسلم (ج۲ ص۲۶۲ و ۲٤۳). کتاب الرؤیا.

ن دین شیشه ده. دهغوی نام په آئینه کښې دین په نظر راځی اوکه په ناخوښه شکل صورت کښې نی اوکتلونو نودکتونکی دنقص علامت دې. حضرت ګنګوهی پیش هم دې راې ته ترجیح ورکړې ده رن

هُنُوب په حالت کښې دهفور ۱ ارشاد حجت شرعیه دې که نه ۲ یوه مسئله داده که چرې چا حضوراکرم ۱ او اکتلوچې هغوی ۱ دڅه څیزخبرورکوی. یا د څه څیزنه منع فرماني. یا دڅه څیزحکم کوی نوداسې منامیه (خوبونه) شرعی حجت دی که نه؟

دعلماؤپه دې باندې اتفاق دې چې په خوب کښې دنبې ۱۳۵۹ ارشادات شرعی حجت نه دې. البته هغه ارشاد که چرې د يو حکم شرعی مصادم (مخالف، نه وی نودحضور اکرم ۱۳۵۰ صورت ذاتيه يا صورت مثاليه سره دادب تقاضا دا ده چې په هغې باندې عمل او کړې شی.نوپه داسې حکم باندې عمل کول مستحسن دی - ۲)

ت مې د مېاب دې کسم کون کست کست دی . په دې باندې اشکال راخي چې خوب لیدونکي هم حضوراکرم ﷺ اوکتلواودهغوی ﷺ کتل برحق هم دي نودهغوي ﷺ ارشادات مبارکه دې هم برحق اوحجت وي _

ددې جواب دادې چې کوم حضرات دحضوراکرم گړ ورؤیت برحق کیدو دپاره حقیقی حلیه مبارکه سره لازمی ګرځوی، نودهغوی په نیزخود خوب په حالت کښی دارشاداتو حجت نه کیدل ظاهردی، ځکه چې دچادپاره داممکن نه دی چې جزما ،یقینا، داخبره او کړی چې ما حضوراکرم گله لره په خپل اصل حلیه کښې لیدلې دې، کله چې دحضوراکرم گله په کتلو کښې شهبه پیداشوه نودخوب دحجت کیدوخه سوال دي ؟!

اوچي کوم حضرات وانی چې هغوی لره په خپل اصل حلیه کښې لیدل ضروری نه دی. دهغوی په نیزدخوب عدم حجیت په دې بنیاد باندې دې چې حضوراکرم تلق په حدیث پاک کښې داخواوفرمائیل چې کوم سړی زه په خوب کښې اولیدم نوهغه واقعی هم زه اولیدم خکه چې شیطان تصرف کولوسره زما شکل نه شی جوړولي _ هغوی دانه دی فرمانیلي چې په خوب کښې زما ارشاد په هم برحق وی او دهغې نسبت زما طرف ته کیدې شی ظاهره ده چې د رؤیا برحق کیدو نه دانه لاژمیږی چې کوم څیزدې په خوب کښې ښکاره کړې شی یا اورولې شی نا بورولې شی نا دورولې شی نه دې په حقیقت کښې دې هم واقع وی. بلکه دومره خبره ثابتیږی چې داخوب په .. اضفاث، کښې نه دې. ددې څه تعبیر شته ددې تعبیر دنسبت په وجه نه داخوب برحق دې.نه چې مرنی او دومسموع دنسبت په وجه نه داخوب برحق دې.نه چې مرنی

بیادلته داخبره هم واضحه کیږی چې حضوراکرم نش لره په خوب کښې لیدلوکښې دشیطان دتصرفاتو هړوڅه دخل نشته .بیاهم د کتونکی دقوت متخیله په بعضې اوقاتوکښې اثر انداز کیږی. هم داوجه ده چې حضوراکرم نش په خپل معروف هیئت نه بغیر په بل هیئت کښې هم

) اوگورئ تكملة فتخ الملهم (ج ٤٥٠ ٢٥٥) _

⁾ اوگورئ الكوكب الدرى (ج٣ص١٩٤) ابواب الرويا. باب قول النبى صلى انه عليه وسلم:من رآنى فى العنام) اوگورئ تكملة فتح الملهم (ج ٤ ص٤٥٤). كتاب الرؤيا. باب قول النبى صلى افة عليه وسلم : من رآنى فى العنام فقد رآنى _

بکاره کېږی ځکه عین ممکن دی چې د کتونکی په خیال کښې څه داسې کلام واقع شی چه دهه تاکلم هغوی کلام واقع شی چه دهه تکلم هغوی کلام واقع شی چه دهه تکلم هغوی کلام واقع شوب کښې چې څه لیدلې وی هغه ترې نه هیر شوی وی، بیا دویخیدونه پس ده ته دداسې خبروخیال راغلو کوم چې په خوب کښې ده ته نه وې پیښې شوې .

آهذا ددې شبهاتو سره مونو هغه احکام نه پریودو کوم چې مونوه دحصوراکرم که نه په حالت یقطه کښې حاصل کړې وی، نیزپه دې کښې هم څه شک نشته چې په حالت رؤیا اوحالت یقظه کښې که تعارض اوشی نوحالت یقظه لره به ترجیح حاصلیږی د د څکه چې داهم معلوم دی چې دمغفل روایت معتبرنه وی. کله چې په بیدارې کښې دغفلت دوجې نه روایت نه قبلېږی نو دخوب غفلت خود بیداری دغفلت نه بدرجها زیات دې. بیا ددغه نانه مغفل

روايت څنګه قبول کړې شي ؟!

په دريعه د غيب علم شي حاصليدي - () شيخ عبدالحق محدث دهلوي مختلي ليكلى دى چې مادشيخ عبدالوهاب متقى مختي نه اوريدلى دى چې دمغرب دفقراء نه يوفقيرپه خوب كښې حضوراكرم تخ اوليدنوچې هغوى خش دفته دشرابود څكلو حكم كوى، هغه دخپل وخت علماء كرامونه تپوس او كړو. هريو كس ورته څه نه څه محمل اوښودلواوڅه نه څه تاويل ئې ورته او كړو. دغه وخت په مدينه منوره كښې يوعالم محمدبن عراقى وو، كوم چې ډيرزيات متبع سنت بزرگ وو. هغه په وړاندې چې كله دا وقعه بيان كړې شوه نوهغه اوفرمائيل چې ددغه كس په قوت سامعه كښې څه خلل وو. نبى كريم تش فرمائيلې وؤ. لاتش، الشر، هغه .. لاتش، اره .. شه، او كټرلور، ؟ حضرت كشميرى كښت فرمائي چې يوسړى حضوراكرم تا په خوب كښې اوليدلوچې هغوى خش انگريزى ټويې په سركړى ده. ددې وجې دغه سړى ته ويره اوشوه. هغه دحضرت كنگوهي پيشا نه استفسار او كړو، حضرت ورته اوفرمائيل چې دادهغه په دين باندې

^{﴿)} حواله سابقه

^{ً)} اولكورئ الاعتصام للشاطبي (ج 1ص ٢٥٧و ٣٥٣). الباب الرابع في ماخذ اهل البدع بالاستدلال _]) اولكورئ اشعة اللمعات (ج٣ص ٤٣٩)

⁾ اومحوری فیض الباری (ج۱ص۲۰۳ و ۲۰۴)_

ایا په خوب کښې دحضوراکرم کالل زیارت کولو والا به صحابی وی ۱ که چاپه خوب کښې دحضوراكرم 🎁 زيارت اوكړو نو آيا هغه به صحابي وي ؟

علامه عینی گُوَنَّهُ فَرِمَانی چَی هَغُه به صحابی نه وی، ځکه چې دصحابی تعریف دادې چې هغه صاحب ایمان سړې کوم چې حضوراکرم ﷺ لیدلې وی، ددغه کتلونه مراد معهود از معتاد رؤیت دی، منامی رؤیت معتادنه دی، داسې هم وئیلې شی چې ددغه رؤیت نړ

دهغوی 🦓 په دنيوی حيات کښې زيارت کول دی 🚅 🖒 علامه سيوطى كيه 🖈 هم دغه شان تصريح كړې ده _ 🖒

د حضوراکرم گلی په حالت بیداري کښې زیارت ممکن دي که نه؟ ددې نه پس په دې باندې خَانِ بُوهِه كُويَ جِي نَبَى عَيْمًا كه چَاپِه خُوبِ كَنِبَى اوليدلو نوبياخوهم هغوى عَيْمًا ني اوليدل. ليکن که چرې يوکس دا اوواني چې ماحضوراکرم نه په بيداري کښي ليدلي دې نوآيا دهغه خبره به معتبره وي كه نه؟ اوهغوي كله لره په بيداري كښي ليدل ممكن دي كه نه ؟

بعضي حضراتوددې نفی کړې ده (آاو ولیلې ئی دی چې دحضوراکرم نهی نه رویت منامی ثابت دی، بلکه دعلامه سیوطی گیژه په قول دامتواتردې آاودرویت فی الیقظه باره کښې حضوراكرم كلي نه څه ثابت نه دي. البته د .. من رآن في البنام فسيران في اليقفه.. په احتمالاتو

كښې ديواحتمال په توګه باندې اشاره ملاويږي _ (٥, دغه شان دحضراتوصحابه كرامواودتابعينونه دچانه هم دامنقول نه دي چې هغوي دشدت

تعلق نه باوجودهم حصوراکرم ﷺ لره دبیدارئ په عالم کښې لیدلې وی تُردې پورې چې حضرت فاطمه في تد دحضور أكرم په فراق كښي چې كومه صدمه لاحق شوې وه. هغه صدمه دهغوي دپاره د مرګ سبب اوګرځيدو اودحضوراکرم گله دوصال نه صرف شپږ مياشتي پس دهغی وفات شوی وو .دهغوی کور دروضه مبارکی سره پیوست وو . بیاهم دهغی نه منقول نه دى چَى پەدغە پورە مدە كښى هغى حضوراكرم ﷺ پەعالم بىدارى كښى لىدلى وؤ _ را ددې په مقابله کښې ډيرومحققينو ددې اثبات کړې دې. علامه سيوطي پښځ خو ددې داثبات دپاره يوه مستقله رساله .. تنويرالحلك في امكان رؤية النبي والملك، . ليكلي ده (^٧،علامه بارزي

ٔ) اوګورئ عمدة القاری (ج۲ص ۱۵۶) ِ

مُرْجُهُ بِه خَبِلُ كَتَابٍ.. تُوثيق عَمِى الاسلام. كَنِسي. علامه ابومحمدعبدالله بن ابي جمره مُرَجْهُ بِه

⁾ تنوير العلك في امكان رؤية النبي والملك (ضمن العاوى للفتاوى (ج٢ص٣٥٥) _

⁾ أوكورئ المواهب اللدنية مع شرحه (ج٧ص٢٩٢) الفصل الرابع.مااخَتص به صلى الله عليه وسلم من الفضائل والكرامات _

[&]quot;) شرح المواهب اللدنية للزرقاني (ج ٧ص٢٩٢)_

[&]quot;) المواهب اللدنية للقسطلاني وشرحها للزرقاني (ج 2ص292)_

^{&#}x27;) كومه چې د ` 'العاوى للفتاوى.. په ضمن كښي طبع شوې ده ـ

.. بههة النفوس، كنبي عفيف يافعي كيني به روضة الرياحين. كنبي اوشيخ صفى الدين بن ابي المنصور كيني به خپلي .. رساله . كنبي سلف صالحينونه ډيرواقعات نقل كړى دى ـ د ' ، علامه ابن جمره كيني فرماني چې سلفو او دخلفويولوني جماعت نه منقول دى چې هغوى حضوراكرم 微 ړومبې په خوب كښې ليدلې وو ، بيا په مصداق حديث .. من د آل ل البتام فسيران في اليقشة،، هغوى نبى الايم دبيدارئ به عالم كنبي هم اوكتل. دنبي الايم نه دغه حضراتو دخپلو بعضو مشكلاتواود مسائلو د حل په باره كښې تپوس هم اوكړو. نبى الځايم دهغي حل ورته اوښو دلو _ 🖔

ابن ابي حمره ميني فرمالي چې ددې خبرې منكرياخوبه دكرامات اولياء منلووالاوي يابه نه وي _ كه هغه دكرامات اولياء منكروي نوزمون دهغوي سره بحث نشته. څكه چې هغوي دداسي څيزنه انکار اوکړوکوم چې ,, سنت، . نه په واضح دلاتلوسره ثابت دې _

اوكه كُرامَتَ اولياء لَره برحق كينُزِي نودلته دي هم هغه تسليم كري چي دحضُوراكرم ﷺ رؤيت يقطة په توګه د کرامت دي _ 🖔

صاحب روح المعاني علامه آلوسي مُثينة فرمائي چي دحضرات صحابه كرامو عُثَيَّة حضوراكرم 微 لره دوصال نه پس دبیدارئ په حالت کښې نه کتل اودروستونوپه کتلوکښې دتوجیه ضرورت دي. چې پرې اطمينان اوشي، دا وئيل لهم ممکن نه دي چې دکومو نيکانو حضراتو نه ليدل منقول دي دغه ټول دروغ اوبي اصل دي. ځکه چې ددې ناقلبن هم ډيرزيات دي اوددې دعوي كونكى هم لوئي جليل القدر الله والاخلق دى.دغه شان داهم تشي ونيلې كيدې چې دغه حضراتو واقعي ليدلې خودې خودغه رويت يعني ليدل منامي دي.دبيداري په عالم کښې نه وو . ځکه چې په دې محمل باندې حمل کول يولرې ده ، بله دا چې بعضې واقعا تولره

سبي صوره علي پې کې کې د په پې کې د په پې کې کې د په خوب باندې محمول کيدې نشي ـ البته داوانيلې کيدې شي چې دا خوارق عادتونو د قبيل نه دی، لکه څنګه چې دحضراتو انبياء عليهم الصلاة والسلام کرامات اوداولياء کرامو کرامتونه دی ـ انبياء عليهم الصلاة والسلام کرامات اوداولياء کرامو کرامتونه دی ـ

کوم خاني پورې چې په صدراول کښې دنه کتلوتعلق دې.نوعلامه آلوسي پیځیځ فرمانی چې حِضوراكرم ﷺ لره په حالت يقصه كښكي كتل دخارق عادت په توګه باندې دې اوپه صدر اول كښې يعني دصحابه كرام په زمانه كښې دخواړ قوصدور ډيركم ظاهر شوې وو . اوددې وجه دا په پوهه کښي راځي چې حضوراکرم ﷺ چې دآسمان رسالت نمردې.دهغوي ﷺ زمانه ډيره قريبه وه .ظاهره ده چې دنمړيه رنړه کښې ستوري نه ښکاره کيږي. لهذا عين ممکن دي چې ددغه حضراتوپه دورکښې بعضي حضراتوهغوی کا لره په عالم بیداری کښې لیدلی وی خو د نه سازاد: هغوی داخلاف مصلحت گنرلوسره نه وی ظاهر کړی ـ ددغه حضراتودنه ليدلويوه وجه داهم

⁾ المواهب اللدنية (ج٧ ص٢٩٣) _) حواله بالا _

⁾ العواهب اللدنية (ج٧ ص ٢٩٤)__

کیدې شی چې د حضوراکرم نظه فراق سره دهغوی ابتلاء او آزمیښت مقصودوی.داهم ممکن دی چې په دغه وخت کښي که چاحضوراکرم لره په حالت بیدارئ کښې لیدلې وې نودنورودپاره به دفتنه اودآزمیښت دروازه کهولاژ شوې وه. یومصلحت داهم ممکن دې چې په دغه وخت کښې ډیر خلق داسې ووکوم چې دحضوراکرم نظه بعینه عکس وو.

نوځکه چاهم هغوی گل د دیقظه په حالت کښې نه دې لیدلې نیزدې سره ددې هم قوی امکان دې چې هغوی لره بیائي د بیدارئ په حالت کښې په ګټرت سره لیدلو نوهغوی کل به په دغه موقع کښې براه راست استفاده کیدله، نو کم موقع کښې به کتاب اوسنت کښې د اجتهاد دروازه نه کمولاژیدله، اوس چونکه حضوراکرم کل موجود نه دې اونه په عالم بیدارئ کښې څوک هغوی لره موری، نوځکه داجتهاد دروازه کهلاؤده، داسې دامت دپاره اساني پیداشوه _ (۱) کوم ځانی پورې چې دمنکرینوداویناده. چې حضور اکرم کل دخوب دصحت ضمانت ورکړې دې، دبیدارئ، نه لهذا په بیدارئ کښې ممکنه ده چې جنات او شیطانان متمشل کیدوسره خپل ځان ته نبی اکرم کل اوواني او کتونکي ته دهو که ورکړې _ نو ددې جواب دادې چې دبیدارئ حالت دخوب دحالت نه اقوی دې، کله چې په حالت د خوب کښې تمشیل شیطاني دبیدارئ ورد بیدارئ په حالت دخوب کښې تمشیل شیطاني

ممکنه ده چې منکرين دا اووانی چې د .. قان الشيطان لايتبشل پ،. تعلق دخوب سره دې. بيدارئ سره نه _

ددې جواب دادې چې په دې کښې هړوخه شک نشته چې د .. فان الشيطان لايتمثل په. تعلق دخوب سره دې، بياهم ددې په علت کښې غوراو کړې چې د کوم علت په بناباندې هغوی تلگ دفوب سره دې، بياهم ددې په علت کښې غوراو کړې چې د کوم علت په بناباندې هغوی تلگ هدايت محض دی اوشيطان ضلال محض. دافر محض دهدايت محض شکل نشي اختيارولي، لهذا خنګه چې داعلت په حالت خوب کښې دې، بعينه هم دا علت ده چې په حالت کښې دې، بعينه هم دا عده ده چې په حالت

بیداری کبنی شیطان متمثل کیدوسره په دهوکه کبنی واچوی _ والله اعلم ایا شیطان په خوب کبنی دالله تعالی په صورت کبنی متشکل کیدوسره راتلی شی ؟ آیاشیطان

په خوب کښي راتلوسره دا وييلي شي چې زه .. الله . ، يم ؟

حضرت مخنگوهی مُعَلَّمُ فرمانی چی شیطان داسی وائیلی شی، خکه چی الله تعالی څنګه مظهر هدایت دی دغه شان مظهرضلالت هم دی، ارشاد باری تعالی دی ﴿فَیْضِلُ اللّهُ مَنْ یَّشَاءُ وَیَهُدِیْ مُنْ یَّشَاءُ _ (والله اعلم بالصواب ()

قوله: مر_كذبعلي متعمدافليتيوامقعدةمر_النار: كوم سري چي ښه په قصد

^{&#}x27;) اوگورئ روح المعانی (ج۱۲ص۳۹) تحت تفسیرقوله تعالی : ماکان محمد ابا احد من رجالکم ولکن رسول الله وخاتم النبین)_ *) سورة ابراهیم ۱۶

[&]quot;) اوگورئ لامع الدراری وتعلیقاته (ج ۱ ص ۲۶۰ و ۲۶۱) کتاب التعبیر_

سره په ماباندې دروغ اووائی هغه دې خپله ټکانه ۱۰ استوګني ځانې، په دوزخ کښې جوړه کړی دلته په حدیث باب کښې هم داجزه اصالة اوبالذات مقصود دي ـ

و. من کذب علي متعمدا، تواتو حدیث .. من کذب علی متعبدا ، ، دډیرو صحابه کرامونه متول دې . په خپله امام بخاری گوش په مختلفوالفاظوسره دادحضرت زبیر گاگه () محضرت علی ، ' ، حضرت انس ، ' ، اود حضرت ابوهریره ، ' ، نه نقل کړې دې . دغه شان هغوی د حضرت مغیره ، (، حضرت انس ، ' ، اود حضرت ابوهریره ، کموضرت عبدالله بن عمروبن العاص ، ' و وحضرت وائله بن الاسقع گاگه ، که دوایت کړې دې ۔ البته په دې کښې دوعیدبالنارتصریح موجود نه ده _ ') ، امام مسلم گوش هم دحضرت علی (') . دحضرت انس ، ') ، دحضرت ابوهریره ، ' ' اود حضرت مغیره گاگه ، ' نه داروایت نقل کړې دې . اود ابوسعید گاگه نه صرف هه دوی روایت کړې دې . اود ابوسعید گاگه نه صرف هه دوی روایت کړې دې .

دَصَّحَيْوَنُونَهُ عَلَمُوهُ نُورودحدَيثُ بِهُ كَتَابُونُوكَنِي حَضَرَتَ عَثْمَانَ (۱۵٪. حضرت ابن مسعود، ۱۲٪. حضرت ابن عمر، ۱۲٪حضرت ابوقتاده (۱۸٪)

') اوگورئ صحیح البخاری (ج ۱ص ۳۱) کتاب العلم.باب اثم من کذب علی النبی صلی الله علیه وسلم. رقم (۱۰۷) _

) حواله بالا (۱۰۶)

ً) حواله بالا (۲۰۸)

') حواله بالا. رقم (۱۱۰) _

·) صحيح البخاري (ج ١ص١٧٢) كتاب الجنانز. باب ما يكره من النياحة على العيت. رقم (١٢٩١) _

) صحيح البخاري ج اص ٢١) كتاب العلم. باب الم من كذب على النبي صلى الله عليه وسلم. رقم (١٠٩)

) صحیح البخاری آرج ۱ ص ٤٩١) کتاب احادیث الانبیاء، باب ماذکر عن بنی اسرائیل، رقم (۴٤۶۱)_
 ^) صحیح البخاری (ج ۱ ص ۹۹۸) کتاب المناقب. باب (بدون ترجمه، بعد باب نسبة الیمن الی اسماعیل).

) صعیع البخاری (ج آص۱۹۷) کتاب الفتاقب، باب رابدون ترجعه، بعد باب شبه الیفن ای مصافیق. رفه (۲۵۰۹) _

) الفاظ دا دى .. ان من اعظم الفرى ان يدعى الرجل الى غيرابيه اويرى عينه مالم تر. اويقول على رسول
 أنه صلى انه عليه وسلم مالم يقل.._

') صحيح مسلم المقدمة. باب تغليظ الكذب على رسول الله صلى الله عليه وسلم. وقم (٢) _

() حواله بالا رقم (٣) _

") حواله بالا. رقم. (٤) _

(۶) و (۵) و (۶) _ (۶) _ (۵) _ (۶) _ (۶) _ _

") صعبع مسلم. كتاب الزهد والرقائق. باب التثبيت في العديث وحكم كتابة العلم. رقم (٧٥١٠)_

^د) مسند احمد (ج۱ص ۲۰) _

") جامع الترمذی. ایواب العلم. باب ماجاء فی تعظیم الکذب علی رسول انه صلی انه علیه وسلم. رقم (۲۶۵۹) ") مسند احمد (ج۲ص۲۲). رقم (۲۷۲۶) و (ج۲ص۲۱). رقم (۵۷۹۸)و(ج۲ص ۱۹۴) و رقم (۴۳۰۹). وشرح مشکل الاثار (ج۲ص ۳۶۰) _____

) شنن ابن ماجه. المقدمة. باب التغليظ في تعمد الكذب على رسول الله عليه وسلم. رقم (٣٥) _

حضرت جابره ۱/ اوحضرت زيدين آرقم نمايله ۲۰٫۵ نه هم دا حديث مروى دي ـ

دغه شان به سندحسن سره حضرت طلحه بن عبيدالله، حضرت سعيدبن زيد.حضرت ابوعبيده بن الجراح. حضرت سعدين ابي وقاص، حضرت معاذين جبل، حضرت عقبه بن عامر. حضرت عمران بن حصین. حضرت ابن عباس، حضرت سلمان فارسی. حضرت معاويه بن ابي سفيان. حضرت رافع بن خديج، حضرت طارق الاشجعي. حضرت سالب بن يزيد، حضرت خالدبن عرفطه، حضرّت ابوامآمه، حضرت ابوموسى غافقي، حضرت عائشهٌ او حضرت ابوقرصافه *تفاقی نه* هم مروی دی _{- ۱}۰، دا ټول درید پرش ۳۳صحابه کرام دی _

ددوي نه علاوه تقريباً دشلو ۴۰ صحابه گرامونه مزيد هم داحديث مروي دي. بياهم دهغوي

سندونه ډير ضعيف اوساقط الاعتبار دي 🖔 . حافظ ابن حجر ﷺ فرماني چې بعضي حفاظ محديثينوددې حديث طرق جمع کړي دي ـ

په دې سلسه کښې دټولونه ړومېې امام علي بن المديني ﷺ صراحت کړې دې اودهغوي اتباع امام يعقوب بن شيبه مُؤلِيه كړې ده. هغه فرماني چي دا حديث حجازي يا غيرحجازي صحابه كرامونه په شلوطرقوسره مروى دي. بيا ابراهيم الحربي اوابوبكر البزار رحمه نه فرمائي چي تقريبا څلويښت صحابه كرامونه مروى دي ـ

په دغه زمانه کښې امام ابن صاعد گڼه دهغه شان دغه طرق جمع کړی دی کو م چې دمدکور، تعدادنه څه زيات دي ـ

امام ابوبکرالصيرفي ﷺ فرماني چې تقريبا شپيته صحابه کرامودې لره روابت کړې دي. ددى طرقو لردامام طبراني جمع كول نويددي كبني اضافه اوشوه

امام ابوالقاسم بن منده کیلیا فرمانی چې دې روایت لره اوواتیه ۸۷ صحابه کر مونقل کړې دي. بعضي نيشاپوري حضراتوددې تخريج کړي دي. کومسره چې نوره اصافه اوشوه

دغه شان امام ابن الجوزي گُولله دې طرقوآره جمع کړه نوهغه دنوی ۹۰ نه زيات راوتل ابن دحيه مينة بددې باندې جزم کړې دې

امام ابوموسي المديني سيني في فرماني چي دي لره تقريبا سل ١٠٠ صحابه كرامو نقل كوي. ددې ندپس حافظ يوسف بن خليل اوحافظ ابوعلي بكرې رحمهماالله ددې حديث طرق لره جمع كرة نود دوآرو مجموعه تقريبا يوسل دوو ته اورسيده . ٥٠

حافظ عراقي پُوليا فرماني چې بعضي حفاظود کر کړې دي چې دې حديث لره دوه سوو صحابه کرامونقل کړې دي. ځوزه ددې وقوع لره مستبعد ګڼرم 🏋.

⁾ حواله بالا. رقم (٣٣) _

⁾ مسند احمد (ج ٤ص ٣۶٧)_

^{ُ)} ددي ټولوروايآنودپآره اوګورئ ، الموضوعات.. لابن الجوزی (ج ۱ص۵۵_ ۲۴). الباب الثاني في قوله علیه السلام:۰۰ من کذب علی متعمد ا *) اوگوری فتح الباری (ج۱ص ۲۰۳) _

^{&#}x27;) أولكورئ فنح الباري (ج ١ص٣٠٣). وظفرالاماني (ص٥٢_ ٥٤). وفتح العفيث للعراقي (ص٣٢٣) _) اوگوری فتح المفیث للراقی (ص۳۲۳) _

مانظ ابن حجر کنته فرمانی چې غالبادا ماته و و دسیقت قلمی دوچې نه .. ماتتانه . شول ا ، خوداته دې داخبره دنظرالاندې وی چې سلو ۱۰ ته نزدې صحابه کرامونه چې کوم دا روایت مروی دې هغه ټول طرق صحیح نه دی . بلکه څنګه چې رومبي بیان شو . په دې کښې دصحیح نه علاوه بعضي حسن دی . بعضي ضعیف دی . اوبعضي بالکل ساقط الاعتبار دی . بیاپه دې کښې بعضي روایتونه دمطلق کذب په مذمت کښې دی . په خاص کذب علی الني تایه سره مقید نه دی _ . ت

دى حديث تفصيلى تخريج دپاره دابر الجوزى كيلي كتاب الموضوعات اود علامه عبدالحي لكهنوى كتاب ، الآثار البرؤومة لي الاعبار البوضوهة ، اوكورى ، أ

حافظ ابن الصلاح محله فرمانی چی دا حدیث متواتردی.ددی نه علاوه بل حدیث متواترنشته رًا اوابن حبان (أ) اوحازمی (/رحمهماالله دحدیث متواترمطلقا انکار کوی او والی چی دحدیث متواترهرو وجود نشته.

دابن حبان اوحازمی رحمه الله دا دعوی خوبالکل باطله ده، ځکه چې او س مخکښې تفصیل تیرشوچې .. من کنډ على متعمداه . والاحدیث دسلو نه زیات صحابه کر امو نقل کړې دې. نو ولې پیا به هم دا متواتر نه وی ؟ ۰

كوم خاني پوري چې دحافظ ابن الصلاح گند ددعوي تعلق دي. نوعلماؤ ددغه تخصيص ترديد كړې دي او ونيلي ني دي چې د.. من كذب، والاحديث نه علاوه .. من بني يله محدا د مح على الخفين والاحديث. رفع يدين والاحديث. د شفاعت والاحديث. د ... حوض. او د.. رويت باري تعالى ،، والااحاديث وغيره متواتردي _ \

حافظ عراقي مُرتينة در. من كذب على متعمدا....، والاحديث به باره كنبي ليكلي دى ..ولا يمكن التواتر في شيء من طرق هذا الحديث، لانه يتعذر وجود ذلك في الطرفين والوسط، بل بعض طرقه

⁾ فتح المغيث للسخاوي (ج £ص ١٩) الغريب والعزيزوالمشهور. امثلة التواتر_

⁾ أوګورئ ظفرالامانی (ص۵۵) نقلا عن فتح الباری (ج۱ص۲۰۳) _

أي كتاب الموضوعات لابن الجوزى (ج ١ص٩-٥٠). الباب الثاني في قوله عليه السلام: من كذب على متعدا والآثار المرفوعة (ص١١هـ). ضمن مجموعة سبع رسائل للكنوى رحمة انه تعالى _

^ه) قال ابن حيان في مقدمة صحيحة : ١٠ فاماالاخبارفانها كلها اخبار آحاد_انظرالاحسان بترتيب صحيح ابن حيان (ج١ص١٤٥)_

^{ً)} قَال الحازمي رحمة آلله تعالى : . . واثبات المتواترفي الاحاديث عسيرجدا.. _ شروط الائمة الخمسة للحازمي (ص١٤٢) ثلاث رسائل في علم مصطلح الحديث _

اوتحوری فتح الباری (ج۱ ص۲۰۳). وفتح البغیث للسخاوی (ج٤ص۲۰ ۲۱) __

المعيمة انباهى افراد من بعض رواتها، وقدر ادبعشهم في عدد هذا الحديث حتى جاوز البأة، ولكندليس هذا البتن، وانباهى اعاديث في مطلق الكذب عليه صلى الله عليه وسلم، كحديث: • • من حدث عنى يحديث يرى انه كذب من مدلث عنى يحديث يرى انه كذب من مردد لكاذبين، و وحوذلك، . . ()

د مافظ عراقی دقول حاصل دا دی چی .. که ددې حدیث ټول طرق هم ملاؤ کړې شی نوبیاهم تواترنه ثابتیږی. ځکه چی ابتدا، او انتها، اوبیا وسط کښې دتواترشرط یعنی کثرت رواه موندل ممکن نه دی. بلکه ددې حدیث بعضی طرق د داسې رواتونه مروی دی په کوم چی دآحادو اطلاق کیږی. بعضی حضراتوددې حدیث دطرقو تعداد دسلونه زیات ښودلی دي. خوداخبره صرف دې متن سره متعلقه نه ده. بلکه په حضور اکرم نظم باندې مطلقا دروخ تړلو سره متعلق دې. ځنګه چې حدیث .. منحدث عنی بحدیث یړی انه کنب، فهواحد الکافین، د

حافظ مختی فرمانی چې صرف دحضرت آنس کا از طریق لره روایت کونکو تعداد کافی زیات دې اودهغوی نه داپه تواترسره منقول دې دحضرت علی کا از نه روایت کولووالا شپږ مشهور تابعین دی دغه شان حضرت ابن مسعود ، حضرت ابوهریره او حضرت عبدالله بن عمرو تاکی دادادیشوداحال دې که چرې داسې اووئیلي شی چې داحدیث دکوم کوم صحابه کرامونه مروی دې دهغوی په طریق باندې دامتواتر دې نوداخېره به صحیح وی . ځکه چې د تواتر دپاره خه عددمعین شرط نه دې بلکه د . , علم ، افاده کافی ده _ ,)

حوعلامه عبدالحی لکهنوی مختلهٔ دی خبرې لره نقل کولوسره چې داحدیث کوم چې دسلو ۲۰۰۱، نه زیات صحابه کرامونه مروی دې په دې کښې بعینه ٫٫ من **کټې،،،** والا الفاظوسره نشته. بلکه نزدې نزدې نورو الفاظووالاحدیثونه هم شامل دی. فرمائی

.. وبه ظهرماتى كلام الحافظ ابن حجر..... فأن العلم الذى لابدمنه فى البتواتر هوالعلم الضرورى، لامطلق العلم، وحسول العلم الضرورى من طرق هذا الحديث مبنوع، _ , *)

 ⁾ انتقبيد والايضاح لما اطلق واغلق من كتاب ابن الصلاح (ص٢٧٢). النوع الحادى والثلاثون : معرفة الغريب والعزيز من الحديث _

 ⁾ قال العافظ : ١٠ واجيب بان العراد باطلاق كونه متواترا رواية المجموع عن المجموع من ابتدائه الى انتهائه في كل عصر. وهذا في افادة العلم. _ فتح الباري (ج ١صـ٢٠٣) _

^{&#}x27;) فتع الباري (ج١ص ٢٠٣) _ ') ظفرالاماني (ص٥٤و ٥٧). مبحث الخبرالمتواتر_

يعني .. ددې نه دحافظ ابن حجرپه کلام کښې چې کوم خلل واقع دې هغه ظاهرشو جي په منواترکښي کوم علم ناګزيردي هغه .. علم ضروري.. دي. نه چې مطلق علم. اوعلم فروری ددی حدیث دطرق نه حاصل کیدل مسلم انسلیم شده، نه دی...

حاصل داچي ابن حيان اوحازمي رحمهماالله دمتواتردوجود نه انكار كړې دې ١٠ اوابن الصلاح پينه فرماني چې دمتواتروجود ډيرقليل دې. البته .. من کنب والاحديث په باره کښي

دعوى كيدى شي چې دامتواتردې

حافظ عراقي ﷺ فرماني چې ددې حديث په باره کښي دا وينا ممکنه نه ده چې دالفظاهم متواتردی. خکه چه بعینه هم دی الفاظوسره دومره طرق سره مروی نه دی. دکوم په وجه سره

معنوى دې در ، والله سيحانه و تعالى اعلم

دو اضع حدیث حکم دنبی کریم گفت طرف ته غلطه خبره منسوب کول په اتفاق سره ګناه کبیره دد. آ البته په دې کښې اختلاف دې چِې واضع حديث کوم چې په حضوراکرم ﷺ باندې دروغ اوترى هغه د دائره ايمان نه خارج كيږي كه نه؟

جمهور علما، فرمائي چي مفتري على النبي ﷺ د دائره ايمان نه نه خارج كيږي ـ امام آبومِحمد الجوینی ﷺ فرمانی چې په حضور اکرم ﷺ باندې دروغ تړونکې به کافر

علامه ابن المنيرمالكي تيمني دامام جويسي تيمنية قول طرف ته خپل ميلان ظاهركړي دې اوپه دې سلسله کښې هغوی ددې خبرې نه آستدلال کړې دې چې کوم سړې دنبی اکرم 📆 طرف ته خُه غلط حديث منسوب كوكى. دَمَثال په توګه باندې كه هغه دكوم خرام د تحليل د باره غلط حديث بيان كوى نوهغه به يا دا حرام حلال محنهي. كيابه به حلال مُخترِلُوباندي تورخُلُق آماده كوى او استحلال حرام كفر دى. دغه شان په دې باندې آماده كول هم كفر دې - ر

خو دعلامه موصوف دا دلیل ضعیف دی. خکه چې دلته ګفتګوپه استحلال حرام کښې نشته دې. بلکه ګفتګوپه دې خبره کښې کیږي چې که خوک صرف په هواني نفساني ،خواهشاتو، په غرض باوجود دحرام ګڼړلونه. حضور اکرم کا طرف ته غلط خبره منسوب کړی نوهغه به

انظرفتح المغيث للسخاوي (ج ٤ص١٩) الغريب. والعزيز. والمشهور، وشرح شرح نخبة الفكر في مصطلحات اهل الأثر (ص ١٨٧)__

[]] انظر تعليقات الشيخ نورالدين عترعلي علوم الحديث لابن الصلاح (ص٢٥٨) _

⁾ اوگورئ توضيح الافكارلمعاني تنقيح الانظار (ج ٢ص ⁶⁵)_ ً) اوگوری نزهة النظرشرح نخبة الفکرمع حاشية لفط الدر (ص ۸۵)) وشرح شرح نخبة الفکر لعلی الفاری (ص ٤٥٢). وفتح الباری (ج١ص٢٠٢) _

^د) فتع الباری (ج ۱ص۲۰۲) _

کافر وی که نه. نصوص په دې خبره باندې دلالت کوی چې کافر کیږی به نه. الله تعالی فرمانی (ایاالقالالیفغازان لِنُمَرُكُنِهِ رَنْفَهِمُ اَدُونُ ذَلِكَ لِمِنْ لِثَنَاءً * \

د امام بخاری مینه رحجان هم دی طرف ته دی. خکه امام ترجمه کنبی .. اثم من کنب، ارشاد فرمانیلی دی. که چرته کذب علی النبی تنظ کفروی نوحضرت امام بخاری مینه به به ترجمه فرمانیلی دی.

كښې د ..الثم، . په خاني باندي د.. كفر، . لفظ روړلې وو _ والمه احلم

دمفور اكرم ناتي به آحاديثو كنس دروغ ونيلو والا توبه به قبوله وى كه نه كه چرته يوكس دحضور اكرم ناتي به آحاديثو كنس دروغ ونيلو والا توبه به قبوله وى كه نه كه خره مندو دحضور اكرم ناتي طلطه خبره منسوب كره اوداسي هغه عمدا او كره. نودومره خبره خوظاهره ده چي داكناه كبيره ده. البته په دې كنبي كلام دې چي دده توبه به قبوله وى كه نه ؟ امام احميدى، سفيان تورى، عبدالله بن المبارك، رافع بن الاسرس اوابونعيم شخ دامذهب دى چي دده تول روايت به مردود وى. كه چرته هغه په صدق دل سره دزه نه توبد اوباسي نوبيا هم دهغه روايات معتبرنه دى ـ ن

روړد کې لوېدروېدلی کوبید هم د د اد د او ایک د کوبی مذهب مختار دادې چې ددۀ توبه خوامام نووي کیله فرمائی چې دا د قواعدو خلاف دې. مذهب مختار دادې چې ددۀ توبه قبوله ده اودتوبه نه پس ددۀ روایات هم معتبردي. دکفرپه شان جرم توبه سره معاف کیږي نودا خودهغې نه کمتردې، دابه بدرجه اولي معاف کړې شي د ∵

دېمهورو دطرف نه ددې جواب دادې چې بحث په دې خبره کښې نه دې چې فيمايينه وبين الله ددهٔ توبه په قبوله وي يا نه، بلکه بحث په دې کښې دې چې کاذب علی النبي ﷺ روايات

جمهور وانی چې معتبریه نه وی ^۴ اوددې وجه دا ده چې آنېده دپاره به سدباب شي او هیڅ څوک هم دنبی ۱۲ طرف ته څه غلطه خبره نه منسوب کړی اونه به دمنسوب کولوجرات کوی څوک هم دنبی ۱۲ طرف ته څه غلطه خبره نه منسوب کړی اونه به دمنسوب کولوجرات کوی فائده : امام بخاری ۱۲ کولو چې به دې باب کښي د ټولونه ډومبي دحضرت زبیر ۱۲ کو کو کړې دې دی. کوم چې په دې خبرې باندې دال دلالت کونکې، دې چې حضرات صحابه کرامو ۱۲ کوله به په حضوراکرم ۱۲ کوله کړی دې حضورات صحابه کرامو ۱۲ کوله به په حضوراکرم ۱۲ کوله دی. حضورت انس ۱۲ کوله دی. حضورات صحابه کرامو به کوله حدیث نی راوړلې دې، په کوم کښې چې ددې خبرې تصریح ده چې حضرات صحابه کرامو به داکثار فی الروایة نه احتراز کولو. کوم چې به مفضی الی الخطا وو، مطلق تحدیث نه به نې

^{&#}x27;) النساء ٤٨

⁷) اوكورئ الكفاية (ص١٩٧و١١٨). وشروط الانمة الخمسة للحازمي (ط٤٥٥. ضمن ثلاث رسائل في علم مصطلح الحديث). وعلوم الحديث لابن الصلاح (ص١٩٥). والتقبيد والايضاح (ص١٥٠. ١٥١). وفتح المفيث للعراقي (ص١٩٤) وفتح المغيث للسخاوي (ج٢ص٧١_ع/) _

^{*)} اوگوری نقریب النووی بشرحه تدریب الراوی (ج \ص ۳۳۰). وشرح النووی لصحیح مسلم (ج \ص ۸) السقدم. باب تغلیظ الکذب علی رسول الله صلی الله علیه وسلم _

أ) قال ابو عبدالرحمن عبيداله بن احمد العلمى: سألت أحمد بن حنبل عن محدث كذب في حديث واحد. ثم تاب ورجع. قال: توبته فيما بينه وبين الله تعالى. ولا يكتب حديثه أبدا. الكفاية (ص١١٧) _

اخترازنه کولو، ددې نه پس دحضرت سلمه بن الاکوع اللظ حدیث ني راؤړې دې، په کوم کښې چې د.. قول، تصریح موجود ده، . اوددې نه ړومبې حدیثونه د قول اوفعل دواړو نسبتونو ته عام دی عام دی ار په آخه و کښې نې دحضرت ابوه ریره اللظ حدیث رؤرو، چې پکښې دې خبرې طرف ته اشاره

عام دی او په آخره کښې نې د حضرت ابو هريره الگاؤ حديث رؤړو ، چې پکښې دې خبرې طرف ته اشاره ده چې پکښې دې خبرې طرف ته اشاره ده چې په حضوراکرم ۱۳۵۰ باندې دورغ تړل په يوموقع باندې هم جانزنه دی .که دعوی دسماع په حالت د يغام کښې وی . ۱۱ ، والله اعلم وعلمه اتم واحکم

. فاقده دحضرت ابوهریره کانتی به دی حدیث کنبی خُلور اموردی ۱ تسبوا باسس ۲ ولاتکتتوا بکنیتی ۲ ومن ران فی البنام فقق رانی، فان الشیطان لایتبشل فی صورق ۴ ومن کنب علی متعبد ا

قليتهوا مقعد لامن النارددي امورويه مينخ كښې څه مناسبت دي ؟

علامه عینی کیلی فرمانی چی رومبی جمله او دویمه جمله به مینخ کښی مناسبت بالکل ظاهردې چی په یو کښی سمیه مذکوره ده اوپه بل کښی تکنیم، ددوارو تعلق هم دیوقبیل سره دې، په آخری دوؤ جملوکښی مناسبت داسی دی چی څنګه دبیدارئ په عالم کښی دحضور اکرم تلا طرف ته د دروغوخبره منسوب کول حرام اوناجانزدی دغه شان که چا حضوراکرم تلا په خوب کښی نه دی لیدلی او ددې نه باوجود هغه وانی چی ما حضوراکرم تلا په خوب کښی لیدلی دې نودې هم ددې وعیدلاندې داخل دې البته ددواړو جملوتعلق آخری دوؤ جملوسره څنګه دې ؟ علامه عینی کیلی په دې مقام کښی بیاض پریخودې دې ممکنه ده چې روستونې لیکل غوستل او دهول ترې نه شوې وی ـ بیا هم غور کولوسره خبره په پوهه کښی راځی هغه داچې دا درې مختلف احادیث دی،یو .. تسبوا پاسی ولا تکتئوا پکینی، دویم حدیث دې .. من دانې محتلف محدیث .. من کڼې علی متعمدا

۳۹ باب:کتابةالعلم

حضرت ابوهريره څايي به دا حديثونه بيل بيل هم روايت کول اوپه بعضي وختونوکښې به نې ټول په يوځاني باندې روايت کول دلته هم دا صورت دې چې ټول احاديث نې په يوځل روايت

حضرت شيخ الحديث صاحب 就想 فرماني چې په باب سابق كښې چونكه كذب على النبي 對 نه احترازكولوحكم وو، خكه عين امكان ووچې دبعضي خلقوهمتونو بالكل جواب

کړی دی _

^{🅻)} فتح البارى (ج ١ص٢٠٢و٢٠٣). وعمدة القارى (ج٢ص١٥٧) 🔔

^{&#}x27;) صدة القارى (ج٢ص١٥٨)_

ورکړې وو او هغوی دمطلی نقل حدیث به احتراز کولو ، ظاهره ده چې په دې کښې لونې نقصان وو او په نغلیم او بلدغ کښې خلل پیدا کېدو ، ځکه مصنف کښځ ددې ته پس د ا ترجمه قائمه کړه ، چې بکښې تې هغه طريقه او سودله ، چې ورسره نقل حدیث هم جارې پاتې کیدې شي. او د غلطانو ته هم ېچ پاتې کېدې شي ، هغه طریقه طریقه د کتابت حدیث ده ، چې اوریدلې شوی

احادیت او علم لره اولیکلی شی اوبیا نی بیان کړی ۱۰ والله اهلم مقصد ترجمة الباب حافظ ابن حجر گفته فرمانی چی دامام بخاری گفته طرز په دی ابوابوکبیی دفتها، به مینخ کبسی چی کوم مختلف فیه وی دا دی چی ترجمه علی سبیل الوتیال دکر کوی. په دی کبسی چی کوم مختلف فیه وی دا دی چی ترجمه علی سبیل ده .خکه چی دسلفریه دی کبسی یوجانب ،طرف، جزم سره نه ذکر کوی. داترجمه هم داسی اوبعضی حضرات دکتابت قائل وی اوبعضی حضرات دکتابت قائل وی اوبعضی حضرات دکتابت قائل وی ده استحباب باندی اتفاق شوی دی. ددی به استحباب باندی اتفاق شوی دی. ددی نه زیات داسی و نیلی شی چی د چا په ذمه د علم تبلیغ ازم و و متعین وی او ده ته د هیر بدلو ویره وی نو ده باندی کتابت علم واجب دی. ۱۰ مام شاه ولی الله فرمانی چی د مصنف مطلب دا بیانول دی چی د حدیث د کتابت اصل به حدیث کبنی موجود دی. ۱۱گرچی په زمانه د نبی طایع کنبی ددی ویری چی حدیث قرآن سره که نه نشی یا خلق د حفظ حدیث اهتمام نه کوی او په کتابت بهروسه شروع کړی. نو د کتابت حدیث نه منع او کړی شوه خو بیا روستو د کتابت اجازت ملاؤ شو. د حضرت عبدانه بن عمروبن العاص المان و اقعات په دی باندی کاده دی. ۱۱

حصرت شيخ الهند يجينك فرماني

د علّم د حفّاظت، بقاء او تبلیغ واشاعت د پاره کتابت ضروری آسان او فائده مند دی نو خکه یی باب کتابت العلم اولګولو چی د کتابت علم استحسان او د علمی کارونو د بقاء او حفاظت په غرض کتابت د حضورپاک ایم د ارشاداتو نه ثابت کړی بلکه علماؤ ته په کتابت باندی د ترغیب ورکولو طرف ته اشاره هم معلومیږی. م

د حدیثو کتابت د کتابت حدیث به باره کننی د سلفو نه اختلاف راروان دی. حضرت ابن مسعود. حضرت زیدبن ثابت. حضرت ابوموسی، حضرت ابوسعید خدری این و غیره یو جماعت کتابت حدیث ناخوبه کنرلی دی. دغه شان بل جماعت ددی قائل دی چی هغی کنبی حضرت عمر، حضرت علی، حضرت حسن، حضرت جابر ادائی وغیره شامل دی

په دې سلسله کښي دريم مذهب دا دې چې کتابت دې او کړې شي خو د يادولو نه پس دي. وران کړي شي

خو روستو دا ټول اخنلاف ځنم شواو اوس ددې په جواز او استحباب باندې د ټولو اتفاق

ً) الابوآب و التراجم(ص٥٥) -

^{ً)} الکنزالمتواری (۲۳س۳۴۶)_) فنج الباری (۲۰۴۰)) شرح تراجم ایواب البخاری(ص۱۵)

اوشول د حدیث د جمع کیدو او په دې باندې د منکرین حدیث د شبهاتو تردید په تفصیل سره مقدمه كښې تير شوي دې فلينظر ثبه

(١١١) حَدَّثْنَا فُخَذَدُ بْنُ سَلاَمِ قَالَ أَخْبَرَنَا وَكِيمٌ عَنْ سُفْيَاتَ عَنْ مُطَرِّفٍ عَنِ الشَّفيمِ عَنْ أَبِي جُمْيْقَةَ قَالَ قُلْتُ لِعَلِي هَلَ عِنْدَكُمْ كِنَابٌ قَالَ لاَ، إِلاَّكِتَابُ اللَّهِ، أَوْفَهُمْ أَعْطِيَهُ زَجْلَ مُسْلِمٌ أَوْمَا فِي هَذِهِ الصَّحِيفَةِ. قَالَ قُلْتُ فَمَا فِي هَذِهِ الصَّحِيفَةِ قَالَ الْعَقْلُ ، وَفَكَ اكُ الأَسِيرِ وَلاَ يُقْتَلُ مُسَلِمٌ بِكَ افِي ٢٨٨٢، ٢٥٠٧، ٢٥٠١

رجال الحديث

🕥 محمد بن سلام دا عبدالله محمد بن سلام البيكندي ﷺ دي. ددوي حالات كتاب الايمان باب قول النبي ﷺ الناعلبكم بالله وان البعوفة قعل القلب؛ لاندي تير شوي دي 🖰

ووقيع دا مشهور امام وكيع ابن الجراح بن مليح الرواسي الكوفي پينځ دې ابوسفيان ددوي

د اصبهان په يو کلي کښي پيدا شورگ

دي د خپل پلار جرآح بن مليح نه علاوه اسماعيل بن خالد، ايمن بن ناهل. عكرمه بن عمار. هشام بن عرود. امام اعمش خالد بن دينار. ابن جريج. امام اوزاعي. امام مالك. اسامه بن زيد. سفيان ثوري، امام شعبه، فضيل بن غزوان. مالك بن معول. هشاء الدستوائي أو مبارك بن فضاله منه وغيره نه هم روايت كوى

دده نه روایت کوونکو کښې سفیان ثوری(دهومن شیوغه) عبدالرحمن بن مهدې. ابوبکر بن ابي شيبه. عثمان بن ابي شيبه. ابو خثيمه زهير بن حرب. عبدالله بن مسلمه القعنبي. عبدالله بن مبارك، أبوكريب محمد بن العلاء، على بن خشره، محمد بن سلام، نصربن على. يحيى بن يحيى نيسابوري او ابراهيم بن عبدالله العبسى فين دى م

امام حماد بن زيد كينية فرماني لوشئت قلت: هذا الرجع من سفيان رئي

امام احمد و المنافي ما دايت اوع للعلم من وكيع ولا احفظ منه (*) يعني أما د وكبع نه زيات حافظ او يادولو والاليدلي نه دي.

⁾ مقدمة اوجز المسالك(١٤/١)-

⁾ كشف البخاري(٩٣/٢)-

^{ً)} تهذيب الكمال (٤۶٢/٣٠)-

^{°)} حواله بالا

ن) تهذيب الكمال (٤٧٠-٤۶٣/٣٠)-

[&]quot;) تهذيب الكمال (٤٧٠/٣٠) و سير اعلام النبلاء(١٤٢/٩)-) - تهذيب الكمال (٤٧١/٣٠) وسير اعلام النبلاء(١٤٤/٩)-

بیا دوی فرمانی کان وکیم مطهوم العقظ و کان وکیم حافظ و کان احقظ من حیدالرحین بن مهدی کیم ا کیم ' ') یعنی ' د وکیع حافظه فطری وه هغه و اقعی حافظ وو او د عبدالرحین بن مهدی په مقابله کښی د حفظ په اعتبار سره زیات قوی هم وو ،

دغه شان امام احمد گونگهٔ فرمانی ما رایت رجلا قط مثل وکیاع فی العلم والحفظ والاستاد والایراب مع عشوعودرم آیعنی ما په علم حدیث کنبی د حفظ، سند او فقهی ابوابو په اعتبار سره د وکیع پشان څوک لیدلی نه دی. ورسره ورسره هغه کنبی خشوع او تقوی هم وه.

بيا فرمانى كان وكيع بن الجراح امام المسلمين في وقته كرا

امام يحيى بن معين يُرين فرمائي الثبت بالعراق وكيع راً،

بل خانی فرمانی وکیع عندناثیت ،^۵،

دغه شان دا هم فرمانی. "ما رایت افضل من وکیع تیل له دلا ابن مهارك؟قال: تد کان لابن مهارك فضل ولكن ما رایت افضل من وکیع كان پستقبل القبلة ویحفظ حدیثه ویقوم الیل ویسم د الصوم و یفتی بقول بی حنیقة وكان قد سبع منه شیئا کثیرا قال وكان یعیی بن سعید القطان یفتی بقوله ایضا"، "،

یعنی ما د وکیع نه افضل څوک لیدلې نه دی هر کله چې دوی ته اوونیلې شو چې ابن مبارک هم افضل دې نو وې فرمانیل چې د ابن مبارک شرف او فضیلت په خپل ځانی خو ما د وکیع نه افضل څوک لیدلې نه دی هغه به قبلې طرف ته مخ کړو او حدیث به یې یادولو چې د تغظیم حدیث دلیل دې او د امام ابوحنیقه په قول باندې نې فتوی ورکوله هغوی د امام صاحب نه ډیر حدیثونه اوریدلې وو دغه شان امام یعیی القطان به هم د امام ابوحنیقه په قول باندې فتوی ورکولی

قبله تُه مَخْ کُولُ او خدیث یادول،مطلب دادې چې د حدیث د عزت او احترام د پاره به یې داسې کول او ظاهره ده چې دې سره تنهاني هم حاصلیږي

هغوی دا هم فرمانی چی ما رایت احدایعدث نله غیروکینغ و ما رایت رجلاقط احفظ من و کینغ، ووکینغ فی زمانه کلاردزاعی فرماند ۷

⁾ تهذيب الكمال (٤٧١/٣٠)-

^{ً)} تهذيب الكمال(٢٠٠)د

⁾ عواله بالا

^{ٍّ)} تهذيب الكمال(٣٠/٤٧٤)-

م حواله بالا

مُ تهذيب الكمال (٣٠/٤٧٤)-

^{ً)} تهذيب الكمال (٤٧٥/٣٠)-

يعني ما د وكيع نه علاوه بل څوك اونه ليدل چې د الله د پاره حديث بيانوي. او ما د وكيع نه اوچت بل حافظ نه دې ليدلې. د وكيع حيثيت په خپله زمانه كښې داسې دې لكه د امام اوزاعي پيځ ته چې خپله زمانه كښې حاصل وو

امام بحيى ابن معين كالي فرماني

رايت عند مروان بن معاوية لوحا قيد اسباء شيوخ: فلان رافض وفلان كذا و فلان كذا، ووكيع رافض، قال يعيى : فقلت له : وكيع غير منك، قال : منى ؟ قلت : نعم، قال : فها قال ل شيئا، ولوقال ل شيئا لوثب اصحاب الحديث عليه، قال : فهلغ ذالك وكيما، فقال : يعيى صاحبناً : \ ،

يعني ما مروان بن معاويه سره يو تختئ اوليدله چې په هغې باندې د شيوخو خومو ه کنده وو، اودا پې ليکلې وو چې فلانکې داختي دې او وو چې فلانکې داخي دې او و فلانکې داخي دې او و کيا داخي دې او وکيع رافضي دې، يعيى فرماني چې ما ورته اوونيل چې وکيع سنا نه خه دې هغه اوونيل چې ځما نه اما ورته وي او ستا نه دي انه بيا ني ماته هيڅ اونه ونيلې او که ونيلې وې نو محدثينو به راګير کړې وو، او وئيلې شوې دې چې هر کله دا خبره وکيع ته اورسيده نو وي فرمانيل چې يعيى خمونږه دوست دې ويي فرمانيل چې يعيى خمونږه دوست دې و

ابن عمار فرمانی "ماکان بالکوفلاق زمان وکی۶ اققه ولا اعلم بالعدیث منه کان وکی۶ جهبذا " یعنی *کوف کبنی د وکیع نه لوئی محدث او فقیه نه وو ، وکیع ډیر ماهر عالم وو

امام ابونعيم پينځ فرمائي ما دام هذا الثبت يعني وكيعا حيا مايفلج احد معه تابعني تر خو چې دا ثقه او ثبت سړې موجود وي دده نه څوك مخكښې نشي تلې

امام عبدالرزاق منظم فرمائی رایت الثوری وابن حیینة ومعبرا ومالکا، ورایت، فها رات عینای تعامثل وکیع آبیعنی نما ثوری. ابن عیینه معمر او مالک اولیدل او ما فلانکی فلانکی هم اولیدو خوخما سترکو د وکیع بشان او نه لیدلو

امام محمد بن سعد فرمائي وكان لقة مامونا، عالما، وقيعا، كثيرا الحديث، حجة، ٥٠

امام عجلي ملية فرماني كولى، لقة عابد، صالح، اديب من حفاظ الحديث وكان يفقى ر

ي سير کوي د کې د د کې د کتاب الثقات کښې کړې دې اوليکلې دی وکان حافظامتهنا، ۲.

^{ً)} تهذيب الكمال (٤٧۶/٣٠)-

⁾ تهذيب الكمال(٤٧٧/٣٠)-

اً) تَهَذِّيبِ الكِيالِ (٤٧٨/٣٠)-

⁾ تهذيب الكمال (٤٧٩/٣٠)-

⁾ الطبقات الكبرى (٤/٤/٣)-

⁾ تهذيب الكمال(٤٨٢/٣٠)-

⁾ الثقات لابن حبان(٥٤٢/٧)-

امام نووی فرمانی اجمعو علی جلالته ووفور علمه وحفظه واتقانه وورعه وصلاحه وعبادته وترثیقه واعتبادهٔ (۱ یعنی ددوی جلالت شان،کثرت علم، حفظ او پوخوالی،ویره،تقوی او نیکو کاری، عبادت گذاری او ثقاهت باندی د ټولو علماؤ اتفاق دی

حافظ ذهبی فرمائی وکان من بحود العلم وائهة الحفظ آبالبته امام وکیع باندې څه کلام هه د محدثینو نه نقل شوې دې. امام ابن المدینی پینځ فرمانی کان وکیع پلحن آب یعنی وکیع به بعضي وخت په روایت حدیث کښې لفظی غلطی کوله.

دغه شان فرماني كان فيه تشيع قليل راً،

د امام احمد أنيز به چې كله تپوس اوكړې شو اذا اعتلف وكيام وعبدالرحين بن مهدى يقول من ناغن ؛ نو هغوى جواب وركړو عبدالرحين يوافق اكثروغاصة فى سفيان وعبدالرحين يسلم منه السلف ويجتب شرب السكروكان لايرى ان تورم اوض الغرات ، ٥٠

یعنی د امام احمد کالی نه چې کله تپوس او کړې شو چې کله د وکیع او عبدالرحمن اختلاف پیدا شی نو د چا روایت به قبلیږی؟ نو امام احمد کالله افرمانیل چې د عبدالرحمن اکثر روایات موافقت کوی خاصکر چې کله د ابوسفیان نه روایت کوی.بل د عبدالرحمن نه سلف حضرات هم محفوظ او په امن دی هغوی به د نشه کونکی څیز نه څکلو او دفرات په زمکه کښی د زراعت هم قائل نه دې

تر څو چې د لحن فی الحدیث تعلق دې نو د لحن نه مراد نحوی غلطی ده، ۱ اګر چې د علم نحو اهمیت منلې شوې دې خو چونکه نحو یو داسې علم دې چې په دې کښې انسان هغه وخت پورې ماهر کیدې نه شی تر څو چې خان بالکل دې د پاره وقف نه کړی ځکه محدثینو به په قدر د ضرورت دا علم حاصلولو او په دې کښې به ډیر مستغرق کیدل نه، ۱ دې وجه نه محدثین داسی غلطیاني عیب نه شمیري

⁾ تهذيب الاسماء واللغات(١٤٥/٢)-

[&]quot;) سير اعلام النبلاء(١٤٢/٩)-

[&]quot;) ميزان الاعتدال(٢٣٤/٤)-

اً) حواله بالا

^د) حواله ب

أع قال السخاوى "فاللحن..كما قال صاحب المقياس بسكون الحاء امالةالكلام عن جهته الصحيحة في
العربية "فتح المفيث (١۶۶/٣) التسميع بقراة اللحان و المصحف) -

^۱ آكذا نومر ان نتعلم القران ثم السنة ثم الغرائض ثم العربية:الحروف الثلاثة فسرها بالجر و الكسر والوقع والنصب وذالك التوغل فيه قد يعطل عليه ادراك هذا الفن الذي صرح اثنت بانه لا يعلق الا بمن قصر نفسه عليه وذالك التوغل فيه قد يعطل عليه ادراك هذا الفن الذي سرح غيره اليه وقد قال ابو اخمد بن فارس في جزء ذم الغيبة " أن غاية علم النحو وعلم ما يحتاج اليه ان يقرأ فلا يلحن ويكتب فلا يلحن فاما ما عدا ذالك فسشفلة عن العلم... [بقيه حاشيه به راروانه صفحه...

. أمام نساني فرماني اندلايعاب اللحن وقد كان اسباعيل بن إبي خالديلحن وسفيان ومالك بن انس شخافيًّة

يعيي محدثينو د باره لحن څه غيب نه دې ځکه په امام اسماعيل بن ابي خالد .سفيان او مالک بن انس به شان محدیثینو به لحن کوو

اماء سلفي محضد فرماني وقدكان في الرواية على هذا الوضع قوم واحتج بروايتهم في الصحاح واليجوز تخطئتهم وتغطئة من اخترعته ۷٪ يعني په راويانو کښې ډير حضرات داسې دی چې هغوی نه لحن صدريږي خو په صحاح کښې ددې رواياتو نه احتجاج اوکړي شو لهدا اوس دې ته نه غلطي وئيلي شواو نهورته خطاا

بله خبره چې دده په باره کښې بيان کړې شوې ده هغه داده چې ده کښې لږه قدرې تشيع وه. امام احمد يُربيُّهُ هم وعيدالرحين يسلم منه السلف سره دي ته اشاره كړې ده. نو معلومه شوه چې د عبدالرحمن بن مهدى د طرف نه خو سلف محفوظ وو او امام وكيع نه سلف محفوظ نه وو خو روستو تاسو د امام يحيي بن معين په کلام کښې کتلي وو چې هغوي ددې ترديد کړې دي. دغه شان د امام احمد مُعَلَّةُ توثيق وتعديل كلمات روستو هم تير شوې دي او كتب رجال . کښې ددې په شان ډير کلمات موجود دي

خو دا خبره هم په نظر کښې ساتل پکار دی چې د متقدمينو په نيز د تشيع اطلاق په هغه څه کیږی چی کله څوک حضرت علی تائیز سره محبت شروع کړی او نورو صحابه کرامو بندې دوی ته اوچتوالي ورکړی که صرف په حضرت ابوبکر تائیز او حضرت عمر تائیز باندې هم فوقيت وركُرِي نو بيا به هم غالى في التشيع أو رافضي كنهلي شي أددي نددا معلوميري

چې کان فيه تشيع قليل د کومې درجه کلام دې دغه شان د امام احمد کمی دا وینا چې امام عبدالرحمن به د نشي څیز نه څکلو او د فرات د زراعت هم قائل نه وو .نو اشاره دېته ده چې امام وکيع د دواړو ځيرونو قائل وو

خو دا خبره هم واضحه نه ده اول دا چې ددې عيوبو باوجود امام احمد به دوي ثقه او معتبر گټړلو.دونمه خالص احتهادي مسئله ده.امام وکيع د يو خاص قسم نبيد د حلت قانل وو او هغديديي څكلوچي هغه په مسكر باندې مشهور شو حالاتكه هغه مسكر نه وو .صرف ددې

بقیه حاشیه د تیرمخ] وعن کل خیر و ناهیک بهذل من مثله " وقد قال ابو العيناء لمحمد بن يحيى الصولى:النحو في العلوم كالسلح في القدر اذا اكثرت منه صار القدر زعاقا وعن الشافعي قال انما العلم علمان علم للدين وعلم للدنيا فاللذي للدين الفقه والاخر الطب وعلى ذالك يعتمل حال من وصف من الائمة باللحن كاسماعيل بن أبى خالد الاحمسى وعوف بن أبى جميلة وأبى داود الطيالسي وهشيم والدراوردي "أفتح المفيث للسخاوي(١۶٢/٣)-

⁾ الكفاية (١٨٧) باب ذكر الرواية عمن كان لا يرى تغيير اللحن في الحديث)-ً) فتع المغيث للسخاري (١۶٣/٣)-

⁾ هدى السارى مقدمة البارى(ص٤٥٩)فصل في تمييز اسباب الطعن)-

وجه چې هغه په لږ ساعت پس مسکر کیدلو نو د مسکر په نوم باندې مشهور شو.نو ظاهر ده چې دا د يو مجتهد اجتهاد وو چې د هغې په غلطئ باندې هم يو نيکې ده.او دا خبره ر فرات د زمکې د کرباره کښې هم ونيلې شي چې دا د امام مجتهد اجتهاد وو

هم دغه وجه ده چې امام نووی يو فيصله کن خبره اوکړه اجمعوعلي جلالته وو**ق**ور علمه وختاه واتقانه وورعه وصلاحه وعهادته وتوثيقه واعتبادنان

د امام وکیم*کینځ* ولادت په ۱۲۸ه کښې شوې وو او وفات یې یوم عاشوره ۱۹۷ کښې اوشو دحمةالله تعالى واسعة

🕜 سفيان ددې نه سفيان ثوري مينه مراد دې يا سفيان بن عيينه مينه ع

علامه کرمانی پینځ فرمانی چې داوړه کېدې شي ځکه چې امام وکیع ته هم د سفیان ثوري نه سماع حاصله شوي ده اوهم د سفيان بن عيينه نه.دغه شان دا دواړه دمطرف نه روايت نقل کوي هغه فرماني چې دې خبره کښې د التباس څه بده خبره نه ده ځکه چې دواړه امامان او حافظان دی. ضابط عادلن او مشهور دی او د امام بخاری پینه د رجالو نه دی چی د هغوی نه

دوی په کثرت سره د حديثو تخريج کړې دې.

خو امام ابومسعودغساني دمشقي گولو په کتاب التقييد کښې ليکلې دی چې دا حديث د ابن عیبنه نه محفوظ دې اګرچې امام بخاري دا بیان نه کړو یزید عدنۍ کیلو دا روایت د سفیان ثوري نه نقل کړې دې ۲

حافظ ابن حجر مُشِیخ فرِمانی چې دلته د سفیان نه سفیان توری مراد دې ځکه چې امام وکیع اګرچې د دواړو نه نقل کړې دې خو بيا هم هغه د ثوري نه روايت زيات کوي او د ابن غيينه نه کړ او دا قاعده ده چې کله يوکس دوه متفق الاسم شيوخو نه نقل کوي د اهمال نسبت په صورت کښې په په هغې محمول کيږي چاته چې څه خصوصيت يعنی اکثار حاصل وي لهذا دلته سفیان ثوری متعین دی را

علامه عینی د حافظ کمکه رد کړې دې او لیکلې دی چې دا خبره واضحه او ثابت شده ده چې وکیع ته دواړو نه سماع حاصله ده او بیا دواړو ته د مطرف نه سماع حاصله ده نوځکه د حافظ ذَّكر كرده خبره راجع نشى كيدائي خاص كر امام مسعود خوصفاً ونيلي دى معفوظ د ابن عیینه روایت دی 🖒

د سفيان ثوري كيني حالات كتاب الايان باب علامة الهنائق كنبي تير شوي دى ٥،

⁾ تهذيب الاسماء واللغات (١٤٥/٢)-

⁾ شرح الكرماني(١١٨/٢)-

^{ً)} فتع الباري (٢٠٤/١)-

⁴⁾ عبدة القارى (١٥٨/٢)-

^د) کشف الباری (۳۷۸/۲)-

او د سفيان بن عيينه و مختصرا حالات په بد الوحى كښې تير شوې دى ااو تفصيلا كتاب العلم اب تول اد مختاف العلم اب العلم اب تار شوي دى ا

ن معلوف دا مطرف پشم البيم وقتح الطاء البهبلة وتشديد الراء البكسورة وبعدها قاماً، بن طريف بروزن عظيم را حارثي يكلي دي دواړو كښې يو مصحف دي (٥) مصحف دي (٥) مصحف دي (٥) مصحف دي (٥)

د دوی کنیت ابوبکر یا ابوعبدالرحمن دی، ۲،

دوی د اشعث نقاش، امام شعبی، ابواسحاق بیهقی، عبدالرحمن بن ابی لیله، حبیب ابن ثابت، سلمة بن کهیل، الحکم ابن عتیبه، امام اعمش او امام عاصم بن ابی النجود عیم نه روایت نقل کوی

ددوی نه روایت کونکو کښی سفیان ثوری.سفیان بن عیینه. ابوجعفر رازی. ابوحمزه سکری. ابو عوانه، محمدبن فضیل امام ابویوسف.هشیم بن بشیر او حریر بن عبدالحمید هنهوغیره دی ()

امام احمد بن حنبل او امام ابوحاتم رحمهماالله فرمائي تقة ٨٠٠

امام شافعی پُوَیُرُ فرمائی 'ماکان این عیینهٔ باحداشداعجابا منه بسطرف' ' بیعنی ابن عیینه ته چی څومره مطرف خوښ وو داسې ورته بل څوک خوښ نه وو

دواد بن علىد و مائى چى مااعرف عربيا ولاعجيا افضل من مطرف بن طريف ، ،

امام يحيى ابن معين فرمائي ثقة (١١)

امام عجلى يُسلط فرمانى صالحق الكتاب لقة ق العديث مايذ كرعنه الاخيرق الهذهب (*'). امام يعقوب بن سفيان يُسلط فرماني "كقة (*')

/www./w\ | | | · . . . /\

⁽⁾ کشف الباری(۲۳۸/۲)-

⁾ كشف الباري (۸۶/۲)-

^{ً)} تقريب التهذيب (ص٥٣٥) رقم (٤٧٠٥)-

¹⁾ المغنى في ضبط اسماءالرجال(ص 4 ٩)-

لم سيراعلام النبلاء (١٢٧/٢) وتهذيب الكمال (٤٢/٢٨)_

م) حواله بالا

۲) تهذیب الکمال (۶۲/۲۸)-

^{^)} تهذيب الكمال (۶٤/۲۸)-

أ) تهذيب الكمال (٤٥/٢٨) وشير اعلام النبلاء(١٢٧/٤)-

^{`)} تعليقات الكمال (۶۵/۲۸) وسير اعلام النبلاء(۱۲۸/۶)-

^{`)} تعليقات التهذيب (١٧٣/٢٨)-

⁾ تهذیب التهذریب (۱۷۳/۱۰)-

⁾ تعليقات تهذيب الكمال (٤٧/٢٨) نقلا عن المعرفة و التاريخ(٩٤/٣)-

امام يعقوب بن شيبه والم فرمائي القاتبت ١٠٠

حافظ ذهبي ويواكي فرمائي الامام البحدث القدوة ن

بیا فرمانی **ثقةاما**معاید ر^ی حافظ اسحد فرمانستشتناندا

حافظ ابن حجر فرمائي ا**ثقة فاضل** الم

ابن حبان ددوی ذکر خپل کتاب الثقات کښي کړې دې^{ده}،

ددوی وفات ۱۴۳ کښې شوې وور^۲،رحيهالله **تعال رحيةواسعة** @ الشعبي دا مشهور امام ابوعمروعامربن شراحيل الشعبي الکوفي پينځ دې ددوي مختصر

ن المسابق دا مستهور الدم ابو عمورت مربق من مين المسابق و عال عالم الدون و عالم الموردي و مست. حالات به "کتاب الایمان پاپ المسلم من سلم المسلمون من لسانه ویده" لاندې تیر شوې دی. "). دلته لر په تفصیل سره ددوی حالات ذکر کیری

دنـه لږ په نفصيل سره ددوی خاوب د تر تيږي د امام شعبي پينځ ولادت د حضرت عمر څانځ د وفات نه شپږ کاله پس شوې وو^،

ه ۱۰۰ مصبی هم وردی تا سرت سرسود و تا تا مسپوری تا پیش سری در . په اوچتو تابعینو کښې ددوی شمیر کیږی تقریبا پنخه سوه صحابه کرامو سره ددوی ملاقات شوي دي(ُ)

دوی د حضرت علی، حضرت سعد، حضرت سعید بن زید، زید بن ثابت، عباده بن الصامت. ابوموسی اشعری، ابومسعودانصاری، ابوهر پره، مغیره بن شعبه، ابوجعیفه، جابر بن سمره، جابر بن عبدالله، عبادله اربعه، ابوسعید خدری، انس ترایش، عائشه، ام سلمه، میمونه بن الحارث او اسماه بنت عمیس ترایش نه نقل که ی

په تابعینو کښې د حارث اعور ، خارجه بن الصلت . زر بن حبیش ، قاضي شریع ، عبد الرحمن بن ابي لیلي عروة بن مغیره ، عمرو بن میمون ، مسروق بن الاجدع او ابو برده بن ابي موسي اشعري الله نوايت كوي .

او ددوی نه روایت کونکو کښې ابواسحاق. اسماعیل بن ابی خالد. بیان بن بشر. زکریا بن ابی زائده. سلمة بن کهیل. سماک بن حرب. عاصم الاحول. قتاده. مطرف بن طریف. مغیره بن مقسم. مکحول شامی. منصور بن المعتمر، امام ابوحنیفه. او یونس بن ابی اسحاق

⁾ تهذيب التهذيب(١٧٣/١٠)-

^{ً)} سير اعلام النبلاء(١٢٧/۶)-ً) الكاشف للذهم (٢٤٩/٢)، قم

^{ً)} الكاشف للذهبي(٢۶٩/٢) رقم (٥٤٧٧) -أ) تقريب التهذيب(ص ٥٣٤)رقم (٤٧٠٥) -

⁾ تعریب البهدیب(ص ۴ ۵۱)رقم (۲۰۰۵). () الثقات لابن حبان(۹۳/۷).

⁾ السحات دين حين(۱۲۲۰) . *) الكاشف للذهبي(۲/۲۶) رقم (۵٤۷۷) -

۷) کشف الباری (۶۷۹/۱)-۵) تهذیب الکمال (۲۸/۱۶)-

[٬] الكاشف للذهبي(٥٢٢/١)رقم (٢٥٣١)-

وغيره شامل دى، ١٠

ال محار مجيد فرماني ما رايت فيهم افقه من الشعبي . " ،

حضرت حسن بصرى يُحَيِّدُ فرماني كان والله كهوالعلم عظيم العلم قلايم السلم من الاسلام يه كان "،"

اما مكحول مُولِيَّة فرماني ما دايت اققه من الشعبي ."،

اماء بحيى بن معين او امام ابوزرعه وغيره فرماني **ثقة** ن^ه.

امام يحيى بن معين والله فرمائي اذاحدث الشعبي عن رجل فسمان، فهو لقة يحتج بحديثه: ١٠.

امام عجلي يُزيُّهُ فرماني ومرسل الشعبي صحيح لا يكاديرسل الاصحيحان ٧٠

امام سفيان بن عيينه فرماني كانت الناس تقول بعد الصحابة: ابن عباس في زمانه والشعبى في زمانه والشعبى في زمانه (والثورى في زمانه (^)

ابوحصين والمانى مارايت اعلم من الشعبى وأن

ابواسحاق الحبال يُحطُّهُ فرماني كان واحد زمانه في فنون العلم المنه

عاصم بن سليمان فرماني أما رايت احدا بحديث اهل الكوفة و البصرة والحجاز واللافاق من الشعبي الشعبي الشعبي الشعبي الشعبي الشعبي الشعبي الشعبي الشعبي المالية و الحاديثو و شعبي نه غبّ بل عالم او نه ليدلو

امام شعبي منه عبد الرحمن بن الاشعث كندى منه سره ميلاؤ شو او د حجاج بن يوسف خلاف يي خروج كړې وو خو بيا روستو معافى تلافى اوشوه او دغه شان دوى د حجج د گرفت رئ نه بچشول ۱۲۰ م

⁾ تهذيب الكمال (۲۹/۱۶) و تهذيب التهذيب (۶۵/۵). آ.

رٍّ) تهذيب الكمال(٣٤/١٤)-

^{ً)} حواله بالا

¹) تهذيب الكمال(٣٥/١٤)-

⁽) جواله بالا

مُ الديالا

⁾ توديد الكمال (١٤ ٢٣): (٢) تهذيب الكمال (١٤ ٢٣):

[﴾] تهذيب النهذيب(٥ ٤٧)

⁾ تهذیب التهذیب(۵ ۴۹)) تهذیب التهذیب (۶۹۰۵)

⁾ حواله بالا

⁾ سير اعلام النبلاء (٢٠٢٩)

[&]quot;) سيراعلام النبلاء(٢٠٤/٤) -

په طبیعت کښې د خنده ماده ډیره وه فرمانی چې یو خل ماته یو کس راغلو دغه وخت ماسره یوه زنانه ناسته وه دغه کس د راتلوسره تپوس او کړو ا**یکهاالشعبی ن**و ما ورته اوئیلې ۱**۵ د ۱**۰٪ د امام شعبی وفات په ۲۰ ۱ ه یا ۱۰۴ د کښې اوشود ()

ابوجیفه دا حضرت ابوجیفه وهب بن عبدالله السوائی ای دی ددوی شمیر په صغارصحابه کرامو کنبي کیږی ځکه چې کله حضورپاک هوفات شو نو دوی دغه وفت بلوغت ته رسیدلی نه وور)

ر مراسس می در است در است در است می در است است است است که نه هم روایت کوی در محضور باک است که نه هم روایت کوی ددوی نه روایت کونکو کنبی ابواسحق سبیعی، سلمة بن کهیل، عامر شعبی، علی بن الاهمر، عون بن ابی جحیفه، زیاد بن زید، حکم بن عتیبه او اسماعیل بن ابی خالد در شامل دی ()

حضرت علی نگائل سره ددوی خاص تعلق ووهغوی چې به کله خطبه ورکوله نو دوی به لاندې ولاړ وور^هې

حضرت على الله دوى ته د پوليس ذمه دارى وركړې وه. دوى د حصرت على الله په ټولو مشاهداتو كښې شركت كړې وور ()

حضرت على المنظ دوي ته وهب الخير لقب وركري وورال

حضرت ابو جعیفه ای نه ټول پنځه خلویښت آخادیث مروی دی په دې کښې متفق علیه دوه حدیث ابو جعیفه ای کښې متفق علیه دوه حدیثونه دی او امام بخاری په دوه احادیثو کښې متفرد دې ۵ دیده او امام مسلم په دریو احادیثو کښې متفرد دې ۵ دیده و ارضاء دی ۵ دیده و د دوی وفات په ۷۴ هد کښې شوې دې ۵ رضا المحته وارضاء ۵ حضرت علی الله علی الله علی الله ۱۳۵۰ د حضرت علی الله ۱۳۵۰ د حضرت علی الله ۲۰۰۰ کښې تیر شوی دی

قوله: هل عند كم كتاب؟ آيا تاسره يو كتاب شتد؟

حضرت ابوجعیفه گرفت فرمانی چی ما د حضرت علی گرفت نه تپوس او کو و چی آیا تاسره داسی خه شته چی حضور پاک ند و حی نه صرف تاته در کړی وی او ددې دلیل دادې چي امام

 [&]quot;) سيراعلام النبلاء (٢١١/٤)-

^{ً)} الكاشف(٥٢٢/١)رقم (٢٥٣١)-

[&]quot;) الاصابة (٤٤٢/٣) وتهذيب الكمال (١٣٢/٣١)-

^{*)} تهذیب الکمال (۱۳۳/۳۱)-

²) سیراعلام النبلاء(۲۰۳/۳)-*) سیراعلام النبلاء (۲۰۳/۳) وعمدة القاری(۱۵۹/۲)-

^{ٌ)} الأصابة (٤٤٢/٣)

[^] تهذيب الأسماء واللفات (٢٠٢/٢) وخلاصة الخزرجي(ص١٨٥)-

⁾ سيراعلام النبلاء(٢٠٣/٣)-

بخاری په کتاب الجهاد کښې روايت نقل کړې دې هل منډکم هم من الوس الاما في کتاب الله (). په مسند اسحاق بن راهو په کښې دی هل ملبت شيئامن الوس ().

ددې سوال مطلب دادې چې د آهل بيتو او خاصكر د خضرت على الله د پاره خصوصي هدايات شوې دې چې د هغې نه نور څوک خبر شوې نه دې آ،

دوله: قال: لا الاكتاب الله او فهم اعطهه رجل مسلم اوما في هذه الصحيفة: وني فرمانيل چې نا سوا د كتاب الله نه يا هغه چې يو مسلمان ته وركړې كيږي يا څه چې دې صحيفه كښي دي

یعنی ما سره مخصوص وحی نشته سوا د کتاب الله یا هغه علم چې یو انسان په خپل قوت عاقله او فهم سره حاصلوی یا څه چې دې صحیقه کښې دی م که مال چې د د عبادت د د د م داد علم لان دې چې د عبادت تابعدان د به عما

علامه ابن قيم پخته فرماني چې دې نه مراد علم لدني دې چې د عبادت. تابعداريي، په عمل کښې د اخلاص او د کتاب او سنت نه د علم حاصلولو نتيجه ده.

علامه ابن قیم د خبرې نه دا معلومیږي چې د علم لدنې د پاره درې شرطونه دی اول دا چې انسان عمل اوکړی او بندګی اوکړی دویم دا چې دې کښې اخلاص وی او دریم دا چې د کتاب اوسنت مطابق اوکړې شي او یو څلورم څیز دادې چې د حضورپاک ﷺ متابعت پکښې هده ی

بعضي وخت علم د کتاب وسنت مطابق وی خو متابعت پکښې نه وی او متابعت خو دا غواړی چې نیت صحیح وی او افعالو کښې د امام پسې تگ وی اوس که څوک په ظاهره د امام مشابهت اختیار کړی خو په نیت او اراده کښې مخالفت کوی نو دا سړې تابعدار نه دې مثلا حضورپاک کا حدود قائم کړل قصاص یې واخستلو چې د معاشرې نه د جرائمو ختمیدنه اوشی، اوس که څوک قصاص اخلی او په زړه کښې یې ذاتی د انتقام جذبه وی نو دد فاهری کار خو د سنت مطابق دې خو په باطن کښې مخالف دې، لهذا د کتاب او سنت نه

علم حاصلولو نه پس پکار دی چې د حضورپاک گه په طریقه یې اوکړې شی والله اصلم ا**یا د فهم نه مراد څه لیکونکې څیز دې؟** دلته چې حضرت علی *تانو* د کوم فهم ذکر کړې دې یا دا څه لیکونکي څیز وو یا نا؟

علامه ابن منیر تولید فرمانی چې دا لیکلې شوې څیز وور^۱، علامه ابن منیر تولید فرمانی چې دا لیکلې شوې څیز وور^۱،

علامه سندهى هم احتمالاددې ذكر كړې دې، فروالله اعلم

^{ً)} صعيع البخاري(٢٨/١ ٤) كتاب الجهاد والسير باب فكاك الاسير (رقم ٣٠٤٨)-

^{ّ)} فتع البّارى(٢٠٤/١)-") شرح الكرمانى(١١٩/٢)-

⁾ فتع الباري(١/٩٠١-

مُ حاشية السندي على صعيح البخاري(٥٥/١)-

ذكر روستو راروان دي.

ددې نه دا معلوميږي چې حضرت علي الله سره دې نه علاوه بل څه نه وو چې وحي سره يې تعلق ساتلو

د صحیح مسلم یو روایت کښې دی من زهم ان مندها شیثا نقراه الاکتاب الله و هذه الصعیفة قال: وصعيفة معلقة ف قراب سيفه _ ققد كذب ن

يعني ځوک چې دا دعوي کوي چې ما سره کتاب الله او دې صحيفي نه علاوه بل څه هم دي چې هغه مونږه وايوو نو هغه دروغژن دې او فرمانيلې شوې دی چې ددوی د تورې په نيام كښى يو صحيفه هم وه٠

دغه شان صحيح بحاري كښې دي والله ماعندامن كتاب يقرا الاكتاب الله و مالي هذه الصعيفة ، "، قوله: قـال قلت فمـا في هذه الصحيفة؟: ابو جحيفه فرماني چي ما تري تپوس اوكړو چې دې صحيفه کښي څه دی؟

قوله: قال العقل: حضرت على الله الوفرمائيل چي دېكښي عقل دي

ع**ق**ل ديت ته وئيلې شي ر^۲ ،

اصل کښې به د دينت اوښان ولي الدم دروازې سره تړلې شول نو ځکه دې ته يې عقل اووني او دى نەپس بيا ھر ديت تەعقل اوونيلى شور"،

قوله وفكاك الاسير: او قيديان پريسودل

يعني په دې کښي د قيديانو د خلاصيدو احکام او د هغي ترغيب ورکول وور^ه

قوله: <u>ولايقتل مسلم بكافر:</u>او دا چې يو مسلمان به د كافر په بدله كښې نه قتل كيږي دا مسنله د کتاب الديات ده خو بيا هم لږ تفصيل دلته بيانوو

ایا یو مسلمان به د کافر بدله کشی قصاصاً قتل کولی شی که نه؟ انمه ثلاثه او جمهور فرمانی چى مسلمان د كافر بدله كښى قصاصا قتل كولى نەشى

⁾ صعيح المسلم كتاب الحج باب فضل المدينة رقم (٣٣٢٨)-

⁾ صحيح البخاري (١٠٨٤/٢) كتاب الاعتصام بالكتاب و السنة باب ما يكره من العمق والتنازع في العلم رالعلو في الدين و البدع(رقم ٧٣٠٠)-

^{ً)} معجم مقاييس اللغة رقم(\$ /٧٠)

[&]quot;) سميت الدية عقلا لأن الابل التي كانت توخذ في الديات كانت تجمع فتعقل بفناء المقتول فسميت الدية عقلا وان كانت دراهم ودنانير وقيل سميت عقلا لانها تمسك الدم مجم مقايس اللغة (٢٠/٤)_) فتح البارى(١/٥/١)-

امام ابوحنيفه، امام ابويوسف، امام محمد، سعيد بن المسيب او ابراهيم نخعي الله فرماني كه وماني كه وماني كه يو مسلمان يو ذمى كس قتل كوو نو دى بدله كنبي به دا مسلمان قتل كولي شي البته د حد كاف بدله كنبي به قتله لي نشر ()

د بي كافر بدله كښې به قتلولې نشي ﴿ ﴾ د اثمه ثلاثه دليل دائمه ثلاثه دليل د حضرت على الله حديث باب دې چې په هغې كښې ښكاره ده لايقتل مسلم بكالم:

د اتمه تلاثه د دليل جواب احنافو ددې ډير جوابونه ورکړې دی، يو جواب چې ډير مشهور دې هغه دا چې دلته کافر نه مراد حربي کافر دې او ددې دليل دا روايت دې الالايقتل مومن پکائل ولادم مهدال مهدا دالد داده

دا حدیث امام نسانی او آمام ابوداود په خپل سنن او امام طحاوی په شرح معانی الاثار کښې دحضرت علی نام نه روایت کړې دې ()

حافظ ابن عبد الهادي الميك فرماني سنده صعيح رم

حافظ ابن حجر فرمائي استادة صحيح ()

دغه شان دا روایت امام احمد او امام ابوداود کنگهٔ عبروین شعیب من ایبه من جده به طریقی سره نقل کړې دې ^{(ه}ابن عبد الها دی *کنگهٔ* فرمانی استاد تعصین (^۲) دا حدیث دې طریقی سره د نورو حضراتو نه هم مروی دې (^۲)

ددې حدیث نه استدلال داسې کیږی چې په دې کښې ولا ډومهدنی مهده په مومن باندې عطف دې اوس مطلب دا شو چې لایقتل مومن ولا ډومهدنی مهده پکانی یو مومن یا دوعهد دمی به د کافر بدله کښې نشی قتلولې او دمی چې د کوم کافر بدله کښې قتل کولې نشی هغه کافر حربی دې او دا قاعده ده چې د معطوف او د معطوف علیه حکم یو وی هرکله چې دمی د کافر دمی بدله کښې نشی قتلولې نو هم دغه شان دا حکم د مسلمان هم دې (^)

۱) عمدة القارى(۱۶۱/۲)-

^{*}) كتاب سنن النسائى باب سقوط القود من العسلم للكافر رقم(٤٤٤٩) وسنن ابى داود كتاب الديات باب ايقاد العسلم من الكافر رقم(٤٥٣٠)وشرح معانى الآثار(٢٤/٢)-

يد السام من الحادث (٣٣٥/) كتاب الجنايات باب ما يوجب القصاص رقم (٧٧٣١)-

⁾ الدراية في تخريج احاديث الهداية (٢٤٢/٢) كتاب الجنايات رقم(١٠٠٨)-

نُ مسند احمد(١٨٠/٢) وسنن ابي داود كتاب الديات باب ايقاد العسلم من الكافر رقم(٣٥٣١)-

⁾ نصب الراية(٣٣٥/٤) كتاب الجنايات باب ما يوجب القصاص رقم(٢٧٣٢)-) رواه ابن ماجه فى سننه فى كتاب الديات باب لا يقتل مسلم بكافر رقم (٢۶۶٠) من حديث عبدالله بن عباس رواه البخارى فى تاريخه الكبر من عائشه كما فى نصب الراية (٣٣٥/٤)-

^{^)} شرح معانی الآثار (۲/۲٪)-

امام شافعي ﷺ فرماني چې دې حديث کښې دوه حکمونه جدا جدا بيان شوې دي اول حکم څو عهد دمه کښې وي هغه په قتلولي نشي

امام طعاوی ددې 🕦 جواب دا ورکړې دې چې دا دواړه خبرې جدا حدا کول صحیح نه دی ځکه چې ددې حديث تعلق الدهاء البسفوك بحشها بيحض سره دې ځکه چې د حضورپاک ﷺ ارشاد دې البسليون يه على من سواهم يتكانو دماگهم و يستل بنمتهم ادناهم. دې نه پس يې اوفرمائيل **لايقتل مومن بكانرولا ذومهدانى مهداد** معلومه شوه چې ددې حديث تعلق هغه وينې سره دې چې قصاصا اوبهيدلې شي د عهدذمه د وجه نه. د حرمت دم متعلق نه ده ()

دويم جواب دادې چې ددې حديث تعلق زمانه جاهليت سره دې يعنې دغه زمانه کښي که يو کس يو کافر مړکړې وو او بيا قاتل مسلمان شو نو دغه مسلمان به د دغه کافر بدله کښې ادا که د دغه کافر بدله کښې ادا که د د قتل کولی نشی

ددې قرینه دا ده چې "لایقتل مومن پکافل دوه موقع باندې نازل شوې دې اول هغه موقع چې حضورپاک ﷺ مدینه منوره ته تشریف راوړو او اهل ایمان او ددې ځانې اوسیدونکو سره دا معاهده اوشوه كومه چې امام ابوعبيدالقاسم بن سلامگيلي په کتاب الاموال کښې ذکر کړې ده چې د هغې سند دا دې حداثق يحيق بن عبدالله بن بكورومېدالله بن صالح قالا:حداثنا الليث بن سعد قال: حدثنى عقيل بن عالد عن ابن شهاب انه قال: بلغنى ان رسول الله كلط كتب بهذا الكتاب ﴿ ` مخکښې د اوږدې معاهدې الفاظ دی (۲)

چې په هغې کښې ذکر دی 'وان البومتين البتقين ايديهم علىکل من پنۍ و اېتنگى منهم دسيعة ظلم او اثم او مدوان او قساد بين المومنين وان ايديهم مليهم جميعه ولوكان ولد احدهم لا يقتل مومن في كافر ولا ينعم

يعني د ايمان او اهل تقوي لاس په هغه چا دې چې ظلم کوي اهل ايمان سره، پکار دي چې ظلم. محناه او د اهل ایمان په مینخ کښې فساد ختم کړی او په یو خانی د ظالم مخ نیوی اوکړی انحرچې ددوی د اولاد نه دا ظالم ولې نه وي یو مومن به بل مومن د کافر بدله کښې نه قتلوی او ندبه د مومن مقابله کښې د کافر مدد کوی

د علاّمه ظفراحمد عثماني که په نیز دا مرسل صعیّع دې او په دې کښې شک نشته چې دې نمراد کافر حربي دې نده به يې د قاتل نه مراد کافر حربي دې نه چې د مي د اهل عرب دا عادت وو چې د مقتول بدله به يې د قاتل

^{&#}x27;) شرح معانى الآثار(۲۴/۲)-

اً كتاب الاموآل لابي عبيد(ص٢٠٢)كتاب رسول الله بين العومنين و اهل يثرب و موادعته يهودها مقدمة المدينة) ") كتاب الاموال(ص٢٠٢)-

 ⁾ كتاب الاموال(٢٠٣)-

د اولاد نه اخستله ځکه حضورپاک∰ دې نه منع اوفرمانیله او ارشاد یې اوکړو چې د یو مومن د پاره دا جانز نه دی چې بل مومن په دې بنیاد قتل کړی چې ده د جاهلیت زمانه کښې یو کافر قتل کړې وو (`)

په بله موقع کښې چې دا اوفرمائيل ۱۲ يقتل مومن پکافل نو دا د فتح مکه موقع وه چې حضورپاک نه په خطبه کښې دا اعلان اوفرمائيل، امام بيهقي د عطاه،طاوس مجاهد او حسن بصري پینل نه نقل کړې دي ۱۱ درسول اله ۱۱۴۴ تالایورالفتح لایقتل مومن پکافرند؟

امام بیهقی گی فی فرمانی کال الشافی وهذا عنداهل البغازی ان رسول الله تکم به فی علبته یوم القتح ده دیودی عن النبی تلی مسندا من حدیث عبود بن شعیب و حدیث عبران بن صین (أُ

وهویروی من انتهی هم مسندا من حدیث مورد بن سیب و حدیث متوان بن سید . امام شافعی پیشه فرمانی چی دا خبره اهل مغازی ته ښکاره ده چی حضوریاک تا دا فتح مکه موقع کنبی فرمانیلی وه دا د عمرو بن شعیب او عمران بن حصین نه مسندا هم مروی ده.

دې نه دا معلومه شوه چې حضورپاک گل کوم اعلان فرمانیلې وو چې الاکل ماثرةاد دمرادمال یدې فهو تحت قدی هاتین سیرة این هشام ۱۳/۲۰ وزاد البعاد ۱۲/۲۰- یعنی هر قسم انتقامی کاروائی قصاص یا د مال دعوی کیږی هغه ټول خما د خپو لاندې دی دلته د دم نه په جاهلیت کښې توې شوې وینه مراد ده

ددې وجه داده چې اهل مغازي او سير ذکر کړې دی چې دعهد دمه ذکر د فتح مکه نه پس ددې وجه داده چې اهل مغازي او سير ذکر کړې دی چې دعهد دمه ذکر د فتح مکه نه پس شروع شوې دې، دې نه مخکښې د دوی او د مشرکينو په مينځ کښې يو ټاکلې مودې پورې مصالحت شوې وو خو دا مطلب ني نه وو چې کافر د اسلام په دمه کښې داخل شور بنو د فتح مکه موقع کښې دا فرمائيل لا يقتل مومن پکافرا د هغه کافرو باره کښې وو چاسره چې

^{&#}x27;) اعلاء السنن (٢/١٨)كتاب الجنايات باب قتل المسلم بكافر)-

[&]quot;) كتاب الاموال(ص207)

[&]quot;) کتاب الاموال(ص ۲۰۶) -*) السننن الکبری للبیهقی(۲۹/۸) کتاب الجنایات باب فیمن لا قصاص بینه باختلاف الدینین) -

مُ حواله بالا

م اعلاء السنن(١٠٢/١٨)-

مصالحت شوې وو ځکه چې هغه وخت د اهل دمه وجود د سره وو نه، او په دې قرينه داحديث

دې ولادومهدال مهده او د الله تعالى ارشاد دې فاتبوالصيام اليهم مهدهم الى مدتهم 🖒

حاصله دا شوه چې دغه وخت د گفارو دوه قسمونه وو ، يو هغه اهل حرب وو چاسره چې معاهده نه وه شوې او بله هغه چا سره چې يو نيتې مقرر پورې مصالحت شوې وو ، ذمی څوک هم نه وو لهذا د «لايقتل مومن پکالل نه صرف اد دوه قسم مراد دی نو اوس به د قصاص نفي دا حکم د حربي معاهد باندې منحصر وي په دې کښي د ذمي د داخليدو هيڅ تصور نشته ،) مذکوره جواب باندې اشکال او د هغې جواب په دې دا اشکال دې چې بيا خو دې حديث کښي صرف د جاهليت د زماني ذکر دې د اسلام د زماني حکم خو ذکر به دې .

ددې جواب دادې چې آلله تعالى حضورپاک که ته جوامع الکلم ورکړې وو هغوى به په مختصر کلمه کښې ډير مسائل بيان کول دلته هم اګر چې لايقتل مسلم پکانې د جاهليت په زمانه رنړا اچوى خو ورسره د اسلام د زمانې هم حکم بيانوى. او دا بله خبره ده چې د نورو دلاتلو په رنړا کښې دلته د کافر نه حربي کافر مراد دې دمي مراد نه دې. والله اعلم

علامه انور شاه کشمیری گفته فرمانی لایقتل مسلم کافی دلا ذو مهدق مهدی به تشریح کنیی
د علماؤ اختلاف دې چې آیا دا دواړه خبرې د قصاص متعلق دی ځنګه چې احناف فرمانی یا
ړومبئ جمله لایقتل مسلم پکافل د قصاص متعلق او دویمه اولا قدمه د فی مهدی حرمت دم
متعلق ده؟ څنګه چې جمهور فرمانی.

اوس که مونږ د جمهور موافقت او کړو او اومنو چې د الافرمهد قامهد تعلق حرمت دم سره دې تولق حرمت دم سره دې تولل می شی دې تولل دې تولل دې تولل می شی ددې وجه داده چې د ذمی بدله کښې د مسلمان قتلولي شی ددې وجه داده چې د ذمی بدله کښې د مسلمان قتلولو مسئله د عقد ذمه نه ماخو د ده اهل ذمه خپل مالونه څکه خرج کړل چې ددوی جان او مال د مسلمانانو پشان محفوظ شی،نو که څوک د هغوی په جان باندې زیاتي کوی نو د هغه نه به بدله اخستلې شی ځنګه چې د مسلمان د زیاتی بدل اخستلې شی ځنګه چې د مسلمان د زیاتی بدل اخستلې کیږی

داسې اوگڼړه چې د يو دمې مال دارالاسلام کښې څوک پټ کړې نو غل که مسلمان وي او که داسې اوگڼړه چې د يو دمې مال دارالاسلام کښې څوک پټ کړې نو غل که مسلمان وي او که کافر خو لاس به ترې کټکولې شي دغه شان که دمې څوک قتل کړې نو قصاصا به قتلولې شي اگرچې مسلمان وي يا کافر يا دمې، او حديث الايقتل مسلم پکافر کښې د کافر يه دمې د ديث مطلب دا شو اولايقتل مسلم د دې پکافر يد د ديث مطلب دا شو اولايقتل مسلم د دې پکافر يو مسلمان او دمې به د کافر په بدله کښې نشي قتلولې څکه چې دمې په مللم خرچ کولو سره د مسلمان د کافر بدله

^{&#}x27;) الترية/٤)-') اعلاه السنن (١٠٢/١٨)-

کښې قتلولې نشی دغه شان په ذمې هم نه شی قتل کولې، معلومه شوه چې دلته عبارت پټ نه دې بلکه مطلب بيان کولې شي ()

د احنافو دلائل د احنافر استدلال ددې باب د عام نصوص نه دې یا ایها الثمن آمتو کتب ملیکم التصاص احستلی شی چا التصاص التحتلی شی چا چی به تیره څیز سره په قصاص احستلی شی چا چی په تیره څیز سره په قصد سره قتل کړې وی البته که د تخصیص څه دلیل وی نو تخصیص په وی اکرچې مقتول ذمی وی یا غلام، مذکر وی یا مونث څکه چې د قتلی لفظ ټولو ته شامل دې د

دلته څه اشکال ندې پکار چې په آیت کښې خطاب اهل ایمان ته دې نو د قتلی تعلق به هم اهل ایمان سره وی، ددې وجه داده چې تر سو دلیل مخصوص نه وی راغلې هغې پورې په عموم لفظ باندې عمل په مونږ باندې لاژم دی او دې آیت کښې داسې څیز نشته چې د بعضې د پاره موجب د قتل وی او د بعضې د پاره نه وی

مخکښې تمن عقی له من اعیدش نه هم اشکال ندې پکار چې دلته اخیه ونیلي شوې دې او دا ښکاره ده چې کافر دمسلمان رور نشی کیدې نو ځکه د آیت د راوړلو مراد دا شو چې دلته د

قتلى نه تتلى البومنين مراد دې

دا اشكال دلته صحيح نه دې خكه چې كله په يو نص كښې عموم وى او روستو د خصوص دا اشكال دلته صحيح نه دې خكه چې كله په يو نص كښې عموم كښې تخصيص نه پيدا كيږى. الفاظو سره چې په دې باندې عطف وى نو په دې سره په عموم كښې تخصيص نه پيدا كيږى. څنګه چې دا ايت و المطلقت ياريمن بانفسهن ثلاثة ترې راه مطلقه ثلاث ته هم شامل دې. مخكښې ارشاد دې واذا طلقتم النساء فبلغن اجلهن فامسكوهن بيعوف او سموهن بيعوف و مخكښې ارشاد دې و يعولتهن احق برهدن في ذالك () ظاهر ده چې ددې دواړو آيتونو تعلق ماهده خالى ارشلات مطلقه سره دې ددې باوجود والمطلقات ياريمن بانفسهن ثلاثة ترې په عموم كښې څه الشلات مطوي د دينى رورولئ څنګه چې تخصيص ندې شوى د دينى رورولئ څنګه چې فرمانيلې دى والى اداغاهم هود ()

۱) فیض الباری(۲۱۰/۱)-

^{ً)} البقرة/۱۷۸) -ً) احكام القران للجصاص(۱۳۳/۱) -

⁾ البقرة (٢٣٨) -) القرير (٣٣١)

⁾ البقرة ٢٣١) -) البقرة ٢٢٨) -

⁾ الاعراف/6*0)*-

دويم آيت چې احنافودهغې نه استدلال کړې دې هغه دادې وکټينا مليهم فيها ان الن*قى* پالتقس () ددې عموم هم دا تقاضا کوی چې د کافر په بدله کښې دې مسلمان قتل کړې شي دغه شان ارشادباري تعالى دي ومن قتل مطلوما قلد جعلنا لوليه سلطانا ركي نه دا هم معلومه شوه چې د مسلمان يا کافر تخصيص نشته ځکه چې د سلطان په مفهوم کښې ځود يعنی قصاص شامل دى او په دې كښى تخصيص نشته ٢٠

علامه ظفرعشماني كي فرماني چې د قصاص باره كښې د امام ابوحنيفه كلي قاعده دا ده چې د کوم سری وینا عصمت مقومه سره علی التابید معصوم وی او هغه په قصد سره قتل کړې شي او قصاص اخستل مشکل نه وي نو اخستل ئي واجب دي په دې کښي يو قيد يا

شرط نه وي نو قصاص به نه وي(*). دغه شان د امام صاحب په نيزيو قانون دادي چې کله يو نص د اصل کلي مقابل وی نو کتلی بهشی چی نص د تاویل احتمال لری که نه؟ که لڑی نو په دی اصل کلی کتبی به د نص د وجه تاويل كيږي ځكه چې په يو وخت په دواړو عمل نشي كيدلي.

او که په نص کښې د تاويل احتمال وي نو تاويل به کيږي چې دواړو دليلونو باندې عمل

رو ساید سن بسبې د دواړو عمل کول په یو د عمل کولو نه بهتر دې(*) اوکړي شی،ځکه چې په دواړو عمل کول په یو د عمل کولو نه بهتر دې(*) علامه طفرعثمانۍ کله فرمانۍ چې څوک په امام صاحب باندې کلام کول غواړی نو اول دې په دې اصول کليه باندې کلام اوکړي يا په حديث الايقتل مومن بکاني کښې چې کوم تاويل شوې دې په هغې دې کلام اوکړي خو حقيقت دادې چې نه په دې اصول کليه کلام کيدې شي ځکه چې د اصول پسند سړي په نيز دا بالکل صعيح دي، دغه شان په نص کښې چې تاويل شوې دې په هغې کښې هم تاويل نشي کيدلې څکه چې د دمي دپاره قصاص احستلې شي او د مسلمان به قصاص اخستلي شي او قصاص اخستل متعذر هم نه دي نو د قصاص پريښودلو هيڅ عدر پاتي نه شو، دغه شآن دا لازمه شوه چې حديث کښې د کافر نه مراد کافرحریی واخستلی شی او مطلب به وی چې يو مومن به د کافر حربی بدله کښې قتل کولی نشی ځکه چې کافر حربی غیر مستامن مطلقاً محقون الدم نه دې او که کافر مستامن وې نو هغه علی التابید مستامن نه دې دغه شان دا حدیث د اصل کلی موافق محرزی() د احنافو اصل استدلال د دې ذکرشوي نصوصو نه دې او د دې په رنزا کښي امام صاحب دا اصول ذکر کړې دی خو بیا هم د احنافو په تانید کښې څه روایات هم شته چې هغه مونږ په

⁾ المائدة /80)-

⁾ الاسراء/٣٣)-

⁾ احكام القرآن للجصاص (١٣٤/١) واحكام القرآن للعلامة ظفراحمد عثماني (١١٤٨)-

[&]quot;) اعلاء السنن(١٠٠/١٨) كتاب الجنايات باب قتل المسلم بكافر)-

م حواله بالا

م حواله بالا

نفصيل سره ذكر كوو

پهنې مونږ ته دا خبره د حضورپاک ش نه رارسیدلې ده چې هغوی یو مسلمان د ذمی بدله کېنې قتل کړو او وئی فرمالیل چې زه د ذمی حق ادا کولو زیات حقدار یم داروایت امام شافعی شیخ خپل مسند کښې مسندا ذکر کړې دې فرمالی

اعبرنا مصدين الصن اغيرنا ايراهيم بن محيدين البنكدرمن عبدالرمين بن البيليل : ان دجلا من السيبية التي المستقبل المستهدين البنية التي المستعبد المستع

دېروايت باندې دا اعتراض اوشو چې دې کښې ابراهيم بن محمد راوي متروک دې او علما د جرح او تعديل په دې باندې سخت تنقيد کړې دې ۱

حقيقت دادي چې واقعی ابراهيم بن محمد باره کښې علماؤ سخت الفاظ استعمال کړې دی. خوبيا هم دا بالکل متروک کول صحيح نه دی.

ددې يو وجه دا ده چې اکثر حضراتو په ده باندې د عقائدو د وجه نه کلام کړې دې او دې نې معتزلي، قدري، جهمي او رافضي ګرځولې دې خو بيا هم ده ته چا عاليه في العقيده او داعيه نه دې وئيلي لهذا د عقائد په بنياد ده باندې کلام پکار نه دې

دويمه وجه داده چې چا ده باندې کلام کړې دې هغوی هم د ده د وسيع علم مواهی ورکوی، حافظ ذهبې په تاريخ الاسلام کښې په الققيه البديل احدا لاملام پشان الفاظو سره دده ذکر کړې دې.

امام ابن حبان کالی په کتاب المجروحین کښې نقل کړې دی چې رشدین بن سعد ، ابراهیم بن ایم اهیم بن ایم ایم ایم این ایم ایک اوروپه ابراهیم ترې د الله نه ویریږه او توبه اوباسه ابراهیم ترې تپوس او کړو چې زه خراب سړې یم نو ځما نه حدیث ولي اخلي نو رشدین اووئیل الم پهلف انه یکه المهامنه اوروپه اوروپه اوروپه اوروپه اوروپه اوروپه اوروپه اوروپه اوروپه الم پهلف انه په او په اوروپه الموپه الموپه الموپه تا اوروپه نه دی چې علم به او په ت

⁽⁾ كتاب الاثار (ص ٤٢) باب الديات باب السعاهد رقم (٥٩) -

⁽⁾ انظراهلاء السنن (١٥/١٨) كتاب الجنايات باب قتل المسلم بكافر)-

⁾ ميزان الاحتدال (٥٧/١) رقم (١٨٩)-

شي خو يو څو خرابو لوښو کښي به پاتي شي. ته هم هغه خرابو لوښو کښې يې دې واقعه نه د هغه د زيات علم اندازه کيدلي شي دريمه وجه داده چې دده تعلق امام مالک کيلو سره ټهيک نه وو يو ځل ئي نااشنا کس ته

ديرش احاديث واورول او ورته ني اونيل حمثتك ثلاثين حديثًا ولوفعت الى ذالك الحمار قحدثك

بثلاثة احاديث لفرحت بها يعنى مالكا.

يعني ما تاته ديرش احاديث واورول او كه دې خر نه درې احاديث واورې نو خوشحاله به شى،اشاره نى امام مالك كُونين تهوه

څلورمه وجه دا وه چې دا د امام شافعي استاد وو هغه خپل استاد خه اولټولو او بييا ني دهغه توثيق اوكړو او صرف امام شافعي نا بلكه حمدان بن الاصبهاني هم دده توثيق كوي. دغه شان ابن عقد مُولِيُّهُ فرمائي تظرت ف حديث ابراهيم بن يحيى كثيرا وليس بمنكر الحديث ابن عدى د ابن عقده په مرسته کښي ليکي:

وهذا الذى قاله كما قال وقد نظرت ادافى حديثه الكثير فلم اجدفيه منكى الاحن شيوخ يحتملون وقد نظرت ادا في احديثه وتهجرتها وفتشت الكل منها فليس فيها حديثُ منكرا وانه أيروى المنكر من قبل الوادى عنه او من قبل شيخه لامن قبله وهولى جملة من يكتب حديثه وقدو ثقه الشافعى وابن الاصبهان وغيرهما ٠٠٠

يعني خبره داده چې ابن عقد ئي كوي،ما دده په ډيرو احاديثو كښې غور اوكړو نو يو حديث منكر ميلاؤ نەشو ألبتەبعضى شيوخو نەڅەداسى منكر روايات دى چى ھغەقبليدلى شى. ما د هغه احادیث کښې غور اوکړلو تحقیق او لټونه مې اوکړه خو یو حدیث پکښې هم منکر نشته که دې کښې څه خرابي وي نو دده نه روايت کونکې راوي طرف نه په وي يا د هغه دشيخ طرف نه به وي.پخپله به د ده طرف نه نه وي.ځکه چې خپله هغه راويانو نه دې د چا چې حديث ليکلې شي امام شافعي او ابن الاصبهاني وغيره دده توثيق کړې دي٠

که مونږ ابراهیم بن محمد متروک راوي اوګنړو بیا هم دې روایت نه استدلال کیدي شي ځکه چې دا په ډيرو طرقو سره مروى دې او په بعضې طرقو کښې دده ذکر نشته امام طحاوي يو طريق سلهان بن شعيب،عن يحيى بن سلام، عن محيد بن حبيد عن محيد بن البنكدر نقل كرى دى به هغي کښې د ابراهيم بن محمد واسطه نشته د٠,٠

دغه شان يو طريق سلمان بن بلال عن دبيعة بن ال عبدالرمين عن عبدالرمين بن البيليان نه هم نقل دي ؟ به دېكښې هم دده واسطه نشته دي .ده باندې امام بيهقي منظه اعتراض كړې دي چې په دى كښى دده واسطه شته خكه چې ابوعبيده نقل كړې دى پلغښعن اين بېيعي اتد قال اتا

 ⁾ تهذیب الکمال و تعلیقاته (۱۸۶/۲)-

[&]quot;) شرح معانى الآثار (١٢٤/٢)كتاب الجنايات باب المومن يقتل الكافر متعمدا)-عنى الآثار (١٢٥/٢)-

مائت ربیعدیه (

علامه ابن الترکعانی ددې جواب ورکړې دې چې 'من بلخ ابا مپيدهنا؟ دَّ ، مطلب دادې چې ابوعبيده د بلاغ په توګه څه نقل کړې دی د هغې سند څه دې؟ دا بې سنده خبره ده

با امام ابوداود که مراسیل کښې حن ربیعة من میدالرمین بن البیلیان په طریق سره نقل کې دې ، دی د اید و ساله نقل کې دې ، دی د سند رجال ثقات دې ، دې نه معلومه شوه چې ابن ابی یعیی د حدیث مدار نه دې و شکه چې امام بیهقی د باور ورکولو کوشش کړې دې.

که مورن دا تسلیم هم کړو چې ربیعه دا حدیث د ابراهیم نه اخستلې دې بیا هم دا وییل صحیع نه دی چې ددې حدیث مدار ابراهیم دې څکه چې دې صورت کښې به سند څه دا رنګې وی ربیعه من ابراهیم نابراهیم دې کښې دی دی سورت کښې البیلمال ابراهیم دې کښې متفرد نه دې روستو مونږ امام طحاوی حوالي سره ذکر کړې دی چې د ابراهیم متابعت محمد بن حمید کړې دې چې ابن المتکدر نه نقل کوي (ه)

بيا امام دارقطنى يُحَيِّينُ دا روايت عبارين مطرعن ايراهيم بن معبدعن دبيعة بن بي عبدالرحين عن بي البيليلل عن ابن عبر به طريقي سره مرفوعا او موصولاذكر كړې دې (*)

يو الله الرقطني په دې سند يو د ابراهيم بن محمد د وجه نه کلام کړې دې فرمائي چې دهو مترك العديث (۲)

دې نه علاوه دې حدیث ته ئی مرسلا صحیح وئیلې دی او فرمانی چې دې کښې د ابن عمر ه واسطه نشته(^

دغه شان فرمائی واین البیلمان ضعیف لاتقوم به حجه اذا وصل الحدیث فکیف به ایرسله (^) یعنی این البیلمانی ضعیف دی که هغه حدیث موصولا نقل کړی هم حجت نه دې نو مرسلا

خو آرې خبره ده آ تر څو چې د ابراهیم بن محمد په باره کښې د کلام تعلق دې نو دهغه باره کښې مونږ په تحقیق سره واضحه کړې ده چې هغه ته بالکل متروک وئیل صحیح نه دی.

⁾ السنن الكبرى للبيهتي (٢١/٨) كتاب الجنايات باب بيان ضعف الخبرالذي دوى في قتل الدومن بالكافر)-أن السند المسلم و مسلم المسلم ال

⁾ الجوهر النقي (٣٣/٨)-

⁾ العراسيل لابي داو د(ص١٢)-. .

⁾ اعلاء السنن(٩٥/١٨)- ·

^{فم} اعلاء السننَ_٩۶/١٨)-*) *سنن* الدارقطني (١٣٥/٣)كتاب الحدود والديات رقم(١٤٥)-

^{ً)} حواله بالا ^) حواله بالا

⁾ حواله بالا) حواله بالا

او څو چې د ابن البيلمانی د ضعف تعلق دې نو هغه مونږ منو چې بعض محدثينو دې کمزورې کنړلی دې (خو ابن حبان نه صرف دې کتاب الثقات کښې ذکر کړې دی بلکه ښکاره کړې هم ده چې که دده نه روايت کونکو کښې دده څونی محمد وی نو د هغه د رواياتو هيڅ اعتبار نشته ځکه چې دده خونی ده نه عجيبه عجيبه روايات نقل کوي (آبيا د سنن اربعه مولفينو دده روايات قبول کړې هم دي (آ)

ريعا ابن البيلمانی متابعت عبوالد بن عبدالعزيز بن صالح حضرمی کړې دې، امام ابوداود په *مراسيل کښې د "ابن دهپ من حدالله بن يعقوب من حداالله بن حدالعزوبن صالح العثري په طريق سره نقل کړې دې ختل دسول الله کاه پور حنين مسلماً به کافر قتله خيلة وقال: ادا اولي او احتى من ايق بنعته نگ

يعني خصورپاک ﷺ د حنين په موقع يو مسلمان د كافر بدله كښې قتل كړو چې يې خبرني كښې قتل شوې وو،نو حضورپاك ﷺ اوفرمائيل چه څه د ذمي حق ادا كولو ټولو نه زيات حقدار يې

دې روایت کښې عبدالله بن یعقوب او عبدالله بن عبدالعزیز ته ابن قطان کیک مجهول وئیلی دی خکه دا فی الجمله ضعیف دی خو بیا هم د بل ضعیف د پاره د شاهد کیدلو صلاحیت لری نو دلته د ابن البیلمانی دا روایت بالکل ساقط نه دې بلکه مرسل حسن لعینه یا لغیره دې ابنا امام بیهقی کیک په دې روایت باندې د عمار بن عطر د وجه نه کلام کړې دې او ونیلی دی کان یقلې الاسانیدویس الاسادیدویس الاسادیدویس ال

خو ښگکاره دې وی چې بعضي حضراتو دده توثیق کړې او بعضو خو ده ته د "حافظ" صفت هم ورکړې دې، عبدالله بن سالم فرمانی معنتاابومثهان بن مطهاارهاوی وکان مالمتاللعدیث ''

دغه شان یوسف بن الحجاج فرمانی حدثنا محد بن الختربین ملی باترقق حدثنا صار بن مطر: تقد سان البیزان ۲۰۷۲/۲۰۰۳

معلومه شوه چې عمار بن مطريو مختلف فيه راوی دې دده حديثونه قابل احتجاج دی کم از کم استشهاد خو دده نه ضرور کيدې شي ^ ،

^{&#}x27;) قال ابوالحاتم:لين.تهذيب الكمال(٩/١٨)-

^{ً)} الثقات لابن حبان(٩١/٥)-

^{ً)} تهذيب الكمال(١٠/١٧)-

^{ً)} المراسيل لابى داود(ص١٢)-

مُ اعلاء السنن(۱۸/۱۸)-

م) السنن الكبرى للبيهقى(٣٠/٨)-*) ميزان الاعتدال(١۶٩/٣) رقم (٤٠٤٩)-

مُ اعلاء السنن(۱۰۱/۱۸)_

بها د ابن البيلمانی دا حديث د امام ابوحنيفه. امام مالک او امام سفيان ثوری اصط نه هم راوی دې د امام سفيان ثوری اصط نه هم راوی دې د ادرې واړه ربيعة الرآی نه روايت کوی د کل به کلا الاکه قدو الورستو مو نو اوونيل چې د ابن المنکدر او عبدالله بن عبدالعزيز مرسل روايتونه بطور متابع موجود دی نو ځکه د ابن البيلمانی دا روايت حجت دې اګرچې مرسل دې خو کله چې مرسل مختلف طريقو سره دابت شدی نو ددې نه احتجاج کولې شي ()

ناصکر دا حدیث حضرت آبن عمر ش نه مرفوعا هم مروی دی او کله چی مرسل موصولا ذکر شی نو اګرچی د موصول طریق ضعیف ولی نه وی خو بیا هم د ټولو په نیز خاصکر د امام شافعی په نیز حجت دې (۲)

سانعي پيدر کېت دې. حاصل د خبرې دادې چې دا ابن البيلماني په دې روايت باندې مخالفينو ډير اعتراضات کړې دی يو خو دا دې چې دا مرسل دې او ضعيف دې،نو ددې جواب خو مخکښې تير شو.

دويم اعتراض دادې چې د ابن البيلماني دا روايت لايقتل مومن پېکان سره منسوخ شوې دې ځکه چې دا حضورپاک 機 فتح مکه موقع باندې فرمانيلې وو

ددې جواب دادې چې د ابن البيلماني په دې روايت کښې داسې قرينه نشته چې هغې نه دا معلومه شي چې ددې تعلق فتح مکه نه مخکښې دې بلکه د عبدالله بن عبدالعزيز په روايت کښې ښکاره ده چې دا واقعه د عزوه حنين وه او عزوه حنين د فتح مکه نه پس وه دريم اعتراض دا اوشو خراش بن اميه د قبيله هذيل يو کس د فتح مکه په موقع کښې قتل

دریم اعتراض دا اوشو خراش بن امیـه د قبیله هذیل یو کس د فتح مکه به موقع کښ*ې ف*تل کړې وو په دې موقع حضورپاک ناه اوفرمائیل لوکنت مومناپکان،فقتلت *تر*اشابالهغلن^۲،

د معترضينو دا وينا ده چې اګرچې ددې سند واهی دې خو بيا هم ابن البيلمانی په مقابله کنه . بغه ده

ددې جواب د أدې چې په دې روايت كښې او د ابن البيلماني په روايت كښې تعارض نشته ځكه چې هذلى د اهل ذمه نه نه وه او د يو ښار فتح كولو سره او د قتل نه د بنديدلو د وجه نه دا لاژم نه دى چې دغه خلق به ذميان وى، او كه ابن البيلماني روايت تعلق هم د حنين واقع سره وى څنګه چې د حضرمى د روايت نه معلوميږى نو د ابن البيلماني دا روايت د فتح مكه په واسطه سره ناسخ به جوړ شي ()

٠٠٠ احنافو تائيد د حضرت عمر الله د فيصلي نه هم کيږي کومه چې امام محمد الله به کتاب الاثار کښي نقل کړې ده

محدقال: اغيرنا ابرحتيقة من حباد من ابراهيم ان رجلامن يكربن واثل قتل رجلا من اهل الحيرة فكتب

⁾ عقود الجواهر المنفية(١٣١/٢) بيان خبرالدال على قتل المسلم بالذمي)-

⁾ وقال الشافعي: يقبل أن اعتصد بمجيئه من وجه آخر يباين الطريق الأولى مسندا كان اومرسلا وسواء كان الثاني صحيحا ار حسنا او ضعيفا انظر شرح شرح نخبةالفكر في مصطلحات اهل الالر(ص٤٠٧)-م

⁾ السنن الكبرى (٢٩/٨) كتاب الجنايات باب فيمن لا قصاص بينه باختلاف الدينين)-

⁾ اعلاء السنن (۱۸/۱۸)-

فيه صربن الخطاب ان يدهم الى اولياء القتيل قان شاءو اقتلواء وان شاءو احقو فدهم الرجل الى ولى البقتول الى وجل يقال له حنون من اهل المورة فقتله فكتب فيه عبر بعد ذالك ان كان الرجل لم يقتل فلا تقتلو «فراواان

حمرارادان پرضیهم پالدید ()
یعنی د بکربن وانل یو سړی د اهل حیره یو کس قتل کړو دهغه باره کښې عمرفاروق دا
یعنی د بکربن وانل یو سړی د اهل حیره یو کس قتل کړو دهغه باره کښې عمرفاروق دا
فیصله اوکړه چې دې اولیانې مقتول ته حواله کړئ که معاف کوی او که قتل کوی نی. ولی
مقتول حنین نومی یو کس چې اهل حیره سره نی تعلق وو، هغه ته قاتل ورکړې شو نو هغه
قتل کړو، بیا روستو حضرت عمر ناللو د هغه باره کښې اولیکل که چرې او څه پورې نی هغه
قتل کړې نه وی نو اوس دې قتلوی نا، خلقو دا اوګنړله حضرت عمر ناللو جوړ د مقتول اولیا،
په دیت باندې راضی کول غواړی

په دیت باندې راضي دول عواړي په دې باندې دا اعتراض دې چې دا منقطع دې ځکه چې د ابراهیم نخعي او حضرت عمر گړی

په مينځ کښي انقطاع ده: ۲ د دې جواب دادې چې دا مرسل دې او مرسل ځمونږ په نيز حجت دې خصوصا د شافعي ﷺ مراسيل حجت دي: ۲

علامه ابن التركماني من فرمائي چې ددې روايت ډير طرق دي والمنقطع اذا روي من وجه آخي مخطعاكان حجة عندالشافعي رگ

يعني منقطع که په بل منقطع طريق سره ذکر شي نو د امام شافعي پُوني په نيز حجت دي . دويم اعتراض دادې چې په دې کښې ذکر دی چې حضرت عمر تانځ د قتل د فيصلې نه بيا رجوع کړې وه او د مقتول اوليا، ئې په دېت باندې د راضي کولو کوشش کړې وو،⁶،

رجوع مړې وه او د مصون ويه مني پد په با بادې د راضي تو تو توسس تړې ووو . د دې جواب دا دې چې مونږ نه منو چې هغوی د جواز قتل مسلم باللامي نه رجوع کړې وه بلکه هغوی امر بالقتل نه رجوع کړې وه ځکه چې هغه ته دويمه لار ښکاره شوه چې په ديت باندې ولي راضي کړې شي، که هغه ديت قبول کړو نو ښه ده ګني بيا به ئي د قتل حکم ورکړې وو، او په ديت ورکولو سره راضي کول د وجوب قتل د پاره منافي نه دي ځکه چې وجوب قتل نه باوجود ولي ته دمعاف کولو او ديت اخستلو اختيار شتمر.

اَمَامُ شَافَعُو يُمُلِينُهُ دَا هُمْ فَرَمَانِيلِي دَى چَيِّ حَضَرَت عَمَر لِنَّالِيَّ صَرَفٌ يَرُولُي وَوَ او دهمكي ئي وركړې وه د قتل اجازت ئي مقصود نه وو (٪

^{&#}x27;) كتاب الاثار (ص ١٤١) كتاب الديات باب دية المعاهد. رقم (٥٩٠)-

^{ً)} السنن الكبرى(٣٢/٨)-

⁾ اعلاء السنن(۹۸/۱۸)-

⁾ الجواهر النقى(٢٣/٨)-

^ه) السنن الكبرى (٣١/٨)-^مع **كلود الجواهر المنفية (١٣٣/٢) واعلاء السن (٩٨/١٨)-**

V) السنن الكبرى (٣٢/٨)-

خو دلته دا ممکنه ده ځکه چې د حضرت عمر الله د ارشاد نه د وجوب قتل نه روستو کیدل مستفاد نه دی نو بیا به د حضرت عمر الله باره کښې څنګه دا تصور اوکړې شی چې د قتل یا د معافی اختیار ورکولو سره د هغوی مقصد صرف ویرول وو او که فرض کړه هم دغه وی نو اولیاؤ ته به دا مراد څنګه معلوم کیدو؟ بلکه ددې اختیار د وجه خو هغوی اباحت د قتل اولئرلو او هغه کس نی قتل هم کړود ()

او گڼړلو او هغه کس نی قتل هم کړود () دلته د ابن جریر په روایت سره اشکال کیدې شی هغوی دا قصه نزال بن سبر ﷺ نه نقل کړې . ده چې د هغې الفاظ دادي :

ان رجلا من السلمين قتل رجلا من اهل العيرة نصرانيا عبدا فكتب يعيى بن سعيد في ذالك لل صوفكتب ان اقيدوة فيه وكان يقال له اقتله: فيقول حتى يعى الفيظ حتى يعى الفضب فبينها هم كذالك اذكتاب من صند عبران لا تقتلوة فانه لا يقتل مومن بكافر وليعط الدية " أ

يعنى يو مسلمان د حيره يو عيسانى عمدا قتل كړو دې باره كښې يحيى بن سعيد حضرت عمر ته خبر وركړو نو هغوى اوفرمائيل چې دوى ته قصاص وركړنى چې ولې ته به اوونيلې شو چې دې قتل كړه نو ووئيل به ئى صبر چې ماته غصه راشى.خلق په دې شش وينج كښې وو چې حضرت عمر تالتو نه خط رالو چې دې مه قتل كونى ځكه مومن د كافر بدله كښې نشى قتل كيدلى او صرف ديت دې وركړي شي

قتل کیدلی او صرف دیت دې ورکړې شی ددې نه دا معلومه شوه چې دحضرت عمر څاڅو د قتل نه منع کول د جواز قتل مسلم د رجوع د محد نه ده

ددې جواب دا دې چې دا قصه جصاص په خپل سند سره ذکر کړې ده 🖔

او ابن شیبه هم ر^۴ په دې کښې یو روایت کښې هم انه لایقتل مومن پکان موجود نه دې معلومیږی چې د ابن جریر دې روایت کښې یو راوی د خان نه تصرف کړې دې او دې بنیاد باندې دا تصرف کړې دې چې د نهی مبنی لایقتل مومن پکانې ده.

ددی دا قرینه ده چی د ابراهیم نخعی روایت کښی دی فهاواان میرادادان پیومیهم بالدید یعنی د ددی دا قرینه ده چی د ابراهیم نخعی روایت کښی دی فهاواان میرادادان پیومیهم بالدید عضرت خلقو رائی دا ده حضرت عمر گاتو اولیاؤ لره په دیت سره راضی کول غوښتل که حضرت عمر گاتو د علت تنصیص الایکتل مومن به کائم سره کړی وی نو خلقو ته دا موقع خنګه میلاؤ شوه چی دخپله خانه رائی قایمه کړی نولهذا دابن جریرددې روایت هیڅ اعتبارنشی کیدلې. () دا خبره یاد ساتنی چی دی روایت سره د حضرت عمر گاتو ډیر واقعات او فیصلی تړلی دی

^{ً)} عقود الجواهر المنيفة (١٣٣/٢) واعلاء السنن (١٠١/١٨)-أ) أعلاء السنن(١٨/١٨)-

م) احكام القرآن للجصاص (١/١ ١٤١)-

^{°)} العصنف لابن شيبة (٨٠٨٥) كتاب باب من قال اذا قتل الذمى السلم قتل به، رقم(٢٧٤٥٤)-*) اعلاء السنر(٩٨/١٨)-

چې په هغې کښې څه اختلافات هم دی خو بیا هم په دې کښې روایة او درایة هغه روایت و ټولو نه بهتر دې چې کوم دابراهیم نخعې نه منقول دې څکه امام ابوحنیفه که هم دا خوښ کړې دې ()

چ د احنافو استدلال د حضرت عشمان شی د واقعه نه هم کیږي. امام شافعي ﷺ فرمائي

اعبرنامعدد بن العسن اعبرنامعدد بن يود اعبرناسفيان بن حسين عن الزهرى ان ابن شاس الجذامى لتل رجلا من العالم المارية على عبدان الله والله وا

فنهولامن قتله قال: فجل ديته الف دينار ()

یعنی ابن شاس جذامی د شام په نبطیانو کښې یو کس قتل کړو نو حضرت عثمان گات ته مقدمه اورسیده نو هغوی د قتل حکم ورکړو حضرت زبیر او نورو صحابه ثاقی ورسره دې باره کښې خبره اوکړه نو هغوی د قتل نه منع او فرمانیله او زر دینار ئی ددې دیت مقرر کړو

په دې روایت کې دحضرت عثمان او که د قصاص حکم ددې خبره دلیل دې چې اصل موجب هم دادې خوبیا هم یو مسلمان د کافر په بدله کښې د قتل کولو معامله وه ځکه صحابه کرامو ورسره خبره او کړه چې په څه طریقه د مقتول اولیا، په دیت باندې راضی کړی او حضرت عثمان که هم په دغه باندې راضی شو او مسلمان نی دقتل نه بچ کړو، د قصاص نه دیت طرف ته رجوع کول دا په دې بنیاد نه ده چې ولی مقتول ته د قاتل د رضامندنی نه بغیر اختیار دې بلکه اصل موجب قصاص دې خو بیا هم چونکه د قاتل رضامندی موجود ده ځکه په دیت سره نی د مقتول ولی راضی کړو.

ددې په سند کښې امام شافعي ميله دا أعتراض کوي چې په دې کښې مجهولين دي ٢٠

خو دا اعتراض صحیح نه دی ځکه چې په دې کښې امام محمد ،محمد بن یزید او محمد بن یزید کلاعی مولاخولان شامل دی دا ثقه ثبت او عابد راویان دیر ً

دريم راوی سفيان بن حسين دې دا هم ستائيلي راوی دی امام بخاری ده نه په تاريخ کښې امام مخاری ده نه په تاريخ کښې امام مسلم په مقدمه کښې او سنن اربعه مولفينو خپل کتابونو کښې دده نه روايات آخستې دی هې په دې روايت کښې يو هم مجهول راوي نشته.

البته د سفیان او زهری په مینځ کښې د انقطاع اعتراض کیدې شی خو اول خو انقطاع نقصاني نه ده او بل دا چې د نورو شواهدو په موجود کني کښې منقطع هم د احتجاج قابل شي ()

⁾ حواله بالا

⁾ السِنن الكبري (٣٣/٨)-

^{ً)} حوالهُ بالا

⁾ قال العافظ في التقريب "'ثقة ثبت عابد"'(ص ٥١٤) رقم (٤٤٠٣) وقال الذهبي في الكاشف "حجة يعد من الإبدال(٢٣١/٣) رقم (٥٢٢٤)-

[.] أعقود العواهر المنيفة (٢/١٣٤) وتقريب التهذيب(ص٢٤٤) والكاشف (٤٤٨/١) حاشية سبط ابن العجم على الكاشف للذهبي)-

⁾ اعلاء السنن (۹۷/۱۸)-

🕜 د احنافو تائيد د حضرت على 🕊 د فيصلې نه هم كيږي امام شافعي 🗯 نقل كړې دي. انها معبدين الحسن انبأ قيس بن الربيخ الاسدى عن ابأن بن تغلب عن الحسن بن ميبوت عن حبدالله بن حدالله ميل بنى هاشم من إلى الجنوب الاسدى قال: الل على بن إلى طالب المائخ برجل من المسلمين قتل رجلا من أهل الذمة قال : فقامت عليه البيئة فأمر بقتله فجاء اغرة فقال: لل قد حُوت قال: فلعلهم هدوك، وفرقوك وفزموك؟ قال: لاولكن قتله لايرد على اش وموضيل فرضيت قال انت اعلم من كانت له ذماتنا المه كلمناوطيته كليتنان

یعنی د حضرت علی ﷺ په خدمت کښې یو مسلمان حاضر کړې شو چې یو ذمي ئي قتل کري وو، د ګواهانو نه قتل ثابت شو نو هغوي د قصاص حکم ورکړو دې نه پس د مقتول رور راغلو او ونی وئیل چې ما معاف کړې دې نو حضرت علی لاڅو ورته اوفرمائیل چې معلوميږي چې تاته هغوي څه دهمکې درگړې وي هغه وئي نا .اصِل خبره داده چې دده په قتل سره به ماته خپل رور ميلاؤ نه شي ده ماله عوض راکړي دې ځکه يي څه معاف کوم نو وئي فرمائيل چه ستا خوښه ده!د چا ذمه چې مونږ اخستي ده نو د هغه وينه ځمونږ د وينې په شان

ده او د هغه ديت ځمونږ د ديت په شان دي.

په دې روایت امام دار القطني اعتراض کړې دې چې ابو الجنوب ضعیف الحدیث دی $^{(7)}$ ددې دا جواب دې چې د ابوالجنوب ضعيف کيدل دلته نقصاني نه دې ځکه چې مونږ د هغه روايت نه مستقلًا استدلال نه کوو بلکه په دې خبره تائيد حاصلوو چې د حضورپاک 🕷 ارشاد لايقتلمومن پیکاف کښې په د کافر نه مراد کافر حربی وی کله چې د مجتهد په اجتهاد

سره د تاویل محنجانش شته نو په ضعیف اثارو کښې به ولي نه وي 🖰 و. د احنافو تانید د حضرت علی او حضرت ابن مسعود تالله د روایت نه هم کیږی فرمانی

من قتل يهوديا او نصرانيا قتل به ن

ابن حزم فرمائی دا مرسل دی ^۵۰

٠ د حضرت عمربن عبدالعزيز د حكم نامي نه هم د احنافو تائيد كيدي شي عمروبن ميمون فرمالي شهدت كتاب صرين عبدالعزيزال بعض امرائدتي مسلم قتل ذمياء فاموة ال يدفعه ال وليدقان شاء قتلدوان شاء مفاعنه يقول البيبون قدة بم اليدقض ب عنقدوانا انظوء (٢٠

⁾ السنن الكبرى للبيهقى(٣٣/٨)-

[]] سنن الدارفطني(٢/ ٢٣١) باب الامريتعليم الصلوات والضرب عليها وحدالعورة التي يجب سترها رقم(4) ً) اعلاء السنن(٩٧/١٨)_

[]] المجلى لابن حزم(٢٢١/١٠)كتاب الدماء)-

م حواله بالا

⁾ حواله بالا

يعني ما دحضرت عمر الله فرمان اوكتلو چې هغوى د يو مسلمان باره كښې څو امراؤ تړ ليكلې وو هغې كښې دا حكم وو چې ولى دې مقتول ته حواله كړې شى كه خوښه ئى وى نو معاف دې كړى ګنى قتل دې كړى.هغې نه پس قاتل حواله كړې شو او ما اوليدلو چې هغه قتل كرى شو

٠ داخنافو د مذهب تائيد د مدينه منوره فقيه ابان بن عثمان د فيصلې نه هم كيږي. اېن ابي شيمه په سند صحيح سره نقل كړي ده

ان رجلا من النبطى مداعليه رجل من اهل البدينة تقتله قتل غيلة فاق به ابان بن مثبان وهو اذ ذاك من البدينة فامريالبسلم الذى قتل الذى ان يقتل : \)

یعنی په یو نبطی سٰړی باندې یو کس حمله اوکړه او مړ نی کړلو ابان ابن عثمان دغه وخت د مدینه ګورنز وو ده ته راوستلې شو نو هغه ددې قاتل مسلمان د قتل حکم ورکړلو

خه اشكالات او دهغې جوابونه يو اشكال د احنافريه مذهب كيږى چې الحدود تدرا بالشبهات. يو منلى شوې قاعده ده ، دلته ارشاد پاك دې لايقتل مومن پكافي دې حديث سره شك پيدا شو ددې شك د وجه نه قتل مسلم ولى نه ساقط كيږى؟

ددې جواب دادې چې مونږ اوولیک چې دلته د کَافَر نه مراد کافر حربي دې نو اوس هیڅ شبه پاتې نه شوه.

که دا نهی شبه او گنړلې شی نو دا سوال دې چې که چرې ذمی یو ذمی قتل کړلو او بیا قاتل مسلمان شونو دا ذمی ولې قتلولې شی حالاتکه الایقتل مومن پکافی خو دلته هم صادق راخی؟ بعضی حضراتو دا وئیلې دی چې دلته امسلم د صفت صیغه ده او حکم بیانولو موقع کښې صیغه د صفت ذکړ کول ددې خبرې دلیل دی چې ددې ماخذ علت دې نو مطلب به دا شی چې دا حکم په دې نویاد دې چې مسلمان ته د اسلام د وجه او چتوالې حاصل دې خکه به دې د کافر بدله کښې قتلولې نشي

ددې جواب دادې که چرې د آمسلم مبدا د اشتقاق علت او گرخولې شی نو مطلب په دا شی البسلملکونه مسلمالایقتل بکالمالکونه کالما چې مونږ ددې خبرې منونکې نه یو مونږ خو دا وایو

المسلم لکونه قاتلایقتل بکافر لکونه مطون الدم مل التابید بعقد الذمة نو دا شبه هم را نغله یو اشکال دا هم کیږی چې مسلمان د ذمی مقابله کښې اشرف دې او ذمی اخس. نو به اشرف د اخس مقابله کښی څنگه قتل کولی شی؟

يو استان د هم ميږي چې مستان د سي سايد کې سر د دې د سي سر د دې د سال يو بد سرد د د اخس مقابله کښې ختله قتل کولې شي؟ د دې جواب دادې چې د قصاص په باب کښې د "شرافت" معنی هدر ده.ددې اعتبار نشی کيدې.اوګوره سړې د ښځې په بدل کښې قتل کولی شي

[`] المصنف لابن ابي شببة (٤٠٨/٥)كتاب الديات باب من قال اذا قتل الذمى المسلم قتل به رقم (٢٧٤٤٠)-

دا ونیلې شی چې مونو د سړی او ښځې په مینځ کښې د شرف اعتبار د هدر حدیث د وجه کړې دې او دمي او مسلم په مینځ کښې د شرف اعتبار لا**یقتلمومن یکان** د وجه دي

ددې جواب دادې چه کله شارع په يو ځانې کښې يعني د سړي او ښځې په مينځ کښې د قصاص په معامله کښې شرف ني هم قصاص په معامله کښې شرف ني هدر اوګنړلو او بل ځاني د شرف د اعتبار تصريح ني هم او نه کړه ، ځکه چې د ا احتمال موجود دې چې دا حکم د شرف په اعتبار مبني نه وي بلکه په يو بل کار مثلا د کافر په غير محقون الذم باندې مبني وي نو لهذا صرف رائي سره د شرف

اعتبار به خنگه صحیح وی؟ حاصل داده چی مسلمان به د کافر بدله کښی قتلولی نشی که حربی وی او که ذمی او ددی دلیل د حضوریاک دلله دا دیث دی لایقتل مومن بکافر به دی کښی کافر مطلق دی چی

دليل د حضورباک الله دا حديث دې لايقتل مومن بکانې په دې کښې کافر مطلق دې چې دواړه قسم ته شامل دې

امام ابوحنیفه و مانی که چرې یو مسلمان کوم یو ذمی قتل کړو نو دغه قاتل مسلمان به قتلولي شی او ددې اصل دلیل هغه عمومی نصوص دی چی هغې کښې د مسلمان او ذمی تخصیص نه دې شوې هغوی د خپل اجتهاد نه اصول وضع کړې دی چې کله د یو معصوم وینا طوې کړې شی او هغه علی التابید معصوم وی دا عمدا وی او د ولایت د وجه نه قصاص متعذر نه وی نو قصاص واجب دې ګنی نا

دغه شان هغوی دا اصل هم د نظر مخکښې کړو چې که نص د یو اصل کلی مقابل شی او په دې کښې څه تاویل نشو کیدې نو په اصل کلی کښې به د نص د وجه تخصیص کولې شی او که د تاویل احتمال وی نو په نص کښې به تاویل کیږی.

دې نه علاوه د امام ابوحنيفه موافق چې څومره آثار او روايات دی هغه ټول مؤيد دی د هغې نه باقاعده استدلال او احتجاج نه کيږی که بالفرض په هغې کښې څه قدرې ضعف هم وی بيا هم د هغې تائيد کيدې شی والله اعلم

ا ١٩١١عَذَّ أَنْمَا أَبُولُعَيْمِ الْفَضْلُ بْنُ دُكَيْنَ فَالَ حَدَّتَنَا شَيْبَاتُ عَنْ يَعْتَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي سَلَمَةً عَنْ أَبِي مَنْهُ فَتَلُوهُ فَأَغْيِرَ إِنَّ اللَّهِ عَنْهُ وَتَلُوهُ فَأَغْيِرَ عَنْ أَبِي كَنْ عَامَ فَتَعِرَ مَخَةً بِقَتِيلٍ مِنْهُ فَتَلُوهُ فَأَغْيِرَ مَكَةً الْتَقِيلُ وَلَى اللَّهِ عَلَيْهُ وَسُلَمَةً الْقَبُوهُ وَسُولَ اللَّهِ - صلى الله عليه وسلم - مَكَةً الْقَتْلُ - أُو الْفِيلَ هَلَى أَلُو عَبُو اللَّهِ - مَلَى الله عليه وسلم - وَالْنُومِنِينَ اللهَ عَلَيْهُ وَسُلمَ عَنْهُ وَاللَّهُ مِنْكُولًا اللَّهِ عَلَى الله عليه وسلم - وَالْنُومِنِينَ اللهَ عَلَيْهُ وَاللهُ عَلَيْهُ وَسُلَمَ عَنْهُ اللَّهُ مِنْكُمُ اللَّهُ وَاللَّهُ مِنْكُمُ اللَّهُ عَلَى اللهُ اللَّهُ اللهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الل

فَقَالَ رَجُلُ مِنْ قُرَيْشِ إِلاَّالِإِذْ عِرَيَارَسُولَ اللَّهِ، فَإِلَّا يَجْعَلُهُ فِي يُبُوتِنَا وَقُبُورِنَا فَقَالَ النَّبِرَ صلى الله عليه وسلم- «إِلاَّ الإِذْجِرَ، إِلاَ الإذْجِرَ». قَالَ أَبُوعَنِدِ اللَّهِ يُقَالُ يُقَادُ بِالقَافِ فَقِيل لأبِي عَبْدِاللَّهِ أَى شَي مِكْتَبُلُهُ قَالَ كَتَبَلَّهُ مَذِهِ الْغُطْبَةُ (٢٣٠٧، ٢٢٥٩،

رجال العديث

 ابونعيم القضل بن دكين: دا مشهور محدث ابونعيم الفضل بن دكين الملائي الكوني الاحول يمين دى ددوى حالات كتاب الايهان باب فعل من استبراء لدينه كسبي تير شوى دى

· شيبان دا ابومعاويه شيبان بن عبدالرحمن تميمي نحوي بصري مؤدب كلا دي

يو کال پورې کوفه کښې اوسيدلو د هغه نه پس ېغداد ته مڼتقل شو دوي د سليمان بن داود

هاشمی او د هغه د روریانو اتالیق پاتی شوی وود^۱)

دوى د اسماعيل بن ابى خالد ، اشعثُ بن أبى الشعثاء ، حسن بصرى.زياد بن علاقه.امام اعمش،امام قتاده،لیت بن ابی سلیم،منصوربن المعتمر او یحیی بن ابی کثیر 🕍 نه

روایت کوی،

كشفاليارى

دده نه روايت كونكو كنبي آدم بن ابي اياس. زائده بن قدامه، ابوداود الطيالسي. عبدالرحمن بن مهدي، ابونغيم الفضل بن دكين، امام ابوحنيفه. وليدبن مسلم. يزيدبن هارون او يونس مودب ﷺ شامل دي٠٠٪،

امام احمد مريك فرمائي مااقرب مديثه رك

بل خائى فرمانى شيهان صلحب كتاب صحيح قددوى شيبان عن الناس فحديثه صالح رك

دغدشان فرمائي شيهان ثبت في كل البشايخ ٥٠

امام يحيى بن معين على فرمائي شيهان القة وهوصاحب الكتاب (٢)

بيا فرمائى لقةلىكل شوم (^٧).

امام محمد بن سعد ، امام عجلي او امام نسائي التنم فرمائي الله ٠٠٠

ا) كشف الباري (۶۶۹/۲)-

⁾ تهذيب الكمال(٥٩٣/١٢)-

^{ً)} نهذيب الكمال (٥٤/١٢)-

^{ً)} حواله بالا

م تهذيب الكمال (٥٩٥/١٢)-

م حواله بالا

^ا) حواله بالا

م) طبقات ابن سعد (۳۷۷/۶) و (۳۲۲/۷)-

```
كتأب العلم
                                                                         كشفالبارى
 يعقوب بن شيب كي فرماني كان صلح حروف وقراحت، مشهور يذلك كان يحق بن معين يوكفه ١٠٠
                       امام ابوحاته والمائي حسن الحديث صالح الحديث يكتب حديثه الم
                                          عبدالرحمن بن يوسف فرمائي كان صدوقاني
                   اروالقاسم بغوى كالله فرماني شيبان اثبت في معيان ال كثير من الاوزاع الم
                                امام ترمذي كلي فرمائي شيبان لقة متدهم صلحب كتاب ٥٠٠
                                 دغه شان فرمائي شيبان صاحب كتاب وصحيح الحديث وللم
                                                 امام ابوبكر البزار كلي فرماني تعدير
                            عثمان بن ابي شيبه فرمائي كان معلما صدوقا حسن العديث ٠٠٠
                              ان شاهين كيني فرماني ثقة وكان صلح كتاب رجل صالح ١٠٠
                      امام عبدالرحمن بن مهدى دده نه روايت كولو باندى فخر كوى: ``،
                           حافظ ذهبي دده به تذكره كنبي ليكي الامام الحافظ الثقة (١٠)
          بيا فرماني صاحب حروف وقرامات حجة (٢٠) دغه شان دا هم فرماني تقة مشهور (٦٠)
 ددې زېردست توثيقات او تعديل سره سره بعضي حضراتو په دوی باندې کلام هم کړې دي:
                     ساجي كينية فرمائي صدوق وعند مناكورواحاديث عن الاحبش تفرديها راً ،
                                          دغه شان ابوحاتم كيني فرماني الايعتجهه (٥٠)
```

⁾ تعذيب الكمال(٥٩٤/١٢)-) حواله بالا

^{ً)} حداله بالا

⁾ حواله بالا م جامع الترمذي كتاب الزهد باب ما جاء في معيثة اصحاب النبي كالم رقم (٢٣٧١)-

⁾ جامع الترمذي كتاب الادب باب المستشار مؤتمن رقم(٢٨٢٣)-

⁾ تهذيب التهذيب (٢٧٤/٤)-

⁾ تهذيب التهذيب (٢٧٤/٤)-

[&]quot;) تعليقات تهذيب الكمال(٥٩٧/١٢)نقلا عن كتاب الثقات لابن شاهين)-

⁾ تهذيب التهذيب (٢٧٤/٤)-

⁾ سبير اعلام النبلاء (٤٠۶/٧)-(۲۳۱۶) وقم (۲۳۱۶) وقم (۲۳۱۶) -

^{&#}x27;) ميزان الاعتدال(٢٨٥/٢)-

⁾ تهذيب التهذيب(٣٧٤/٤)-) ميزان الاعتدال(٢٨٥/٢)-

تر څو چې د امام ساجی د کلام خبره ده نو د مناکیر نه مراد تفردات هم دی او تفرد څه نقصاني څیز نه دی

بل ساجى كلام د امام احمد كلي مقابل دي هغوى فرماني تقة في كل المشليخ (امام يحيى بن

معین ﷺ فرمانی تعقل کل شهرزی بیا حافظ رحمة الله فرمانی چی په بخاری کښی دده روایات د اعمش په طریق باندې بالکل

بيا حافظ رحمة الله فرمائي چې په بخاري دېښې د ده روايات د اعمس په صريع باسه ېاسم. نه دې بلکه د نورو شيوخو نه دې(؟) منه ۱۰۰۸ ماريا او ماريک د ماهنام کيله اخوا دې چې بالکا اثابت نه دې فرماند

'وهن، النفظة ما رایت فی کتاب این این حاتم فینظریس فیه الایکتب حدیثه فقط 'راً'، دغه شان د ابوحاتم کلام مزی او او باجی کنی هم نقل کړې ده خو په هغې کښې چا هم د 'لایعتج به جمله ذکر کړې نه ده (هُ

ميسيه است مر تړې د د د د د د کر شوې تعديلاتو مقابله کښې د توجه قابل نه جوړيږي. امام حافظ دهيي فرمانۍ **تول ل**ېحاتملايعتج پهليس بحيد ⁷

سم مصوري مي روي ي موني ما مي موني المسلم ال

ددوی وفات ۱۲۴ مکښې شوې دې ^۸

فانده ددې په نسبت کښې چې کوم لفظ تحوی راغلې دې نو ددې نه علم نحو طرف ته نسبت مراد دې يا قبيله نحو طرف ته؟

ابن الاثير فرمانی چی قبيله نحو طرف ته دی، او ابن ابی داود وغيره فرمانی چی دا علم نحو طرف ته منسوب دی نه چی قبيلی تعد)

مری بعین دا مشهور امام یحیک بن ابی کثیرطائی بمامی کند دی دده د پلار په نوم ابو کثیر کنبی اختلاف دی صالح، یسار، نشیط او دینار دا مختلف اقوال دی په دی کنبی (۱) دوی دحضرت انس گافئ نه علاوه ابوسلمه بن عبدالرحمن بن عوف، هلال بن ابی میموند،

^{&#}x27;) تهذيب الكمال(١٢/٥٩٥)-

^{ً)} تهذيب الكمال (٥٩٥/١٢)-

[&]quot;) هدی الساری(ص۱۰ ٤)–

⁾ تهذيب التهذيب (٢٧٤/٤) وهذى السارى(ص ١٠٤) كتاب الجرح والتعديل (٣٢٥/٤) رقم (١٥٤١)-هم هدى السارى(ص ٤١٠) وتهذيب التهذيب (٣٧٤/٤)-

م) سيراعلام النبلاء(٧/٨٠٤)-٧.

^۷) هدی الساری(۱۰) -^{ام} تعدید الکیال (۱۷۹/۱۷) ، الکاشف(۱۸۱/۱۱) ، قد (۹۹۸/۱۱)

[^] تهذيب الكمال (٥٩۶/١٢) والكاشف(٤٩١/١) رقم (٣٣١۶٩)_ *) جاشية سبط ابن العجمى على الكاشف(٤٩١/١) رقم(٣٣١٤)_

^{``)} تهذيب الكمال(٣١/٥٠)-

دي نه علاوه د حضرت ابوامامه، عروه بن زبير، الحكم بن مينا او ابوسلام حبشي 🖼 نه مرسلاروایت کوی

دده نه روایت کونکو کښی دده ځوئی عبدالله، ایوب سختیانی، یحیی بن سعیدانصاری، اوزاعي، حسين المعلم، معمرين راشد، هشام دستوالي، همام، ايوب بن النجار، ابان العطار، حرب بن شداد، عكرمه بن عمار او عمران القطان أتنظ وغيره شامل دى ١٠

ايوب سختياني فرمائي ما بالى ملى وجه الارض مثل يحيى بن إلى كثير الى

امام شعبه مُنظر فرمائي يحيى بن إلى كثيراحسن حديثا من الزهري ريَّ

امام احمد كينية فرماني يعيى ابن بي كثيرمن اثبت الناس انبايعدمع الزهرى ديعيى بن سعيد فاذا عاقه الومرى فالقول قول يعيى ابن إلى كثير رقي امام عجلى فرمائي ثقة كان يعدمن اصحاب الحديث (٥)

امام ابوحاتم فرمائي امام لايحدث الاعن ثقة 🖔 حافظ ذهبي دده د تذكري په شروع كښې ليكي الامامالحاقظ احدالعلام (^٧)

دغه شان فرمائي وكان طلاية للعلم حجة (^)

بيا فرمائي كان من العباد العلماء الاثهات (^)

هغوى دا هم اوفرمائيل احدالاعلام الاثبات (` ` ،

البته عقیلی دده باره کښی ذکر کړې دی وکیالتدلیس ۱٬۱۰ دغەشان حافظۇچۇ فرمائى ئىقةئېتلىكتەيدىلس دىرسل (٧٠)

⁾ نهذيب الكمال(٥٠٥/٣١)-

^{ً)} تهذيب الكمال(٣١/٥٠٨٩-

^{ً)} حواله بالا

^{&#}x27;) حواله بالا

^ت) حواله بالا

⁾ تهذيب الكمال(٥٠٩/٣١)-

⁾ سير اعلام النبلاء (٢٧/۶)-

⁾ حواله بالا

^{&#}x27;) الكاشف(٣٧٣/٢) رقم (٤٢٣٥)-

⁾ ميزان الاعتدال(٤٠٢/٤) رقم (٩۶٠٧)-

^[] الضعفاء الكبيرللعقيلي (٢٣/٤) رقم (٢٠٥١)-

^{ً)} تقویب التهذیب (ص۵۹۶) رقم (۷۶۳۲)-

تر څو چې دده د تدلیس تعلق دې نو هغه مضر نه دې ځکه چې دې د هغه مدلسینو نه دې چې د امامت په ځاني ولاړ دې او د نورو راویانو په نسبت ډیر کم تدلیس کوی او که تدلیس کوی د امامت په خانې د دې د د نورو راویانو په نسبت ډیر کم تدلیس کوی او که تدلیس کوی هم نو د ثقاتو نه کوي لکه سفيان توري او سفيان بن عيينه شوو دغه وجه ده چې دده تدليس علماؤ قبول کړې دې او په خپلو صحیح کښې نی دده روایات اخستې دی.حافظ ابن حجر بكير فرماني تعريف اهل التقديس بمراتب الموصوفين بالتندليس كنسي دوى په دويمه مرتبه کښې ذکر کړې دی ن

بيا دده د تدليس نه غالب مړاد دادې چې دې د صحابه کرامو نه مرسلا ذکر کوی او دې ته

تدلیس نوم ورکړې شوې دي د) دې نه علاوه دې یحیی ابن کثیر اګرچې کثیر الندلیس او کثیر الارسال مشهور دې خو بیا دې نه علاوه دې یحیی ابن کثیر ا هم حافظيته فرمائي چې ده به تدليس كم كوو، او ددې قرينه داده چې يحيى ابن كثير د ابوسلمه نه ډير زيات روايات نقل كوى ددې باوجود هغه يو حديث عن محبدعن ايراهيم عن إلى سلبة عن عائشة مرفوعاً: من ظلم قيد شيرمن الارض طوقه الى سبة ارضين 🔭 روايت كړې دې په دې هغه د آبوسلمه نه په مخامخ نقل کولو پِه ځائي دمحمد بن ابراهيم په واسطه سره ذکر کړې دې معلومه شوه چې دې لږ تدلیس کونکې دې که کثیر التدلیس وو نو د محمد بن ابراهیم واسطه به یې حذف کړې وه(ً)

ابن حباز كي دوى به كتاب الثقات كښى ذكر كړې دى او ليكى وكان يحيى بن إلى كثير من العباد اذا راى جنازة لم يتعش تلك اليلة ولاقدر احدمن اهله ان يكلمه ٥٠٠

يعني يحيى ابن كثير د عبادت كذار خلقو نهوو كله به ئي جنازه اوليدله نو هغه شپه به ئي نه روتئ خوړله او نه به ئي كورواله سره دخبرو همت وو٠

د صحیح قول مطابق ددوی وفات ۲۹ ۱ ه کښې شوې وو ^۲، رحمه الله **تعال** رحم**ة** واسع**ة**

🗨 ابوسلمة دې دحضرت عبدالرحمن بن عوف ځونۍ او د مدينه فقهاؤ کښې يو اوچت فقيه او او مشهور تابعی دی.

 ⁾ طبقات المدلسين (تعريف اهل التقديس بمراتب الموصوفين بالتدليس) ص ٢٥) -

⁾) ارسل عن انس بن مالك وجابر بن عبدالله الانصارى والحكم بن مينا وعروة بن الزبير وابي امامة الباهلي وأبي سلام العبشي فروايته عن الصحابة منقطعة ولعل هذا هو مرادهم بالتدليس تحرير تقريب التهذيب للدكتور بشار عوادمعروف والشيخ شعيب الارنؤوط (٩٩/٤) رقم (٧٩٣٢) -

[&]quot;) اخرجه البخارى في صحيحه في كتاب المظالم باب اثم من ظلم شيئا من الارض رقم (٢٤٥٧)-) قال الحافظ وفي هذا الاسناد ما يشعر بقلة تدليس يحيى بن أبي كثيرلانه سمع كثير من ابي سلمة وحدث

عنه هذا بواسطة معمدين ابراهيم:فتح الباري(١٠٥/٥) كتاب المظالم باب اثم من ظلم شيئًا من الارض)-م الثقات لابن حبان (٥٩١/٧)-

م سيراعلام النبلاء[٢٨/۶)-

دوى حالات كتاب الايمان باب صوم رمضان احتسابا من الايمان لاندي تير شوي دي ،

 حضوت ابوهویوه ﷺ دحضرت ابوهریره حالات کتاب الایمان بهاب امور الایمان لائدی تیر شوېدۍان

نوله: ان خزاعة قتلو رجلا من بني ليث عام فتح مكة بقتيل منه قتلوه: قبله خراعه د فتح مکه په موقع د بنولیث یو کس د خپل یو مقتول بدله کښي قتل کړو

د فتح مکه موقع کښې د قبيله خزاعه چې کوم کس قتل کړې وو د هغه نوم خراش بن اميه خزاعي دي او څوک وائي چې قتل کړې وو د هغه نوم ابن الاتوع الهدلي وو جاهليت کښي ابن الاتوع د خزاعه احمر نومي سړي قتل کړې وو نو د فتح مکه موقع کښې خراش بن اميه خزاعې دده بدله واخستله او ابن اتوع الهدلي ني قتل کړو

ددي تفصيلي واقعه ابن هشام كله په خپل سيرت كښي د ابن اسحاق حواله سره ليكلي ده چې حاصل ئی دا دی:

احمر نومي يو ډير بهادر سړې وو دهغه عادت وو چې کله به اوده کيدو نو په زور زور سره به ئى خراتى كولى خلقو تەبەمعلومەشوەچى دى كومخانى دى؟ هركلەچى بەدى خپلەقبىلە کښي وو نو د ټولو نه په جدا اوده کيدلو که په قبيله په حمله اوشوه نو هغوي په ورته 'يااحمر' سره أواز ورکولو نو دې به لکه د شير راپاسيدلو نو بيا دده مخکښي څوک اودريدلي نه شو ونيلي كيږي چې د قبيله هديل يو جنگيالي حماعت رالو او په قبيله خزاعه ني د حمله اراده اوكههٔ هركله چي نزدې راغي نو ابن الاثوع هذلي وونيل چه تلوار مه كوه،خه تورمه چه دلته احمر شته کنه، کمه چرې هغه موجود وي نو حمله کول به ممکن نه وي نو هغه د خر اتو په آواز پسي روان شو چه هغه ته ورسيدلو او د خوب په حالت كښي ئي قتل كړو،بيا ئي چه په قبيلي والدباندي حمله وكره نو هغوي يا احمريا احمر ووثيل ليكن دلته د أحمر كار تمام شوي وو، کله چه د فتح مکې ورځ راغله نو ابن الاثوع هذلي کوم چې تر اوسه پورې په حالت د شرک کې وو .مکې مکرمې ته راغلو او د حالاتو معلومولو کوشش نې کولو،

چه کله قبيله خزاعه ده وليدو نو وئي پيژندو او د ده محاصره ئي وکړله، تپوس ئي ترې وکړو چه ته د احمر قاتل ئي ؟ ده وئيل چه او ،هم ځه د احمر قاتل يم، په ده کښې خراش بن اميه رِاغلو او خلقَو ته نِّي آخوا كيدو آشاره وكرله كله چه خلق آخوا شو نو د ابن الاثوع په خيته كَسِي ني توره ورومندله ،او د ده خيته ني وشلوله أو كولمي ني بهر راووتي هم دغه شاد ني قتل كرو. به دي موقع حصور اكرم صلى أله عليه وسلم تشريف راورو او د قتل وقتال نه ني منع وفرمائيله او د وينې قيمت ئي ورکړو ٠٠٠٠

^{ً)} كشف الباري (٣٢٣/٢)-

^{ً)} کشف الباری(۶۵۹/۱)-

أوكوري السيرة النبوية لا بن عشام القسم الثاني (ص ٤١٤) طبعة مصطفى البابي الحبلي، والسيرة النبوية لابن حشام مع الروض الانف (ج ^۲ ص ^{۲۷۵)}-

د قبیله خزاعه په لاسو نو د قتل شوي سړی د نوم تحقیق. د ابن اسحاق په ده روایت کښې د مدول نوم .. ابن الاثوع ببالثا المثلثة الهذلي راغلې دې ابن هشام کلله و نیلي دي . . و بلغل ان اول قتیل دوا د رسول الله صلی الله علیه وسلم پوم الفتاع جنیدب بن الا کوم قتلته بنو کعب فودا ه په ان اول قتیل دوا د رسول الله صلی الله علیه و د محضور اکرم خلله د فتح مکې په ورخ د ټولو نه اول مقتول چه د هغه دیت ورکړې شوې وو هغه جنیدب بن الاکوع وو . دې بنو کعب قتل کړې وو هغی خالس سره دې نه د تا مشلمي سره ، . د گاف سره دې نه د تا مثلشي سره ،

مندي سره، حافظ ابن حجر مميله د ابن اسحاق واقدى په حوالي سره نقل کړي دي چه د مقتول نوم، ، جندب بن الادلع وو را ، خو چه طبرى د اسحاق نه دا قصه نقل کړي ده نو په ده کښې . . . جنيدب الادلع ذکر دي، را ،

جميعت الرسم د تر دې الله د نوم په باره کښې اختلاف شوې دې چه آيا د جندب وو او که جنيدب،هم دغه شان دا ده د پلار په باره کښې اختلاف شوې دې چه آيا دده نوم اثوع وو او که اکيدې هم دغه شان دا ده د پلار په باره کښې اختلاف شوې دې چه آيا دده نوم اثوع وو او اکوع يا ادلع؟ ددې د تطبيق صورت دا دې ممکنه ده چه ده جندب مکبرا هم ونيلي کيدو او جنيدب مصغرا هم ونيلي کيدو ،

او دغه شان دا ده د پلار په نوم کښې هم دا ونيلي شي چه دې په دريو وانړو نومونو بللي کيدو _ البته دلته يو غټ اشکال دا دې چه اوس مونږ د ابن اسحاق په حوالي سره ورستو ذکر کړل چه،ابن الاتوع چه د احمر قاتل دې او اوس د فتح مکې په موقع هغه د خراش ابن اميه په لاسونو قتل شو، هغه په حالت د شرک کښې وو،

حافظ ابن حجر گُولگ په خپل کتاب، ۱ الاصابة، ، کښې په القسم الاول کښې جندب او جنيدب ذکر کړي دي او په قسم اول کښې دې د هغه حضراتو ذکر کوي چه د هغوي صحابيت ثابت شوي وي. ()

د دې اشکال په باره کښې داسې وئيلي شوی دی،چه د ابن اسحاق په نيز دې مشرک وو او مسلمان شوی نه وو،ليکن د حافظ ابن حجر د تحقيق په مطابق دې مسلمان شوي وو او ده تمد رسول الله گله د صحبت شرف هم حاصل شوي وو.

د مقتول تعلق د بنولیث سره وو او که بنو هذیل سره ۱۶ بیا په حدیث باب کښی ، کتلوا دجلا من ینی لیث ، راغلی دی ،خو د ابن اسحاق روایت چه مونږ په تفصیل سره ذکر کوؤ ، په دی کښی ''بنو هذیل ، ذکر دي ، ولی چه ابن الاتوع هذلی ووکیشی نه وو ، او دا دواړه جدا جدا قبیلی دی ، ددې تعارض حل په دې طریقه کیدې شي چه د مقتول تعلق د دواړو قبیلو چره وو

⁾ السيرة النبوية لابن هشام مع الروض الانف (ج ٢ ص ٢٧٤) -

^{ً)} وگوري الاصابة (ج ١ صُ ٢٤٧) ـ ً) حواله بالا) ـ

⁾ اوگوري مقدمة الاصابة (ج أ ص 1و 4) -

د يوې سره خانداني تعلق وي او د بل سره د معاهدې تعلق وي. والله اعلم

د تمارض لوی کولو واجع صورت دلته د تعارض لری کولو صورت دا هم دی، کوم چه د تکلفاتو نه د خالی والی به وجه راجع هم دی چه صحیح بخاری که ذکر شوی واقعه مستقل و تکلفاتو نه د خالی والی به وجه راجع هم دی چه صحیح بخاری که ذکر شوی واقعه تصدی و تکوخولی شی، او په سیرت ابن هشام وغیره کنبی راغلی واقعات مستقل شی، تویا چه د و واقعات باندی محمول ده.د فتح مکی په موقع ډیر واقعات مخی ته راغلی وو، ددې قرینه دا هم دا چه د ابن هشام کیلی الفاظ دې، بایلی ان اول قتیل ودا؛ رسیل الله صلی افتحالیه و سلم بوم الفتح جنیدب، ددی نه معلومیری چه مقتولین ډیر وو، به ده که

رسول الله صلى الله عليه وسلم يوم الفتح جنيدب،،ددې نه معلوميږي چه مقتولين ډير وو. په ده که اوليت جنيدب بن الاکوع ته حاصل وو. هـ دغه شان اين اسحاق چه اين الاتو ع به حالت د شک مقتول که خولد دي هغه خان له خو ه

هم دغه شان آبن آسحاق چه ابن الاثوع په حالت د شرک مقتول گرخولي دې هغه خان له خبره ده، او حافظ کشت جندب یا جنیدب په صحابو کښې شمارلو سره مقتول گرخولي دې.دا بل شخصیت دی او دغه شان هر قسمه تعارض هم ختمیدې شی او د تکلفاتو د ارتکاب ضرورت هم نه پیښږي، کوم چه د مخکې تطبیق د پاره وشو، والله اعلم بالصواب

قوله: فَ خَبْرِ بِذَلِكَ النبي صلى الله عليه وسلم، فركب راحلته فخطب: د دى قتل د واقعى حضور اكرم 我 ته ته خبر وركري شو ، نو هغوى به خبله سورلئ باندي سور شو أو خطبه ني ووئيله،

قوله: فقال: ان الله حبس عن مكة القتل اوالفيل، شك ابوعبد الله: هغوى وفرمائيل چه هاتيان وفرمائيل چه الله تعالى د مكي مكرمي نه قتل منع كړى دى. يا هغوى وفرمائيل چه هاتيان ئى منع كړى دى، ابو عبدالله ته شك دى.

دلته څلور نسخي دې ① يو خو دا ده ، شك ابوعب الله ،، ④ د دويمې نسخې عبارت دا دې .

قال محبه : وجعلوا على الشك ، كذا قال ابونعيم : واجعلوا على الشك : الفيل او القتل ، ، . ④ د دريمې نسخې عبارت دې ، ان الله حبس عن مكة القتل او الفيل ، كذا قال ابو نميم ، وا جعلوا على الشك ، الفيل او القتل ، ⑥ د خلورمې نسخې عبارت دې ، ، قال ابوعب الله : كذا قال ابوعب الله : كذا قال ابوعب الله : كذا قال ابوعب الله . ، و محبه ، ، نه د امام بخارى گيلا مراد دى ، په ده اجعلوا على كنيي د شك ظاهرا نسبت امام بخارى طرف ته شوى دى ، ليكن حقيقت كنبې دا مجمل دى كنيي د شك ظاهرا نسبت امام بخارى طوف ته شوى دى ، ليكن حقيقت كنبې دا مجمل دى او په باقي نسخو كنبې ته ده كنبې د دويم اصلى شك امام بخارى ته نه دې ، بلكه ابو نعيم يا بل راوى ته دې بيا په ده كنبې د دويم عبارت مطلب دا دې چه امام بخارى شيخ دى هغوى ده راويانو دا په شك سره روايت كړى دى ، ابو نعيم گيلا چه دا د امام بخارى شيخ دى هغوى ده راويانو نه شك سره نقل كړى دى ،

د دريمي نسخي د عبارت مطلب دا دي،،اجعلوامقوله د ابو نعيم ده،ګويا چه هغه. حاضرينو ته وائي چه دا شک سره وساتي،

د څلورمې نسخې په مطابق، ۱ اجعلوا مقوله د امام بخاري ده ګويا چه هغه فرمائي چه دا

په شک سره وساتی، څکه چه زما شیخ ابو نعیم دا په شک سره روایت کړی دی، وغ**ربای ال** الفیل، د ابو نعیم نه علاوه نورو راویانو بغیر د شک نه، الفیل، اوائی دلته د غیر نه مراد عبیدالله بن موسی دی () کوم چه د ابو نعیم رفیق او د شیبان سره په روایت کولو کښې شریک دی، () داسی حرب بن شداد هم مراد دې، کوم چه د یحي بن ابی کثیر نه روایت کوی، () او دشیبان دوست او ملگری دی.

د فیل د حبس واقعه: دلته، ، آن الله عبس من مکة الفیل، ، نه مراد اصحاب فیل دی او په دی کښې د اصحاب فیلو مشهوری واقعي طرف ته اشاره ده.

د دې واقعې خلاصه دا ده.

د حضور اکرم عهد دپیدانش نه پنخوس او یا پنخ پنخوس و رخی مخکی دا واقعه راغلی وه. اوسوه داسی چه نجاشی د حبشی د حاکم د طرف نه د یمن حاکم ابرهه نومی سړی وو. کله چه ده وکتل چه د عربو ټول خلق د بیت الله حج دپاره مکی مکرمی ته خی او د خانه کعبه طواف کوی، نو ده وغښتل چه د عیسایانو د مذهب په نو م یو عالی شان عمارت جوړ شی. چه ډیر زیات ښکلی وی، چه د عیسایانو د مذهب په نو م یو عالی مصنوعی او پرتکلف کعبی طواف شروع کړئ، چنانچه د یمن په دارالسلطنت صنعاء کښی یوه خانسته گرجا جوړه شوه، په عربو کئی چه کله د خبره مشهوره شوه، نو د یو روایت په مطابق د قبیله کنانه یو سرې هلته راغلو او غټ بول نی وکړل او و تختیدو ، او دبل رواېت په مطابق د عربو خوانانو د دې په خوا وشاء کښی اور بل کړو، دا هوا په ذریعی سره په گرجا کښی اور بل شو. او ګرجا اصوزیده، ابرهه په غصه کښی قسم وخوړلو چه د خانه کعبی نړولو سره به ساه اخلمه.

او په دې اراده نی مکې ته فوځ ورواستولو، په لاژه که چه به د عربو کومي قبیلی مزاحمت کولو نو هغه به نی ختمولو، تردی چه مکي مکرمی ته راورسیدل، لښکر او هاتهیان هم ورسره وو، د مکې په طرفونو کښې د مکي واله څاروی څریدل، د ابرهه لښکر هغه څاروی ونیسل چه په هغې کښې دوه سوا اوښان د حضور کله د جدامجد عبدالمطلب وو .

په دغه وخت کښي دقریشو سردار او د خانه کعبي متولی عبدالمطلب وو. کله چه ده ته د ابرهه خبر وشو نو قریش نی جمع کړل او ورته نی وونهل چه ویریږی مه خانه کعبه خالی کړئ،خانه کعبه څوک نړولی نشي، دا د الله کور دې او هغه به نی پخپله حفاظت کوي.

دې نه ورستو عبدالمطلّب يو څو د قريشو سرداران خان سره کړل او ابرهه سره ميلاويدو ته لالله ابرهه د عبدالمطلب په ليدو سره په رعوب راغلو او ډير په احترام او اکرام سره ورته راغلو ، د خبرو په دوران کښې عبدالمطلب د اوښانو د رهائي مطالبه وکړله، ابرهه متعجب شو او ونيل ډيره د تعجب خبره ده، چه زما سره دې د خپلو اوښانو په باره کښې خبره وکړه او خانه کعبه چه ستاسو د اباء او اجداد دين او مذهب دی، ددې په باره کښې ته يو لفظ هم ونه وثيلو، عبدالمطلب جواب ورکړو ، او ار بالا پل، وللهت رب سيمتمه ، ، خه د اوښانو مالک يم ځکه ما د اوښانو سوال وکړو ، او د خانه کعبې خدا پخپله مالک دی، هغه به خپل کور بچ کې ، ابرهه د څه خاموشي نه پس د عبدالمطلب اوښان واپس کولو حکم وکړلو، عبدالمطلب

خيل اوښان واخستل او واپس راغلو .او قريشو ته ني حکم وکړلو چه مکه خالي کړي.او ټول ا_{لوښ}ان ئی د خانه کعبې نذر کړل.او د يو څو کسانو سره د خانه کعبې دروآری ته حا**ض**و يّ، جديول منت او زاري سره دعا وغواري.

عبدالمطلب د دعا نه فارغ كيدو سره خيلو ملكرو سره غر ته وختو.او ابرهه خيل لښكر واغستلو او د ځانه کعبې نړولو دپاره لاړل،بس سمدستی د خدا په حکم د وړو وړو مرغو ډلې ړلی په نظر راغلي، د هرې يوې په مخوکه او په پنجو کښې واړ واړ کانړی وو .چه ناڅاپه په لېکر باندي باران شو ، د ځدائ په قدرت سره هغه کانړو د ګولې کار ورکولو ،په سر باندی به پروتو او د لاندی د طرفه به ووتو ، او چه په کوم کس به هغه کانری پروتو نو هغه به ختمیدو . غرض د چه په ده طريقه د ابرهه لښکر تباه او برباد شو، او په خپله د ابرهه په بدن باندې ينکئ دانې راوځتې،چه د هغې په ذريعه د هغه بدن سخا شو او د بدن نه ئې نؤ او وينه بهيدله،اويوبل پسي،بهني يويواندام كټكيدلو اوغورځيدوبه،آخر د هغهسينه وشليده. زړه ئي بهر راوټو او مړ شو،چه کله ټول مړه شول،نو الله تعالى د سيلاب په ذريعه هغه ټول په درياب يوړل، (۱، دلته حضور اكرم ﷺ ده واقعي طرف ته اشاره وكړله او د ني ونيل غوښتل چه الله تعالى د مكې مكرمې د حرمت دپاره اصحاب فيل د مكې والو نه منع كړل او په دوې

ئي ابابيل مسلط کړل، لهذا د اسلام نه پسخو د هغې خلقو حرمت نور هم زياتيږي. ٥٠ که چرې د روایاتو په لفظ کښي غلطي راشي نو د هغې تصحیح کول پکار دی کنه؟ امام بخاري پښځ دلته چه څنګه د امام ابو نعيم کښځ نه اوريدلې دې هم هغه شان يې نقل کړې دې او تلامده ته نې هم وونيل چه دا هم داسې پاتې شي او په صواب ني ورته تنبيه و کړله.

ددې نه معلومه شوه چه د امام بخاري کونځ په نزد که چرته د روايت په لفظ کښې غلطي راشي نو هم داسي رواېت کول پکار دې،

په دې مسئله کې د علماء دوه مذاهب دي. ① نافع مولی ابن عمر،ابو معمر عبدالله بن سخبره. محمد بن سيرين. قاسم بن محمد او د رجاء بن حيوة نه علاوه نور ډير حضرات دي چه څنګه ئي اوريدلي دي هغه شان دې روايت کړي شي. ۲٫۱ 🕝 اکثر محدثين مثلا همام. ابن المبارك، آبن عيينه، النضر بن شميلً، أبو عبيد، عفان، ابن المديني، ابن راهويه، حسن بن على الحلواني، حسن بن محمد الزعفراني وغيره فرماني حِد كه چرته به روايت كنبي غلطي واقع شي نو دا درست كولو سره على الصواب نقل كول پكار دي ..ً ،

^{ً)} وگوري سيرت الصطفى (ج ١ص ٤٤ - ٤٩) -

⁾ فتح الباري ج ١ ص ٢٠٠٩) -) وكورئ الكفاية (ص ١٨٥ - ١٨٨) باب ذكر الرواية عن كان لا يرى تغيير اللحن في العديث) وكورئ الكفاية (ص ١٨٥ - ١٨٨) والجامع لاخلاق الراوي وآداب السامع (ص ٢٤٢ و ٢٤٣)وعلوم العديث لابن الصلاح (ص ٢١٨) النوع السسا د س والعشرون في صفة رواية الحديث وشرط ادانه وما يتعلق بذلك ـ وفتح المفيث للسخاري (ج

⁾ وكوري (المحدث الفاصل بين الراوى والواعى (ص ٥٧٤ ـ ٥٢٤) والكفاية (ص ١٩٣ ـ ١٩٩) وفتح ٣ ص ١٥٨) اصلاح الحن والخطاء) -النغيث للعراقي (ص ۲۶۶) وفتح المغيث للسخاوي (ج ۳ ص ۱۶۹) -

خطيب بغدادى كَتُنْكُ فرمانيلي دى .. وهذا اجباح منهم ان اصلاح اللعن جائزه في يعنى د حديث و علماؤ اجماع ده چه د لحن اصلاح جائز ده، هم دغه شان فرمانى : والذى تنهب اليه رواية الحديث على العواب، وترك اللعن فيه وان كان قد سبح ملعونا، لان من اللعن ما يعيل الاحكام ويمير

العرام حلال والعلال حراما، قلا يلزم اتهام السبام فها هذه سبيله، والذى ذهبتا اليه قول المصلين والعلماء من المحلين المحلين أن يعنى زمون مذهب دا دي چه حديث درست روايت شي او په لعن باندي عمل اونكري شي، اگر چه سماع د لحن سره شوي وي، ولي چه بعضى لحن داسي دي چه هغه په احكام و كنبي تبديل راولي او حرام حلالوي او حلال حراموي، لهذا كوم خائ كنبي چه داسي صورت وي نو هلته د سماع اتباع ضروري نه ده، زمون دا مذهب هم د علماؤ او محد بننه مذهد ده، دا مذهب هم د علماؤ او محد بننه مذهد دي.

محدیثنر مذهب دی.

حافظ ابن الصلاح او امام نووی رحمهاالله هم ده ته صحیح وئیلی دی. رایدا خبری خو په هغه لحن کنبی ده چه کومی سره معنی نه بدلیری او کوم خای چه معنی بدلیری بن هلته بغیر د لحن کنبی ده چه کومی سره معنی نه بدلیری او کوم خای چه معنی بدلیری بن هلته بغیر د تردد نه ددی حضراتو په نزد علی الصواب روایت کول پکار دی. () البته د شیخ عزالدین عبدالسلام په باره کنبی علامه ابن دقیق لیکلی دی. سبعت ایا محب پن عبدالسلام دوگان احد سلاطین العلماء کان یری فره البسالة مالم ار ۱۳ لحب، ان هذا السخط المعرب بن عبدالسلام و الشعل العواب ولاعل الطفاء اماعلی الصواب فائه لمیسم من الشیخ کذلک، واماعلی الخطافلان سیدنا رسول الله صلی الله علیه و سلم لم یقد د بل چا نه نقل شوی نه ده او هغه دا ده چه محتمل لفظ دی نه درست کی سره روایت شی او نه دی غلط پاتی کیدو سره نقل کری شی درست په دی وجه روایت کول نه دی پکار چه د او نه خطا و ای نو نه ده درست ده د شیخ نه سماع نشته او خطا و وی نو نه ده درست روایت شی او نه خطا ولی چه د درست سماع نشته او خطا د حضور اکرم صلی الله علیه و سلم نه صادر شوی نه ده .

که چرته په کتاب کښې غلطی واقع شی نو هغه په خپل حال باند ی پرښودل پکار دی او کنه د هغه تصویب پکار دی؟ دا خبرې خو د روایت په باره کښې وې اوس که چرته په کتاب کښې غلطی واقع شی نو د هغې اصلاح پکار ده او کنه ؟ حافظ ابن الصلاح مُمُنِّيُّ فرمانیلې دی چه

۱ الكفاية (ص ۱۹۸) ـ

^{*}) الجامع لاخلاق الراوي وآداب السامع (ص ٣٤٣) القول في ردالعديث الى الصواب. اذا كان راويه قد خالف موجب الاعراب) -

[&]quot;) فتح المفیث للسخاری (ج ۳ ص ۱۷۰) ـ *) وگورئ علوم الحدیث لا بن صلاح (ص ۲۱۸) وتقریب النواوی (ج ۲ ص ۱۰۰) _

م فتح المغيث للعراقيي (ص ٢۶۶) وأنظر ايضا فتح المغيث للسخاوي ٠(ج ٣ ص ١٥٨ و ١٥٩) _

صحيح خبره دا ده چه هغه په خپل حال باندې پرښودل پکار دی. په کتاب کښې تصحيح نه ده پکار البته په حاشيه کښې د غلطئ نشاند هي پکار ده. ن

دوي وجه وأضحه ده په اکثرو وختونو کښې اهل علم يوه خبره غلطه ګڼې. خوچه کله د هغې صحبح توجيه کلې د احتياط تقاضه صحبح توجيه کيږې، خاص طور د عربي په لحاظ سره تخطنه کافي د احتياط تقاضه کوي، ولي چه لغات د عربي مختلف دي. لهذا يو جهت او يا لغت غلط ثابتول معولي خبره نه ده، (آجنانچه امام احمد بن حنبل مُحَلِّه عادت وو، که چرته به ني فحش غلطي وکتله نو د هغي تصحيح به ني کوله او که چرته معولي غلطي به وه نو هغه به ني پرښودله، (آ)

حافظ ابن الصلاح ﷺ نه نقل شُوى دى چه يو محدث چا په خوب كښي وليدلو چه دهغه په شونډو او يا ژبه كښي عيب دى. كله چه ترى تپوس وكړي شو نو وونيل چه ما د حضور اكرم صلى الله عليه وسلم په حديث مبارك كښي په يو لفظ كښي د خپلي رانى نه تبدل كړي وو. ددي وجي نه زما سره داسى وشوه در أهم دغه شان قاضى عياض ﷺ هم فرمانيلي دى. ، ان

الذى استبرطيه عبل اكثرالا شيام ان يتقلوا الرواية كما وصلت اليهم ولا يغيرونها في كتبهم رئحافظ ابن الصلاح مُنتُكُ فرمائلي دى چه بعضى علماؤ حضراتو په كتابو نو كنبى د تبديليانو جسارت كړې دې، لكه علامه ابو الوليد هشام بن احمد كنانى وقشى دې، دا

چونکه انتهائی ثاقب فهم ، تیز ذهن ، متفنن او کثیر العطالعد بزرګ وو ، په دې وجه باندی هغه په کتابو نو کښې ډ یر اصلاحات کړې دی . لیکن په ډېرو څیزونو کښې په خپله غلطیاني کړی دی ، چا چه هم داسې قسما اصلاح کړی ده ، نو هم د هغه سره داسې معامله شوې ده . . . کړی دی ، چا چه هم داسې قسما اصلاح او تغیر باب بند کړې شي خاص طور چه کله په حاشیه کښې د هغې وضاحت کیږ ې ، . . . او بیا په دې کښې اختیار دې چه روایت اول علی الصواب نقل کړې ، او د هغې بنه ورستو چه کوم ئی د استاذ نه اوریدلی وی هغه بیان کړی او که وغواړې چه څنګه نی اوریدلی دې اول هغه بیان کړې او بیا نې علی الصواب نقل کړی ، په د وخور اکړم صلی الله علیه وسلم طرف ته د غلطې نسبت دې کښې اولني قول بهتر دې ، چه حضور اکړم صلی الله علیه وسلم طرف ته د غلطې نسبت

قوله: وسلط عليهم رسول الله والمؤمنين: اويه دوى باندى الله تعالى خيل رسول كله

بالكل ونكړې شي، ٥٠) والله اعلم ،

^{ً)} علوم الحديث لا بن الصلاح (ص ٢١٩) -

⁾ وكدورئ علوم الحديث لآبن الصلاح (ص ٢١) وفتح العفيث للسخاوي (ج ٣ ص ١٧)-

⁾ علوم الحديث لا بن الصلاح (ص ٢١٩) -

^{&#}x27;) (حواله باله) ـ

⁾ الالماع (ص ١٣١) باب اصلاح الخط وتقويم اللحن والاختلاف في ذلك.وعلوم الحديث (ص ٢١٩)

⁾ علوم العديث لا بن الصلاح (ص ٢٢٠) -

^{ً) (}حواله باله) _) علوم الحديث (ص ٢٢٠) _

او اهل ایمان غالب کړې دې. دلته، سلط، دمعروف صیغه ده، او په دویمه نسخه کښې.. والمومنون، دې، په دې صورت کښې.. سلط، د مجهول صیغه شوه، و سول الله صلی الله ملیه و سلم والبومنون، به نائب فاعل وې، (، مطلب دا دې چه ابرهه اود هغه لښکر ته خو ده داخیلدو موقع مینلاؤ نه شوه، بلکه دوی د کعبې نه بهر هلاک شو او دا الله تعالى رسول نه و مومنان الله تعالى غالب کړل، الاوادهالم تحل لاحد تعلى ولم تحل لاحد بحد کا علی د مومنان الله تعالى غالب کړل، الاوادهالم تحل لاحد تعلى ولم تعلى د عليه د مومنان الله تعالى غالب کړل، الاوادهالم تحل لاحد تعلى ولم تعلى لاحد بحد کا به ناله د تعلى د عليه د تعلى د عليه د تعلى د

په غور واورې دا نه زما نه مخکې د چا د پاره حلال وو او نه زما نه ورستو د چا دپاره حلال دی. دا ده حدیث په بنا ، باندې د بعضي علماؤ مذهب دې. چه که اهل مکه په بغاوت راشي او په باطل باندې یو خائ شی نو هم د دوې سره قتال درست نه دې. البته د جمهور علماؤ په نزد که چرته بغیر د قتال نه سم نه شو نو د قتال اجازت شته دې. د فریقینو د مذاهبو تفصیل او دلاتل په تیر شوې ، پاپ لیها العلم الشاهد الغائب ، کښې تیر شوې دې. هم دغه شان په ده باب کښې حرم مکه کښې قتل وقصاص حکم هم په تفصیل سره بیان شوې دې.

قوله: الا، وانما حلت لي ساعة من نهار، الا، وانها ساعتى هذه حرام: واوري. دا زما دپاره د ورځی په څه حصه کښې حلال شوې وو او اوس دا حرام دی، لايغتلى شوکهاولا يمند شجرها : نه دې د دې غنی پريکړلی شي او نه دې ددې وني کټ کړ لي شي، لايغتلى،، باب افتعال نه د مضارع مجهول صيغه ده، اختلا معنى د غنې ده. ()

شوک د شوکه جمع ده غنې ته وئېلې کيږي، ۲۰٫

ق**ول**ه: <u>لايعضل: خ</u>ند يعند رباب ضرب، ندمضارع مجهول صيغدده، دا دې معنی هم د غنې ده، ر^ځ

د حرم مکې د نبا تا ت او د اشجار و د قطع څه حکم دې؟ په تفصيل سره ورستو ، پاپ ليپلغ العلمالشاهدالقائب، د لاندې تير شوې دې

قوله: ولا تلتقط ساقطها الالهنشد : او نه دې د دې غورځيدلي څيز ريعني لقطه، او چته کړې شي. مگر د معرف د پاره اجازت دي.

د کوم د لقطي حکم که چری په حرم کښې څه څیز وغورځیږ ي نو آیا ددې حکم هم د عامي لقطی په شان دی او یا که د دې حکم د نورو خاېنو د لقطو په مقابله که څه فرق شته دې ، امام شافعې پیشته فرمانی چه د لقطې حل او حرم کښې فرق شته دې، د هغه په نز د عامی

^{👬)} فتع الباري (ج ۱ ص ۲۰۶) -

⁾ وكورئ النهاية لا بن الا ثير (ج ٢ ص ٧٥) والقاموس الوحيد (ص ٤٨٣)_

^{ً)} القاموس الوحيد (ص ٨٩٩) ـ .

النهایة لا بن الا ثیر (ج ۳ ص ۲۵۱) -

لقطی حکم د دې، چه التقاط د لقطي واجب او که مستحب دې.او د دې نه ورستو به د يو مدت پورې تعريف کوي، او که د تعريف نه پس هم مالک رانغلو نو ملتقط هغه په خپل استعمال کښې راوستې شې،برابره خبره ده.که ملتقط غنی وي او که فقير ۱۰

ار دهره دلقطه په باره گښې هغه فرماني چې ددې التقاط صرف دحفاظت په غرض سره جائز دی، دتملک په نیت سره بالکل جائز نه دی، بیا به ددې همیشه تعریف کیږی، ګویا چې

ددې تملک په ممکن په وي 🔥

چمهرانمه او دامام ابوحنيفه. دامام مالک مذهب او دامام احمد شیخ مشهورقول دادې چې په لقطه دحل او دحرم کښې هيڅ فرق نشته، دامام شافعي پیک یوقول هم داسې دې ۱۰٪ دامام شافعي پیک استدلل یوخو دحدیث باب نه دې

درهام مساحتی و استدال په صحیح مسلم اوسنن ابی داؤد کښې د حضرت عبدالرحمن بن عثمان تیمی و استدلال په صحیح مسلم اوسنن ابی داؤد کښې د حضرت عبدالرحمن بن عثمان تیمی و الله کالله و الله و الله کالله و الله کاله و الله کاله و الله کالله و الله کالله و الله کال

يهو روبيت بهان رصون المتعلق المتدار المتعلق المتعلق المتعلق المتعلق المتعلق المتعلق المتعلق المتعلق المتعلق ال و من و بنات المتعلق ا

امام شافعی کولیځ فرمائی چې د عام لقطې په باره کښې رسول الله که .. عرفهاسنة، فرمانیلی دی _ ⁶، اودلقطه حرم په باره کښې نې هډو څه توقیت نه دې فرمانیلې. نومعلومه شوه چې ددې دائما تعریف ضروری دې، تردې پورې چې مالک نې ملاؤشی. ګښې داشان د تخصیص هډوڅه وجه نشته دې، په دې کښې راز دا دې چې مکه مکرمه لره الله تعالى ...مثابة للناس، جورکړې دې. دکوم ځاې نه چې خلق لاړشي بیاواپس دوباره دوباره راخي.عین ممکنه ده. چې ددې مفقود څیزدوجې نه مالک واپس راشي، یا څوک را اولیږي نودغه شان به دهغه مال

محفوظ وي _ ر') د جمهورو استدلال دلقطي په باره کښې وارد دهغه عامواحاد پثونو نه دې په کوموکښې چې د

د مهرود استعدال دستني په باره خبري رود کړې شوې د ز^۷ د ا لقطه حل اوحرم په مينځ کښې څه تفريق نه دې کړې شوې د ز^۷ د

بيا لقطه يُوامانت دى.دعامووديعتونوپشان ددې په حکم کښې څه فرق نشته. که دحل امانت دى اوکه دحرم امانت . ^)

⁾ تكملة فتح المهم (ج ٢ ص ٤٢٢) نقلا عن مغنى المحتاج (ج ٢ ص ٤١٧) -

⁾ تكملة فتح العلهم (ج٢ص٤٢٦). نقلا عن مغنى المحتاج (ج٢ص١٧٤)_

^{ً)} اوګوری المغنی لابن قدامة (ج۶ص۱۱)__

لوكورئ صحيح البخاري (ج ١ص١٩). كتاب العلم باب الغضب في الموعظة والتعليم اذا راي مايكره. رقم (٩١)_

[﴾] اوگورئ تكملة فتح المهلم (ج٢ص٤٢٣). كتاب اللقطة. باب في لقطة الحاج _

⁾ اُوگوزی الشفنی لابن قدامهٔ (ج۶ص ۱۱)__

_ حواله بالا_

دکوم ځې پورې چې دحدیث باب تعلق دې، نوددې په باره کښې علامه ابن قدامه که فرماني چې .. الالبنشد،، مطلب دې ۱۰ الالبن عهلها ماما،، دې _ مطلب دادې چې په مکه مکرمه کښې دلقطي اوچتولو اجازت هغه چا ته دې څوک چې دتعریف اراده لري، دتملک په

مگرمه کښکې دلقطې اوچتولو اجازت هغه چا ته دې څوک چې دتعريف اراده لري. دتملک په نيت سره داوچتولوګنجانش نشته دې ـ () په دې باندې سوال کيږي چې کله دحل او حرم په لقطو کښې څه فرق نشته نو بيا په مخصوصه

په دې باندې داته .. لاتنحط ساقطتها،، ونيلوسره دمکې مکرمې د تخصيص څه وجه ده؟

توګه باندې دلته .. لاتنحط ساقطتها،، ونيلوسره دمکې مکرمې د تخصيص څه وجه ده؟

ددې جواب دادې چې دادمکې مکرمې د خصوصيت دوجې نه دې چې د اتعريف صرف هلته
واجب وي، بلکه ددې تاکيدمقصود دې چې په مکه مکرمه کښې د تعريف زيات اهتمام
اوکړې شي. په حرم کښې چونکه بې شميره حجاج راخي نوځکه به هلته په تعريف کښې
مبالغه کول پکاروي. په مساجدو کښې او په اسواقو بېازارونو، او په محافطواو په مجامعو
کښې به باربار اعلانونه کول پکاروي او دا داسې دې لکه چې ښې کريم ناه فرمانيلي دي..
ضالة السلم حرق النار،، د چې د مسلمان ورک شوې څيزد سوزلوباعث دې ـ ددې دا مطلب نه

خالة البسلم حرق النار، در چې دمسلمان ورک شوې څيزدسوزلوباعث دې د دې دا مطلب نه دې چې داحکم صرف دمسلمان د څيزدپاره دې د ذمې د پاره نه دې بلکه دا حکم ددواړو د څيزونو دپاره دې ، البته دمسلمان د څيزتاکيد مقصود دې $\binom{n}{2}$

صاحب دهدایه فرمانی دحدیث باب مطلب دادی چی ددی التقاط هم دتعریف دپاره جائزدی، او کوم خانی پوری چی دحرم دتخصیص تعلق دی نو داددی خبری دواضحه کولودپاره دی چی چاته دا خیال راتلل نه دی پکار چی دلته چونکه په عام توګه باندی داجنبی خلقو ورود کیږی، معلومه نه ده چی اصل مالک به دکوم خانی نه کوم خانی نه رسیدلی وی نولهذا دتعریف ههوڅه فائده نشته دی _ دااوګنږی اوتعریف اوعلان اونه کړی، ددی غلط فهمی لری کولودپاره حضوراکرم نظ اوفرمائیل چی ددی حکم هم دنورو علاقویشان دی چی دلته هم تعریف ضروری دی، څنګه چی په نوروعلاقوکینی تعریف ضروری دی، دورود

بعضي حضرات وانی چې دلته چونکه ملتقط ته دا غلط فهمي کيدې شي چې بس صرف په "موسم حج.. کښې اعلان اوتعريف ضروري کافي دې. ځکه هغوي تاکيد اوفرمائيلو چې دعام لقطې پشان پوره کال تعريف ضروري دي _ (٥)

د مام مسى پېسې و درو د کا علامه اين القيم کاتله د بعضي حضراتونه نقل کړی دی چې دمکې مکرمي تخصيص په دې

^{`)} حواله سابقه

آ) جامع ترمذی. کتاب الاشربة، باب ماجاء فی النهی عن الشرب قانما.رقم (۱۸۸۱)_ وسنن ابن ماجه.کتاب اللقطة، باب ضالة الابل والبقروالفنم,رقم (۲۵۰۲)_ ومسند احمد (ج٤ص٤٤) مسند مطرف بن عبدالله عن ابیه. رقم (۲۶۴۳) و (ج۵ص۸۰) مسند الجارود العبدی. رقم (۲۱۰۳۵-۲۱۰۳)_
 آ) المفنی لابن قدامة (ج۶ص۱۱)_

⁾ أوكورئ الهداية (ج £ص ٢٧٤) كتاب اللقطة (طبعة : ادارة القران كراتشى) وفتح القدير (ج ٢٥٥) () تكلمة فتح السلم (ج٢ص ٤٢٩) نقلا عن مفنى السحتاج (ج٢ص ٤١) _

بنيادباندې دې چې دمکې مکرمې نه خلق زرواپس ځي، ځکه ديوکال پورې تعريف په بعضي وختونوکښې مفيدنه وي، ځکه هغه ځائې کښې لقطه هم هغه سړې اوچتولوشي کوم چې دخلقو دتللو نه وړاندې وړاندې تعريف کولې شي،اوپه نوروخايونو کښې چونکه دا وجه نه وي ځکه هلته تخصيص نه دې شوې _ ()

اوکوم ځاې پورې چې حدیث .. **دی من تقطة الحاج**،، تعلق دې،نودا نهی بالکل صریع ده اوپه ظاهره ددې حکم دنورولقطو دحکم نه مختلف دې _

ليكن حقيقت دادې چې ددې نهي نتيجه هم دا راوخي چې .. لقطة الحام، او .. لقطة في الحام، او .. كنبې څه فرق هم نشته دې ... كنبې څه فرق هم نشته دې ...

وجه داده چې لقطة الحاج دالتقاط نه نهى په دې بنياد باندې شوې ده چې حاجى دخپل خان سره هم ضرورى ضرورى څيزونه اوړى اوكوم څيزونه چې هغه خان سره اوړى دهغې نه هغه عموما مستغنى نه وى، ګويا ددغه څيزونو هغه ته سخت ضرورت وى. په داسې صورت كښې چې كله دهغه نه څه څيز اورک شى نوهغه به نې خامخه لټوى اوپه عامه ټوګه باندې به هم هلته نې لټوى كوم خانې كښې چې هغه څيزاورک شوې وى، نولهذا كه چا دغه څيزاوچت كړونومالک به ئې په آساني سره حاصل كړى. په خلاف دهغه صورت كښې چې څوک نې اوچت كړى او تعريف ني او كړى نو دا عين ممكنه ده چې څيزپه يوخانې كښې اورک شوې وى او هغه سړې تعريف په بل ځانې كښى كوى. مثلا څيزپه مكه مكرمه كښې ورک شوې وى او هغه په منى كښې اودک شوې وى او هغه په منى كښې اودک شوې وى

اوهغه په مُنی کښې اعلان کوی _ په داسی صورت کښې به دتعریف هیڅ فانده نه وی _ " کی د دی دی به مختلف نه دی . " ددې نه داخبره واضحه کیږی چې دلقطه الحاج حکم دنورو لقطو نه مختلف نه دې . خکه چې اصل دادې چې التقاط لقطه نه وی ، او که چرته دضائع کیدو او دتلف کیدو اندیښنه وی نو التقاط دې اوکړې شی ، څنګه چې لقطه الابل په باره کښې نهی وارد ده _ بعینه دغه شان د لقطه الحاج نهی هم په دې بنیاد باندې ده _ ()

د لقطة الحاج په باړه کښې يو وضاحت : دلته دا خبره دې ملحوظ وی چې دحاجيانو د لقطي التقاط کوم ممنوع دې دا حکم معلول بالعلة دې،په هغه صورت کښې به التقاط نه کړې کېږي کله چې دضياع اودسرقه نه مامون وي _ (⁷)

علامه ابن الهمام کیا فی فرمانی په صحیح مسلم کښې چې کوم ., دهم من تقله العام،، راغلي ده، ددې په باره کښې فرمانی چې ددې مطلب دادې چې داپه هغه ځانې کښې ده، ددې په باره کښې ابن وهب کیا فرمانی کښې اودا واخلی، لیکن زمونږ په زمانه کښې دې پاندې عمل ممکن نه دې. ځکه چې په مکه مکرمه کښې دبیت الله شریف نه خاوشا لایره زیاتې غلاګانې کیږي، نوچې مالک نه وی نولقطه به بالکل محفوظه نه وی ر^۴، والله اعلم لایره زیاتې غلاګانې کیږي، نوچې مالک نه وی نولقطه به بالکل محفوظه نه وی ر⁸، والله اعلم

كثف البكار<u>ي</u>

⁾ اوگورئ تهذیب السنن (ج ۲ص۲۷۳)_

ا أوفورئ تكلمة فتح البلهم (ج؟ص ٤٢٤) _ ا حواله بالا

⁾ فنع اللدير (ج۵ص۲۵۷)_

فوله: فَمَنْ قُتِلَ فَهُوَ بِخَيْرِ النَظَرَيْنِ إِضَّا أَنْ يُعْقَلَ ، وَإِضَّا أَنْ يُقَادَ أَهْلُ الْقَتِيلِ نوجی کوم سری قتل کری شی نوهغه ته ، یعنی دهغه ولی ته، په دو اختیاراتوکنی دبهتر اختیاردی. یاخودهغه مقتول دیت دی ورکری شی یا دمقتول اهل ته دی قصاص ورکړی شی دلته .. مَنْ قُتِلَ فَهُ بِعَيْرِ النَظَرَيْنِ .. واقع دی او په ظاهره ددې معنی درسته نه ده ځکه .. مَنْ قُتِلَ» نه مقتول مراد دې د..هو، ضمیرهم دهغه طرف ته راجع کیږی.حالاتکه مقتول ته اختیارنه وی

علامه کرمانی پیشیخ فرمانی چې دلته تقدیری عبارت .. م**ن قتل فهوای اهله بخیرالنظرین،،** دې یعنی مراد..اهل،، دې. اګرچه ددې په خانې باندې ..هو. . یعنی دمقتول ضمیر ایخودې شوې دې.ددې وجه هم داده چې هم مقتول ددې اختیار سبب جوړیږی _ ، ^()

دې اددې وېستم د د پې که مستون دې لیکن علامه عینی څخه فرمانۍ چې په دې کښې اضمار قبل الذکر لازمیږی. کوم چې درست نه دې.څکه چې د ..اهل،، اول ذکر نه دې شوې _ . . .

علامه خطابی اوحافظ ابن حجر رحمهالله فرمائی دلته تقدیری عبارت .. **من قتل له قتیل** دی ت

منتخته عینی پخته په دې تقدیر باندې هم اعتراض کړې دې او ونیلی دی چې په دې صورت کښي حدف فاعل، یعنی نائب فاعل، لارمیږي _ : ;

هغه فرمانی چې دلته دې مبتدا، محدوفه اومنلې شی او تقدیری عبارت داسې پکاردې .. فین اهله قتل فهویخیرالنظرین، په دې کښې .. من ،، مبتدا، ده... اهله قتل، په مبتدا، اوخبر باندې مشتمله جمله د..من. ، موصول دپاره صله ده .. فهویخیرالنظرین، پوره جمله مبتدا، اول دپاره خبردې... قتل، کښې چې کوم ضمیر دې هغه د..اهل،، مقدر طرف ته راجع دې او د.. فهو،،ضمیر..من، طرف ته واپس کیږي.

اود.. پخیدالنظرین،، متعلق محدوف دې .. فهومرهۍ پځیرالنظریت،،یا., فهوهامل پخیرالنظریت،،یا ۰۰ فهومامورپخیرالنظریت، تقدیر راویستلي کیدی شي _{- (}ه)

دعلامه عینی کا دخطابی او دابن حجر رخمهاالله په تقدیرباندې اعتراض اګرچه په خپل خانی باندې صحیح دی.بیا هم دا ونیلی کیږی چی په اصل کښی دلته عبارت وو..من متل له

⁾ شرح الكرماني (ج٢ص١٢٢)__

⁾ عبدة القارى (ع٢ص١٤٥)_

[&]quot;) اوگوزی اعلام آلحدیث للخطابی (ج ۱ص۲۱۶). وفتح الباری (ج ۱ص۲۰۶) _ *) صعة القاری (ج۲ص۲۶) _

^ئ) حواله بالا_ُ

 $\frac{1}{8\pi b}$ ، خکه چې په کتاب الديات والا روايت کښې صريح ټوګه باندې .. من $\frac{1}{8\pi b}$ له $\frac{1}{8\pi b}$ وارد شوې دې . $\frac{1}{2}$

بيا دعلامه صنعاني گولگ په نسخه کښې په خپله په دې مقام کښې د ..من قتل له قتيل، ، پوره عبارت موجود دې. ددې نه معلوميږي چې په دې مقام کښې په بعضې نسخو کښې دغلطې نه دغلطې نه دې مقام کښې په بعضې نسخو کښې دغلطې نه د ده تا ته دې د کې دالله اعلم

نه المعتبل، پاتي شوي دي - نَ والله اعلم_ وله: إمَّا أَنُ يُعُقَلَ، وَإِمَّا أَنُ يُقَادَ أَهُلُ الْقَتِيلِ » : يا خواهل مقتول ته ديت وركري شي يادمقتول نه دي قصاص والحستلي شي _

دعلامه کرمانی گیگی کلام نه معلومیږی چې .. اهل القتیل،، د.. یعقل،، نائب فاعل دې اود.. یقاه،، نائب فاعل ضمیر دې. کوم چې دمقتول طرف راجع کیږی ـ رگ

علامه قسطلانی گوشی د دمامینی به حواله سره نقل کړی دی چې کیدې شی .. یقاد،،. یمکن من القود،، دمقتول من القود،، دمقتول اولياز ته به دقصاص اخستلو اختیار حاصل وی ـ ن

د قتل عمد مؤجب احد الاموین دې یا صوف قصاص؟ ددې حدیث نه معلومیږی چې دقتل عمدموجب په دیت اوقصاص کښی یودې. په دې کښې دیواختیارولوحق دمقتول ولی ته په ۲ وی ـ دامام شافعی او دامام احمد رخمهاالله هم دا مذهب دې ـ

اوامام ابوحنیفه. اوامام مالک او امام سفیان ثوری مینیخ فرمانی چی دمقتول ولی ته دقصاص اخستلو حق حاصل دی، که قصاص نه اخلی نو معاف دی کړی ـ کوم حانی پورې چی ددیت دایجاب تعلق دی. نودا دقاتل درضامندی باندې موقوف دی ـ (۴)

علامه ابوالقاسم سهیلی محطه فرمائی چی دفریقین په مینَّخ کَبْس داختلاف منشا په آیت کریمه دَمَّن عُفِی لَهُ مِنْ اَخِیهِ شَیْءَ قَائِیاً مُّ بِالْلَعُوْوْفِ وَاَقَاقِالِهِ بِاَحْسَالِ مِن احتمال دی. په دې آیت کښې د.. اتباع.. حکم بالاتفاق ولی دم ته دې او.. اداء، حکم قاتل ته دې. لیکن فَمَن عُفِیُ لَهُ مِنُ اَخِیهُ شَنْی مُّ کَښې دننه دوه احتماله دی. یوخودا چې ..من، نه مراد ولی دم وی اود.. حق له، معنی ..یسهاه، وی اود.. من اخیه، نه مراد مقتول وی او.شی، نه دیت مراد وی

⁾ اوگوری صحیح البخاری (ج۲ص۱۰۱۶) کتاب الدیات. باب من قتل له قتیل فهویخیرالنظرین. رقم (۶۸۸۰)) اوگوری ارشاد الساری (ج۲ص۲۰۶) ____

⁾ شوح الكرماني (ج ٢ص١٦) _

⁾ ارشاًد السارى (ج١ص٢٠٥) _) اوگورئ شرح صحيح البخارى لابن بطال (ج٨ص٥٠٥و٥٠). كتاب الديات،باب من قتل له قتيل فهو بخيرالنظرين

⁾ البقرة /١٧٨_

اوس به مطلب داوی ., من پسماله من اعیه البقتول شیء ای من الدید، ، یعنی که چرته د ولی دم دپاره ددهٔ درور دوجی نه دیت ورکړی شی نو (فَالِتَّاعُ بِالْمَعُرُوْفِ وَآذَا وَالْبِهِ بِإَحْسَانِ هُ)_

اودویم احتمال دادې چې د .,من، نه مراد قاتل وی او,, مغې، د حغو نه ماخوذ وی، چې معنی بې دمعاف کوله ده او, اهیه ، نه مراد ولی دم وی. مطلب به داشی چې که چرته قاتل ته دولی دم دطرفنه دقتل معافی ورکړې شی نودقاتل نه به قصاص ساقط شی اودقاتل په ذمه به دیت واجب شی، نواوس به دولی دم په ذمه به په معقول ټوګه باندې دمال مطالبه به کیږی چې ده لره ده په معقول ټوګه باندې دمال مطالبه به کیږی چې ده لره ده په ښه طریقه سره ادا و کول

دی چې په مقدار کښې کمکې اونه کړی اونه دې خواه مخواه ټال مټول کوی - (۱) شوافع او حنابله په دې کښې ددې دويم احتمال په بنياد باندې دا وانی چې قاتل لره به کلی ټوګه باندې يا په جزني ټوګه باندې معاف کړې شي نوقصاص به ساقط کيدوسره دديت دوجوب صورت جوړې دې شي، ګنې نه _ ګوياچې قصاص معاف کولو سره دديت واجب

دوجوب صورت جوړې دې شی، عنی که _ خوی چې تخت سال کانت که خوتو سره عنی که رکوب کولواختیاربه ولی دم ته وی قاتل ته نه _ اواحناف او مالکیه آیت لره اولنی احتمال باندې محمول کوی او دا وائی چې چونکه اصل

اواحتاق او هانديد ايت تره اولتي اختصاب الدې منصون کوي او تا روسي پې پوده صاح حکم رگتِبَ عَلَيَکُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتُلُ*) موجب قصاص دې،البته که چرې ولی دم قصاص وانخلی، بلکه په دیت اخستلوباندې راضی شی اوقاتل په دیت ورکولوباندې راضی شی نواوس ددې طریقه کار ښودلې کیږی چې ولی دم دې ,,اتباع بالمعروف،، اوکړی اوقاتل دې ,,اداء باحسان،، اوکری _

«دې نه علاوه داحنافو دلانل لاندې دی:

(كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلَى *)_ (\

(و رُوكَتُبْنَاعَلَيْهُمْ فِيهُ آنَ النَّفْسِ بِالنَّفْسِ " _ (")

(وَمَن عُثِلَ مُطْلُومًا فَقَدْ حَعَلْنَا لِوَلِيَّهِ سُلُطْنَا فَلا يُعْرِف فِي العَثل *) راً ،

په دې آيت کښې بالاتفاق هم قصاص مراد دې _ رقم

َ۞ (وَانْ عَائَبُتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْل مَا عُوقِبُتُمْ بِهِ *) _ `` ۞ _ (فَين اعْتَدْى عَلَيْكُمْ وَفَاعْتُدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلُ مَا اعْتَدْى عَلَيْكُمْ) , '`

 أم اعلاء السنن (ج ١٨ص ٧٨). كتاب الجنايات. باب ثبوت الخيار لولى المقتول بين القصاص والدية بعد رضاء القاتل بالدية _

⁽⁾ أوكوري الروض الانف (ج٢ص٢٧). ومعارف القرآن (ج١ص٤٣٤و٤٣٥) خلاصة تفسير_

⁾ البقرة /١٧٨__ المنافعة / ١٨٨__

⁽⁾ المائدة / ٤٥_

⁴) الاسراء /٣٣_

مُ النحل /۱۲۶__

⁾ البقرة /١٩٤

په دې آیت کښې هم د.،مثل، ، نه ،،قود،، یعنی قصاص مراد دې . ﴿) ددې ټولو آیاتونوتقاضا دا دم چې دقتل عمد موجب هم صرف قصاص دې، ددې نه علاوه نورهيڅ نه دی ۔

وآآيات كريمه نه علاوه لاندې رواياتونه هم داحنافو دليلونه دى ـ

🕕 په سنن نسائي کښې، اوسنن ابي داود اوسنن ابن ماجه کښې دحضرت عبدالله بن عباس 💨 نه مرفوفا مروی دی

, قال دسول الله صلى الله حليه وسلم: من قتل في حبيا او زميا تكون بينهم بحجراو سوط اوبعصا فعقله حقل عظاء، ومن قتل مبدا ققود يداك، قبن حال بينه دبينه قعليه لعنة الله والبلاكك والناس اجمعين، لايقبل منه مرفولامدل،،_(اللفظاللنسالي_ن

يعنی, کوم سړې چې په ړوند جنګ کې مړ شی يا ددوی په مينځ کښې سنګ باری (دکانړو بمباري يا دکورو يا دلختو جنګ وي نودده ديت به دفتل خطا ديت وي او څوک چې عمدا قتل كړې شى نودهغه نه په لاس سره قصاص اخستلې شى.بيا كه څوک دقاتل او دقصاص په مینځ کښې حائل وی نوپه هغه باندې به دالله تعالی او دټولو فرښتو اودټولو خُلقو لعنت وی، ددهٔ نه به نه نفل قبول کړې شي اونه فرض٠٠٠

 امام طرانی کنتهٔ درومیدالله بن ای یکی بن محمد بن عمود بن حومت اییه عن جدد ، به طریق سره مرفوعا نقل كړې دى ,, العبه قود والخطا دية،، $_{-}$ عنى ,, دقتل عمد موجب قصاص او دقتل

خطاء موجب به دیت وی، ، ـ دلته "جد،، نه مړاد عمروبن حزم دې، څنګه چې علامه ابن حزم کیک دذکرکرده طریق نه

 داحنافواومالکيه يو دليل دحضرت وائل بن حجر الله عديث دي، چې په کښي مذکور دی چې يوسری بل سړې دحضور اکرم نظم په خدمت کښې حاضر کړواوعرض ئي او کړو چې ده زما رور قتل کړې دې،نونبي نيايم د قاتل نه پوښتنه او کړه نوهغه اقرار او کړو، نونبي نيايم په دې موقع باندې د ولی مقتول په ځانې باندې دقاتل نه پوښتنه اوکړهٔ ,,هللك من *څوه تؤ* ديه من نفسك؟...(يعني ستاسره څه شته دې چې دخپل نفس په بدله کښې ورکړې ؟، نوهغه سړي اووئيل چي ماسره سوا زما دڅادر اوتبر ته علاوه بل هيڅ نشته دي. نونبي تو ه بيا پوښتنه

⁾ اعلاءالسنن (ج١٨ص٧٨)_

⁾ السنن للنسائي. كتاب القسامة والقود والديات.باب من قتل بعجر اوسوط. رقم (٤٧٩٣) و (٤٧٩٤). والسنن لابى داود. باب من قتل فى عميا بين قوم. رقم (٤٥٣٩)و(٤٥٤٠)_ والسنن لابن ماجه. ابواب الديات. باب من حال بين ولى المقتول وبين القود او الدية، رقم (٢۶٣٥) __ م

⁾ مجمع الزوائد (ج6ص ٢٨۶) كتاب الديات،باب قتل الخطاء والعمد_

⁾ اوگورئ المحلَّى لابن حزم (ج ١٠ص ٢٤٢)_

اوکړه چې ستا دقبيلي خلق به ستا مدد اوکړي که نه ؟ نوهغه اووئيل چې په قبيله کښې زما د شهره د نه د د د د د ۱۹۳۰ د نه د د د د د د د د د د د اله کړو د ۱

هیخ حیثیت نشته دی. نونبی ۱۸۳۸ دغه سړی دمقتول ولی ته حواله کړو د ۱۰ م په دې حدیث کښې هغوی ۱۸۴ دمقتول دولی په خانې باندې دقاتل دولی نه تپوس کول چې تاسره د اداء کولو دپاره څه شته دې که نه ددې خبرې دلیل دې چې دمقتول ولی ته اختیار پشته دې. که چرې دې په اختیار کښې وې نونبې ۱۸۴۸ به دمقتول دولی نه تپوس کړې وې چې

- آیا ته قصاص غواړي که دیت؟ • ددې قسمه یوروایت په سنن نساني کښې اوپه سنن ابن ماجه کښې دحضرت انس گای نه

یعنی ..یو سری رسول الله 微 ته دخپل ولی قاتل نیولی رواستو، نونبی کریم 微 ورته اوفرمائیل دیت واخله. و افرمائیل دیت واخله. نوهغه انکار اوکرو،نوبیا نبی کریم ش اوفرمائیل دیت واخله. نوهغه انکار اوکروبیا نبی میم اوفرمائیل لا شه دی قتل کره سری

⑤_ داحنافو اومالکیه یودلیل په مصنف عبدالرزاق کښې دحضوراکرم نهم تحریری دستاویزدې. چې په دې کښې دی ..افااصطلحوالی العبد فهوعلی ما اصطلحوا علیه،، .. (۴) یعنی.. دقتل عمدیه صورت کښې که چرې صلح او کړی نوچې په کوم څیزباندې دهغوی صلح کیږی نوهم هغه به واجب ګڼړلې شی....

ددې نه صراحتا دا خَبرهٔ معلوميږي چې دمال واجب کيدلودپاره ..دصلح ضرورت دي... او.صلح.. دفريقينوپه رضامندي سره کيږي _

دغه شان په مصنف عبدالرزاق كنبي دحضرت عمر گاتش روايت دي .. لايمنع سلطان ولي الدون وي .. لايمنع سلطان ولي الدون وي ال

 ⁾ صحيح مسلم. كتاب القسامة والقودوالديات. باب القود. رقم (٤٧٧٧). وباب ذكراختلاف الناقلين لخبرعلقمة بن وائل فيه. رقم (٤٧٢٨ - ٤٧٣٣) _

أي سنن النسائي. كتاب القسامة والقودو الديات. باب القود. رقم (٤٧٣٤). وسنن ابن ماجه. كتاب الديات.باب العفوعن القاتل. رقم (٢٤٩١) _

[]] صحيح البخاري (ج ١ ص٣٧٢)_ كتاب الصلح باب الصلح في الدية. رقم (٣٧٠٣)_

المصنف لعبد الرزآق (ج٩ص ٢٨٣) كتاب العقول.باب شبه العمد. رقم (١٧٢١٤) __

العالم الم

سي جريم ... ددې اثرنه معلومه شوه چې ولی مقتول دديت مستحق به په هغه صورت کښې وی کله چې ۱۱ - ت

د شوافعو دلائل اودهغې جائزه دامام شافعی کنگ دلیل دحدیث باب نه دې. چې په کښې په واضحه ټوګه باندې مذکوردی .. فبن قتل فهر پغیرالنظرین: اماان پیقل وامان پیقاداهل انقتیل، ، _ دې حدیث په ډاکه رښکاره، ټوګه باندې او ښودله چې ولی دمقتول ته ددو څیزونو اختیار دې چې په کښې نې کوم یوخوښ وی اختیار دې کړی، یادې دیت واخلی یا دې قصاص _ لیکن حقیقت دادې چې دې نه استدلال تام نه دې. خکه چې ددې روایت په الفاظوکښې اختلاف دې. حافظ ابوالقاسم سهیلي کنگ فرماني چې په دې کښې اووه آنه قسمه الفاظ وارد دی

په بعضي روايت کښې دی .. اماان يقتل دامان يغادی، . ـ

پەبعضى روايت كښى دى ,,يقتل اويغادى، ._

په بعضې روایت کښې دی ,,اماان یغدی داماان یقتل، ._

په بعضې روايت کښې دی .,اماان يعقل اويقاد،، ـ

په بعضي روایت کښې دي .. اماان تعطي الدية اويقاد اهل القتيل، . .

په بعضي روايت کښنې دی .. اماان يعفواديقتل، . ـ

په بعضي روایت کښي دی .. من قتل متعبدا دفاخال اولیاء البقتول فان شامواقتلوا، وان شاموا اعتبوا الدبلة . . .

په بعضي روایتونو کښي دی .. قبن قتل بعد مقابی هذا قامله بغیزالنظرین ان شاءوافدم قاتله، وان شاءوافعتله، ، ﴿ *)

^{·)} المصنف لعبد الرزاق (ج ١٠ص ١٤) كتاب العقول.باب شبه العمد، رقم (١٨١٩٥) _

أ اوكورئ الروض الانف (ج ٢ص ٢٧٨) _ نيز أوكورئ صعيع مسلم، كتاب العج، باب تعريم مكة رقم (٣٠٠٥) و(٣٣٠٥) وسنن النسائي. كتاب القسامة والقود والديات، باب هل يؤخذمن قاتل العمد الدية اذا عفا ولى المفتول عن القود ؟ رقم (٤٧٨٩) و((٤٧٨٠). والسنن لابي داود. كتاب الديات، باب ولي العمدياخذ الدية. رقم (٤٠٠٥). والجامع للترمذي. كتاب الديات، باب ماجاء في حكم ولي القتيل في القصاص والعفو. رقم (٤٠٠٤ / و٤٠٤٥). والسنن لابن ماجه، كتاب الديات، باب من قتل له قتيل فهوبالغيار بين احدى ثلاث، رقم (٤٠٤ / و٤٠٤٥).

په دې کښې چې په کوم کوم روایاتوکښې ..مفاداتا،یا د.. فدیه.. دې هغه روایات داحنانو اودمالکیه تائیدکوی، ځکه چې په هغې کښې ددیت ذکرنشته دې الفاظ... مفاداتا، ذکردې، په مفاداتا کښې مشارکت وی، په دې کښې دفریقینو درضامندی ضرورت وی. لهذا باقی روایات هم په دې باندې به محمول وی چې دقاتل په رضامندې سره دیت واخستلې شی _ څنګه چې په قرآن کریم کښې ارشاد دې ، فَلمَّامَتْاَبَعْدُواَمَافِدَاَقْ () دلته ..فدام پرهی الاسیر، ، مراددې، چونکه مخاطبینو ته علم دې چې بغیردرضامندې نه په اسیرباندې مال لاژمیږی نه ځکه دې لره په صراحت سره دذکرکولو ضروت اونه ګڼلې شو، په دې طریقې سره چونکه دلته هم دا امرمعلوم دی چې قاتل که د فدیه په ادائیګې باندې راضی وی نوپه دۀ باندې لاګو کیدې شی ګنی نه، څکه صرف ،. د دیت د ادائیګې ذکر اوکړې شو، درضامندې ددکرکولو ضرورت اونه ګڼړلې شو . ()

چنانچه امام مهلب گلگ فرمانی چې دحضور اکرم گ دارشاد .. فهو پغیر انتظین، نه معلومیږی چې کله ولی ته مال ورکړې شی اودهغه نه دعفوسوال اوکړې شی نوده ته اختیار دې که خوښه نې وی مال دې قبول کړی اومعاف دې کړی او که خوښه نې وی نوقصاص دې واخلی، دولی په ذمه .. اتباع اولی، ، ده، په دې جمله کښې دننه داسې څه خبره نشته دې چې قاتل لره په بدل دیت باندې مجبوره کیدې شی .. (۲)

دغه شأن د امام شافعي رئيل استدلال دابو شريح كعبي اللي دروايت هم نه دي :

, قال رسول الله صبل الله عليه وسلم: الا انكم يامعش، فواعة، قتلهم هذا القتيل من هذيل، ولل عاقله، فين قتل له بعد مقالق هذا و قتيل فاهله بين غيرتين، بين ان ياغذوا العقل اويقتلوا، . _ (*) يعنى ,, اي قبيله خزاعه ! تاسودبنوهذيل هغه سري قتل كړي دي، زه دهغه ديت در كومه، زما ددي قول نه پس كه دقتل واقعه راپيښه شوه نو دمقتول أولياؤ ته دوه اختياره به ملاويږي يا دې ديت اخلى يا دي قتل كوى، . _

امام شافعی گُونگُو فرمائی چې دلته .. فاهله بین غورتین،، حمله دلالت کوی چې دقتل عمد موجب احداد مرین دی. یعنی قصاص یا دیت. په دې کښې یولره دمتعین کولو اختیار ولی دمقتول ته دی _ ()

⁾ سورة محمد /£_ *)*

[&]quot;) اوكورئ اعلاء السنن (ج١٨ص٧٩و ٨٠) كتاب الجنايات.باب ثبوت الغيار لولى المقتول بين القصاص والدية _

^{ً)} اوگورئ فتح الباری (ج ۱۲ص ۲۰۹)،کتاب الدیات.باب من قتل له قنیل فهوبخیرالنظرین _ نیز اوگورئ شرح البخاری لابن بطال (ج۸ص۵۰۸-۵۰۹)_

أُ) السنن لابيُّ داود.كتاب الديات ببابُ ولى العمدياخذ الدية. رقم (£ 60)__

أوگورئ كتاب الام (ج٤ص٠١). كتاب جراح العمد، باب الحكم في قتل العمد

مونږوايوچې په دې کښې يواحتمال خوواقعي هم هغه دې کوم چې امام شافعي ﷺ فرماني چونکه يواحتمال داهم دې چې ددې معني وي .. فاهله بين غيرتين پعدان يوض القاتل پالدية، . دې قيد لره ني پريخودوچې په عام ټوګه باندې دخلقو عادت دا دې چې دخپل خان دحفاظت ډپاره په ديت باندې راضي کيږي _

په دې کښې دويم احتمال ځکه راجع دې چې قصاص قضاء بالمثل دې اوديت قضاء بالمثل دې اوديت قضاء بالمثل دې دويم احصل، بالقيمة الحب حق ته خو دمثل اخستلوحق حاصل دې ..دقميت اخستلوحق نه دې حاصل، البته که مثل اخستل متعذره شي، نودفريقينو په رضامندې سره قيمت اخستلي شي د دا يو قانون کلي دې ، بغير دنص صريح نه ددې خلاف دې اونه کړې شي، دا مذکوره دليل چونکه محتمل دې، نص صريح نه دې، لهذا ددې اصل صريح نه دې عدول اونه کړې شي اود حديث

مذكورنه دي هم دي احتمال ته ترجيع وركړې شي كوم چې مونوبيان كوو د () والله اهلم امام شافعي يَخْلِي د آيت كريمه (فَمَنْ عَفِي لَهُ مِنْ أَعِيْهِ شَهِيءَ قَالِيّاً قُولَاتُهُ وَادَّا وَالْهِ واحْسَان) تفسير په سلسله كنبي دحضرت عبدالله بن عباس الله نه وارد ديوروايت نه هم استدلال كړې دي، چنانچه هغه فرمائي :

و، كان في بعد المماثيل القصاص ولم تكن فيهم الديد، فقال الله تعالى لهذه الامد : وكُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ في الْتُتُلُ * أَكُورُ بِالْعَرِوالْعَبْدُ بِالْمَنْ فِي الْآلْثَى * فَمَنْ عَفِى لَهُ مِن اَعِيْهِ شَيْئَى عَن فالعفو: ان يقبل الديد في العدد، وقاتِيًا عُمِالْمَعُورُ فِي وَاَوَا مُرَالِيهِ بِإِحْدَانِ مِن يعتب بالدعوف ويؤدى بالحسان، وذٰلِكَ تَغَفِيْفٌ مِن رَبِّكُمُ وَوَمُعَمَّعُمُ مِعا

کتیمه من کان تهلکم، رفّنی اغتلی بَفْدَ ذٰلِكَ فَلَهُ عَدّابُ اَلِیْمُ تتل بعد تعول الدیلة، ۔ (')
یعنی ، په بنی اسرائیل کنبی دقصاص حکم جاری وو، ددیت حکم نه وو ، الله تعالی دی امت
ته اوفرمائیل په تاسوباندی دمقتولینو په سلسله کتبی قصاص لاژم کړی شوی دی، آزاد به
دآزادیه بدله کنبی، اوغلام به دغلام په بدله کتبی، بنخه به دنبخی په بدله کېنی، بیا که چری
دۀ ته ددۀ درور دطرفنه څه معافی ملاؤ شوه ۔ معافی داده چی دقتل عمدپه صورت کنبی
دیت قبول کړی ۔ نوددستورمطابق په تقاضا اوخوش اسلوبی سره دی اداء کړی شی، یعنی
دستورمطابق مطالبه دی اوکړی اویه خیکړی سره دی دویمه اداء کړی، دا ستادرب دطرفنه
تخفیف اورحمت دی دهغی خلقو په مقابله کنبی کوم چی ستاسونه مخکنی تیرشوی
دی، نوچی کوم سړی ددې نه پس تجاوز اوکړی، یعنی ددیت قبلولونه پس قتل اوکړی نودهغه
دیاره دردناک عذاب دی، ۰۰

دلته د ..مقو. . تفسير په ..قبول ديت ، . سره نې کړې دې ، ګويا چې ولی دم ته په قصاص يا په قبول ديت کښې ديواختيار دې -

ليکن حقيقت دادې چې ددې روايت نه دامام شافعي ﷺ استدلال درست نه دې. او وجه نې د ده چې حضرت ابن عباس ﷺ دلته صرف دومره خبره ښودل غواړې چې په بني اسرائيلو کښې هم قصاص مشروع وو. ددیت مشروعیت نه وو. دې آیت دولی دپاره دقبول دیت مشروعیت اواباحت اوښودلواوپه بنی اسرائیلوباندې چې کوم دقبول دیت ممانعت وو هغه ئي منسوخ كرو_ الحركه تخيربين الامرين اثبات مقصود وونو .. فالعقوان يقيل الدية، . به ئى نه فرمانيلو. ځکمه چې ..قبول. ، خوپه هغه صورت کښې وانيلې کيږي کله چې نورو بذل کړې وى. ځکِمچې بل سړې په نېې په رضامندې سره ورکوي نوهغې لره په قبلولي کيږي ۱۰ والله اعلم

قوله: نَجَاءَرُجُلٌ مِرُ. أَهُٰلِ الْيَكَرِبِ: داهل يمن نه يوسړې راغللو ـ دا حضرت ابوشاه يمني کانو دې. څنګه چې په کتاب اللقطه اود کتاب الديات په رواياتو

کښې تصريح ده .,فقام اپوشاه رجل من اهل اليس، 🖔 بعضي حضرات واني چې ددهٔ تعلق دېنوکلب سره وو. يوقول دا دې چې دې فارسي وو، ددوي تعلق دهغه ، اېناء ۱۰۰۰ سره ووکوم چې په يمن کښې دسيف بن دي يزن دمدد دپاره

ر کې در ... د دوی په نوم کښې ,شاه.. دهاء سره. د کوم معنی چې په فارسي کښې دباچا وي. بعضې حضرات , شاة .. بالتاء المدورة _ په معني د چيلي وئيلي دي. ليکن دا تصحيف دې _ ، ، قولهُ: فَقَالَ ٱكْثُبُ لِي يَارَسُولَ اللَّهِ. فَقَالَ « ٱكْثُبُوا لأَبِي فُلاَنِ » : هغه سړى عرض او كړه يارسول الله : زما دپاره اوليكه دليكل او كړه ، ين عيم او فرمانيل دابوشاه

وراندې د وليد بن مسلم والاروايت كښې دى ,, قلت للاوزاعى : ماقوله : اكتبواليا رسول الله، قال: هنة الخطبة التي سبعها من رسول الله صلى عليه وسلم، . _ (^a)

ددى حدَيث بآب دترجمة البابسره مطابقت بلكل واضحه كيرى . (). قوله: فَقَالَ رَجُلٌ مِرُ ـُ قُرُيُشِ إِلاَّ الإِذْخِرَ يَارَسُولَ اللَّهِ، فَإِنَّا تَجُعُلُهُ فِي يُبُوتِنَا

') اوكورئ اعلاء السنن(ج١٨ص٨٠)كتاب الجنايات،باب ثبوت الخيار لولى المقتول بين القصاص والدية. اوګورئ صحیح البخاری (ج۱ص۳۲۹) کتاب اللقطة باب کیف تعرف اهل مکة ؟ رقم (۲٤٣٤) و (ج٢ص١٠١) كتاب الديات باب من قتل له قتيل فهوبخير النظرين.رقم (٢٨٨٠) _

- ") الابناء هم قوم باليمن من ولد الفرس الذين جهزهم كسرى مع سيف بن ذي يزن. الى ملك الحبشة، فغلبوالحبشة. واقاموا باليمن، وقال ابوحاتم بن حبان : كل من ولد باليمن من اولاد الفرس. وليس من العرب يقال: ابناوي. وهم الابناويون_ عمدة القاري (ج ١ص ٢٥٤) كتاب الايمان باب حسن اسلام المر -
 - اوګورئ فتح الباری (ج۱ص۲۰۶). والاصابة (ج٤ص۱۰۰)_
 - نم اواكورئ صعيح البخارك (ج ١ص ٣٢٩) كتاب اللقطة باب كيف تعرف اهل مكة ؟ رقم (٣٤٣٤) م) فتح الباری (ج۱ص۲۰۶) _

قُهُورِنًا : دقريشويوسړي عرض اوكړو چې يارسول الله د ١٠٠٠خي. استثناء اوفرماني. ځكه چی مونزدا په کورونو ،چتونو، کښې او په قبرونوکښې استعمالوو_

وأقريشي سرى حضرت عباس الله أو . خناكه حي وراندي به كتاب اللقطه والاروايت كنسي .. هال المهاس، تصریح موجود ده _ (۱)

دابن ابي شيبه ﷺ په يوروايت كښې .. فقال دجل من قريش يقال له : شاء، . راغلي دي. كوم چىغلط دې ـ

ِ الله عليه وسلم: إلاّ الإذِّخِرُ: حضور اكرم كله اوفرمائيل جي

ايا حضور اكرم ﷺ ته په احكامو كښې داجتهاد حق حاصل وو ؟ حضور اكرم ﷺ دلته د.. اذخر.. چې کومه استثناء اوفرمائيله ددې نه معلوميږي چې نبي الايم ته په احکاموکښې داجتهاد حق حاصل وو_

په دې مسئله کښې اختلاف دې _ اشاعره اواکثرمعتزله اومتکلمين واني چې حضور اکرم ﷺ ته داجتهاد حق حاصل نه وو_ ا بيا په دې کښي ابوعلي جبائي اودهغه ځونې ابوهاشم ددې خبرې قائل دي چې حضوراکرم الله دياره دعقلا اجتهاد كنجائش نشته _

اونور حضرات وائي چې عقلا خوګنجانش شته دې. بياهم شرعا اجتهاد كولوسره ددې مطابق عمل كول صحيح نه دى ـ

دوي په مقابله کښې آهل اصول وائي چې حضور اکرم پي دپاره څنګه چې دوحي په ذريعه سره معلوم شوې احکاموباندې عمل جانزدې دغه شان په راې او اجتهاد سره چې کوم احکام مستنبط كيږي په هغې باندې هم عمل جانزدې ـ

هم دغه په احنافوکښي دامام ابويوسف نه منقول دي. امام مالک. امام شافعي او اکثر اصحاب حديث فينع هم دامذهب دي ـ

اكثر حنفيه وائى چې حضوراكرم نلايل لره په هره معامله كښې دټولونه وړاندې دوحى د نازليدو مکلف جوړکړې شوې دې که چرې دانتظارنه پس وحي نازله نشي نو داداجتهاد کولود اجازت دلیل دی ۔

بيابه څومره مده پورې انتظاركوي. بعضي حضرات وائي چې درې ورځوپورې اوبعضي حضرات وائي چې دمقصداود غرض فوت کيدوويرې پورې متعلق دې، کوم چې ښکاره ده چې مختلف کيدې شي _ بياددې ټولو حضراتو په دې خبره باندې اتفاق دې چې په راې اواجتهاد باندې عمل په حروب او په اموردنيا کښې جائز دې - ۱،

⁾ صعيح البخاري (ج اص ٣٢٩و ٣٢٧) كتاب اللقطة باب كيف تعرف اهل مكة ؟ رقم (٢٤٣٤)) فتع الباری (ج ۱ص۲۰۶) _

⁾ اوگوری کشف الاسرار (ج۳ص۲۰۵و۲۰۶)_

د مانعینو دلائل: مانعین په دې سلسله کښې آیت قرآنی ، وَمَایَنْطِقُ عَنِ الْهُوْی اَلِهُ وَلَاوْمُ اَلَّاوُمُ اَلَّا وَمُایَنْطِقُ عَنِ الْهُوْی الْهُوْی الْهُوْلُومُ اَلَّاوُمُ اَلَّالُومُ اَلَّالُهُ الله استدلال کوی اووانی چې دې آیت په واضحه ټوګه باندې اوښودله چې هغوی کا کنه هم نطق فرمانی نوهه دوم دو چې وحی به نه وی، لهذا دآیت په ذریعه داجتهاد نفی او کړې شوه آل دغه شان داحضرات عقلی دلیل دا پیش کوی چې حضوراکرم کا داقامت شرع دپاره مبعوث شوی دې ... اجتهاد ، ، د راې کیدو دوجې یو داسې دلیل دې چې په کښې دخطا احتمال شته دې، لهذا ددې څیز په ذریعه چې پکښې دغلطې او دخطا امکان وی اقامت شرع ممکن نه دې، چونکه اقامت شرع حق الله دې، لهذا دا حق هیڅ یو بنده ته نه شی سپارلې کیدې، دچاپه عمل کښې چې دغلطې احتمال وی _

د کوم خائي پورې چې د معاملاتو د نيويو يا دامور حرب تعلق دې، نوچونکه دا حقوق العباد سره متعلق دې، نوچونکه دا حقوق العباد سره متعلق دى، دې کښې د تنه ياخو دفع مضرت ده يا جلب منفعت، بندګان ددې محتاجه دى نوځکه بندګانو ته په امور حرب کښې او په معاملاتو د دنيا کښې داجتهاد حق حاصل دې، اوالله تعالى چونکه حاجتمند يا عاجزنه دې، ځکه دحقوق الله دائبات دپاره دليل متحمل للخطا کافى نه دې، بلکه ددې دپاره داسې دليل پکاردې کوم چې موجب داذعان اويقين وي _ ()

اویمین وی _ () **د مجوزینو دلا ئل**:مجوزینو دکتاب، سنت او دعقلی دلیلونونه دا ثابت کړې دي _

ارشاد باری تعالی (فَاعْتَبُرُوْالِأَولِي الْآبَصَانِ () دلته د , بصر ، نه و به بسیست ، مراد دی. گویا چی الله تعالی تولو الها بسیست ته د , اعتبار ، دعوت و رکړې دې او .. اولو الهاتو ، کیدل د , اعتبار ، علت دې گویا چې دا ئې اوفرمائیل چې اې اهل بصیرت ؛ چونکه تاسو بصیرت والائې ، خکه , اعتبار اوکړئ او دقیاس او داجتها د نه کار و اخلئ او حضور اکرم تا د تولونه لوئ صاحب بصیرت ، پاک نفس ، بهتراجتها د کولو والادې ، لهذا په وصف بصیرت کنبې حضور اکرم تا چونکه د هغوی تا طرف ته به طریقه اولی سره به مترجه کیږی _ ()

[\]) النجم /\$و¶_

^{&#}x27;) کشف الاسرار (ج۳ص۲۰۶)_ ') کشف الاسرار (ج۳ص۲۰۶)

^{&#}x27;) الحشر/٢_

م) کشف الاسرار (ج۳ص۲۰۶) _ م) الانبیاء /۷۷و۸۷_

پهنی .. او داود او دسلیمان علیهماالسلام تذکره اوکړئ کله چې دواړو دیو پتی دفصل په باړه کښې فیصله کوله. کله چې دڅه خلقو چیلئ دشپې په وخت کښې ورداخلې شوې او مونږ دغه فیصله چې دخلقوپه مینځ کښې شوې وه کتله مو ، نومونږ ددغه فیصلې پوهه

دلته چې حضرت داؤد اللايم كومه فيصله فرمانيلي وه هغه دوحي په بنياد باندې نه وه، ګني حضرت سيلمان اللايم ته په دې كښې دمخالفت گنجائش نه وو، ګويا چې حضرت داؤد اللايم داجتهادپه بنياد باندې فيصله كړې وه، ددې نه پس حضرت سليمان اللايم هم اجتهاد كولوسره دويمه فيصله اوكړه، كومه چې حضرت داؤد اللايم قبلولوسره نافذه كړه، معلومه شوه چې حضرات انبيا كرامو ته په احكاموكښې دايمهاد حق وو د ()

امام ابويوسف مُوليه د ارشادبارى تعالى ﴿ إِنَّا الرِّنَا الْكِتْ الْكِتْ الْآلِقِ لِتَعْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ عَآلَوكَ اللَّهُ اللهُ اللهُ ﴿) ابیشکه مونزه نازل کو ستاطرف ته رشتونی کتاب چی ته آنصاف او کړی دخلقو به مینخ کنبی چه چی تاته الله تعالى پوهه در کړی، نه هم استدلال کړی دی چی په دی کنبی (عِمَّالُوكَ الله ٤) الله ٤) کنبی دننه عموم دی کوم چی حکم بالنص او استنباط من النص دواړو ته شامل دی (محضواتو مجوزینو ددی حدیث نه هم استدلال کړی دی چی په کنبی .. د دین الله .. لره په .. دین العباد .. باندی قیاس کولوسره نی جواب ورکړی دی :

ومن عبد الله بن الزينيقال: جاء رجل من غشعم الى رسول الله صلى الله على وسلم، فقال إن ابى شيخ كميدر
 الايستطياع الركوب وادركته فريضة الله في الحج، فهل يجزئ إن احج عنه ؟ قال: انت اكبرولده؟ قال: نعم،
 قال: الرايت لوكان عليه دين اكنت تقضيه؟ قال نعم، قال: فحج عنه ،، ____

يعنى , ,يوسړې د قبيله خثعم نه د حضور اگرم ته په خدمت کښې حاضر شواوعرض ئې او کړو چې زما پلار بوډه ، رشيخ کبير، دې، هغه په سورلئ باندې نه شي سورې دې اوپه هغه باندې فريضه حج هم لاژمه ده ، آيا دهغه دطرفنه زه حج کولې شم ؟ هغوى ته اوفرمائيل چې آياته دهغه په اولاد کښې د ټولونه مشريئ ؟ عرض ئې او کړو چې آو! هغوى اوفرمائيل دا راته اوايه که چرې په هغه باندې قرض وونو تابه ادا ، کولوکه نه ؟ عرض ئې او کړه چې ولې نه مابه ادا ، کولو. هغوى اوفرمائيل نوبيا دهغه د طرفنه حج ادا ، کړه ، . .

رووانسوي اوطرنسيال واپيده معامل الله على الله ما مروى دې _ (⁶) دغه شان دمجوزينو استدلال داشان روايت داخضرت ابن عباس الله نه هم مروى دې _ (⁶) دغه شان دمجوزينو استدلال دحضرت عمر الله د واقعه نه هم دې

. من جابرين مبدالله قال: قال مبرين الخطاب: هششت، قلبلت واناصائم، قللت: يارسول الله صنعت

⁾ کشف الاسرار (ج۳ص۲۰۶و۲۰۷)_

⁾ النساء /١٠٥

⁾ کشف الاسرار (ج۳ص۲۰۷)_

⁾ سنن النسائي. كتاب مناسك الحج بباب تشبيه قضاء العج بقضاء الدين، رقم (٢٥٣٩)_) حواله بالا، رقم (٢٤٤٠)_

اليوم اموا متلها: قبلت وانا صائم، قال: اوايت لومضيضت من الباء وانت صائم؟ _قال حيس بن حباد ق حديثه: قلت: لاباس به، ثم اتفقاء قال: فبه،، _ ('،

یعنی .. حضرت عمر نظام فرمانی چی ماخرشحالی محسوسه کړه . ماپه حالت دروژه کښی تقیی .. حضرت عمر نظام فرمانی چی ماخرشحالی محسوسه کړه . ماپه حالت د روژی کښی کښی عرف او کړو یارسول الله ؛ نن ما ډیرلوئ کار او کړو . ماپه حالت د روژی کښی خوله کنګاله کړی نوڅه به کیږی ؟ ما عرض او کړو چی څه حرج هم نشته . نوهغوی او فرمانیل چی بیا په تقبیل کښی څه داسی خبره ده؟ . .

په دې حدیث کښې حضوراکرم تا گڼل .قبلة الصائم،،لره په مضمضه باندې قیاس کولوسره حکم بیان کړې دي .

حضرات مجوزينو يواستدلال دهغه حديث نه هم دې په كوم كښې چې حضوراكرم 微 فرمانيلى دى: ٠٠٠ فى بشخ احد كم صدقة، قالوا: يارسول الله، ايال احدنا شهوته ويكون له فيها اجر؟قال: ارايتم لووضعها قى حرام راكان عليه فيها وزم؟ فكذلك اذا وضعها فى الحلال كان له اجر، ٢٠٠٠

یعنی .. تاسوته به دخپلې يې يې سره په صحبت باندې هم دصدقه ثواب ملاؤيږي. صحابه کړام عرض او کړويارسول الله آيا که په مونږ کښې څوک خپل شهوت پوره کوی نوهغه ته به هم اجرملاؤيږي ؟ هغوی اوفرمائيل دا اوايئ که چرته په حرامو باندې نې خپل شهوت پوره کولوياندې کولونويه ده باندې شهوت پوره کولوياندې به اجرملاؤيږي . . _

دلته حضور اکرم ﷺ اجتهاد کولوسره جواب ورکړو. ظاهره ده چې دا دهغوي په باره کښې داجتهاد دمشروع کیدلودلیل دې _

عقلاً هم دا خبره په پوهه کښې راخی چې دحضوراکرم کالله دپاره اجتهاد درست دې، ددې وجه دا ده چې ..اجتهاد.. په دې خبره باندې مېنې دې چې مجتهد دنصوصودمعانيو او ده چې ..اجتهاد.. په دې خبره باندې مېنې دې چې مجتهد دنصوصودمعانيو او دعللو عالم وي. ظاهره ده چې حضوراکرم کالله په علم او ددې دمعانيواوعللو په پوهه کښې د ټولو مخلوقاتو نه اکمل دې. حتی چې داصولیینودتصریح مطابق . دمتشابهاتوعلم هم الله تعالى هغوی کالله چې دیوځیزعلم هم وي. ددې د ټولو معانیو اوعللو اودلریقه استعمال نه هم ښه واقف وي نوبیا داجتهاد معانعت به ولې وي ۲۰۰۶ د ۲۰۰۶ اودطریقه استعمال نه هم ښه واقف وي نوبیا داجتهاد معانعت به ولې وي ۲۰۰۶ د ۲۰۰۶

په دې باندې داسې هم پوهه کیدلې شی چې .. اجتهاد .. کوم چې د بندګانو دنسبت نه دعبادت اعلی ترینه درجې حیثیت لری بیا په دې کښې دصواب او سداد اړخ دعدم صواب په مقابله کښې ډیرزیات دې. خکه چې .. اجتهاد .. کښې دمشقت تحمل کیږي. لهذا ددې عبادت استحقاق به حضوراکرم نظ ته د ټولونه زیات وي. خاص ټوګه باندې په دې وجه سره

السنن لابي داود. كتاب الصيام.باب القبلة للصائم. رقم (٢٣٨٥)_

[&]quot;) صحيح مسلم. كتاب الزكاة. باب بيان ان اسم الصدقة يقع على كل نوع من المعروف. رقم (٢٣٢٩)_ ") اوكورئ كشف الاسرار(ج٣ص٢٠٨)_

هم چې دې امت د پاره جائزه کيږي. که حضوراکړم الله ته د..اجتهاد . . داجازت نه وي نوامت زړ په په ځېره کښې په هغوي باندې فضيلت لارميږي. کوم چې ناممکن دې په () د په ادام کښکې د او دارا د او د چې د داراک ناهو او کور او د واد د او د او او

د حضور اکرم تلی په اجتهاد کښې اودامت په اجتهاد کښې فرق دلته چاته دا اشکال کیدې شی چې کله مونږد حضوراکرم دپاره د. اجتهاد دجواز قائل یونو یقینا دا اجتهاد به دنص په مقابله کښې ادون وي. لهذا څنګه چې دامت اجتهاد ظني وي دغه شان دهغوي نه

اجتهادبه هم ظنی وی او دبل اجتهاد سره به ددی معارضه هم کیدی شی ـ

كه چرى د هغوى په اجتماد كنيس دخطا احتمال وي نومونز تدبه دخطا دانباع حكم راكول لازم شريع مرحم مرحم درين

شی. کوم چې صحیح نه دی ـ (۲) که چرې دحضور اکرم ۱۹۸۴ په اجتهاد کښې دخطا احتمال وي. څنګه چې اکثرو احنافوراې دا ده. نوارشادباري تعالى (عَفَّا اللهُ عَنْكُ لِمُ اَوْلُتُ لَهُمْ (۵) (الله تعالى تاته معافى فرمائى (تاسودوى ته ولى اجازت ورکړو؟، ددې نه هم دې طرف ته اشاره کیږي بیا هم په دې کښې د قرارعلى الخطا احتمال نه وي. کله چې الله تعالى تاسولره په اجتهاد باندې برقرار اوساتلو نوهم هغه صواب دې. ددې نه نص پشان علم الیقین حاصلیږي او مخالفت به نې حرام وي.

⁾ حواله بالا

⁾ حواله بالا _ ا) النسام 2٠٠_

⁾ کشف الاسرار (ج۳ص۲۰۹) ..

نم التوبة /٤٣__

ددې نضيرالهام دې چې د حضوراکرم که الهام حجت قاطعه دې، ددې مخالفت په يوصورت کښې هم جانزنه دې، او دنورو الهام حجت قاطعه نه دې د ۱۰ دالله اعلم

کښې هم جانزنددې، اودنورو الهام حجت فاطعه سادې - ۱۰۰۰ دمانعینو د دلاتلو جوابونه : مانعینود (وَمَایْنَطِقُ عَنِ الْهَوْیُ قَانُ هُوَلَّا وَکُیْ یُّوْمِی نه استدلال کړې وو. چې کله رسول الله کلام څه فرمانی هغه ټول ..وس من الله، وی. نوددې نه لازمیږی چې هغوی

ساپه حدیث کنبی چې کوم مضمون دحق تعالی دطرفنه راخی، کله هغه دیوې معاملی ښکاره بیا په حدیث کنبی چې کوم مضمون دحق تعالی دطرفنه راخی، کله هغه دیوې معاملی ښکاره په رواضحه فیصله او حکم وی، کله څه قاعده کلیه ښودلې کیږی، چې دهغې نه رسول الله کله په خپل اجتهاد سره احکام راوباسی اوبیانوی، په دې اجتهاد کښې امکان وی چې څه غلطی پکښې اوشی، خودرسول الله کله او ټولو انبیاء خصوصیت دی چې کوم احکام هغه دخپل اجتهاد سره بیان فرمائی په هغې کښې که څه غلطی اوشی نو دالله تعالی دطرفنه په ذریعه د وحی سره دهغې اصلاح او کړې شی، هغوی په خپل غلط اجتهاد باندې قائم نه پاتي کیږی. په خلاف دنورو علماؤ مجتهدینو، چې په هغوی کښې دچانه په اجتهاد کښې خطا اوشی نویه هغې باندې قائم پاتي کیدې شي ـ

خلاصه داچی وحی په بعضواوقاتو کښې ديوې قاعدې کليې په شکل کښې راخي، کومې سره چې داحکاموپه استخراج کولوکښې پيغمبرته دخپلې راي سره داجتهاد کولوضرورت پيدا کيږي. چونکه دا قاعده کليه دالله تعالى دطرف نه راغلي وي نوځکه دې ټولو احکامو

ته هم وحي من جانب الله ونيلي شوي دي _ (٢) والله اعلم

اودکوم خانی پورې چې دمانعینوددلیل عقلی تعلق دې چې حضوراکرم نظم داقامت شرع دپاره میعوث شرې ورواواجتهاد محتمل للخطا دلیل کیدویه حیثیت سره په دې کښې داقامت شرع صلاحیت نشته، لهذا هغوی نظم په حق کښې داجتهادهم څه ګنجانش نشته موددې جواب زمونو دتقریرنه واضحه کیږی، چې حقمل لې دادې چې دعام امت اجتهاد دیدې خواب لخطادې، دحضوراکرم نظم اجتهاد محتمل للخطا نه دې، څنګه چې ډیرعلماء فرمانی، یاکه په دې کښې اجتمال دخطا وی بیاهم هغوی په خطا باندې قائم نه شی پریخودې، فرمانی، یاکه په دې کښې اجتمال دخطا وی بیاهم هغوی په خطا باندې قائم نه شی پریخودې، فرمانی، ده په ماراجتهاد،، سره په اقامت شرع کښې د څه قسمه حرج نشته دې د المهاملم

⁾ كشف الاسرار (ج٣ص٢٠٩)_

⁾ اوگورئ معارف القرآن (ج المس ١٩٤ و ١٩٥) تفسير سورة النجم

⁾ اوگودی کشف الاسرار (ج ۳ص ۲۱۱)_

وله قَالَ أَبُوعَيْ اللَّهِ يُقَالُ يُقَادُ بِالْقَافِ فَقِيلَ لأَبِي عَبْدِ اللَّهِ أَي شَيء كُتَبَ لَهُ قَالَ كُنَّبَ لَهُ هَذِهِ الْخُطْبَةَ : ابوعبدالله يعني امام بخاري كُليْكُ فرماني .. يقاد،، د..

په دې عبارت کښې دړومېې جملې مقصد دادې چې په دې مقام کښې ..**يغاد**. . دقاف سره د. قود . . نه مشتق دې . قام،، نه ده کوم چې د .. مقادالا،، يا .. قديلا،، نه مشتق دې _

اود دويمه جملي نه دحضرت ابوشاه المُنْتُونِ چي كوم .. اكتباليا رسول الله،. عرض ني كړې وو اودددې په جواب کښې هغوی 尚 .. اکټوالاړوفلان،، فرمائيلی وو . په دې کښې دامذکورنه دې چې دڅه څيزکتابت مقصود دې، امام بخاري ﷺ تصريح اوفرمائيله چې دخطبه کتابت

تنييه واضعه دې وی چې .. قال اپوهېدالله نه تر آخره پورې دا عبارت صرف په يونسخة كنبي دي. أود أبوذر، اصيلي، ابو الوقت اودابن عساكر په يوي نسخه كنبي هم دا عبارت موجودنه دی ـ (`)

[١١٣] حَدَّثَنَا عَلِي بْنُ عُبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا عُزُوقَالَ أَخْبَرَفِ وَهُبُ بُنُ مُنْتِهِ عَنِ أَخِيهِ قَالَ سَمِعْتُ أَبَاهُرَيْوَ تَبَعُولُ ، `، مَامِنُ أَحْصَابِ النَّبِي -صلى الله عليه وسلم - أَحَدُ أَكْثَرَ حَدِيشًا عَنْهُ مِنِي، إِلاَّ مَاكَانَ مِنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍ وَفَإِنَّهُ كَانَ يَكْتُبُولِأَكْتُبُ تَابَعَهُ مَعْمَرٌ عَنُ هَمَّ آمِعَنُ أَبِي هُرَيْرَةً.

رجال الحديث

① على بن عبدالله :دا امام على بن عبدالله بن جعفرين نجيح سعدى بصرى المعروف بابن المديني مُركيني دي، ددة حالات په كتاب العلم "پاپ القهم في العلم ، الآندي تير شوى دى - 7

 سفیان دا امام سفیان بن عینیه گین دې، ددوی حالات د ,,پده الوی، داولنی حدیث لاتدي مختصرا رئم أودكتاب العلم ... باب قول البحدث: حدثتا أو اعبرنا وانبانا، الاتدي تفصيلا

⁾ ارشادالساری (ج۱ص۲۰۶)_

⁾ قوله. ١٠ اباهريرة.. الحديث. آخر جه النسائي في سننه الكبري، كتاب العلم،باب كتابة العلم. وقم (٥٨٥٣) والترمذي في جامعه. في ابواب العلم. باب ماجاء في الرخصة فيه (اي في كتابة العلم). وقم (٢٤٣٨)

⁾ اوگورئ کشف الباری (ج۳ص ۲۵۶) _

⁾ اوگوری کشف الباری (ج ۱ ص ۲۳۸) _) اوگوری کشف الباری (ج ۲ص ۸۶) _

🕜 عمرو دا مشهور امام او فقیه عمروبن دینار مکی جمحی کی دې، ابومحمد دده کنین دی . ()

دى د حضرت ابن عباس، دحضرت عبدالله بن الزبير، حضرت عبدالله بن عمر، حضرت عبدالله بن عمر، حضرت عبدالله ،حضرت ابوالطفيل عبدالله ،حضرت ابوهريره،حضرت جابربن عبدالله،حضرت ابوالطفيل ليشى،حضرت سائب بن يزيد الله علاوه دابوسلمه بن عبدالرحمن بن عوف، سعيدبن جبير، ابن مليكه، عروه بن الزبير، عطاء بن ابى رباح، عطاء بن يسار، عطاء بن مينا،، عكرمه اوامام زهرى التناع بشان دديرو حضراتونه روايت كوى _

اوددة نه به روايت كونكوكني امام قتاده، آيوب سختياني، عبدالملك بن جريج، جعفر الصادق، امام مالك، امام شعبه، ابوعوانه، حمادبن سلمه، حمادبن زيد، سفيان ثوري، سفيان بن عبينه هي شان دير حضرات دي - (')

امام احمد مُوَيِّدُ فرمانی .. كان شعبة لايقدم على عبروين دينار احدا، لاالحكم ولاخيرة، يعنى في الشهت، ._ د من يعني ,, شعبه به دعمروين دينار په مقابله څوک هم نه مقدم كول . _

دغه شان هغه فرمائي ,,وكان عبرو مولى، ولكن الله شهقه بالعلم،،_رئ

ابن ابى نجيح كيني فرمائي ,, ماكان عندنا احداقه ولا اعلم من صورين دينار،، _ ()

حضرت مسعر يختلط فرماني , ما رايت اثبت من عبروين دينار والقاسم بن عبد الرحين، ، (٢)

ابن عيينه وَرُولِيَّ فرماني ,,حدثنا عبروين دينار، وكان ثقة ثقة ، وحديث اسبعه من عبرو احب الى من عشرين من عبرو احب الى من عشرين من عبرو احب الى من عشرين من غيرين ، _____________________

نيزهغه فرمائي ,,كان صودين ديناد اعلماهل مكة،، _(^)

امام زهري كينيك فرمائي ٠٠ مادايت شيغانص للحديث الجيد من هذا الشيخ، . _ (^)

امام يحي القطان اوامام احمد بن حنبل مُحيَّك فرمائي ,.حمودين ديناد اثبت مندى من قتادة، دن

ر) اوگورئ تهذیب الکمال (ج۲۲ص۵وع)_

⁾ دَشَيُوخُو اوتلامذو دتفصيّل دپاره اوگورئ تهذيب الكمال (ج٢٢ص ٩-٩)_

رً) تهذيب الكمال (ج٢٢ص٩)_

¹) حواله بالا _

هُ حوّاله بالا _

مٌ تهذيب الكمال (ج٢٢ص١٠)_

^{ً)} حواله بالا _

مُ حواله بالا __

^{ً)} حواله بالا ___

^{&#}x27;) حواله بالا _

ٌ) سيراعلام النبلاء (ج٥ص٣٠٧)_

```
ن المام احمد بين فرماني ٠٠ حدوين دينار اثبت الناس في حطام يعني اين اي رباح ...
   امام ابوزرعه اوامام ابوحاتم النظم فرماني ١٠٤٥٠٠٪ امام نساني يُعَيِّدُ فرماني ١٠٤٥٠٠٪،
            امام سعد كينية فرمائي ١٠٠وكان يفتى بالبلد .....وكان مروثقة ثبتا كثيرالحديث، . . . .
                                              حافظ ذهبي مُثلث فرمائي ..مكي امام . . ـ (٥)
       نيزحافظ ذهبي مُنطُّ دهغوى د , تذكره . . به ابتداء كنبي ليكي ١٠ الامام الكهيرالحاقظ
                                                       احدالاعلام وشيخ الحرملي زمانه، _ ()
                                                 امام عجلى مينية فرمانى ٠٠ تابى ثقة، ٠٠ (
امام على بن المديني مُوسِيد فرمائي ٠٠٠ كان اصحاب ابن مهاس ستة: مطاء وطادوس، ومجاهد، وسعيد
بن جبير، وجابرين زيد، وعكرمة، فكان اعلم الناس بهؤلاء عبروين دينار، ونقيهم كلهم، واعلم الناس يعبرو
                                                      وهۇلام: سقيان بن عيينه وابن جريج،، ، ، ،
                               امام دارقطني ومنايخ فرماني .. من الحفاظ، وزيادته مقبولة، . . (١٠
                                              حافظ ابن حجر ميلي فرمائي ,, ثقة ثبت، ١٠٠٠
                                ابن حبان میکی دی په کتاب اَلثقات کښي ذکر کړې دې ـ (۱۰)
بعضي حضراتو پُه دوي باندي دتشيع الزام لكولي دي، دغه شان دحضرت عبدالله بن الزبير
                                         الم المحالفت الزام پرې با ندې هم المحمدلي دي ـ
ليكن حقيقت دا دى چې په ده باندې دڅه قسمه الزام ثابت نه دې، څنگه چې امام يحيي بن
معين مُنظة فرمائي ,, اهل المدينة لايرضون عمرا، يرمونه بالتشيع، والتعامل على ابن الرياس ولاياس
                                                             په،هوپرۍ دميايقولون، ، ـ (۲۰
                             ) تهذيب الكمال (ج ٢٢ص ١٠ و ١١). وسير اعلام النبلاء (ج ٥ص ٢٠٠]
                                                            ) تهذيب الكمال (ج٢٢ص١١)_
                                                  الطبقات الكبرى لابن سعد (ج٥ص٤٨٩)_
                                                       ) الكاشف (ج٢ص٧٥) رقم (١٥٢٤)_
                                                          ) سیر اعلام آلنبلاء (ج۵ص ۳۰۰)_
                                                    ) تعلیقات تهذیب الکّمال (ج۲۲ص۱۲)_
      ) تعليقات تهذيب الكعال (ج٢٢ص١٢). نقلا عن الععرفة والتاريخ للفسوى (ج١ص٧١٣_ ٧١٤)_
                                ) تعليقات تهذيب الكمال (ج٢٢ص١٦) نقلًا عن علل الدارقطني _
                                                 ) تقريب التهذيب (ص٢١) رقم (٥٠٢٤)_
                                                        ) الثقات لابن حبان (ج۵ص۱۶۷)_
```

حافظ ذهبي وكيلة فرماني .. اما صروبن دينار الجبعى، عالم الحجاز: قحجة، وما قيل عنه من التشيع:

دامام عمروبن دینار پیشه په باره کښې سفیان بن عیینه پیشه فرمانی چې هغوی خپلې شپې په درې حصوکښې تقسیمې کړې وې. په یو ثلث کښې به نې آرام کولو. په یوثلث کښې به نې

په درې قطونينې تفسيعي مړې دې. په يو تلف کېلې کې د کا کو د کې د د خپل حديثونه يادول اوپه يوحصه کښې به نې مونځ کولو د ۱۰ امام عمروبن دينار پينځ داحاديثو ليکل نه خوښول.بلکه يادولوباندې به نې زور ورکولو.

آمام عمروس دینار پرییج داخادیدو نیخل نه خوسول بلنکه یادونوباندی به نی روز وزنواد فرمائیل به نی ..اح، ملمن یکتب علی، فهاکتهت من احد شیئا، کنت اتنظا، . ـ (۲)

يعنی ..کوم سړې چې زما نه حديث ليکل غواړي هغه لره حرام دي چې زما حديثونه ليکلوسره ياد کړي، ما دچانه هم يو حديث په ليکلوسره نه دې ياد کړې. بلکه زباني به مې يادول...

د فقه په مرتبي باندې دفائز کيدوباوجود به ئي ډيرمسائل نه ښودل. فرمانيل به ئي ,,**يسالوت**ا عن راينا، فنغيرهم،فيکټونه،کانه نقرق-چې،ولعلنا ان *تر*چې عنه غدا،، ر^۴)

يوخل يوسړې دهغه نه ديوې مسئله بپوس او ډړو ، نوهغوی خه جواب ورته دړو . په دې باندې هغه سړی دوباره اصرار کولو عرض او کړو ,,اتاق تقعی منها شيثا فاجيق، يعنی ,, زما په زړه کښې لګ شان تردد دې تاسوجواب او فرماني ، نوهغوی جواب ورکړو,,وا**شلات يکون تفسك** د ها د د د د اد بالا من اورک دو د د مود داده الاشو کار موال داد د کې د د د نوا او د د

امام عمروبن دينار رئيلي فرماني چې ماته ابن هشام اوونيل چې زه ستادپاره وظيفه مقرر كومه. ته خلقوته فترې وركوه.ما ورته اونيل چې ماته ددې ضرورت نشته دې _ ، ' ،

تنييه : تاسوشاته په تفصيل سره پوهه شوی ني چې عمروبن دينار مکی دي اودې دصحاح. سته د راويانونه دي ـ ۲

⁾ ميزان الاعتدال (ج٣ص ٢٤٠)، رقم (۶٣۶٧)_

⁾ سيراعلام النبلاء (ج٥ص٣٠٢)_

[&]quot;) سيراعلام النبلاء (ج٥ص٣٠٢)_

ه) الطبقات الكبرى لابن سعد (ج۵ص ۳۸۰)_ د

⁾ حواله بالا_ 2 حواله بالا_

⁾ ا) اوگورئ تهذیب الکمال (ج۲۲ص۵)_

اړدغه شان دعمروبن دينار په نوم باندې يو روای بل هم دي. کوم چې دترمذی او دابن ماجه په رجالو کښې دې اوضعيف دې _(` نيزپه دې نوم باندې يو روای بل هم دې چې هغه کوفی دي. دهغه هيڅ يو روايت هم په اصول سته کښې موجود نه دې اودې مجهول دې _ (`

دي. د مروبن دينا کا وفات په ۲۲ هجرې کښې د اتيه کالويه عمرکښې شوې وو . ۲۰ رحمه الله تمال رحمه الله تمال رحمه الله

﴿ وَهُو بِن مَنْبِهِ ﴿ دَا اَبُوعِبْدَاللَّهُ وَهُو بِن مَنْبِهِ بِن كَامِلُ بِن سِيجٍ بِن ذَى كَبَارٍ ، ۗ اليمانى الصنعاني الابناوي ﴿ مُحَمِّدُ دِي ﴿)

دى دهمام بن منبه، معقل بن منبه، غيلان بن منبه اودعقيل بن منبه رور دى _ ٧٠

دی دحضرت انس، حضرت جابر بن عبدالله. حضرت عبدالله بن عباس، حضرت عبدالله بن عبر، حضرت عبدالله بن عمروبن العاص، حضرت ابوسعید خدری او دحضرت ابوهریره ﴿ الله َ الله عَلَاهُمُ الله َ الله عَلا نه علاوه دطاووس بن کیسان، عمروبن دینار، عمروبن شعیب، همام بن منبه او دابوخلیفه بصری ﷺ نه روایت حدیث کوی _

دوی نه روایت کونکوکنی عمروبن دینار.سماک بن الفضل.عوف الاعرابی. عاصم بن رجاء بن حیوة، اسرائیل ابوموسی،عقیل بن معقل بن منبه. منذربن النعمان.المغیره بن حکیم،صالح بن عبیداوعبدالکریم بن خوران شخام و عیره ډیرحضرات شامل دی د

امام عجلی میشه فرمانی , تابی تفقه و کان صل تضام صنعام _ أ

امام ابوزرعد اوامام نسائى ﷺ فرمائى ,, ثقة، _ (')

ابن حبان م شهر دئ په کتاب الثقات کښې ذکرکړې دې اوليکلی نې دی ..وکان عابدا فاضلا، قرا ۱۰ - ۱۷

⁾ اوگورئ تهذیب الکمال (ج۲۲ص ۱۳-۱۶)، و تقریب التهذیب (ص۲۲۱). رقم (۵۰۲۵)_

[]] أوكورئ تهذيب الكعال (ج٢٢ص٥) وتقريب التهذيب (ص٤٢١). رقم (٥٠٢٥)_

⁾ الكَاشْف للذهبي (ج٢ص٧٥) رقم (١٥٢٤) _

⁾ كل من كان من أهل اليمن له ووذى. هوشريف. يقال فلان له ذى وفلان لاذى له.._ سيراعلام النبلاء (ج عُصـ 26)، وتهذيب الكمال (ج ٣١ص١٤)_

[.] *) بفتح الهيزة. منسوب الى و، الايناء.. بياء موحدة ثم نون. وهم كل من ولد من ابناء الفرس الذين وجههم كسرى مع سيف بن ذى يزن.._ عمدة القارى (ج٢ص١٤٨)_

⁾ تهدیب الکمال (ج ۳۱ص ۱۶۰)_

⁾ الثقات لابن حبان (ج٥ص ٤٨٨)_

⁾ اوگورئ تهدیب الکمال (ج۳۱ص۱۴۰-۱۴۲)_

⁾ تعدیب الکشال (ج۳۱ص ۱۶) *) تدریب الکشال (ج۳۱ ص ۱۶)

^{ُ)} تهدیب الکمال (ج ۳۱ص ۱۴۰)) الثقات لاین حیان (ج ۵ص(۴۸۷)_

حافظ ذهبي يُحِينِكُ فرمائي ٠٠ وروايته للمسندة لليلة، وانها غوارة عليه في الاسرائيليات، ومن صعائل اهل الكتاب، . . ن

دۍ په شروع کښې د قدريه طرف ته مانله وو. په دې سلسله کښې يوکتاب هم ليکلي دې.بيا دئ په دې باندې نادم رېښيمانه شو اودهغې نه ئې رجوع اوکړه. امام احمد ﷺ فرمائي ,,كانيتهم بشيم من القدد ثم رجع، . ـ 🖒

ابوسنان نقل كوي

.. سمعت وهب بن منهه يقول: كنت اقول بالقدر، حتى قرات بضعة وسمعين كتابا من كتب الانبيام، في كلها: من جعل الى نفسه شيئا من البشيئة تقد كفي، فتركت قولى، . ـ رنَّ،

يعنی , ما اول د قدريه عقيده لرله. تردې پورې چې ما دسابقه انبيا ، کرامواوويا ۷۰ نه زيات کتابونه اولوستل، په دې ټولو کښې ئې داخبره ليکلې وه چې کوم سړې په مشينت او اراده کنبې خپل خان مختار کل اوګنړي نوهغه کافر شو، نوماخپله عقيده ترک کړه . . _

امام جوزجاني مُعَيِّدُ فرمائي: ,,كان وهب كتب كتابالى القدر، ثم حدثت اندند مرعليه، . _ . " عمروبن دينا يخطيج فرمائي

٠٠ دخلت على وهب دار لا بصناح، فاطعب في جوزا من جوزة في دار لا، فقلت له: و ددت انك لم تكن كتبت في القدر ! فقال اناوالله و دوت ذلك ، . . ()

يعني .. مطلب دادې چې زه دوهب بن منبه کورته لاړم. هغه په ماباندې دخپل کورکوپره اوخوړه، ماورته اووئيل چې زما خواهش ووچې ته د.,قدر ، متعلق څه نه وو ليکلي ؛ نو وې وثيلٌ چې په خداې قسم اوس زما هم خيال دې چه افسوس ماڅه نه ووليکلي . . _

عمروبن على الفلاس مُنطَح فرماني ,,كان ضعيفا، . _ (١)

ليكُن عَلماؤً دفلاس مُتَلِيًّا داقول نه دې قبول كړې، حافظ ابن حجر مُثلِيًّا فرمائي چې دفلاس دقول بنياد هم هغه اتهام بالقدر دي اوددي نه رجوع ثابته ده، هغوي فرمائي

.. ولقة الجمهور وشذ الفلاس، فقال: كان ضعيفا، وكان شبهته في ذلك انه كان يتهم بالقول بالقدر، وصنف فيه كتابا، ثم صحانه رجع عنه، . _ رك

^{ً)} سيراعلام النبلاء (ج ٤ص٥٤٥)_

ا) تهذیب التهذیب (ج ۱ ۱ص ۱۶۸)_

^{ً)} تهدیب الکمال (ج ٣٦ص ١٤٧) _

⁾ حواله بالا_

م حواله بالا_ مُ تهذیب التهذیب (ج۱۱ص۱۶۸)_

[&]quot;) هدى السارى (ص ٤٥٠)_

```
دغدشان حافظ ذهبي تلك فرمائي
```

، وكان أقلة، صادقاً، كثيرالتقل من كتب الاسرائيليات.....وقد ضعفه الفلاس وحدته، وثقه جماعة

په ۱۱۴ هجري کښي دهغه انتقال شوې دي رځ، رصه الله تعالى د مه داسعة.

🌀 اخيه : د., آخ، ، نه مراد همام بن منبه مُنظَةُ دي _

داهمام بن منبه بن کامل بن سیج بن ذی کبار الیمانی الصنعانی الابناوی ﷺ دی _ ، ^ه، دی دحضرت عبدالله بن الزبیر ، حضرت عبدالله بن عباس . حضرت عبدالله بن عمر ، حضرت معاویه اودحضرت ابوهریره تگانگ نه روایت کوی _

اوددوى په روايت كونكوكښې دده وراره عقيل بن معقل بن منبه. على بن الحسن، معمربن راشد اووهب بن منبه اللخ المامل دى - ()

امام یحیی بن معین کری فرمائی ,, لقة،، (^()

امام عجلي مُنظر فرماني ,, يمال تابعي لقة،، د٠

حافظ ذهبي كيليج فرمائي ,,....المحدث المتقن،، ـ (٠٠

امام نووي مُنظِيرُ فرماني ,,......واتفقواعلى توثيقه،،،،،،درن

دهمام بن منبه كليك وفات په ۱۳۲ هجري كښي شوې دې . (۱) رصه الله تعالى رصة واسعة

) ميزان الاعتدال (ج ٤ ص ٢٥٣ و ٣٥٣)_) حواله بالا_) حدى السارى (ص ٤٥٠)_) الكاشف (ج ٢ص ٣٥٨). رقم (٢١١٩)_) تهذيب الكسال (ج ٣٠ص ٢٩٩)_) اوكورئ تهذيب الكسال (ج ٣٠ص ٢٩٩)_) تهذيب الكسال (ج ٣٠ص ٢٩٩) و تاريخ الدارمى (ص ٢٢٤) رقم (٨٥١)_) تهذيب التهذيب (ج ١١ص ٢٧) _) تهذيب الاسعاء واللغات (ج ٢ص ٢١١) _ '') تهذيب الاسعاء واللغات (ج ٢ص ٢١١) _ صحيفه همام بن منبه حضرت ابوهريره في هم په دې همام بن منبه باندې دود نيم سوو ته نيزدې حديثونه ليکلي وو. دا نوشته په .. المحيفة الصحيحة، نوم باندې معروف ده.

روستو مؤلفينومثلا آمام احمد بن حنبل. آمام بخاری. امام مسلم. امام ترمذی مختل وغیرهم په خپلوکتابونوکښې بعینه نقل کړی دی _ نو ځکه روستوپه مزه مزه باندې ددې جدا

دتدريس سلسله كميدو كميدو سرديه ٨٥٧هجري تقريبا ختمه شود .

دا رساله ترصدوپورې ناياب وه، خوپه ۱۳۷۳ هجرې مطابق ۱۹۵۴ و ددې دصدو زړې دوه قلمي نسخې په دمشق کښې ،شام، او د برلن ،جرمني، په کتب خانوکښې فاضل محقق جناب ډاکټر حميدالله صاحب ته ملاؤشوې، او هغوى په ۱۳۷۵ هجرې مطابق ۱۹۵۲ کښې دخپلې فاضلانه مقدمي او قابل رشک تحقيق او ترجمه سره شائع کړې ـ

د حدیثوپه دستیابو کتابونو کښې دا دټولونه قدیم ترین تالیف دې. ځکه چې دابوهریره کلائو وفات په ۸۷هجرې کښې شوې دې اوظاهره ده چې داتالیف دهغوی دوفات نه وړاندې شوې

دې _ (۱) والله اعلم

و خضوت ابوهو يوه المانية: د حضرت ابوهريره المانية حالات به كتاب الايمان .. باب امود الايمان، لاندي تير شوى دي ـ (١)

قولهُ: مَّا مِرْ.ُ أَصْحَابِ النَّبِي - صلى الله عليه وسلم - أَحَدُّ أَكْثَرَ حَدِيثًا عَنْهُ مِنِي، الأَمَاكَانَ مِرْ. عَبْدِهِ اللَّهِ بُرِي عَمْرِو: د حضوراكرم تَرَّمُّ به صحابو كنبي يوسوي هم زما نه زيات دحديثونوروايت كونكي نشته، أو! دعبدالله بن عمرو الله عيد دهغه حديثونه زما نه زيات دي.

ريىدى ـ **قولە:** فَإِنَّهُكَا<u>نَ يَكْتُبُولا</u> أَكْتُبُ: حُكەچى هغەبەلىكل اوما بەنەلىكل ـ

داً ددې خبرې علت بيان کړې شوې دې چې دحضرت عبدالله بن عمرو حديثونه زيات وو اودحضرت ابوهريره گ*ائز ک*م _

ا شکال اود هغی جواب : په دې باندې اشکال کیږی چې ددې نه معلومیږی چې دحضرت عبدالله بن عمرو ناته حدیثونه دحضرت ابوهریره ناتی نه زیات دی، حالاتکه دحضرت ابوهریره ناتی داحادیثوتعداد پینځه زره درې سوا څلوراوویا ۵۳۷۴، دې ۲۰، اودحضرت عبدالله بن عمرو ناته داحادیثو تعداد صرف اووه سوا دې ۲۰.

⁾ اوگورئ ,,کتابت حدیث عهد رسالت وعهدصحابه..(ص ۱۳۵و ۱۳۵)_) اوگورئ کشف الباری (ج ۱ ص ۶۵۹)_

⁾ اوګورئ فتح المغيث للسخاوی (ج ٤ص١٠٢)_

⁾ فنح المغيث للسخاوي (ج £ص٢٠١و ١٠٣) ومعرفة الصحابة (ج٣ص١٩٧)_

_{کوم چې} دحضرت ابوهريره الخائم داحا ديشوپه مقابله کښې تقريبا اوومه حصه دي _

ددي جواب مونر په کتاب الايمان. . باب امود الايمان، لاندې دحضرت ابوهريره دحالاتو سره تفصيلا ذكركړې دې . ()، دكوم حاصل دادې چې

٠ دحصرت ابوهريره الماثر مشغله زيات تردتعليم اوتعلم وه، اودحضرت عبدالله بن عمرو

والمستفله زيات تردعبادت وه ـ

کښې چې دعلم چرچا دومره نه وه _

ملاز شوې وو ،چې هغه به نې کتلې ،ډيرو انمه کرامو تابعينو ددې وجې نه دهغوي روايات نه

ددې وجوهاتو په وجې نه مونږ ته دهغوی روايات کم راړسېدلې دی _ () والله اعلم. يو بل اشكال اودهفي جواب: دلته حضرت ابوهريره اللَّيُّ تصريح فرمائي چې هغوي حديثونه نه ليكل ,, فانه كان يكتب ولا اكتب، او,, مستدرك حاكم او,, جامع بيان العلم وفضله، كنبي حسن بن عمروبن امیه صمری وانمی چی ما دحضرت ابوهریره (انتز به وړاندې دهغوی یوحدیث روايت کړو، نوهغوي آنکار اوکړو، ما اصرار اوکړو چې دا حديث ما ستاسو نه اوريدلې دې نوهغوی اوفرمائیل ٫٫ ان کنت سبعته مثی قائه مکتوب عندی، ، ددې نه پس هغوی زما لاس اونيولواوخپل كورته ئى بوتلم اوپه خپلوكتابونوكښې ئى يوكتاب اوښودلو، چې دحضوراكرم نالله په احاديثوباندې مشتمل وو، هلته دغه حديث ملاؤ شو، اوفرمانيل نې ... قد اخبرتك ان ان كنت حدثتك به فهو مكتوب عندى، ، (٢) ددې نه معلوميږي چې حضرت ابوهريره

الله احادیث لیکل، داسی به دواړو حدیثونوکښي معارض پیداکیږي۔ په دې سلسله کښې بعضې حضراتو دترجيح طريقه اختيار کړې ده اوبعضې حضراتوجمع او

حافظ ذهبي پيناهة ددې حديث لاندې فرماني "هذا منکهلم يصح، . ـ (أ

دغه شان حافظ ابن عبد البرمينية فرمائي ,, وحديثه ذاك اصح في النقل من هذا، لانه اثبت استأداعند

⁾ اوګورئ کشف الباری (ج۱ص^{۶۶۰)} ــ

⁾ اوګورئ فتح الباری (ج آص۳۰۷)_) اوگورئ المستدرك (ج٣ص ٥١١) كتاب معرفة الصحابة، ذكرابي هريرة الدوسي رضي الله عنه، وجامع بيان العلم وفضله (ج ١ص ٣٢٤)). باب ذكر الرخصة في كتاب العلم، رقم (٢٢٤)_

[&]quot;) تلغيص العسندري بذيل العسندري (ج٣ص٥١١) _

اهل الحديث، الاان الحديثين قدريسوخ التاول ف الجمع بينهما، . . ()

گویا چی داحضرات دصحیح بخاری حدیث لره ترجیح ورکوی اودی حدیث لره دضعیف کیدو دوجی ندردکوی

حافظ ابن حجر گفته په دې دواړو روايتونوکښې د تطبيق په سلسله کښې فرمائي .. ويکن الجم بانه لم يکټو کښې فرمائي .. ويکن الجم بانه لم يکټول کتب بعده، يعنی حضرت ابوهريره الله کټو دکتابت نفي فرمائيل دحضور اکرم الله اد دور سره متعلق ده. اوهغوی به روستوحديثونه ليکلي وي . را حافظ مختو فرماني چې ددې هم ډيره مضبوطه خبره دا ده چې حضرت ابوهريره الله په خپل لاس باندې نه ليکل او کوم چې دمکتوب په شکل کښې حديثونه دې هغه دبل چا په لاس باندې ليکلي شوی وو . را والله اعلم _ _ .

قوله: ٰ تَاْبَعَهُ مُغَمَرٌ عَرُنَ هَمَّهَا مِعَرِنَ أَبِي هُرَيُرَةً :معمربن راشد رَيَّتُهُ دهمام عن ابي هريرو ظَيِّةُ نه روايت كولوكنبي دوهب بن منبه متابعت كړي دي _

رجال الحديث

① معمو : دا ابن معمربن راشدازدی بصری مُؤللهٔ دې، ددهٔ مختصرحالات د., بدا الوم، . پنځم حدیث لاندې تیرشوی دی، بیاهم دلته دهغوی تفصیلی حالات لیکلی کیږی _

دا مشهور امام معمربن راشدازدی، حدانی بصری کیا که دی، دده کنیت آبو عروه دی - رق دی دانی بصری کیا که دی دن اسلم، صالح بن دی دثابت بنانی، زیدبن اسلم، صالح بن کیسان، یحیی بن ابی کثیر، امام اعمش، همام بن منبه، هشام بن عروه، محمدبن المنگدر اوعمروبن دینار گنیم وغیره نه روایت کوی _

ددهٔ په روایت کونکوکښې ددهٔ شیوخ یحیی بن ابی کثیر، ابواسحاق سبیعی، ایوب سختیانی، عمروبن دینارنه علاوه سعیدبن ابی عروبه، ابان بن یزیدالعطار، اسماعیل بن علیه، امام شعبه،هشام الدستوائی،سفیان ثوری، سفیان بن عیینه، عبدالله بن المبارک،عبدالرزاق بن همام،محمدبن جعفرغندراو محمدبن کثیرصنعانی این فی وغیره چیرحضرات دی۔ د

امام يحيى بن معين مُرَاثِيَّة فرمائي , اثبت الناس فالزهرى: مالك ومعبر

 ⁾ جامع بیان العلم وفضله (ج ۱ ص ۳۲٤) __

ا) فتح الباري (ج اص٣٩٧)_

⁷) حواله بالا_

^{&#}x27;) فتع البارى (ج١ص٣٠٧) _

د) دشيوخو اوتلامذو دتفصيل دباره اومورئ تهذيب الكمال (ج٢٨ص ٢٠٠٤)

^{&#}x27;) تهذیب التهذیب (ج ۱۰ ص ۲٤٤)_

```
ن فغه فرمائي ,, لقة ، . ( ) عمروبن على كَتُلَةُ فرماني ,,معبرمن اصدق الناس، . ( )
               امام عجلي بين فرمائي .. معمرين داشد بصرى سكن اليبن، ثقة، دجل صالح، . _ "
                      بعقوب بن شيبه مينية فرمائي ,, ومعبر ثقة، وصالح التثبت عن الزهري، . . (*)
                                 امام نسائي كينية فرماني .,ومعبرين داشدهالثقة البامون، ، _ ( ٥
ابن جريح مُشِيرً فرمائي ,, عليكم بهذا الرجل _ يعني معبرا _ فانه لم يبق احد من اهل زمانه اعلم
                                                         امام دارقطني مُشَرِّدُ فرمائي ,, ثقة ، . _
                                                                        , معمر ثقة مامون، ، ـ
                                          امام خلیلی مینید فرمانی ,, اثنی علیه الشافی _ ، ، ( )
                امام مالك يُنتيك فرماني ,, نعم الرجل كان معبر، لولا روايته التفسير عن قتادة ، ، _ (^)
                           امام احمد كالله فرمائي ,, لست تضم معمرا الى احد الاوجدته قوقه ، ، _ ( )
ابن حبان ﷺ دئ په كتاب الثقات كښى ذكركړى دې اوليكلى ئى دى.. وكان ققيها متقنا،
                       ابن سعد مُن فرمائي ,, وكان معبر دجلاله حلم دمرة وديل في نفسه ، ، و (١٠)
البته دامام يحيى بن معين كريك نه دتوثيق سره سره دا هم منقول دى ,, اذاحدثتك معمرعن
العراقيين فخالفه، الاعن ابن طاووس والزهرى، فان حديثه عنهما مستقيم، فاما اهل الكوفة واهل البصرة
                                                    فلا، وماعيل في حديث الاعبش شيئًا، ، ـ (١٠)
                                                            ) تهذیب الکمال (ج۲۸ص۳۰۹)_
                                                                              ) حواله بالا
                                                                               حواله بالا
                                                                                ) حواله بالا
                                                            تهذیب الکمال (ج۲۸ص۳۱۰)_
                                                                               حواله بالا
                                                          تهذيب التهذيب (ج١٠ص٢٤٥)_
                                                               ) سيراعلام النبلاء (ج٧ص٩)_
                                                              ) سيراعلام النبلاء (ج٧ص ١٠)_
                                                         ) الثقات لابن حبان (ج٧ص ٤٨٤) _
                                                  ) الطبقات الكبرى لابن سعد (ج٥ص٥٤٥)_
```

ً) تهذیب التهذیب (ج ۱۰ ص۲٤۵)__

دغه شان هغه فرمائي .. وحديث معبرمن ثابت، وعاصم بن إلى النجود، هشام بن عروق، وهذا الضرب، مضرب كثيرالاوهام، . . \)

امام ابوحاتم مُرثيد فرمائي , ماحدث معبر بالبصرة فيه اغاليط، وهوصالح الحديث، . _ (٢)

امام دارقطنی پیک فرمانی .. سیم الحظ لحدیث تتادة والامش، ... را عاصل ددې ټولواقوالو دادې چې کله دې دامام معمربن راشد کیک ثقاهت اوجلالت شان باندې اتفاق دې. بیاهم چې کله دې د یمن نه دوباره بصرې ته لاړو نوهلته ئې دخپلې حافظي په مدد سره حدیثونه اورول چې په کنبې غلطیانې اوشوې. نوهغه حدیثونه کوم چې اعمش. ثابت بناني، عاصم بن ابی النجود. هشام بن عروه اوقتاده نه روایت کوی هغه دومره قوی نه دی څومره چې نور روایتونه قوی دی ـ

خو دلته دې داخبرې مخې ته وي چې امام بخاري کتاله په صحیح بخاري شریف کښې دهغه نه کوم روایاتونه اخستې دی هغه نه کوم روایاتونه اخستې دی هغه دامام زهري، ابن طاووس.همام بن منبه. یحیی بن ابی کثیر ۱ هشام بن عروه، ایوب سختیاني. ثمامه بن انس او دعبدالکریم جزري انتیاج وغیره حضراتونه روایت کړې شوی دي. دامام اعمش یو روایت ئې نه دې اخستې. دغه شان د امام قتاده او دثابت بناني رحمهاالله احادیث ئې تعلیقا را وړی دی، په اهل بصره کښې ئې چې دچا روایت هم اخستلې دې دهغې متابعت موجود دې _ ر)

نوحافظ دهبی پیگید فرمانی , احدالاعلام الثقات، له او هام معروفة، احتبلت له فی سعة ما اتقن، . ـ (^۵) یعنی .. دی دثقات اعلامو نه دی، ددهٔ څه او هام دی کوم چې معروف دی، لیکن ددهٔ متقن روایات په کثرت سره پیش نظر دی نوددهٔ معمولی او هام والا روایاتو تحمل کړې شوې دی . . والله اعلم

اماً معمراصلاً خودبصره اوسيدونكي وو، خو كله چې دئ صنعاء ته لاړو اوبيا دهلته نه دواپس راتلوتيارې شروع كولونودهغه ځائې اصحابو دا سوچ اوكړو چې دده په شان صاحب كمال لره يمن ته نه دې پريخودل پكار ،نودهغه ځائې صاحب رايو داتدبيراوكړوچې دهغه ئې هلته نكاح اوكړه نوبياهغوى هم دهغه ځائې شو_ (')

په رمضان ۱۵۳ هجري کښي دهغوي وفات اوشو. (^۷) رحيه الله تعالى رحية واسعة.

^{&#}x27;) حواله بالا_

[&]quot;) تهذیب الکمال (ج۲۸ص۳۰۹و ۳۱۰)_

^{ً)} تعليقات تهذيب الكمال (ج٢٨ص٣١٢) _

⁾ قاله الحافظ فی هدی السارّی (ص £ £ £و £ £) _ () میزان الاعتدال (ج £ ص ۱۵۴). رقم (۸۶۸۲) _

^{&#}x27;) تهذیب الکمال (ج^{۲۸}ص۲۰۹)_

^{ً)} الكاشف (ج٢ص ٢٨٢) رقم (٥٥٤٧) _

🕜 همام : داهمام بن منبه ﷺ دې ددهٔ حالات اوس په دې باب کښي تيرشو۔

﴿ حضوت ابوهويوه الله الموادن ابوهويوه الله عالات به كتاب الايبان، ١٠٠ باب امور الايبان، الايبان، المور الايبان، لايدي تير شوى دى - (أ)

رمدې يو سوي د كيم د دې متابعت لره موصولا، امام عبدالرزاق بن همام صنعانى كلك په خپل ..مصنف. كلك په خپل ..مصنف. كنبي ر^ا) و حافظ ابن عبدالبر كلك په ..جامع بيان العلم وفضله، كنبي ر^ا) تخريج كړې دې ـ تخريج كړې دې ـ

نيزحافظ بَرَسْلِهُ فرماني ,. واخرجها ابويكرين على المروزى في كتاب العلم له عن حجاج بن الشاع، منه ... "). الشاع، منه ... "

نیزهغوی فرمائی .. وقد تابع حجاجا علیه احبد بن منصور الرمادی، روالا البغوی فی شهم السنة من طریقه، روالاابن مندلائی الوصیة من طریق مجاهدعن ابی هزیرة تحولا، . . ^{(د})

مذكوره متابعت لره دذكر كولو مقصد : دې متابعت لره دذكركول مقصد غالبادادې چې چونكه وهب بن منبه منطق سره د ثقه كيدو نه په هغه باندې بعضي علماؤ كلام كړې دې. لكه څنگه چې وړاندې دفلاس منطق تصعيف تيرشوې دې ـ

دې نه علاوه دی ډیراسرائیلیات هم روایت کوی،ځکه امام بخاری کید دده متابعت ذکر کولوسره دا اوښودل چې دوهب دا روایت قوی دې په دې کښې دڅه قسمه شته

دي_ والله اعلم.

ددیث شریف دترجمة الباب سره مطابقت : ددې حدیث نه، ، او ددې نه رومبې حدیث ... اکټوالاب شاه ،، نه او دغه شان ددې باب ررمبي حدیث کوم چې دحضرت علی گڼځ نه مروی دې. دکتابت حدیث اجازت مستفاد کیږی، اوکوم ځائې پورې چې دممانعت کتابت حدیث تعلق دې نو مونږ ددې تفصیلا ذکریه مقدمه کښې کړې دې - ()

[١١٤] حَدَّنْنَا يَغْيَى أَبْنُ سُلَمَّانَ قَالَ حَدَّثَنِي الْبُنُّ وَهُمْ قَالَ أَغْبَرَنِي يُونُسُ عَنِ الْب شِهَا بِعَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِي عَبْدِ اللَّهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ (')قَالَ: لَمَّا الْفَتَدَّ بِالنَّبِي - صلى الله

^{&#}x27;) کشف الباری (ج ۱ص۶۵۹)_

[]] مصنف عبد الرزآق (ج ١١ص ٢٥٩) باب العلم، باب كتاب العلم، رقم (٢٠٤٨٩)_

T) جامع بيان العلم وفضله (ج ١ص٢٩٩) باب ذكر الرخصة في كتاب العلم. رقم (٢٨٧) _

ا) فتع البارى (ج١ص٣٠٧) _

م) اوگوری تغلیق التعلیق (ج۲ص۹۲)_

م کشف الباری (ج اص۲۸ ۲۱ ۳۱) _

لا قوله: ١٠٠عن ابن عباس. الحديث اخرجه البخارى فى صعيحه (ج١ص٤١٤) فى كتاب الجهاد والسير.
 باب هل يستشفع الى اهل الذمة ومعاملتهم. وقم (٣٠٥٣). و(ج١ص٤٤٤)... [بقيه حائب به راروانه صفحه...

عليه وسلم-وَجَعُهُ قَالَ «التُونِي بِكِتَابِأَكْتُبُ لَكُمْ كِتَابًا لِاتَّضِلُّوا بَعُدَهُ». قَالَ عُمُرُارَ النِّبِي - صلى الله عليه وسلم - غَلَبَهُ الْوَجَمُ وَعِنْدَنَا كِتَابُ اللَّهِ حَسْبُنَا فَاخْتَلَفُوا وَكَثُرُ اللَّفَظُ قَـَالَ «قُومُواعَتِي، وَلاَ يُنْبَغِي عِنْدِي التَّنَـازُعُ». فَخَرَجَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَقُولُ إِنَّ الرَّزِيَّةَ كُـرَّ الزَّنِيَّةِمَاحَالَ بَيْنَ رَسُولِ اللَّهِ-صلى الله عليه وسلم-وَبَيْنَ كِتَابِهِ.

رجال الحديث

① **یحیں بن سلیمان** : داابوسعید بن سلیمان بن یحیی بن سعیدجعفی مقری کوفی سلیمان : دې، دۀ په مصر کښې هم استوګنه کړې وه _ (۱،

دئ دعبدالله بن وهب. اسماعيل بن عليه. حفص غياث.محمدبن فضيل بن غزوان. وكيع بن الجراح، ابوبكربن عياش اوابوخالد الاحمر ليمين وغيره نه روايت كوي_

اوددوی تنه په روایت کونکوکښې امام بخاری.احمدبن الحسن ترمذی.حسن بن علی الحلواني، ابوزرعه رازي. ابوحاتم رازي اومحمدبن يحيى ذهلي ﷺ وغيره حضرات دي_

امام ابوحاتم مُحَمَّدُ فرمائي ,,شيخ،،_,"

امام دارقطنی مُحَاللَةِ فرمائی ,,ثقة، ، _ رُ

مسلمه بن قاسم كي و مائي ,, لاباس به، وكان عند العقيل لقة، وله احاديث مناكير، ، _ (٥) حافظ ذهبي رسيل فرمائي ,,صويلح،، ()

ابن حبان ﷺ دئ په کتاب الثقات کښې ذکرکړې دې، اوفرماڻي .. رېهااغرب، .. (٧

بقيه حاشبه د تيرمغ] في كتاب الجزية والموادعة. باب اخراج اليهودمن جزيرة العرب.رقم (٣١۶٨). و(ج ٢ص/٤٣٨) كتاب المغازي. باب مرض النبي صلى الله عليه وسلم ووفاته.رقم (٤٤٣١) و(٤٤٣٢). و(ج٢ص١٤/هـ/٨٤٧) كتاب المرضى.باب قول العريض : قومواعني. رقم (٥۶۶٩). (ج٢ص١٠٩٤) كتاب الاعتصام بالكتاب والسنة باب كراهية الخلاف. رقم (٧٣٢۶). ومسلم في صعيحه.في كتاب الوصية.باب ترك الوصية لمن ليس له شيئ يوصى فيه، رقم (٢٣٢ _ ٤٢٣٤) _

^{ً)} تهذیب الکمال (ج ۳۱ص ۳۶۹ر ۳۷۰)_

^{ً)} دشيوخواودتلامَذَؤ دپاره اوګورئ تهذيب الکمال (ج ٣١ص٣٤٩و ٣٧٠)_

[&]quot;) تهذيب الكمال (ج ٣١ص٣٦) لفظ,, شيخ.، دتعديلّ دالفاظونه دي، دتفصيل دپاره اوګورئ مقدمة الكاشف للشيخ محمد عوامة حفظه الله (ص21و12)_

^{&#}x27;) تهذيب التهذيب (ج١١ص٢٢٧)_

^ت) حواله بالا_

م) الكاشف للذهبي (ج٢ص٣٤٧)،رقم (٤١٨١)_

۱) الثقات لابن حبان (ج ۹ص۲۶۳) _

البته امام نسائ*ی پینظ* ددهٔ تضعیف کړې دې. فرمائیلی دی ..لیس **پینقه** . _ (^۱) حافظ ابن حجر *پینظ* فرمائی ..صلاق یعطع، . ^۲)

خوحافظ ابن حجر مُكِيلًا دامام نسائى مُكَيلًا به باره كنبى فرمائى . وكان النسال سيح الرائ فيهه، (،)
دغه شان دحافظ ابن حجر مُكِيلًا قول .. صدوق يغطى، . باندې تبصره كولوسره بعضى محققين
وائى .. بل صدوق، حسن الحديث، فقد دوى عنه جهم من الثقات، منهم : البخارى فى الصحيح، وابوحاتم
وقال : شيخ، ووثقة العقيل والدار قطنى، وذكرة ابن حبان فى الثقات وقال : يغرب، وضعفه النسالى وحدة،
وقال مسلمة بن قاسم الاندلى : لاباس بهوله احاديث مناكور، . . ، ، ،

فرمانی , رلاپاس به، ، اوفرمانی چی دده څه احادیث منکردی _ جافظ ابن حجر رئیلی فرمانی چی امام بخاری گیلی خواول دده نه زیات احادیثونه نه دی اخستلی ، بلکه دهغه نه نی څه لګ احادیث اخستلی دی، کوم چی معروف دی اوابن وهب نه مروی دی _ ر^۵ والله اعلم

دیحیی بن سلیمان گینتهٔ انتقال په ۲۳۷ هجری کښی شوی دی _ (۲٫ رحمه الله تعالی رحمة داسعة .

آبن وهب : دا مشهور امام حدیث اوفقه ابو محمد عبد الله بن وهب بن مسلم قرشی، فهری .
مصری کینتهٔ دی . ددهٔ حالات د , کتاب العلم ، . , باب من بردالله به عبدایفقه فی الدین ، لاتدی تیر شوی

🕝 يونس : دايونس بن يزيدايلي قرشي رئيلية دې. ددوي حالات په كتاب العلم، باب من يردالله

كعف البكادى

^{ً)} تهذیب الکمال (ج۳۱ص۳۱) _

^{ّ)} تفريب التهذيب (ص٥٩١)، رقم (٧٥۶٤) _

^{ً)} هدى السارى (ص٤٥١) _

⁾ تحريرتقريب التهذيب للدكتور بشارعواد معروف. والشيخ شعيب الارنؤ وط (ج\$ص٥٧) رقم (٧٥٤٤)

م هدى السارى (ص٤٥١) _

⁾ الكاشف للذهبي (ج٢ص٣٤٧) رقم (٤١٨١)_

⁾ کشف الباری (ج^۳ص۲۳۸)_

به خيرايققه في الدين، الاندى تيرشوى دى ـ ان

- (ابن شهاب داامام محمدبن مسلم بن عبيدالله بن عبدالله بن شهاب زهري المنهاد دي. دور
- حالات محتصرا د.. بدوالوی، درېم حدیث لاندې تیرشوی دی دن . و عبید الله بن عبدالله : دادمدینه منورې مشهور فقیه عبیدالله بن عبدالله بن عتبه بن
- عبید الله بن عبدالله : دادمدیند منوری مشهور فقیه عبیدالله بن عبدالله بن عبد بن عبد بن مسعود هذلی مدنی تواند دی.ددهٔ حالات د.. کتاب العلم، ۱۰۰ باب متی یصح سباع الصفیر؟، لاندی تیر شوی دی _ رئی
 تیر شوی دی _ رئی
 - آبن عباس: دحضرت ابن عباس تنه حالات د... بده الوس.. د خلور م حدیث لاندی را اور... کتاب الایدان ۱۰۰۹ بکفهان العشیر کفه دن کفه الاندی تیرشوی دی د. د.

قوله: قَالَ لَمَا اشْتَنَ بِالنَّبِي - صلى الله عليه وسلم - وَجَعُهُ قَالَ: حضرت ابن عباس ﷺ فرمانی چی کله دحضوراکرم ﷺ به تکلیف کنبی شدت پیداشو نوهغوی اوفرمائیل

دا دحضوراکرم گرد دمرض وفات واقعه ده. نبی الیک تقریبا دوه هفتی بیماروو. دپنجشنه رجمعرات دورخی نه بهماروو. دپنجشنه دممورات دورخی نه دهغوی بیماری سخته شوی وه اودا دجمعرات ورخ وه. ددی نه پس دپیرپه ورخه باندی دهغوی وصال اوشو، گویا چی هغوی دوصال نه څلور ورخی وړاندې دا ارشاد فرمائیلی دی د ()

دلته رومبې لفظ ..کتاب، نه .. ادوات الکتاب، مراد دی. دمسلم شریف په روایت کښې تصریح موجود دد. ایتون بالکتف والدواة او اللوم والدواة ، (^۸ په دی کښې د.,کتف، نه مراد داوگی هډوکې دې. په داسې قسمه څیزونوباندې په دې حضر اتولیکل کول _ (^

دويم لفظ .. كتاب. ، نه مراد ..مكتوب. ، يعني تحرير مراد دې او , اكتب، ،او , د لاتضلو. .

^{&#}x27;) کشف الباری (ج۳ص۲٤۲)_

^۱) کشف الباری (ج۳ص۲۲۶)_

[&]quot;) کشف الباری (ج۳س۳۲) _

⁾ كشف البارى (ج ١ص٤٣٤)

د) کشف الباری (ج۲ص۲۰۵)

⁾ اوگوری صحیح البخاری (ج اص ۳۲۹) کتاب الجهاد والسیر، باب هل یستشفع الی اهل الذمة ومعاملتهم. رقم (۳۵۵۳) ۱۸ ای می است. کیالیم تر بالیم تر بالیم تر بالیم ترکیالیمی ترکیالیمی ترکیالیمی ترکیالیمی در ۱۳۷۸ می در ۱۳۷۰ می

^۱) اوگورئ صعیح سسلم، کتاب الوصیة، باب ترک الوصیة لمن لیس له شیئ یوصی فیه، رقم (۴۳۳ ¢) _ ۱) فتح الباری (ج اص۲۰۸) _

حواب امرواقع دي، ځکه مجزوم دي _ ()

خَاّلَ عُمُّراً إِنَّ النَّيِي - صلى الله عليه وسلم- غَلَبَهُ الْوَجُمُ وَعِنْدَنَا كِتَابُ اللَّهِ حَسُبُنَا فَاغْتَلَقُوا وَكَثُرُ اللَّفَظُ . قَالَ «قُومُوا عَتِي، وَلاَ يَنْبَغِي عِنْدِي التَّنَازُ عُر». فَخَرَ عَرَابِنُ عَبَّاسٍ يَقُولُ إِنَّ

اَرْزَیَّةَ کُلِ الرَّزِیَّةِ مَاحَالَ بَیْنَ رَسُولِ اللَّهِ-صلی الله علیه وسلم-وَیَیْن کِتَابِهِ. اَ اَوْزِیَة کُل الرَّزِیَّة و موندِ سره کتاب حضرت عمر الله او وفرمانیل: په نبی کریم تله باندې دتکلیف شدت دې او موند سره کتاب موجود دې کوم چې زمونډ دپاره کافی دې، نوپه صحابه کراموکښې اختلاف پیدا شواوشور شغړ پ زیات شو، نوحضور اکرم تله او فرمانیل زمانه پاسئ، زما په وړاندې جنګ جګېې صحیح نه دی، حضرت ابن عباس چې کله داحدیث روایت کړه، نودې ویئاسره بهر اووتلو: هومصیبته اواې مصیبته اکوم چې دحضور اکرم تله اودهغوی د تحریر په مینځ کښې حائل

حضوراكرم تلي تُعهليكل غوښتل ؟ حضرت عمر تاتي ولى ددې مخالفت اوكړو؟

آیا دروافضودوینا مطابق حضوراکرم گی دحضرت علی گی دپاره داستحقاق خلافت ظاهرول غوښتل ؟ آیا هغوی دا وئیل غوستل چې حضرت ابوبکرصدیق گی کو له دخلافت استحقاق ندوو؟

ددې ټولو امور په څه قدرې تفصيلي جائزه اخلو_

حضوراكرم تَهَمَّ تعه ليكل غوستل علامه خطابي تشخ فرمائي چې دلته دوه احتماله دي . يودا چې دهغوي ته نه پس خليفه جوړيدونكي نوم ني ليكل غوستل، چې خلق پكښې اختلاف اونه كړي اوددې نه په دفتنه اودضلالت دروازه پرانستلې شي .

اکتارت وقت نوی رودنی د په سند. دویم احتمال دادې چې حضوراکرم احکام دین لیکل غوستل،چې داختلافاتورفع اوکړې شمار کې

ی دامام سفیان بن عیینه گفته نه علاوه نورو حضراتو ړومبې احتمال ته ترجیح ور کړې ده (۲٪). چې تاکیدنې دمسلم شریف دحدیث نه کیږي :

· · عن عاتشه قالت: قال لى رسول الله صلى الله عليه وسلم في مرضه: ادعى ل ابابكم اباك، واعاك، حتى اكتب

كتابا، فان اغاف ان يتبنى متين ديقول قائل: انا اولى، ديان الله دالبومنون الا ايابكر، ، _ . ^ . يعنى ,, حضور تهي د خپل مرض الموت په موقع باندې ما ته اوفرمائيل چې خپل والد ابوبكر اوخپل رور راؤبله، دې دپاره چې زه تحريراوليكمه، خكه چې ما ته ددې خبرې انديښنه ده چې څوک تمناكونكي تمنا كولوسره اوائى، چې زه دخلافت ډير حق داريم، اوالله تعالى اواهل ايمان دابوبكرنه سوابه په بل چاباندې راضى نه وى، ، _

4

^{ً)} حواله بالا_

⁾ اعلام الحديث (ج اص٢١٧و ٢١٨)_

⁾ عدد القارى (ج ٢ص ١٧١)_) صحيح مسلم.كتاب الفضائل باب من فضائل ابى بكرالصديق رضى الله عنه، رقم (٤١٨١)_

بعضي حضرات وائى چې نبى اكرم تا دصحابه كرامونه دامتحان اغستلودپاره دا فرمائيلې وو..ايتون بكتاب اكتب لكم كتابا، . چې او ګورى اچې دا حضرات په قرآن اوحديث باندې د پوره عمل اراده لرى كه نه ، كله چې حضرت عمر تا او او فرمائيل ..حسبنا كتاب الله ، نوهغوى تا تا يتين اوشو . يقين اوشو .

خودا جواب صحیح نه معلومیږی، ځکه چې حضوراکرم نظم ددې نه پس اوفرمائیل. الاتفلوا بعدائه، که چرې دحضوراکرم نظم مقصد امتحان وونو .. الاتفلوا بعدائه، نې ولې فرمائیل احضوت عمر نظم مخالفت او کړو، دې لوقع باندې د تحریر مخطوت عمر نظم مخالفت او کړو، دې لره په یوغلط محمل باندې دمحموله کولوضروت نشته دې اونه حضرت عمر نظم په دې مخالف وجه دا معلومیږی چې هغوی اوکتل چې الله تعالی دین مکمل کړواوپه یومعلومه اومتعینه طیقه معلومیږی چې هغوی اوکتل چې الله تعالی دین مکمل کړواوپه یومعلومه اومتعینه طیقه باندې جاری اوساری شو، اوس په حضوراکرم نظم باندې د تکلیف د شدت عالم دې اودوصال وخت هم نیزدې دې، په دې کښې هیڅ څه شک نشته دې څنګه چې نورو خلقوته امراض اوالام لاحق کېږی ددې نه نه صرف حضوراکرم نظم مستشنی نه دې بلکه په هغوی باندې ددغه الامواو امراضوائردعام خلقوپه مقابله کښې څه زیات وی، لکه څنګه چې دهغوی ارشاد دې

يعني ,, ماته دومره سخته تبه وي څومره چې ستاسوپه دووکسانوباندې وي. ._

دحضرت عمر الشرخيال ووچې په داسې موقع باندې تحرير ليکلوسره به منافقينووغيره ته دتلبيس موقع ملاؤشي، مثلا هغوي يوبل تحرير پيش کولوسره دا ئې وئيلې شوچې دا حضور اکرم ﷺ ليکلې دې، خکه حضرت عمر الشرسوچ اوکړو چې په داسې موقع باندې دتحرير خاص ضروت نشته، ټول د دين امور مونږ ته معلوم دي، داصولو اوقواعدو دپاره , کتاب الله موجوددې لهذافي الحال ددې تحرير ضرورت نشته دې _ رأ

خاص طور باندې دې د پاره هم ضرورت اونه ګڼړولوچې حضرت عمر کانځ درسول الله کا

اً) صحيح مسلم، كتاب البروالصلة والادب، باب من لعنه النبي صلى الله عليه وسلم. اوسبه، اودعاعليه، وليس هو اهلا لذلك: كان له زكاة واجراورحمة، رقم (۶۶۲۲)_ اً) مسئد اجمد (۱۳۵ م ۹۶) مسئد المستعد القدري من الله عنه مانظ المند لا مدارات عنه الله عنه الله عنه الله

أ) أوكورئ اعلام الحديث للخطابي (ج ١ص٢٢٣_٢٢٥)_

دمزاج شناس وو، مواردكلام حيثيت ني پيژندلو، چي هغوى ﷺ وجوبا اوحتما څه كلام ارشاد فرمانى كه ندبا اوارشادا، دا ني په ښه شان سره پيژندل _ ددې خبرودوجي نه حضرت عمر الله الله عمر الله الله حسبنا،، ونيلوسره دحضور اكرم ﷺ تسلى اوكړه چي تاسوته دفكر ضرورت نشته. انشاء الله دا امت من حيث المجموع ضلال باندې به نه مجتمع كيږي، مونوسره .كتابالله، موجود دي _

که چُری دخلافت خبره نی لیکل غوستل نوبیاهم خبره واضحه ده چی حضوراکرم تا په همه همچری کنبی حضرت آبوبکرصدیق از از امیرالحج جوړکې وو. دمین وفات په ایاموکنبی نی حضرت آبوبکرصدیق ته دامامت حکم کړی وو. ددې نه په واضحه ټوګه معلومیږی چی که چرې هغوی تا ها دامامت حکم کړی وو. ددې نه په واضحه ټوګه دی ته هم دلیکلوڅه ضرورت محسوسه نه شو۔ حاصل دا چی دحضوراکرم تا بعضی ارشادات وجوبی وی، په دې کنبی نه هغوی دچا نه مشوره اخلی اونه په صحابه کراموکنبی ځوک مراجعت کوی،لیکن په بعضی اوقاتو کنبی دهغوی ارشادت وجوبی نه وی. په داسی صورت کنبی هغوی مشوره هم کوی اودهغوی په خبره باندې صعابه کرام مراجعت هم کوی، دات همه داسی اوشوچی حضرت عمر تا و و اودهغوی په خبره باندې صعابه کرام مراجعت هم کوی، کنبی حضور اکرم په سخت تکلیف کنبی دی اودهغوی داارشاد وجوبی هم نه دی،بیا داچی کنبی حضور اکرم په سخت تکلیف کنبی دی اودهغوی داارشاد وجوبی هم نه دی،بیا داچی په کړم څیزهغوی لیکل غواړی په هغی باندې عمل هم کیږی لګیادی اوآننده به پرې باندې هم عمل کیږی، نوځکه هغوی په دې موقع باندې دتحریر مخالفت اوکړو۔

سم مس سیږی، تو حد مصوی په دې سوی به دې رو ته مصود و برید د درې تائید ددې خبرې نه هم کیدې شی که چرته څه وجوبی حکم وونوصرف حضرت عمر څیځو نه بلکه که ټولی دنیاهم دهغوی کا شی مخالف کولونوبیا به هم هغوی دې حکم لره پوره کولونه چاهم ایسارولي نه شو. هغوی کا شی په دې موقع باندې یاددې نه پس دفرصت ملاؤیدوباوجود تحریرنه لیکل ددې خبرې قوی دلیل دې چې داحکم وجوبی نه وو. ځکه حضرت عمر کا تخ تحریرنه لیکل ددې خبرې قوی دلیل دې چې داحکم وجوبی نه وو. ځکه حضرت عمر کاتلا ددې خبرې دې تحریردلیکلومخالفت اوکړو.دادڅه قسمه بې ادبی یاګستاخی هرګزنه ده -

سبب سی سرسید و در سلم حدیبیه به موقع باندی .. صلح نامه.. دلیکلوپه وخت کښې چې کله اوګورئ دصلح حدیبیه په موقع باندې .. صلح نامه.. دلیکلوپه وخت کښې چې کله مشرکینو د ..رسول الله.. په لفظ باندې اعتراض او کړونوهغوی نظی حضرت علی نظی ته حکم اوکړو.. الله، لاامحه، .. لیکن حضرت علی نظی دغایت محبت اودوفود جذبات کښې عرض اوکړو.. والله، لاامحوابدا،، ، ، په دې باندې نه هغوی ناراضه شواونه نورڅوک ناراض شول بیادلته داخبره هم دپوهې ده چې ددې حکم مخاطب خوصرف حضرت عمر نظی نه وو . بلکه تول اهل بیت وو . هلته حضرت علي اوحضرت عباس نظی هم موجودوونوټولوبه شور شغرب جوړکړې وو . چاهم کاغذ راؤنړو . آیا حضرت عمر نظی ددې ټولولار بنده کړې وه چې په دې کښې څوک داسې پیدانه شي چې کاغذ دحضرت کڼې څوک داسې پیدانه شي چې کاغذ دحضرت

⁾ السيرة الحلبية (ج٣ص٢)، غزوة الحديبية _

عمر ئائلۇ دويرې نه نې راوړو نومونږ ونيلې شوچې حضرت على ئائلۇ خو شيرخداوو. دهغوي په بهادرې كه خدشك نه وو.بياهغه دحضرت عمر ئائلۇ نه څنګه ويريدل ؟!

په بهدارې مه مدست مه وو ، بياسعه د مصرت سو ساو ساو د ويود د ويود د د مرا به نې ورکړې حاصل دا چې هغوی الله د فريقينوپه راې که دچانه هم ناراضه نه شو . ګنې سزا به نې ورکړې وه يا به نې بليغه تنبيه کړې وه ، ياکم از کم دوباره تاکيدې حکم به نې فرمانيلې وواوحضرت عمر نالل ته به نې غصه «زورنه» کړې وه ، البته ددې شور دوجې نه وقتى ټوګه باندې څه متاثرو

شواويه دې باندې يو تسمه ناخوښي ني هم او کړه _ (')والله تعالى اعلم

دلته داهم آمکان دې چې هغوي نځې په دې موقع باندې هغه وصيتونه ليکل غوستل کوم چې . روستوهغوي او کړه .

لگه څنګه چې هغوی مشرکین دجزیرة العرب نه دویستلو (۲٫ راتلونکې وفودو ته په انعاماتو او اکرامونو سره درخصت کولور۲) په قرآن دعمل کولور۴ جیش اسامه لره دخپل هدف طرف ته دلیګلور۴) دمونځونوداهتمام کولورل دغلامانودحقوقودرعایت کولورااودهغوی قبرلو، دبت پرستې ډیره نه جوړولو (۲٫ وصیتونه فرمائیلی وو۔

واقعه قرطاس دې حديث ته ,,حديث ترطاس، وئيلې کيږي او دا واقعه د قرطاس واقعه بللې کيږي او دا واقعه د قرطاس واقعه بللې کيږي ـ

ددې واقعې په بنياد باندې روافضو په حضرت عمر الله ښه طعن اوتشنيع (ردې بدي، کړی دی اوعموی ني کړې ده بدې د دراصل خليفه بلافصل کيدواستحقاق دحضرت على الله وو، هغوی هم ده لره ليکل غوستل، ليکن حضرت عمر الله هغوی هم ده لره (معاذالله) ددې نه ايسارکړل _

په دې سلسله کښي ضرورت ددې خبرې دې چې داثابت کړې شي چې هم حضرت ابوبکر صديق الله احق بالخلافت وو اوحضوراکرم الله ددې برعکس د حضرت على الله دخلافت متعلق څه تحرير ليکل نه غوستل ـ

استحقاق خَلَافَ سَيدنا حضرت ابوبكر صريق اللَّهُ: مون به لاندې راتلونكي بحث كښې

۱) اوګورئ فضل الباری (ج۲ص۱۲۵_۱٤۹)_

أ) اوگورئ صحيح البخارى (ج اص٤٢٩) كتاب الجهاد والسير، باب هل يستشفع الى اهل الذمة ومعاملتهم. رقم (٣٠٥٣)_

^{ً)} حواله بالا_

¹) قال الداودى : وجزم به ابن التين _ انظرفتح البارى (ج٨ص١٣٥). كتاب المغازى. باب مرض النبى صلى الله عليه وسلم ووفاته _

صعى اله عليه وسلم ووق في ____ ثم قاله المهلب، وقواه ابن بطال، انظر شرح صحيح البخارى لابن بطال (ج٥ص٢١٥) كتاب الجهاد. باب جوائز الوفود __

أ) قاله الحافظ احتمالا_فتح البارى (ج٨ص٣٥)_

^{&#}x27;) حواله بالا_

م) قاله عیاض فتح الباری (ج۸ص۱۳۵)_

دحضرت صديق ثايلا داستحقاق خلافت متعلق روايات ذكركوو

دحضرت عائشه ﷺ نه روایت دی:

يقال وسول الله صلى الله عليه وسلم في مرضه: ادعى ابابكم اباك واخاك، حتى اكتب كتابا، فان اخاف ان يتهنى متين، ويقول قائل: إنا إولى، ويابى الله والبؤمنون الاابابكر، ، (١)

يعني ,, حضوراكرم 衛 په خپل مرض الوفات كښې مانه اوفرمانيل.زما دپاره خپل والد ابوبكر اوخپل رور راوغواړه،دې دپاره چې زه تحرير اوليكم.خكه چې ماته ددې خبرې انديښنه دې چې څوک تمناکونکي تمنااوکړي اوڅوک وايونکي داسي وينااونکړي چې زۀ دخلافت زيات حقداريم، اوالله تعالى ته او أهل ايمان ته دابوبكر نه سُوابل څوك منظور نه

پەدې ورايت كښى دحضرت ابوبكرصديق ئاتئۇ داحقيت بالخلافت بداهتا ثابت كيرى _

🕝 د دحضرت عائشه 🗱 په روايت کښې دي : ,.....لقدهبت _ او اودت _ ان ارسل الى إي بكروابنه، واعهد، ان يقول القائلون، اويتهنى المتعنون، ثم

قلت: يابي الله ويدفع البوُمنون، اويدفع الله ويابي البوُمنون، ، _ (ً)

یعنی "زما اراده اوسو ، چې زه ابوبکراودهغه خونې راوبلم اووصیت اوکړم،ددې ویرې نه چې څوک وینونکې وینا اونه کړی اوڅوک تمناکونکې تمنا اونه کړی چې خلافت هغه ته ملاؤديدل پکاردي، بيامي سوچ او کړو چې الله تعالى او اهل ايمان به په خپله باندې دې لره

وحضرت على المائلة نه مرفوع روايت دي: ,, سبعت اذناى ووعالا قلبى من رسول الله صلى الله

عليه وسلم: الناس تهج لقريش، صالحهم تهج لصالحهم، وشرار هم تهج لشرار هم، ، _(^{*}) یعنی " خٰلق په هرصورت کښې دقریشوتابع دی، ددوی نیک خٰلق دنیکوخلق تابع دی اودوى بدخلق دبدوخلقو تابع،،_

 دحضرت على الملك مرفوعا مروى دى ،, ابويكم وعبرسيدا كهول الهل العبئة من الاولين والآخرين، ماخلا النبيين والبرسلين، لاتخبرهبا ياعلى، ، _ (*)

یعنی .. ابوبکر اوعمردجنت دزیات عمرد،مشرانو، خلقو سرداران به وی،سوا دانبیاؤ او د رسولاتو نه، ليكن اي على اهغوى تهمه وايه،،_

@ دحضرت على الليخ نه مرفوعا روايت دي:

) صعيع مسلم.كتاب الفضائل.باب من فضائل ابى بكرالصديق رضى الله عنه. وقم (٢١٨١)_) صعيح البخاري (ج٢ص٨٤٤)، كتاب العرضي، باب قول العريض : اني وجع. اوواراساًه ! اواشتديي الوجع. وقم (۵۶۶۶). و (ج ۲ص ۲۰۷۱) كتاب الاحكام.باب الاستخلاع. وقم (۷۲۱۷)_

⁾ مسند احمد (ج اص ۱۰) رقم (۷۹۰) من مسند على بن ابى طالب رضى الله عنه _ _) جامع الترمذى، كتاب المثناقب، باب مناقب ابى بكرالصديق رضى الله عنه، رقم (۲۶۶۶) _

.. رحم الله اپا بكر ذوجتى ابنته، وحبلتى الى دار الهجرة، واعتى بلالا من ماله، دحم الله عمر، يقول العق وان كان مرا، وماله صديق، رحم الله عثمان تستحييه البلائكة، رحم الله عليا، اللهم ادر الحق معه حيث دار، (يعنى .. الله بعالى دى په ابوبكر باندى رحم اوكړى. هغه خپله لورماته په نكاح راكړه. زۀ ئې تردارهجرت پورې رواستم او دخپل مال نه نې حضرت بلال آزاد كړو. الله تعالى دې په عمر باندې رحم اوكړى حق ويناكوى اكرچه ترخه وى. حقه وينا هغه دې خائې ته را اورسلو چې

څوک دوست ئي نشته دي. الله تعالى دې په عثمان باندې رحم او کړي چې دهغه نه فرښتي هم حيا کوي، الله تعالى دې په على باندې رحم او کړي، اے الله ؛ حق هغه طرف ته کړې کړم

طرف ته چې د علی مخ وی. . _ د دې نه دخلفاء په تر تیب باندې ښکار ه تعریض کیږی _

كشف البارى

 حضرت عبدالله بن عمر اوحضرت ابوهريره الله نه .. حديث تليب، مروى دى، حضور اكرم الله فرماني

,, رايت الناس مجتمعين في صعيد، فقام ابويكرفنزع ذنوبا او ذنوبين، وفي بعض نزعه ضعف، والله يغفرله، ثم اخذها عمر، فاستحالت بيداة غربا، فلم ار عبقريا في الناس ضعف، والله يغفراله، ثم اخذها عمر، فاستحالت

بیده غربها، فلم ارعیقی یا آلناس یفری فرید، حق فرب الناس بعطن، - (*) (الفظ لحدیث ابن عمر)
یعنی ,, حضوراکرم گی فرمانی چی ما ربه خوب کنبی، اولیدل چی خلق په یو خائی کنبی ولاړ
دی، حضرت ابوبکر صدیق گی پاسبدواوهغوی یودوه ډوله اوبه راخکلی، په دغه
راخکلوکنبی څه کمزروی وه ربه دی کنبی دی خبری طرف ته اشاره وه چی دحضرت
ابوبکرصدیق گای په دورخلافت کنبی چونکه دمانعین زکوه فتنه پیداشوی وه اوبل طرف ته
څه دمدعیانو دنبوت شور اوزور وو، خکه هغه دفتنو په ختمولوکنبی مصروف شوی وو، ددې
وجی نه هغوی داسلام داشاعت او دتبلیغ هغه کارنامه انجام دی کوه کومه چی دحالاتو ساز ای کیدو نه پس حضرت عمر ما شار استالی دی دهغوی کمزوری معاف کړی، ، _

ددې نه پُس حضرت عمر گُلگو هغه ډول سنهبال کړو، دهغوی په لاس کښې راتلوسره هغه ډول چرس ددڅرمنې لوئ ډول، جوړشو، ماڅوک قوی اومضبوط سړې دحضرت عمرپشان ډول راخکونکې اونه لیدلو.تردې پورې چې خلقوهلته دخپلواوښانو باړې جوړې کړې، دهلته ئې مستقل قیام شروع کړو، ددې وجې نه چې دحضرت عمر دکارکردګې نه هغوی ته راحت اواطمینانزیات حاصل شی اوهغوی داسلام په اشاعت کښې لوئیه برخه واغستله _) ددې حدیث نه په واضحه ټوګه باندې اشاره ملاویږی چې حضور اکرم نگیم نه پس حضرت

^{&#}x27;) جامع الترمذي،كتاب المناقب. باب مناقب على بن ابي طالب رضي الله عنه. رقم (٣٧١٤)_

⁾ صحيح البخارى (ج اص۵۱۳) كتاب المناقب، بأب علامات النبوة فى الاسلام، رقم (٣۶٣٣).و (ج ١ص٥١٧) كتاب فضائل اصحاب النبى صلى الله عليه وسلم،باب (بدون ترجمة، بعد باب قول النبى صلى الله عليه وسلم : لوكنت متخذا خليلا)، وقم (٣۶۶٤)، وصحيح مسلم، كتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل عمررضى الله عنه،رقم (٢٩٤٩_ ٢٩٩٧).

ارىكرصديق اللئلؤ اودهغه نه پس به حضرت عمر اللئؤ خليفه وى.خكه چې دانېيا، ک اموخوبونه هم وحی وی ـ

🕒 دحضرت عبدالله بن عمر نه مروى په يوحديث كښې حضوراكرم 🍇 دخلفاء اربعه تذكره دهغوي دبعضي مناقبوسره اوكړه، داتذكره هم على ترتيب الخلافت شوى دي .. اداف امقي بامتى ابويكر، واشدهم في الاسلام عبر، واصدة تهم حياء عثبان، واقضاهم على، . _ ، ` .

په ناه کا . يعني .. زما په امت کښي په دې امت باندې دټولونه زيات شفيق ابوبکر دې.داسلام په باره کښي دټولونه سخت عمر دې. دټولونه رشتونې حيا والاعثمان دې اوپه عدل اونصاف کښې د ټولونه زيات على دى،،

<u>%_ هم دحضرت عبدالله بن عمر گاڅځ نه يوروايت مروي دې. د کوم داشارې نه چې د شيخينو </u> ترتيب معلوميري

.,قال رسول الله صلى عليه وسلم: انا اول من تنشق عنه الارض، ثم ابويكر، ثم عبر يعنى "دټولونه وړاندې به زما قبرشق كيږي. بيا دابوبكر بيا. دعمر...

دحضرت على الثين نه مرفوعا مروى دى:

, قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا بيكم: يا ابابكم، ان الله اعطان ثواب من آمن بي مند خلق آدم الى ان بعثني، وان تعالى اعطاك يا ابابكه ثواب من آمن بمنذ بعثيني الى يوم القيامة، . . (٢٠

یعنی ,, اے ابوبکر؛ اللہ تعالی مالرہ دحضرت آدم دپیدائش نه زمادبعثت پورې څومره خلقوچي ايمان راؤړو دټولوثواب عطاكړو اوتالره زما دبعثت نه ترقيامته پورې چې ځومره خلق ايمان راؤړي دهغه ټولو خلقو ثواب عطاكړو_

دحضرت عائشه نا نه مرفوع روایت منقول دې :

,,قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لاينهنى لقوم فيهم ابويكر،ان يؤمهم غيري، ، (^{،)} ، يعني ,, په کوم قوم اوجماعت کښې چې ابوبکر وي نوبل چالره امامت نه دې کول پکار ، ، ـ

۱۰ دحضرت ابوسعید خدری گات مروی دی:

, قال رسول الله صلى عليه وسلم : ان اهل الدرجات العلى يراهم من اسقل منهم كما يرى الكواكب الطاليح في الافق من آفاق السباء، وإن إيابكر، وعبر منهم والعباء ، و٥،

⁾ رواه ابو يعلى في مسنده انظر المطالب العالية بزوائد المسانيد الثمانية (ج ٤ص٨٥) باب مااشترك فيه جِماعة من الصحابة، رقم (٤٠٣١) _

⁾ جامع الترمذي. ابواب المناقب. باب بلاترجمة. تحت مناقب عمربن الخطاب رضي الله عنه. رقم(٣٤٩٢) .) كنزالعمال (ج ١١ص ٥٥٩).كتاب الفضائل. الباب الثالث في ذكرالصحابة وفضلهم.رقم (٣٢۶٤٢)_

⁾ جامع الترمذي. ابواب المناقب. باب مناقب ابي بكرصّديق رضي الله عنه. رقم(٣٤٧٣) _

[﴾] سنن ابن ماجه. المقدمة. فضل ابي بكرصديق رض الله عنه.رقم (٩۶)و جامع الترمذي. ابواب المناقب. باب مناقب ابی بکرصدیق رضی الله عنه. رقم(۳۶۵۸) _

ډيرڅه ملاؤيږي،،_

كولوسره فرمائيلي وود

 $^{\prime}$, . هذان سيدا كهول اهل الجنة من الاولين والاخرين، الاالنهين والمرسلين، لا تخبرهما يا على، $^{\prime}$,

🍙 دحضرت حذيفه الثانؤ نه روايت دي :

,,قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: التندوا باللذين من بعدى: إن بكروعبر، ، _ () يعني "زما ندپس چې کوم دوه کسان دي، يعني آبوبکر او عمر ، ددوي اقتدا او کړي، ، ـ

دحضرت جابر بن عبدالله الشئ نه روايت دى :

,, أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال : ارى الليلة رجل صالح، أن ابابكر، ثيط برسول الله صلى الله عليه وسلم، ونيط عبر بابي بكم، ونيط عثمان بعبر، قال جابر: فلما قمنامن عند رسول الله عليه وسلم: قلنا: اماالرجل الصالح فرسول الله صلى الله عليه وسلم، واما ذكر رسول الله صلى الله عليه وسلم من نوط بعضهم

ببعض، فهم ولاة هذا الامرالذي بعث الله به دبيه صلى الله عليه وسلم، ، _ (أ)

یعنی , مانن شپه یونیک سړې خوب کښې اولیدوچې ابوبکردحضور ﷺ سره لګیدلې دې او حضرت عمردابوبکرسره، اوعثمان عمرسره _ حضرت جابر ﷺ فرماني چې کله مونږ دحضور اكرم كالله نه پاسيدو نومونږ داتعبيراوكړو چې دانيك سړې خويه خپله رسول الله كالله دى،باقى حضور اكرم ﷺ،ديوبل سره دمعلق كيدوچي كوم ذكراوكړونودا ددين اودخلافت د زمه دارو تذکره ده، دڅه دپاره چې حضوراکرم ﷺ مبعوث شوې دې ، ،_

ددې روايت نه نه صرف دا معلومه شوه چې حضرت ابوبکر صديق اللي احق بالخلافت دي. بلکه دا هم معلومه شوه چې دهغه نه پس به حضرت عمر گانت خليفه وي اودهغه نه پس به حضرت عثمان الثاثؤ خليفه وي_

@_ دحضرت جبيربن مطعم ڴڷٷ نه روايت دي :

,, اتت امراة النبي صلى الله وسلم، فأمرها أن ترجع اليه، قالت: ارايت أن جئت ولم أجدك؟ كأنها تقول: الهوت، قال عليه الصلاة والسلام: ان لم تجديني فاتي ابابكم، ،_(4)

^{&#}x27;) جامع الترمدي. ابواب المناقب، باب مناقب ابي بكرصديق رضي الله عنه. رقم (٣۶۶٤) _

[&]quot;) جامع الترمذي. ابواب المناقب. باب مناقب ابي بكرصديق رضي الله عنه. رقم(٣٤٤٣ و٣٤۶٣) _

[&]quot;) مسند احمد (ج٣ص٢٥٨)، مسندجابربن عبدالله رضى الله عنه، رقم (١٤٨٨١)، والمستدرك للحاكم (ج٣ص٧١). كتاب معرفة الصحابة، فضائل ابي بكر الصديق رض الله عنه _

⁾ صعيع البخاري (ج١ص٥١٥) كتاب فضائل اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم. باب (بدون ترجمة، بعد باب قول النبي صلى الله عليه وسلم. لوكنت متخذا خليلاً). ... [بقيه حاشيه به راروانه صفحه..

يعني .. يوه ښځه حضوراکرم ﷺ ته راغلله. هغوي ﷺ هغې ته ددوباره راتلو حکم اوکړو. هغي عرض او کړوچې که چرې زهٔ راشمه او تاسونه اونه مومه کويا چې هغې دنبي را الله وصال ط نی ته اشاره کوله، نوهغوی 湖 ارشاداوفرمائیلوکه زهٔ نه ووم نوتهٔ ابوبکرته ورشه.._ ددې روايت نه دحضرت ابوبکر صديق اللي خلافت باندې په واضحه ټوګه دلالت کيږي ـ

۵ دحضرت عبدالله بن عمر گاهاند مروی دی:

ىكنادخيرين الناس في زمن النبى صلى الله عليه وسلم، فنخير ابابكر، ثم عبرابن الخطاب، ثم عثمان بن عفان رض الله عنهم،، _ (`)

عفان تَعَلَّمُ لره گرخولو،،۔

دغه شان ددې حديث ديو بل طريق الفاظ دى : ,, كتالى زمن النبى صلى الله عليه وسلم الانعدل بابي بكراحدا، ثم عير، ثم عثمان، ثم نترك اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم لانفاضل بينهم، . 🌣

یعنی " مونریه دحضور ناش په زمانه کښي هیڅ څوک دحضرت ابوبکرسره نه برابرول. بیا دعمر درجه وه بیا دعثمان،بیا دنوروحضراتو صحابه په مینځ کښې به مو مفاضلت معامله

دا روايت هم ددي حضراتو دترتيب افضليت اوبيا ترتيب احقيت بالخلاقت باندي صريح ګويا دی.

- @_حضرت عمر الأثني فرمائي: ,, ابويكم سيدنا وخيرنا واحبنا ال رسول الله صلى عليه وسلم، ، _ (ً ، يعنى " ابوبكرزمونږ سردار. په مونږ ټولوكښې دټولونه افضل او حضوراكرم ﷺ ته دټولونه محبوب وو ، ، _
- ۵ـ دحضرت ابوموسى اشعرى الله نه روايت دى : ,, مرض النبى صلى الله عليه وسلم، فاشتده مرضه، فقال: مروا ابابكي فليصل بالناس، قالت عاتشه: انه رجل رقيق، اذا قام مقامك لم يستطاع ان

بقيه حاشيه د تبرمخ] رقم (۳۶۵۹)،و(ج٢ص١٠٧) كتاب العكام،باب الاستخلاف،رقم (٧٢٢٠)،و (ج٢ص١٤٠٤) كتاب الاعتصام بالكتاب والسنة باب الاحكام التي تعرف بالدلائل وكيف معنى الدلالة وتفسيرها؟. رقم (٧٣٤٠)، وصحيح مسلم كتاب فضائل الصحابة باب من فضائل ابى بكرالصديق رضى الله عنه.رقم (۱۷۹عُو ۶۱۸۰ع)_

) صحيح البخاري (ج ١ص/٥١٤) كتاب فضائل اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم. باب فضل ابي بكربعد النبي صلى الله عليه وسلم. رقم (٣٤٥٥)_ ً) صحيح البخاري (ج\ص\٥١٤) كتاب فضائل اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم. باب مناقب عثمان بن

عفان ابی عمروالقریشی رختی الله عنه، رقم (۳۶۹۷)_

) جامع الترمذي. أبواب المناقب. باب مناقب ابن بكرصديق رضى الله عنه. رفم (٣٤٥٠) _

يصلى بالناس، قال مردا ابابكى فليصل بالناس، فعادت، فقال: مرى ابابكى فيصل بالناس، فانكن صواحي يوسف، فاتا الرسول، فصلى بالناس في حياة النبى صلى الله عليه وسلم، ، _ (`)

يعنى .. دحضوراكرم نظم به مرض كښې چې كله شدت پيدا شو نوهغوى اوفرمائيل چې يعنى .. دحضوراكرم نظم په مرض كښې چې كله شدت پيدا شو نوهغوى اوفرمائيل چې ابوبكرته اوائي چې هغه مونځ وركړى. حضرت عائشه عرض اوكړو چې هغه نرم دل سړې دې، ستاسويه ځانې باندې چې اورديدريږى نو مونځ به اونه كړې شى، نوهغوى اوفرمائيل چې اوبوبكر ته اوائي چې مونځ وركړى حضرت عائشه بياخپلام دښره دوباره كړه. هغوى اوفرمائيل چې ابوبكرته اوائي چې مونځ وركړى اوتاسوديوسف اليميم دښځوپشان ئې، قاصد ابوبكر ته ورغلواوهغوى دحضوراكرم اليميم ژوند كښې خلقوته مونځ وركړى.

. د. او ایت دحضرت ابوموسی اشعری گانتی نه علاوه دحضرت عائشه ۱٫۰ دحضرت عبدالله بن مسعود را دحضرت عبدالله بن عباس ۴۰ دحضرت عبدالله بن عمر ۴۰ دحضرت عبدالله بن مسعود ۲۰ دحضرت عبدالله بن عباس ۴۰ دحضرت عبدالله بن عمر ۴۰ دحضرت عبدالله بن

زمعه ﴿ اودحضرت على بن ابى طالب ﴿ ۗ ثُوَلَيْمٌ نه هم مروى دى _ نوحافظ سيوطى ﷺ فرمائى چى دا حديث متواتردى _ ^ _

🕰 دحضرت ابوسعید خدری 🖏 وایت دی :

, خطب النيى صلى الله عليه وسلم، فقال: ان الله خيرعبدا بين الدنيا وبين ما عندى، فاختار ما عندالله، فم الله، فمل البويك التي المنافقة فيك ابويك التي المنافقة ومالله ابويكم، ولوكنت متخذا عليه المنافقة ال

أ) صحيح البخارى (ج ١ ص ٩٣) كتاب الاذان،باب اهل العلم والفضل احق بالامامة. رقم (٤٧٨)،و
 (ج ١ ص ٤٧٩) كتاب احاديث الانبياء باب قول الله تعالى (لقد كان في يوسف واخوته آيات للسائلين)،وقم
 (٨ ٢٣٨). وصحيح مسلم، كتاب الصلاة،باب استخلاف الاماموتم (٨٤٨).
 (٨ ٥ حد السائل حد ١ حد ١ الاذار المسلم المسلم

^{ً)} صحيح البخاري (ج أص٩٣) كتاب الاذان باب اهل العلم والفضل أحق بالامامة. رقم (٤٧٩)_ ً) التمهيد (ج٢٢ص١٦١)_

⁾ مسنداحمد (ج ۱ص ۱۳۲۰ ۲۳۳)، رقم (۲۰۵۵)،و(ج ۱ص۳۵۶) مسندعبدالله بن عباس،وقم (۳۳۵۵)_ () صحيح البخاري (ج ۱ص۹۳) كتاب الاذان،باب اهل العلم والفضل احق بالامامة. وقم (۶۸۲)_

رُّ) مسند احمد (ج 4ص ۳۲۲) مسند عبدالله بن زمعة. رقم (۱۹۱۱۳)__

لاستيعاب بها مش الاصابة (ج٢ص ٢٥١). والتمهيد (ج٢٢ص ٢٩١)_

و (ج ۱ ص ۱۹۶۵) كتاب فضآئل اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم. باب قول النبي صَلى الله عليه وسلم: سدو ۱ الابواب الا باب ابي بكر. رقم (۳۶۵۲)،و(ج ۱ ص ۵۵۲) كتاب مناقب الانصار،باب هجرة النبي صلى الله عليه وسلم واصحابه الى المدينة.رقم (۴۹۰۲، وصحيح مسلم. كتاب فضائل الصحابة.باب من فضائل ابي بكرالصديق رضى الله عنه. رقم (۲۷۰۶ و ۴۷۷).

باخودنیا کښې پاتې کیدل خوښ کړه یا څه چې ماسره دي هغه اختیار کړه _ نوهغه بنده الله تعالى سره چې څه دې هغه ئې اختيار كړه، دې آوريدلوسره حضرت ابوبكر په جړا شو. هغوي اوفرمانيل أے ابوبكر امه جاره ااو وي فرمانيل كه چرې ماڅوك خليل جو ولو نوابوبكر به مي جوړکړې وو، البته اسلامي اخوت اواسلامي مودت کافي دې. جمات طرف ته دکهولاودو هره دروازه دې بنده کړې شي. او دابوبکر دروازه مستثنی ده. . ـ

علامه سیوطی کیلیے فرمائی چې په دې حدیث کښې دحضرت ابوبکر صدیق النیخ خلافت طرف ته اشاره ده ـ 🖒

دلته دا اشکال کیدې شي چې په مسند احمد کښې دحضرت سعدبن ابي وقاص ﴿ تُو حدیث دى ,, امر دسول الله صلى الله عليه وسلم بسده الابواب الشارعة في البسجد وترك بأب على . . . أي عني . . حضّوراکرم ﷺ حکم اوکړو چې دجمات طرف ته کومې دروازې دی هغه دې بندې کړې شّی البته دحضرت على دروازه دې پريخودې شي٠٠ـ

ددې يوجواب خودا دې چې په مسند احمد کښې دا روايت دصحيحينودروايت متعارض ديّ، بِهَ كُومُ كَنبَى جِيٍّ ٱلسَّتْثَناء صرف دحضرتُ ابوبَكّر صديق فَيْتُو دَبَّارَهُ شُوي دد. بيأ دمسنداحمد والاروايت ,, حجاج عن فطر. عن عهدالله بن شريك، عن عبدالله بن الرقيم الكتان.. په طريق سره مروى دى، داروايت دصحيحينود روايت معارضه نه شي كولي. خكه چې فطرين خليفه شيعي دې ري ري عبدالله بن شريك عامري هم شيعي دې ري اوعبدالله بن الرقيم مجهول دی _ (۵)

او که صحیح هم وی نوبیا هم ونیلی کیدی شی چی دحضرت علی ای پائو په باره کښې هغوی په شروع شروع كبني أرشاد فرمائيلي دي، اودحضرت ابوبكرصديق التؤيه باره كنبي بالكل په

آخره كښى كړې وو_ والله اعلم_

او فرمانيل . . تاتيل وفيكم ثالث ثلاثة، يعنى ابايكم، فقلت لمحمد : من الثالث ثلاثة ؟ قال: قول الله : رثانی اثنین اذحهافی الغار)،،۔ 🖔

⁾ تاريخ الخلفاء (ص ٥٤)_

⁾ مسند احمد (ج اص ۱۷۵) مسند ابی اسحاق سعد بن ابی وقاص رضی الله عنه، رقم (۱۵۱۱)_

[]] شيعى جلد. انظر الكاشف (ج٢ص١٢٥) رقم (١٩٤٤) _) ذكره ابن حبان في المجروحين _ فقال : ••كان غالبا في التشيع. يروى عن الاثبات مالايشبه حديث

الثقات. فالتنكب عن حديثه أولى من الاحتجاج به. وقد كان مع ذلك مختاريا(أي من اصحاب المختار).._ انظر تعليقات الكمال (ج١٥ ص٨٩)_

لمِ تهذيب الكمال (ج ٤ ١ص٥٠٥و٥٠٥)_ ") المصنف لابن ابي شيبة (ج٧ص٣٣٤ و ٤٣٤) كتاب المغازي باب ماجاء في خلافة ابي بكررضي الله عنه

وسِيرته في الردة. رقم (٤٠٠)_

يعنى .. تاسومالره راروان ئى اوپه تاسوكنبى په دريوكنبى دريم سړې موجود دى ؟ مراد ابوبكردې، ما دمحمد نه تپوس اوكړو چې دا دريم سړې څوک دې ؟ اوفرمائيل ئى چې دالله تعالى ارشاد دې .. په دوو كنبى دويم، كله چې هغه دواړه په غار كښې وو ، ٠ ـ

- حضرت عبدالله بن مسعود ناش فرمائى ...

., اجعلوا امامكم خيركم، فان رسول الله صلى الله عليه وسلم جعل امامنا خيرنا بعد ١٤، ، _ (')

يعنى .. خپل امام هغه سړې جوړکړئ کوم چې په تاسوټولوکښې بهتروى ، ځکه چې رسول الله 📸 دخپل ځان نه پس زمونږ امّام هغه سړې جوړ کړو کوم چې په مونږ ټولوکښې دټولو نه

او حضرت عبدالله بن مسعود الشيخ فرمائي : ,, ماداي المسلمون حسنا فهوعند الله حسن، وما

رادا سيئاقهوعندالله سيح، وقدراى اصحابه جبيعان يستخلف ابابكر، ، _ (أ) یعنی ، چی کوم څیزلره مسلمانان بهتر اوګنړی نوهغه بهټردې اوکوم څیز لره چې مسلمانان بدتراوګنړی هغه بدتردې اوهغوی 治 نولوصحابه کراموحضرت ابوبکرلره خلیفه جورلودياره بهتراوګنرلو،،[·]

の上 دحضرت على 機能 نه دحضرات شيخينو 機能 په باره کښي تپوس اوکړي شونوهغه اوفرمائيل:

, كاناامامى هدى، داشدىن مرشدىن مصلحين منجعين خرجامن الدنيا خبيصين، ، _ ()

يُعنى ,, دا دواړه حضرات دهدايت امامان او رهنماوو، مصلح وو، په مقاصدو دخيرکښې كامياب اوكامران وو، ددنيانه اومحي تړې رخصت شوي وو، يعني طمع اولالې يې خپل خان تەنزدى پرىنەخودل،،_

دحضرت على الثن ارشاد دى:

,, ان الله جعل ابايكر وعبر حجة على من بعدهما من الولاة الى يوم القيامة، فسهقا والله سهقا بعيدا، واتعها والله من بعدهما اتعابا شديدا

تعجب اومشقت كُنبي واچول، ._

و. دحضرت على المنظور و طويل اثردي، په كوم كښي چې هغوى ډيرپه واضحه ټو ګه باندې د حضرات شيخينو منقبت بيان فرمانيلوسره د هغوى داحق بالخلافت كيدو ذكر فرمانيلي دي.

 ⁾ الاستيعاب بهامش الاصابة (ج٢ص ٢٥١). والتمهيد (ج٢٢ص ١٣١) _

⁾ المستدرك للحاكم (ج٣ص٧٨). كتاب معرفة الصحابة _) طبقات ابن سعد (ج٣ص٢١٠) _

أ) اسد الغابة (ج ٤ ص١٥٧) ترجمة عمرالفاروق رضى الله عنه _

مكان، فصلى بالناس سبعة ايام في صياة معيه وسبم الوفاة قال: مرد اابا كمان يصلى بالناس، وهيرى مكان، فصلى بالناس سبعة ايام في حياة وسول الله صلى الله عليه وسلم، فلما قبض الله دبيه ارتد الناس عن الإسلام، فقال: نصلى ولا نعطى الزكاة، فرضى اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم الله الإيكم منفي دابرايه، في الإسلام، فقال: والله، لومنعول عقالا مافي في الله ورسوله لجاهدتهم عليه، كما اجاهدهم على السلاة فاعطى السلمون البيعة طاتعين، فكان اول ماسهتى في ذلك من ولد عهد البطلب ادا، فبضى بحيث و ترك اللهنيا وهي مقبلة، فضرم منها سليها، فسار فينا بسيرة رسول الله صلى الله عليه وسلم، لانتكم من امرة شيئا، اللهنيا وهي معتبرة الوفاة، في اى عمر اقوى عليها ولوكات محاباة لاثريها ولدة، واستشار البسلميين في ذلك، فبتهم من كرة، وقالوا: الثوم عليها ولوكات محاباة لاثريها ولدة، واستشار البسلميين في ذلك، فبتهم من رضى ومنهم من كرة، وقالوا: الثوم عليها المرت عليهم خير اهلك، فامرعلينا عبر، ققام فينا بامرصاحبيه، لاتكم منه شيئا، نعرف فيه الريادة كل يوم في الدين والدنيا وفتح الله به الارضين، ومصر به الإمصاد، لاتكم منه شيئا، نعرف فيه الريادة كل يوم في الدين والدنيا وفتح الله به الارضين، ومصر به الإمصاد، كانظن إن السكينة تنطق على لسانه، وإن مملك بين عينيه يسده ويوققه الحديث إلى المنائلة وقله، حتى ال

يعني. كله چې دحضور اكرم 微 دوصال وخت راغللونوهغوى ارشاد اوفرمانيلوچې ابوبگرته اوانی چې هغه خلقوته مونځ ورکړی حالانکه حضوراکرم ﷺ ته زماً دموجودګې اودقرب خاص علم وو . نوهغوی دحضوراکرم نظم په ژوند کښې اوو ورځوپورې مونځونه اوكره بيا كله چِي الله تعالى خيِلَ نبى خيلً خانَ ته اوبللو نوعه خلق مرَتَد شُولَ. ٱوونيل به نِّي چې مونږيه مونځونه کووڅورکوه به نه ورکوو. ټول صحابه کرام راځي شو. ليکن آبوبکر يوآخي به خپله راي باندې کلک ولاړ وو. بلکه دنورو دراې په مقابله کښي ئي خپله راي برتر ثابته كره او أوفر مانيل ني: به الله قسم اكه چرې داخلق ماته ديورسي راكولونه هم انكار اُوکړی کومَّد چې الله اورسول په هغوی باندې لازمَّه کړی وی نوزهٔ به دهغې په وجه باندې هغوى سره جهاد كومه، څنګه چې دمونځ دپاره جهاد لارم وي ـ نوټولومسلمانانو دهغوى په لاس باندې په خوشحالي سره بيعت او كړو، په دې سلسله كښې زه دعبدالمطلب په اولاد کښې د ټولونه ړومنې يم، ابوبکر- دالله تعالى رحمتونه دى په هغه باندې دې نازل وي - کوړو اودنيا ئيّ پَد دْيّ حَالَت كُنبّي پِرْيخودله چيّ دنيا دهغويّ طرف ته روړّاندي كيدلّه. ليكنّ هغوی ددنیا نه خپل خان بنج کړو اولاړه.په موږ کښې هغه دحضوراکرم کی په سیرت اوطريقه مطابق روان وو . نومونږ دهغوي يوه معامله لره كوټه اونه موندله. تردې پورې چې دهغوی دوفات وخت راغللو. هغوی آوکتلِ چی دخلافت دیاره عمرډیر مضبوط دې که صرف دپرزوښ آراده نې وه نو خپل اولاد کښې به نې چاله ترجيح ورکړې وه خو هغوی مسلمانانو سَرَهُ مشوره أوكره بعضيّ راضَى شولَ أو بعضيّ خيلٌ خفَكَانَ سِكَّاره كروّ أو وتّي

^{ً)} اسد الغاية (ج ٤ص١٥۶و١٥٧)_

وبيل چې تاسو په مونږ باندې يو داسې سړې امير جووړول غواړ ئي چې ستاسو په ژوند کښم ني تأسو د خپلې رانې نه اړولي، آلله ته په مخامخ کيدو سره به څه جواب ورکوي؟ هغوی ورته ې د سو د سپې رسې د پودې ... د په اې الله اما په مسلمانانو باندې ستا په بندګانو کښې د او فرمانيل چې څه به عرض او کړم چې اې الله اما په مسلمانانو باندې حضرت عمر گاتو امير جوړ ټولو نه بهټر کس مقرر کړې دې، دغه شان هغوی په مونږ باندې حکومت او کړو . يو خبره قابل د کړو هغوی د مخکښې د واړو ملګرو په شان په مونږ باندې حکومت او کړو . يو خبره قابل د اعْتَراضَ نَهُ وِهُ رَوْزَانُهُ بِهُ دَيْنِي او دَنْيَاوَى تَرْقَى شُرُوعَ وهُ اللَّهُ تَعَالَى دَ هَغُهُ بِهُ لَاسُونُو بِالذَّي ملکونه فتح کړل ښارونه ئي آباد کړل هغوی ته به د چا د ملامتگر د ملامتيا ويره نه وه عدل و انصاف کښې په لري او نزدې يو شان وو .الله تعالى د هغوى په زړه او ژبه باندې حق

🕝 دحضرت على اللَّيْ ارشاد دي: ان اول من يدخل الجنة من هذه الامة ابوبكم وعمر، قال: ققال

رجل: يا امير الهومنين، يدخلانها قبلك؟ قال: والذي فلق الحبة وبراالنسمة ليدخلانها قبلي ويشبعان من

ثهارها، وليرويان من مائها واني لهوقوف مع معادية في الحساب ﴿ ﴿ ﴾ يعني په دې امت کښې د ټولو نه مخکښې جنت ته داخليدو والاابوبکر او عمر ﷺ به وي يو

كس عرض اوكرو اي آمير المومنين. آيا هغوي دواړه به ستاسو نه هم مخكښي داخليږي؟ وئي فرمائيل او!د هغه ذات قسم چاچي دانه اوشلوله او زنده سر ئي پيدا کړل،هغوي دواړه به ځما نه مخکښي جنت ته داخليږي د هغه ځائي د ميوو نه به مړيږي او د اوبو نه به تنده ختمووي. او ځه به اميرمعاويه سره به په حساب کتاب کښي ولاړيم 🕜 د حضرت على الله ارشاد دى ٠

سبق رسول الله نوين وصلى ابويكروثلث عبوثم خبطتنا او اصابتنا فتنة فهاشاء الله عزوجل (٢)

يعني حضورپاک نائل د ټولو نه اول دويم نمبر ابوبکر اللي او دريم نمبر حضرت عمر اللي وو. او بيا دينه پس مونږ فتنو او نيولو٠

⊙ عن ابى الزناد قال: قال رجل لعلى: يا امير المومنين ما بال المهاجرين والانصار قدموا بابكي وانت او في منه منقبة واقدام منه سلما واسبق سابقة كال: ان كنت قرشيا فحسبك من عائدة قال: نعم قال لولاان المومن عائذ الله لقتلتك ولئن بقيت لتاتينك منى روعة حصرا ويحك! أن إبابكر سبقنى إلى اربح سبقنى ال الامامة، وتقديم الامامة و تقديم الهجرة والى الغار وافشاء الاسلام ويحك أن الله ذمر التاس كلهم و مداح ابابكي فقال: الاتنصروة فقد نصرة الله رس

^{&#}x27;) كتاب الكنى والاسماء للدولابي (١٩/١ او ١٢٠)-

⁾ مسند احمد (۱۲۵/۱)رقم (۱۰۲۰) و (۱۲۷۸) رقم (۱۲۵۶) و (۱۲۵۹)-

⁾ كنزالاعمال (۱۲٪ ۵۱۴) رقم (۳۵۶۷۶)-

يعنى بو كس د حضرت على ثلثت نه تپوس اوكړو چې دا څه خبر د دد چې انصارو او مهاجرينو ابوکر ثاثر مخكنبې كړو حالانكه تاسو د هغوى په مقابله كښې د اوچتر مناقبو جوګه په اسلام راوړلو كښې د هغوى نه دغځنبې او په كارنامو كښې د هغوى نه زيات هم يى ؟هغوى ورته اوفرمانيل كه ته چرې قريشى نې نو ستا تعلق به عانذه سره وى. هغه خرض اوكړو چې او، ونې فرمانيل كه چرې ايمان والاد الله پناه نه وه اخستې نو ما به ته قتل كړې وې او كه ته ژوندې پاتې شوې نو خما طرف نه به په تا باندې د سختې ويرې معامله رازى. هلاك شي ابويكر ثابر خما نه څلور څيزونو كښې مخكښې دې امامت كښې. هجرت كښې. په غار كښې پاتې كيدو د وجه او د اسلام په خورولو كښې، او هلاك شي الله تعالى د ټولو خلقو مذه سيان كړې دې او د ابوبكر ثابري ني تعريف كړې دې او ونې فرمانيل كه چرې ته د ابوبكر مدد نه كړې دې او ونې فرمانيل كه چرې ته د ابوبكر مدد نه كړې دې او الله تعالى د هغوى مدد او بكې

صلة بن زفر كين فرمائى كان على اذا ذكر عنده ابويكم قال: السباق يذكرون! السباق يذكرون! والسباق يذكرون! والذي نفس يده ما استبقنا الدير قط الاسبقنا اليه ابويكر ()

يعني هر کله چې به د حضرت علی ژاننځ په وړاندې د حضرت ابوبکر ژاننځ ذکر کيدلې شو نو وئيل به نې چې د ټولو نه مخکښې تللو والاذکر شروع دې.په هغه ذات مې دې قسم وی چې د چا په قبضه کښې ځما ساه ده چې هر کله به يو نيک کار کښې ځمونږ مقابله کيدله نو ابوپکر ژاننځ به هميشه ځمونږ نه مخکښې والې کولو

حضرت على التي ارشاد فرمائي

القدام رئا النبي ﷺ ابابكران يصلى بالناس وان لشاهد وما انا بغائب وما بى مرض فرضينا لدنيانا ما رض بعالنبي ﷺ لديننا "رًى

يعني حضورياک و که خلقو ته د جمع ورکولو حکم ابوبکر صديق ته اوکړو نو زه هم هني حضورياک و کې کله خلقو ته د جمع ورکولو حکم ابوبکر صديق ته اوکړو نو زه هم هلته کښي حاضر ووم غانب نه ووم، زه بيمار هم نه ووم، هغوی چې زمونږ ډين د پاره کوم کس مقرر کړو هغه مونږ د خپلې دنيا د پاره هم خوښ کړو

د حضرت على تأثير نه منقول دى. ان اكرم الخلق من هذه الامة على الله بعد نبيها وارفعهم درجة: ابويكر، لجمعه القران بعدر رسول الله تؤثير وقيامه بدين الله مع قديم سوابقه وفضائله ركم.

درچه: ابه کم، لجیعه القران بعدار سول الله ترجه و سیامت المحالی الله تعالی به تعدید ترین یعنی د د الله تعالی په نیز باندې د حضورپاک تاکل نه پس ددې الله د درجه په اعتبار سره د ټولو نه اوچت ابوبکر صدیق تاک دې ځکه چې هغوی د حضورپاک تاکل نه پس قران جمع کړو د الله د دین حفاظت ئې او کړو او ددې نه علاوه نور فضائل او کارنامي ئي هم دی

⁾ كنزالاعمال (١٢/٤/١٤) رقم (٣٥٤٧٥)-

⁾ كنزالعمال (١٢٥١٣) رقم (٢٥٤٧٠) وانظر الطبقات البن عد(٨٣/٣)--

[&]quot;) كنزالاعمال (۵۱۶/۱۲) رقم (۳۵۶۸۳)-

حضرت اسيدبن صفوان والمسترية فرمانى الماتق ابوبكر سجوة ثوبا، وارتجت المدينة بالهكاء ودهش الناس كيوم قبض رسول الله والماعلي بن إلى طالب مسهما باكيا مسترجعا وهويقول اليوم انقطعت خلاقة الناس كيوم قبض رسول الله والمنابق البوبكر، ثم قال: رحمك الله ابابكر، كنت اول القوم اسلاما واغلمهم ايمانا واكثرهم يقينا واعظهم غنى واحدبهم على الاسلام، واحوطهم على رسول الله والمنابق وامنهم على المسابة احسنهم صحبة واعظهم مناقب واكثرهم سوابق وارفعهم درجة اقربهم من رسول الله والمنابق الشبههم به هديا وستا وخلقا ودلاواش فهم منزلة واكرمهم عليه وادقتهم عندن ()

یعنی هر کله چی ابوبکرصدیق گاتو وفات شو نو هغه باندی یو کپرا واچولی شوه به مدینه کنیی عوغا شوه په خلقو داسی حالت جوړ شو څنګه چی د حضورپاک تالاه و وفات په موقع باندی وو په دغه وخت کنیی حضرت علی گاتو په تیزئی سره انا لله وئیلو سره او په ژړا رالو او دا په نی وئیل چی نن نبوت والاخلافت ختم شو تردی چی د کور دروازی سره او دیدو او وئی فرمائیل الله دی په تا باندی ای ابوبکر رحمتونه نازل کړی تاسو د ټولو نه مخکښی اسلام راوړلو والا، په ایمان کښی د ټولو نه مخکښی اسلام راوړلو والا، په ایمان کښی د ټولو نه استغناء کښی د ټولو نه او الله تالاه د پاره د ټولو نه زیات مهربانه، د رسول الله تالاه د پاره د ټولو نه زیات محسان کولو والا، د ملگیرتیا په اعتبار سره د ټولو نه اولاه د ملگیرتیا په اعتبار سره د ټولو نه اعلی، د مناقب په اعتبار سره اوچت، په فضائل کښی د ټولو نه زیات اله به درجه کښی اوچت، حضورپاک تالام ته د ټولو نه اشرف او د حضورپاک تالام په نیزدی، طریقه کار، اخلاق او عادت په اعتبار سره تاسو د هغوی مشابه، په درجه کښی د ټولو نه اشرف او د حضورپاک تالام پیزولو نه اثرلو نه عزتمند او اعتباری وی

عنعبد خیرقال: سبعته یقول: قام على الله المنبر قدر كى رسول الله ققال: قبض رسول الله واستخلف ابويكى الله عند فعمل بعد الله عند الله عند فعمل بعد الله عند فعمل بعد فعمل والله والله عند فعمل والله والله والله الله عند فعمل والله و

يعنى حضرت على الله په منبر باندې تشريف فرما شو او د حضورپاک الله ذكر نې اوكړو، وئې فرمائيل چې د حضورپاک الله وفات اوشو نو ابوبكر صديق الله خليفه جوړ شو،هغوى هم د حضورپاک الله په عمل او سيرت باندې روان وو، تر دې چې الله تعالى هغوى خپل خان ته راوغوښتل، بيا حضرت عمر الله خليفه جوړ شو هغوى هم د مخكښې دواړو په عمل او سيرت باندې عمل ساتلو تر دې چې هغوى هم وفات شول

⁾ كنزالاعمال (۵٤٢،٥٤٣/١٢)-

^{&#}x27;) مستند احدد (۱۲۸/۱) مسند علی نگانت رقم(۱۰۵۵) و (۱۰۵۹)-

فاقام واستقام، ثم استخلف عبر، وحبة الله على عبر، فاقام واستقام، حتى ضرب الدين بجرائه: ١٠

یعنی حضوریاک هم د امارت په سلسله کبی مونز ته څه حکم نه وو کړې چې مونز په هغې باندې چلیدلې وې البته دا معامله مونز په خپلې رانې سره حل کړه بیا ابویکر خلیفه شو الله دې په ابویکر ناتل رحمت نازل کړی په خپله هم صحیح وو او نور نې هم صحیح کړل، بیا حضرت عمر ناتلئ خلیفه شو الله تعالی دې په عمر ناتل باندې هم رحمت نازل کړی هغوی هم په استقامت باندې روان وو او نور نې هم روان کړل تر دې چې دین مکمل توګه باندې پوخ شو

محمد بن حنفيه مُنتئي فرمائى: قلت لإن: اى الناس خير بعد رسول الله ؟ قال ابويكر: قلت ثم من؟ قال عمر وغشيت ان يقول عثمان قلت: ثم انت؟ قال: ما اذا الارجل من المسلمين ٢٠٠٠)

يعنى مَا خَپل پَلَّار نَه تپوس اوكړو چې د رسول الله که نه پس څوک د ټولو نه افضل دې؟ ونې فرمانيل ابوبكر، ما تپوس اوكړو چې بيا څوک؟ ونې فرمانيل عمر ، دې نه پس ماته ويره اوشوه چې د عثمان گنځ نوم به اخلى ځكه ما ترې نه تپوس اوكړو چې بيا تاسو يئ؟ ونې فرمانيل چې څه خو په عام مسلمانو كښې يو مسلمان يم

په دې روايت کښې حضرت علي الله د شيخينو په ښکاره سره افضليت بيان کړې دې

حضرت شاه ولى التُعِينة فرمائي جي:

اما بیان افضایت شیخین، پس آزوی متواتر شده مرفوعا وموقوفا، هر چند این مسئله مذهب جمیع اهل حق است اما کسی از صحابه آن را مصرح تردمحکم ترچون علی مرتضی ناه ددنا

مطلب دادې چې د شيخينو افضليت د حضرت على الله نه متواتر ثابت دې اګرچې د شيخينو افضليت د ټولو اهل حق مذهب دې خو بيا هم په صحابو کښې دا مسئله د حضرت على الله يه شان په وضاحت او مضبوطئ سره چا بيان کړې نه ده

دغه شأن د حضرت على المائز نددا روايت نقل كوونكو كنبي ددوى خوى محمد بن الحنفيه نه علاوه عبدالله بن سلمه ألم علقمه بن قيس أله عبدخير ألى حضرت ابوجعيفه النزال بن سبره ألم المنظم وغيره ډير حضرات دى

حضرت على الله تدچى كله دا معلومه شوه چى بعضى خلق ده لره د شيخينو نه افضل

⁾ مسنداحمد(۱٤/۱) مسند على نَكَاثَمُ وقع (٩٢١)-

^{ً)} صعيع البخاري(٥١٨/١) كتاب الفضائل اصحاب النبي تَلَيَّمُ باب (بدون ترجمة بعد باب قول النبي تَلَيَّمُ ا لو كنت متخذا خليلا) رقم (٣۶٧١)_

أ) ازالة الخفاء عن خُلافة ألخلفاء مترجم(١/٢٥٤)-

أ) سنن ابن ماجه المقدمة باب في فضائل اصحاب النبي تَلْ في فضل عمر تَلَاثُمُ وقم (١٠٤)-

⁾ رواه احمد انظر ازالة الخفاء(۲۵۶/۱)- ـ

^م) مسند احمد(۱۱۳/۱) رقم(۹۰۸و ۹۰۹)-^۷) مسند احمد(۱۰۶/۱) رقم(۸۲۳)-

⁾ مستعمل (۱۹۷۷) (معر ۱۸۱۱) ^) الاستيعاب بهامش الاصابة (۲۵۲/۲) ترجعة سيدنا ابى بكر الصديق تفكمتر)-

کنړي نو په منبر باندې او دريدو او حمد وثنا نه پس ئې اوفرمائيل

ايها الناس انه بلغنى ان توما يفضلون على ابوبكي وعبر، ولو كنت تقدمت فيه لعاتبت فيه فين سبعته بعد هذا اليوم يقول هذا فهو مفتر عليه حد البفتري ثم قال: ان خير هذا الامة بعد نبيها ابوبكي ثم عبرثم الله تعال اعلن الغد بسبعة المعالم عدد المعالم عليه معتمان في المعالم المعالم عليه الثالث لسب عثبان في المعالم المعالم ال

اعلمهالنځور بعد قال: وفي البجلس العسن بهن مقال: والله، لوسبى الثالث لسبى عثبان ''، يعنى 'اې خلقو ماته دا خبره رارسيدلى ده چې څه خلق ماله په ابوبكر او عمر الله باندې فضيلت راكوى كه مخكښې نه خما د طرف نه تنبيه شوې وه نو ما به داسې خلقو ته سزا وركړې وه، د نن نه پس چې د چا نه ما دا واوريدل نو پوه دې شي چې دې الزام لكوونكې دې، ده باندې به د الزام لكولو حد لكى، بيا نې اوفرمانيل چې د نبى نه پس په دې اهت كښې دې ټولو نه بهترين ابوبكر دې بيا عمر دې دې نه پس ده چې څوك افضل دې په دې مجلس كښې حسن هم وو، ونې فرمانيل كه د دريم نوم نې اخستلې وې نو د عثمان نوم به نې اخستلې وې نو د عثمان نوم به نې اخستلو .

يعنى حضرت على المختوس اوكړې شو چې تاسو به څوک زمونږ د پاره خليفه مقرر كړې وو نو وئي فرمائيل چې حضورپاک گل څوک خوښ كړې نه وو نو بيا زه ولې خوښ كړم البته كه الله تعالى انسانانو سره د خير فيصله كړې وى نو ځما نه پس چې څوک بهتر وى الله تعالى به خلقو لره په هغه باندې جمع كړى څنګه چې الله تعالى د خپل نبى گل نه پس په يو بهترين كس باندې دوى جمع كړې وو

صحیح بخاری کینی د حضرت ابن عباس ﷺ نه د حضرت علی او حضرت عباس ﷺ
 واقعه منقبل ده:

ان على بن إن طالب خرج من عند رسول الله تأثير في وجعه الذى توقى فيه، فاغن بيدة عباس بن عبدالبطلب فقال له: انت والله بعد ثلاث عبدالعصا والى والله لارى رسول الله تأثير سوف يتوقى من وجعه هذا الى لاعم ف وجوة يقى عبدالبطلب عندالبوت اذهب بنا الى رسول الله تأثير فلنساله فيمن هذا الامران كان فينا علمنا ذالك وان كان في غيرنا علمناة فاوص بنا فقال: على: انا والله لئن سالناها رسول الله تأثير فهنعناها لا يعطيناها الناس بعدة وال لااسالها رسول الله تأثير "ك،

⁾ ازالة الخفاء(1/177و 277)- ·

⁾ المستدرك للحاكم (٧٩/٣) كتاب معرفة الصحابة باب ابي بكر الصديق المُنْتُلُقُ)-

م صحيح البخاري(۶۳۹/۲) كتاب المغازي باب مرض النبي كُلِيَّمُ ووفاته رقم(٤٤٤) و(٩٢٧/٢) كتاب الاستيذان باب المعانقة وقول الرجل كيف اصبحت؟ رقم(۶۲۶۶)-

یخی حضرت علی تا د حضوریاک کا نه هغه وخت بهر اووتلو هر کله چې هغوی په مرض الوفات کښې وو ،حضرت عباس کا نه هغه لاس اونيولو او ونې ونيل چې په الله قسم ته به دې ورخې پس د عصا تابع شې ماته يقين دې چې د حضورياک کا په په دې مرض کښې وفات کيږي ماته د مرګ په وخت د بنوعبدالمطلب د مخونو پيژندل کيدل معلوم دى مونږ خان سره حضورياک کا ته به وخت د بنوعبدالمطلب د مخونو پيژندل کيدل معلوم دى مونږ ميلاويګي؟ که زمونږ طرف ته راتلونکي وى نو پته به اولګي او که ځمونږ طرف ته نه وى نو چه به اولګي او که ځمونږ طرف ته نه وى نو چه باله قسم که چرې مونږه حضورياک کا او خلافت اوفرماني حضرت على کا او انکار نې او کړلو نو بيا دا خلاق چې هم مونږ له به رانکړي، خه به حضور کا ها د نوس نه کوم

سقیفهٔ بنوساعده کښې د ابوبگر گاژئ په لاس باندې د خلافت بیعت: مناسب معلومیږی چې لږ تفصیل سره په سقیفه بنی ساعده کښې د انصارو را جمع کیدل او د حضرات شیخین گاژه هلته رسیدلو نه پس د حضرت ابوبکر گاژئ په رشتونی لاس باندې د خلافت د بیعت واقعه ذکر شی چې په هغې سره د استحقاق دخلافت دې بحث کښې کافی وضاحت کیږی

تشريف يورلو

د مانبام په وخت یو کس رالو او ابوبکر صدیق تانئ نه نی خبر ورکړو چې انصار حقیقه بني ساعده کښې جمع شوې دی او د سعد بن عباده تانئ په لاس باندې بیعت کول غواړی او بعضی انصار دا هموانی چې یو امیر ځمونر نه او یو د قریشو نه به وی

بعضي انصار دا هم واني چې يو امير ځمونړنه او يو د قريشو نه به وي . د انصارو خيال دا وو چې د خلافت حق غوښتل انصارو ته حاصل دې ځکه چې انصارو د دين مدد اوکړو او حضورپاک ته ئې ځان سره ايسار کړو او بيا دوی سره شول او د الله دشمنانو سره ني جهاد اوکړو، بعضې په کښې ددې مخالفت هم اوکړو او خپل مينځ کښې په نې خبرې واړولي.

و پړدې . هر کله چې ددې خبرې اطلاع شيخينو ته اوشوه نو دې دواړو بزرګانو ابوعبيده بن الجراح ځان سره کړو اوددې اختلاف د بندولود پاره سقيفه ته روان شول چې الله مه کړه څه فتنه پيدا نشی. کله چې دا دواړه هلته اورسيدل نو حضرت سعد گانځ اودريدلو او تقرير نې او کړلو:

اما بعد:فنحن الانصار وكتيبة الاسلام وانتم يا معثم قريش، رهط بينناً، وقد دفت الينا دافة من قومكم،فاذاهميريدونانيعصبوناالامرز ()

یعنی مونږ انصار د دین اسکام مددگاران یو او د اسلام لښکر یوو او تاسو اې د مهاجرینو ډلې په مونږ کښې یو وړه ډله یو پریعنی تاسو لږیئ او مونږه ډیر یوو، او ستاسو د قوم یو وړې ډلې ځمونږ سره پناه اخستې ده او اوس هغوی د خلافت حق ځمونږ نه په زور اخستل غواړی د یو روایت مطابق حضرت سعدبن عباده گاتو خپل تقریر کښې اوفرمانیل

يامعشر الانصار لكم سابقة في الدين وفضيلة في الاسلام، ليست لاحد من العرب، ان محمد تري المثنى قومه

⁾ الكامل لابن الاثير (٢٢١/٢) حديث السقيفة وخلافة ابي بكر رضي الله عنه وارضاه)-

به عشرة سنة، يدعوهم الى عهادة الرحمن دخلج الانداد والاوثان، فها آمن به الاقليل، ما كانويقدرون على منعه عشرة سنة، يدعوهم الى عهادة الرحمن دخلج الانداد والاوثان، فها آمن به الاقليل الكرامة، وخصكم بالنعبة، منعه ولا على المناسبة ولا مدالته، والاعزاز له ولدينه، والجهاد لا عدائه، فكنتم اشد الناس على عددة، حتى استقامت العرب لامرالله طوعاد كرها واعلى الهعيد البقادة صاغرا، قدانت لرسوله باسيافكم

العرب و تو اله الهو مومنکم دا فره مه تر العبده ابه نا الامردون الناس، فاته لکم آن يعنى اي د انصارو خلقو تاسو ته په دين کښې مخکښې والې حاصل دې او اسلام تاسو ته فضيلت در کړو چې عربو کښې چاته هم حاصل نه دې، محمد نظم په خپل قوم کښې د لسو کالو نه زيات پاتي شو، هغوى خلقو ته د الله تعالى د عبادت او د بتانو د پريښودلو دعوت ورکولو، په دوى باندې ايمان راوړلو والا ډير لږ وو، هغوى نه دحضورپاک نځم دفاع کولې شو، او نه ني يو ظلم لرې کولې شو، پس هر کله چې د الله تعالى اراده د هغوى د دين مدد کولې شو، او نه نه يو ظلم لرې کولې شو، پس هر کله چې د الله تعالى تاسو سره خاص کړو، تاسو ني په الله او رسول ايمان راوړلو والا د دوى او د اصحابو ني دفاع کولو والا د دوى او د اصحابو ني دفاع کولو والا د دوى او د دوى د دين مدد کولو والا او دشمنانو سره د جهاد کولو توفيق ني در کړو تاسو د هغوى په دشمنانو باندې د ټولو نه زيات سخت وني، تردې چې د ټول عرب، که خوبنه ثي وه او که نا، خو د الله تعالى حکم پورا کولو د پاره تيار شول، هغه کس چې تابعدار خوبنه ثي وه او که نا، خو د الله تعالى حکم پورا کولو د پاره تيار شول، هغه کس چې تابعدار سره د رسول الله ته تابعدار شو، د هغوى سترګې يخې ټول عرب ستاسو د تورې په زور سره د رسول الله ته تابعدار شو، د هغوى سترګې يخې وې، لهذا د خلافت دا معامله خپل لاس کښې واځل څکه چې دا ستاسو د پاره دې

حاضينو دا تقرير ډير خوښ کړو او هر طرف نه د ستاينې آوازونه او چت شول، تقرير نه پس په دې مسئله باندې بحث شروع شو او خپل مينځ کښې اوونيل که د قريشو مهاجرينو ددې نه انکار او کړو او دا ئې اوونيل چې مونږ هجرت کولو والايوو او اولني صحابه يوو چې په دوى باندې مو رومبې ايمان راوړو، او هم د هغه د قبيله او ډلې نه يوو، زمونږ حق زيات جوړيږي، نو داسې حالت کښې به څه کوئي؟ ا

په دې باندې بعضي صحابه کرامو اوفرمائيل چې مونږ به اووايو چې يو امير به زمونږ نه وي او يو امير به ستاسو نه وي،او داوړه اميران به په صلاح اومشوره سره د خلافت کار سر ته رسوي حضرت سعدبن عباده په اوريدو سره اوفرمائيل چې دا ړوميې کمزوري ده.

حصرت عمر گاژئ په دې موقع غوښتل چې څه اووانی او په زړه زړه کښې ئې د ویلو د پاره ډیر سوچ کړې وو،خو هر کله چې هغه پاسیدلو والاوو دغه وخت ابوبکر صدیق کاژئ پاسیدو او د الله تعالی حمدوثنا نه پس ئې اوفرمانیل

ان الله قدر بعث قينا رسولا الى خلقه وشهيدا على امته ليعبدو و ويوحدون وهم يعبدون من دونه آلهة شتى

١) الكامل لابن الكثير (٢٢٢/٢)-

من حجر وغشب، فعظم على العرب ان يتركوا دين آباتهم، فخص الله المهاجرين الاولين من قومه بتصديقه، والايمان به والمواسأة له و الصبر معه على شدة اذى قومهم وتكذيبهم اياه وكل الناس لهم مخالف زار عليهم فلم يستوحشو القلة عددهم وشنف الناس لهم فهم اول من عبدالله في هذاة الارض وآمن بالله وبالرسول، وهم ادنياؤه وعشيرته، واحق النأس بهذا الامرمن بعده لا ينازعهم الاظالم انتم يا معشر الانصار من لا ينكر فضلهم في الدين ولا سابقتهم في الاسلام رضيكم الله انصار لدينه، ورسوله وجعل اليكم هجرته، وقيكم جلة إزواجه واصحابه، فليس بعدالمهاجرين عندنا بمنزلتكم فنحن الامراء وانتم الوزياء لا تفاوتون بمشورة ولا تقض دونكم الامور (١)

يعني الله تعالى په مونږ كښې دخپل مخلوق د پاره رسول شهيد او ګواه راوليګو،چې خلق د الدتعالى عبادت اوكړي او د هغه توحيد اختيار كړي،چې په دغه وخت كښې ددوي دا حالت وو چې د مختلف کانړو او لرګي جوړ شوې خدايانو عبادت ئې کولو، د عرب خلقو ته د خپل بِلَّارْ نَيْكُهُ دِين پِريښودل كران شُو نُوْ دغه وخت كښي الله تعالَى ددوى تصديق د پاره اولني مهاجرین خوښ کړل چې هغوی په دوی باندې ایمان راوړلو ،په غم کښې ورسره شریک شول. ورسره کلک اودریدل چې کوم وخت د خپل قوم نه ورته سخت تکلیفونه ورپیښ وو،هغوی دُوّي نه منلو،هر سُړې مُخَالفُ وُو،خو دا خُلقٌ په تُعداد کښې د کموالي باوجود په ويره کښې او نه غورزيدل،حالاتكه كفار به مسلمانو سره ډير په تكبر سره مخښي ته راتلل،خو هم دغه مسلمانان په دې زمکه باندې د ټولو نه مخکښي د الله تعالى عبادت کولو والا،په هغه باندې او په هغه د رسول باندې ايمان راوړونکي وو،او هم دا د هغه خپلوان او خاندان والاوو.هم دغه حضرات ددوي نه پس د خلافت ډير حقداره دي،او هم دوي سره به مقابله كولو والاډير ظالم وی،ای د انصارو ډلې ستاسو د لوړ مقام او شرافت، او په دین کښې ستاسو د کارنامو نه انکار نشّی کیدلیّ اللہ تاسوِ د خپلؓ دین او د خّپل رسولٌ مددکاران جوړ کړئ،ستّاسوّ طرف ته هجرت اوشو، په تاسو کښي د هغوي بيبياني آو لوئي لوئي صحابه کرام الله موجود دي.د اول مهاجرينو نه پس ستاسو د درجه برابر هيڅ څوک نشته، چي مونو اميران يو نو تاسو به وزیران یئ،په یو مشوره کښې تاسو هیریدلکې نه شئ او نه به ستاسو نه بغیر څه فيصله كيرى

په يو روايت كښې ابوبكر صديق الله انصارو ته په جواب كښې اوفرمائيل: ما ذكراتم فيكم من خيرقانتم له اهل ولن يعرف هذا الامر الالهذا الحي من قريش هم اوسط العرب تسبأ و دارا " ^{")}

يعني تاسو چې خپل کوم فصيلت بيان کړو واقعي تاسو ددې جوګه يئ خو د خلافت حقدار هم قریش دی خکه چی دوی په عربو کښې د نسل او قبیله په اعتبار سره د ټولو نه افضل دی د حضرت صديق اكبر كَيْنَةِ دَيْ تقرير نه پس حباب بن منذر پاسيدو او وني فرمانيل چي

⁾ الكامل لابن الاثير (٢٢٣/٢)-

⁾ صعيع البخاري (١٠١٠/٢)كتاب المحاربين باب رجم العبلي من الزنا اذا احصنت وقم (۶۸۳۰)-

مناسب داده چې يو امير ځمونږ نه وي او يو ستاسو نه ()

بېدو دې الاتلامن العراقي دې موقع باندې اوفرمانيل چې د حضورياک، 微 ارشاد دې الاتلامن من قريش ارغاد دې الاتلامن قريش الاتلامن دې د خضورياک، من قريش الاتلامن ده وي

ميس ، يستى صعاع ، وعرس به مورد الله الدول ان يكون للمسلمين اميران فانه مهايكن حصرت ابوبكر صديق الميران فانه مهايكن ذلكم يختلف امرهم واحكامهم وتتفرق جماعتهم ويتتازعون فيا بينهم هنالك تتزك السنة وتظهر البعة ولكم يختلف امرهم واحكامهم وتتفرق جماعتهم ويتتازعون فيا بينهم هنالك تتزك السنة وتظهر البعة وتعظم الفتئة وليس لاحد على ذالك صلاحوان هذا الامرق قريش ما اطاعوالله واستقاموا على امرة قد بلفكم ذاك او سمعتموه عن رسول الله تنظيم ولا تنازعوا فتفشلو وتناهب ريحكم واصبروا ان الله مع الصابرين فنعن

الامراء وانتم الوزياء اخواننا فى الدين وانصار ناعليه رمى

الامرافوات الوزیا ۱۶ افوات الهی و او خت نه شی کیدی ځکه که داسی او شوه نو په ټولو یعنی د مسلمانانو دوه امیران په یو وخت نه شی کیدی ځکه که داسی او شوه نو په ټولو احکامو معاملو کښی به اختلاف پیدا شی او ددوی ډله به ګډه و ډه شی. په خپل مینځ کښی به په جنګ شی. او په داسی موقع به سنت پریښودې شی او بدعات به ښکاره شی. فتنه به غټه شی او بیا به ددې صحیح والی د چا اختیار کښی نه وی. دا خلافت به قریشو کښی وی تر کومی چی قریش د الله تابعدار وی او په دین باندې کلک وی. او دا خبره تاسو ته رارسیدلی ده یا هغوی دا اوفرمائیل چی دا خبره تاسو ته حضورپاک که نه اوریدلی ده چې جنګونه مه کوی کمزورې به شئ، او ستاسو دبدبه به ختمه شی. د صبر نه کار واخلی الله صبر والا سره دې. مونږ امیر یوو او تاسو وزیر، تاسو زمونږ دینی روریان او په دین کښی ځمونږ مددګاران یې:

حسى سي سيسې ددې حضراتو عقلى او نقلى دلاتلو اوريدلو نه پس انصارتنگتر سر كيښودلو . په دې موقع باندې صديق اكبر تائتۇ حضرت سعدبن عباده تأثي ته خطاب كښې اوفرمانيل.

په دې موقع باندې صديق اکبر *څاټو حضرت سعد بن عب*اده *څاټو ته حطاب کښي او فر*مائيل. • رققه علمت ياسعدان رسول الله کاټي قال وانت قاعد، قريش ولاقاه دا الامر، خير الناس تېځ لېرهم وفاجرهم

^{&#}x27;) الشمائل للترمذي مع شرحه للقاري(٢١٩/٢)-

أ) المستدرك للحاكم (٧٤/٤) كتاب معرفة الصحابة ذكر فضائل قريش من حديث على الماشئة والمسند لاحمد(١٢٩/٣) رقم(١٢٣٣٢) قال القارى: وهو حديث صحيح ورد من طرق نحو اربعين صحابيا "جمع الوسائل في شرح الشمائل (٢١٩/٢)-

مٌ كنز العمال (۵۹۶/۵) كتاب الخلافة والامارة الباب الاول فى خلافة الخلفاء. خلافة ابى بكر لِللَّمْثُور وتم (۱۵۰۵-۱)-

أ) السير ، الحلبية (٣٥٨/٣) باب ما يذكر فيه منة مرضه رما وقع فيه وفاته صلى الله عليه وسلم)-

پهنې اې سعد تاته پته ده چې رسول الله نهر يو موقع باندې چې ته هلته کښې هم موجود وې نړمانيلي وو چې قريش به د خلافت دمه دار وي ځکه چې ښه خلق ددې د نيکانو تابع دي او خراب خلق ئي د خرابو تابع دي

حضرت سعد اللجيئز أومنله أو وني فرمائيل صدقت نعن الوزيراء وانتم الامواء `بيعني وأقعى تا صحيح خبره اوكړه مونږ به وزير يُوو او تاسو به امير.

په دې روايت کښې ښکاره ده چې حضرت ابوبکر لالئز حضرت سعد اللئز ته قسم ورکړو چې ستا په موجودګئ کښې حضورپاک لیم دا فرمانیلې وو چې د خلافت د کار والیان به د قريشو نه وي او حضرت سعد اللي صدقت ونيلو سره ددې تصديق هم او کړو.

د شمائل ترمذی یو روایت کښې دی چې هر کله انصارو ممنا امیرومنکم امیر اوفرمائیل نو حضرت عمر فاروق الله و حضرت ابوبكر صديق الله درى خصوصيات بيان كول او په اعلان

سره ئې اوفرمائيل چې اووايئ په چا کښې د ابوبکر څاڅؤ نه علاوه داخصوصيات شته؟ اول دا چې حضرت ابوبكر الله تعالى په قرآن كښې ثان اثنين ادمها في الغاد ٢٠٠٠ اوفرمائيل ابوبكر الله ته نې دويم اوئيلو او دوي ته ئې د غار ملكرې هم اونې دوم دا چې ابوبكر الله ئې د حضورپاك نله خاص ملكرې او د هغه محبت سره خاص

دريم: داچې الله تعالى ددوى د پاره خپل معيت خاصه ذكر كړو ان الله معنا 🐧

گنی دعلم اواحاطه په لحاظ سره د الله تعالی مرسته عام ده او ټولو ته شامله ده و**هومعکم اینماکنت**م ^۲، دا درې فضيلتونه د ابوبکرصديق لاځي د قران د نص نه ثابت دی چې په هغې کښې دې طرف ته اشاره ده چې ابوبکر صديق لڻائڙ افضل دې او هم هغه د خلافت حقدار دې 🖔 حضرت عمر الله د ابوبکر الله د فضائلو دلیلونو کښې صرف درې دلیلونه واخستل چې د رنړا ورځ په شان واضع دي ګنې د آیت په سیاق وسباق کښې د صدیق اکبر لله د فضیلت

دليلونه نور هم ډير دی. نو هغې کښې اول:د الله تعالى ارشاد دې الاتنصهولاققه نصرة الله اذ اخهجه الذين كفهوا (^)

^{ً)} حواله باله

⁾ التوبة /٣٩)_

^{ً)} التوبة/٣٩)_) التوبة/٣٩)_

⁾ العديد/٤)-

^(ً) شعائل الترمذي مع جمع الوسائل (۲۲۰/۲)-

⁾ التوبة/١٩٩__

په دې آيت کښي د ابوبکر څڅونه علاوه ټولو ته د نصرت په پريښودو باندې زورنه ده ځکه چې ابوبکرصدیق تائی خو هغوی سره وو او د حضورپاک نام مددگار وو ،نو دوی د زورنی ندبهر دی بر سرسین و مورد الله د طرف نه د حضوریاک ش په امداد کښی د ابوبکر صدیق ش امداد هم شامل دی خکه دوی حضوریاک تر شره وو ، نو دوی هم د حضوریاک تر پشان د الله د طرف نه په امداد او مرسته کښنې شامل وو ، نو هم دوی به د خلافت حقدار وي.

دريم. دا چې فاتل الله سکينته عليه کښې د عليه ضمير د صحيح قول په اعتبار سره ابوبکر صديق ملك ته راجع دي، يعنى د الله د طرف نه سكون أو اطمينان ابوبكرصديق ملك ته شامل دې ځکه چې هم دوی به د حضورپاک که په محبت کښې انتهائی درجه پریشآنه او بې چین وو ،الله دوی ته خاص سکون او اطمینان ورکړو.

ځلورم دا چې دې آیت کښې ابوبکر الله ته ثان اثنین وئیلې شوې دی چې په هغې کښې دې طرف ته اشاره ده چې ابوبکر الله و علم او عمل په کمالاتو کښې د حضورپاک تله ثانی او قائم مقام دې او په نزدیکت او د غار په انواراتو او تجلیاتو کښې د حضورپاک تله ملګرې او

پنځم دا چې اديقول لماجه کښې د صاحب نه مراد په اجماع د مفسرينو ابوبکرصديق اللي مراد دې الله تعالى په قران كښې خاص توګه باندې دوى د حصورياکﷺ خاص دوست، خاص مرستوال او د اخلاص نه ډک ريشتوني محبَّت کولو والا اوخودلو، اَشَاره ديّ طرف ته ده چې د ابوبکر گلتو مرسته او دوستانه د هميشه د پاره قائم ده، د دنيا په ژوند کښې د حصوریاک کا اللہ دوست دی او په عالم برزخ،عالم آخرت،میدان حشیر او په حوض کوثر باندې هم دوی د هغوی به دوست وی، دغه وجه نه بعضی علماؤ لیکلی دی چی څوک د اېوبکر صدیق تاتو د صحابي کیدو نه انکار اوکړی نو هغه کافر دې چې دې د الله تعالی د دې

قول لصاحبه انكار كونكي دي.

شپوم: دا چې ابوبکر للمانځ باره کښې ئې دا اوفرمائيل لاتحن يعنی اې ابوپکر ته غمګين او پريشانه کيږه مه دا د دې خبرې دليل دې چې ابوبکرصديق الله په حضورياک تايم باندې ځان قربانه وونکی عاشق او دوی هغوی د پاره غم شریک وو،

اووم دا الاتحون نه پس آن الله معنا ئي اوفرمائيل او د الله تعالى دُ خصوصي مرستي زيرې

دى نه پس ابوبكرصديق الله اوفرمانيل چې دا عمر او ابوعبيده ينگه دواړه دلته موجود دي تاسو دې دواړو کښې چې د چا په لاس کول غُواړنی بيعت اوکړنی کې

دلته حضرت عمر او ابوعبيده ملك اوفرمانيل جي په الله قسم تأسو په ټولو مهاجرينو كښي افضل يئ. مونځ چې د دين ستن ده او د دين اسلام د ټولو نه او چت آو افضل رکن دې په هغې

) هذا کله توضیح ما افاده القاری فی شرح الشمائل(۲۲۰/۲۲و ۲۲۱)-

أ) السنن الكبرى للبيهقى(٢/٨ ٤ أ)كتاب أهل البغى جماع ابواب الرعاة باب الانمة من قريش)-

کښې تاسو د حضورپاک کا خلیفه او قانم مقام شوني.اې ابوبکراتاسو خپل لاس رامخکښې کړني مونږستاسو په لاس باندې بيعت کوو ()

په يو روآيت كنبى دى چې ابوبكر تا خصرت عمر شاش ته اوفرمانيل چې لاس رامخكښى كړه چې ستا په لاس باندې بيعت او كړم، حضرت عمر شاش ورته اوفرمانيل چې تاسو افضل يئ، ابوبكر صديق جواب وركړو انت قوى منى تاسو خما نه زيات قوى يئ، په دې باندې خبرې اترې اوسې، په آخر كښى حضرت عمر شاش اوفرمانيل ان قال لك مع فضلك خما قوت به ستاسو فضيلت سره يو خاني كار كوى، يعني امير به تاسو افضل يئ او اقوى به د هغه وزير وى د كې د ينه پس حضرت عمر شاش اوبكر شاش ته اوفرمانيل چې بيعت د پاره لاس رامخكښى كړنى، د غه وخت چى كله حضرت عمر او حضرت ابوعبيده تا يعت د پاره ادس رامخكښى راتلل د غه وخت حضرت بيعت د پاره مخكښى راتلل د غه وخت حضرت بيعت او كړو ، د كې يوبنتل نو دغه وخت حضرت بيعت او كړو، مخكښى راتلل صديق د غه وخت حضرت بيعت او كړو، يوبكر عمر او حضرت ابوعبيده شاش يعت عوبنتل نو دغه وخت حضرت بيعت او كړو، دې نه پس حضرت عمر او حضرت ابوعبيده شاش يعت او كړو، دې نه پس حضرت عمر او حضرت ابوعبيده شاش يعت

کله چې حباب بن منذر اوکتل چې بشير بن سعد گاڅو د ابوبکر گاڅو په لاس باندې بيعت اوکړو نو ونې وونيل چې تا د خپلولئ خيال او ندساتلو او د خپل تره ځوی سعدىن عباده امارت دې قبول نه کړو او په هغه دې حسد او کړو، بشيربن سعد گاڅو ورته جواب ورکړو چې په الله قسم؛ داخېره نه ده بلکه خبره دا ده چې د مهاجرينو حق د هغوى نه اخستل نه غوارم ()

بيا د قبيله اوس خلق د قبيله خزرج امارت هم نه خوښه وو او هغه ته ويره وه که يو خل سعد بن عباده امير جوړ کړې شو او امارت خزرج طرف ته لاړو نو بيا به قبيله اوس ته دې فضيلت کښې چرې هم حصه ميلاؤ نه شي

د قبیله اوس نقیب او سردار حضرت اسیدبن حضیر هلته کنیی موجود و و هغوی قبیله اوس خوات ده مشوره ورکه و چی پاسئ او د ابوبکر په لاس باندی بیعت اوکړئی، دا خلق پاسیدل او د ابویکر تاثق په لاس باندې ئی بیعت اوکړو، او دا بیعت کول وو چی د سعدبن عباده تاثی د بیعت خوره بالکل ختمه شوه، دی نه پس خلورو طرفو نه خلق د ابوبکرصدیق تاثی په بیعت باندی احمد شد از دی چی د پښی لگیدلو خانی هم پاتی نه شور (م

باندې راجمع شول تردې چې د پښکې لګیدلو ځاني هم پاتې نه شور م پیعت عامه: دا عام بیعت وو چې د ګل په شپه باندې اوشو، په کومه ورځ چې حضورپاک کا وفات شو،او دې نه پس په دویمه ورځ د نهې باندې د مسجد نبوی په منبر باندې بیعت عامه اوشو، د

⁾ كنزالاعمال(٥/٠٤٤) رقم(١٤١٢٧)-

⁾ كنز الاعمال (٤٥٢/٥) رقم (١٤١٤٠) وجمع الوسائل (٢٢١/٢)-

[&]quot;) السيرة الحلبية (٣٥٨/٣)-

^{ً)} حواله بالا)-

نم سيرة المصطفى(٢١٢/٣و٢١١)-

⁾ السيرة الحلبية(٢٥٩/٣)-

د سقیفه بنی ساعده د بیعت په دویمه ورخ یعنی د نهی په ورخ عام خلق په مسجد نبوی کښی راجمع شول. ټول مشران صحابه کرام او انصار او مهاجرین ثناتی موجود وو، اول حضرت عمر گلتل په منبر باندې یو مختصر او جامع تقریر اوکړو او په هغی کښې د ابوبکر گلتم مخکښې والی اوفضائل نی شمیر کړل چی تاسود ابوبکرصدیق گلتگ په لاس باندې بیعت اوکړی کړی نه پس حضرت ابوبکر گلتی نی په منت سره په منبر کینولو او عام خلقو د هغوی په لاس باندې بیعت اوکرو. ()

د بيعت نه پس صديق اکبر گائو يو مختصر خطبه اولوستله او په هغې کښې ئې ارشاد اولومائيلو چې اې خلقوا ستاسو دا خيال دې چې ما د اخلافت ځکه قبول کړو چې ما د خلافت يا د امارت شوق ساتلو. يا په مسلمانانو باندې مې خپل فضيلت او اوچتوالي غوښتلو.نو قسم دې وى په هغه ذات د چا په قبضه کښې چې خما ساه ده اما په دې اراده غوښتلو.نو قسم دې وى په دې دې اراده اباندې خلافت قبول کړې نه دې په الله قسم ما د امارت يا خلافت لږوخت د پاره هم خواهش نه دې کړې ده

مشری او خلافت ورته حواله کرئ خکه چی زه تأسو نه یو کس یم 🖔 ٔ د حضوت علمه او حضوت : در ۱۳۶۸ بیعت در کاوته این و ترایک

د حضرت علی او حضوت زبیو گنگ بیعت: چی کله ټولو بیعت اوگړو نو حضرت ابوبکر گ<mark>نگؤ په</mark> خلقو باندې نظر واچولو نو حضرت علی او حضرت زبیو گنگؤ په نظر رانغلل.ونی فرمائیل چې زه دې مجمع کښې حضرت علی او زبیر گنگ نه وینم هغوی هم راوغواړئ.د انصارو نه څو کسان پاسیدل او هغوی دواړه نې راوغوښتل

ابوبکر گنتؤ ورته اوفرمانیل چې آی د الله د رسول د تره خویه او د هغوی خومه آیا تاسو په مسلمانانو کښې اختلاف اچونی؟ او هم دا یې حضرت زبیر ناتئؤ ته هم اوفرمانیل.

دې دواړو حضراتو اوونيل چې آې د الله د رسول خليفه تاسو مونډ ملامت کونې مه. مونډ په مسلمانانو کښې اختلاف نه اچوو ،نه مونډ په څه باندې خفه يو ،صرف دا خيال دې چې مونډ د خلافت په مشوره کښې شامل نه کړې شو باقي مونډ يقين سره وايو چې د خلافت حقدار ابوبکر تاتلا دې هغوی د حضورپاک تاتلا د غار ملګرې دې ،مونډ ته د هغوی فضيلت او مرتبه ډيره ښه معلومه ده حضورپاک تاتلا هغوی په خپل ژوند کښې امام مقرر کړې وو چې خلقو ته مونځ ورکړي (۲)

په يو روايت كښې دى چې حضرت على الله اوفرمائيل انه دضيه لديننا افلانوضا الديانان الله

^{٬)} البداية والنهاية(٢٤٨/٥)-

أُ كُنز الاعْمَال(١٤٠٨١)رقم(١٤٠٨١)-

⁷) البداية والنهاية(٢٥٠/٥)-⁴) جمع الوسائل(٢٢٠/٢)-

یعنی حضورپاک نظم حضرت ابوبکر گئز خمونږ دین د پاره خوښ کړی وو نو آیا مونږ به ئی دنیا د پاره نه خوښه وو؟

د . دې ونيلو سره دواړو د ابوبکر صديق النو په لاس باندې بيعت او کړو.

شيعه کان وانی چې د حضرت علی څخونه نه چا تپوس اوکړو او نه نې راوبللو.نو شيعه ګان ډې دا اووانی چې د ابوبکر او عمر څڅنه چا تپوس کړې وو او چا راوغښتې وو؟بلکه په خپله د فتنې د وېرې نه راغلې وو

د صنی د وېرې سر سنې روم. پهرحال حضرت علی او زبیر گاگئا په شروع کښې د صدیق اکبر په لاس باندې بیعت او کړو.

پهرون کسوت کا کې کروپيرون کو کې کو کو کې د او په کامل باندې په دغه ورځ بيعت کړې وو او حقيقت دادې چې حضرت علی ځاڅو د ابوبکر ځاڅو په لاس باندې په دغه ورځ بيعت کړې وو يا په بله ورځ باندې؟ خو امام بيهقي د حضرت ابوسعيد خدرې ځاڅو نه په يو روايت کښې نقل کړې دی چې د هغې خلاصه داده:

د خصورپاک گر د وفات نه پس خلق د حضرت سعد بن عباده په کور (سقیفه بنی ساعده) کښی راجمع شول په دې حضراتو کښی ابوبکر او عمر فاروق گرا هم موجود وو .د انصارو يو خطیب زیدبن ثابت گرا و اوریدلو او وئی فرمائیل چې تاسو حضراتو ته معلومه ده چې حضورپاک پر د مهاجرینو نه وو او مونږ همیشه د هغوی د انصارو او مددګارانو نه یو .اوس چې څوک خلیفه وی مونږ به د هغه هم انصار او مددګار یو څنګه چې دحضورپاک پر مددګار وو

دې نه پس عمرفاروق الله او دريدلو او ونې فرمائيل چې ستاسو خطيب صحيح اوونيل، که د دې نه علاو د بل صورت نې خودلې وو نو مونږ به منلې نه وه بيا د حضرت ابوبکر الله لاس نې اونيولو او ونې فرمانيل چې اې حاضر خلقو دا ستاسو ټولو امير دې ددوى په لاس باندې بيعت اوکړني. په خپله حضرت عمر الله او په دغه وخت موجوده انصارو او مهاجرينو د

ابوبكر صديق الثن به لاس باندې بيعت او كړو

بیا حضرت ابوبکر ناشئ مسجدنبوی ته تشریف راوړلو سره په منبر باندې کیناستلو او په مودده خلقو نه تپوس اوکړو موجوده خلقو نې نظر واچولو نو حضرت علی ناشئ په نظر رانغلو هغوی د خلقو نه تپوس اوکړو نو د انصارو څه کسان په منډه هغوی پسې لاړلو بیا حضرت علی ناشئ راورسیدلو نو ابوبکر ناشئ ترې تپوس اوکړو اې حضورپاک ناش ده ترهٔ خونیا او د هغوی خومه آیا تاسو د مسلمانانو یو خانی والی ټکړې توکړې کول غواړنی؛ حضرت علی ناشئ اوفرمانیل چې دالله د رسول خلیفه تاسو مونو ملامت کونی مه او فورا نې بیعت اوکړو

رسون مييد داسو موس سد موسي ساو حرب عي بيد کرد هم الله و الله هم حاضر شو هغه ته هم بيد خضرت زبير الله شو شو د هغه تپه وس ني اوکړو هغه هم حاضر شو هغه ته هم ابوبکر الله و الله د رسول د ترور خونيا آيا تاسو د مسلمانانو په مينځ کښې جدا والي غواړني؟ هغوې هم اوفرمائيل چې اې د الله د رسول خليفه تاسو مونږ ملامت کوی مه او بيعت ني اوکړلود)

ر بيدسوسي و سهود . امام بيهقي گذاري فرماني چې محمد بن اسحاق خزيمه ته امام مسلم گذاري راغللو او دا حديث ئي

) السنن الكبرى للبيهقي(١٤٣/٨) كتاب قتال اهل البغى جماع ابواب الرعاة باب: الائمة من قريش)-

واوریدلو نو هغوی اوفرمائیل هناحدیث پسوی بهدنه چې دا حدیث د قربانۍ د اوښ یا د غوا برابر دې،ابن خزیمه فرمائی چې بدنه نه بلکه بدره یعنی د زرو دینارو د تهیلی برابر دې (حافظ ابن کثیر*ونیځ* ده دې حدیث ذکر کولو نه پس فرمائی

وهذا اسناد صحيح محفوظ من حديث ابي نضرة البنداد بن مالك بن قطعة عن ابي سعيد سعد بن مالك بن سنان الخدرى وفيه فائدة جليلة وهي مهايعة على بن إبي طالب اما في اوليوم اوفي اليوم الشأن من الوفاة وهذا حق فان على بن إبي طالب لم يفارق الصديق في وقت من الاوقات ولم ينقطح في صلاة من الصلوات خلفه وخرج معه ال ذي القصة لها خرج الصديق شاهرا سيفه يويد قتال اهل الردة "ر")

يعني د ابونضره عن ابي سعيد په طريق سره روايت شوې دا سند بالکل صحيح او محفوظ دې او په دې کښې د يوې غټې فائدې خبره دا هم ده چې حضرت على ناڅو د ابوبكر ناڅو په لاس باندې بيعت په ړومبي ورځ يا په دويمه ورځ كړې وو او هم دا خبره صحيح ده ځكه چې حضرت على ناڅو د ابوبكر ناڅو نه يو و وخت هم جدا شوې نه دې نه په يو مونځ كښې د هغوى شاته مونځ كولو نه روستو شوې دې او هر كله چې ابوبكر ناڅو توره تياره كړه او دى القصه مقام ته د مرتدو سره جنګ كولو د پاره اووتلو نو حضرت على ناڅو هم د مدد ګار په طور دوى

ښکاره دی وی چې ذکر شوې روايات شيعه علماؤ په خپل کتابونو کښي خپل سند سره ذکر کړې دې او په دې باندې څه نقد او جرح کړې نه ده، چنانچه د نهج البلاعة مشهور شارح ابن ابي الحديدشيعي په خپله شرح نهج البلاعة کښې دا روايات نقل کړې دی، هغه ليکي:

قال على و زيير رفي ، ما غضينا الالآدا اخرادا عن المشورة و إنالنرى ابابكر احق الناس بها انه صلحب الغاروانا لنعرف له سنه و امرة رسول الله وي السلاق وهوسي رئ

یعنی حضرت علی او حضرت زبیر شاکه اوفرمائیل چی زمون ناراضگی صرف په مشوره کنیی د نه شاملیدو د وجه نه اوشوه حالاتکه مون ابوبکر شاکه د نورو خلق نه زبات د خلافت حقدار کنرو، او د غار د ملگیرتیا فضیلت هم هغوی ته حاصل دی مونږ د هغوی بزرگی منو، او حضورپاک شاکه هغوی ته په خبله زندگی کنبی د مونځ ورکولو حکم ورکړی وو

تعجيلاً د بيعت په سلسله کښې د سعيدبن زيد لله دا روايت هم ډير اهم دې چې هغه ابن جرير طبري خپل سند سره ذکر کړې دې:

خال عبرد بن حريث لسعيد بن زيد: اشهدت وفاة رسول الله كلي ؟قال نعم، قال: فبقى بويع ابويكى؟ قال: يوم ما مات رسول الله كلي كهوان يبقو بعض يوم وليسوا في جماعة، قال: فخالف عليه احد؛ قال: لا الا مرتد او من قد كاد ان يرتد لولا ان الله ينقذهم من الانصار، قال: فهل قعد احد من المهاجرين؟ قال: لا، تتابع

⁾ السنن الكبرى للبيهقى(١٤٢/٨)-

^{&#}x27;) البداية والنهاية(٣٤٩/٥)-

أ) شرح نهج البلاعة لابن ابى الحديد (١٥٣/١) رحماء بينهم (٢١٥/١)-

المهاجرون على بيعته من غيران يدعوهم (١)

يعني عمرو بن حريث د سعيدبن زيد المائم نه تپوس او كړو چې تاسو د رسول الله د وفات موقع يسکې کښي موجود وني؟ ونې فرمانيل چې او بيا تپوس او کړو چې د ابوبکر گاڅو بيعت څه وخت ارشو ؟ وني فرماليل چې په كومه ورځ د حضور پاک الله انتقال اوشو په هغه ورځ بيعت اوشو، صحابه كرامودا خبره خوسه نه وه چې د ورځې څه حصه بغير جماعت او امير نه تيره شوه. تپوس ني آوکړو چې آيا چا مخالفت هم کړې وو او ني فرمانيل چې نا خو او مرتدينو بيعت نه وَوْ كُرِّي آو انصّار الله بچ كړل ګنى هغوى هم اوړيدلو والاوو تپوس نې اوكړو چې مهاجرينو كَنْبَيْ خُوك پاتى وو؟ نو وئى فرمائيل چى ناامها جرينو بغير رابللو مسلسل بيعت اوكړو٠ دغه شان حبيب بن ابى ثابت فرمائى:

كان على في بيته اذاتى، فقيل له: قد جلس ابويكم للبيعة فضر في قييمه ما عليه ازار ولا رداء، كراهية ان

يطع عنهاحتى بايعه ثم جلس اليه وبعث الى ثويه فاتا لافتخلله ولزم مجلسه (٢)

يعني حضرت على الماتي په خپل كور كښې وو چې خبر ورته راورسيدلو چې ابوبكر الاتك د بيعت د پاره ناست دې، حضرت علي الله کرته اغوستې وه په جسم نې څادر نه وو او په دې حالت کښې په تيزني سره راووتلو ځکه چې هغوي ته دا خېره خوښه نه وه چې په دې سلسلم کښې دې روستوالي اوشي، هلته رسيدو سّره ئي بيعت اوکړو بيا هلته کيناستلو او خپلو کپړو د پاره نبي څوک اوليږل،هغه کپړې نبي هم هلته واغوستلې او د ابوبکرصديق گلتڅ مجلس نبي

ايا حضرت على الله شپرو مياشتو پورې بيعت نه وو کړې؟ دلته د صحيحينو يو روايت نه معلوميږي چې حضرت على تاتئزد حضرت فاطمه نتائا د وفات پورې يعني د حضورياک تنظ د تلو نه شپږ مياشتو پورې بيعت نه وو کړې،دا روايت د ابن شهاب عن عروة عن عائشة په طريق

سره مروى دى ددې الفاظ دادى نوجدت فاطبة على إن بكر في ذلك فهجرته فلم تكلمه حتى توفيت وعاشت بعد النبي رييم ستة اشهر فلبا توفيت استتكرعلى وجوة الناس فالتمس مصالحة ان بكر، ومبايعته ولم يكن يبايع تلك الاشهر ركم

حقیقت دادې چې ددې روایت نور طرق جمع کیدلو او کتلو نه پس ښکاره کیږي د بیعت نه کولو دا خبره د امام زهري کلام دې چې د روايتو په مينځ کښې راغلې ده، د امام زهري کمله دا عادت وو چې د حديث په مينځ کښې به نې ادراج، څه شاملول آ

⁾ تاريخ ابن جرير الطبرى(٤٤٧/٢) حديث السقيفة)-

⁾ تاريخ الامم والملوك (٤٤٧/٢)-) صحيح البخاري(٤٠٩/٢) كتاب المغازى باب غزوة خيبر رقم (٤٢٤٠ (٤٢٤) وصحيح المسلم كتاب الجهاد بآب قول النبي تُنظِيظُ لا نورث ما تركنا فهو صدقة رقم (۸۵۸۰)-ا.

⁾ وكذا كان الزهري يفسر الاحاديث كثيرا وربعا اسقط اداة التفسير فكان... [بقبه حاشيه به راروانه صفحه..

چنانچه امام ابن جرير طبري ﷺ دا روايت نقل کړې دې.ده هغې الفاظ دادي:

· قال معبر: فقال دجل للزهرى: افلم يه ايعه على ستة اشهر ؟ قال لا ، ولا احد من بنى ها شم · ()

دغه شان سنن كبرى بيهقى الفاظ دى

قال معمر: قلت للزهري: كم مكثت فاطبة بعد النبي الظار؟ قال: ستة اشهر،قال: رجل للزهري: فلم يهايعه

على والشرُّحق مات فاطهة وَالشُّرُالِ الله ولا احد من بني هاشم رأى په دې دواړو رواياتو کښې دا خبره بالکل ښکاره کيږي چې د صحيحينو روايتونو کښي د

روای د طرف نه قال رجل للزهری یا قلت للزهری الفاظ غورزیدلې دی. دا په حقیقت کښې د حضرت عانشه ﴿ ثُنَّهُ لا كلام حصه نه ده.

چنانچه امام بیهقی الله فرمانی

وقول الزهري في قعود على عن بيعة ال بكرحتي توفيت فاطبة : منقطع وحديث الى سعيد الخدري في ممايعته

اياه حين بويع بيعة العامة بعد السقيفة اصح رأ

يعني د حضرت فاطمة ﴿ إِنَّهُ اد وفات پورې د حضرت على اللَّهُ د حضرت ابوبكر اللَّهُ د بيعت نه د ايساريدلو چې د زهري كوم قول دې هغه منقطع دې او بيعت عامه موقع باندې د واقعه سقيفه نه پس د دوّی د بيعت چې کوم روايت د ابوسعيد خدری النو نه مروی دې هغه آصح دې٠ دغه شان هغوی په خپل يو بل تصنيف کښې د ادراج وضاحت کړې دې فرماني:

والذى روى ان على ظافير لم يهايع ابابكر والنير ستة اشهرليس من قول عائشة انها هو من قول الزهرى فأدرجه بعض الرواة في الحديث عن عائشة في تصة فاطبة وحفظه معمرين راشد فروانا مفصلا وجعله من قول الزهري منقطعاً من الحديث وقد روينا في الحديث الموصول عن إن سعيد الخدري ومن تابعه من اهل المغازي ان عليا بايعه في بيعة العامة بعد البيعة التي جرت في السقيقة · ^{^*} ،

مطلب دادې چې دا کوم روايت دې چې حضرت على الله د شپږو مياشتو پورې بيعت نه وو کړې دا د حضرت عانشه الله قول نه دې بلکه دا د امام رازې قول دې چې هغه بعضي راويانو د حضرت فاطمه ناتئز دقصي لاندې د حضرت عانشه ناتئز نه نقل کړو ،آو دې خبرې لره امام معمر بن راشد صَعَيح ياده کړې ده.او دا نې تفصيلا نقل کړې دې. او مُونو د اَيوسعيد خدری تالغ موصول روايت نقل کړې دې او د دوی تابعداری نورو اهل مغازيو هم کړې ده چې حضرت على اللؤ د بيعت سقيفه نه فورا پس د بيعت عامه موقع كښي بيعت كړي وو.

بقيه حاشيه د تيرمخ] اقرانه ربما يقول له: افصل كلامك من كلام النبي كَلْ الظرالنكت على كتاب ابن الصلاح(٨٤٩/٢) النوع العشرون :المدرج وفتح المغيث للسخاوي(٢٨٨/١)-') تاريخ الامم والملوك (٤٨/٢)-

^{&#}x27;) السنن الكبرى للبيهقي (٣٠٠/۶) كتاب قسم الفئ والغنيمة باب بيان مصرف اربعة اخماس الفئ)-

[&]quot;) رحماء بينهم (٢٢٧/١) نقلا عن "الاعتقاد على مذهب السلف" (ص ١٨٠)-

دغه شان امام ابن حبان ثانتی هم د ابوسعید خدری ثانتی روایت ته اصع گوزولی دی چی حضرت علی ثانتی شروع کنبی بیعت کړې وو ()

لهذا د حضرت عانشه په روآیت کښې چې د کوم بیعت ذکر دې د هغې باره کښې به دا اونیلې شی چې دا دویم بیعت وو، امام بیهقی فرمانی ولعل الزهری اراد تعود تامنها بعد البیعة ثم نهنه البها ثانیا وتیامه بواجها تهان

مطّلب دادې چې حضرت على نائلتۇ اول بيعت كړې وو بيا چې كله د حضرت فاطمه نائله او د ابوبكر ثائلة په مينخ كښې د ميراث معامله راغله او په دې سلسله كښې د حضرت فاطمه تائله په زړه كښې لږ خفكان راغلو نو حضرت على ثائلة د هغې تپوس او ډاډ د پاره حضرت ابوبكر ثائلة سره د عملي تعاون وغيره نه ناست وو بيا چې كله د فاطمه شخه انتقال اوشو نو دوباره ني ابوبكر ثائلة سره تعاون شروع كړو

حافظ ابن حجر وكيني فرمانى: وجهع غيرة بانه بايعه بيعة ثانية مؤكدة للاول لازالة ما كان و تع بسبب البيراث كها تقدم وعلى هذا فيحيل قول الزهرى لام بيايعه على لأنتو كها تلك الايام على ادادة الهلازمة له والحضور عندة وما اشهه ذلك فان في انقطاع مثله عن مثله ما يوهم من لا يعرف باطن الامرائه بسبب عدم الرضا بخلافة فاطلق من اطلق ذلك وبسبب ذلك اظهر على البهايعة التى بعد موت فاطبة في لازالة هذاة

يعنى د امام به پهقى نه علاوه نورو حضراتو د دواړو رواياتو داسې تطبيق كړې دې چې حضرت على الله د وومبى ببعت تاكيد د پاره دويم ببعت كړې وو چې د ميراث د مسئلې د وجه يې كوم واقعات راغلې دى هغه ختم شى ددې مطلب په بنياد باندې د امام زهرى دا قول چې حضرت على الله دغه ورخو كښې بيعت نه وو كړې به په دې محمول كړې شي چې د حضرت على الله حضرت ابوبكر الله ته مخامخ كيدنه نه وه ،وجه دا وه چې حضرت على الله د به ناخره خلقو ته دا شك كيدې شى په شان شخصيت د ابوبكر الله ته لرې وو نو د حقيقت نه ناخره خلقو ته دا شك كيدې شى چې حضرت على الله د ابوبكر الله ته خوشحاله نه وو، چنانچه بعضي نقل كونكو داسې خبره كړې هم ده، ددې غلط فهمى لرې كولو د پاره حضرت على الله د فاطمه الله د

وفات نه پس دوباره بيعت او كړو ، دالله اعلم.

د حضوت سعد بن عباده تا گریست سقیفه د بنی ساعده موقع کنبی هلته کنبی موجود مشران مهاجرینو او انصارو د ابوبکر تا گئ په لاس باندې بیعت اوکړو ددې نه پس بیعت عامه اوشو چې هغې کنبي ټول مهاجرین او انصار شریک شول دغه شان د ابوبکر تا گئ په خلافت باندې د ټولو صحابه کرامو تا گام اجماع جوړه شوه

⁾ فتع الباري (۴۹۵/۸) کتاب المغازي باب غزوة خيبر)-

⁾ السّنن الكبرى(۱۲۰۰/۶)-) فتع البارى(۱۹۵/۷)-كتاب المغازى اواخر باب غزوةخيبر)-

البته د سعدبن عباده تا په باره کښې روایت کښې رازې چې هغوی تر آخره پورې بیعت او ادکړو بیله بلکه د بیعت نه ئې انکار او کړو ،حضرت عمر تا کا رائې ورکړه چې د حضرت سعد د کا که ایکو بیعت به ئې انکار او کړو ،حضرت عمر تا کا وامائیل چې هغه په دې سعد کا که نه خامخا بیعت اخستل پکار دی،خو بشیربن سعد اوفرمائیل چې هغه په دې معامله کښې بالکل یواځې دې هغه ته معافي او کړنی او په خپل حالت کښې تې پریږدئي هغوی یو ځل انکار کړې دې او د ده په زور تنګولو سره خطره ده چې د هغه قبیله او خانداڼ په مرسته کښې راپاسې او خبره قتل وقتال ته اورسي دغه شان دا رائي ټولو ته خوښه راغله د محضرت ابوبکر کا کړ په دور خلافت کښې هم په مدینه منوره کښې پاتې وو ،بیا د حضرت مرسته کښې پاتې دو ،بیا د حضرت مرسته کا که کړ که کړې د وار میا ته داره او هم هلته کښې وفات شور ۱)

عمر تائتئ په دور خلافت کښې شام ته لاړو او هم هلته کښې وفات شود () ددې نه په ظاهره دا معلوميږي چې د ابوبکر تائتئ په خلافت باندې د ټولو صحابه کرام تائ اجماع نه وه.خو حقیقت دادې چې د ابوبکر تائتئ په خلافت باندې د ټولوصحابه اجماع شوې وه

امام طبری اللہ تا کوی دی ان سعد بایع پومٹلار آ) یعنی حضرت سعد اللہ هم په دغه ورخ بیعت کری وو

د قراينو نه هم دا معلوميږي چې حضرت سعد اللي بيعت کړې وو، ځکه چې د سقيفه بني ساعده موقع کښې ابوبکر اللي هغه ته په خطاب کښې فرمائيلې وو چې: اولقدعلمت ياسعد،ان رسول الله تال دانت تاعد: تريش ولاة هذا الامرفيرالناس تې لبرهم وفاجرهم تې لفاجرهم:

یعنی ای سعد: تاته ښه معلومه ده چې تاسو د حضور پاه په خدمت کښې ناست ونی چې حضوریاک په اوفرمانیل چې ددې خلافت ذمه دار قریش به وی ځکه چې د دوی نیکان خلق د دوی د نیکانو او فاجران د دوی د فاجرانو تابع دی

په دې باندې هغوی د ابوبکر تاشخ تصديق کولو سره اعتراف او کړو صداقت نعن الوزماء وانتم الامراء ۲۰

ددې تصدیق او اقرار نه پس د هغوی د بیعت نه انکار کول په ظاهره په عقل کښې نه راځي.ځکه اوونیلې په شي چې هغوی بیعت کړې وو

ددې نه دا لاړم نه رازی چې هغوی د ابوبکر الله خلافت د زړه نه تسلیم کړې نه وو،بلکه حقیقی واقعه هم دغه ده چې هغوی د ابوبکر الله د خلافت اقرار هم کړې وو او د زړه نه نې

اً) الطبقات الكبرى لابن سعد(٢١٧ع/٢١٧) ترجمه سعدين عباده تُنْتُنَثُو وكنز العمال(٤٢٧/٥و،٤٣٨) وقم (١٤١٠٧)-

^{ً)} تاریخ ابن خلدون(۲/۰۰۶)-

⁾ السند لاحمد(١٨٥) رقم(١٨)-

دوي نه يو داسې كار اونشو چې هغې ته د ابوبكر الله د خلافت نه خلاف اوونيلې شي. تر څو چې د صديق اكبر الله پسې د مونځ نه كولو او په مجلس كښې د شركت نه كولو تعلق دې نو دا يو فطرى ردعمل دې چې يو كس څوك د خليفه جوړولو د پاره د كور نه راولى او خلق د هغه په لاس باندې د بيعت د پاره جذباتي هم وي، او هغه معمولى كس هم نه، د قبيله

دې د دا يو تعري ردعه د دې چې يو تس خوت د خليفه جوړونو د پاره د دور ته راولي او ځاق د هغه په لاس باندې د بيعت د پاره جذباتي هم وي، او هغه معمولي کس هم نه، د قبيله خررج سردار چې په سخاوت کښې بې مثاله وو ،حضورپاک کا پا به اکثر د انصارو علم دوی تمورکولو، او بيا ددوی د خوددارني او غيرت په مخکښې! د دې ټولو صفاتو نه ډک کس چې دحق د اعتراف سره سره د خلافت د کار نه فارغ کړې شو نو فطري طور سره يو شرم په هغه کښې پيدا وو، چې د هغې د وجه هغه ځانله والي اختيار کړو.

ځکه یُقینی طُور سره دا ونیلې شی چې د ابوبکر نَاتُو پُه خلافت باندې د ټولو صحابه کرامو*ژناته اجماع وه.*

د خلافت مسئله باندې د اهل سنت او د اهل تشيع منشاء د اختلاف:ددې خانې پورې د قرآن د اشاراتو، بې شميره احاديثو او آثارو، او د صحابه کرامون که دعمل او اجماع نه ثابته کړه چې حضرت ابوبکر گات د خلافت د ټولو نه زيات حق لرلو او صحابه کرامو د هغوی بالکل په حقه سره خوښونه کړې وه.

دلته د اهل سنت او د اهل تشیع په مینځ کښې د اختلاف منشاء جانزه اخستلو سره دا مسئله نوره زیاته هم واضح کیږی. د اهل تشیع په نیز باندې د خلافت دارومدار په قرابت او علاقه مصاهرت باندې دې ځکه د

د اهل سیع په نیز باندې د حلاقت دارومدار په فرایت او علاقه مصاهرت باندې دې حکه د شیع ګانو په نیز د حضورپاک گه نه پس خلافت حضرت علی څنځ له پکار وو، چې هغوی د د دې نزدې رشته دار او خوم وو،

اهل سنت فرمائی چې د خلافت دارومدار په تقرب باندې دې په رشته داريئ نه دې، کوم کس چې الله او رسول کې ته نزدې وی هغه کس به د رسول کې خليفه او جانشين وی، خلافت ښوت له قرابت او مصاهرت يعني رشته دارنې ته څه ضرورت دې؟

که د خلافت دارومدار نسبی رشته دارئی باندی وو نو حضورپاک گی نه پس به د هغوی خلیفه د هغوی تره حضرت عباس گائز وو یا د هغوی لور حضرت فاطمه گی وه،بیا د فاطمه گائز نه پس حضرت حسن گائز دویم خلیفه وو، د هغی نه پس به حضرت حسین گائز دریم خلیفه وو، د هغی نه پس که حضرت علی گائز ژوندی وو نو بیا به هغوی څلورم خلیفه جوړ شوی وو

حاصل دا دې چې که چرې دخلافت دارومدار په رشته دارني باندې وو نو د شيع ګانو د دې قاعدې مطابق د حضرت قاعدې مطابق د حضرت على گاتو به خلورم خليفه جوړيدلو لهذا که اهل سنت حضرت على گاتو ته خپل دور على گاتو ته خپل دور کېو نو څه ګناه نې اوکړه؟ او بيا چې حضرت على گاتو ته خپل دور کښې کوم خلافت ميلاؤ شو نو د مهاجرينو او انصارو بيعت نه ورته ميلاؤ شو، اهل تشيع خو حضرت على گاتوته هيڅهم ورنه کړل.

او که د خلافت مدار علاقه مصاهرت څخرګنۍ او ګڼړلې شي نوبيا هم د حضرت على تاکو په م مقابله کښي حضرت عثمان تاکو پغير د څه روکاوټ نه د خلافت حقدار دې، ځکه چې حضرت عثمان تاکو د حضورپاک تاکم دوچنده ځوم وو، چې د هغوی په نکاح د حضورپاک تاکم دو. لورياني يو بل پسې راغلې، او هم دغې وجه نه هغوی په اسلام کښې په دوالنورين لقب مشهور شو.

پاتې شوه دا خبره چې د عثمان ډوالنورين گاتؤ په نکاح کښې چې کومې دوه لوريانې راغلې وي هغوى د حضورپاک کاللې په وړاندې وفات شوې وې، نو دا خبره د خلافت حق نه ختمونى، ځکه چې د دې وجه نه هغوى ته کومه خاص مرتبه ميلاؤ شوې وه هغه صرف د نکاح نه حاصله شوې وه، د بې بې ژوندنى پاتې کيدلو يا نه پاتې کيدلو ته پکښې حاجت نشته څنګه چې حضرت على گاتؤ ته د فاطمه گاتا نه پس د ځومتوب عزت حاصل وو، د حضرت على گاتؤ د وفات سره ختم نه شو.

صعی میرود: سرحان تا تصدیری: وقت عمره علم ما عنو. پاتی شوه دا خبره چی شیعه ګان وائی چی دا دواړه لوریانی رقیه او ام کلثوم ﷺ د حضور پاکﷺ نهویې، بلکه د خدیجه ﷺ د ړومبی خاوند نه وې نو دا صفا دهوکه او فریب دې.

د شیعه محانو کتاب اصول کافی کنبی صفا موجود دی. وتزوج خدیجة وهواین بضع وعشرین سنة قول له منها تبل مبعثه القاسم و وتیة وزینب وامرکلثوم، وول له بعد المبعث الطیب والطاهرو قاطمة ()

يعنى حضورپاک الله خديجه الله سره نكاع اوكړه په هغه وخت كښى د هغوى عمر د شلو نه زيات وو، چنانچه د پيغمبرئى نه مخكښى د خديجه الله د بطن نه د هغوى څوئى قاسم او لورياني رقيه، زينب او ام كلثوم پيدا شوې، او د پيغمبرئى نه پس طيب، طاهر او فاطمه پيدا شوه،

مطلب دادې چې د فاطمه ن په په سان رقیه او ام کلثوم هم د هغوی لوریاني وې چې په هغی کې د فاطمه ن په یا په سان رقیه او ام کلثوم هم د هغوی کې د فاطمه ن په په یا په پیدانش د کې د فاطمه ن په پیدانش د کې د فاطمه ن په پیدانش د پیغمبر نی نه بعد شوې دې، او په پیدا کیدلو کښې مخکښې والی او روستو والی په خلافت کښې څه فرق نه پیدا کوی، د حضرت علی ن کلا ته د خومتوب کوم عزت حاصل وو هغه د فاطمه ن وفات نه پس دا عزت ختم نه شو، دغه شان د حضرت عثمان ناکل دوچنده دخومتوب شرف او کنړنی کوالله سحانه وتعالى اعلم وعلمه اتم واحکم د خلافت مسئله دلته مونږ په مختصر انداز سره د مخکښې کولو کوشش کړې دې د د خلافت مسئله دلته مونږ په مختصر انداز سره د مخکښې کولو کوشش کړې دې د تفصیل د پاره ۱ازالة الغفاء از شاه ولی الله رحباء بینهم از مولانا محمدنانع صاحب دامت برکاتهم سیرت مصطفی از مولانا محمدادریس کاندهادی کله میاس یقول: ان الرته کالروقه ماحال بین رسول شه کله دین کتابه.

ځښې په نه ځول پيووه ۱۵ مرويه تا تا تا په د د خور تنه هم مصيبت دې چې د حضور کاڅ او د

⁾ اصول کافی کلینی(۲۷۸)-) سپرت مصطفی(۲۳۲/۳۲-۲۳۶)-

هغوي د کتابت په مینځ کښې دیوال شو.

ده دې جملې نه ظاهرا دا ښکاره کیږي چې ابن عباس تا که دغه مجلس کښې موجود وو خو حقیقت دادې چې هغوی دې مجلس کښې موجود نه وو هغوی به دا جمله عموما وئیله چې کله به نې دا حدیث اورولو چنانچه امام بخاری د دې حدیث په یو طریق کښې نقل کړې دی تال عبیدالله : فکان ابن عباس یقول: ان الرزیة،، () دغه شان د مستخرج ابی نعیم په حدیث

كنبي دى قال عبيدالله فسمعت ابن عباس يقول. الخرر)

ددې حاصل دا شو چې ابن عباس گڼځ کله دا حديث عبيدالله گڼځ ته واورولو نو په آخره کښې د جملې سره د هغه ځانې نه اووتلو کوم ځانې نه نې چې حديث اورولو

په دې غیر ظاهري صورت باندې محمول کولو وجه داده چې عبیدالله تابعي دې او د هغوی شمیر په دویمه طبقه کښې کیږي،هغوی د قصې او واقعي دوران کښې موجود نه وو ځکه د هغوی پیدائش د حضورپاک تا د وفات نه پس شوې وو او بیا هغوی دا حدیث د ابن عباس پینه ډیره موده پس هم واوریدلو ه د ، د

د ابن عباس تر کم خپله رائي دا وه چې حضورپاک کا دا خط ليکلې وې . دا شه اعلم د ترجمې نه بالکل د ترجمې الله بالکل د ترجمه الباب سره مناسبت د ابن عباس کا د حديث الباب مناسبت د ترجمې نه بالکل ښکاره دې چې په هغې په هغې کښې ليکلي شوې دی چې حضورپاک کا د خط د ليکلو اراده کړې وه چې په هغې سره به د امت اختلاف لرې شوې وو او د هغوی اراده هم په حقه او جائز ده د دديث د ليکلو جائز کيدل معلوميږي.

فائده امام بخارى په دې باب كښې څلور احاديث د كر كړې دى.

اول حدیث د حضرت علی تاتیز دې چې په هغې کښې ذکر دی چې حضرت علی تاتیز یوه صحیفه لیکلي وه چې کومه به هغوی د نوري په کاش کښې ساتله،

^{ً)} صحيح البخاري(٨٤٤/٢هـ ٨٤٧) كتاب المرضى باب قول المريض قوموا عنى رقم(٥۶۶٩)-ً) فتح الباري(١٢٠٩)-

^{ً)} حوّاله بالا

⁾ اخرجه العقيلي كما في فتح الباري(٢٠٩/١)-

يعني د عذر د وجه هغوي ورته اجازت ورکړې وي

يسي. صدار د وجه تسوی وريمه به رح در چېه دی او په آخر کښې د ابن عباس ۱۳۵۶ په حديث سره د باب ختميدنه نې او کړه، چې په هغې کښې د حضورياک ۱۲٪ د داسې خط په باره کښې ذکر دې چې هغې سره اختلافات ختميږي او د ضلالت و گمراهئ دوازه بندیری (^۱) والله اعلم

٣٠-باب: الْعِلْمِ وَالْعِظَةِ بِاللَّيْلِ

ترجمة الباب كښې دلته العظة دې او په بعضو نسخو كښې اليقظة دې او هم دا د حديث

زیات مناسب دې، دغه شان په بعضو نسخو کښي د مخکښې باب نه پس دې (۲) تیر شوې باب سره مناسبت: د دې باب د مخکښې باب سره تعلق څه دا شان دې چې په مخکښې باب کښې د کتابت علم ذکر دې، چې د علم په پوخ والی او کوشش او محنت باندې دلالت کوی او په دې باب کښې د شپې په وخت کښې د تعلیم او نصیحت ذکر دې، دا هم د

محنت، جدوجهد او د علم د حاصلولو په ګران والي باندې دليل دې، ^۲، والله اهلم

د ترجمهٔ الباب مقصد حافظ ابن حجر فرماني چې مصنف په دې باب سره خبرداري ورکوي چې د ماسخوتن نه پس خبرې په دې صورت کښې منع دي چې کله د خپر خبره نه وي (

حضرت ګنګوهې گښځ فرمانۍ چې د دې باب نه پس باب السبوق العلم راروان دې دا دواړ. بابونه نزدې دی خو دواړو کښې فرق دې د دې فرق ښکاره کولو د پاره دا دوه بابونه جدا جدا راوړلې شوی دی.

د دې باب غرض په دې خبره باندې تنبيه ورکول دی چې خوب اوکړې او بيا راپاسې نو د هغې نه پس خبرې سمو کښې داخلې نه دي او هم دغه وجه ده چې امام بخاري پيځ د لته د سمر ذكر او نه كرلو.

د بل ترجمة الباب نجور دادي چي عام سمر خو منع دي البته سمر في العلم منع نددي (٥) حضرت شيخ الهند يكتلخ فرمائي و حضرت عبدالله بن مسعود روايت دي كان التي كالم يتعولنا بالموعظة في الايام كهاهة السآمة علينا رن

دغه شان د حضرت انس تانخ حدیث دی ایسه و اولاتعسه و اردی

^{ٔ)} فتح الباری(۲۱۰/۱)-

⁾ عمدة القارى(١٧٢/٢)-

^{ً)} عبدة القارى(٢١٧٢)-

⁾ فتح الباري(٢١٠/١)-

^{نم} لامع الدرى مع الكنز السوارى فى معادن لامع الدرى(٣٤٠-٣٤٠_{) -}

مُ صَعْبِح البخارَى(١٤/١)كتاب العلم باب ما كَان النبي تُلَيِّ فِي يَتَخُولُهم بالموعظة..رقم(٤٩)-

[&]quot;) صحيح البخاري(١٤/١) كتاب العلم باب ما كان النبي مُؤلِيمً يتخولهم بالموعظة ..رقم (٤٩)-

دغه شان د ابن عباس الله ارشاد دې لاتيل الناس هذا القران د ،

د دې ټولو رواياتو او آثارو نه ظاهره ده چې د تذکير او تعليم د پاره د آوريدونکو تازګی ضروری ده، او شپه چونکه د خوب او آرام د پاره وی نو ددې نه د شپې تعليم او تذکير مکروه والي په خيال کښې رازې

[990A , DAFF , DO. 9 , PF. F , 1 , VF]

رجال الحديث

🕜 صدقه: دا صدقة بن الفضل ابوالفضل مروزي مُثلثة دي 🖒

هنوی د اسماعیل بن علیه، حجاج بن محمد،سفیان بن عیینه، عبدالله بن وهب، عبدالله بن وهب، عبدالله بن وهب، عبدالله و وکیع بن عیینه، معتمر بن سلیمان، وکیع بن الحراح، یحیی بن سعید القطان او یزیدبن هارون این وغیره نه د حدیث روایت کړې دې د دوی نه روایت کونکو کښې امام بخاری، امام عبدالله بن عبدالرحمن، محمدبن نصر مروزی، یعقوب بن سفیان فارسی، او عبیدالله بن واصل بخاری این وغیره دی، ()

وهب بن جرير ركيتي فرمائي جزى الله اسحاق بن راهويه وصدقة ويعمرون الاسلام خيرا احيوا السنة بارض المشهق (ف)

عباس بن عبدالعظيم عنبري ﷺ فرماني رايت ثلاثة جعلتهم حجة فيا بيني وبين الله: احبد بن حنبل، وزيدبن البهارك، وسدقة بن الفضل (^٢)

امام نسائی فرمائی ثقة (۲)

⁽⁾ صحيح البغاري(٩٣٨/٢) كتاب الدعوات باب ما يكره من السجع في الدعاء وقم(٤٣٣٧)-

^{ً)} ابوابَ والتراجم(ص۵۵)-ً) تهذیب الکمال(۱۴ ٤/۱۳)-

⁾ تهذیب الکمال(۱۳ / ۴۵ / ۱ د ۱۵ / ۱۰)-*) تهذیب الکمال(۱۳ / ۴۵ / د ۱۹۵)-

م) تهذيب الكمال(١٣/١٥)-

م حواله بالا

۲) تهذیب الکمال(۱۴۶/۱۳)-

حافظ ذهبى فرمانى الامام الحافظ القدوة شيخ الاسلام (١)

ابو بشير دولابي ﷺ فرمائي لَقَة (٢)

حافظ ذهبی بیا فرمائی امامژهت 🖔

حافظ ابن حجر مُؤلِدٍ فرمائي لقة (أ)

ابن حبان کی دوی په کتاب الثقات کښې ذکر کړې دی او فرماني کان صاحب حديث وسنة ه

د دوی انتقال ۲۲۳هجری یا ۲۲۷هجری کښې اوشور ۲، رحمه الله تعالی رحمهٔ واسعهٔ

ابن عیینه دا مشهور محدث سفیان بن عیینه بن ابی عمران هلالی کیای دی، د دوی مختصر حالات د بدء الوحی په رومبی حدیث کنبی تیر شوی دی (او څه تفصیل سره په کتاب العلم باب قول المحدث: حدثنا او اعبرنا و انهانا الاندې تیر شوی دی (^)

معموردا امام معمربن راشدازدي بصري الله دې د دوي حالات اوس روستو باب باب كتابة

العلم لاندي تير شول،

 عمرو: دا مشهور امام او فقیه عمرو بن دینار مکی جمحی شیخ دی د دوی حالات اوس روستو باب باب کتابة العلم لاندی تیر شوی دی.

ويحيى بن سعيد دا امام يحيى بن سعيدانصارى مدنى المائي دى، د دوى مختصر حالات د بدء الوحى به رومبى حديث كبنى دى ()و لو تفصيل سره به كتاب الايمان باب صوم رمضان

احتسابامن الايمان كنبي تير شوى دى (١٠)

تنبیه بعضی حضراتو دلته د یحیی بن سعید مصداق یحیی القطان گرزولی دی دا خبره صحیح نه ده ځکه چی د یحیی القطان د امام زهری کا سره ملاقات او اوریدنه ثابت نه ده (۱)

⁾ سيراعلام النبلاء(١٠/١٥)-

لكنى والاسماء (٨٠/٢)-

["]) الكاشف(٢/١) رقم(٢٣٨۶)-

^{°)} تقریب التهذیب(ص۲۷۵) رقم (۲۹۱۸)-

^د) الثقات لابن حبان(۳۲۱/۸)-

م سيراعلام النبلاء (١٩٠/١٠)-

^{^)} کشف الباری(۱۰۲/۳)-^) کتاب الباری(۲۳۸/۱)-

^{&#}x27;) کشف الباری(۳۲۱/۲)-

[٬]۱ فتح الباري(۲۱۰/۱) وعمدة القاري(۱۷۲/۲)-

الزهرى دا امام محمدبن مسلم بن عبيد الله بن عبدالله بن شهاب زهرى كله دى د دوى مختصر حالات د ۱۲۰۰ الوس د دريم حديث لاندي تير شوي دي٠٠،

🚓 هند دا هندبنت الحارث الفراسية يكس القاء بعدها دا مهبلة ثم الف ثم سين مهبلة_ ﷺ ده، دوی ته به قرشیه هم و نیلی شور ۱، دا د معبدین المقدادین الاسود بی بی ده ۳، ا دا د ام سلمه الله مدوایت کوی، د هغوی سره خصوصی تعلق لرونکو نه و ددی

ُ دَدِي نُهُ امام زَهْرِي كُمَالِيَّةً رُوايت كُوي، ^۵. ابن حبان دا په کتاب الثقات کښي ذکر کړې ده، ۲

حافظ ابن حجر فرمانی ۱۲۵ ^{(۷}) د دوی حدیث د مسلم به علاوه باقی د صحاح په کتابونو

كښى موجود دى (^) رحمها الله تعالى رحمة واسعة

تنبيه دا هندبن الحارث فراسيه صرف د ام سلمه ١١٥٪ نه روايت كوى او ددې نه روايت كونكو کښې د امام زهرې نه علاوه بل څوک نشته، د دې باره کښې د جرح وتعديل علماؤ نه څه قسم تعديل او تجريح هم نقل نه دې، البته صرف امام ابن حبان دوې په کتاب الثقات کښې د کر کړې ده.ځکه چې هغه هر هغه راوي ثقه ګڼړي چې د چا باره کښي جرح منقول نه وي.اګرچه تعدیل د جا نه منقول وی یا نه 🖒

خو د جمهور په نېز داسې راوی مجهول ګڼړلې شی او د هغه حدیث د 'صحیح مرتبې ته رسىدلى نەشى، ٔ '

د دې جواب دا دې چې بعضي حضراتو دې ته صحابيه وئيلې دی، نو په دې صورت کښې خو هيڅ اعتراض نشته او که دا صحابيه نه وي نو تابعيه به وي او په تابعينو کښې که داسې حضرات وی چې د هغوی تعدیل او تجریح منقوّل نه وی د هغوی روایات بعضی حضرات نه قبلوی او بعضی ډیر نېي قبلوی، چنانچه حافظ سخاوی ﷺ فرمانی

^{&#}x27;) كشف الباري (٣٢۶/١)-

[&]quot;) كما في الصحيح البخاري:حدثني هند القرشية (١١٧/١)كتاب الاذان باب مكث الامام مصلاه بعد السلام رقم (۸۵۰)-

^{ً)} نهذيب الكمال (٣٢٠/٣٥)_

^{ً)} حواله بالا

^د) حواله باله

⁾ النقات لابن حبان(٥١٧/٥) ..

⁾ تقريب التهذيب(ص ٧٥٤) رقم(٨٤٩٥) -

م) نهذیب الکمال(۳۲۰/۳۵)-

^{ً)} قال ابن حبان:لان العدل من لم يعرف منه الجرح ضد التعديل فمن لم يعلم بجرح فهو عدل ادًا لم يبين ضده. الثقات لابن حبان (١٣/١) -

⁾ فتع المغيث للسخاري(٤/٢)-

وقد قيل هذا القسم مطلقا من العلباء من لم يشترط في الرادى مزيدا على الاسلام وعزالا ابن المواق للعنفية حيث قال: انهم لم يفصلوا بين من روى عنه واحدوبين من روى عنه اكثر من واحد بل قبلوا رواية البجهول على الاطلاق ()

يعنى علماؤ په راوى كښې د مسلمان كيدو شرط نه علاوه بل شرط لګولې نه دې دا حضرات داسې مجهول رواى روايت قبلوى، او دا خبره ابن المواق احنافو ته منسوب كړې ده.چنانچه هغه وانى چې احنافو په يو راوى كښې دا فرق نه دې كړې چې د ده نه يو كس روايت كوى يا د يو نه زيات روايت كوى، بلكه مطلقا د مجهول روايت قبلوى

حافظ سخاوی فرمانی چی: مجهول راوی،چې د چا نه صرف یو راوی روایت کوی هغه قبلول ددې علماؤ حضراتو په مذهب باندې لارم دی چې وانی چې د یو عادل راوی د چا نه روایت کول د هغه تعدیل دې،بلکه امام نووی خو ډیرو محقیقینو پسې دا خبره منسوب کړې ده چې د هغوی په نیز داسې راوی قابل احتجاج دې، دغه شان ابن خزیمه کولی هم د دې خبرې قابل دې چې عین جهالت د یو مشهور راوی په روایت کولو سره ختمی چی،او دې طرف ته د هغه د شاګرد ابن حبان کلام هم اشاره کوی در ،

حافظ سخاوى فرمائى: وبالجبلة: فرواية امام ناتل للشريعة لرجل مهن لم يروعنه سوى واحداقى مقامر الاحتجام: كافية قى تعريفه وتعديله (⁷)

یعنی یو امام چې د شریعت ناقل او راوی مشهور وی او هغه د احتجاج او استدلال په ځائي کښې د یو داسې راوی نه روایت اوکړی چې د هغه نه سوا د یو کس نه چا روایت نه وی کړې،نو د هغه د تعریف او تعدیل د پاره ډیره ده٠

دي حيثيت سره كه اوكتلي شي نو د امام بخارى په شان د شريعت نقل كونكي امير المومنين في الحديث د هندبنت الحارث يا ددې پشان نور راويانو نه حديث نقل كول، دغه راوي لره به د جهالت نه اوباسي،

دغه شان حافظ ابن كثير كُلُط فرمائي :

۱ ذاکان عصرالتابعین والقرون المشهود لهم بالغیرفانه پستانس بروایته ویستضام بهانی مواطن (۴) یعنی هغه راوی چې هغه نه صرف یو کس روایت کړې وی، تابعین یا قرون فاضله سره تعلق لری نو د هغه روایت به د استیناس په طور سره اخستلې شی او مختلف ځایونو کښې د هغې نه فائده هم اخستلې شي والله سهحانه اعلم

ر) فتح المغيث للسخاوي(٤٥/٢)-

[&]quot;) فتع المغيث(٤٥/٢)-

رً) فتح المغيث للسخاوي(٢/٥٠)-

أً) اختصار علوم الحديث (ص٨١) النوع الثالث والعشرون:معرفة من تقبل روايته ومن لاتقبل وبيان الجرح والتعديل)-

(A) ام سلمه نام الله الله هند بنت ابى آمية بن المغيرة بن عبدالله بن عمر بن مخزوم قرشيه مخزوم قرشيه مخزومية الله بن عمر بن مخزوم قرشيه مخزوميه تأثال ده، د ابواميه نوم سهيل يا حذيفه وونيلي شيد ()

ا سلمه تا د حضورباک تا په زوجیت کښې د راتلو نه مخکښې د خپل تره ځوی حضرت ابوسلمه تا ته د خپل تره ځوی حضرت ابوسلمه تا تا کښې وه، د هغه نه د دوی اولاد عمر ، بره ، سلمه، عمره او دره پیدا شوې وړ. دا ابوسلمه د حضورباک تا د ترور بره بنت عبدالمطلب خونې وود)

ووری است. ابوسلمه نظائظ او ام سلمه نظائله دواړو حبشي طرف ته هجرت کړې وودا

کلد چې حضرت ابوسلمه د غزوه احد نه پس وفات شو نو دصحيح قول مطابق په ۴هجرني کښې خضورپاک پله دوی سره نکاح اوکړوه ک

حضرت ام سلمه گاهی یو ځل خپل تیر شوی خاوند ابوسلمه گاهی سره خبرې کولی چې ما اوریدلې دی چې د کومې ښځې خاوند مړ شی او هغه جنتی وی. او د هغه بی بی د هغه نه پس بل چا سره واده اونه کړی نو الله تعالی به دا دواړه په جنت کښې یوخاني کوی. دغه شان که ښځه وفات شی او خاوند پاتې شی بیا به هم دا حالت وی. په دې باندې ابوسلمه گاه او فرمانیل چې ته خما نه وعده اخستل غواړې چې خه ستا نه پس بل چا سره واده او نه کړم او ته خما نه پس بل چا سره واده اونه کړی؟ بیا نې اوفرمانیل چې خما خبره به ته اومنې؟ ام سلمه گاهی اوفرمانیل چې د منلو په غرض سره خو مشوره کوم، په دې سره ابوسلمه گاهی اوفرمانیل چې ته خما نه پس نکاح او کړه او دعا ني او کړه اللهم ارتهی ام سلمه بعدی رجلا خیرا منه کالای ته دی ام سلمه تو ته داسې کس ور کړه چې خما نه خه وی او نه هغه رسوا

کړی او نه تکلیف ورکړی حضرت ام سلمه ﷺ فرمانی چې د آبوسلمه ﷺ د وفات نه پس ما سوچ کولو چې د ابوسلمه ﷺ نه څوک خه کیدلی شی (۲) دلته حضورپاک ﷺ هغوی ته د خاوند د وفات نه پس اوفرمانیل چې:

ما من عبد تصيبه مصيبة فيقول: إنا لله وإنا اليه راجعون اللهم اجرنى في مصيبتى واخلف لى خيرا منها الا اجرة الله في مصيبته واخلف له خيرا منها "

یعنی: چې کوم بنده په مصیبت کښې مبتلا وي او هغه انا لله وانا الیه راجعون ونیلو نه پس عرض او کړي چې اې الله اماته په دې مصیبت باندې اجر راکړې او د دې نه خه بدله راکړې، نو الله تعالي ده تعه دې مصیبت باندې اجر ورکوي او د دې نه خه بدله ورته ورکوي:

ستعاني ده ندېد دې مصيبت باندې ښر ور نوی او ۱۵ ما ما ۱۵۰ و وي د ابوسلمه نه ام سلمه پې فرماني چې کله د ابوسلمه پې انتقال اوشو نو ما سوچ کولو چې د ابوسلمه نه ځوک خه کيدلې شي،خو بيا مي زړه او کړو او مې وئيل، نو الله تعالى د هغه په ځاني باندې

^{ً)} تهذيب الكمال(٣٥٣١٧)-

⁾ السيرة الحلبية (٣١٩/٣)-

^{ً)} حواله بالا

⁾ تهذیب التهذیب(٤٥۶/١٢)-) الاصابة(٤٧٣/٤)-

رسول الله نظم راكرور'،

هر کله چی آبوسلمه ناش وفات شو نو ابوبکر ناشؤ مخکسی هغی ته د نکاح خبر ور واستولو،هغوی انکار اوکړو،د هغی نه پس حضرت عمر ناشخ خبر اولیګلو هغوی انکار اوکړو، دې نه پس حضورپاک کا الله حاطب بن ابي بلتعه قاصد جوړ کړو او وئې ليږلو، هغوي د

حضورياك فالملم بيغام اورسولو

ام سلمه رفي کوم ځائي حوشحاله شوه هلته هغې د هوښيارتيا نه هم کار واخستلو، هغې اوفرمانیل چې ځما عمر اوس ډیردې ځما واړه واړه بېچې دی او په ما کښې غیرت هم ډیر دي. حضورپاک نکه اورته تسلی ورکړه او د هغوی نکاح حضورپاک که سره اوشوه ()

د ام سلمه عليه فراست او هوښيارتيا منلي شوې ده،د غزوه حديبيه په موقع کښي حضور پاک الله صحابه كرامو الله ته د هدى د ذبح كولو او د سر خريلو حكم درې پيرتې وركړو خو نه چا هدي ذبح کړه او نه چا حلق او کړو ،

ام سلمه ﷺ ته چې خبر اوشو نو مشوره ئې ورکړه چې اې رسول الله اصحابه کرام په دې روغي باندې خفه دي، تاسو چاته څه وايئ مه، تاسو خپله هدې دبح کړي او حلق او کړني،

حضور ﷺ په دې مشوره باندې عمل او کړو بس د هغوي هدي ذبح کول وو چې ټولو صحابه

المومنين ﷺ په مشوري سره په آساني سرّه حل شوه (۲٫ ام سلمه ين د حصور تلي نه علاوه د ابوسلمه تا او فاطمه تي نه هم حديث نقل كوى

د ام سلمه في نه روايت كونكو كښي عمربن ابي سلمه، زينب بنت ابي سلمه، عامربن ابي اميه، مصعب بن عبدالله بن ابي اميه، عبدالله بن رافع، نافع، سفينه، خيره د حسن بصري مورى، سليمان بن يسار، اسامه بن زيد، هندبنت الحارث، صفيه بنت شيبه، ابوعثمان النهدي، عروه بن الزِبير، امام شعبي او كريب مولى ابن عباس الله وغيره ډير صحابه كرام او تابعین شامل دی، ۲٫۰

د ام سلمه ﷺ نه تقریبا دوه سوه او اته اویا(۲۷۸) احادیث روایت شوې دی، په هغې کښې ديارلس احاديث متفق عليه دي، په دريو كښې امام بخارى متفرد دې أو په دريو كښې امام مسلم متفرد دی^۵،

د ام سلمه ۱۵ وفات په کال کښې ډير اختلاف دې بعضو ۵۹ هجري ياده کړې ده او بعضې فرماني چي ۲۱ هجرني کښې وفات شوي ده . (۲)

⁾ صحيح المسلم كتاب الجنائز باب ما يقال عند المصيبة رقم (٢١٢٦_٢١٢٩)-

⁾ الاصابة (٤ ٢٣/٤)-

⁾ السيرة الحلبية (٢٣/٣)-") تهذيب الكمال(٣١٧/٣٥)-

^ه) خلاصة الخزجى(ص٩۶)-

مُ تهذيب التهذيب(١٢/١٥٤ و٤٥٧)-

امسلمه تُنَّهُا د حضورپاک تَنَهُمْ په بیبیانو کښې د ټولو نه په آخره کښې وفات شوه (۱) رخوالله عنها دارضاها

آوه: حدثنا صدقة اخبرنا ابر عیینة، عر معبر، عر الزهری، عر هند عر ام سلمة و مدن عر هند عر ام سلمة و مدن ام سلمة و مدن به دی سند کنبی دکشمه به دروایت کنبی عن هند به خانی عن امراق راغلی دی، دغه شان به بل سند کنسی همد ابو در به روایت کنبی د هند، به خانی امراق لفظ راغلی دی

کښې هم د ابوذر په روايت کښې د هنډ په خاني امراة لفظ راغلې دې ګويا امام زهرې پښتو بعضې وخت نوم ښکاره ذکر کوي او بعضې وخت پټ ذکر کوي. ۲

قوله: و المروويحيى بر سعين دا دواړه نومونه يا خو مرفوع دى يا مكسور دى. د مرفوع په صورت كښې اسعين د د مرفوع په صورت كښې استيناف دې گويا ابن عيينه چې كړم خانې د معمر نه روايت كوى هلته كښې د عمرو بن دينار او يحيى بن سعيد نه هم روايت كوى، البته د عمرو نه مخكښې صيغه د اداء حديث ئې حذف كړه، چنانچې په مسند الحميدى كښې ددې سند څه دا شان دې حدثنا العبيدى تال حديثنا ويحيى بن سعيد عن الزهرى .. حدثنا

معمر..'۲) او د کسرې په حالت کښې به په معمر باندې عطف وی. **قولم**: استيقظ النبي ۴<u>۴٪ ذات ليلة:</u>حضورپاک۴٪ يو ورځ د خوب نه پاسيدلو،

قوله: فقال: سبحان الله! : هغوى اوفرمائيل سبحان الله!

دا لفظ مصدر دې خو د حيرانتيا د پاره استعماليږي، او دلته هم د تعجب د پاره استعمال شوي دي (٥) شوي دي (٥)

قوله: ماذا انزل الليلة من الفتن وماذا فتح من الخزائن؟ نن شبه كومي كومي فتني نازلي شوي دي؟ فتني نازلي شوي دي؟

ماذاً كنيس ما سواليد ده او دا اسم اشاره ده، كويا ماذا الوقوق به معنى كنبي ده، يعنى دا تعنى دا تعنى دا تناكه وافقيت دي،

دا هم ممكن دى چې مما خو سؤاليه وى او 'ذا' موصوله وى، نو اوس مطلب به دا شي ممالله ى اول الليلة يعنى نن شپه نازليدونكې فتنې كومې كومې دى؟ دا هم احتمال دې چې ماذا توله استفهاميه كلمه وى،

^{&#}x27;) سيرة المصطفى(٣٠۶/٣)-

^{ً)} فتح البارى(٢١٠/١)-

⁾ مسند العميدي(١٤٠/١)- احاديث ام سلعة ذوج النبي كلي وقم (٢٩٢٠)-

⁾ فتع الباري(١/١١)-

⁾ عمدة القارى(١٧٣/٢)-

يو احتمال دا دې چې 'ما نکره موصوفه يعنی د نشي ، په معنی کښې وی. يو امکان دا هم دې چې 'ما' استفهام د پاره وی او 'دا' زانده وی. ()

التل د مجهول صيغې سره دې او د کشميه نی په روايت کښې الال الله و راغلې دې. التوال لغوى معنى اقامت يعني اودرول دى،ځنګه چې ونيلې شي اتول الجيش بالبلد او ول الا**ميربانق**ص او يا ددې معنى په لغت كښې يو څيز لره د بره نه لاندې حركت وركولو ته او

راكوزولو تەوئىلىشى. دلته د لغوی معنّی نه علاوه خوب مراد دې،ګویا الله تعالی حضورپاک ﷺ ته د وحی په

ذريعه په خوب کښې دا ذکر شوې څيزونه اوخودل، چې د هغې نه په اتيل سره تعبير اوکړي

شور^۲) بیا دلته د نقتن نه مراد عذاب دې او د خواتن نه مراد رحمت دې. عذاب نې ختنه سره تعبیر او کړو ځکه چې دا فتنې په اصل کښې عذاب ته رسوونکې

علامه داؤدى كين فرماني چي ما ذا انول الليلة من الفتن او ماذا فتح من الخزائن دواره يو دي، دويمه جمله د رومبئ تاكيد دې ځكه چې فتح كړې شوې خزانې د فتنې سبب جوړيږي، آ، خو ښكاره داده چې دا جدا جدا دى او مطلب دادې چې حضورياك على اول په خوب كښې اوليدل چې د هغوي نه پس ډيرې فتنې راتلونکې دي او د هغوي امت ته به خزاني حاصلېږي دخوب نه پاسيدو نه پس د تعبير په ذريعه يا د وځي په ذريعه سره ددې حقيقت معلوم شو. ددوی د دې پيشن ګويئ مطابق د هغوی نه پس څومره فتنې په امت کښې پيدا شوې او صحَّابِه كراَمُونَتُكُمْ او د هغوى نه پس خلقو ته څومره خزانې ميلاؤ شوې او هغوى څومره ملکونه فتح کړل دا ټول د حضورپاک ﷺ د معجزاتو نه وور^هي

قوله: ايقظوصواحب الحجر : حجري والدرا پاسوئي.

ايقظو د باب افعال نه د امر صيغه ده او صواحب د صاحبة جمع ده په بعضو نسخو کښې صواحهات الحجزدې او دا جمع الجمع ده،ددې نه مراد ازواج مطهرات کان دی ګویا چې په دغه شپه د ام سلمه تا نمبر وو،حضورپاک تا چې کله دا کلمات اوفرمائیل نو ام سلمه تا د دا واوریدل او نقل نې کړل ()

^{ً)} عمدة القارى(١٧٣/٢ و ١٧٤)-

[&]quot;) عمدة القارى(٢/٤/١) وفتح البارى(٢١٠/١)-

^{ً)} حواله جات بالا

⁾ حواله جات بالا

مُ عمدة القاري(٢/ ١٧٤)-م حواله بالا

علامه كرماني پيخ يو احتمال دا ليكلي دې چې دا ايقظو مجرد دې او ددې معني التبهو ده، دې نه پس صواحب الحجراد منادي د وجه نه به منصوب وي (١٠

خو دا صرف احتمال دې نه د روايت نه ثابت ده او نه د لفظ نه ددې تائيد کيږي، ځکه که چرې ايقظو د مجردو نه وو نو ايقظن جمع مونث حاضر به نې راوړلد، حضورپاک ﷺ ددې ارشاد په ذريعه ګويآ دا اوفرمانيل چې دا وخت د اوده کيدلو او د ناراستی نددې په داسې وخت کښې الله تعالی طرف ته رجوع پکار ده چې د فتنو نه بج شی

او د الله تعالى د رحمتونو نه ډک شي فانده په دې کښې سرو ته تعليم دې چې خپل کوروالاد شپې په وخت کښې د مونځ او د ذکر د پاره راپاسوني خاص طور په داسې حالاتو کښې چې د الله تعالى ويره پيدا کيدلو والاحالات مخبسي ته وي رأ،

وله: فرب كاسية في الدنيا عارية في الاخرة: ديري سخي به دنيا كنبي كيري

اغوستونکې به وي، آخرت کښې به بې پردې وي. رب د تقلیل د پاره استعمالیږي او په زیاتوالي سره د تکثیر د پاره هم استعمالیږي،او دلته د تکثیر د پاره ده.

د رب مجروربه مکسور وي ددې صفت يا خو مفرد راوړلې شي، لکه ونيلې کيږي رب صديق رنع، فته او کله جمله د صفت په توګه سره راوړلې شي لکه رب صديق لم يتغيرع، فته او کله د هغى صفت شبه جمله راوړلى شى لكه رب صديق عندك عرفته او رب صديق في الشدة عرفته. دلته هم فى الدنيا شبه جمله كرخولو سره د كاسية صفت اوكرخولو

بيا عارية مجرور هم او ونيلي شو په دې صورت كښي دا براه راست د كاسية صفت ګرځي، او دا مرفوع هم اووئيلي شو په دې صورت کښې به دا د مبتدا د پاره خبر جوړ شي يعني هي عاريقن الاخرة او بيا به دا ټوله جمله د کاسية صفت اوګرخولې شي،

دلته دا هم دا معلومیدل ضروري دي چې د رب او ددې مجرور یو فعل ماضي سره څه معنوى اعتبار سره څه تعلق او اتصال شته ، لهذا تقديري عبارت دا شان شي رب كاسية في الديا مارية في الاخرة عرفتها بياد رب حرف جار او ددي مجرور د باره اعرابي اعتبار سره يو فعل يا شبه فعل سره څه تعلق ضروري دې که نا؟ دواړه خبرې دي، که تعلق ضروري اوګرځولي شي نو دا جار مجرور عهدته سره به متعلق شی گنی رب ته به اسم وئیلو سره دا به مبتدا یا مفعول او مرخوو ،لهذا و رب كاسية به مبتداش او عرفتها به ددې خبرشي يا و رب كاسية به مفعول

⁾ شوح الكومامني(٢/١٣٠)-) عملة القارى(٢/٤/٢)-

كفيل إلياري (١٥٤/٢)-

مقدم او عما**نتها** بدددې عامل شي () **دلفظ کاسية تحقيق** لفظ کاسيه د کسا يکسو نه اسم فاعل د مؤنث صيغه ده.ددې معني کپړا ورکول او اغوستل دی،خو دلته اسم فاعل د اسم مفعول په معني سره دې ګويا کاسيه: د "مکسوة"په معنی سره دې لکه "ماء دافق" د "ملځوق" په معنی سره دې او 'عیشة راضیة"ر

مرضية په معنی سره دې په دې معنی کښې د حطینه شاعر دا شعر هم دې

دع المكارم لاترحل لمغيتها واقعد فانك انت الطاعم الكاسي

يعني د شرافت څيزونه پريښودو سره دې پسې مه کيږد، کينه ځکه چې ته خو صرف د خوړلو

اُو اغوښتلو د پاره يې دلته الکاسې د المکسو په معنې سره دی، چاته چې کپړې اغوښتلې شوې وی (َ) د کار د المکسو په معنې سره دی، چاته چې کپړې اغوښتلې شوې وی (َ) **د حدیث شریف مفهوم**:ددّي جملي مفهوم یا خو دادې چې دا ښځې داسې سپکې او نړني کپرې اغوندی چې هغې سره دننه اندامونه ښکاریږی، یا د اندامونو رنګ ترې بهر راوزې.

دغه شان ددې په حکم کښې دا هم دی چې کېږې دومره تنګې واچولې شي چې دننه اندامونه بهر راوځي او د هغې جوړښ ښکاره شي،

دغه شان ددې مفهوم دا هم دې چې دا ښځې په دنيا کښې عمده او قيمتي لباس اغوستونکي دي خو په آخرت کښي به د حسنات او نيکو نه بالکل خالي وي آ،

علامه طيبي ليني وماني چې حضورياک اله چې کومې خپلې بيبيانې د خوب نه راپاسولي د هغې علت په دې جمله کښې بيان شوې دي، کويا هغوی دا فرماني چې از واج مطهرات په دې حيثيّت سره چې د حضورباک ﷺ كور والااو بيبياني دي،دوي له د غفّلت او ناراستي نه كار اخستل پکار نه دی، او په دې خبره بهروسه کولو سره کیناستل نه دي پکار

چې مونّْږ د حضورپاک ﷺ بیبیانې یوو،ځکه که عمل نه وي نو اکثر داسې تعلق په کار نه

د حديث شريف نه اخستلي شوي څه فائدي: د حديث باب نه دا معلومه شوه چې سړي له د شپې په وخت کښې خپل کور والاراپاسول پکار دي چې مونځ او کړي او د الله ذکر او کړي، خاص كرچى كله څه غټه واقعه راشي يا ويرونكي خوب آوويني

دغه شان علماؤ ليكلى دى چې د خوب نه پاسيدو نه پس د الله ذكر كول مستحب دي. يو خبره دا هم معلومه شوه چې عالم لره چې د کومو خبرو نه ويره وّی د هغی نه خپل منونکئ خبرول پکار دی،او د داسې راتلوونکې حادثو نه د بچ کيدلو طريقه هم ښودل پکار دی، بلُ دُا حَدِيثٌ بِهُ يُو لُونِي بِيشُن مُويئ بأَندي هم مشتمل دي چّي پَه راتلونكي وخت به داسې

^{ً)} جمع الهوامع(٢٥/٢-٢٨)-

⁾ عمدة القاري(١٧٥/٢)-") عمدة القارى(٢/٤/٢)-

^{ً)} حواله بالا

نه خی راشی چې لباس اغوښتلو سره سره به بې پر ده وي، نن سبا دا ځمونږ زماني سره څنګه په يكاره لكى،اعاذنا الله من جبيع الشهور والفتن ما ظهرمنها ومابطن. (`، والله اعلم وعلمه اتم واحكم.

٣٠-باب: السَّمَرِفِي الْعِلْمِر

د ۱ پاپ اضافت السمر طرف ته شوې دې هم دا د ابوذر نگانځ روايت دې او معنی نې ده هما پاپ السبرق العلم

د ابوذر نه علاوه باقی روایاتو کښې د بهاب[.] په لفظ باندې تنوین دې ګویا اضافت نه دې او السبر مرفوع دې نو تقديري عبارت به داسې شي هذاباب : فيه السبريالعلم 🗥

دلفظ اسمر تحقيق سمر د ميم فتحي سره هم وليلي شي او دا سكون سره هم وليلي شي. ددې معنی د شپې خبرې کول دی،

سريسرسرادسراد شبى قصى كول.

په اصل کښې سمر د سپوږمي رنګ ته وئيلې شي ځکه چې عربيان به د سپوږمني په شپو

کُنبي ناست بُه وو، ګُپ به نُني لګولو او قصی به نی کولی آ) **تیر شوې باب سره مناسبت**: په دې باب کښې او مخکښې باب کښې مناسبت ښکاره دې چې په مخکښي باب کښي د شپي د علم و نصيحت د مشغلي بيان وو ،او په دې باب کښي د شپی د علمی مشغولتیا ذکر دی (۲)

د ترجمة الباب مقصد حافظ ابن حجر فرمائي چې د امام بخاري مقصد دادې چې د اوده

کیدو نه مخکښې که د علم قصئ او کړې شی نو منع نه دي. په دې ترجمه کښې او تیر شوې ترجمه کښې د حافظ کاله په نظر کښې فرق دادې چې تیره ب ې ر.... دې د دې کښې د اوده کيدو نه مخکښې تخصيص نه دې شوې او دلته د شوې ترجمه عامه ده په دې کښې د اوده کيدو نه مخکښې تخصيص نه دې شوې او دلته د دې قيد لحاظ ساتلې شوې دی (٠)

خلاصه دا چې امام بخاري په اول کښي د شپې د وعظ وتذکير او تعليم وتبليغ جواز بيان كړې دې او اوس داته دې باب كښې د او ده كيدو نه مخكښې د علمي قصه ګويې جواز بيان كوي حضرت شيخ آلهند مُنْ فَيْ فرماني جَي امام بخاري په دې ترجمة الباب سره دا وليل غواړي چې پدرواياتو کښې د عشاء نه پس د قصي وليلو نه منع راغلې ده،خو د حاجت په قدر او مناسب وخت کښې د شپېې د علم قصي کول ثابت او منلې شوې دی، او دا د دې معانعت نه بهر ده. ګويا امام بخاري دا ونيل غواړي چې د ممانعت تعلق بې فاندې خبرو سره دې او که علمي

⁾ عمدة القاري(٢/ ١٧٤ و١٧٥) وفتح الباري(٢١١/١)-

⁾ عمدۃ القاری(۱۷۵/۲)۔

⁾ مختار الصحاح(ص١٢٦و٣١٣) وعمدة القارى(١٧٥/٢)-

⁾ عمدة القارى(١٧٥/٢)-

^ن) فتع الباري(۲۱۱/۱)-

قصئ وی او هغه بیان کړې شی نو دا جائز دی په دې کښې څه کراهت نشته. حضرت شیخ الهند کشته چې کوم مطلب بیان کړې دې په هغنې کښې د دې ترجمې او د مخکښې ترجمي فرق ښکاره دې، د مخکښې ترجمې مقصد خو د شپې په وخت د وعظ او تذکیر جواز بیان شوې دې ددې توهم لرې کولو د پاره چې په دې کښې به آوریدونکو ته تکلیف وی، لهذا دا مکروه کیدل پکار دی، نو د حدیث نه نې اوښودله چې دا مکروه هم نه

دى ﴿ وَاللّٰهِ تَعَالَى اللّٰهِ عَلَيْ قَالَ حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بُنُ خَالِهٍ ٤١١٤] حَدَّثَنَا سَعِيدُ بُنُ عُقَيْرِ قَالَ حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بُنَ عُرَّ عَنِ ابْنِ ثِيْمَابِ عَنْ سَالِهِ وَأَبِي بَكْرِ بْنِ سُلْيَمَانَ بْنِ أَبِي حَثَّمَةً أَنَّ عَبْدُ اللّٰهِ بْن قَالَ صَلَى بَنَا النِّيمِ صلَى الله عليه وسلم-الْقِشَاءَ فِي آخِرِ حَبَاتِهِ، فَلَمَّا سَلَّمَ قَامَ فَقَالَ «أَرَائِتَكُمُ لِلْلَّتَكُمُ هَذِهِ، فَإِنَّ رَأْسَ مِائَةٍ سَنَةٍ مِنْهَا لاَيْلُقَى مِمَّنُ هُوَعَلَى ظَهْ الأَرْضِ أَحْلُ وَ٢٩ هَ، ١٩٧٤ ، ١٩٧٤ مِنْ اللَّهُ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ اللّٰهُ عَلَى اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّ

رجال الحديث

السعيد بن عفيو دا سعيد بن عفير دې ددوى حالات كتاب العلم باب من يرد الله به عيرا يققهه قلاي الدين لاندې راغلي دي ٢٠

الليث:دأ أمام ابوالحارث ليث بن سعد بن عبدالرحمن فهمى الله دى ددوى حالات

د بدهالوس د دريم حديث لاندې تير شوې دي ٦٠

عبدالرحمن بن خالد: دا عبدالرحمن بن خالدبن مسافر فهمي مصرى دى، ددوى كنيت ابوخالد يا ابوالوليد دى دا د امام ليث بن سعد د مشرانو نه دى(*)
 هشام بن عبدالملك د طرف نه دى د مصر امير وو(*)

دوی د امام زهری نه روایت کوی

د دوی نه روایت کوونکو کښی آمام لیث بن سعد او یحیی بن ایوب مصری این دی (۲)

⁾ الابواب والتراجم (ص٥٥و٥٥)-

⁷) قوله عبدالله بن عمر المألفئ الحديث اخرجه البخارى ايضا فى صحيحه (٨٠/١) فى كتاب مواقيت الصلاة باب ذكر العشاء والعتمة ومن رأه واسعا وقم(٥/٤) (٥/٤) كتاب مواقيت الصلاة باب السمر فى الفقه والخير بعد العشاء رقم(٤٠١) ومسلم فى صحيحه فى كتاب الفضائل باب بيان معنى قوله كالمجام على راس مائة سنة لا بيقى نفس منفوسة معن هو موجود الآن رقم(٤٤٧٩)و(٤٤٨٠)

[&]quot;) كشف البارى (٣/ ٢٧٤)-

^{°)} تهذیب الکمال(۷۶/۱۷)-۵) حواله بالا

⁾ حواله بالا م حواله بالا

امام ابوحاتم فرمائي صالح ١٠٠٠

امام نسائی فرمائی لیس به باس ۲۰

امام سعيدبن يونس فرمائي وكان ثبتاني الحديث ركم

امام عجلى بينة فرمانى مصرى لقة رمى،

امام ذهلي مين فرماني ثبت ۵٫

امام دار قطنی ﷺ فرمائی کفته (۲)

امام نساني پينځ دوي د امام زهري په شاګردانو کښي د ابن ابي دنسپيک وغيره په طبقات کنی شمیر کړې دې (۲)

امام بحيى بن معين مُعَيِّدُ فرماني: كان عنده عن الزهرى فيه ماثتا او ثلاث ماثة حديث كان الليث

يحدث بهاعنه وكان جدة شهد فتح بيت المقدس مع عمرين الخطاب والني (^،

آمام ابن حبان دوی په کتاب الثقات کښي ذکر کړې دی (۱)

البته ساجي ومن فرمائي هوعندهم من اهل الصدق وله مناكير و١٠٠

دلته مناکير د تفرد په معني باندې به محمول کيږي (۱۰)

ددوی وفات په ۱۲۷ هجرئی کښې اوشود^{۱۲}، رحمه الله تعالى رحمة واسعة ابن شهاب: دا امام محمد بن مسلم بن عبيدالله بن شهاب زهري ﷺ دې ددوى مختص

حالات د پروالوی د دريم حديث لاندې تير شوې دی ۱۳

@ سالم: دا جليل القدر تابعي، د مدينه منوره په فقهاؤسبعه كښي مشهور فقيه، دحضرت

) تهذيب الكمال(٧٧/١٧)-

ً) حواله بالا

ً) حواله بالا

) تهذيب التهذيب(١۶۶/۶)-

أ) حواله بالا

ً) حواله بالا

ً) حواله بالا

) تهذيب الكمال(٧٧/١٧)-

) الثقات لابن حبان(٨٣/٧)-

) تهذيب التهذيب(١۶۶/۶)-) تعليقات الكاشف(٢٤/١) رقم (٣١٨٤)-

(٧/١٧) تهذیب الکمال(٧/١٧)-

") كشف الباري (٣٢۶/١)-

عمر بن الخطاب المن نوسي ابوعمريا ابوعبدالله سالم بن عبدالله بن عمر بن الخطاب قرشي عمر بن الخطاب قرشي عدوي مدني من الايمان و الايمان العيام من الايمان و لاندي تير شوي دي ()

ده ، (ابوبکربن سلیمان بن ابی حشمه: دا ابوبکر بن سلیمان بن ابی حثمه قرشی عدوی مدنی کیلی در . (ابوبکر بن سلیمان بن ابی حشمه دا ابوبکر بن سلیمان بن ابی حشمه دا ابوبکر بن سلیمان بن ابی حشمه در ابوبکر بن سلیمان بن ابی حشمه دا ابوبکر بن سلیمان بن ابی حشمه در ابوبکر بن سلیمان بن ابی در در ابوبکر بن سلیمان بن ابی در در ابوبکر بن ابی در در در ابوبکر بن ابی در در ابوبکر بن ابی در در ابوبکر بن ابی در در ابوبکر بن ابوبک

. د. د ابوبکر د کنیت نه مشهور دې د دوی بل نوم نشته.د ابوحثمه نوم عبدالله بن حذیفه دې،بعضو عدیبن حاتم وئیلې دې (۲)

دوى د حكيم بن خزام، سعيدبن زيدبن عمروبن نفيل، عبدالله بن عمر، سليمان بن ابى حثيم بن خزام، سعيدبن زيدبن عمروبن نفيل، عبدالله بن عمر، سليمان بن ابى حثيمه، ابوهريره، ام المومنين حفصه بنت عمر بن الخطاب او الشفاء ثالاً ندروايت كوى. ددوى ندروايت كوونكو كنبى ابن شهاب زهرى، اسماعيل بن محمد بن سعد بن ابى وقاص، صالح بن كيسان محمد بن منكدر، خالد بن الياس، او يزيدبن قسيط تنظم شامل دى أ

امام زهري مينية فرماني كان من علماء قريش (٥)

حافظ ابن حجر كينية فرماني لقةعارف بالنسب (^٧)

ابن حبان مُعَمَّة دوى په كتاب الثقات كښي ذكر كړې دى (٢) دحمة الله تعالى رحمة واسعة

②عبدالله بن عمر 機 د عبدالله بن عمر 機 حالات د كتاب الايمان باب الايمان وقول النبي 機:

بق الاسلام على عبس · د لاندې تير شوې دى ،^ ،

قوله: صلى بناً رسول الله تأثير العشاء في آخر حياته: حضورباك تأثير موند ته به أخرى ژوند كنبي د ماسخوتن مونخ راكړو،

دحصرت جابر الله په روايت كښي د حصورياك الله د وفات نه يو مياشت مخكښي وضاحت موجود دي: سمعت النبي الله ييقول قبل ان يوت بشهر (١)

د حضرت ابوسعید خدری تا و ایت دی: لها رجع النبی كاللم من تهوك سالولاعن الساعة ققال

۱) کشف الباری(۱۲۸/۲)-

۲) تهذیب الکمال(۹۳/۳۳)-

٢ عمدة القارى(١٧۶/٢) وتهذيب الكمال(٣٣/ ٩٤)-

^{°)} تهذيب الكمال(٣٣/٩٤٩ -

⁽¹) حواله بالا

مُ تقريب التهذيب (ص٤٢٣) رقم(٧٩٤٧)-

ν) الثقاب لابن حبان(۵۶۶/۵)-

۸) کشف الباری(۱۶۳۷)-

^{*)} صحيح السلم كتاب فضائل الصحابة باب بيان معنى قوله المنظم على راس مائة سنة لا يبقى نفس منفوسة معن هو موجود الان رقم(٤٤٨١) و(٤٤٨٣)-

رسول الله كالله الاتال ما تقسنة وعلى الارض نفس منفوسة اليوم (١)

رسون... پهنی د تبوک نه واپس راتلو په وخت هر کلّه چی حضورپاک ﷺ نه د قیامت باره کښی تپوس اوکړی شو نو دا ارشار نی اوفرمائیلو،چی د هغی حاصل دادی چی هغوی اوفرمائیل چی نن ځومره خلق ژوندی دی په دوی باندې به سل کاله تیر نه وی چی ټول به ختم شی.

قوله: فلم اسلم قام وفقال: كله چې هغوى سلام او ترخولو نو پاسيدو او ونې فرمانيل. ارايتكم لينتكم هذه ؟

آیا تاسو دا شپه اولیدله؟ دا یاده ساتئ

آرایتکم کښی همزه د استفهام د پاره ده اودا جمله د استخبار د پاره راخی یعنی دا د اخبرونی په معنی کښی ده،ځکه چې لیدل د خبر ورکولو سبب دې او مقصود دلته زورنه ده،یعنی دا شپه یاده ساتی ()

مطلب دادې چې حضور پاک گه چې ارايتکم ليلتکم هنه ؟ اوفرمانيل د دې معنى دا شوه چې اووليخ د دې معنى دا شوه چې اووليخ د ده و ده پې دا شپه معلومه وى، نو حضور پاک گه خو د شپې متعلق صورة خبر معلوم کړې دې او په حقيقت کښې په دې باندې زور نه ده چې دا شپه ياده کړئ او ياد نې اوساتئ.

قوله: في راس مائة سنة منها لايبقى مير. هوعلى ظهر الارض احد: خكه چې د دې شپې نه سل كاله پس به په دې زمكه كښې چې اوس څوک موجود دى، دې كښې به څوک هم پاتې نه شي.

هم دا روایت مخکښي راروان دې په هغې کښې دی يوپدېنلك انها تخيم دلك القهان ٦٠ يعني . مطلب دادې چې دا به سلو كالو پورې ټول اهل قران ختم كړي

د حدیث شریف مفهموم آو مقصد: حدیث شریف مفهوم خو ښکاره دې چې حضورباک کاله پوره کیدو پیشن ګونی فرمانیلی ده چې اوس وخت څومره خلق موجود دی د نن نه سل کاله پوره کیدو نه پس به څوک به باقی پاتی نه وی. اوس وخت څومره خلق موجود دی د نن نه سل کاله پوره کیدو این بطال کیلی فرمانی چې دې ارشاد پاک سره هغوی ښودنه کول غواړی چې راتلونکې سل کښې دننه دننه ټول به ختم شی ستاسو عمرونه د مخکښې امتونو په شان اوږده نه دی نو لپذه دا لنډی عمرونه مو په کار راولئ او په عبادت کښې د خه محنت نه کار واخلئ را امام نووی فرمانی چې د دې مقصد دا دې چې په دغه شپه څومره خلق د زمکې په مخ باندې

⁾ صحيح المسلم كتاب فضائل الصحابة باب بيان معنى قوله كؤلا على راس مانة سنة لا يبقى نفس منفوسة الغ رقم(۶٤۸۵)-

ایع زوم(۲۱۸۰۰)-]) فتع الباری(۲۱۱/۱)-

^{ً)} صعّبح البخاري(١/٨٤/)-

^{&#}x27;) صعبع البخارى لابن بطال(١٩٢/١)- ﴿

وو د هغوی باره کښې نې خبر ورکړې دې چې دوی به سل کالو نه زیات نه پاتې کیږی،گه ددوی عمر دې ندمخکښې کم وي او که زیات د

تنبيه آمام ابو آمامه بن النفاش کي دې حديث نه په دې خبره استدلال کړې دې چې په دې امت کښې به د يو سړی عمر د سلو کالو نه نه زياتيږي (۱)

خو محقیقن علماؤ دا رد کړې ده چې د حضورپاک کا مقصد دا نه وو بلکه د هغوی دا مطلب وو چې د هغوی دا مطلب وو چې د هغوی ارشاد په وخت کښې چې کوم خلق موجود دی په دې کښې به سل کاله پس څوک هم موجود نه وي ټول به سل کاله تیریدو سره ختم شی او هم دغه اوشوه ، د ابو امامه وینا چې څوک به هم سل کاله پس ژوندې نه وي. غلطه ده ۱

چنانچهٔ په صحابه کرامو کښې د حضرت حکيم بن حزام بن خويلد، حسان بن ثابت، حويطب بن عبدالعزي، سعيدبن يربوع، حمنن بن عوف او د مخرمه بن نوفل تلا عمرونه د يو سل شلو پورې وورگ

دغه شان د حضرت انس *اللائظ* عمر هم د سلو کالو نه اوړېدلي وور^۵،

دغه شان حضرات تابعینو کښې او بیا د هغې نه پس محدیثینو کښې ډیر حضرات داسې تیر شوې دی چې هغوی د سلو کالو نه زیات عمر اوموندلور')

حافظ دهبي دې سلسله کښې يو مستقل رساله ليکلې ده چې د هغې نوم کتاب اهل الباتة

فصاعدا دې

د ذکر شوکې پیشن کویئ تحقیق حضورپاک کالله ۱۰ هجرئ کښې چې کومه پیشن ګونی فرمائیلې وه چې د نن نه سل کاله پس به په موجوده خلقو کښې څوک هم ژوندې نه وی. ټکې په ټکې پورا شوه چنانچه په صحابه کرامو کښې د ټولو نه آخر وفات کیدونکې حضرت عامر بن واتله لیشي کالاو وه چې دهغوی د وفات په باره کښې آخری قول ۱۱۰ هجری دې، چې د هغې تصحیح حافظ ذهبې کړې دې () باقي چې څوم د صحابه کرام دې هغې ی ټول دې هجو نه نه مخکن د فارت کې دې د

باقی چې څومرد صحابه کرام دی هغوی ټول دې هجرئی نه منځکښې وفات شوې وو. حيات خضو: د حديث الباب نه د خضر د وفات منوونکی دليل نيسي،ځکه چې:

^{^)} شرح النووى على صحيح المسلم(٣١٠/٢) كتاب فضائل الصحابة باب بيان معنى قوله كَالْمُجَّار: على راس مانة سنة لا يبقى..الخ)--

^{ً)} الاجوبة المرضية للسخاوي(٣٨٠/٢)-

^{ً)} حواله بالا

¹⁾ فتح المغيث للعراقي(٤٥٥-٤٥٧)-

⁽⁾ قال الذهبي في الكاشف(٢٥٤/١٠) رقم(٧٧٤) "جاوز المائة")-

[&]quot;) كالقاضى شريع.فانه عمر نحو مانة وثمان سنين او اكثر.انظر تقريب التهذيب(ص٢٤٥) وكالقاضى ابى طيب طاهربن عبدالله الطبرى فانه عاش مائة سنة وسنتين.انظر وفيات الاعيان لابن خلكان(٥١٤/٢). ") قال الذهبي ﷺ فى الكاشف (٥٢٧/١) رقم(٢٥٤٨) وبه ختم الصحابة فى الدنيا مات سنة عشر ومائة

على الصحيح")-

والتعلى واسمأثة سنة لايباتي مبن هوعلى ظهوالارض احد

او د حیات خضر قائلین وانی چې دې حدیث کښې د عمل ظهرالارض قید دې او خضر تیایا هغه وخت سمندر کښې وو، یا دا چې دې حدیث د عموم نه خضر تیایا مخصوص دې، څنګه عیسی عیایا او دغه شان ابلیس د دې نه بری دی ()

د حيات خضر بعث مونو به كتاب العلم بهاب ما ذكرى ذهاب موس تهي في البحر الى العضر، كنبي كري دي ()

و مديث الباب د ترجمة الباب سره مطابقت: د حديث باب د ترجمة الباب سره مطابقت بكاره دى خكه چې په دې كښې دى صلى بنا النبي الله العشاء فى آخى حياته فلما سلما قام فقال: ارايتكم كويا حضور پاك الله الله ده يعنى د شپې په وخت كښې د علمى خبرو يا ددهانى ده والله سهحانه وتعال اعلم

رر، ١٠٧ حَدَّنَتُ آدَمُ قَالَ حَدَّنَنَا أَمُعَبَّهُ قَالَ حَدَّنَنا الْمَكَمُ قَالَ سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، مَقَالَ بِتُ فِي يَبْنِ عَالَتِي مَهُونَةً بِنْنِ الْحَادِثِ وَوْجِ النَّبِي صلى الله عليه

^{&#}x27;) فتع البارى(٤٣٤/۶)كتاب احاديث الانبياء باب حديث الحضر مع موسى عليهما السلام)-') كشف الباري(٣٤٥/٣-٣٥٠)-

^{ً)} قوله: عن ابن عباس رضى الله عنهما: الحديث. اخرجه البخارى أيضًا في صحيحه (ج١ص٣٥) كتاب الوضوء باب التخفيف في الوضوء. وقم (١٣٨) و(ج١ص٣٠) كتاب الوضوء. باب قراءة القَرآن بعد الحدث وغيره. رقم(١٨٢) و(ج١ص٩٧) كتاب الأذان. باب يقوم عن يمين الامام بحذائه سواء اذا كان النين. رقم (٤٩٧). وباب اذا قام الرجل عن يسار الامام. وقم (٤٩٨) وباب اذا لم ينو الامام أن يؤم ثم جاء قوم فأمهم. رقم(۶۹۹) و(ج۱ ص۱۰۰) کتاب الأذان. باب اذا قام الرجل عن يسار الامام. رقم (۷۲۶) و(ج۱ ص۲۰۱) كتاب الاذان. بأب ميمنة العسجد والامام. رقم (٧٢٨) و(ج١ ص١١٨) كتاب الاذان. باب وضوءً الصبيان.... رقم (۸۵۹) و (ج۱ ص۱۳۵) کتاب الوتر. باب ماجاء فی الوتر. رقم (۹۹۲) و(ج۱ ص۱۵۹ و ۱۶۰). کتاب العمل في الصلاءو باب استعانة البد في الصلاة اذا كان من أمر الصلاة، وقم (١١٩٨) و(ج٢ص٤٥٧) كتاب التفسير، سورة آل عمران. باب (ان في خلق السموات والأرض.....) الآية. رقم (4054). وباب (الذين يذكرون الله قباما وقعوداً وعلى جنوبهم.....)، رقم (٤٥٧٠). وباب (رينا انك من تدخل النار فقد أخزيته.....) رقم (٤٥٧١) وباب (ربنا أننا سمعنا مناديا ينادى للايمان) رقم (٤٥٧٢، و(ج٢ ص٥٧٧) كتاب اللباس. باب الذوائب. رقم (٥٩١٩) و(ج٢ ص٩١٨) كتاب الأدب. باب رفع البصر الى السعاء. رقم (٤٢١٥) و(ج٢ ص ٩٣٤ و ٩٣٥) كتاب الدعوات. باب اذا انتبه بالليل. رقم (٤٣١٤) و(ج٢ ص ١١١٠) كتاب التوحيد. بابّ ما جاء في تخليق السماوات والارض وغيرها من الخلانق. رقم (٧٤٥٢) ومسلم في صحيحه في كتاب الطهارة. باب السواك. رقم (٥٩٤) وفي كتاب الصلاة المسافرين. باب صلاة النبي (ص) دعاته بالليل. رقم (١٧٨٨- ١٨٠١) والنسائى في سننه. في كتاب الأذان، باب ايذان العومنين الأثمة بالصلوة، رقم (۶۸۷) وفي كتاب الافتتاح. باب الدعاء في السجود رقم (۱۱۲۲)... [بقيه حاشيه به راروانه صفحه..

وسلم-وَكَانَ النَّبِي صلى الله عليه وسلم-عِنْدَهَا فِي لَيْلَتِهَا، فَصَلَّى النَّبِي صلى الله عليه وسلم-الله عليه وسلم-الله عليه وسلم-العِشَاءَ ثُمَّ جَاءَ إلى مُنْزِلِهِ، فَصَلَّى أَرْبَعَرَكَعَاتٍ، ثُمَّ نَامَ ثُمَّ قَامَ ثُمَّ قَالَ «نَامُ الله الْعَلَيْمُ». أَوْ كَلِيلَةُ تُشْيِهُ الْمُنْدِي، فَصَلَّى خَمْرَ اللَّهُ الْعَلَيْمُ اللَّهِ عَنْ يَكِينِهِ، فَصَلَّى خَمْرَ رَكَعَاتٍ ثُمَّ صَلَّى خَمْرَ مَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْمَ اللَّهُ الْعُلْمُ اللَّهُ اللَّ

رجال الحديث

(ادم دا آدم بن ابى اياس عبد الرحمن العسقلاني المسلمين وي دا آدم بن ابى اياس عبد الرحمن العسقلاني المسلمين سلم المسلمين من السائدويدان د لاندې تير شوې دى ()

شعبه دا امام شعبه بن الحجاج بن الورد عتكى بصرى الله دې ددوى حالات هم دې ذكر شوي باب كښي تير شوي دي ()

الحكم: دا الحكم - بفتح الحاء البهبلة والكاف بن عتيبة مصغرا الكندى الكوريك دي الموركك دي الموركك الكوركك وي الموركك الموركك الموركك الكوركك الموركك الكوركك الكوركك الكوركك الكوركك الكوركك المورك الكوركك الك

دوی د عدی بن عدی کندی یا قبیله کنده د یوی ښځی مولی وور"،

دوی د ابوجعیقه السوائی 微 نه علاوه قاضی شریع، عبدالرحمن بن ابی لیلی، ابووائل شقیق بن سلمه، ابراهیم نخعی، سعیدبن سعد، طاؤس، عکرمه، مجاهد، عمروبن میمون، عامر شعبی، عطا ابن ابی رباح، مقسم، قیس ابن ابی حازم، ابوصالح السمان او ابراهیم تیمی نی وغیره ندروایت کوی،

د دوی نه حدیث نقل کوونکو کښې منصوربن المعتمر، امام اعمش، مسعر بن کدام، مالک بن معول،امام اوزاعي،امام شعبه،ابوعوانه اوحمزة بن حبیب الزیات وغیره ډیرحضرات دی، پ

بقيه حاشيه د تيرمخ] وفي كتاب قيام الليل، باب ذكر ما يستفتح به القيام، رقم (١٩٢٠، ١٩٢١) وباب ذكر الاختلاف على حبيب بن أبي ثابت في حديث ابن عباس في الوتر رقم (١٧٠٥ - ١٧٠٧) وأبوداؤد في سننه. في كتاب الطهارة، باب الرجلين يوم أحدهما في كتاب الطهارة، باب الرجلين يوم أحدهما صاحبه كيف يقومان؟ رقم (٢٥٠ و ٤٩١) وفي كتاب التطوع، باب في صلاة الليل، رقم (٢٥٣٠ - ١٣٥٨) و (١٣٥٠) و (١٣٥٧)، والترمذي في جامعه، في كتاب الصلاة، باب ما جاء في الرجل يصلي ومعه رجل، رقم (٢٣٢) وابن ماجه في سننه، في كتاب اقامة الصلاة، باب ما جاء في الرجل يصلي ومعه رجل، رقم (٢٣٢) وابن ماجه في سننه، في كتاب اقامة الصلاة، باب ما جاء في الدعاء اذا قام الرجل من الليل، رقم (١٣٥٧) وباب ما جاء في كتاب اقامة الطلاء، باب ما جاء في الدعاء اذا قام الرجل من

^{&#}x27;) کشف الباری(۱/۶۷۸)-

^{ً)} کشف الباری(۶۷۸/۱)-

^۲) تهذیب الکمال(۱۱۴/۷)– ^۱) تهذیب الکمال(۱۱۵/۷–۱۱۷)–

```
امام اوزاعي كيلي فرمائي مابين لابيتها القدمند ()
```

مجاهدبن رومي مميلي فرمائي رايت الحكم في مسجد الخيف وعلماء الناس عيال عليه (٢)

عماس دوري يُعَيِّهُ فرماني وكان صاحب عبادة وفضل (٦)

سفيان بن عيين موسطة فرمائي ماكان بالكوفة بعدابراهيم والشعبى مثل الحكم وحماد رئى

عبدالرحمن بن مهدى فرمائى ثبت ثقة ٥٠

عبدالله بن احمد بن حنبل رحمهماالله فرمائي سالت اي: من اثبت الناس في ابراهيم ؟ قال: الحكم بن عتيبة، ثم منصور (١)

امام يحيى بن معين وسيد فرمائي الحكم بن عتيبة ثقة (٧)

امام ابوحاته وين فرمائي ثقة ١٨٠

امام نسائى كين فرمائى ثقة ثبت (١٠)

امام عجلي يُنتَثَرُ فرمائي ثبت تقة في الحديث وكان من فقهاء اصحاب ابراهيم وكان صاحب سنة واتباع (' ' يعقوب بن سفيان وكالله فرمائى: كان فقيها لتقة،، دا،

ابن سعد كيس فرماني كان الحكم بن عتيبة لقة، فقيها، عالما، عاليا، رفيعا، كثير الحديث (١٠)

حافظ ذهبي فرمائي تقيه الكونة مع حماد عابد، قادت، ثقة، صاحب سنة (١٢)

البته عجلي مُنطَة فرمائي وكان فيه تشيح الاذلك لم يظهر منه الابعد موته (16)

⁾ تهذيب الكمال(١١٧/٧)-ً) حواله بالا) تهذيب الكمال(١١٨/٧)-ً) حواله بالا نم حواله بالا) تهذيب الكمال(١١٨٠١١٩/٧)-

⁾ تهذيب الكمال(١١٩/٧)-

م حواله بالا

⁾ حواله بالا

^{ً)} تهذيب التهذيب(٤٣٤/٢)-

⁾ تهذیب التهذیب (ج۲ ص ۴۳٤)) الطبقات لابن سعد (٣٣٢/۶)-

⁾ الكاشف(١/١٤٤١) رقم(١١٨٥/٧)-

⁾ تهذيب الكمال(١٩/٧)-

دغه شان د امام شعبه نه نقل دى كان الحكم يفضل عليا على إلى بكر وعور ()

د د سان د سام سعبه د سادی مان ده و ده ، دیرو حضراتو دده د صاحب سنة تصریح کړې ده ، او چې د اخبره شاذ او مردود ده ، دیرو حضراتو دده د صاحب سنة تصریح کړې ده ، او چا هم د تشیع ذکر نه دې کړې ، بیا حافظ ذهبي پیلو فرماني چې د امام شعبه دا قول د سلیمان شاذ کوني په واسطه سره نقل

دي او شاذكوني اعتباري نه دي چنانچه حافظ ذهبي فرماني الشاذكوليس بمعتمدومااظران

الحكميقع منههدان

دغه شان ابن حبانﷺ د دوی تذکره چې کله په الثقات کښې اوکړه نو ورسره ئې دا هم اولیکل کان پرلس، ۲٪ په دې بنیاد باندې حافظ ابن حجر د دوی باره کښې لیکلې دی ثقة، ثبت، فقيه الاانه ربها دلس ([†])

خو په خپله حافظ ابن حجر کیا دوی په خپل کتاب تعریف اهل التقدیس بمواتب الموصوفین بالتدليس كنبي يددويمه طبقه د مدلسينوكښي شمير كړي دي دا دويمه طبقي والاحضرات هغه خلق دی چې د انمه کبار نه دی او د هغوی د عمومی روایاتو په مقابله کښې تدليس ډير کم دی،لهذه د هغوی د امامت، اوچت شان، او د قلت تدلیس د وجه نه ائمه د دوی د تدلیس تحمل هم كړې دې آو په خپل صحيح كښې ددوى احاديث قبول كړې هم دى ٥٠

زورنه:امام بخاری د دوی د تذکرې په آخره کښې ليکي: 'وقال بعض اهل النسب: الحکم بن عتيمة بن النهاس، اسه عهدل، من بقى سعد بن عجل بن لجيم، فلا ادرى حفظه امرلا؟ (^٢)

يعنى بعضى نسبنامو د حكم بن عتيبه نسب نامه ليكلو كښى دا تفصيل ذكر كړې دې،

معلومه نه ده چې هغوی په صحیح توګه باندې یاد کړې دې او لیکلي دې یا نه؟ نو ګویا امام بخاری د احتمال په درجه کښې ذکر کوي چې الحکم بن عتیبه چې کوم فقیه مشهور دي هغه، أو دا الحكم بن عتيبه بن النهاس يو كسدى

په اصِل کښې دلته د بعضي علماؤ باندې خلط راغلې دې نو هشام بن الکلبي د ټولو نه مُحكبتي د دوى نسب نامه دغه شان ذكر كره، د دې نه پس ابن حبان او ابواحمد الحاكم د دوی په اتباع کښې هم دا خبره نقل کړه،ښکاری چې دا دواړه د دوی په نيز په يقين سره يو

⁾ سيراعلام النبلاء (٢٠٩/٥)-

^{ً)} حواله بالا

⁾ تهذيب التهذيب(٢/٤٣٤)-

^{ً)} تقريب التهذيب(ص١٧٥) رقم(١٤٥٣)-⁶) طبقات المدلسين (تعريف اهل التقديس بمراتب الموصوفين بالتدليس((ص٥٨)-

م) التاريخ الكبير (٢٣٣/٢) رقم (٢٤٥٤)-

V) تهذيب التهذيب(٣٥/٢) وتعليقات التاريخ الكبير (٣٣٣/٢-٣٥)-

ار حافظ ذهبي وغيره په يقين سره دا بيان کړې دې چې الحکم بن عتيبه چې مشهور فقيه دې هغه جدا دې او الحکم بن عتيبه بن النهاس يو بيل سړې دې. آخري ذکر کړې شوې د کونې قاضي وو او د ده نه يو روايت نقل نه دې 🖒

آ . امام بخاري ته په يقين سره دا خبره منسوب کول صحيح نه دي معلوميږي چې هغوي دواړه يو ګڼږل.هغوی د بعضي اهل نسب ذکر کولو سره صرف د يو احتمال ذکر کړې دې، ۲، والله اعلم د الحكم بن عتيب موسطة ولادت د ابراهيم نخعي د پيدانش په كال ۴۲ هجرني كښي اوشو ،او

په ۱۱۵ هجرني كښې وفات شور" رحمه الله تعالى رحمة واسعة

· صعيدبن جبير دا مشهور تابعي عالم امام سعيدبن جبيربن هشام اسدى والبي كوفي المنظم دې ابومحمد يا ابوعبدالله د دوي کنيت دې ()

دوی په صحابه کرامو کښې د حضرت ابن عباس، عبدالله بن مغفل. حضرت عائشه عدی بن حاتم، ابوموسى اشعري، ابوهريره، ابومسعود بدري،وهو مرسل، ابن عمر. عبدالله بن زبیر، صحاک بن قیس، انس او د ابوسعیدخدری تنگیند دوایت د حدیث کوی.

د دوي ندروايت كوونكو كښي ابوصالح السمان، ايوب سختياني. سلمة بن كهيل. سليمان الاحول، إمام أعمش، عدى بن ثابت، عطاء بن السائب، مالك بن دينار. مجاهد. أمام زهري، موسى ابن ابي عانشه، أبواسحاق سبيعي او ابو الزبير مكي فينيم به شان ډير حضرات تابعین او اتباع تابعین دی، ۵٫

امام نووى بينية فرماني كان سعيدمن كهار اثبة التابعين متقدميهم في التفسير والحديث والققه والعبادة

والورع وغيرها من صفات اهل الخيرر"

امام سفیان ثوری کی دوی له په ابراهیم نخعی کیلیج باندې علمی اعتبار سره فوقیت ورکوي.٧) چې د ابن عباس ﷺ نه به اهل کوفه مسائل تپوس کولي نو وونيل به ئي اليس منكم سعيد بن جبير؟ (^)

ميمون بن مهران گزايد فرماني لقدمات سعيدين جهيروماعلى الارض احدالا وهومحتاج الى عليه ^{د (*}

⁾ ميزان الاعتدال(٥٧٧/١)-

^{ً)} تهذيب التهذيب(٤٣٥/٢)-

^{ً)} سيراعلام النبلاء(٢١٢/٥)-

⁾ تهذيب الكمال(٢٥٨/١٠)-

^د) نهذيب الكمال(۲۰/۳۵۸)-۳۶۱)-

⁾ تهذيب الاسماء واللغات(٢١٤/١)-

^{ً)} تهذيب الاسماء واللغات(٢١۶/١)-

^{^)} حواله بالا وسير اعلام النبلاء(٣٢٥/٤)-

[&]quot;) سيراعلام النبلاء (٢٢٥/٤)-

حصيف يُحَيِّدُ فرماني: كان اعليهم بالقرآن مجاهد واعليهم بالحج عطاء،واعليهم بالحلال والعرار طاووس،واعليهم بالطلاق سعيدين البسبب، واجمعهم لهذة العلوم سعيدين جبيلا^{(^})

على بن المديني فرمائي ليس في اصحاب ابن عباس مثل سعيدين جبير، قيل: ولا طاووس؟ قال: ولا طاووس،ولا احد (۲)

ابوالقاسم هبة الله بن الحسين طبري كالله فرماني هواثقة امام حجة على المسلمين ٧٠٠

د حضرت سعیدبن جبیر کتا و په اوچت شان او امامت باندې د علماؤ اتفاق دې،او د دوی مناقب او فضائل هم زیات دی، ۴۵ ه کښې د حجاج بن یوسف د لاسه شهید شو. ()

@**ابن عباس** ٹائٹڑ:د حضرت عبداللہ بن عباسٹٹائڑ حالات د'ہمہالوس' د څلورم نمبر حدیث لتدي (٥) او كتاب الايمان باب كغمان العشيروكغم دون كفم لاندي هم راغلي دى (٢)

بت في بيت خالق ميمونة بنت الحارث زوج النبي تاليم وكان النبي تاليم عنده في ليلتها.

ما د خپلي ترور ميمونه بنت الحارث،چي د حضورياک کا پي بي دد، په کور کښي شپه تيره کړه،حضوریاک 📸 د هغوي د نمبر په شپه کښې هغوي سره وو .

دحضرت ابن عباس على دى حديث ته ليلة التبييت والاحديث وئيلي شي، امام بخارى دلته مختصرا او مخکښي تفصيلا د دې تخريج کړې دې (٧)

حضرت ابن عباس 🦓 چې كومه واقعه بيان كړې ده.دغه وخت د هغوي عمر لس كاله وو څنګه چې مسند احمد کښې وضاحت راغلي دې ^ ›

ميمونه بنت الحارث المرافي المومنين ميمونه بنت الحارث المرافع ده، مخكبني ددې نوم بره وو،حضورپاک دا بدل کړو او ميمونه ئي کيښودلون

په جاهلیت کښې د دوی نکاح مسعود بن عمر سره شوې وه، هغه دوی پریښودل، نو د ابورهم په نکاح کښې راغله، د ابورهم د وفات نه پس د حضورپاک پی په زوجیت کښې راغله(۱

 ⁾ سيراعلام النبلاء (١/٤ ٣٤)-

^٢) حواله بالأ

^{ً)} نهذيب الكمال(٣٧۶/١٠)-

⁾ تهذيب الكمال وتعليقات الكمال(٣٧٤/١٠) تهذيب الكمال(٣٥٨/١٠-٣٥٤) وسيراعلام النبلاء (٢٤٣٣٢١/٤) والطبقات الكبرى لابن سعد (٢٥٤/٤-٢٤٧) وتهذيب الاسماء واللغات (٢١٤/١)-

م كشف الباري(٢٥/١ع)

م كشف الباري (٢٠٥/٢)-

^{&#}x27;) قد مر تخریجه آنفا)-

۸) مسند احمد (۱/۴۶۳) رقم (۳٤۳۷)-) السيرة الحلبية (٣٢٣/٣) والطبقات الكبرى لابن سعد (١٣٧/٨)-

⁾ السيرة الحلبية (٣٢٣/٣) والاصابة (١١/٤ غو١١٤) والطبقات (١٣٢/٨)-

حضرت میموند نظم د ابن عباس او خالد بن ولید نظمهٔ ترور وه () د حضرت عباس نظم بی بی، د ابن عباس تام مور ،ام الفضل لبابه بنت الحارث سكه خور ،اسماء بنت عميس،سلمي بنت عميس، زينب بنت خزيمه، دا درې واړه د حضرت ميمونه مور شريک خورياني وي٠٠٠

يه ٧ مَجرئي كَسِي چي كله حضورياك الله عمرة القضاء له تشريف اوړې وو ،په دغه موقع کښې دوی سره نکاح او کړه دی،

ابن سعد پښته فرماني چې دا د هغوي آخري بي بي وه، چې دې نه پس هغوي بله نکاح چاسره اونه کړه(۲)

حضورباک تا چې کله د جعفر بن ابي طالب په ذريعه د نکاح پيغام وراوليږلو،نو هغوي

حضرت عباس المنظر خپل و کیل جوړ کړو، او دغه عباس المنظر د دوی نکاح او کړه وه ، د حضرت میمونه نالله کاح د احرام په حالت کښې شوې وه یا حضوریاک نظم په دغه کښې وخت کښې بغیر احرام وو ؟په دې کښې روایات مختلف دی دا ځاني د هغې تفصیل نه دې، خو بيا هم ابن حجر ﷺ ليكي: ومنهم من عقد عليها وهو محدم ويثى بها بعد أن احل من عمرته بالتنعيم وهوحلال في الحل، و ذلك بين من سياتي القصة عند ابن اسحاق ٬ ٬ ›

د حضرت میموند ﷺ نه تقریبا چیالیس احادیث روایت شوی دی، په هغی کښی اووه احادیث متفق عليه دي، په هغي كښي په يو حديث كښي اَمام بخاري او پنځو احديث كښي امام مسلم متفرد دي، (١)

د حضرت میموند گاژی وفات د صحیح قول مطابق په ۵۱ هجرئی کښې د سرف په مقام باندې اوشو،او هم هلته كښې دفن شوه. (^) رض الله عنها و ارضاها

النبي تهيئم العشاء ثعرجاءالي منزله فصلى ادبع ركعات ثعر نأم وثعر قام،ثمرقال:نامرالغليم،اوكلمةتشبهها،ثمرقامفقمتعرريس يمينه، فصلى خمس ركعات، ثعر صلى ركعتين: حضورياك تايي د ماسخوتن مونخ اوكرو،بيا ني خپل كور ته تشريف راوړو،هغوى څلور ركعاته أوكړل،بيا پاسيدو،بيا اوده شو آبیا پاسیدو آبیا اوفرمانیل چی ماَشُوم اوده شو؟ یا نی دا سی خُه خَبره اُوکره، بیا هغوّی پاسیدل او خه د هغوی گس لاس ته اودریدم، نو هغوی خه نبی طرف ته کهم او بیا نمی پنخه

⁾ السيرة الحلبية (٣٢٣/٣)~

^{ً)} حواله بالا

⁾ الاصانة (١١/٤) - (٤١١/٤)

⁾ الطبقات الكبرى لابن سعد(١٣٢/٨)-

^ه) الاصابة (۱۱/٤ £ و ۱۲ ٤)-

⁾ الاصابة (£١٢/٤)-

⁾ خلاصة الخزرجي (ص٩۶)-) الاصابة(٢٣/٤ ٤) والسيرة الحلبية(٣٢٣/٣)-

رکعاتدادا کړل،او بيا ئې دوه رکعاتداو کړل

قوله: نام الغليم: غليم يانې مكسوره مشدده سره د غلام تصغير دې دا تصغير د شفقت د پاره دې د $\frac{1}{2}$

مطلب دادې چې ددې جملې د ونيلو دا مقصد وو چې حضورپاک پاهم خپل کور والاسره ملاعبت کول غوښتل،ظاهره ده چې ددې د پاره د تستر يعني د پردې ضرورت رازي ځکه حضور پاک پاهم اوفرمائيل نامرالغليم

د حضرت ابن عباس ﷺ په حدیث کښې اختلاف دې چې هغوي څومره رکعتونه کړې وو. بعضو کښې یوولس،بعضو کښې دیارلس،بعضو کښې پنځلس او بعضو کښې د اوولسو ذکر دې.

په کومو رواياتو کښې چې اوولسو رکعاتو ذکر دې په هغې کښې آخري دوه رکعاته د فجر سنت متعلق دې،دولسرکعاته نوافل او درې رکعاته د وتر دي.

چې په کوم کښې د پنځلسو ذکردې په هغې کښې د فجر د دوو رکعاتو ذکر پريښودې دي. چې په کوم روايات کښې د ديارلسو ذکر دې، په هغې کښې اته رکعاته نوافل دی درې رکعاته وتر دی او په اخر کښې دوه رکعاتونه د فجر سنت دي.

بيا چې په کوم رکعات کښې د يوولسو رکعاتو ذکر دې په هغې د فجر سنت ذکر نه دي،اته رکعاته نوافل دی او درې رکعاته وتر دي.

دلته چې ابن عباس تا في فرماني تم حام ال منزله فسلى ادبع ركعات يعنى هغوى د ماسخوتن مونخ كولو نه پس كور ته راغلل او څلور ركعاته ئې ادا كړل،او غالبه دا ده چې دا څلور ركعاته د ماسخوتن سنت به وي ()

دې نه پس هغوی آرام اوکړلو بیا څه وخت پس پاسیدلو او مونځ کول ئې شروع کړل، دغه وخت هغوی دا هم اوفرمائیل چې نام الغلیم ماشوم اوده شو، بیا چې کله هغوی مونځ کولو نو ابن عباس تا په پاس تا په په اخره هغوی د وتر نه هم فارغ شول. د هغې نه پس نې چې کوم دوه رکعاته اوکړل د هغې باره کښې یو احتمال خو دادې کوم چې حافظ پښته وغیره فرمائی چې دې نه پس دوه رکعاته د فجر سنت دی، دویم احتمال دا هم دې چې دا هغه دوه رکعاته دی به حضورپاک تا په د وتر نه پس ادا

⁾ شرح الكرماني (١٣٣/٢)-

⁾ لامع الداري(٣٤٣/٢ و ٣٦٤)-

^{&#}x27;) فضّل الباری(۱۶۱/۲)-') فتح الباری(۲۱۲/۱)-

ګړيا چې په دې حديث کښې د رکعاتو په تعداد کښې اجمال دې تفصيل هغه دې چې کوم

مخکښې کتاب الوضو ، وغیره کښې په رازۍ ۱ ،دالله املم ټنیه دلته مونږ د رکعاتو په تعداد کښې د تطبیق په حوالې سره چې کومه خبره اوکړه .هغې صرف د ابن عباس الله دې حديث پور ئې متعلق ده باقي د هغوي آه و قيام الليل گښې د رکماتو تعدادڅه وو ،نوددې باره کښې به مخکښې انشاءاند په کتاب الوترکښې بحث کيږي

نوله: "ثمر نأمرحتي سمعت غطيطه او خطيطه ثمر خ<u>رج الى الصلاة:بي</u>ا هغوي اوده شول تر دې چې ما د هغوی د خرړيدو اواز هم واوريدلو .بيا هغوی د مونځ د پاره راووتلو .

:هليط^ا د اودو په حالت کښې چې د پوزې نه چې کوم اواز بهر راوځی هغې ته والی.يعنی خرړيدل، ۲،

· فطيط په قول د داؤدي د غطيط مترادف دې ۲۰ او ابن بطال پينيځ فرماني چې د اهل لغت په نيز د خطيط بالخاء المعجمة، څه وجود نشته آغاضي عياض هم د ابن بطَّال پيروي كړې ده (ق

خو ابن الاثير ومُثلَة ليكلي دى جي الخطيط قريب من الغطيط وهوصوت النائم والخاء والعين متقاربين ٧٠، يعني خطيط غطيط ته نزدې نزدې دي.د اوده کس خرېدلو ته والي.خا او غين دواړه قريب المخرج دي ځکه يو د بل په ځاني استعمالوي. تقريبا دغه خبره صاحب تاج العروس هم کړې

<u>قوله: ثمرخرج الى الصلاة:</u> بيا د سحر مونخ له اووتلو

د حديث د ترجمة الباب سره مناسبت:په دې باب امام بخارئﷺ دو. حديثونه ذکر کړې دي.يو د ابن عمر ﷺ حديث دې چې د هغې مناسبت پاب السموقي العلم نه ښکاره دې ځکه چې په دې کښې دی چې فلما سلم قام،ققال:ارايتکم يعني هغوی د ماسخوتن مونځ نه د فارغ کیدلو نه پس دا خبرې اوفرمائیلې.او د ماسخوتن مونځ نه پس خبرو ته سمر ولیلې شي.

البته دويم حديث چې د ابن عباس نه دې يعني پيتوته ابن عباس فييت خالته ميمونة والاحديث مناسبت دباب نه زيات واضحه نه دي

ددې مناسبت ښکاره کولو د پاره اين المنير او د هغه شاګردانو ونيلې دی چې ترجمه ددې

⁾ نتخرج مرة فارجع هناك)-

⁾ فتع الباري (٢/٢/١) -ومختار الصحاح (ص٧٤)-

⁽⁾ فتح الباري (۲۱۲/۱)-) قال ابن بطال:ولم اجدها عند اهل اللغة بالخاء "شرح ابن بطال(١٩٣/١)-

في فتح الباري (٢١٢/١)-

⁾ النَّهَايَةُ لابن الاثير (٤٨/٢)-

⁾ تاج العروس(١٣١/٥)-

حدیث کښې دننه د نام الغليم د جملې نه تابتسوی (۱)

بيا هغوی فرمانی چې عين ممکن ده چې ابن عباس نگانا د حضورياک کاناد ټولې شپې د احوالو نظاره نبي کوله، او هم دغه سبودې او دا بله خبره ده چې دا قولمي سمِر نه دې بلکړ فعلی سمر دې،کویا چې ابن عباس الله ټوله شپه په سمر کښې تیره کړه،څکه چې د هغه وبښيدل او د حضورپاک ﷺ د احوالو او د افعالو نظاره کول او هغه زده کول هم سمر دي ٦ علامه كرماني رئيلة د ابن المنير رئيلة ددى توجيه نه علاوه دوه نورې هم توجيه كړى دى

يو دا چي دې واقعه کښې دي چې حضورپاک پاچ ابن عباس گڼټالره د محس طرف نه ښي لاس ته کړو دا اګرچه کار دې خو بيا هم ونيلې شي چې ګويا هغوی ابن عباس څڼټا ته اوفرمانيل تقفيون پيينۍ او د هغوی ګس طرف ته کيدل ددې خبرې په ځانې دی چې هغه په وقفت ونيلې وىن

دويمه توجيه هغوي داکړې وه چې کله په يو ځائي کښې د خپلوانو ګڼړه کيږي نو هلته څه نه ځه خبرې خامخا کیږي،دلته به هم هغوی خبرې کړې وی،او دا خبره ډیره لړې ده چې حضوریاک کاه د ماسخوتن نه پس کور ته راغلې وی او حضرت ابن عباس تا ها هلته د اوسیدو د پاره راغلې وی او هغوی ورسّره بالکل خبرې او نه کړی.یقینا هغوی به څه خبره کړې وی،او دا هم ښکاره ده چې د هغوی هره خبره به د علم او د فائدې وی.ددې نه

سوتابتيږي أ، خو حافظ ابن حجر كيلي دا ټول توجيهات بعيد ګرخولو سره رد كړې دي تر څو چې د ابن المنير د ړوميئ توجيه تعلق دې نو هغې ته سمر ددې وجه ونيلې نشي، صرف يو نيمه جمله ونيلو ته سمر ونيلي نشي،د دي د پاره قابل اعتماد خبري كول پكار دي ٥٠ دغه شان د هغوي دويمه توجيه ئي داسې رد کړې ده چې آبن عباس الله چې د حضور پاک الله د افعالو او احوالو ته کتلې دی نو دې ته به سمر پينې ټوله شپه ويخه خو به ونيلي شي خو د سمر اطَّلاقٌ په دې نه کیږي، ځکه چې په قولّ د اسماعیلي پُیځ د سمر د پاره ګنړه او خبره کول ضروری دی()

⁾ المتوارى على تراجم ابواب البخارى(ص٤٢) وفتح البارى(٢١٣/١) حضرت كنكوهى هم د دې نه ترجمه ثابته کړې ده په دې طريقې سره چې هغوی نام الغليم او فرمانيل او يو جملي سره د سمو تحقق کېږي د هغوی د جملي سره تپوس کول و په دې مطلب چې هغوی خپلې کوروالاسره اختلاط کول کيږي او د هغوی د جملي نه د اهم معلومه شوه چې په داسې کارونو کښې پرده کول پکار دی،او ظاهره ده چې د اعلم دې لهذا سم د في العلم ثابت شو.الکنز المتواري (۴۶٤/۲)

^{ً)} المتواري (ص٤٢) وفتح الباري(٢١٣/١)-

^{.)} شرح الكرماني(١٣٤/٢)-ً) حواله بالا

نم فتح البارى(٢١٣/١)-

م حواله سابقه

رغه شان حافظهیمی د علامه کرمانی پهنی په ړومبی توجیه رد کولو سره فرمانی چی دا توجیه العد ده. ځکه چې د ګس لاس نه ښ*ی طرف کولو دا ع*مل د خوب د راپاسیدو نه لږ ساعت مخکښي واقعه ده،اود خوب د راپاسيدلو نه پس خبرې کولو ته سمر ونيلې نشي. (` پ د علامه کرمانی دویمه توجیه ده د هغې باره کښې ونیلې شي چې دا صَرف قیاس دې په حدیث کښې داسې قسم خبره نشته چې هغې ته سمر اوونيلې شي د حافظ ابن حجر راني داده چې امام بخاري د دې روايت په بغضي طرق کښې راغلي الفاظو طرف ته اشاره کړې ده چې په هغې کښې خه ښکاره موجود دي فتحدث رسول الله کاله ماهاهله

يعني حضورياک ﷺ خپل كور والاسره لږې شان خبرې اوكړې دا د خپل د وجه د خبرو هر قسم ته شامل دې ښکاره ده چې دا يو طرف ته تحدث مع الاهلي. دې نو بل طرف ته سمولي العلم. هم دې چې د هغوي يو يو خبره سراسر علم او ديني فانده ده (۲) حضرت شيخ الهنديكية هم دا توجيه خوسه كړې ده رځ

علامه عيني پيت اګرچې د حافظ کين په ټول تقرير باندې اعتراض او رد کړې دې د^{ه ،}خو بيا هم د حافظ مید خبره مضبوط ده او د امام بخاری د ظرز مناسب هم ده والله اعلم

د سمو متعلق څه ړوايات:په مسرف العلم کښې لاتدې ورکړې شوې واقعي هم راتلې شي:

①..قال انس: نظرنا النبي 大台 ذات ليلة حتى كان شطى الليل يبلغه فجاء فصلى لنا ثم خطبتا فقال: الا ان الناس قد صلوثم رقدوا وانكم لم تزالوني صلاة ما انتظرتم الصلاة (٢)

یعنی حضرت انسائل فرمانی چې یو شپه مونو د حضورپاک پیلیم انتظار کولو تر دې چې نیمه شپه شوه هغوی مونځ راکوو بیا نې خطبه اولوستله او ونې فرمانیل واورنی خلق مونځ کولو نه پس اوده شوې هم دی او تاسو چې تر کومه د مونځ په انتظار کښې ونی ګویا چې تاسو په مونځ کښې مشغول وي.

· . حضرت عمر الثاثة فرمائي:

كان رسول الله تهييم يسبوم على يكرفي الامومن امر البسليين وانا معها والم

⁾ حواله سابقه

⁾ صعيح البخاري(٤٥٧/٢) كتاب التفسير باب "ان في خلق السموات والارض.."رقم(٤٥٤٩)و (١١١٠/٢) كتاب التوحيد باب ما جاء في تخليق السموات والارض وغيرها من الخلائق رقم(٧٤٥٢)-

[&]quot;) فنع الباري(٢١٣/١)-

^{°)} الابواب والتراجم(ص٥٤)-

²) عمدة القارى(٢/٧٧/و ١٧٨)-

[﴾] صحيح البخاري(٨٤/١) كتاب مواقيت الصلاة باب السمر في الفقه والخير بعد العشاء رقم(٤٠٠)-") جامع الترمذي ابواب الصلاة باب ما جاء في الرخصة في السمر بعد العشاء رقم(١۶٩)-

تناب العلم يعنى حضور پاک تر به د ابوبکر صدیق التر سرد د شپې د مسلمانانو د معاملاتو باره کښې خبرې کولي او ځه په ورسره هم ووم

🗨 ..حضرت عبدالله بن عمروبن العاص ﴿ اللهُ فرماني

كان النبي ويج يعد ثناعن بني اسمائيل حتى يصبح ما يقوم الإالى عظم صلاة ﴿ `

يعني حضورپاک ناه مون ته د بني اسرائيلو بره کښي خبرې کولي تر دې سحر به شو ،بيا

به د لولی مونځ یعنی د فرض مونځ د باره د سیدلو. هم دا روایت د عمران بن حصین ناتی مهم دې

 .. حضرت أوس بن حذيفه فرماني: كنت في الوفد الذين اتوا النبي كليم اسلبو من ثقيف من بني مالك انزلنا في قبة له فكان يغتلف الينا بين بيوته ربين المسجد فأذا صلى العشاء الاخرة الصرف اليناولا نبرححتى يحدثنا ويشتكى قريشا ويشتك اهل مكة ٦٠٠٠

يعني د قبيله ثقيف يو شاخ بنو مالک مسلمان كيدلو سره د وفد په شكل كښي راغلل.خه په دغه وفد کښې ووم،حضورپاک ﷺ مون بر خيمه کښې ايســار کړو .هغوی به د خپل کور آو مسجد په میننځ کښلې مونو له راتلگو.او ځې کله به هغوکې الله د ماسخوتن مونځ اوکولو نو زمونږ طرف ته به راغلو مونږ به خبرې کولې او هغوی به مونږ ته د قریشو او اهل مکه د ظلمونو خبري كولي

@،،ابن بطالﷺ خپل سند سره.د ابوموسی اشعری او د عمر ﴿﴿ثُورُ واقعه نقل کری ده ابوموسي اشعري فرمائي

اتيت عبراكلمه في حاجة بعد العشاء فقال: هذه الساعة ؟ فقلت انه شئ من الفقه قال: نعم، فكمته، فدهبت لاقوم، فقال: اجلس فقلت: الصلاة فقال: انانى صلاة فلم نزل جلوساحتى طلع الفجر رسم

يعني خه د عشاءً نه پس حضرت عمر کات لره د يو ضرورت د پاره راغلم هغوي اوفرمائيل. په دا وخت؟ ما ورته اوونیل چې د دین خبره ده نو هغوی اجازت راکړو ما چې خبره اوکړه نو پاسيدلو، او وني فرمانيل چي كينا، ما ورته اووئيل چي زه به مونخ اوكړم، نو وئي فرمانيل چې مونږ په مونځ کښې يوو ،دغه شان د سحر پورې مونږ ناست وو

يو اَشْكَالَ او دَهْمَي حل د حضرت عبدالله بن مسعود يو حديث دې چې هغوي ئې مرفوعا نقل کوی لاسبرالالبصل او مسافی ده

یعنی د مونځ ګزار او مسافر نه علاوه د بل چا د پاره د سمر ګنجائش نشته ·

^{&#}x27;) سنن ابي داود كتاب العلم باب الحديث عن بني اسرائيل رقم (٣۶۶٣)-

⁾ مسند احمد(٤٣٧/٤) حديث عمران بن حصين المايخةُ رقم(٢٠١٤٣)-ً) مسند احمد(٩/٤) حديث اوس بن اوس الثقفي وهو اوس بن حذيفة رقم(١۶٢۶۶)-

[&]quot;) شرح ابن بطال(١٩٢/١)-۵) مستند احمد (۱۲/۱) رقم(۳۹۱۷) و (۴/۱ £ £) رقم(£ ۲۲ £) و (۴۶۳/۱) رقم(۴۱۹ £)-

دې روايت نه معلوميږي چې د دې دواړه کسانو نه علاوه د بل چا د پاره د اسمر اجارت نشته دغه شان د سمر د اجازت او د انهل من السمر په احاديثو کښې ښکاره توګه باندې

نځته دغه شان د سمر د اجارت او د نام من السبر په احادیتو کښې ښکاره نو ته باندې تعارض رازې از داده د دا داره ادا اد اد املځ د خار د د کار تخر د کام دی لادی د

ددې چواپ داردې چې دا روايت امام احمد *کنځ* په خپل مسند کښې تخريج کړې دي، \،ددې په دو ه طرقو کښې انقطاع ده چنانچه دا خيشمه بن عبدالرحمن د عبدالله بن مسعود نه نقل کړي، حالاتکه خيشمه ته د عبدالله بن مسعود نه سماع حاصله نه ده. \

اوپه بل طرق کښې خيشمه د عبدالله بن مسعود و څخو نه په واسطه سره نقل کوی او دا نې مبهم کولو سره داسې ذکر کړې دې صن سه اين مسعود او دا مبهم واسطه مجهول ده: آ

او که فرض کړه دا حدیث صحیح او ثابت هم وی بیا هم موند ولیلې شو چې سموفی العلم کولو . والاد مصلی په حکم کښي دې گ

ځنګه چې حضرت عمر ناڅنځ ابوموسي اشعري ناڅنځ ته اوفرمانيل اناني صلاق^ه

د حدیث د بیتُوتیت نَه عَلَماًو ډیرې فائدې راوستلې دی چې د هغې مختصر ذکر علامه عیني پیځیځ کړې دې (اهاماماموعلمه واتم واحکم

۴۲-بأب:حفظ العلم

دتيرشوى باب سره مناسبت په تيرشوى باب كښې د ... سبل العلم، .ذكروو او په دې باب كښې د «خفظ علم» ددې دواړو په مينځ كښې مناسبت بالكل واضحه دې،دسمرفى العلم دمقاصدونه حفظ علم هم دې ()

د ترجمة الباب مقصد: حضرت شيخ الحديث صاحب مُوليَّة فرمائي چه په دې باب سره دامام بخارى مُوليَّة مقصداسباب دحفظ علم بيانول دي او داحاديثو په ذريعه ئي اوښودله چه حفظ علم به هله حاصليږي چه كله خپل خان دعلم د باره مكمل طورباندې فارغه كړي، ^

حضُرت شيخ الهنّدُيَجِيِّخُ فرمائي چه د دي باب دبيانولومقصد دي چه دتعلمٌ نه پس دحفظ اودعدم نسيان كوشش هم لازمى دى،ظاهره خبره ده چى په هيرولوكښر اول كفران نعمت دې اودويم د چه دتعليم تبليغ اود عمل جمله امور ضروريه په حفظ باندې موقوف دي ـ

^{٬)} حواله سابقه

^{&#}x27;) في تهذيب الكمال ليس اسم عبدالله بن مسعود من شيوخ خيشه انظر تهذيب الكمال(٣٧١/٨)-') فتح الباري(٢١٢/١)-

^{ً)} حواله بالا

^{ٍّ)} شرح ابن بطال(۱۹۲/۱)-

⁾ عمدة القارى(١٨٠/٢)-٢) عمدة القارى (٢ص١٨٠) _

^م) الكنزالمتوارى (ج) ٢ص(٣۶٥) –

دې باب د ړومېي روايت نه معلومه شو د چه څومر د په علم کښي مشغولتيا وي هغومره بديد حَفْظُ كَنِسِيَّ قُوتَ اوْمَدد ملاويږي.اود دويم روايت نه دا معلومه شوه چه دحافظي قوي كيدل هم مفيداًومطَّلوب دى.الترچه قوت حافظه يوخلقى امردې ليکن ددي دپاره موَّيداتٌ اومضرات وی.ددی رعایت ساتل مستحسن دی.دامام شافعی ﷺ شعرهم داحال بیانوی

شكوت الى وكيع سؤحفظي فاوصان الى ترك المعاص

قان العلم تور من الهي وتورالله لايعطي لعاص ﴿ ﴿

يعني إماخيل استاذ وكيع ﷺ ته دخيلي قوت حافظي دكموالي شكايت اكرو نوهغوي ماته دګناه دېریخودلووصیت اوکړو.ددې وجې نه چه علم دالله تعالی دنورنه یو نوردې اوظاهره ده چه الله تعالى خپل نوريو عاصي اونافرمان ته نه وركوي.._

حاصل دخبرې دادې چه امام بخاري ﷺ ددې ترجمه الباب نه داښودل غواړی چه طالب علم لره دخديثُ ديادولواهتمام پكاردې.امام بخارى ﷺ په دې باب كښي درې روايتون دکرکریدی.

ددي روايتونودكتلونه معلومعلوميږي چه دعلم ديادولو ډيرصورتونه دي -

٠٠ اول ملازمت.يعني داستاذحديث صحبت اختيارول اوپه كثرت سره هغه ته تك راتك ساتل چه دهغه علوم بارباراوريدلواوپه ليدلو باندې راشي او دا يوه قاعده ده چه يو ځيز څومره په تکرار سره مخې ته راځي نوهغه په زړه کښي قرارنيسي دا ملازمت معلوميږي

دحضرت ابوهريره الليخ ددې قول ``كانيلامررسولالله تالله الله الدين مالايحضروننه دويم څيز هغه مذاکره ده. يعني چه کوم علم حاصل شي دهغې کول. هغې لره بارباز رټه

كول او يادول اوشي. اوددي طرف اشاره ``ويحفظ مالايحفظون. .نه ملاويږي_

 دریم څیز هغه دعااو آه وزاري ده ځکه چه یوکس سره هرڅومره ذهن ولې نه وې دهغه پوهه هرڅومره تيزه ولي وي نه ليکن دالله تعالى د عنايت نه بغيرهيڅ هم نه کيږي. نولهذاحق تَعَالَى نَهُ دَى دَعَا غُوارِي اَوِيه بزرگانودي دعاكوي. څنګه چه حضّرت ابو هريره تَاتَّقَ په نبي عَلِيْم باندى دعااوكره

· خُلورم څیزخورول دعلم دی چه څومره دعلم دخوریدو کوشش اومحنت او کړشي هم هغه هومره به علم محفوظ پاتي کيږي، څنګه چه دباب په اخري حديث کښي دې طرف ته اشاره

. (١٧٨١عَدَّ تَتَاعَبْدُ الْعَزِيزِيْنُ عَبْدِاللَّهِ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابِعَنِ الْأَعْرَجِعَنُ أَبِي هُرَيْرَةً ﴿ مَقَالَ إِنَّ النَّاسَ يَقُولُونَ أَكْثَرَ أَبُوهُرَيْرَةً وَلَوْلاَ اَيْتَانِ فِي كِتَابِ اللَّهِمَا

^{ٔ)} اوګوری الابواب والتراجم(ص۵۶) _

⁾ قوله: عن ابي هريرة رضي الله عنه: الحديث. آخرجه البحاري أيضاً في صحيحه (ج١ ص٢٢) في كتاب. العلم. باب حفظ العلم. وقم (١١٩) وفي (ج ١ ص ٢٧٤. ٢٧٥). في .. (بنية حاشبه به رازوانه صفحه..

حَذَّلُتُ حَدِيثًا اللَّمْ يَعُلُو (إِنَّ الَّذِينَ يَكُمُّونَ مَا أَنْوَلْنَامِنَ الْبَيِّمَاتِ) إِلَى قَوْلِهِ (الرَّحِيمُ) إِنَّ إِنْوَانَنَا مِنَ الْمُهَاجِدِينَ كَانَ يَغْظُهُمُ الصَّفْقُ بِالأَسْوَاقِ، وإِنَّ إِخْوَانَنَا مِنَ الأَنْصَادِ كَانَ يَنْفَلُهُمُ الْعَلْمُ الصَّفْقُ بِالأَسْوَاقِ، وإِنَّ الْجُمَانِ مَنْ اللَّهِ عَلَيْهُمُ الْعَلَيْمُ اللَّهِ عَلَيْهُمُ اللَّهُ عَلَيْهُمُ اللَّهِ عَلَيْهُمُ وَنَ وَيَعْفَظُمُ اللَّهُ عَلَيْهُ مَا لاَيْعَالَمُ اللَّهِ عَلَيْهُ اللَّهِ عَلَيْهُ مَا لاَيْعَامُونَ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَيَعْفَظُ مَا لاَيْ عَلْمُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَيَعْفَلُونَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَيَعْفَلُونَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَيَعْفَلُونَ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَيَعْفَلُونَ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهِ عَلَيْهُ وَيَعْفَلُونَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَيَعْفَلُونَ الْمُعَلِّمُ وَاللَّهِ عَلَيْهُ وَيَعْفَلُونَ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَيَعْفَلُونَ اللَّهُ عَلَيْهُ وَيَعْفَلُونَ الْعَلَيْمُ اللَّهُ عَلَيْنَا مِنَ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَيَعْفَلُونَ اللَّهُ عَلَيْنَا مِنَ اللَّهُمِ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عِلَى اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْنَ الْمِنْ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْلُونَ اللَّهُ عَلَيْنَا مِنَ اللَّهُ عَلَيْمُ اللَّهُ عَلَيْنَ الْمُنْ الْمُعْلَمُ اللَّهُ عَلَيْنَ مِنْ اللَّهُ عَلَيْنَ الْمُعَلِّمُ اللَّهُ عَلَيْنَا مِنْ اللَّهُ عَلَيْنَ اللَّهُ عَلَيْنَ اللَّهُ عَلَيْنَا مِنْ اللَّهُ عَلَيْمُ اللَّهُ عَلَيْنَ اللَّهُ عَلَيْنَ اللَّهُ عَلَيْنَ اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَ الْعَلَيْنَ الْمُعَلِّمُ اللَّهُ عَلَيْنَامُ اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ الْعَلَيْنِ الْعَلَيْنَ الْمُعْلِمُ اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ الْمُعْلِقُونَ اللَّهُ عَلَيْنَا مِنْ اللَّهُ عَلَيْنَامُ اللَّهُ عَلَيْنَا مِنْ اللَّهُ عَلَيْنَ الْمُعْلَمُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ اللَّ

رجال الحديث

- عبدالعزیز بن عبدالله: دا عبدالعزیزبن عبدالله بن یحی قرشی عامری اویسی مدنی میشید دی.دده حالات هم په دې "کتاب. کښی په "بابالح، صعلى الحدیث. الاندې تیرشوی دی-
- مالک دا امام مالك بن انس مجید دې ددوی حالات د ``بده الوی ..په دويم حدیث کښي
 او په ``کتاب الايبان، پاب من الدين الفهارمن الفتن لاندې تيرشوی دی . `
- © **این شهاب** دا امام محمدبن مسلم بن عبدالذین شهاب زهری پینیم دی ده مختصر حالات د «پده الوحی. د دریم حدیث د لاندې تېرشوی دی ^۲،
- الاعرج: د ابوداود عبدالرحمن بن هرمزاعرج مدنى قرشى پيئيدي دده حالات په 'کتاب الايمان، بابحب الرسل تهم من الايمان. كنبي تيرشوى دى (⁷).
- حضوت ابوهریره کاتش: دحضرت ابوهریره کاتش حالات د کتاب الایان،باب امورالایان.
 لاندی تیرشوی دید ؟
- قوله: ان النياس يقولون: اکثر ايوهريرة: خلق وائي چه ابوهريره پيني حد کړې دې چه دوم د حديثونه بيانوي:
 - حضرت ابوهريره الله دحديثودټولونه لوي حافظ وو .ددې وجي نه امام بخاري پيځي په دې

بقيه حاشيه د تيرمخ] كتاب البيوع. باب ما جاء فى قول الله تعالى: (فاذا قضيت الصلوة فانتشروا فى الأرض......) رقم (٢٣٥٠) و (ج١ ص٢٩٥٠) كتاب العرث والنزارعة. باب ما جاء فى الغرس. رقم (٢٣٥٠) و (ج١ ص٢٤٥. و ١٠٥) كتاب المناقب. باب (بدون الترجمة. بعد باب سؤال المشركين أن يربهم النبى (ص) آية. فأراهم انشقاق القمر) رقم (٢٩٤٨) و (ج٢ ص٢٠١) كتاب الاعتصام بالكتاب والسنة. باب العجمة على من قال: ان أحكام النبي (ص) كانت ظاهرة...... رقم (٢٥٤٧) و مسلم في صحيحه. في كتاب فضائل الصحابة. باب من فضائل أبي هريرة الدوسي (رض) رقم (٢٥٣٧ - ٤٠٤٠) والترمذي في جامعه. في أبواب المناقب. باب مناقب أبي هريرة رضى الله عنه. رقم (٢٨٣٤ - ٢٨٢٥) -

^{&#}x27;) کشف الباری (ج ۱ص۲۹۰) و (ج۲ص۸۰)-

^{&#}x27;) كشف البارى (ج ١ص٣٢۶)-

اً) (کشف الباری ج ۲ص ۱۱)-

[&]quot;) كشف الباري (ج ١ص ٢٥٩) -

كشفالبكاري

باب کښي صرف هم ددوي رواياتونه د کر کړی دی-

ب بي صرح سم دروبارد په در سر په در موقع په موقع حديثونه نقل کول بعضې خلقو حضرت ابوهريره ژانند حافظ کيدو د وجې نه به موقع په موقع حديثونه نقل کورې هلته به حديث به په داسي موقع ونيل چه ابوهريره هم حد کړې دې چه کوم ځانې کښي کورې هلته به حديث پيش کوي حالاتکه نورمهاجرين او انصار د دوي پشان هرخې کښي حديث نه روايت کوي.

قوله: ولولا آيتـان في كتـاب الله مـاحـى ثت حديثـاً: كه چرته په كتاب الله كښي دور ايتونه نه وو نو ما به هيځ يو حديث هم نه وو بيان کړې-

قوله: ثمريتلو:ان الذّين يكتمون مـاانزلنـامن البينـات-الي قولـهالرحيم):ن بيابه هغوی دا ايت لوستلو چه دهغې مفهوم دې :

,,چه کوم خلق هغه مضامین پټوي کوم چه مونږ ښکاره نازل کړي دي ده هغې نه پس چه مونږ خلقو دپاره په خپل کتاب کښې په ښه شان سره واضح کړي دي په داسې خلقو الله تعالى هم لعنت وائِي اوټول لعنت ويونکي پرې هم لعنت وائيي. ليکن هغه خلق چه توبه اوباسي او خپل عمل نیک کړی اوهغه پټ کړې شوی تعلیمات څر گنده اوبیان کړی نو زهٔ به هغوی معاف کړ 🕷 او دهغوي توبُّه به قبوله کړم او زهٔ توبه قبولونکې اومهربان يم، ، - ً

قوله: ان اخوانناً من المهجرين كان يشغلهم الصفق (r)بالاسواق،وا<u>ن</u> اخواننـاً من الانصـاركان يشغلهم العمل في اموالهم-: زمامهاجر ين رونړولره په بازار کښي دهغوی تجارت اودبيع شراء معاملاً تومصروفه کړی او زماانصارو رونو لړ. دهغوي دپټورميندارئ كروندي وغيره عمل مصروفه كړي وو-

قوله: وان ابأهريرة كأن يلزمرسول الله صلى الله عليه وسلم يشبع بطنه ويحضر مــاً لايضرون ويحفظ مـالايحفظون: او ابوهريره به درسول الله ﷺ پِه درباركښي به صرف په دومره خبره هم حاضرباش وو چه ديووخت خوراک ملاوشي، نوځکه هغه په داسې ځايونوکښې په هم حاضريدو په کوم ځائې کښي چه په نورڅوک نه ووحاضر او هغه خبرې به

ني هم يادوکې چه کومو لره به نورچانه وې يادې کړې _ حصرت ابوهريره څاڅودټولونه اولنئ وجه دخپل اکثار،کثرت والي، دا بيان کړې ده چه په كتابُ اللهُ كَنْبَيِّي بِهُ كَتْمَانُ عِلْمُ بَانْدَى وَعَيْدٌ رَاغِلَيْ دَي، ددى وجي نَهُ خَهُ دُحضور الله ارشادات حسب موقع روايت كوم ـ

دّدې نه پس هغوی دنورو انصارو او مهاجرینو *تنگاژ په کثرت سره داحادیثونه روایت* کولو وجه بيان كړېده چه مهاجرينو ورونړه تجارت پيشه خلق وو،په بازار كښي به د تجارت په مُعاملًا تُو كُنِّني مُصروفه وو اوحضراتِ انصار زميندار خَلقَ وو هغوى لره به ددى نه فرَّصت نه ملاويدو ، ددې وجې نه زماپه مقابله کښي دهغوې روايات کم دی۔

^{ً) :}سورة البقرة ١٥٩او ١٤٠-

⁾ الصفق بالسكان الفاء. وهوضرب اليدعلي اليد، وجرت به عادتهم عند عقدالبيع - فتح الباري (ج ١ص٢١٣)

بيا هغوي خپل كيفيت بيان كړې دې چه زما دحضور ﷺ په مجلس كښي دحاضر باشي اودهغوی سره دملازمت دا حال ووچه خه به په هردم کښي دهغوی په مجلس کښي پروت وو،چه ماته به دیووخت روتی ملاوشوه دا زمادپاره کافی وه، ماته دنورڅه څیزغم آوفکرنه ووخکه چه زمانه څه کور وو او نه مې دګټلواودجمع کولو څه فکروو،بس زماهم يوفکرووچه دُّنِّي وَلِيْهِ هُرُوخَت يُوخَانَي يم اودهغوى ارشادات به خَيْله سينه كَنِّسي مَحْفُوظ كُومه، هم دا وجه وه چه حضرات مهاجرین او آنصارتگاتی نه خوزما پشان ملازمت اوحاضر باشی اختيارولي شوه اونه ني زماپشان دحفظ حديث اهتمام كولي شو نو ددي منطقي تتيجه هم داراووتله چه زمادحدیثویه ذخیره کښي اضافه کیږی او دوعیدنه دبج کیدویه وجه مادحضور نالل ارشادات ښه ډيرخواره کړه-

قوله: وان ابا هو**يرة كان يلزمرسول الله ﷺ بشبع بطنه:**اوابوهريره ﷺ به درسول الله تركي سره هر وخت وو ،ده ته ددنيا دنورڅه څيزفكرنه وو دهغوي دپاره صرف دومره كافي وه چه ديو وخت خوراک ورته ملاو شي-

دا مفهوم بره هم بيان شوي دي هم داصحيح اومتبادر مطلب دي-

حضرت شاه ولي الله يُحينه أيه خيل طباعي أوذهانت سره ددي يو بل مطلب هم بيان كريدي. كوم دغيرمتبادر كيدو په وجه مرجوح دي هغوى فرمائي:

..كان يلازمه مايريد، لامن المدة، ولا يقوم من مجلسه حتى يستوفي حظه منه، كقولهم: فلان يحدث شبح بطنه

تنبيه. حضرت ابوهريره تلتي چه دلته كوم څه بيان كړې دي هغه دحقيقت حال دظاهرولو دپاره اودخلقو داعتراض دجواب وركولو دپاره فرمانيليّ ديّ دې سره دحضرات مهاجرين اُو انصارو الله الله تحقير شان هر الاز مقصودنه وو-(٢) والله اعلم

(١١٩)حَذَّنَنَا أَمْمُدُبْنُ أَبِي بَكْرٍ أَبُومُصْعَبٍ قَالَ حَدَّنَنَا مُحَمَّدُبْنُ إِبْرَاهِيمَبْنِ دِينَارِعَنِ ابْنِ أَبِي ذِنْبٍ عَنْ سَعِيدِ الْمَقْبُرِي عَنْ أَبِي هُرَيْرَةً قَالَ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنِّي أَسْمَمُ مِنْكَ حَدِيثًا كَثِيرًا أَلْسَاهُ. قَالَ «ابْسُطْ رِدَاءَكَ » فَبَسَطْتُهُ. قَالَ فَغَرَفَ بِيَدَيْهِ ثُمَّ قَالَ « ضُمُّهُ » فَغَمَنْتُهُ فَمَالَسِيتُ شَيْئًا بَغُدَهُ.

^{&#}x27;) تراجم ابواب البخاري (ص١٥) –) **اوگورئ لامع** الدراری مع الکنزالمتواری (ج۲ص۳۶۶و۳۶۸)

رحال الحديث

 احمد بن ابي بكرابو مصعب دا ابومصعب احمدبن ابي بكرالقاسم بن الحارث بن زراردين عبدالرحمن بن عوف قرشي زهري مدني ميهي دي دمديني منوري قاصي اوفقيه ووسك دي دامام مالک.عبدالعزيزبن محمددراوردي. مغيره بن عبدالرحمن.محمدبن ابراهيم بن دينار. عبدالعزيزبن ابي حازم اود يوسف بن يعقوب بن ابي سلمة الماجشون عشر وغيره نه حدیث روایت کوی ۔ اود دوی نه په روایت کولوکښي امام بخاري.امام مسلم.امام ترمذي.امام ابوداود .امام ابن ماجه بقى بن مخلد اندلسي زكريابن يحيى السجزي اماء احمدبن حبل ابوزرعه أو ابوحاتم رازی کیلیه وغیره نور ډیر حضرات شامل دی.۲۰۰ امام ابوزرعد اوامام ابوحاتم مُناك فرماني ..صدوق. . ، "، امام مسلمه بن قاسم رئيد فرماني ..مدسى ثقة .. . رم ابن حبان مُرَثِيَّةٍ فرماني ..وكان فقيها متقناعالها بهذهب اهل الهدينة،، ..^د، ابن سعد مُركي فرماني،،وهومن فقهاء اهل المدينه،، ان حافظ ذهبي ميلة فرمائي ٠٠٠ تقة حجة،،٠٠٠ دغه شان هغه فرمائي ..قاض المدينة وعالمها،، ين دغه هغوى فرمائي ١٠٠حد الاثهات، وشيخ اهل البدينة وقاضيهم ومحدثهم،، ٢٠ زبيربن بكار مين فرمائي ..مات وهوققيه اهل المدينة غيرمدافع،، رئ امام دارقطني مُشِير فرمائيلي دى لَقَقَق البوطا،، ـ (۱، حافظ خررجي پينيد د امام دهبي رئيستا نه نقل كړي دي ..كان اماما في السنة والاحكام، تقيها، فسيحا،

بليغا،، ـر"

^{ً)} تهذيب الكمال (ج ١ص٢٧٨)

^{ً)} تهذيب الكمال (جَ ١ص٢٧٩او ٢٨٠)-

^{ً)} حواله بالا_

أ) تعليقات تهذيب الكمال (ج ١ص ٢٨٠)

د) الثقات لابن حبان (ج ٨ص ٢١)-

⁾ الطبقات لابن سعد (ج لحر ١ ٤٤) -

۱) ميزان الاعتدال (ج ١ص ٨٤). رقم (٣٠٣) -

^{^)} الكاشف للذ هبي (ج ١ص ١٩١).رقم (١٣) -) تذكرة الحفاظ (ج ٢ص ٤٨٢). رقم (٤٩٧) -

^{&#}x27;) تهذيب الكمال (ج ١ص ٢٨٠)-

^{&#}x27;') تذكرة الحفاظ (ج٢ص٤٨٣)-

۱۱) خلاصة الخزرجي (ص٤)-

دا دابومصعب احمدبن ابی بکر مدنی گئیت په باره کښې دمختلف علما، رجال توثیقی کلمات دی. په دې کښي چاهم په هغوی باندې حرح نه ده کړې ـ

البته دابوخيتُمه ﷺ نه دهغه ځونې تپوس اوكړو چه زه دچا چا نه احاديث واورم ؟ نو ار خیشمه وونیل ۱۰ لاتکتبعن این مصعب واکتب عن شئت،، در

ليکن حافظ ذهبي پښته ددې ترديد کړې دي او ونيلي دي ٠٠ لقة حجة، ماآدري مامعني تول ايي

عيشه لابنه احمد: لاتكتب عن الى مصعب واكتب عبن شئت؟،، -() حافظ ابن حجر ميلة ليكلي دي

ويحتبل ان يكون مراد الى خيته دخوله في القضاء اد اكثار لامن الفتوى بالراى،، -()

يعني ..ابوخيثمه چه کوم خپل ځونې دهغه ،ابومصعب، نه دروايت ليکلونه منع کړې وو ددې وجه داکیدې شي چه هغه د قضاء منصب سنبهال کړې وو او یا دا وجه کیدشي چه هغه دراې او د نظر په لحاظ سره فتوې ورکولي. ٠٠

دغه شان قاضى عياض ريه في فرمائي وانهاقال ذالك، لان ابا مصعب كان يبيل الى الواى، وابوخيشه من اهل الحديث، ومهن ينافي ذلك، فلذلكُ نهى عنه، والافهو لُقة لانعلم احدا ذكر لا الإبخير، ، ﴿ ﴾

يعني..ابوخيشمه چه څه وئيلي دي هغه په دې بنياد چه ابومصعب فقيه وو . دقياس او اجتهاد نه به ئي كار اغستلو. او دابوخيتمه تعلق دمحدثينو مكتب فكر سره وو. كوم چه قياس او رائې لره ډير ناخوښ ګنړی.ددې وجې نه دوی خپل ځوې منع کړې وو.ګني اُبومصعب ثقه

دې.زمومږ دغلم مطابق ټولو حضراتو دهغوي تذکره په تعديل او په توثيق سره کړې د٠٠٠-ظاهره ده چه داکلام موثراو قادح نه دې –

بیاحافظ ابن حجرمﷺ هغوی لره صدوق ګرزولې دې ۵،غالباهغوی د ابوخیشمه دکلام نه متاثره شوي دي ځکه ني داسې ليکلي دي ليکن حقه خبره داده چه هغوې ته ثقه اوحجت وئيل پکاردي څنګه چه دنقادحديث د تبصرو نه معلوميږي اوحافظ دهبي ﷺ وغيره ددې

تصريح كړې د د - ۲۰) والله اعلم

په ۲۴۲هجري،کښي دهغوي انتقال وشو عمرئي دنوي کالو نه زيات وو ۲٬۰ رحمه الله **تعا**لي رحبة واسعة_

 ⁾ تعليقات تهذيب الكمال (ج١ص ٢٨٠). نقلا عن تاريخ ابن ابى خيئمه -

^{&#}x27;) ميزان الاعتدال (ج ١ ص٨٣)، رقم (٣٠٣) –

⁾ تهذبب التهذيب (ج١ص٢٠)-

⁾ تعليقات الرفع والتكميل لشيخنا عبدالفتاح ابوغدة وَتَشَاطَة (ص٤٢٣)ونقلا من ترتيب المدارك..للقاضي عباض مُحَالِثَةَ (ج٣ص٧٤٧و٣٤٨)-

نُ) تقريب التهذيب (ص٧٨)، رقم (١٧)-

⁾ او گورئ التهذيب (ج ١ ص ٥٨). رقم (١٧)-

⁾ تقريب التهذيب (ص٧٨).(١٧)-

محمد بن ابرهیم بن دینار :دې د مدیني منورې مشهورفقیه ابوعبدالله محمدبن ابرهیم

بن دينارمدني ﷺ دې، بعضي حضراتوددوق لقب, صندل، ، ښودلې دې- (١) دې د اسامه بن زید لیني، محمد بن عبدالرحمان بن ابي دنب،محمد بن عجلان،موسي بن

عقبه تُلَاثِمُ وغيره نه روايت حديث كوي -

اوددوی نه روایت کونکو کښي ابومصعب احمد بن ابی بکر، عبدالله بن وهب،ابوهشام محمد بن مسلمه، يحيى بن ابرهيم او يعقوب بن محمد زهري وغيره شامل دي-(٢)

امام بخارى مُرَاكِم فرمائي ,,معروف الحديث،، -()

امام ابو حاتم مُسلط فرماني ,,كان من فقهاء المدينة نحومالك، وكان ثقة، ١٠٠٠) امام دارقطنی مینای فرمانی ,,ثقة، ، - (^۵)

امام ابن عبد البروي في الله عنه عنه والله عنه والما المدينة مع مالك، وعبد العين في الله والعدها

وكان فقيها فاضلاء له بالعلم رواية وعناية _ ()

زمانه کښي هم او دهغوی نه پس هم دمدينی منورې مفتی پاتې شوې دې. فاضل فقيه وو، دهغوی دعلم سره ډير ښهمناسبت وواو دحديثو روايت به ئي کول،،-

هم د ابن عبدالبر ميسيخ نه منقول دى ,,كان مدار الفتوى في اخى زمان مالك وبعدة على البغيرة بن

حافظ ابن حجر مُنافع فرماني, لُقة فقيه،، ش

ابن حبان کی دی په کتاب الثقات ذکر کړي دي - (۹)

په ۱۸۲ هجري كې دده انتقال شوې دې - ۱۰ رحمه الله تعالى رحمة واسعة

ابن ابی ذئب : دا امام محمد بن عبد الرحمن بن المغیره بن الحارث بن ابی ذئب قرشی

۱) تهذیب الکمال (ج ۲۴ ص ۳۰۶) -

آ) د شیوخ اودتلامزه د تفصیل دپاره اوګورې، تهذیب الکمال (ج ۲ ۲ص ۱۳۰۶و ۳۰۷)۔ ") التاريخ الكبير (ج ١ص٢٥)، رقم (٢٥)-

أ) تهذيب الكمال (ج ٢٤ص٣٠٨)-

^د) تهذیب التهذیب (ج۹ص۸)_) تهذیب الکمال (ج ۲۴ص۳۰۸)_

^{°)} حواله بالا-

⁾ تقريب التهذيب (ص٤۶۵).رقم (٥۶٩٢)-١) الثقات لابن حبان (٩ص٣٩)-

۱) تهذیب التهذیب (ج ۹ص۸)-

عامري مدني کستودې دده کنيت ابوالحارث دې،د ابن ابي ذنب په نوم سره مشهور دې د ابوذئب نوم هشام دی (۱)

دی د عکرمه مولی دابن عباس،شرحبیل بن سعد، سعید مقبری،نافع مولی دابن عمر، صالح مولی دالتوامه،شعبه مولی دابن عباس،ابن شهاب زهری.اسحاق بن يزيد الهذلي، محمد بن المنكدراو مسلم بن جندب ثلكة وغيره نه روايت كوي-

أودده نه عبدالله بن المبارك، يحيى بن سعيدالقطان، ابن ابي فديك، شبابه بن سوار، حجاج بن محمد ، ابونعيم ، وكيع ، آدم بن أبي أياس عبدالله بن مسلمه القعنبي عبدالله بن وهب، عبدالله بن نمير أوابوعاصم الضحاك بن مخلد الله إغيره روايت كوى - ()

ابن سعد ﷺ فرماني ووكان عالما، ثقة، فقيها، ورعا، عابدا، فأضلا....، ورمَّا

امام احمد يُرثين فرماني ,,ابن إلى ذئب يشبّه بسعيد بن البسيب،، ﴿)

دامام احمدنه تپوس اوکړې شو چه ابن ابي ذنب د ځان نه روستوڅوک دخپل ځان پشان ر ل د روې سو په اېن ابى دىب د حان نه روستوڅوک دخپل خان پشان پريخې دې؟ نو ووئيل چه نه په مدينه کښي اونه دمدينې نه سواپه بل ځانې کښي دهغه پشان څوک شته (⁶)

بله داچه امام احمد مُرَاشِية فرمائي : ابن إلى دَنب كان تُقة صدوقا، افضل من مالك بن انس، الاان مالك اشدتنقيةللهجالمنه،ابن إيذتبكان لايالى عبن يحدث،، ﴿)

يعني "ابن ابي ذنبِ ثقه أوصدوق دي او دامام مالک نه هم زيات دي. البته امام مالک درجالو په اِنتخاب کښي دابن ابي ذئب نه زياد ماهردي ځکه چه ابن ابي ذئب ددې پرواه نه کوي چه د کوم معيار راوي نه روايت او کوي، ٠-

امام يحيى بن معين ﷺ فرمائي ,,ابن إن ذئب لُقة،وكل من روىعنه ابن إن ذئب لُقة الا ابا جابر

البياض...،،-ث امام نسائي مُنْ الله فرمائي ,,لقة ، ، - (^

حماد بن خالد كينية فرماني ,,كان لقة في حديثه، صدوقا، رجالاصالحا ورعا،، ــ('

ا) تهذيب الكمال (ج٢٥ص ٤٣٠)-

⁾ دشيوخو اوتلامذ دپاره اوګورئ،تهذيب الکمال (ج۲۵ص ۶۳۶)-

[&]quot;) تعليقات تهذيب الكمال (م-٢٥ ص ٤٣١)-

^{ً)} تهذيب الكمال (ج٢٥ص ٤٣٤)-

⁾ تهذيب الكمال (ج٢٥ ص ٤٣٤)-) حواله باله-

اً) تهذيب الكمال (ج٢٥ص٣٩٥)-

مُ تهذيب الكمال (ج ٢٥ ص ٤٣۶) –

^{ً)} تهذيب الكمال (ج٢٥ص ٤٣٨) –

امام على بن المديني مُركيلة فرمائي ..ابن إن ذلب ثبت ... و

ابو حاتم بَهُ فَوْ مَانِي وَ وَلَقَالَةِ تِعْهُ وَارْتَى مِنْ اسْلَمْهُ بِنْ ذِيدٍ ، ﴿ لَكُونِ اللَّهِ

ابوزرعه كليك فرماني، ابن ابي ذئب مديق، قرش، مخزومي، ثقة،، _ ()

خليلي مُنْفَةُ فرماني .. لَقَةَ، اتَّنى عليه مالك، فقيه من اثبة اهل المدينة، ﴿ حَ

امام احمد مُنْ في فرماني ووهواورع واقول بالحق من مالک...^د ،

مصعب الزبيرى مُركينة فرماني .. كان ابن ال ذئب فقيه المدينة ، ، ح()

ابن حبار رُحَيْدُ فرمائي ، و وكان من ققهاء اهل المدينة وعبادهم، وكان من اقول اهل زمانه بالحق،، _ رُ يعني ..دې داهل مدّينې د فقهاء اودعابدانونه دې اودخپلې زماني دټولونه لوي حق کو وو ۰۰۰ دوي دحق ګوېې واقعات مورخينواو اصحاب سيردکرکړي دي –

ابن حبان ﷺ فرمائي چه يو خل هارون الرشيد بادشاه دمديني فقها، كرامو ته دعوت وركروبه دى كښي دنورو فقهاء كرامونه علاوه امام مالك او ابن ابي ذنب يكن حم وو-

هَارُونَ الرشيد دَهْغُويَ نه د خيل خان باره _ كښي تپوس اوكړو هريو كس دهغه تعرينونه اوگُوَّلُ او دَهْغَه خَوبَیَانِی شمیرلی خَوچَه کله نَی دَابَنَ ابی ذَنبَ نَه تپوس اوکړو نواول خوهغوی معذرت اوغوښتوچه څه تبصره کول نه غواړم خوچه کله اصرار زیات شونو وې وئيل , امابعد، ان سالت قال اراك ظائما غشوما، تاعد الامول من حيث لا يحل لك، وتنفقها فيا لا يرض

الله ورسوله، ولووجدت اعوانا لخلعتك من هذا الإمر، وادخلت فيه من هوانصح بله وللبسليين منك، ، _

مطلب دادي..چه خهٔ تا ظالم اوغاصب ګڼړه. ته داسې طریقې سره مال حاصلې چه هغه تا لره حلال نه وی آریّه داسی ځایونو کښې خرخ کوی چه دهغه خانې په خرج کولوباندې الله دهغه رسول ﷺ راضي نه وي.حقیقت دا دې که چرته ماته مخلص مددګار ملاوشونو خه به ته دُخُلاَفْت ند معزول كرِّم أو خلافت به هغه چاته حواله كرم كوم چه ستا به مقابلة كبني دالله

تعالى اود مسلمانويدحق كښي ډير خيرخواه وي... وانی چه هارون الرشیدخپل سرخکته کړو.امام مالک ﷺ فرماني چه ما خپلې کېړې

رَّاغُونَدِّي كَرِيَ خَكَه چَه ماته يقين ووچه اوس به دده سردتني نه جَده كُرِي شي اوپه ماباندي به د ووينوڅاڅکي راپريوخي...

) الثقات الابن حبان (ج٧ص ٣٩٠) –

⁾ تعليقات نهذيب الكمال (ج٢٥ص ٤٣٤) –

⁾ تعليقات تهذيب الكمال (ج٢٥ص ٤٤٣)-) برنى حواله _

⁾ تهذيب التهذيب (ج٩ص٣٠٧)-

د) سيراعلام النبلاء (ج٧ص١٤٢)

⁾ سيراعلام النبلاء (ج٧ص ١٤٤) -

په اخبره کښي خليفه خپل سراوچت کړواووې وئيل چه ته ددې ټولو په مقابله کښي رښتونې يئ ددې نه پس ني هغه رخصت کړو اود ابن ابی ذ نب په عطيه کښي ني اضافه اکړه – () يوخل ابوجعفر المنصور ته ابن ابی ذنبه کښلا ووئيل چه خلق لګيا دې مړی تاسو دهغوی مدد په مال فنې سره ولې نه کوې ؟

په سن کې د رکې نو منصور اونیل چه ما دسرحدونو په حفاظت کښي مال لګولې دې ⊣و که ما سرحدونه نه وو بند کړی نو ته به خپل کور کښي دننه ذیح کړې شوې وې.

منصور خپل سر ښکته کړو او وې وليل ..هذا ځيراهل الحجال،٠٠٠)

يوځل نې هم دې ابوجعفرمنصورته په مخامخ اوئيل ۱۰الظلم فاش بهابك،، چه ظلم ستا په دروازه خور شوې دې ۱۰۰۰

يوخلې ابوجعفر ٰده نه دخپل ځان په باره کښي تپوس اکړو چه څه څنګه خليفه يم ؟ نو وې فرمانيل و ورېهنه البنية، انګلجائز، و ۴، يعني په خداې چه ته ظالم ني –

يد ابن ابى ذئب باندې بعضو دقدرى الزام لګولې دې پس ابن حبان کينځ فرماني ... وکان مع ذلك يرى القدر، ويقول به وکان مالك يهجولامن اجله،،-

دستيره انقدار ديمون په وقالمتنافع بردستن. يعنی باوجود د دې چه صاحب دفضل او دمناقب او کمال وو ليکن د قدريه رائې ئې ساتله. امام مالک ددې وجې نه متروک کړې وو۰۰۰^(۵)

دغه شان واقدى كني مقل كړى دى ..وكانوايرمونه بالقدر،،-()

ليكن دا الزام درست او صبيح نه دې ځكه چه واقدى فرما**ئي ، وماكان قدريا،لقدكان يتلى تولهم** د سيد ين

بلکه واقدی موند. بلکه واقدی موند دی الزام حقیقت بیانوی

^{&#}x27;) النقات لابن حبان (ج٧ص ١٣٩٠ (٣٩١) -') سيراعلام النبلاء (ج٧ص \$ ١٤و٣٦)_ ') سير اعلام النبلاء (ج٧ص \$ ١٤) -') بورتنئ حواله _____

أ) الثقات لابن حبان (ج٧ص٣٩) --أ) تهذيب التهذيب (ج٩ص ٣٠٥) --

⁾ سير أعلام النبلاء (ج٧ص١٤٠) -

^{^)} سير اعلام النبلاء (ج٧ص١٤٥<u>) -</u>

كتابالعد كشفالبارى

٠٠ وكان رجلا كريها، يجلس اليه كل احد، ويغشالا،فلا يطرده،ولا يقول له شيئًا، وان مرض عادي، فكادوايتهمونه بالقدر لهذا وشهه،، من

يعنى دې ډيرشريف سړې وو ده ته به هرقسمه خلق راتلل او ده به چآته څه نه وئيل او نه به نړ چا ته دخپل ځان نه دپاسيدودپاره وليل او دغه شان چه څوک به بيمارشو نوده به بلا امتياز دهرچا عیادت او پوښتنه کوله د داسي خبرودوجې نه دې مهتم بالقدر اوګنړلې شو . . . تقریبا هم د آخبره مصعب الزبیري *کیلت* هم بیان کړې ده هغه فرماني .

ه وانها كان زمن المهدى قد اخذوا اهل القدر وضربوهم، ونفوهم، فجاء منهم قوم الى ابن إلى ذئب، فجلسوا اليه

واعتصبوابه من الضرب، فقيل: هوقدرى، لاجل ذلك، لقدحد ثنى من اثق به انه ماتكلم فيه قط،، رن يعنی " دخليفه مهدی په زمانه کښي چه کله قدريه ګرفتار کړې شو او دوی وهلې کيدل اوجلاً وطن كيدل په دې وخت كښې څه كسان دوى ته راغلى وو أو ددې پناه ي اغستى وه د دې وجې نه ورته قدرې او نيلې شو كني ماته ښه معتمد عليه كسانو بيان كړى دى چه ده كله هم دقدريه رائي نه ده خپله کړي،، ـ

حاصل دا چه په ده كوم دقدري الزام دي هغه بالكل ثابت نددي-

تركومه چه دامام مالك ﷺ , دهجران، ، خبره ده نو هغه به هله صحيح وه چه دې په حقيقت كُنبيِّ قَدْرى وو جه كله اصلاً قدريّ كيدل ثابت نه دى نو دامام مالكَـ مَيْنَيْنَ هَجْرَان به هم بالكلّ ثابت ندوي_

بيادامام مالک ﷺ نه دده صفت او ثنا هم منقول ده كومه چه مونږه ورستوذكركړي ده،البته په دې هیڅ شک نه شته چه ددې دواړو نه ده يو بل متعلق نا مناسب تبصرې منقولي دی عْلَما ، رجال دداسي قسمه اقوال غيرمعتبره محرزولي دي، ، پس حافظ ذهبي عِيليَّ فرماني "

وبكل حال فكلام الاقران بعضهم في بعض لايعول على كثيرمنه، فلا نقصت جلالة مالك بقول ابن إن ذئب قيده ولاضعف العلماء ابن إن ذئب بهقالته هذاه، بل هباعالها الهدينة في زمنهها، ويُتُجُاه،، حرى

يعنى ,,بهرحال دمعاصرينوپدحق كښي دمعاصرينو كلام اكثراوبيشتر معتبرنه دې،دابن ابي ذنب دكلام نه دامام مالك توسية به جلالت شان كنبي څه كمي نه دې راغلي اونه دد أسي قسمه كلام دوجي نددابن ابي ذئب جا تضعيف كړي دې دواړه په دواړه په خپله زمانه كښي دمدينې منورې فقيهان او عالمان ګنړلي کيده الله تعالى دې ددې دواړونه راضي شي –

يوه بله خبره چه ددوی په باره کښي قابل تنقيح ده هغه داده چه بعضي حضراتو دامام زهری رج به احاديثو كښي ده لره معولي شآن كمزورې ګڼړلې دې دعلي ابن المديني نه چه دده باره په تپوس او کړې شو نووي فرمانيل:

⁾ سيراعلام النبلاء (ج٧ص ١٤١) –) سيراعلام النبلاء (٧ص٤٥) –

[&]quot;) سبرا علام النبلاء (ج٧ص١٤٣) -

, ,كان عندنا لكة وكانوا يوهنونه في اشياء رواها عن الزهرى،، درى

یعنی دې زمونږ په وړاندې تقه دې څه خلق دې په بعضې روایتو کښي کمزورې ګنړی کوم چه دې دزهرې نه نقل کوي، ،

دغه شان امام احمد کوشتی هم دده توثیق کړې دې. هغه هم دزهری په روایاتوباندې تحفظات ظاهرکړی دی۔ (۲

کر د گوت دادي چه ده لره دامام زهري گوايا د رواياتو په سلسله کمزورې ګرخول هم درست نه دی _ددې وجه داده چه يعقوب بن شيبه گويا فرماني :

وواخذاناعن الزهرى عرض والعرض عند جمياع من إدر كناصحياح ،، (

یعنی دوی چه کوم روایتونه دامام زهری گیلی نه اغستی دی هغه عرضا، دقراءت علی الشیخ په طور باندی، اغستی دی او , عرض، . دټولو علماء په نیزدرست دې، ، .

بلکه حافظ ابن حجر می این حجر محقیقت دامام زهری می این دوراره نه نقل کړې دې چه یو خل ابنای ذنب اوامام زهری این این دنب اوامام زهری این این دنب اوامام زهری این میت کنبی په څه خبره باندې مباحثه اومناقشه او شوه دې سلسله کنبی په امام زهری باندې څه خبره ناګواره محسوس شوه نوهغه قسم او کړو چه ده ته به هیڅ یوحدیث نه اورو ام ورستوابن ابی ذنب ته شرمندګی او شوه او د هغوي نه ني معافی اوغستله پس د معافی او تلافی نه نی امام زهری ته عرض او کړوچه تاسوماته څه حدیشونه په لیکلوسره راکنی نو امام زهری څه حدیشونه په لیکلوسره ورکړه، نوده به هم دهغه حدیشونه روایت کول۔ ۱۴

ددې نه معلومه شوه چه دامام زهری رح، نه د اکثرروایات د مکاتبت یادمناولي په ذریعه حاصل شده دی اوپه دې طریقه حاصل شوی روایات دمحدثینو په نیز معتبر دی-(۴)

هم دغه وجه ده چه دامام يحيى بن معين گُتُلُونه عشمان دارمى گُتُلُو پوښتنه آوكړه ,,ابن لي وثب ماحاله في الوهري ؟،، نووي فرمائيل ابن إي دثب ثقة،، -()

دهغه شان عمروبن على الفلاس گونگر فرمائي _داين ايون**ژب فالزهری احبال من کل شامي،٠-رُ**ث بيادلته دې دا هم واضحه وی چه امام بخار*ی گونگو* دابن ابی دنب نه کوم مرويات اغستی دی هغه ټول ئي متابعتا اغستې دی ^اواله اعلم

⁾ ميزان الاعتدال (٣ص ۶۲٠). رقم (٧٨٣٧) -) ميزان الاعتدال (ج٣ص ۶۲٠)، رقم (٧٨٣٧) –) سيزاعلام النبلاء (ج٧ص ١٤٧)_ ان من الدن (. ه. ٧٠٣٧) –

[&]quot;) تهذیب التهذیب (ج ۱۹ س۳۰۷) — ") اوگورئ شرح نخبة الفکر لعلی القاری (ص۶۷۷–۶۸۳) —) تهذیب التهذیب (ج ۱۹ ص ۳۰۶) —

⁾ پورتنئ حواله _

مُ هدى الساري (ص ٤٤٠) -

۱۵۸ هجرې کښې په کوفه کښي وفات شو ۱

کتاب الايدان، باب صوم دمضان احتسابا من الايدان لاندې تير شوې دې (*)

 حضوت ابو هريره النائل دحضرت ابوهريره النائل حالات پد كتاب الايمان ``باب امور الايمان،) دلاندې تيرشوې دي رُ

قوله: قلت يا رسول الله، انمي اسمع منك حديثاً كثيرا انساع إماعرض اوكرواي دالله رسوله،ص، خه ستأسونه ډير حديثونه اورم چه هغې لره هيره وم

قوله: قال: ابسط رداءك فبسطته: هغوي راتد اوفرمانيل چه خپل څادر خور كړه ما هغد

قوله: قـال فغرف بيديه، ثمرقـال :ضمه،فضممته : وي فرمانيل چه نبي ﷺ خپل دوارلاسونو لیبی ډکولی آو په څادر کښي اچولی ـ بیا ني اوونیل دې لره خپلې سینې سره اولګوه نو ماخپلې سینې سره اولګولو ـ

قوله: فما نسيت شيئ بعن الادى نه پس مانه څه څېزهير نه شو

حضرت ابو هريره الله الله وي دوايت په ذريعي دخپل كثرت حفظ يود بله وجه بيان كړي ده. دړومېي حديث نه خو ده معلومه شوه چه دوي به درسول الله کاللم سره ډير پاتې کيدل اودېبي عِيْهُم خبرې به ني اورېدې او محفوظ کولې به ني او د دې روايت نه معلومه شوٰه چه نبی اکرم پېځ د دوي دياره خاص د عااو خاص توجه کړې وه-

ېس ددې دپاره ئي يومخصوص صورت دا اختيار کړو چه ښي تياثيم خپل دواړه لېې ډ کې کړې او په ځادر کښي واچولې ظاهرادا څه حسی څیز نه وولیکن معنوي اعتبار سره نبی تلځاله دفيض او دمعرّفت يوهٔ غتهه حصه اوددې دحفاظت دپاره قوت حافظه په وديعت سره کینُځودّله اوحکم ني اوکّړو چه دې لره خپلي سینې سره اوّلګّوه وّه هغه دې لره خَپلّې سینې سره جوخت کړو ددې اثر داظاهرشو چه هغه بیا کله یوحدیث هم هیر نه کړو_

دحديث باب په مختلف طرق کښې تعارض او دهغې حل : دلته ,,قبانسيت شيئا بعده،، ,, شيئا . .نكره تحت النفي واقع ده چه عموم تري معلوميږي _غه شان دسفيان بن عيينه عن الزهري په روايت کښي دي ..فوالذي بعثه بالحق، مانسيت شيئاسمعته منه

⁾ سيراعلام النبلاء (ج٧ص١٤٨) -

⁾ كشف الباري (ج ٢ ص٣٣۶) -

⁾ كنف البارى (ج١ ص٤٥٩) -

⁾ محميم "ببخاري (٢ص١٠٩٣). كتاب الا عتصام بالكتاب والسنة و باب الحجة على من قال : ان احكام ا مِنْ عَلَيْهِ كَانَتْ ظَاهِرةرقم (٧٣٥٤) –

اودابرهیم بن سعد عن الزهری په طریق کښي دی .. فوالذی بعثه بالحق، مانسیت من مقالته تلك اله يوم دنا ۱۵۰۰)

ددې ټولورواياتونه دا خبره په عموم سره پوهه کښې ته راځي چه حضرت ابوهريره څاڅو ددې نه پس يوه خبره هم نه ده هيره کړي _

لیکن د..شعیب عن الزهری په طریقه مروی روایت کښي ۱۰ فها نسیت من مقالة رسول الله ﷺ تلك من شعب، ٢٠٠

ددې مطلب دادې چه ددې وقعي نه پس ما دحضور اکرم پې دهغه وخت دمخصوص کلام څخه څه هم نه دي هير کړي دهغه پوره کلام لره مامکمل يادکړلو...

ظاهره ده چه په دې کښي عموم نیشته دهغه شان په دې مختلف طرقو په مینخ کسي تعارض پیدا کیګی د دې جواب د تطبیق په صورت کښي هم ورکړې کیګی او د ترجیح په صورت کښي هم د ترجیح په صورت کښي دعموم ولا روایت ته ترجیح ورکړې کیګی خکه چه حضرت ابوهریره الله خپل کثرت محفوظات لره بیانول غواړي د ۱۰

د تطبيق په صورت كښي وانيلى شى چه دادود مىخنك اوخاناله خانله واقعى دى.دشعيب عن الزهرى. والا طريقه كښي دهغه مخصوص وقعى ذكردې.دباقى محفوظاتو او مسموعاتو ذكر نشته او دنورو رواياتو تعلق دنور وقعاتوسره دې چه په هغې كښي حضرت ابوهريره النش مطلقا دخپل كثرت محفوظاتو ذكر كول غواړى نه

دتطبيق يو صورت دا هم كيدشى چه د .. شعيب عن الزهرى ولاطريق كنبي د . . فهانسيت من مقالة رسول الله نظ تلك من شيخ . . كنبي چه كوم .. من مقالة دې په دې كنبي .. من . . سبيد گنړلې شي _ نواوس به مطلب ده شي چه دحضوراكرم نظ دې واقعي او ارشاد دوجې نه بيا ما څدشي هير نه كړو - ()

دهغه شان ده هم ممکن دې چه په دې طريق کښي ..من،، دابتداء غايت د بيان دپاره وي.نو اوس به مطلب دا شي چه کله دحضور اکرم نه دمقاله ضادره شوه نو دغه وخت نه پس ما څه

[&]quot;) صحيح البخارى (ج اص ۲۱۶) كتاب الحرث والبزارعة، باب ما جاء فى الغرس. رقم (۲۳۵۰) – ") صحيح مسلم كتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل ابى هريره الدوسى تُلَّاثُتُ رقم (۴۹۹×۴۰۰) – ") صحيح البخارى (ج ١صـ٢٧٥).كتاب البيوع.باب ماجاء فى قول الله تعالى :(فاذ قضيت الصلاة...). رقم(۴۰٤) –

اً) اُوگوری فتح الباری (ج۱ص۲۱۵) آُ) فتح الباری (ج۱ص۲۱۵)۔

⁾ الكنزالمتورى (ج٢ص ٣٤٨) –

شي نه دې هير کړې، ـ هم برني حواله ـ يو اشکال او دهغې جواب: دحديث باب نه معلوميږي چه حضرت ابوهريره تالخو ددې واقعې نه پس هيڅ نه دې هير کړې حالانکه په کتاب الطب کښي دحضرت ابوهريره تالخو شاګرد حضرت ابوسلمه ﷺ دهغوی نه مرفوع حدیث ، لایوردمبرش علی مصح،، دنقل کولونه پس فرمائي

.وانكرابوهويرة المن عليث الاول (وهوحديث: ١٠ لاعدوى ولاصفى....،،،)قلنا: الم تحدث انه: لاعبوي،،

فى طن بالحبشية، قال ابوسلمه: فها رايته نسى حديثا غيرى، . در ١

يعنيي ,,حضرت ابوهريره اللثيُّة د ,,لاعدوى.....،،,,والاحديث نه انكاراوكړونومونږورته عرض اوکړو چه هم تاسومونږ ته د لاعدوى، والاحديث نه وو بيان کړې ؟ نو حضرت ابوهريره کاتو مبهم شانته خبرې سره خبره ختمه کړه، ابوسلمه گيانځ فرماني چه ما هغوى لره نه دى

كتلى چەددى حديث ندى علاوه بل حديث هيركړى وى،، دغه شأن امام طحاوي گُنَيْج , په شرح مشكل الآثار ، ، كښې يوروايت نقل كړې دې چه په هغې

كنبي حضرت ابوذر الله في فرماني نسيت انضلها او الحيرها،،، ز) يعنى اي ابوهريره تا ددې ارشاد دټولونه افضله يا دټولونه بهتره حصه هيره کړې دږ٠٠٠-

ددې دواړو روايتونو نه معلوميږي چه حضرت ابوه ريره گاتو نه هيره شوې ده،حالاتکه په حديث باب کښې د دې خبرې تصريح ده چه په حضرت ابوهريره باندې بيا څه نسيان نه وو

ددې يو جواب خو دا ورکړې شوې دې چه دنسيان دا واقعه دحديث با ب دواقعي نه وړاندې

ود اودحدیث باب دواقعي نه پس بیا نسیان نه وو طاری شوې (۲) وه اودحدیث باب دواقعي نه پس بیا نسیان نه وو طاری شوې (۲) دویم جواب دا ورکړې شوې دې چه دراصل دعدم نسیان وعده عمومی نه وه بلکه دیو مخصوص حدیث سره متعلق وه ، لکه څنګه چه حضرت ابوهریره ناتی مرفوع حدیث نقل د.

: انه لن يسط احدثوبه حتى اقض مقالتي هذه ثم يجبح اليه ثوبه، الاوعي ما اقول، فبسطت نبرة على حتى اذ اقضى رسول الله ترفيم مقالته، جمعتها الى صدرى، فها نسبت من مقالة رسول الله ترفيم تلك من شيء، ، _ () يعنى حصوراكرم على يوخله اوفرمانيل چه كوم سړى خپل څادر خور كړو تر دې پورې چه زه خپله خبره ختمه کړم اوبيا دې څادر لره خپلې سينې سره پيوست کړې نوچه کوم څه زه ونيم نو

⁽⁾ صجيج البخاري (ج ٢ص ٨٥٩)كتاب الطب،باب بيان لاهامة،رقم (٥٧٧١)-

⁾ شرح مشكل الانار (ج٤ص٣٥٢) باب بيان مشكل ما روى عن رسول الله كالمنظم فيمما كان من قوله. وأبوهريرة حاضره: ايكم بسط ثوبه، ثم اخذمن حديثي هذا و فانه لاينسي شيئا سمعه. وان اباهريرة فعل ذلك،فما نسى بعد ذلك شيئا سمعه –

^{ً)} اوګورئ شرح مشکل الاثار (ج ٤ص٣٥٣)۔

⁾ صُعيع البخاري (كتاب البيوع. باب ما جاء في ج ١ص ٢٧٥) قول الله تعالى؛ فاذ قضيت الصلاة)·

د همور و طرم الهم معاصلي طبوي تعطيع عمير هم تعدي هم تعدي هم الله دا ذكر كړي دي: هغه مخصوص حديث كوم يودې ؟حافظ ابن حجراو علامه عيني رحمهماالله دا ذكر كړې دي: ما مرحما د ١٩٠٠ كا ١٩٠٨ تا تعداد العام العام العام الله ما العام الله علم العام العام العام العام العام العام

مامن رجل يسمع كلمة او كلمتين او ثلاثا او اربعا او عبسا مما فرض الله ، فيتعلمهن ،ويعلمهن الا دعل الدين

بعضى حضراتودا جواب وركړې دې چه په حقيقت كښي نسيان حضرت ابوهريره الله نه نه دې كړ لاحق شوې بلكه حضرت ابوسلمه كښكي ته لاحق شوې دې چه هغوى دا حديث دبل يو شيخ نه اوريدلي دې اودا ئي او ګڼړل چه دامي دحضرت ابوهريره الله نه اوريدلي دې حالانكه دابوهريره الله نه نه دو اوريدلي، هيره تې خپله شوې وه اودهيرې نسبت ئ حضرت ابوهريره الله ته كړې دې ـ (١)

بعضی حضراتو دا امکان هم ظاهر کړې دې چه حضرت ابوهریره گلتو حقیقة د روایت نه انکارنه دې کړې البته دائ ګنړلی دی چه شاګرد به دمرویاتو په مینځ کښي په تطبیق باندې به نه پوهیږی هغوی څکه دانکار عنوان اختیار کړو- (^۲)

ددې ټولوجوابونه معلومیږی چه زیات قرین قیاس دا لګی چه د خانله خانله واقعات دی ... پرومبې داواقعه راپیښه شوه چه حضوراکرم په داحادیثو دیادولوترغیب ورکولودپاره ارشاداوفرمائیلو اندلن پیسط احد شهده حق اتض مقالتی هنده نهم ایده ثویه الاوی مااتول، په دې موقعه حضرت ابوهریره په موجب د ارشاد نبوی باندې عمل اوکړو نو دوعدې مطابق ټول ارشادات ی ازبر شو ، اود دهغی مخصوص ارشاد اتو څخه هغوی ی هیڅ یو څیز هم مطابق ټول ارشادات ی ازبر شو ، اود دهغی مخصوص ارشاد اتو څخه هغوی ی هیڅ یو څیز هم

نه دې هیرکړې ... په دویم ځل دا واقعه راپیښه شوه چه کله حضرت ابوهریره گاژا ته دنسیان شکایت محسوس شو او دوی مخکښي نه دنبی گاژه دتصرف او د توجو مظهرهم کتلې نه وو ځکه ئ مطلقا دقوت حافظي دپاره درخواست او کړو، اونبی کاژه هم دهغه شان عمل کولوحکم ورکړواو ورسره ورسره ئ دلپود ډکولواشاره هم او کړله، ددې نه پس بیا هغه دهرقسمه دنسیان نه محفوظ شو، نوبس کوم کوم ځې کښي چه هغوی طرف ته دنسیان نسبت شوې دې که هغوی په خپله کړي وی یا بل چا دهغوی طرف ته دنسیان نسبت کړې وی نو دابه ددې اخری واقعې نه دوړاندې واقعات وی _

) نتح الباری (ج۱ص۲۱۵).نقلا عن جامع الترمذی والحلیة لابی نعیم. وانظرالمسند للامام اجمد (ج ۲ صِ۲٤۳) رقم (۸۳۹۰).و (ج۲ص۲۷).رقم (۹۵۱۳)-

او كه دځانله ځانله واقعات كرځولوكښې اشكال محسوسيږي چه دادواړه حديثونه خويو دي

^{ً)} الكنزالمتوارى (ج ٢ص ٣٤٨)_

⁾ هم برنئ حواله _

بيا څنګه ځانله خانله واقعات او ګرخو نوپه داسي صورت کښي به د عموم والاحديث په خپل خې کښي برقرار او ګڼړو او دخصوص والاحديث کښي به تاويل او کړو کوم چه مونږ شاته بيان کړې دې چه په ۲۰ من مقالله کښي ۲۰ من، به سببيه او ګڼړلې شي او يا به ۳۰ من.

داُبْتُدا، عَاْیتُ دپاره اوگرخولی شی _ يو بل اشكال او دهغی جواب دلته ديو بل روايت نه هم اشكال كيږي، هغه دا چه الفضل بن عمروبن اميه ضمري د خپل والد صاحب حسن بن عمرو نه نقل كوي :

"تحدثت عندان هريرة بحديث فانكراه، فقلت : إن قد سبعته منك، قال : ان كنت سبعته منى فهومكترب عندى، فاعذا بيدن ال بيته، فارانا كتباكثيرة ، من حديث رسول الله تهيم، فوجد ذلك الحديث، فقال : ققد اعبرتك ان ان كنت قلحدثتك به فهومكترب عندى، _ جامع بيان العلم وفضله (جاس ٢٣٣ وقم ٢٣٣ - عينى "ما دحضرت ابوهريره المنه و واندى ته ديو حديث تذكره او كره نو هغوى ددى نه انكار اوكرو ماورته عرض اوكرو چه جى ما داحديث دستاسونه اوريدلى . هغوى اونيل كه چرى خمانه دى اوريدلى . هغوى اونيل كه چرى خمانه دى اوريدلى وى نو دا به ماسره ليكى موجود وى، بيائ زه لاس نيولى خان سره كورته بوتلم او تولى ليكلى شوى نوشتى راته اوښودلى چه به هغى كښى هغه حديث رايداشو، نووى فرمانيل چه ما تا ته نوى وائيلى كه چرته ما نه دى دا حديث اوريدلى وى نو ماسره به ليكلى شوى موجود وى، ، _

ددې روایت نه معلومیږي چه په ابوهریره گلژو باندې نسیان طاری شوې وو او هغه هم په مابعد زمانه کښي ـ

ددې جواب اول خودا دې چه داروايت منکر او انتهاى صعيف دې ('،ځکه چه په دې کښي حسن بن عمرو، راوى انتهاى مجهول دې _ ()اوکه دې لره ثابت هم اوګنړو نو دحافظ ابن حجر رکيلي د دول مطابق ديوه نادره واقعه ده ()اود يو واقعي نيمي دوجې نه دهغوى دقوت حفظ مسلم خوصوصيت باندې څه اثرنه پريوزي _ دالله سهمانه وتعالى اعلم_

حَدَّنْتَا إِبْرَاهِيمُبُنُ الْمُنْذِيوقَالَ حَدَّنْتَا ابْنَ أَبِي فُدَيْكِيهِمْدَا أَوْقَالَ عَرَفَ بِيدِوفِيهِ ٢٣٤٨١

رجال الحديث

ابراهیم بن المنذر : دا ابو اسحاق ابرهیم بن المنذر قرشی اسدی مدنی پیشید دی ددی حالات
 دکتاب العلم په ابتدا - کنبی بهاب من سئل علمه ادهرمشتغل فی حدیثه سره تیر شوی دی (*)
 ابن ابی فدیک : دا محمد بن اسماعیل بن مسلم بن ابی فدیک دهلی مدنی پیشید ، ابو

^{&#}x27;) فتح البارى (ج١ص٢١٥) –

^{ً)} تعلَّيقات جامع بيان العلم وفضله (ج ١ص ٣٢٤).رقم (٤٢٢)__ ً) فتع البارى (ج١ص٢١٥) –

⁾ اوگوری کشف الباری (ج۳ص۳۹_۵)

اسماعیل ددې کنیت دې، او دا ابوفدیک په نوم مشهور دې. او دابوفدیک نو م دینار دې () دې دسلمه بن وردان، دضحاک بن عثمان، ابن ابي ذئب، ابراهیم بن الفضل مخزومي تولام وغیره داهل مدیني څخه روایت کوي –

آودوی نه روایت کونکوکښي ابرهیم بن المنذر، سلمة بن شبیب، احمد بن الازهر،عبدبن حمید، هارون الحمال،حسین بن عیسی بسطامی او محمدبن مصفی گینگ وغیره ډیرشې حضرات شامل دی $\overset{\wedge}{\sim}$

امام يحي بن معين رئين فرمائي ثقة _ . . . "،

نيزهغوى فرمائي كان اردى الناس عن ابن ابى ذئب، دهو تقة،، _()

امام نسائي مُركية فرمائي . ليس به باس ٢٠٠٠

حافظ ذهبي مُراك ددى يد تذكره كنبى ليكى الامام، الثقة، المحدث،،،، ()

نيزهغوى فرمائي صدوق، مشهور، يحتج به في الكتب السنة،

ابن حبان ﷺ ديَّ په کتاب الثقات کښي ذکرکرې دې - ([^]) البته يعقوب بن سفيان ﷺ دې ضعيف ګرخولې دې ([^])

دغه شان ابن سعد گرای فرماني . وکان کثیرالحیث،ولیس بحجه،، _ ("بلیکن ده خبره دې هم واضحه وی چه ددی په باره کښي مطلقاد، ضعف، اطلاق کول صحیح نه دی،څنګه چه

دروستوعلما ، داقوالونه معلومیږی _ نیزدابن سعد ﷺ تردید کولوسره حافظ ذهبی ﷺ فرمائی، قال این سعد وحده : لیس بحجة،

وراتقه جهاعة،،۔(") یعنی،دې لره صرف ابن سعد گزائي غير محتج به ګرځولې دې، ګنی دده پوره يوجماعت توثيق کړې دې څنګه چه امام ذهبي په يومقام کښي فرماني :

^{&#}x27;) تهذيب الكمال (ج ٢٤ص٤٨٥)_

[]] د شيوخ اواستاذ انود تفصيل دپاره او كورى تهذيب الكمال (ج ٢٤ص٣٨٥ ٢٨٤)_

⁾ تاریخ الدارمی (ص۲۱۸)رقم (۸۱۹)_ ایم در در در در ایک الرو ۲۸ (۸۸۹) –

⁾ تعليقات تهذيب الكمال (ج ٢٤ص ٤٨٨) –

ر) تهذيب الكمال (ج ٣٤ص ٤٨٨)_

ع) سيراعلام النبلاء (ج٩ ص ٤٨٤)_

Y) ميزان الاعتدل (ج 9ص ٤٨٣) رقم (٧٢٣٤)_

[^] الثقات لابن حبان (ج٩ ص٣٤)_ () تعليقات تهذيب الكمال (ج٤٢ص٤٨) نقلا عن المعرفة والتاريخ (٣_٥٣) -

⁾ التبقات الكبرى لابن سعد (ج۵ص۲۹)_

⁾ ميزان الاعتدال (ج ٣ص٤٨٣) رقم (٨٢٣٤) –

وقداحتج بابن اب فديك الجاعة، ووثقه غيرواحد، لكن معن احفظ منه واتقن،، __()

یعنی ابن ابی فدیک لره اصحاب اصول سته محتج به گرخولی دی اویونه زیات حضراتودور یعنی ابن ابی فدیک لره اصحاب اصول سته محتج به گرخولی دی اویونه زیات حضراتودور توثیق کرېدی او دا بله خبره چه معن بن عیسی دده په مقابله کښی زیات متقن او حافظ دی، . . په اصل کښی ابن سعد په کتاب الطبقات کښی پومبې دمعن بن عیسی گښی تذکرو لیکلی ده اودده په باره کښی ذکرکړی دی .. وکان لته کیرالحدیث ثبتا مامونا، .. رئ اوددې نه سی دابن ابی فدیک تذکره لیکلی ده دې سره ی لیکلی دی وکان کثیرالحدیث، ولیس بهجه، حافظ ذهبی گښی هم دې خبرې ته اشاره کرې ده چه دده متعلق ی دلیس بحجه کومه وبنا شوې ده هغه دمعن بن عیسی سره دتقابل په اعتبار سره ده ګینې فی نفسه هغه ثقه دې والله اعلم د ابن ابی فدیک گښی انتقال په ۲۲کال ۲۰ هجری کښی شوې دې ۲۰ رصه الله تعال رحمة واسعة دې طریق لره د دکر کولو مقصد دامام بخاری گښی مقصد دمتن الفاظو کښی تبدیلی طرف ته اشاره کول دی او هغه ده چه په دې مقام باندې امام بخاری گښی داحدیث داحدین له بک ایرمصعب، عن محمدین ابرویم به دی مقام باندې امام بخاری شدی دا حدیث امام بخاری تو سعیدالبقیری عن اب هریوق، طریق سره نقل کوی د کېلیکن په دې کړې دې، چه الفاظ ی دا دی ...، فغرف پیدیه، او هم دا حدیث امام بخاری د ایراهیم بن المتنادعن این ابی نویدی عن ابن اب ی د کېنی دی کېنی دی کېدی په دی مین بیده و پیدیه، افاظ دی غرف پیده دی کېنی

دبعضی حضراتونه دلته عجیبه خبط شوی دی ځکه چه دلته امام بخاری کمی داسی فرمائیلی دی حضراتونه دلته عجیبه خبط شوی دی ځکه چه دلته امام بخاری کمی د فرمائیلی دی حداثنا ابراهیم بن البنار، قالحدثنا ابن ابی فدیک څه تذکره هم نه ده رغلی، بهذا،،خو په داسی وخت کبنی وائیلی کیږی چه کله یوحدیث په سنداو متن سره یوخی راغلی وی اوددې نه پس بل سندراشی اوبیا دهغی نه پس دواړه سندونه متحد راشی نودې لره ذکرکولو سره. بهنا،، وائی او مطلب داوی چه کوم سند اومتن تیرشوی دی ددې حدیث سندمخکبنی هم هغه شان دی اومتن ی هم هغه دی حالتکه دلته چه خاکه سند بدل دی دغه شان متن هم مختلف ذکرشوی دی -

ددې اشکال دوجې نه بعضي حضراتوداً ونیلې دی چه دابن ابي فدیک هم هغه محمد بن ابراهیم بن دیناردې کوم چه دابن ابي ذنب شاګرددې او دبرنې حدیث په سند کښي تیرشوې دې لیکن دا غلطه ده،ځکه چه ابن ابي فدیک بالکل بدل شخصیت دې اومحمدبن ابراهیم

سيراعلام النبلاء (ج٩ص٤٨٧)_

ا) اوگورئ طبقات ابن سعد (ج۵ص٤٣٨)−

[&]quot;) الكاشف (ج٢ص١٥٨) رقم (٢٧٢٧)

^{ً)} اوگوری صحیح البخاری (ج ۱ص ۱۵-۵۱۵) باب (بدون ترحمة بعد باب سوال المشرکین ان بریهم النبی تاریخ این) رقم(۲۶۴۸) _

بن دینارځانله یوبل شخصیت دې، ابن ابی فدیک محمدبن اسماعیل بن مسلم دې اودې لیثی دې اودهغوی کنیة ابواسماعیل ده اومحمدبن ابرهیم بن دینار جهنې دې اودهغه کنیت ابوعبد الله دې البته دواړه دابن ابی ذئب نه په روایت کولوکښې اودمدنی کیدوپه حیثیت سره څه اشتراک لری . (')

رجال الحديث

⊙ اسماعیل دی ابوعبدالله ا سماعیل بن آبی اویس عبدالله بن عبدالله بن اویس بن مالک بن ابی عامراصبحی مدنی میشای دی اودده حالات په کتاب الایبان،پاب تغاضل اهل الایبان فی الاصال، کنبی تیرشوی دی - (۲)

اریس بن مان بن بلال، امام مالک، ابن ابی ذئب، محمد بن عجلان، سفیان ثوری او دخپل این این بازی اسام مالک، ابن ابی ذئب، محمد بن عجلان، سفیان ثوری او دخپل

والدابواويس فالأوغيره ندروايت كوي

اوددی نه روایت کونکوکنی ابرهیم بن المنذر اسحاق بن راهویه اسحاق بن موسی انصاری اودده رور اسماعیل بن ابی اویس ایوب بن سلیمان بن بلال محمدبن رافع نیسابوری محمد بن سعدکاتب الواقدی اویعقوب بن محمدزهری انتخ وغیره ډیرشی حضرات شامل دی د (

^{&#}x27;) د دواړوحضراتوتراجم مونږ روستوذکرکړی دی _ فليراجع _

⁾ اوگورئ فتج الباري (١ص٢١٤) _

^{ً)} كشف البارى (ج٢ص١١٣)_ أي من زير الكرال (١٤٥م ع 15)

ا) تهديب الكمال (١٤ص ١٤٤)_

^نم دشيوخواو تلامذودتفصيل دپاره اوګورئ تهذيب الکمال (۱۶ص ٤ ١٤ او ٤٠ ١<u>) _</u>

امام یحیی بن معین گیلی فرمائی چه ، القة ، ‹‹› امام ابود اود گیلی ده لره داسماعیل بن ابی اویس څخه زیات فوقیت ورکئی _ ‹ '› امام دار قطنی کیلی فرمائی , حجة ، ، _ · . '

امام دارفطنی پرچی فرمانی ,,حجه،،۔() حافظ ذهبی پُرچی فرمائی ,,ثقة،،۔ () ان حیار عُمِیٰ دی به کتاب الثقات کسی ذکر کری دی ()

ابن حبان رئيس دې په کتاب الثقات کښې ذکړکړې دې (^۵) البته امام نساني دې ضعيف محرزولې دې - (۲)

دهغه شان از دی وئیلی دی ,, کان پښځ الحدیث، رځ

ترکوم ځې پورې چه دامام نسائي د تضعیف تعلق دې نو هغه مېهم دې او د توثیق افراد چه دی نوهغوی ډیر ګڼړ شي دی _ _ او کړ خو سرې حد دادې د قرار تعلق دې نه اول خو هغه رخیله حجت نه دی _ (^

اوکوم ځې پورې چه دازدي د قول تعلق دې نواول خو هغه پخپله حجت نه دې ـ (^) بياابن عبدالبرئيلي ددې ډيرسخت ترديد کړې دې او وئيلي دي ,.هذا رجم بالظن الفاسه وکذب

محض....د.(أ)

حافظ دهبي مُنَظِّةً فرمائي ,,وهذا منه زلة قبيحة ، . (`) حافظ ابن حجر مُنَظِّةً فرمائي چه زما په خيال ازدى دوضع حديث الزام په عبدالحميدبن ابى اويس باندې نه دې لګولې ،بلکه دابوبکرالاعشى په نوم يوبل راوى دې دهغه په باره کښې وائيلى دى (` `)او اګرچه دعبدالحميد کنيت هم ابوبکرالاعشى دې ، . . دعبدالحميدبن اويس

څخه د آبن ماجه نه علاوه ټول اصحاب اصول سته احادیث اغستې دې (۲۰) د دوی انتقال په کال ۲۰ هجرې کښې شوې دې _۲۰) رحمه الله تعال رحمه واسعة

اً) تهذیب الکمال (ج۱۶ص ٤٤٥)_

^{ً)} حواله بالا ____ً]) ميزان الاعتدال (ج٢ص٥٣٨) رقم (٤٧۶٤).وتهذيب التهذيب (ج۶ص١١٨) _

^{ً)} الكاشف (ج اص ٤٦٧) رقم (٣١١٠)_ ^) الثقات لابن حبان (ج٨ص٣٩٨)_

[&]quot;) الثقات لابن حبان (ج۸ص۳۹۸)_ ") تهذیب التهذیب(ج۶ص۱۱۸)،وهدی الساری (ص۱۶۶<u>)_</u>

⁾ تهدیب انتهدیب *رخ ۱۳۰۰ ۱۰) او شدی انتشاری (ط ۲۶ ع).* ۲) میزان الاعتدال (ج۲ص۵۳۸) رقم (۲۷۶۴)_

[^] أوكورئ الرفع والتكميل للكنوى مع التعليقات الحافلة على الرفع والتكميل لليشخ عبدالفتاح ابوغدة (٢٧٧ -٢٧٤)-

^{*)} هدی الساری (ص ۱۶ \$) _ *') میزان الاعتدال (ج۲ص۳۸) –

⁾ میزان الاعتدال (ج ۲ ص ۱۸) — ۱۱) هدی الساری (ص ۱۶ ¢) و تهذیب التهذیب(ج۶ص۱۱۸)_

۱′) هدی الساری (ث۳۱۶) – ۱۲) خلاصة الخزرجی (۲۲۲)__

- ابن ابس ذئب ادا امامحمدبن عبدالرحمن بن المغيره بن حارث بن ابى ذنب قرشى مدنى المغيره بن حارث بن ابى ذنب قرشى مدنى المغيرة على المناسرة عبر المعارض المناسرة عبر المعارض المعار
- @ سعید المقبوی: ابوسعیدبن سعید کیسان مقبری مدنی میمی دده حالات به کتاب الایسان، باب سور مسان احتسابا من الایسان ، الاندی تیر شوی دی (')
- @ حضوت ابو هويوه المنتخون و حضرت ابوهريره المنتخو حالات د٠٠ كتاب الايمان په باب امود الايمان،، لاندې تير شوى دى (٢)

دلته دا اشکآل پیداکیږی چه روستوراغلی دی چه حضرت ابوهٔ ریْره ﷺ به دحضرت عبدالله بن عمرﷺ په باره کښی وائیل چه ۱۰کان یکتبولااکتب، _ر*، یعنی, هغه به لیکل کول اومابه لیکل نه کول، _نوبیا ده سره دوه ,,وعاء، ، دکوم ځی نه راغلی ؟

ددې جواب دا دې چه دلته د ووعائين، نه نوعين من العلم، مراد دى، يعنى ماته دحضور مرم ﷺ دعلومو نه دوه نوعينې يادې وې، كه چرته دامې ليكلې وې نو دوه لوخي يا دوه

تهلی به ترې ډکې شوې وې _ (°) . يا داسې هم وانيلې کيدشی چه حضرت ابوهريره گاڅؤ به په شروع کښې ليکل نه کول ليکن بيا روستو ئ ليکل کول،يا ئ په بل چاليکلی وو _ (′) .

بيادا هم زده کړه چه په دې روايت خو., وعائين،، دې او دمسنداحمد په يو روايت کښې دی چه <u>, رحفظت ثلاثة اجرية پثثت منهاجرابين، ۲</u>۰٫۶چه ,, مادرې تهلې يادې کړې وې اوپه هغې کښې مې دوه تهلې خوارې کړې دی،.

په دې دواړو رواياتونوگنېي هيڅ تعارض نشته،بلکل ممکنه ده چه يو وعاء دبلې وعا، په مقابله کښې غټ وی چه په وعا، کښې څومره وی هغه په دواوجرابوکښې راځی اوپه وړرکی کښې د يوې جرابي په اندازه وی _^ بلکه د,المحدثالفاضل، په يو منقطع طريق سره ``خيسة

⁽⁾ کشف الباری (ج۲۳۳۶)__

^{])} كشف البارى (جَ ١ ص٤٥٩)-

[&]quot;) فتح البارى (ج١ص٢١۶) _

أ) صبح البخاري (ج ١ص٢٢) كتاب العلم. باب كتابة العلم رقم (١١٣) _

م) فتع البارى (ج اص ٢١٤)_

م مربرنئ حواله _

⁾ فتع الباری (ج ۱ص۲۱۶) _

^{^)} هم برنئ حواله _

اچرية،،هم راغلې دې .دې لره هم په تقدير دثبوت سابقه محمل باندې محمول کولې شي _(` والله اعلم

قوله: في ما احدهما فبثثته بس پدهغه دواو نوعو كښې يوه نوعه علم ما خور كړوك

داسماعیلی په روایت , لی الناس، اضافه هم شته _(۲) مطلب دادې چه مادعلم یوه نوعه په خلقوکښي خوراکړد_

قوله: <u>واماً الاخر فلوبثثته قطع هان البلعوم: پ</u>اتي شود دويمه نوعه، نوكه چرته زهٔ هغه خور ه كړم نو داسټ به پرې كړې *شي* _

په دې نوع تأنی کښی څخه وو ن حضرات علماء فرماني چه په دې کښې د ظالمانو حکمرانانو نومونه وو،هم دغه شان پکښې ددوی حالات اودوی د زمانوتعین پکښې وو.خکم چه حضرت ابوهریره گلاتو به کله کله دې ته اشاره هم کوله،مثلا فرمانیل بې .. اعوذهاالله من راس الستین وامارة الصبیان،، یعنی ., زهٔ دالله تعالی پناه غواړم دشپېتود اواخرنه اود هلکانودامارت نه،، ددې نه دهغوی اشاره دیزیدبن معاویه خلافت طرف ته وه.خکه چه یزیدپه ۲۰هجرې کښې خلیفه جوړشوې وو،الله تعالی دابوهریره گلاتو دعا قبوله کړه اویهههرې کښې ځانتقال اوشو (۱)

بعضى حضرات وائي چه په دې نوع ثانی کښې دهغې فتنوتذکره وه کومې چه دحضورپاک تلی نه پس واقع شوې _() لکه دحضرت عثمان الی شهادت او دکعبې محاصره اودهغې سوزېدل بيا دهغې دمنهدم کيدو نه پس دهغې تعمير کول وغيره_
 ابن بطال پید دابوالزناد پید نقل کوي.

, يعنى انها كانت احاديث اشراط الساعة وماعر ف به عليه السلام من فساد الدين و تغير الاحوال، والتغييم لحقوق الله تعالى، كقوله عليه السلام: «يكون فسادهذا الدين على يدى اغيلمة سفهاء من قريش،» _ ^)

^{· \)} برانيحواله_

⁾ هم برني حواله

⁾ كذا قال العافظ مُتَّالِيًة في فتح البارى (ج اص ٢٦٤). وقال ايضافى فتح البارى (ج ٢٢ص ١٠) كتاب الفتن، كتاب الفتن، كتاب الفتن، باب قول النبى مُلِيَّ الملك امتى على يدى اغيلية سفهاء)؛ وفى رواية ابن ابى شيبة؛ أن اباهريرة كان يمشى فى السوق، ويقول: الهم لاتدركنى سنة ستين ولاامارة الصبيان... ولكن الذى روا، احمدعن ابى هريرة مرفوعا ,, تعوذوا بالله من رام السبين وامارة الصبيان... انظر المسند (ج ٢٣٢٤)، رقم (٨٣٧٨)، و(ج ٢ ص ٢٠٤٤)، رقم (٨٧٨٧)، و(ج ٢ ص ٢٠٤٤)، رقم (٧٨٢١).

اً) اوگوری رسالة شرح تراجم ابواب صبح البخاری (ص۱۶و ۱۶)_ هم شرحه این مطال (ح. در ۱۹۵۸) - وجدیث شریقی درار در اگوری نرم میرو

د) شرح ابن بطال(ج آص۱۹۵)_ دحدیث شریف دپاره اگوری صحیح البخاری (ج۲س۱۰۹۶).کتاب الفتن. باب قول النبی تخلیج هلاک امنی علی یدی اغیامه سفها ۱۰۰۰هم (۷۰۵۸). اومسند احمد (ج۲س۲۸۸). رقم(۷۸۵۸). و(ج۲س۲۹۹). روج ۲۳۹). رقم (۷۹۶۱). و(ج۲س۲۰۶). رقم (۲۰۸۰). [بقیه حاشیه به راروانه صفحه...

حاصل داشوه چه ددې نوع علم نه مرادهغه احادیث دی کرم چه دقیامت دعلاماتو سره متعلق دی،نیز هغه احادیث پکښې هم دی په کومو کښې چه حضوراکرم ﷺ دینی فساد، داحوالوتغیر او الله تعالی دحقوقوتضیع رضائع، ذکرکړی دی،خنګه چه ارشاددې .. ددې دین خراب تیا به دقریش دیوڅو بې وقوف هلکانود لاسه کیځی، .۔

حضرت ابوهريره ﷺ ته ددې سفهاء نوم په نوم علم وو۔ ``

ددی حدیث نه داشراط ساعت رعلامات دفیامت، مراد اغستلو سره ممکنه ده چه چاته اشکال اوشی چه داشراط ساعتو احادیث خو نورو صحابوته هم معلوم وو نو هغوی خوبیان کړی وو، نو لهذاداسی مراد اغستل ډیره بعیده خبره ده۔

و دوي جواب دا دې چه د قيامت علامات ډير داسې دی چه عام خلقوعقلونو کښې دهغې د تحمل قوت نشته،نو حضرت ابوهريره نايې ته اودده پشان ډير صحابه کراموته دهغې ښودنه

شوې وه او دعام خلقونه دهغې اخفاء شوې وه _والله اعلم_

علامه كرمانى كيلي فرمائي چه بعضى متصوفين (صفياء كرام) ددې مراد علم الاسرار اخلى، څنګه چه هغوى وائي چه دنوع اول علم الاحكام اوعلم الاخلاق دى او دنوع ثانى نه مرادعلم الاسرار دې، چه هغه دعلماء اوداهل معرفت سره مختص دى، هم ددې حضراتو كښې دچا شعردې

يارب جوهرعلم الاحكام لوابوع به لقيل لى: انت مبن يعبد الوثنا

و لاستحل رجال مسلبون دمی یوون اقیح ما یاتونه حسنا رخما سره بعضی داسی علمی جوهردی که چرسته زه هغه ښکاره کړم نو ماته به اونیلی شی چه ته هم دبت پرستونه ئ اوډیر شی مسلمانان به خما وینا حلاله او ګرځوی، ګویاچه هغوی به

دخپل قبیح ترین فعل مسحتسن او گنری -) علامه کرمانی گنگ دداسی متصوفینوچه دهغوی اعمال او اخلاق دشریعت دقید نه ازاد دی، د هغی خبر اغستی دی او فرمائیلی دی چه ددی حدیث نه دعلم الاسرار مراد اغستل خو بعید نه دی، خودشریعت دقواعدو او دعقائدو کماحقه دپابندی دقیدلحاظ ساتل ډیر ضوری دی ()

و حضرت کنګوهي کونځ فرماني چه اهل حقیقت یعنی حضرات صوفیه کرامو دا حدیث په

خپلې مدعاباندې محمول کړې دې خو دڅه بعیده نه ده در') حضرت شیخ الحدیث صاحب کونله فرماني چه دحضرت ګنګوهي مونله مرادهغه باطنیه او

بقیه حاشیه د تیرمخ] .و(ج۲س۲۲۸). رقم (۸۳۲۹). رقم (ج۲ص۴۵۵). رقم (۱۰۲۷)_ ') اوګورئ صحیح البخاری (ج۲ص۱۰۶۶). کتاب الفتن.باب قول النبی گرایم هلاک امتی علی یدی اغیلمة سفهاء. رقم (۷۰۵۸)._

^{ً)} شرح الکومانی (ج ۲ص۳۶۹)_ ً) لامع الدراری (ج۲۳۶۹) ____

متصوفین نه دی دکوموذکر چه مخکښې راغلې دې بلکه ددې نه مراداهل حق عارفین کاملین دی.دکومو دننه چه دمعرفت بالله خصوصیت دشریعت باندې عمل کولوسره او دحضور نظم دکاملې اتباع سره راځي ۔ (')

چنانچەدعلامە قسطلانى ئۇڭ دكلام نەددې تائىدكىږى، ھغەوائى_

دّدې نه مرادعلم الاسراردي. کوم چه داهل عرفان اومشاهدات اواهل اتقان اوداهل رسوخ سرو مختص دی. کوم چه په حقیقت دعلم شرائع او داتباع رسول ﷺ نتیجه ده،او داسی علوم دمجاهدوپه سمندرغټو وهونکوخلقوته حاصلیږی _

علامه قسطلاني ويني فرماني چه په دې مقام كښې داسې علوم مراد كيدل لكه لرې ده، خكه

چه دداسې علومودپټوالی هډو څه وجه نشته دې ۱۰ دانله اعلم ابن کاوانله اعلی ابن المنیر پینی کو د اهل باطنیه دې حدیث لره دباطل عقائدو او نظریاتو تصحیح لره د هتهیارو داسلحه، ټوګه استعمال کړې دې او وائیلی دی چه شریعت یو ظاهر دې او یو باطن دېدباطن څه څیزدې ؟ حقیقت دا دې چه دوی ددین د بیخکندې لره نوم باطن د شریعت ایښې دې در ۲۰ دانله اعلم

قوله: قال ابوعبدالله: البلعوم هجري الطعام: ابوعبدالله دامام بخاري پيني، فرماني چه بلعوم دخوراک نالي ته وائيلي کيږي - دا عبارت صرف دمستملي په روايت کښي دي. () بلعوم دباء په ضمه سره دي. ()

اُبن بطال ﷺ فرمائي ّچه بلعوم دحلقوم په معنی دی،اودا دپیپهرونه والاتردساه دنالي پورې ته وائي،اودېسره متصل تر معدې پورې دخوراک نالي ته ,,مرئ،،وائي _ ،′)

دلته دبلعوم نه مرادحلق او نرخره ده(۷)والله اعلم

داحادیث باب د ترجمة الباب سوه مطابقت : داباب ,, پاپحفظ العلم، ،دې اوبه دې کښې درې حدیثونه مذکور دی، د رومبي حدیث دباب سره مناسبت واضحه دې چه دې کښې اشتغال (مشغولتیا) علمي مذکوره ده اوچه څومره مشغولتیه وي هم هغه شآن به په حفظ علم کښې مددحاصلږي.

بياپه دې حديث کښې دلزوم او دحضور او دمذاکره علمي ذکرهم دې ,,وان اباهويو آکان پلامرسول الله ته الله به معلنه ويحشرمالا يحشرون ويحفظ مالا يحفظون ، د اټول دحفظ علم اسباب دی- په دويم

⁾ الكنز المتوارى (ج٢ص٣٤٩) – أن شـ م القسطلاني (ح١ص٢١٢)

^{&#}x27;) شرح القسطلانی (ج ۱ص۲۱۲)_ ') اوگورئ فتح الباری (ج ۱ص۲۱۶) _

⁾ او توری سے اجری رہا ہے ۔ ا) عبدۃ القاری (ج۲ص۱۸۶) _

۲) عمدۃ القاری (ج۲ص۱۸۶) _ () فتح الباری (ج۲ص۲۱۶) _

مُ شرح ابن بطالٌ(ج آص۶۹۲) _ ') اوکورئ القاموس الوحید(ص۱۷۹)_

حدیث کښي د آه وزاري رژړه فریاد) او دحضوراکرم گله نه د دعادطلب دي. چه دا ښه ظاهره ده دحفظ حدیث دپاره اهم ترین سبب دی_

دريم حديث كنبي دعلم دنشر اواشاعت ذكردي او داهم دحفظ علم اودحفاظت دعلم دياره يوه لويه ذريعه ده _والله سهحانه وتعالى اعلم

۴۳_بأب:الانصاتللعلماء

د تيوشوي باب سره مناسبت : مخکښې باب .. پاب حفظ العلم، تيرشوې دې اوپه دې باب كبني دانصات يعني دچپوالي او استماع يعني غوږ اېخودوذكردي،په دواړوكښې مناسبت واضحه دې چه علم دعلما ، نه په حاصلولو سره حفظ کيږي او دې دپاره انصات يعني سکوت

اواستماع صروري ده، دې دپاره چه چرته څه خبره داورېدو نه پاتې نشي (` الله اعلم مقصد دترجمة البآب ابن بطال كالله فرمائي چه دامام بخاري كالله مقصود متعلمينوته تنبيه ورکول دی چه دعلماؤیه وړاندې انصات اودهغوی توقیر لازمي دې. ځکه چه علما، دحضرات انبيا ، كراموعليهم السلام وارثان دي او الله رجل جلاله، خيل مومنانويند كانوته دنبی کریم گریم و رآندی داواز او پتولونه منع فرمائیلی دی چه چرته حبط رضانع کیدل، داعمالو رانشی _ او حضرات علماء خو دانسیاء کراموعلیهم السلام وارثان دی. نوخکه دوی سره هم دَتوقير او داجلال معامله يكارده أومتعلمينو لره ددوي به وراندي داستماع أو دسکوتندکار اخستل پکار دی۔ 🖔

علامه عيني المطيخ هم دتير شوى باب سره دمناسبت به خي كنبي دترجمة االباب مقصد طرف ته اشاره کړې ده چه امام بخاري کښتودا وانيل غواړي چه حفظ علم کوم چه مطلوب دې د دې دحاصلو لودپاره دعلماً ، دوړاندې په ناسته آوپه سکوت سره دهغوي خبرې اورېدل اودهغوي نداستفاده کول ضروری ده - (۲)

حضرت ګنګوهي پینځ فرماني چه دامام بخاري پینځ مقصد دادې چه وعظ او نصیحت په وخت كنبيّ خلقولرّ، چپ كول جائزدي، اكرچٍه خلق بّه ذكراوتلاوت وغُيْرٌه كنبي ولّي مشغولْ نه وي خوبياهم دهغوي چپ كول جائزدي_رأ،

حضرت شيخ الهندي فرماني چه حضرت ابن عباس اللهاته حضور اكرم الله ارشاد فرمائيلي وو , الاالفينك تالى القوم وهم في حديث من حديثهم، فتقص عليهم، فتقطع عليهم حديثهم فتملهم (٥

⁾ عمدة القارى (ج٢ص١٨٦)_

^{ً)} شرح ابن بطال (ج ۱ ص۱۹۶)_

^{ً)} عمدةً القارى (ج٢ص١٨۶) _

^{ً&#}x27;) لامع الدرارى(ج٢ص٣٧١)_

⁽ ١٩٣٨ م البخاري (ج ٢ص ٨٣٨) كتاب الدعوات باب ما يكره من السجع من الدعاء _ (٥٣٣٨)_

كښې مېتلاكړې،،_

دې آرشادنه او دداسې قسمه نورو ارشاداتونه معلوميږي چا بل چه لره خاموش کول درست ندی، او دې سره انصات للعلماء ددې مخالف دې ـ

ددې وجي نه مو ملف مينايم ثابت كړه چه دتعليم اونبليغ دصرورت دوجي نه په اوقات خاص

کنی هم دا استنصات مباح او مستحسن دی - والله تعالی اعلم()

بعضی حضراتودا مقصدبیان کړی دی چه امام بخاری کی دلته دحفظ علم اودتحصیل علم طریقه بیانول غواړی چه شامردلره پکاردی دطلب علم او د درس په دوران کښی بل څه څیز سره مشغوله کیدل نه دی پکار، بلکه ده لره پکاردی چه په مکمل طور باندې خپل معلم اوشیخ طرف ته متوجې وی او زړه او ذهن لره په یکسوني سره داستاذطرف ته ملتفت ساته برزی والله تعالی اعلم

(٧٦ اعَدَّ لَنَا حَبَّاجٌ قَالَ حَدَّ لَنَا شُعُبَةُ قَالَ أَخْبَرَنِي عَلِى بُنُ مُدْرِكِ عَنُ أَمِي ذُرُعَةً عَنْ جَرِيرٍ أَنَّ النَّبِي-صلى الله عليه وسلم-قَالَ لَهُ فِي حَبِّةِ الْوَدَاعِ «اسْتَنْصِتِ النَّاسَ» فَقَالَ « لاَتْرْجِعُوابَغُوى كُفَّارًا يَضْرِبُ بِعَضْكُمُ رِقَابَ بَعْضِ» (٢١٤٣، ٤٢٧٥، ٤٤٩٩)

رجال الحديث

① حجاج دا ابومحمد حجاج بن منهال انماطی بصری گوشی دی،ددی حالات په ۱۰کتاب الایان،۱۰۹باب ماجاء ان الاعبال بالنیة والحسبة، ولکل مانوی، په ضمن کنبی تیرشوی دی _()
 شعبه: امیرالمومنین فی الحدیث امام شعبه بن الحجاج گوشی ددوی حالات په ۱۰ کتاب الایان،۱۰۹باب السلم من سلم البسلمون من لسانه ویده، لاندی تیرشوی دی _()
 وعلی بن مدرک دا ابومدرک علی بن مدرک نخعی وهبیلی کوفی دی _()
 دی دابراهیم نخعی، تمیم بن طرفه طائی، عبدالرحمن بن یزید نخعی هلال بن یساف، ابوزرعه بن عمروبن جریراود ابوصالم کوشید ندروایت کوی _

أوده نه روايت كونكوكبني اشعث بن سوار، حنش بن الحارث نخعى، سليمان الاعمش، شعبه بن الحجاج او عبد الرحمن بن عبد المسعودي للتم شام شامل دي (١)

امام یحیی بن معین او نسائی میلی فرمائی چد, رقعة،، ، ()

۱) الابواب والتراجم (ص۵۶و۵۷)-

اوگورئ الكنز المتوارى (ج٢ص ٣٧٠و ٣٧١)_

اً) كُشُفُ الباري (ج٢ص ٤٤٤) -

^{&#}x27;) کشف الباری (ج ۱ص۶۷۸)_

هم تهذیب الکمال(ج ۲۱ص۱۲۶)) دشیوخ اوتلامذؤدتفصیل دپاره اوګورئ.تهذیب الکمال(ج ۲۱ص۱۲۸)

⁾ تهذیب الکمال (ج۲۱ص۱۲۸) _

ابوحاتم كليك فرمائى ,, صالح صدوق، ، ()

نيزهغوي فرمائي " ثقة ، ، _ ^۲

امام عجلي مُنتِينَة فرمائي .. كولي ثقة، . ـ (٢)

ابن حبان سينه مغوى لره په كتاب الثقات كښي ذكركړې دې او ليكلى دى چه ده دحضرت ... ابومسعودبدري الشؤنة حديث اورېدلي دي (^{اُ)} حافظ ابن حجر _{گنان}ي فرماني "ثقة، . (⁽⁾)

ددة انتقال په كال ۲۰ هجري كښې شوې دې ۲٫ دمه الله تعالى دحمة واسعة

- @ ابوزرعه: دې دحضرت جريربن عبدالله بجلي الله نوسې دې، دده حالات په .. كتاب الايمان و، بأب الجهادمن الايمان، ،سره تيرشوي دي _(')
- و جریو: دا حضرت جریربن عبدالله بجلی المالی دی،ددهٔ حالات په کتاب الایان،باب قول النبی تر الدين النصيحة، دلاندي تيرشوي دي _(^)

قوله: أن النبي تَاثِيمُ قبال له في حجة الوداع: حضورا كرم تالم هغه ته دحجة الوداع به موقع باندې فرمائيلي وو ــ بعضي علماء په دې باندې دا اشكال كړې دې چه حضرت جرير الليخ دحصوراكرم تليم دوفات

نه خَلْوَينِت ورخي وړاندې مسلمان شوي ووّ (')نو لهذا هَغَه په حجة الوّداع كَتِّي خُنګه

شريكيدي دې شي ؟ معلومه شوه چه په حديث كښې د., له ، ، لفظ وهم دې _(^) _ ليكن دا صحيح نه ده ځكه چه ابن حبان گښتا ليكلي دى چه دې په رمضان ١٠ هجرې كښې مسلمان شوې وو(١) ، دصحيح بخاري په باب حجة الوادع كښې هم ددې حديث په بل طريق كبنى دى ,, ان النبى تايم قال في حجة الوادع لجرير، ، ـ (١٠)

ً) هم برننئ حواله _

ا) هم برتنَّئ حواله

^{ً)} تهذیب التهذیب (ج۷ص۳۸۱)_

⁾ الثقات لابن حبان (ج۵ص۱۶۵) _

لِي تقريب التهذيب (صَ٣٠٥)، رقم (٤٧٩۶)__

⁾ الثقات لابن حبان (ج۵ص۱۶۵)_

⁾ کشف الباری (ج۲ص ۳۰۶) -

مُ كشف البارى (جَ ٢ص ٧٦٤) –

⁾ قاله ابن عبدالبرني الاستيعاب (بهامش الاصابة ج ١ص٢٣٢)_

⁾ اوګورئ فتح الباری (ج۱ص ۲۱۷) _

⁾ فتع البارى (ج ١ص٣١٧) -

^{4)} صعيح الباري (ج٢٤٣٢)، كتاب المفازي، باب حجة الوداع، رقم (٤٤٠٥) _

لهذا راجح هم داده چه دې دحجة الوادع نه مخکښې مسلمان شوې وو۔ (`) قوله: استنصت النياس : خلق خاموش کړه

دامام بخارى مُرَيِّينًا مقصد هم دادي چه نبي عَيْمًا حضرت جرير كُلُّتُوَّ ته أوفرمانيل .. استنصت الناس،اي اطلب الانصات من الناس، . -

انصات واستماع کښي فرق حافظ ابن حجر کولي فرمانی چه په قران کريم کښې الله جل شانه وافاق کښي فرق حافظ ابنه وافاق ک وافاق کا اقران فاستمعواله وانستوا ، (۲) فرمانيلی دی او په دې کښې داستماع اودانصات په مينځ کښې فرق شوې دې، نوهغوی فرمانی، چه , انصات ، مطلق سکوت او چپوالی ته وانی . که هغې سره دغوږايخودواور پدل وی او که نه وی ، مثلا دا چه په سکوت سره يوخبره واوری خوفکری په يو بل څيز کښې وی _

دغه شان , استماع ، چه کله په سکوت سره وی اوکله په نطق سره . داسی چه خبرې کونکې اور په دغه کله په نطق سره . داسی چه خبرې کونکې اور په دونکې وی (آ) لیکن د علما ، لغت داقوالوپه رنړه کښې صحیح دا معلومیږی چه انصات خاص دې او , استماع ، عام ده داستماع معنی مطلقا دغوږ اېخودوده ، که سکوت وی اوکه نه وی د ااوانصات داسې سکوت ته وائي چه په هغې کښې استماع هم وی _ (٥)

دسفيان ثورى مُحَيُّةٍ قول دى ,, كان يقال :اول العلم الاستباع، ثم الانصات، ثم العقظ، ثم العمل، ثم النش، ، _ ()

امام على بن المدينى وَيُشَرُّ دسفيان بن عيينه وَيُشَرُّ به وړاندې دمطرف وَيُشَرُّ قول نقل كړو ,, چه الانصات من العينين، نوهغوى ددې تشريح دريافت كړه نووئ فرمانيل ,, اذاحدثت رجلافلم ينظراليك لميكن منصتا، . . ()

يعنى.. كه ته چرته چاسره څه خبره كوې اوهغه سته خبره داسې اورئ چه سته طرف ته نه ګورئنو هغه ته به ,,منست، ،نه وائيلې كيږي، ، -

^{ً)} فتع البارى (ج١ص٢١٧)__

⁾ الأعراف ١٠٤ · ·

^{ً)} فتح الباری (ج۱ص۲۱۷) _ ¹) استمع له والیه : اصغی .تاج العروس (ج۵۳۸۹) مادة , , سمع._

ر المسلم والمرافق على المستماع. قالوا :انصت ينصت انصانا. اذاسكت سكوت مستمع _ انظرتاج العروس(ج ١ص ٥٩١) مادة , رنصت.._

^{°)} جامع بیآن العلم وفضله (ج۱ص۴۷۷). باب منازل العلماء،وقم(۷۶۰) _ ") فتع الباری (ج۱ص۲۱۷) –

قوله: فقال: لا ترجعوابعدى كفارايضرب بعضكر رقاب بعض: نبى علام او فرمانيل چه خمانه پس ديوبل سټونووهلو په وجه كافران جوړند شي يد دي نه معلوميږي چه مسلمان لره قتل كول كفردې او دا دخوارجو راې ده يمرجه خوداسې قسمه حديثونه رد كړې د كه كه خوداسې مسمن د دي يه مصرنه دې ي

اهل السنة والجماعة ددي مختلف توجيهات كوي.

 بوه توجيح كومه چه ډيره مشهوره ده هغه داده چه داپه مستحل باندې محمول دې ليكن داتوجيه ضعيفه ده، ځكه چه حضوراكرم ناه دلفظ .. كڼ، اطلاق په مخصوصو جرائمو باندې كړې دې اودمعصيت په استحلال كښې دڅه قسمه ګناه تخصيص نشته بلكه كوموګناه لره هم چه چاحلاله رجائز، اوګنړله بس هغه كس به كافرشي _

﴿ دویمه توجیح داده ، چه ددې معنی ده چه د کافرانومشابه نه شي یعنی داکار د کافرانو دې چه دې مسلمانان قتل کوي، لهذاتاسوددې دافعالوپشان افعال مه کوئ _ خلاصه ده شوه چه دافعل د کافرانو دې او داد کفریوقسم دې _

دریمه توجیح داده چه د ,, لاترجعوا کفارا،، معنی ,, لاترتدوا،، یعنی مرتدنه شئ _

 څلورمه توجیح داده چه ,, لا ترجعوبعدی کهارا ای بنعبة الاسلام،، یعنی داسلام دنعمت ناشکری کونکی جوړنه شئ، ځکه چه اسلام دسلم نه ماخوددې، او هغه غواړی مصلحت لره او مسالمت لره نه دې لره چه دیوبل مقابلې دپاره تلوارونه راوچت کړئ اومقاتله اوشی _

(پنخمه توجیح داده چه دلته د کافرنه مراد کافر بالله نه دې،بلکه د کافرنه متکفرباللاح مراد دې یعني په اسلحوسره ديو بل مقابلې ته مهراخې - ()والله تعالى اعلم

په دې ټولو تو جيها تو کښې د ويمه توجيح ذهن ته دکوځيدويه وجه ډيره راجع ده، يعني ديوبل سټونه وهل کافرانه فعل دې اودداسې حرکت کولوپه وجه د کافرانومشابه نشئ ـ والله اعلم قوله: يضرب بعضکور قاب بعض : يشهب، مرفوع دې او هم دغه صحيح روايت دې ـ يا

دا, د کهارا، صفت دې ياد, پلاتر چوا، دفاعل نه حال دې _اوبعضې حضراتو, د پيښې، په , با ، ، جزم هم صحيح ګر ځولې دې ليکن امام نووی پينځ وغيره ددې تر ديد کړې دې _ (آبوالله اعلم _ يو اشکال او دهغې جواب : ددې حديث نه بعضې حضراتو داجماع په عدم حجيت باندې استدلال کړې دې، ځکه چه په دې حديث کښې دی , ر لاتر چوا بعدی کهارا، ، يعني ځمانه پس تاسوکافران جوړنشئ، ددې نه معلوميږي چه د ټولو خلقونه دکافرانو جوړېدو امکان شته اوظاهره ده چه دکومو خلقونه دکافرکيدو امکان شته هغه معصوم نه دې، نولهذا دامت اجماع هم حجت نه دې _

⁾ تَفْصَيْلُاتُ دْبَارْهُ او كُورِئ شَرِح النووى (ج ١ص٥٥). أوعدة القارى (ج ٢ص١٨٧)_

ددې جواب دادې چه دامت داجماع حجیت داد امت اجتماعی معصومیت دوجې نه دې.
کوم چه دخبرصادق .. لا تجتمع امتی علی ضلالة، ، (') نه ثابت دې، داجماع حجیت مونږد دې
خبرې نه نه ثابتوچه فی نفسه دامت ګمراهی ممکن نه ده دا هم داسی ده چه دحضوراکرم په خبرې نه نه ثابتوچه فی نفسه دامت ګمراهی ممکن نه ده دا هم داسی ده چه دحضوراکرم په په باره کښې سره ددې نه چه نبی تایک معصوم وو بیاهم ارشادشوې دې (لئن اشماکت لیمیلن عملكه _ رااودنبی تایک داشراک ممتنع کیدل قطعی تو ګه باندې ثابت دی، خودنفس امکان

په بنیاد باندې دلئن اش کت لیمهن عبلك و ائیلې شوى دى -دلته هم دامت عصمت اودې په نتیجه کښې دامت داجماع حجیت دحضور اکرم نگا دارشاد , لاتجتهع، نه ثابت ده او, لاتوجعوابعدى کهارا،، دنفس امکان په بنیاد وائیلې شوى دى - را والله اعلم

۴۰-باب:مايستحبللعالم اذسئل: اى الناس اعلم؟ . فيكل العلم الى الله

,, مايستحب، كښې ,, ما،، موصوله هم كيدې شى اومصدريه هم،,, اذاسئل، كښې ,, اذا، ،ظرفيه دې،چه دهغې تعلق دماقبل واقع فعل, يستحب، ،سره دې ـ

دتيوشوى باب سوه مناسبت : تيرشوې باب ,,پاپ الانمات للعلماء ، وو دهغې حقيقت ددې چه شاګر دپه حالت سماع کښې د شيخ طرف ته متوجې کيدوسره خپل معاملات هغه ته حواله کړی اوپه دې باب کښې چه څه مذکور دی دهغې حاصل دادې چه کله عالم نه داتپوس او کړې شي چه د ټولونه لوې عالم څوک دې ؟نو ددې معامله دې الله ته اوسپارئ _په دې شان دواړو بابونوکښې مناسبت واضحه کيږي _(⁶)

⁾ قال العجلوني في كشف الخفاء (ج٢ص٥٣): رواه احمد والطبراني وابن ابي خيشة في تاريخه ... وابن ابي عاصم في المدين المدين المدين المدين المدين وراه ابي عاصم في السنة وكذاهو عند الترمذي، وراه عبد الترمذي، وراه عبد وابن ماجه.....وراه الحاكموبالجملة فالحديث مشهور المتن، وله اسائيد كثيرة وشواهد عديدة في المرفوع وغيره...

^٢) الزمر⁶3_

^{ً)} اوگورئ عمدة القاری (ج۲ص ۱۸۸۷و۱۸۸۸)_ ام اوگورئ عمدة القاری (ج۲ص ۱۸۸۸). ولکنزالمتواری (ج۲ص ۳۷۱) _

م مدة القارى (ج٢ص١٨٨)-

مقصد دترجمة الباب : حضرت شيخ الهند كيش فرماني چه دعالم نه كله د.. اى الناس اعلم ،، سوال اوشى نو .. انااعلم، ،وائيل نامناسبه ده اگرچه په دغه وخت كښې په دې باندې .. اعلم الناس، متحقق وى بلكه مستحب دادى چه ددې په جواب كښې .. الله اعلم، ،وائي څنگه چه دحرت باب نه دامرواضح دى _

ددی به دمولف مقصدهم دا معلومیږی چه علماء لره بالخصوص دعلم په بآره کښی په هرحال کنبی تواضع اختیارول پکاردی او دخپل نقصان او دحق سبحانه وتعالی دکمال دهان ساتل مناسب دی،نیز دلوبئ او دعجب اسباب څنګه چه علماء ته ډیرمیسردی،دې وجې نه هم

علماؤلره په دې کښې پوره احتياط پکاردې _والهاعلمن

[١٢٧]حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بُرِ ﴾ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُوقَالَ أَخْبَرْفِ سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ قَالَ قُلْتُ لاِبْنِ عَبَّاسٍ إِنَّ نَوْقًا الْبِكَالِي يَزْعُمُ أِنَّ مُوسَى لَيْسَ يُمُوسَى يَنِي إِنْمَالِيلَ، إِنَّمَا هُوَمُوسَى آخَرُ. فَقَالَ كَذَبَ عَدُواللَّهِ، حَذَنْنَا أَيْ أن النَّبي صلى الله عليه وسلم- قَالَ « قَامَ مُوسَى النَّبِي خَطِيبًا فِي بَنِي إِسْرَابِيكَ، ِ أَى النَّاسِ أَعْلَمُ فَقَالَ أَنَاأَعُلَمُ. فَعَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِ، إِذْ لَمْ يُرُدَّ الْعِلْمَ إِلَيْهِ، فَأُوحَى اللَّهُ إِلَيْهِ أَنَّ عَبْدًامِنْ عِبَادِي بِمَجْمَعِ الْبَعْرَيْنِ هُوَأَعْلَمُ مِنْكَ. قَالَ يَأْرَبُ وَكَيْفَ بِهَ فَقِيلَ لَهُ آجُلُ خُوثًا مَكْتَلَ فَإِذَا فَقَدُتَهُ فَهُو ثَمَّ، فَالْطَلَقَ وَالْطَلَقَ بِفَتَاهُ يُوشَعَ بْنِ نُونٍ، وَحَمَلاً حُوثًا فِي ى، حَتَّى كَانَاعِنْدَ الصَّخْرُةِ وَضَعَارُءُوسَهُمَا وَنَامَا فَالْسَلِّ الْحُوَّتُ مِنَ الْمُكْتَل فَاتَّخَذَّ يِلَهُ فِي الْبُحُرِ مَرَبًا، وَكَانَ لِمُوسَى وَفَتَاهُ عَبًّا، فَانْطَلَقَا بَقِيَّةً لَيُلَتِهِمَا وَيُوْمِهَا فَلَمَّا أَصْبَعَ قَـأَلَ مُوسَم لِفَتَاااُآلِتَناغَدَاعَآإِلَقَالِلَقِينَامِنْ سَفَرِنَاهَذَالِصَبَّا، وَلَمْيَعِدُمُوسَى مَسَّامِنَ النَّصَب حَتَّى كَاوَزَ الْمَكَانَ الَّذِي أُمِرَبِهِ فَقَالَ لَهُ فَتَاهُ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الْصَغْرَةِ فَإِنِّي نَسِتُ الْحُوتَ، قَالَ مُوسَى ذَلِكَ مَاكُنَّا نَبْغِي، فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا، فَلَمَّا الْتَهَيَا إِلَى الصَّخْرَةِ إِذَارَجُكْ مُسَجِّى بِقُوْبٍ- أَوْقَالَ تَسَجَّى بِثُوْبِهِ- فَسَلَّمَ مُوسَى. فَقَالَ الْخَفِرُوأَلُو ، بأَرْضِكَ السَّلاَمُ فَقَالَ أَنَا مُوسَى . فَقَالَ مُوسَى بَنِي إِمْرَابِيلَ قَالَ نَعَمُ. قَالَ هَلْ أَنَّبِعُكَ عَلَى أَنْ تُعَلِّنُهُ مِنَّا عُلِيْتَ رَشَدًا قَالَ إِنَّكَ أَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِي صَبَرًا هَا مُوسَى إِنِّي عَلَى عِلْمِ مِنْ عِلْمِ اللَّهِ عَلَّيْنِهِ لاَ تَعْلَمُهُ أَلْتَ، وَأَنْتَ عَلَى عِلْمِ عَلَّمِكَهُ لاَ أَغْلَمُهُ. قَالَ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَاللَّهُ صَابِرًا، وَلِا أَعْهِم ۚ لِكَ أَمْرًا ۥ فَالْطَلْقَا يُمْثِيبَانِ عَلَى سَاحِلِ الْبَعْرِ لَيْسَ لِمُنَّا سَفِينَةٌ ، فَمَرَّتُ مِهمَا سَفِينَةٌ ،

^{&#}x27;) الابواب وتراجم (ص٥٧)_

⁾ قوله , إلى بن كعب.. قد مرتخريج هذا الحديث في كتاب العلم باب ماذكرفي ذهاب،موسى (ع) في

فَكَلَنُوهُمْ أَن يَعْبِلُوهُمَا، فَعُرِ فَالْخَعِرُ، فَحَمَلُوهُمَا بِغَيْرِنَوْلٍ، فَجَاءَعُصْفُورْ فَوَقَمَ عَلَى حَرْفِ السَّفِينَةِ فَنَعَرَنَعُرَا أَوْمُوا بِغَيْرِنَوْلٍ، فَجَاءَعُصُفُورْ فَوَقَمَ عَلَى وَعِلْمُكَ مِن عِلْمِ الْغَهِرَ الْمُوسَى، مَا نَقَصَ عِلْمِي وَعِلْمُكَ مِن عِلْمِ الْغَهِرَا مُوسَى فَوْمُ كَنَّ فَعَدَ الْخَصُرُ الْى وَعِلْمُكَ مِن وَعِلْمُكَ مِن عَلَمُ الْعُولَ الْمُعْرِفِي مَعْدَوْقَتَهَا لِتَغْرِقَ أَهْلَهَا قَلَ اللَّهِ الْمُلَا اللَّهُ الْعُلْلَ الْمُعْلِمُ مَعْدُونَا فِعَلَى الْمُعْرِفِي الْعَلْمُ اللَّهُ الْمُ اللَّهُ الْمُلْلُولُ اللَّهُ ا

رجال الحديث

①عبدالله بن محمد: دا ابوجعفرعبدالله بن محمدبن عبدالله بن جعفربن اليمان بن اخس جعفى مسندى بخارى ﷺ دى، ددة حالات په كتاب الايمان،, باب امورالايمان،، دلاندې تيرشوى دى۔()

٠ سفيان : داامام ابومحمدسفيان بن عيينه ابى عمران هلالى كوفى ﷺ دى ددة حالات به كتاب الايان، , , باب تول البحدث : حدثنا او اخبرنا وانهانا، الاندى تيرشوى دى ي - (')

ے پاریک ۱۹۶۶ کوی مورد میں مورد کی است میں میں میں ہوئی ہیں۔ ﴿ عمرو : دامشهورامام اوفقیه عمروبن دینارمکی ﷺ دی،ددۂ حالات هم په دې جلد کښې په ,بهاب کتابة العلم، کښې تیرشوی دی _

سعيدبن جبيو: دا مشهور تابعى عالم امام سعيدبن جبير كوفي ﷺ دى،ددة حالات اوس
 يه .. باب السمول العلم، التدي تيرشو_

و حضوت ابن عباس الله : دحضرت عبدالله بن عباس الله حالات در. بدرالوس، به خلورم حدیث به ضمن کنبی تیر شود آاود کتاب الایمان به ,, باب کفران العشیرو کفر دون کفر، ، لاندې تیر شود آ
 آبیر شود آ

^{&#}x27;) كشف البارى (ج ١ص ٤٥٧)_

⁾ كشف البارى (ج٣ص٨٢)_

^{ً)} کشف الباری (ج۱ص۴۳۵)_ ا) کشف الباری (ج۲ص۲۰۵)_

نوف بكا لى: دا توف يفتح النون وسكون الواد، بعدها فاء بن قضالة _ بفتح الفاء _ الحديدى الهكال _ بكسهالهاء الموحدة وتخفيف الكاف _ مُثيثتا دى ددة ابوالرشيد. ابورشدين. ابوعمرو مختلف كنيتونه سودلي كيږي _ په اهل دمشق ياپه اهل فلسطين كښې دده شماركيږي ديوقول مطابق دې د کعب احبار سکه خوې دې دن.

ديُّ وحضرت ثوبان مولى درسول الله كله أو وحضرت عبدالله بن عمروبن العاص، أو على بن ابكَي طالب. ابوايوب انصاري تُؤكِّينَ اودكعب احبار رُحَيَّةٍ نه روايت كُوي_

اوددهٔ نه خالدبن صبيح،سعيدبن جبِيرٍ. شهربن حوشب.نسيرين ذعلوق.ابواسحاق همداني، ابوعمران جونی او ابوهارون عبدی میشید وغیره روایت کوی_^۱۲,

ابوعمران جوني مُرثيرة فرمائي .. كان نوف ابن امراة كعب، احد العلماء، . _ (")

يحى بن ابى عمروالشيباني رئيلية فرمائي .. كان نوف امامالاهل دمشق، ٠٠٪،

ابن حبان ميني دې په کتاب الثقات کښې د کرکړې دې اوليکلې دي .. يومي القصم، - ده. په صحيحهنو كښي دده ذكر په حديث موسى والخضر سره راغلي دي - ١٠ وانيلي كيږي چه يو كس نوف بكالي مُشِيِّةِ ته راغو او ورته ي ووئيل چه تهٔ ما په خوب كښي ليدلې ئ چه ستا په لاس کښې يوه لويه نيزه ده او دهغې په سر کښې يوه روشناني ده، چه خلق ترې فانده اخلي او تهٔ دیولښکرقیادت کوي_

نوف بكالي منه ورته اووئيل كه چرته تهٔ رښتونې ئ نو ماته شهادت حاصل شو .اوهم داسې اوشو، چه دې دمحمدبن سره جهادته لاړو اوهلته شهيد شو_(^٧)

د ۹۰ هجرې نه والاتر ۱۰۰ هجرې په مينځ کښې شهيد شوې دې(^) رحمه الله تعالى رحمة واسعة () ابى بن كعب اللي دحضرت ابى بن كعب اللي حالات به كتاب العلم، باب ما ذكر ذهاب موسى

عليه الصلاة والسلام في البحرالي الخضر، ، لاتدې تيرشوي دي _ (^) .

قوله: قلت لا برے عباس :ا<u>ن نوفاً البكالي يزعم ان موسى ليس بموسى</u> بنی اسرائیل،انمیاهوموسی اخر:سعید بن جبیر کانای فرمانی چهماحضرت ابن عباس تنگ^ی

^{ً)} تهذیب الکمال (ج۳۰ص۶۵)_

[]] دشيوخ او تلامذو دپاره اوګوئ، تهذيب الکمال (ج٣٠صـ٤٥)_) هم برني حواله_

^{ً)} تهذیب النهدیب (ج ۱۰ص ^{٤۹۰})_

رُ الثقات لابن حبان (ج۵ص٤٨٣)_

⁾ تهذيب الكمال (ج٣٠ص۶۶)_) تهذيب الكمال (ج ٣٠ص۶۶) _

أ) تهذيب التهذيب (ج٠١ص٤٩)

⁾ كشف البارى (٣ص ٢٩١)_

ته اوئي چه د نوف بكالى دعوى ده چه په قصه د خضر قايمً ، موسى دبنى اسرائيلو نبى حضرت

موسى عَلِيم نه دي، بلكه دا بل خُوك موسى دي-داروایت مخکینی تیر شوی دی - () په دې کښې دحضرت ابن عباس او دحضرت حربن قیس هاد رويس الله يه مينخ كښي مناظره مذكورده، هغه مناظره بله ده. اودهغي تعلق دحضرت خضر الرام

سره دی یعنی په هغی کښې دا آختلاف وو چه موسی تلیم چاته ورغلې ووهغه څوک وو؟ سره دې یعنی په هغې کښې دا آختلاف وو چه موسی حضرت ابن عباس الله فرمانيل جدهغه خضروو او حربن قيس څوک بل څوک يادولو .ليکن په يو روايت کښې هم نشته چه هغوي څوک يادولو۔

اوپه روايت باب كنيي چه كومه مناظره ده دهغي تعلق ,,دحضرت موسى عيال، سره دي، دسعيد بن جبير رئيلة اودنوف بكالي رئيلة په مينځ كښې مناظره په دې خبرې وه چه كوم موسى خضر عيم ما دورغلي وو هغه موسى بن عمران نبي دبني اسرائيلووو أو كه خوك بل څوک وو؟ نوسعید بن جبیر خو وائی چه هغه هم موسی بن عمران دبنی اسرائیلو نبی وو،او نوف بکالی واني چه هغه بل موسى دي، يعني بن ميشا بن يوسف بن يعقوب بن اسحاق بن ابراهيم عليهم السلام دې اودحضرت موسى علام نه مخكښي تير شوې دې او دې هم ښي مرسل وو .داهل

تورات هم دا رائي ده _ن

-- حضرت سعیدبن جبیرگی دحضرت عباس 衛 نه تپوس اوکړونو هغه روته دنبي اکرم 微 حديث واورولو أودا ي ورته اووني ل چه كوم موسى دحضرت خضر عايم اسره ملاوسوي وو هغه موسى دبني اسرائيلووو

قوله: فقال كذب عدوالله: حضرت ابن عباس الله الفرمائيل چه دالله دسمن دروغ

وائیلی دی _

ابن التين وغيره تمام شراحو رائي داده چه حضرت ابن عباس چه خبره او کړه نو ددې مقصد دانه دې چه نوف بكالى د اولياء الله نه خارج شواو په اعداء الله كښې داخل شوې دې ـ بلكه دعلما، حق عادت دي چه کله خلاف حق خبره واوري نودهغوی په طبیت کښې حرکت راشي.نوپه داسي موقع باندې سخت کلمات ترې اووآئيلې شي،او ددې حقيقت مرادنه

حافظ ابن حجر ﷺ فرماثي چه ممكن ده چه حضرت ابن عباس ﷺ ته دنوف دايمان دصحت باره کښې شک شوې وو ، ځکه ئ داسې سخته خبره کړې وي _ ('،

ليكن دايو احتمال منحض دې ددې هيخ څه حقيقت نشته ، په اصل كښې د حضرت ابن عباس او دحر بن قيس تا الله مينځ كښې چه كله مناظره شوې وه په هغه وخت كښې حضرت ابن

ا) اوكورئ صحيح البخاري (ج١ص١٧) كتاب العلم باب ماذكر في ذهاب موسى عليه السلام في البحر الى الخضر، رقم (٧٤). وباب الخروج في طلب العلم. رقم (٧٨)_ ') اوګوری عمدہ القاری (ج۲ص۱۹۳)-

[&]quot;) اوگورئ فتح الباري (ج أص٢١٩). او عمدة القاري القاري (ج٢ص١٩٣)_

⁾ فتح البارى (ج١ص٢١٩)_

عباس الله ته دحضرت ابى الماللة دحديث علم نه وو دې وجې نه حضرت ابى راغلي او هغوى فيصله او كړه نوچه كله دسعيدېن جبير او دنوف بكالى په مينځ كښى مناظره اوشوه نودغه وخت كښې حضرت ابن عباس الله ته حديث معلوم وو او دنوف بكالى كلام بالكل دحديث خلاف وو نوځکه حضرت ابن عباس تانځاته جوش راغلواو اوني فرمانيل ,, کذب عددالله ، والله اعلم **قوله: حدثنا ابي بن كعب عن النبي صلى الله عليه وسلم: قـأم موسى النبي**

خطيباً في بني اسرائيل، فسثل: اي النياس اعلم؟ فقيال: انا اعلم: موندٍ ته حضرت ابي بن كعب دنبي مَلِيُهِا نه نقل كولو سره حديث واو رولوچه حضرت موسى مَلِيْهِم په بني اسرائيلو کښې خطبې دپاره اوردېدلو،نودهغوی نه تپوس اوکړې شو چه په خلقو کښې دټولونه زيات عالم څوک دې؟ نواوفرمائيل ئ چه زۀ دټولونه لوي عالم يم

ددواو روايتونو په مينځ کښې تعارض اودهغې ازاله : داروايت چه مخکښې تيرشوپه دې کښې دى ,, هل تعلم احدا اعلم منك؟،، نو حضرت موسى قايم اوفرمائيل چه ,, لا، ، اوپه روايت باب

كنبي دى ,،اىالناساعلم؟ققالانااعلم،،_

حاصل دآ چه په روايت باپ كښى حضرت موسى عيم دخپل خان دباره اعلميت ثابت كړو او ددويم روايت حاصل دا ديّ جد هغه دخيل خان نه بل دلوي اعلم نفي اوكره، ظاهره ده چه داعلميت نه دنفي كولوسره خوداعلم اثبات نه راځي _ نوددې حل دادې چه په اصل كښې سائل اول دا تپوس اوكړو,, اى الناس اعلم،، نو حضرت موسى عَلِيْمُ دهغې جواب كښې اوفرمائيل "انا اعلم.. نو هغه بيا تپوس اوكړو,, هل تعلم احدا اعلم منك ؟،، نوحضرت موسى

مَيْنِهِ اوفر مائيل ,, لا، ،_

ايا لاحضرت موسى عليه السلام د ٫٫ اعلم نفى كول درست دى ١٠دلته اشكال كيږى چه د حضرت موسى تليله د,,لاً،، واليلو سره د,, اعلم،، نفى څنګه اوشوه ؟ داخوخلاف واقع ده، ځکه چه الله تعالى فرمائى ,, پلىعبدىناغض، ، چەزمونږ بنده خضردستانه زيال اعلم دې _ خودا اشكال دلته ځكه نه كيږي چه حضرت موسى عياه دخپل علم اوزعم په اعتبار سره نفي كړې وه. لهذا دهغوى د., ادااعلم، وائيل خلاف واقع نه وو ځكه چه څنګه هغوى په خپل ګمان کښې ګڼړل هم هغسې خبر ئ ورکړو، خپل ځان دپاره اعلمیت هغوی د خپل کمان په اعتبارسره ثابت كړې وو نه چه دنفس الامريه اعتبارسره، لهذا دالله حل شانه قول , پليمينا

خفون، و بلكل ټيك دى، هغه د نفس الامر په اعتبار سره دې _ والله اعلم – فائده: دلته يوه مسئله بله هم حل شوه، اوهغه دا چه دمعترله په وړاندې كذب الخبر دې ته وائى چەكوم عمدا خلاف واقع بيان شى -

أواهل سنت فرمائي چه كذب هغه خبردي كوم چه خلاف واقع وي كه عمدا وي اوكه سهوا وي. هم دا وجه ده چه الله تعالى دهغه په "انااعلم، ، وائيلولره رد كړل او اوفرمائيلو .. پلئ عبدنا عنه،، دجواب حاصل دا دې چه حضرت موسى عيد دخپل خان پاره في الواقع العمر، د دې باندې څه ګرفت العلميت نوثابت کړي، بلکه دخپل ګمان اوظن په اعتبار سره کړې وو په دې باندې څه ګرفت نشته، اوس د ګمان اوظن په اعتبارسره دهغوى خبره ټيک ده، چه دهغوى کوم ګمان وو نو

دهغوی خبرهم دهغی مطابق وو_ والله اعلم

قوله: فعتب الله عليه اذ لمريرد العلم اليه :بس الله تعالى به هغوى باندې عتاب اوفرمانيلو چه هغوي علم دالله تعالى طرف ته اونه سپارلو او دائ او نه وانيل چه ,,الله اعلم,, "عتاب،، واني ناراض كيدوته، دادتغير نفساني اثردي او الله تعالى دتغيراتو نه پاک دي

ددې وجي نه علماء ارشاد فرماني چه ,,د عتب الله،، معني ده ,, آخانه،، الله تعالى دهغوى مواخذه اوفرمانيله، حضرات انبياء كرام عليهم السلام دالله تعالى مقرب ترين بنده كان دى، دهغوی نه په معمولی خبرو باندې هم مواخذه کیږی،الله تعالی ته داعنوان خوښ نه شو، بلكه دوى لره پكاروو چه دې علم ي دالله تعالى طرف ته سپارلي وو او دا ي وانيكي وو چه ...

ابن بطال ﷺ فرمائي چه دالله تعالى عتاب حضرت موسى تيكيم لره په دې وجه اوشو چه هغوي

لره مطلق ددې جواب نو ورکول پکار _ (۲) ليكن ابن منير ﷺ فرمائي چه ځما په نيز دا صحيح خبره نه ده چه هغوي لره جواب وركول نه وو پکار،بلکه دالله تعالی دعلم طرف ته واپس کول متعین وو، که چرته موسی عَلِمُثِيَّا د., انا،،

وائيلوسره ,, داللهاملم، ، هم وائيلي وي نوعتاب به نه وو شوي _ دعتاب وجه داده چه هغوی ,, الاعلم، ، خو اوئيل ليكن دى سره ئ ,, الله اعلم، ، اونه وئيل - ٢٦) والله اعلم

بنده دي، كوم چه ستا نه لوي عالم دي _ دمجمع البحرين نه مراد بحرفارس اوروم ملتقى دي، چرته چه دواړه يوځي کيږي ـ (أ) بيأدلته دخضرت خضراليه على حد كوم اعلميت مذكوردي هغه مخصوص اعتبار سره دي، دحضرت خضر قلي المره دموسي علي إله نسبت د ,, كونياتو ، ، علم زيات وو ، او دحضرت موسى

عيام سره دحضرت خضر علام به نسبت د , شرعياتو ، علم زيات وو ، ليكن په يو جزئى حيثيت سره دحضرت خضر عليميم به حضرت موسى فليميم باندي يوقسم تفوق حاصل وو_

^{&#}x27;) او گورئ فتح الباري (ج ۱ ص ۲۱۹)، او عمدة القاري (ج ۲ ص ۱۹۳)... ') فتع الباری (ج۱ص۲۱۹)_

[&]quot;) المتوارى على تراجم ابواب البخارى (ص ٤٤). او فتح البارى (ج ١ص٢١٩) _ أ) اوګورئ الجامع لاحکام القران للقرطبي (ج١١ص٩) _

نولە قال:يارب،وكيفېه؟:عرضئاوكړوچهائپرروديگارهغوى تەرسېدل بەڅنگەوى؟ کله چه حضرت موسى تلاك ته ده معلومه شوه چه يولوې عالم دې وخت كښې موجود دې نوحضرت موسى تلاكي ته دهغه سره دملاقات او دهغه نه دعلم حاصلولوشوق پېداشو، حضرت موسى قايمي دخپل محمان په اعتبارسره .. انااعلم، . وائيلي وو .په غوراوتتبع سره ي نه وائيلي، اوس چه کله الله تعالى دخپل يوبنده ذكر اوكړو نو هغه اواليل چه .. كيف په ؟ . . اي .. كيف اللقاءیه؟.. چه دهغی سره دملاوېدو به څه صورت وی ؟

نوله: فقيل له :احمل حوتاً في مكتل :هغه ته اوائيلي شو چه په يوزمبېل (شكور) كښي يو محني ركب، ځان سره واخله_

دکتاب التفسیرکښې په یوروایت کښې دې ,,ځننونامیتاحیثینغخفیه الروم، . . () چه یو مړکب ځان سره واخله نو چه چرته په دې کښې روح واچولې شي هلته به خضر *تیانیا* ملاوشي _

قوله: فأذافقان ته فهو ثير: چه چرته مو دې اورک کړو هم هلته به هغه موجود وي ـ د کب <u>دور کېد ومطلب دا دې</u> چه کله په هغې کښې روح واچولې شي اوهغه په اوبو کښې ډوب شى نوتاتە بەھغەھلتەملاۈشى _

قوله: في انطلق وانطلق بفتياه يوشع بن نون وحملا حوتاً في مكتل، حتى كاناً عند الصخرة وضعاً روسهماً وناماً: حضرت موسى تيئيم خپل خادم يوشع بن نون دخان سره كړو اوروان شول، دې دواړو يو كب په يو پچئ كښې واخستلو، كله چه هغوى يوې ګټې ته اورسېدل نودواړو خپل سرونه کېخودل او اوده شول _

قوله: فـأنسل الحوت مر. المكتل نكب دپچئ نه غلې شانته روان شو ـ امام بخار*ي پُون*د به كتاب التفسير كښې دسفيان بن عيينه پُون^يد به طريق سره هم داحديث نقل کړدې په دې کښې دی:

,,قال سفيان: وفي حديث غير عمرو، قال: وفي اصل الصخرة غين، يقال لها: الحياة، لا يصيب من ماتهاشيء

الاحيى، فاصاب الحوت من ماء تلك العين، قال : فتحرك، وانسل من البكتل، فدخل البحر، ، _(^, " سفیان ﷺ فرمائي چه دعمروبن دینارنه علاوه دنورو حضراتوپه روایت کښې دی چه ددهغې کتي رچتان دلاندې يوه چشمه وه،چه هغې به رحيات، يعني اب حيات، ونيلي كېدو هغه به چه کوم څیزته لګیدل دې نوهغه به جوندې کېدو، نویس هغه کې ته هم دغه اوبه اولګیدې. اوپه کب کښې حرکت پیداشواوهغه د پچئ نه وتلوسره سمندرته داخل شو، ،_

قوله: في أتخذ سبيله في البحر سرباوكان لموسى وفتاة عجباً: نوكب به سمندر كښي

⁾ صحيح البخاري(ج ٢ · ص ۶۸۹)كتاب التفسير باب :(فلما بلغا مجمع البحرين نسيا حوتهما)،رقم (٤٧٢٤)) صحيح البخاري (ج ٢ص ۶۹) كتاب التفسير باب (فلما جاوزاقال لفتاه : اتنا غداء نا...)، رقم (٤٧٢٧)_

سرنگ جوړولوسره خپله لاره اختيار کړه دحضرت موسى تايا دخادم دپاره دتعجب سبد حد شه

دكتاب التفسيريه روايت كنبي دى ., وامسك الله عن العوت جرية الماء، فصارعيه مثل الطاق، - أن الله تعالى دكب نه دابوبهبدل ايساركول نودده دباره دايوه طاقچه جوړه شوه،، عضرت يوشع عيره الله و كله دا كيفيت اوكتلونوده ته ډيرتعجب اوشو، او روستوچې حضرت موسى عيره هم ددې كيفيت علم اوشو اوبه واپس راتوباندې ئي دغه خې اوكتلونوهغه ته هم تعجب او شد و او كتلونوهغه ته هم

بعضي حضرات وائی چې داپه اصل کښې ,, بقیة یومهها ولیلتهها، دې دلته قلب واقع شوې دې، څنګه چې دکتاب التفسیرپه روایت کښې په صحیح ټوګه باندې راغلی دی (۱) اوددې قرینه داده چې دې نه پس, ولهااصه ۲۰۰۰، ، راغلې دې او, اصه ۶۰، دشپې نه پس وی دورخې

حافظ ابن حجر گونځ فرمانی چې کیدشی د. قلبا اصبح، معنی داوی چې .. ددغې شپې صباشوکوم چې ددغې ورځې نه پساشوکوم چې ددغې ورځې نه پسن راځی دکومې ورځې چې دلته تذکره شوې ده، ، مطلب داشوچې دشپې باقی حصه ئ هم تلل اومزل ئ کولوتردې چې ورځ شوه اوټوله ورځ ئ هم مزل اوکړوبیا شپه راغله اودغه شپه ئ هم مزل اوکړواوبیا سحر شو۔ ()
لیکن اقرب او نزدې خبره هم هغه ده کومه چې وړاندې بیان شوه، ځکه چې ددغه روایت په بل

طريق کښي د ,.يوم ، ، تقديم په ,, ليلة ، ، باندې راغلې دې _ **قوله** : فلما اصبح قال موسم لفتاه : آتنا غداونا لقد رلق

قوله: فلم اصبح قال موسى لفتاه: آتنا غداءنا لقد لقينا من سفرنا هذا انصبا: کله چې سحرشونو موسى تيم خول خادم ته اوفرمائيل چې زمونږخوراک راوړه مونږته ددې سفرنه ډيره ستړيتوب اورسيدو. اوداهله چې کله دوی دصخرې نه واوړېدل نوموسي تيم اوږې شو. ددې نه مخکې داولږې او د ستړيوالي هډوڅه احساس نووشوې _

قوله: ولهريجه موسى مساً من النصب حتى جاوز المكان الذي امويه: حضرت موسى عَيْثِه ته دستومانتيا ههوڅه اثرهم محسوس شوې نو، تردې چې دهغه خې نه هم واوړېدل كوم خې ته چې درسيدلو حكم دالله تعالى دطرف نه شوې وو_

^{^)} صحيح البخارى (ج٢ص/۶۸۷) كتاب التفسير باب :(واذ قال موسى لفتاه: لاابرح حتى ابلغ مجمع البحرين إوامضى حقبا....)رقم (٤٧٧٥)_

^{ً)} هم برنئ حواله_ ً) فتح الباری (ج اص ۲۲۰)_ ٔ) فتح الباری (ج اص۲۲۰)_

داسي معلوميږي چې تردغه خې پورې دوي سره خداني طاقت اوتائيدوو .نوځکه دوي ستړي ن شُوَاوددې نه پس چې کله دمنزل نه اوړېدل نوځکه ورته ستومانتيا محسوسه شوه.دې دپاره چې دوي ډيرمخکې لاړنهشي ـ

<u>نوله</u>. فقال له فتاة: ارايت اذ اوينا الى الصخرة فاني نسيت الحوت،قا<u>ل</u>

موسى:ذلك مــاكنــانبغــي:دوی ته خپل خادم عرض اوكړوچی جی ماخوتاسووانيل چې كله مونږګټې ته اورسېدونوكب اوتختېدو خو مانه ددې ذكر هيرشولو،نو موسى سيمهم اوفرمائيل چې هم ده خومونږتلاش کولو_

قولہ: فـارتداعلی آثارهمـا قصصـا: بس دی دوارد راواپس شول اود خپل قدمونویه نشانونوبآندي راتلل

قوله: فلما انتهيا الي الصخرة اذا رجل مسجى بثوب اوقىال: تسجى بثوبه : چې کله هغړی دواړه ګټې ته اورسيدل نوناساپه يوسړې دې چې، خان نه ي کپړه تاواکړې وه يا کیرہ ی اغستی وہ ۔

داحضرت خضر تليخ دې دده تفصيلي حالات او ده سره متعلقه مباحث مونږ روستوپه ,, پاب ما

ذكر في ذهاب موسى ...،،،، لاندې ليكلى دى _

علامه داودي پيند دې روايت لره "وهم" کرزولي دې، اوددې بنياددا دې چې هغوي حضرت خضر ميلا د کتي سره نه بلکې، جزيرې سره موندلې وو، اودلته په دې روايت کښې مذکوردي چې كلداكتي ته اورسيدل نوهغه سره ملاقات اوشو- (١)

خُودْ.,وهم، ،گرخُولُو خُه ضُرُورت نشّته،دواړه روّايتُونه جمع کولي شوچې اول هغوی ګټې ته اورسيدل بيادتتبع اوتلاش نه پس هغه په جزيره کښې ملاوشو۔ ()

ځکه چې دمسلم شريف په روايت کښې دې ,, فاراه مکان العوت، قال :ههنا وصف لي، فذهب يلتسى فأذاه وبالخض مسحى ثوبا،، _ ()

فسلمموس حضرت موسى تيايي سلام اوكرو_

قوله: فقال الخضر: واني بأرضك السلام؟: حضرت خضر عَيْهُ اوفرمانيل چي ستايه دې زمكه باندې سلام څنگه ؟ أو دكوم خي نه ؟

, الى، ,, دكيف، يه معنى هم كبديشي، څنګه چې دكتاب التفسير په روايت كښې دي، ، هل پار**ض**من سلام؟،،۲ٌچې ايازمونږپه دې زمکه کښې هم سلام شته؟

⁾ فتح البارى (ج٨ص١٧ ٤) كتاب التفسير باب(فلمابلغامجمع بينهما....)_

صحيح مسلم كتاب الفضائل.باب من فضائل الخضر، رقم(٢١۶٥) _

⁾ صعيع البخاري (ج٢ص ٤٨٩)كتاب التفسير باب(فلمابلغامجع بينهما....).وقم (٤٧٢۶) _

اوداد.. من اين، په معنى هم ممكن دې چې دلته سلام دكوم ځې نه راغللو؟ محويا چې په دې مخ دزمكې ياخودبلاد كفردابادې نه ياداچې دغلته دسلام څه بله طريقه مروجه وه. نوهنوي تپوس اوكړوچې دلته سلام دكوم ځې نه راغللو؟ ()

دمسلم شريف په روايت كښې دى .. فكشف الثوب عن وجهه قال: وهليكم السلام، ..٠٠

ددې نه معلوميږي چې حضرت خضره پير دسلام جواب ورکړې وو۔ ددواړو روايتونويه مينځ کښې تطبيق داسې کيدشي چې حضرت خضره پير ومبې دسلام جواب ورکړو.بيپه تعجب سره تپوس اوکړو..ال ډادهك السلام؟...(۲)

قوله: فقال: اناموسى إموسى عليم اوفرمانيل زه موسى يم ـ

د کتاب التفسير په روايت کښي دي .. من انت. قال اناموس، ... ، ، ګوياچې .. اناموس، . . خضر عيسي دسوال په جواب کښي وائيلي شوي دي _

قوله: فقــال : موسی بنی اسرائیل ؟قــال : نعم :هغوی تپوس اوکړو چې دبنی اسرانیلوموسی؟نوارشادئ!وکړوچې!و

صحیح مسلم کښی دابواسحاق په روایت کښې دی چې کله حضرت موسی ...نا موس. اوفرمائیل نوحضرت خضرتلائلاتپوس اوکړو.. ومن موسی؟ قال: موسۍ بنی اسهاتیل،،_^5

البته دعبدبن حمیدروایت سره دلته یو اشکال کیږی، اوهغه داچې کله موسی تیمینی .السلام علیك یا خش، ،وانیلوسره سلام او کړو اوهغوی جواب ورکړو., وعلیك السلام یا موسی، کوینچې هغوی د شروع حضرت موسی عیمی پیژندلې وو.بیاحضرت موسی عیمی تپوس او کړو. وملیدریك ان موسی، ؟ تاته چااوائیل چې زه موسی یم ؟،، نو هغوی جواب ورکړو.. ادرانی بك الذی ادراكنې، ماته ستا باره هغه چاخبر راكوچاچې تاته خما باره کښې خبردر کړې دې ـ ، ٬

الدى ادراتى، مامەسى بارە ھعە چاخىر را ئوچاچى تاتەخما بارە كښى خىردر كړې دې ـ ، دې نەمعلومىيږى چې .. من انت؟، او .. موسى بقى اسمائيل؟،،،وائيلوسرە ھدوسوال نە دې شوې _ حافظ ﷺ فرمائى چې دصحيحنودروايت پە مقابلە كښې دعبدبن حميدوالاروايت ئبوت مشكوك دې _ (^)والله اعلم

۱) اوګورئ فتح الباری (چ۱ص۲۲۰) _ ۲) مرور د الباری (چ۱ص۲۲۰) _

[&]quot;) صحيح مسلم.كتاب الفضّائل.باب من فضائل الخضر.رقم (٤١٥٥)_ ") فتح البارى (ج٨ص٤٧ ؟) كتاب التفسير.باب (فلمابلغا مجمع بينهما....)_

⁾ صحيح البخاري (ج٢ص ٤٨٩) كتاب التفسير باب :(فلما بلغامجع بينهماً....).رقم (٤٧٢۶) _ () صحيح مسلم.كتاب الفضائل.باب من فضائل الخضر.رقم (٤١٢٥) _

⁾) فتح البارى(ج ١٧ ٨٤) كتاب التفسير،باب: (فلمابلغامجمع بينهما....)

⁾ هم برنئ حواله __

قوله: قال: هل اتبعث على ان تعلمنى مما علمت رشن الموسى عليم اونيل چى ايا زه تاپسى روستونه خم چى دالله تعالى دطرف نه تاته چى كوم علم اوهدايت دين ښودلى شوې دې نو دهغى ته ماته ښودنه او كړې ؟

" رشًد، ، (بضم الراء وسكون الشين البعجبة) او " رشده ، (بفتحتين) په دواړوطريقوسره لوستلې كيږى، (` ،داكثروعلماؤ په نيز دا دواړه په يو معنى دى۔ (` ،

بعضی حضرات وائی چی بفتحتین. دین، ،په معنی کښې دی او,,رشد، ،(بغم فسکون) صلاحظر یعنی هدایت ته وائیلی کښږی - ()

ېيا, رشداه، ,,د تعليق، مفعول ثانی دې، دې وجې نه منصوب دې _,,دعليت، ،مفعول ثانی جوړول لرې خبره ده (*)

قوله: قال: انك لري تستطيع معي صبرا : اوفرمانيل چې اې موسى ته به ماسره صبر اونه كړې شې ـ

توله: ياموسى: انى على علم من علم الله علمنيه لا تعلمه انت، وانت على علم

علمكه لا اعلمه: اې موسى زه دالله دعلومونه په يو مخصوص علم كنبى يم كوم چې الله تعالى ماته ښودلې دى، ته هغه نه پيژنې او ته په يو مخصوص علم باندې يئ كوم چې الله تاته ښودلى دى هغه زه نه پيژنم _ دحضرت موسى ويريم سره علوم تشريعيه وو، او دخضرت خضر ويريم سره علوم تكوينيه او دا چې فرمانيلى دى , لاتعلمه انت، او , لا اعلمه ، ددې مطلب دادې چې نه ته كلى طور باندې ځماد علوم نه واقف يئ اونه زه ستا دعلومونه كلى طور باندې واقف يئ اونه زه ستا دعلومونه كلى طور باندې

ظاهره داده چې حضرت موسى ته دبعضې, كونياتو،،علم وو،اوحضرت خضر تا ملام ته دشريعت دومره علم به خامخه ووچې دهغې په رنړه باندې هغه خپله عقيده صحيح ساتلې وې اوعمل يې يې كولو_(⁶)

رې رسيدي يې سور د... يو اشكال او دهغې جواب :دلته دا اشكال شوې دې چې الله تعالى په موسى ظيم اباندې كوم نكيرفرمائيلې وو په هغې كښې حضرت خضر كيم الهمان ، ګرزولې شوې وو، څنګه چې فرمائيلې شوى دى ,, ان عهدا من عهادى په چې الهمان هواعلم منك ، (كما في حديث الهاب) يعنى يو بنده په مجمع البحرين كښې اوسى ږى هغه ستا نه زيات علم والادې ـ

^{&#}x27;) فتح الباری (ج۸ص۱۷ \$و ۱۸ \$) _

^{ً) .}حواله بالا_

⁾ فتع الباری (ج۸ص ۱۸ ٤) _ ا

^{ً&#}x27;) حوّاله بالا

⁾ اوګورئ فتح الباری (ج۸ ص ۱۸ ^ه) <u>_</u>

اعلم داسم تفضيل صيغه ده او اسم تفضيل ددې خبرې متقاضى وى چې مفضل او مفضل عليه پد نفس فضل او مفضل عليه پد نفس فصرت موسى او حضرت عليه پد نفس فعل كښې شريك وى، لهذا اس دامطلب رااوتلوچې حضرت موسى او حضرت خضر عليهماالسلام دواړه په. علم، كڼې مشترك دى او چې كله ددواړو په علم كښې دنوعيت تشريعي اوتكوينى په اعتبار سره اختلاف پيدا شونوبيااشتراك كوم خې كښې راغللو؟ نولهذا، اعلم، وئيل څنګه صحيح شو؟

ر عسو، تولهدا المهام ، ويما كسلط المحدد و المال المال المواد في في الجمله خودواړه د دع المحمله خودواړه د عقائدو اواعمالوعلومو كنبي متحدوو ، كه حضرت موسى تغييم به يوعلم كنبي بنه ماهروونوحضرت خضرت خضر تخد كه حضرت خضر ماهروونوحضرت خضرت خضر تخد كونياتوعلم زيات وو ، خو فه نه څه د تكوينياتوعلم حضرت موسى تغييم ته مه ده كوينياتوعلم حضرت موسى تغييم ته هم دواړه شريك وو ، ددې نه يو ، كوياچي په نفس علم شريعت او علم كونيات كنبي في الجمله دواړه شريك وو ، ددې نه پس حضرت خضر تغييم باندې تفوق حاصل وو ، نو لم الحضرت خضر تغييم ته د دحضرت موسى تغييم په حضرت موسى تغييم باندې تفوق حاصل وو ، نو لم المذات خضر تغييم ته د دحضرت موسى تغييم په مقابله كنبي ، . اعلم ، وائيلوكنبي نه څه اشكال شته اونه په دواړه كنبي څه تعارض واشه اعلم

قوله: قال: ستجدني ان شاءالله صابراولا اعصى لك امرا: حضرت موسى ميئيم اوونيل چې ان شاء الله تعبه مالره صابر اومومي اوزۀ به ستا ديو حكم نه به هم مخ نه اړوم

قوله: فأنطلقا يمشيان على ساحل البحر، ليس هماسفينة، فمرت بهماسفينة، فمرد مهاسفينة، فكرد درياب به فكلموهم ان يحملوهما بغير نول: بس هغوي دواړه ددرياب به غاره روان شو، او دهغوى سره كشتى نه وه اچانكى يوه كشتى تيردله نوهغوى ورسره خبره اوكړه چې مونږ دځان سره سواره كړى، چې خضر عيس فى اوپيژندلونو بغير دڅه كرايه

اومعاوضی نه نی سوارهٔ کړل _ حضرت خضر طیکا خو اول معذرت او کړو چې ته خماسره نه شي تللي، ځکه چې خمامعاملات د تکوینیاتوسره متعلق دی اوهغه د ظاهر شریعت په اعتبارهغه قابل اعتراض دی او ته به څه ظاهرې بدنې لره اوګورئ او چپ به پاتې نه شي _

لیکن حضرت موسی سیام شوق دمجبوری د کشته دمکملی اتباع اویه یو موقعه باندی هم دتنقید اواعترض نه دخان ساتلو وعده او کره نوهغوی دخان سره دبوتللواجازت ورکیلو ددی نه سه دریاب به غاره رواز شول دهفتی سره خیله څه کشته نهم در سره نیک

ددې نه پس درياب په غاړه روان شول،دهغوى سره خپله څه کشتى نه وه چّى پُه هغّى کښې سوارهٔ شوې وې،په دې کښې يوکشتې راغلله، دکشتې والوسره دهغوى خبرې اوشوې نو هغوى حضرت خضر ﷺ اوپېژندونو بغيردڅه معاوضي اوداجرت نه يئ هغوى کينول

قوله: فجأء عصفور فوقع على حرف السفينة، فنقرنقرة أو نقرتير، في البحر: په دې كبي يو، دو د خله مخوكه كبي، يو، يو، دو، كبي، يو، يو، يو، وه خله مخوكه د يو، عصفور، وړې مرغې ته وانيلې كبرى ـ

دلته لفظ د., نقص، واردشوېدې چې معنى يئ دكميدوده،نولهذا اوس به يئ مطلب داشى چې خمااوستاددواړوعلم دالله تعالى علم نه دومره كم كړلوڅومره چې دې چنچړې ده سمندر اوبونه كمي كړې _خوڅنګه چې دا خبره منلې شوې ده چې الله تعالى علم غيرمتناهى دې، دمتناهى ددې سره هېڅ نسبت نشته،نولهدا په دې نقص څه سوال دې ؟ددې د جواب وركولوسره شارحينوليكلى دى چې دلته .نقص، په خپله ظاهرى معنى باندې نه دې بلكه ددې معنى د.,افخه، ده نو لهذااوس به مطلب دا شى .,مااغناملى ومبلك من عام الله الاكتقرة هذا العصفور من الهحى، _ يعنى خمااوستايعنى ددواړوعلم په يو خې سره دالله تعالى علم نه چې څومره علم اخستې دې نودهغې نسبت هم دومره دې څومره چې ددې چنچړې په مخو كه كڼې دموجود اوبونسبت چې سمندرسره دې _ ()

بعضي علماء ليکی چې دلته ,,علم ، په معنی د,, معلوم ، سره دې او مطلب دا دې چې دالله جل شانه دمعلوماتو او زمونږ په معلوتو کښې بس دا نسبت دې کوم چې ديوې قطرې دسمندرسره دې _ (⁶)

او بعضې حضراتوداوانيلې دی چې په دې کښې ., الا،،د۰۰ ولا،،په معنی دې ګويا اوس په تقدير داسې وی ,,مانقص عليي وعليك من علم الله ولا کنټي ټه ښاالعمفور،، _ خما اوستا علم دالله تعالي دعلم نه هيڅ هم كم نه كړل، تردې چې ددې چنچړې دمخوكې داوبوپه مقدارهم كم نه كرور)

ر المام اسماعیلی رحمة الله فرمائی چی داطرزتعبیر مبالغة دنفی مطلق دپاره دی، یعنی چنجی کاره دی، یعنی چنجی کاره دی دالله چنچری یا یومارغه دسمندرنه دیر څیز هم کعی اونه کړو، دهغه شان خمااوستاعلم دالله تعالی دعلم نه هم هیځ کمی اونه کړو، اوهم داسی ده څنګه چی یو شاعر ونیلی دی:

^{&#}x27;) کفتح الباری (ج ۱ص۲۲۰)_ ') او گورئ مصباح الغات (ص^{8۶۶})_

⁾ فتح الباری (ج آص ۲۲۰)_ یا فتح الباری (ج ۱ص ۲۲۰) _

د) هم برنئ حواله _

⁾ هم برنئ حواله

بهن فلول من قراع الكتائب

ولاعيب فيهم ان سيوفهم

ریعنی په هغوی کښی هیڅ عیب نشته سوا ددې نه چې دهغوی په تورو کښې ددښمن لښکړ دمقابلي دوجې نه غاښونه پیدا شوې دې۔

د مه به دې شعر کښې د دا وائيل مقصود دی چې په دغه ممدوحينو کښې هيڅ عيب نشته، دغه شدې د دې شعر کښې هيڅ عيب نشته، دغه شاه دې شه دې شعر کښې هيڅ عيب نشته، دغه شاه د دته هم دالله جل شانه په علم کښې د هيڅ قسمه نقص نه موجود ډدوبيانول مقصودي () په کتاب التفسير کښې دامله مون ډير په واضحه ټوګه باندې راغلې دې، څنګه چې فرمائيلې دې .. والله، ماعلي وماعليك في چنب علم الله، الاکيا اخذاهن الطائوبينقاره من الهحر. .. د آ قسم په خدائ پاک چې ستااو خماعلم دالله تعالى علم په بس هم داسې دې لکه څنګه چې دهغې چنچې د سمندرنه دخپلې مخو کښې په ذريعې اوبه واخستې. . ـ

ق**وله**: فعمدالخضرالي لوح مر الواح السفينة فنزعه :حضرت خضرتيم دكشتي دتختوطرف تدلارويه هغي كنبي يوه تخته راوسته _

قوله: فقال موسى قوم حملونا بغيرنول عمدت الى سفينتهم فخرقته التغرق

اهلها خصرت موسی اوفرمائیل دی خلقو مونږ بغیردڅه اجرت نه کینولواوتاداسی کاراوکړوچې ددی کشتۍ نه دې تخته راوستله چې دا کشتۍ والاغرق کړې : حضرت موسی تلاکیا په موقعه باندې سخت الفاظ هم اوئیل.دربیعه بن انس په روایت کښې

مصوت موسى ميرو په موقعه ب دري سعت انفاط سم اوسن دربيعه بن اسن په روايت سبي دى ان موس لها دای ذلك امتلاغه هاوش دنيا په وقال : اردت اهلا كهم، ستعلم انك اول هالك،،__ز} يعنى حضرت موسى ميريم دغصى نه ډك شو اوخپل لستوړنې ئ ر او نغستل او ويوانيل ئ چې

ته خلقو لره هلاكول غواړې، تاته به زرمعلومه شي د ټولونه ړومبې به هم ته هلاكيږې ... قولمه: قال: العراقل لك انك الر. تستطيع معي صبرا ؟ خضرت خضر عليه او او مانيل چې تاته مانووانيلې چې ته خماسره صبرنه شي كولې ؟ حضرت موسى عليه ايا به دې موقع باندې تنبيه اوشوه چې مادوعدې خلاف ورزې او كړه نوهغوى فورا معذرت او كړو.

باندې نمبيه اوسوه چې مدوعدې حدف ورړی او دړه نوهغوی فورا معدرت او کړو _ **قوله: قال: لاتؤاخذاني بمانسيت :** عرض ئ او کړوچې خماپه هيره باندې مؤخذه مه فرماني _

قوله: فكانت الاولى مر. موسى نسياناً: په اول خل دموسى عيام نه به هيره باندې اعتراض شوې وود كتاب التفسير په روايت كنبې دى

, كانت الاولى نسيانا، والوسطى شماطا والثالثة عددا،، و ر

^{ٔ)} فتح الباری (ج ۱ص ۲۲۰) _

^{ً)} صحيح البخارى (ج٢ص ٤٨٩) كتاب التفسير باب : (فلما بلغامجمع بينهما.....)،رقم (٤٧٢٤)_ ً فتع البارى (ج٨ص٤١٤). كتاب التفسير باب :(فلما بلغ مجمع بينهما......) _

^{·)} صحيح البخاري (ج٢ص ٤٨٩) كتاب التفسير باب (فلما بلغامجمع بينهما.....). وقم (٤٧٢٤)_

به اول خل ی اعتراض په هیره سره کړې وو . په دوېم خل یی شرط لګلوسره او نیل ان سالتك من می مومدها فلا تصحبفی x()

چې که چرته مي ددې نه پس هم اعتراض او کړونو ته مي دخان سره مه ساته، ،او په درېم ځل ئېه قصدا او عمداکړې وو ، ، _

دحضرت ابن عباس گاگا يو مرفوع روايت دي .. الامل نسيان، والثانية عند روالثالثة نهاق، - () په اول خل ني په هيره سره اعتراض کړې وو ، په دوېم خل ی عذر پيش کړو په درېم خل ی فراق اوجداي راغلله . . البته حضرت ابی بن کعب گائو نه فراه گينځ نقل کړې دی .. ولمينس موسى ولکنه من معاريض الکلام، - () يعني .. د موسى عليه الصلاة والسلام نه هيره خونه وه شوى .البته داداشارو کنايواو د توريئ د قبيلي نه وو ، . - حافظ گينځ فرماني چې ددې روايت سند ضعيف دې ، ددې وجې نه اصل اعتماد په اولني رواياتو باندې دې . که چرته داخبره درست وه نو حضرت موسى عيلام په دوېم او درېم خل باندې ولې دمعاريض کلام اعتراض کول، نه ولې کارنه اخستو ؟ - ()

تَوْلَهُ: فَأَنْطُلْقًا ، فَأَذَاغُلُامِ يلعب مع الغلب أن ، فَأَخَذَا الخَضرير اسه من اعلاة فَأَقتلع

راسه بين نيا دواړه روان شول،اچانک يوهلک ورته ملاوشو.چې دنوروهلکانوسره ئ لوبې کولې، حضرت خضر ميش دهغه سردېره نه اونيولو اوبه لاس سره ئ دهغه سردېدن نه

> ېيد ښود _ عبدبن حميد دابن جريج روايت نقل کړې دې چې په هغې کښې دی :

"فاضجه ثم ذبحه بالسكين، _ (تېچې هغه ئ سملولو اوبيائ په چاړې سره ذبح كړو.، دغه شان دطېرى په يو روايت كښې دى " فاخذ صخرة فثلغ راسه _ () يعنى هغوى يو كانړې اوچت كړواو دهغه سرئ پې اوچولو _ ، ،

په دې کښې دااخری روایت کمزورې دې ۲۰، اګرچې په دې درې اړوکښې تطبیق کیدې شی چې اول ئ په کانړي ورله سر اووهلوبیا ئ په چاقویاپه چړې سره دهغه مرئ کټ کړه، کومه څرمن وغیره به اینختې نو هغه ئ په لاس سره دبدن نه جدا کړه _ ۸ والله اعلم

^{])} الكهف (٧۶) _

^{ً)} رواه ابن مردویه من طریق عکرمه عن ابن عباس رضی الله عنهما _ فتح الباری (ج ۸ص۴۱۹) _ آ

^{ٍ)} فتح البارى (ج٨ص١٩ ٤) _

^{°)} هم برنئ حواله

ن) فتع الباري (ج٨ص٤١)

^{&#}x27;) هم برنئ حواله _

أ قاله الحافظ في الفتح (ج ٨ص٩١٤) __

⁾ اوګورئ فتح الباری (ج۸ص ۱۹) _

د کتاب التفسیر په روایت کښې دی .. فاعد غلاماکافراظ پيغا، . ـ (')

د سب انتفسير په روايت سبي دي ... و اين کان ... دغه شان دصحيح مسلم وغيره په يو روايت کښې دی .. و اما الغلام فطبع يوم طبع کافرا ... ۲ ددې مطلب دانه دې چې د اهلک في الحال کافر شو ، بلکه مطلب دا دې که چر ته ژوندې پاتې شونوكافربەشى-

يو اشكال اودهغې جواب: دلته يو اشكال كيږي چې په حديث كښې دى ٨٠ كل مولوديولداعل الفطه $\overline{\Gamma}_1, \dots, \overline{\Gamma}_n$ چې هر يو ماشوم په فطرت د دين اسلام باندې پيداکيږي ، اوددې ماشوم په باره په حديث کښې تصريح راغلې ده چې دا ماشوم کافرمطبوع شوې وو ددې جواب دادې چې دماشوم دغې نه مستثني دې،يا دا ونيلې شي چې دفطرت نه مراداستعداد داسلام دي ، يعني په هريو کښې داسلام دقبلولوصلاحيت ايښودې شوې دې ، خو دې به دغه داسلام دي ، يعني په هريو کښې داسلام دقبلولوصلاحيت ايښودې شوې دې ، خو دې به دغه

صلاحيت دصحيح استعمالولوپه ځې به غلط استعمال كړي او كافربه شي_والله اعلم

قولە: فقال موسى : اقتلت نفسازكية بغيرنفس ؟: حضرت موسى *نيئ*ۇ اوفرمائيل چى تا ديو بي ګناه وينه په ناحقه توې کړه؟

قوله: قال: العراقل لك انك لرج تسطيع معى صبراً؟: ويوانيل چې تاته ما نو وئيلي چې ته دما نو وئيلي چې ته دما نو وئيلي چې ته خما سره صبرنه شي كولي؟

قوله: قبال ابر بعيينة: هذا اوكن: ابن عينه مُنتيج فرمائي چې دا اولني كلام ډير سخت وو ـ

ددې نه پس حضرت موسى اوشرمېدواو اوئيلې (ان سالتكعن شيء بعدها قلاتصحيني ٢)، ١٠ اوس كه چرته ددې نه پس كه مې دڅه باره كښې اعتراض اوكړونوته ما دخان سره مه

قوله: فأنطلقاً، حتى ذا اتبا اهل قرية استطعماً اهلها فأبوا ال يضيفوهها: هغى دواره مخكنبي لإل تردي چي هغوى ديوكلي والوته اورسيدل نودهغوي نهي روتي اوغستله نو هغي ددى دملمستيا نه انكاراوكړو. نو هغي ددى دملمستيا نه انكاراوكړو.

قوله: فوجداً فيها جدار يريد ال ينقض فاقامه، قال الخضر بيد فاقامه: بيادوارو اوكتل چې په دهمد كلى كښى يوديوال وو چې په غورزېدو، نوهغه ئ سيدهاكړو، يعنى خضر سيم په دېل لاسسره اشاره اوكړه اوهغه ئ نيغ كړو_ تقال له موس: لَوْشِفْتَ لَاتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًاه

⁾ صعيع الباري (ج٢ص/٦٨٩) كتاب التفسير باب (فلما بلغامجيع بينهما......). رقم (٤٧٢٤) _

⁾ صعبع مسلم.كتاب الفضائل الخضر. رقم (۶۱۶۵)، ومسنداحمد (ج۵ص(۲۱) رقم (۲۱۶۳۵).والدر المثور (جَ٣ص٢٣٧) _

⁾ صعيع البخاري (ج ١ص١٨٥) كتاب العنائز، باب ماقيل في اولاد المشركين، رقم (١٣٨٥) _ اً) كمانى رواية سعيدبن جبير عندابن مردويه. انظرفتح البارى (ج٨ص ٢٠) _

حضرت موسى عيديم اوئيل كه تا غستل نويه دې كار به دې اجرت اخستې وو۔ په يو روايت کښې دی چې حضرت موسي ت*يايم* اوفرمانيل

انادغلنا هذه القرية، فلم يضيفونا، لوشئت لا تخنت عليه اجرا، ، انادغلنا هذه القرية،

يعني ,, مونږ دې کلي ته داخل شونو دې خلقونه زمونږ مېلمستيا اوکړه اونه ي مونږته دخوراک دپاره څه راکړه،ددې په بدله کښې که تا غستل نوپه دې کاربه دې څه اجرت

قوله: فَال : هذا فراق بيني وبينك : اوفرمانيل يى چې دا زمااو ستا په مينځ كښې دجاي وخداې وخت دې د چې دا زمااو ستا په مينځ كښې د دې د په پس دجداې وخت دې ـ په قران كريم كښې راينيز د دې حديث په دوېم طرق كښې ددې نه پس تفصيل موجود دې چې حضرت خضر تايم دجدا كيدونه مخكښې ددې واقعاتوپټ اسرار بيان

قوله: قال النبي صلى الله عليه وسلم :يرحم الله موسى الوددنا لو صبر حتى يقص عليناً من إمرهها: نبي مَا يُنهِ إرشاد اوفرمائيل الله تعالى دي په حضرت موسى مينيم باندې رحم اوکړي، مونږ خواهش وو چې هغه صبر کړې وو نو دهغوی نور حالات به هم مونږ ته بيان شوې وو ــ

قوله: قال محمد بن يوسف: ثنا به على بن خشره، قال: ثنا سفيان بن عيينه بطوله :محمدبن يوسف فربري واني چې على بن خِشرم مونږ تاداحديث واورولو.

هغوى اوئيل جي مونږته سفيان بن عيينه داپوره حديث بيان کړو۔

داعبارت په بعضي نسخو کښي شته او په اکثروکښې نشته،محمدېن يوسف فرېري مخځ کوم چې دامام بخاري رحمة الله شاكرددې، هغه دخپل علواسناد بيان كول غواړي چې داروايت امام بخاری عبدالله بن محمد مسندگی عن ابن عیینه نقل کوی، او ماتا داروایت دعلّی بن خشرم عن ابن عيينه په طريق باندې حاصل دې په دې شان ګويافربري دامام بخاري

ايا حضرت خضر عليه السلام دحضرت موسى عليه السلام نه افضل وو ؟ دبعضي جاهلانو ويناده چې د حضرت موسى تليكيم په مقابله كښى حضرت خضر تليكيم افضل وو اودا قصه ددې دليل او گواهي ده _ ليكن ددې خبرې دحقيقت سره دلرې نه هم تعلق نشته، حضرت موسي . علام چې الله تعالى دكوم رسالت،او كلام او په تورات سره خاص كړې دې، بيا دهغوي په شريعت كنبي ټول انبياً ادبني اسرائيلوشامل او داخل وو۔ دې دلانلوطرف نظر كولوسره

[]] صحيح البخاري (ج٢ص ٤٩٠) كتاب التفسير.باب : (فلما جاوزا قال لفتاه) رقم (٤٧٢٧) _ ً) اوګورئ سورة الهکف ازایت ۸۲تا۸۲_

اوگورئ صعیح البخاری (ج۲ص ۶۸۷_۶۹۰). کتاب النفسیر، رقم (۴۷۶۵_۴۷۶۱)، وصعیح مسلم، كتاب. كتاب الفضائل، باب من فضائل الخضر، رقم (٤١٤٣ ٢١٥٨)

يوعقل مندسرې هم داخبره نشي كولي، دالله تعالى ارشاددې ايموس ال مطفيتك على الناس برسلق دېکلامي_ن

اوکه حضرت خصر علام نبی وو نو په دې خبره دټولو اتفاق دې چې رسول نه وو اوداخېره معلومه او مسلمه ده چې رسول افضل وي دهغه سړي په مقابله کښې چې هغه صرف نبي. اوكه على سبيل التنزل دا أومنوجي حضرت خصرتُهُم رسول وو.نو بنيا هم دحضرت موسى عِينِيْ رسالت لوې او دهغوی امت تکنر آو افضل وو۔

اوكه چرته حضرت خضر قير الله ولي وونو بيا خود حضرت موسى تيرا افضليت واضح او بين دي ل ايا احكام شريعت لره نظر انداز كولو كنجائش شته؟ دمذكوره قصي نه بعضي زنادقؤ دااستدلال کړې دې د عام احکام شريعت تعلق دعوامواو غبي خلقوسره دي، او دخواص امت دپاره دنصوصواوظاهرشريعت ضرورت نشته، بلکه دهغوی دپاره داحکم دې چې کومي خبري طرف دهغوی د زَړهٔ مېلان اوَشّی نوهم هغه دې کوی. څکه چې ددی زړونه دخیری او ګندگنۍ نه پاک دی. ددې وجې نه په دهغه زړونوباندې دعلوم الهیمه اودحقائق ربانیه ورود کیږي. نوپه دې طریقه هغوی دکانناتو داسرار نه هم خبر وی او جزوی احکامونه هم پېژني. ددې وجې نه هغوي تا دشريعت کلي احکاماتو حاجت نه پاتې کيږي څنګه چې دحضرت خَصْرَ عَيْكُمْ وَاقعه دَه چې هغوی تاکوم علوم حاصل وودهغې په بنیادباندې هغه داحکام شرعيه ظاهره نه مستغني شوې وو، دوي دخپل تائيددپاره د مشهورحديث ,, استفت قلبك

واستفت نفسك ثلاث مراتوان افتاك الناس وافتوك، ، ، () نه هم تمسك كړى دى _

علامه قرطبي پيځ فرماني چې دا نظريه محض كفراوزندقه دې، ځكه چې ددې په شاباندې يقيني دشريعت نه انكار مقصود دي. ځكه چې الله تعالى دطريقه اوسنت مقرركړي دې چې يداحكام خداوندي باندي پوهيدل اوخبرتيا بغيرد حضرات رسولانواو انبياء كرامودواسطي نه ممكن نه ده اوالله جل شانه ددې حضرات انبياز اورسلانو داطاعت حكم كړې دې اوهم دې ته ئ دهدايت لارد وائيلي ده، په دې خبره باندې دسلف احماع هم ده _

اوس که یوسړې دادعوی کوی چې حضرات انبیاءکرآمو اورسولان عظاموچې د اوامرو اونواهي کومې طريقې راوړې دې نودهغې پرېښودوسره بله يوه لاړه اختيارکړې شي چې ددې وجې نه دحضراتوانبيا، کرامودلارې نه استغناء اوشي نو داسې سړې کافر دې

علامه قرطبي پيني فرماني چې داسې قسم دعوي عين دعوي د نبوت ده . محوياچې حضور اکرم خاته النبيين الله عبس دهغه سرى دخيل خان دباره نبوت ثابتول غواړى، خَكْمْ چې كوم سړى صحه منځين لغاه چې د د موم پې د ما د د موم د او د د موم د د د د کتاب ضروت د اوالی چې زه دخپل زړه نه فتوی اخلم اوهم داحکم خداوندی دې،نودهٔ تاند د کتاب ضروت شته او نه دسنت حاجت. ګوياچي داسړې دحضواکرم ن پن پشان دعوي کوي ., ان روح القدس

^{ً)} الاعراف 144_

ا) اوګورئ فتح الباری (ج۱ ص۲۲۱) _

⁾ مسند احمد (ج ٤ ص ٢٢٨) احاديث وابصة بن معبد رضي الله عنه. رقم (١٨١٤٩)

نغڅنی روعی، ، (^۱) اوظاهره ده چې دازنديقت او کفردې ^۲) ،

دخفرت موسی او خضرعلیما آلسلام دقصی نه مستنبط خو فواند: دحضرت موسی اود خضر علیهماالصلاهٔ والسلام ددی قصی نه ډیرشی فائدی مستنبط کړی شوی دی. څوفاندی دادی: ① ددی قصی نه معلومه شوه چی طالب علم لره دعالم آدب بهرحال ملحوظ ساتل پکاردی، اوپه دوی باندی اعتراضاتونه دی کول پکارکه چرته دهغوی په یوه خبره باندی پوهه ولره رانشی نوتاویل دی پکښی کوی _

رور و نانده دامعلومه شوه چې کله دوه مفسدات مخې ته راشي يوعظيم اوبل اخف، نړدمفسده عظيمه دفعه کولودپاره دخفيف مفسده ارتکاب کېدېشي _

23_باب: مَنُ سَأَلَ وَهُوَقَابِمٌ عَالِمًا جَالِسًا

"دوقائم، ،دمن سال نه حال دې او "عالما چانسا، ،دسال مفعول به دې - ' ' ' .
دباب سابق سره مناسبت : په تیرشوی باب کښې دحضرت موسی علیه لسلام دحضرت دباب سابق سره مناسبت : په تیرشوی باب کښې دحضرت موسی علیه لسلام دحضرت خضر عظیم نه سوال کول او علم زدهٔ مذکوروو ،اوپه دې باب کښې مناسبت ظاهره دې – ' ' علم علمی سوال کول مذکوردی، په دې شان دواړوبابونو کښې مناسبت ظاهره دې – ' ' وترجمة الباب مقصد :ابن المنیررحمة الله اودهغه په اتباع کښې حافظ ابن حجراوعلامه عینی رحمة الله فرمانی چې دامام بخاری مقصود ددې باب نه دادې چې که چرته یو سهې په ولاړه ولاړه دیوعالم نه دکومې مسئلې تپوس کوی نو دادهغه حدیث په وعید کښې نه دې داخل په کوم کښې چې حضوراکرم نظم فرمانیلې دی ،من احبان پیشل له الرجال تیاما فلیتوا مقعد تامن

ل حلية الاولياء لابى نعيم (ج ١ص ٢٨). ترجمة احمدبن ابى الحوارى. وانظر شعب الايمان للبيهةى (ج ٣ص ١٤٥٨). وحرب (ع ٢٠ص ١٤٥٨). كتاب (ج ٣ص ١٤٥٨). كتاب الرقاق. باب التوكل والصبر. الفصل الثانى. وقم (٥٣٠٠) _

⁾ اوګورئ فتح الباری (ج۱ص۲۲۱و۲۲۲) _

^{ً)} دفواند مذكوره اودنوروفاندودپاره اوګورئ عمدة القاری (ج٢ص ١٩٧) _

^{ً)} عمدة القارى(ج٢ص١٩٤) _ د) هم پورتنئ حواله

النار،،۔(۱ یعنی.. کوم سړې چې دخوښوی چې خلق دې دهغه ډپاره اودریږی نوهغه خپله ټکانه خانله په جهنم کښي جوړه کړی،،ګویاچې امام بخاری کښځ دافرمانیل غواړې چې که چرته څوک ناست وی اودهغه نه یوولړسړې تپوس اوکړې اوهغه دعجب نه هم مامون وی نو په داسې صورت کښې هیڅ حرج نشته ۔(۱

حضرت شیخ الهند پی فرمانی چې په مخکښې باب تیر شو.. پاب من برك على د كېتيه عندالامام اوالمحدث، ، د دې نه معلومه شوه چې د محدث په وړاندې په تواضع ادب اواطمینان سره ناسته مناسب ده، اوس داوانيل غواړی چې عندالحاجة په ولاړه باندې هم سوال كولې شي، جلوس اوبروك ضروري نه دى _ ()

ربرو - سروري دلته قابل غور خبره داده چې په ترجمه کښې دوه څيزونه يوجلوس دعالم اوبل قيام دسائل _حافظ وغيره دغرض بيانولوکښې په جلوس عالم باندې نظر کړې دې _ اوشيخ الهند پُکتابي

غرض بيانولوسره په قيام سانل باندې نظر کړې دې ـ

داهم عین ممکنه ده چې حضرت امام بخاری گنت ددې ترجمة الباب نه په دې خبره باندې داهم عین ممکنه ده چې حضرت امام بخاری گنت ددې ترجمة الباب نه په دې خبره باندې تنبیه کړی وی چې که چرته دضرورت نه طالب علم ولاړ وی اود عالم نه علم حاصلول ناخوښه اوعالم ناست وی نودامباح اوجائزدی، بعضي سلفوبه په ولاړه باندې علم حاصلول ناخوښه ګڼل، په هغوی باندې د کړې دې، لکه څنګه چې امام مالک گنت نه چاتپوس او کړو ,, لملم تکتبعن صووب دینار د کړې دی تادعمروبن دینارنه حدیثونه ولی اونه لیکل ؟ نو امام مالک گنت واب ورکړو، اتیته والناس یکتبون عنه قیاما، فاجللت حدیث رسول الله صلی الله علیه وسلم ان اکتبه واناتاگم ث

يعنى ... چې څنګه زه هغوى ته ورغلم نو اومې كتل چې خلق دهغه نه په ولاړه ولاړه حديثونه ليكى، نوماته دا دحديث پاك داحترام نه خلاف محسوس شوه چې په ولاړه ولاړه اوليكم،، ـ دغه شان امام مالك ﷺ اوكتل چې ابوحازم ﷺ په خپله حلقه حديثونه بيانول، امام مالك

^{&#}x27;) سنن ابی داوو.کتاب الادب.باب الرجل یقوم للرجل یعظمه بذلک. رقم (۲۵۶۹). هم دې سره جامع الترمذی.کتاب الادب. باب ماجا دفی کراهیة قیام الرجل للرجل.(۲۸۶۵) _

[&]quot;) المتوارى (ص ٤ يُووج). وفتح البارى (ج ١ ص٢٢٢).وعمدة القارى (ج ٢ ص ١٩٤)__

^{°)} الابواب والتراجم (ص۵۷) _ °) لامع الدراري (ج٢ص ٣٧٩) _

ثم الجامع لاخلاق الراوى واداب السامع (٢٢٥) باب اصلاح المحدث هيئتهالاحوال التي يكره التعديث فيها رقم (٩٧٩) _

هغه ځې سره تيرشو اواوني فرمائيل

والله اجده موضعاً اجلس فيه، فكرهت ان آخل حديث رسول الله صلى الله عليه وسلم وانا قائم، ، ون يعني " ماته دناستې ځې ملاؤنه شو ،ددې وچې نه ماته داخېره ښه ښکاره نه شوه چې څه

حضور اکرم نام کوم حدیث په ولاړه ولاړه حاصل کړم،،۔

حضرت امام بخاري مين دااوښودل چې په داسې طريقه باندې علم حاصلولو اوپه مسئله معلومولو کښې څه باک نشته، که چرته ضروت وی. آلبته په امام مالک پیچ باندې دادب غلبه وه، نوددې وجې نه هغوي په دهغه حالت کښي دهغوي نه اخذحديث خوښ نه کړۀ ـ دهغه شان داهم ممكن ده چې امام بخاري كولت د.. من سال، الفظ راوړلوسره دې خبرې

طرِف ته اشاره کړې وي چې په ولاړه ولاړه باندې سوال کولوکښې څه بدې تَشَتّه. البّته مُستقَلّ ټو که باندې په ولاړه باندې علم حاصلول مناست نه دي دحديث نه په ولاړه ولاړه باندې دعالم نَهُ سُوال كُولُواجَازْت معلُّومينِي،ليكُن په مستقل ټوګه باندې دولاړې صورت كښې علم حاصلولواجازت نه معلوميرى ـ

لهذا ممکن ده چې امام بخاری گینځ په امام مالک گینځ باندې رد نه ی کړې بلکه دا ی ښودلی وی چې که چرته صرورت وی اوڅوک په ولاړه باندې سُوال کوی اوغالُم ناست وی

نوپەدې څەمضائقە (بدئ) نشتە،بلكەجائزدى_

اودامام مالک مئيد چې کوم کراهت منقول دې نودمستقل حديثونودليکلوپه باره کې دې چې استاذ ناسته باندې بيان کوي اوټول خلق په ولاړه ولاړه اندې حديثون په ليکي ـ والله اعلم (١٢٣) حَدَّثَنَا عُمَّانُ قَالَ أَغْبَرُنَاجَ يِرْعَنْ مَنْصُورِ عَنْ أَبِي وَابِلِ عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: جَاءَرَجُلٌ إِلَى النَّبِي -صلى الله عليه وسلم-فَقَالَ يَأْرَسُولَ اللَّهِ، مَا الْقِتَالُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَإِنَّ أَحَدَنَا لِمُعَاتِلُ عَضَبًا، وَلُقًا تِلُ حَبِيَّةً. فَرَفَعَ إِلَيْهِ رَأْسَهُ - قَالَ وَمَا رَفَعَ إِلَيْهِ رَأْسَهُ إِلاَّ أَنَّهُ كَ أَنَ قَامِمًا - فَقَ أَلَ «مَنْ قَاتَلَ لِتَكُونَ كَلَيْمَةُ اللَّهِ هِي الْفُلْيَا فَهُوَفِي سَيِلِ اللَّهِ عَزّ وَجَلِّ» [۲۶۵۵، ۲۹۵۸، ۲۹۵۸]

رجال الحديث

 عثمان: دامشهورمحدث عثمان بن محمد بن ابى شيبه كمين دي، ددة احوال په كتاب العلم « ، پاپ من جعل لاهل العلم ایاما معلومة ، ، لائدې تیر شوی دی _ ﴿ ، ،

 جويو : دا جرير بن عبدالحميد قرط ضبى رازى ﷺ دې،ددۀ حالات هم په کتاب العلم ،باپ من جعل لاهل العلم اياما معلومة ، الاندې تير شوى دى (^^,

⁾ هم برنئ حواله،رقم (٩٧٨) _

^{ّ)} کشف آلباری (ج۳ص۲۲۹)_

^{ً)} کشف الباری (ج۳ص۲۳۰) _

ا منصور دامشهور محدث ابو عتاب منصوربن المعتمر السلمى الكوفى كيلي دى د دوي حالات هم په كتاب العلم ، بهاب من جعل لاهل العلم اياما معلومة ، دلاندې تيرشوى دى د ،) حالات هم په كتاب العلم ، بهاب من جعل لاهل العلم اياما معلومة ، دلاندې تيرشوى دى د ،) ابو وائل دابووائل شقيق بن مسلم اسدى كوفى كيلي دې ددوي حالات په كتاب العلم ، بهاب خود البومن من ان يحبط عبله وهو لايشعر ، دلاندې تيرشوي دي ()

و مناو ق في المناطقة على المناطقة و المناطق

قوله: قال: جاءرجل الى النبي: يوسرې نبي كريم الله تعاصر شو

⁾ کشف الباری (ج ۲س۲۳۲)_

^{ً)} كشف البارى (جَ ٢ص٥٥٩)_

[`] ') کشف الباری ج۲ص ۶۹۰)_

⁾ صحيح البخاري ج ١ص٠٤ ككتاب فرض الخمس باب من قاتل للمغنم هل ينقص من اجره ؟ رقم ٣١٢٥؟ () فتح البارى ج ١ص٢٨ كتاب الجهاد باب من قاتل لتكون كلمة الله هي العليا)_

ع) فتع الباري ج۶ص۲۸)_

Y) نقله الحافظ عن..فوائد ابي بكربن ابي الحديد..انظر فتح الباري ج عص٢٨)_

^{^)} حواله بالا)_ ^) حواله بالا)_

⁾ حواله باد)_ '') حواله بالا)_

قوله: فقال: يارسول الله، ما القتال في سبيل الله ؟ فان احد نايقاتل غضباً، ويقاتل حمية : دالله په لاركښې جهنګيدل څنګه جهنګيدل دي، ؟ په مونږه كښې څول دغصې دوجه نه جهنګ كوي او څول دغيرت دوجه نه جهنګ كوي. دبخاري شريف په يوروايت كښې دي، الرجل يقاتل لله غنه ، والرجل يقاتل لله غنه كوي او دريا كارې ... يعني سرې دغنيمت دمال د پاره جهنګ كوي. دشهرت د پاره جهنګ كوي او دريا كارې د پاره جهنګ كوي، د دې دوانړو روايتونو دملاولونه پس دمعلوميږي چه د قتال سببونه پنځه څيزونه دي، غضب. حميت، غنيمت، شهرت اورياكاري () حافظ پياته فرماني چه د غصې مال جلب منفعت وي او دغيرت او حميت مال د فع مضرت وي ()

قوله: فرفع اليه راسه: نو هغوى خپل سر مبارك ددي كس طرفته اوچت كړو

قوله: قال : وما رفع راسه الاانه كان قائماً: حضرت ابو موسى اشعري في وماني چه هغوى خپل سر مبارك خكد اوچت كړي ووچه هغه كس ولاړوو ظاهره خو داده چه ددې جملي وايونكي حضرت ابوموسى اشعري دي، اګرچه داحتمال هم پكښې شته چه ددې وايونكي بل راوي وي رام هم ددې ځائ نه امام بخاري ترجمة الباب اخذ كړيدې . من سال و هو قائم عالما جالسا .

^{\)} قاله الحافظ رحمه الله فى ا لفتخ ج 6ص٢٨)__ \ '' حواله بالا)__ '' حواله بالا

^{&#}x27;) حواله بالا)_ ') فتح الباري ج1ص٣٢٢ و ج 5ص ٢٩)_

حاصل داچه دقتال سبب خوكله قوت عقليه وي او كله قوت غضبيه وي او كله قوت شهوانية وي، نويه دېكنبى د ، ، في سبيل الله ، ، د كيدلو صلاحيت صرف په قوت عقليه كنبى دې ﴿) په قتال كنبى و د اعلاء كلمة الله نه علاوه د هه بل غرض نيت : د دې حديث نه معلومه شوه چه د جهاد او دمجاهدينو چه څه فضائل راغلي دي نوهغه دهغه مجاهدينو دپاره دي چه څوك د اعلاء كلمة الله دپاره جهاد كوي لهذا ، ، من قاتل لتكون كلمة الله هي العليا فهو في سبيل الله د مطلب به داشي چه ، ، لا يكون في سبيل الله الا من كان سبب قتاله طلب اعلاء كلمة الله فقط ، يعني د كوم كس سبب قتال چه اعلاء كلمة الله وي نو داهغه قتال به ، . في سبيل الله ، ، شمارلي شي او كه په دې كنبى ني دمذكوره اسبابو نه ديوسبب اضافه او كړله نو دهغه قتال به ، . في سبيل الله ، ، كبي د دې خو ده عالم او ده خود اعلاء كلمة الله كړي ده خو ضعنا نه اصلا او نه مقصودا ديوبل سبب نيت هم او كړي نوهغه هم په ، ، في سبيل الله ، كڼنې د اخل دې ، امام طبرى گنيا د دې تصريح كړي د د . جمهورو او دومققينو هم داراتې ده ، (والله اعلم د الله) ه د د . . . والله اعلم

دابوالوليد بن الشحقه خلبي حنفي يوه واقعه: امير تيمور لنګ داسلامي سلطنت د توسيع اراده او کړه او اسلامي سلطنت د توسيع اراده او کړه او اسلامي ښارونه نې يوبل پسې په خپله قبضه کښې اخستل شروع کړل ، کله چه د شام ښارونو ته اورسيدو اوهلته کښې نې وينې تبوي کړي نو دهغه ځائ علماؤاو خواص نې رااوغستل ،اودهغې نه نې تپوس او کړو چه د قتال ، ، في سبيل الله، ، دې او که نه دې ؟ د د د د اړ و طرفونو مقتولين به په جنت کښې وي او که په جهنم کښې ؟ علامه ابن الشخه حنفي گښځ د ډير دهانت مظاهره او کړه خکه که چرته داسي نې وونيلې وو و ده وي ته دهغه النار ، چې ستاسو مړي به په جهنم کښې وي نو تيمورلنګ به خفه شوي وو او دوى ته به دهغه غښې ستامو مړي به په جهنم کښې وي نو بيا داخطره وه چه تيمور به ورته وونيل چه تا ولې داخپل خلق نه منع کړل ؟ ليکن الله تعالى ددې په زړه کښې داخېره واچوله چه دامذ کړه حديث نې ورته واورولو ، يعني چه کې کس داعلا ، کلمة الله دپاره جهاد د واچوله چه دامذ کوره حديث نې ورته واورولو ، يعني چه کې کس داعلا ، کلمة الله دپاره جهاد کوي نو هغه به خقيقي مجاهد او د جهاد د فضائلومستحق وي ، نو تيمور لنګ خاموشه شو . ()

٤٠٠- بَأَبِ السُّوَّالِ وَالْفُتُيَاعِنُدَ رَمُى الْجِمَارِ

د سابق باب سوه منا سبت: په دي بآب او په ماقبل باب کښې مناسبت بالکل واضح دي، ځکه. چه په تیرشوي باب کښې هم د ، ، سوال عالم نالعلم ذکروواوپه دي باب کښې هم دسوال ذکردي . د ترجمة الباب نه مقصد : حافظ ابن حجر پینلیخومانهلي دي چه آمام بخاری پینیزداوانې چه عالم مشغول وي نودمشغولې په حالت کښې هم دهغه نه سوال کول جانز دي، خوب دې شرط چه

^{&#}x27;) فتح البارى ج ۶ص۲۹)_ ') فتح البارى ج ۶ص۲۹)_

اً) او گورئ الصوء الامع ج١٠ ص٤)_

هغه په خپله مشغولتوب کښي بالکل ډوب نه وي ` ،حافظ ابن حجر ﷺ صرف دسوال لفظ ته كنلى دي، حالانكه امام بخآرى مُنتَهَ به ترجمه كنبي دسوال دلفظ سره لفظ د ، . فتيا ، ، هم ذكر كريدةي، ،سوال، ،دطالب علم كار دي او ، فتيا ، ،دعالم كاردي، لهذا دترجمه غرض داسي بيانول بكاردي چه ددواړو لفظونو لحاظ بكښي اوساتلي شي،علامه ابن بطال ميداودي بدتابع داري كنبي علامه كرماني اوعلامه عيني رحمسالله فرماني جه دامام بَخَارَي مُنْ اللهِ مقصد دادى جدكه عالم مشغول وي نودهغه نديدهم هغه حالت كنبي سوال كول جانز دي اوهغه عالم دې حالت کښې جواب هم ورکولي شي خو په دي شرط باندې چه په دې مشغوليت کښې جواب ورکول جانزهم وي ()حضرت ګنګوهي کښځ فرماني چه ددي باب اودتيرشوي باب مقصد يودي ځكه چه دمشغوليت په وخت كښي سوال كول بي ادبي شَمارَكَي شَي نود توهم دلري كولَو په غرض ئي داباب روړي دې چه دضرورت په وخت كښې داپه بي ادبې كښې نه دي داخل چه سړې سوال او كړي (۲) حضرت شيخ الهند بكتځ فرماني چه دامام بخاري غرض دي ترجمه نه دادې چه اګر چه وخت د مشغوليت هم وي خود ضرورت يِّه وخت كُنبي دَدَّاسي مَشغلُوتياً په حالتِ كُنبي هم يِّه سوال او جواب كښي هيڅ حرج نشّته، () حاصل داشو چه در مي جمار په وخت کښي که چرې داعالم نه سوال اوشو نو سوال کول جائز دي، اودغه شان عالم جواب هم وركولي شي په دري باندي دتنبيه ضرورت ځكه راپيښ شو چّه، درمي جمار،، بِدُوخّت كښيّ بدسوال جواب كولو كښي داغطره وي چدرش به جوړ سي،چه هغه درمي كونكو والادپاره دتنگي سبب وي نو داهغي تقاضاً داوه چه سوال اوجوا شي،چه هغه درمي كونكو ب دې جائز نشکي، خو امام بخاري کښته او فرمانيل جَه جانز ده، يا خو ئې د دې دوجه نه جواز بيان كَرُو چِه په لاره كښي دعلم تذكره كول دعلم بي قدري ده، نوامام بخاري او فرمانيل چه هغددعبادت محفّل دي اوس كه سوّال تعلق هم ددغه عبادت وي كم چه هلته اداكولي شي نوبيا خوسوال كول مناسب دي خكّه چه سوال اونكړې شي نوّ دعبّادت دوخت ختميد لوّ خطره ده،والله اعلم

(١٢٢] حَدَّ ثَنَا أَبُولُعَيْمِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبُدُ الْعَنِيزِبُنُ أَبِي سَلَمَةَ عَنِ الزَّهْرِي عَنْ عِيسَ بُيِ طَلْحَةً عَنْ عَبْدِاللَّهِ بِنِ عَمْرٍوقَ الَ زَأَيْتُ النَّبِي - صلى الله عليه وسلم- عِنْدَالْجَنُورَةِ وَهُوَيُمُ أَلَّ فَقَالَ رَجُلٌ يَّارِيُولَ اللَّهِ تُحَرُّتُ قَبْلَ أَنْ أُرْمِي. قَالَ «ارْمِولاَ حَرَجَ» قَالَ آخَرْيَا رَسُولَ اللَّهِ حَلَقْتُ قَبْلَ أَنْ أَغْرَ. قَالَ «الْعَزُولَا حَرَجَ». فَمَا سُبِلَ عَنْ شَيءِ قُلِّمَ وَلَأَ أَغِرَ إِلاَّ قَالَ افْعَلْ وَلاَحَرَجَ.

^{&#}x27;) فتع الباري ج ١ ص٢٢٣)_

[&]quot;) شرح صحيح البخاري لابن بطال ج ١ص ٢٠٤، وشرح الكرماني ج ٢ص ١٩٨، وعمدة القاري ج ٢ص ١٩٨)

[]] ا وتحوري لآمع الدراري ج٢ص٣٦٩]_

⁾ الابواب والتراجم ص٥٧)_

رجال الحديث

①ابو نعیم: دا مشهور محدث ابونعیم الفضل بن دکین الملائی الکونی الاحول میمینی ددوی حالات دکتاب الایمان. بهام فضل من استبرالدینه. ، دلاندې تیرشوې دې (ٰ)

① عبد العزيز بن ابي سلمه : دامشهور فقيه اومحدث عبد العزيز بن عبد الله بن ابى سلمه الماجشون المدنى التيمي كيلي دي اودده كنيت ابو عبد الله يا ابوالاصبغ دي، دادې دنيكم ابوسلمه نوم ميمون يا ديناردې (، دوى دامام زهرى، محمد بن المنكدر، وهب بن كيسان، هلال بن البى ميمونه، او دخپل تره يعقوب بن ابى سلمه، سهيل بن ابى صالح، عبد الله بن معمد، عبد الله بن ابى صالح، ابراهيم، هشام بن عروة او دايوب سختيانى من خانه روايت كوي او دودوي نه داخلق روايات كوي، ابراهيم، هشام بن طهمان، ،وهو من اقرائه، ،زهير بن معاويه، ليث بن سعد، وكيع بن الجراح، عبد الرحمان بن مهدي، عبد الله بن وهب ،ابو داود طيالسي، ابوسلمه التبوذكي، ابو نعيم النصل بن دكين من هدي، عبد الغزيز بن نعيا النصل بن دكين شيخ آدابن معين كيلي نه چه كله تپوس او كړى شو چه : عبد العزيز بن نعيم النصل بن دكين شيخ آدابن معين كيلي نه خوى جواب وركړو چه لا. هو دونها، انها كان رجلاً يقول بالقدر والكوم، شم تركه واقبل الى السنة ولم يكن من هانه الحديث، فلها قدم بغداد كتبوا عنه، فكان بعد يقول: جعلتى اهل بغداد محدثاً وكان صدوقائقة ... أن

یعنی دعبدالعزیز بن ابی سلمه مقام دلیث بن سعد او دابراهیم بن سعد نه کم تر دې، ددوي نظریات دومبي دقدریو په شان و و، بیائي هغه پریخو دل او د سنت طرف ته راغلل . دحدیثو سره ئي ډیره مشغولتیه نه وه ، البته چه بغداد ته لاړو نو دهغه ځائ خلقو ترینه په کثرت سره حدیثونه اولیکل ، نودوي به بیاداویل چه دبغداد خلقو زمانه محدث جوړ کړو ، او هغوی صدوق او ثقه وو ، ، امام ابوزرعه ، امام ابو حاتم ، امام ابو داو دا وامام نساني فتیم فرماني چه ، ثقة ، ، او ابن خراش واني چه ، ، صدوق . . (۵)

أبن سعد مين فرماني حِد، ،وكأن ثقة كثير الحديث، ، (١)

حافظ ذهبي مُنطَّخُ فرمَّانُي، ،ثقة مشهور ، ،وكان اَماماً مُعظما، ، (٧) امام عجلي مُنطُخُ فرماني چه، ثقة ، مامون رجل صالح. . ^

>) کشف الباری ج ۱ص۶۶۹)_ ای ترنسال ال

أُ تعليقات تهذيب الكمال ج ١٨ ص ١٥٧)_

⁾ تهذيب الكمال ج١٨م١٤٢)_) دشيوخ اودتالا مذه د تفصيل دپاره اوګورې تهذيب الكمال ج١٨ص ١٥٣.١٥٤) وسيرا علام النبلا مج٧ ص٢٩.٢١٠)_

^{ً)} تهذيب الكمال (ج ۱۸ ص ۱۵۶)_ دم حواله باله.

⁾ الطبقات لابن سه . ج٧ص٣٢٣)_) الكاشف ج ١ ص ۶۶) رقم ٣٣٩٥)_

امام دار قطني يُحيِّن فرمائي : ، ، حافظ ، () امام احمد بن صالح يُحيِّن فرمائي : كان لزها . صاحب سنة. ثقة. (*) أمام ابوبكر البرار مُركيك فرمائي: ثقة،، (")امام الشهب مُنكيك فرمائي: هواعلم من مالك...أن موسى بن هارون الحمال ﷺ فرماني كان ثبتا متقنا...٥ حافظ أبن حجر ﷺ فرمائي اثقة فقيه مصنف (٢٠) ابن حبان كلي دوّي به كتاب الثقات كنبي ليكلي دي او فرماني چه، ، وكان فقيها ، ورعا ، متابعا لمذهب اهل الحرمين من اسلا فه مفرعاً على أصولهم ، ذاباً

بشر بن السري مُصَيَّةُ فرمائي چه: لويسبع ابن اي دلب ولا الماحشون من الزهرى .٠٠٠ ليكُن أحمد بنَّ سنان فرمائي جدد مطلق سماع نه انكار صحيح نه معلو ميږي، بلكه مطلب دادې چه عبدالعزيز د امام رهري نه عرضا حديثونه اخستي دي 🖒 چنانچه اما مېخاري مند په دې باندې تصريح کړي ده،، سخ الزهري،، (۱۰)

د لفظ» ما جشون» تحقيق «،ماجشون، .د ځني حصراتو په نيز دجيم د کسره سره وليلي شوې دې اوځني حضراتو دا مفتوح ونيلې دې، بلکه ځني حضراتو ونيلي دي چه په دې لفظ باندې درې واړ ه حرکات صحيح دي (۱۱) بيا دوجي سميه په دبا و کښې ونيلي شوي دي چه چونکه دوي اصبها ن ته تلي وو ،اودهغه ځائ د خلقو نه به يې دهغوي د حالاتو معلومولو دپاره،،چونی چونی،، ریعنی تهسنگه یئ ؟، وئیل، نو خکه د دوی لقب ،، ماجشون،. اوګرځیدو،

ابراهيم حربي واثي چـه دادفارسي نـه معـرب دي،پـه اصـل کـښي، ماه ګـون، وو، يعنـي دسپوږمی رنگ والاً، چونکه د دوي دواړه اننګي سره وو ځکه ورته، ماو ګون، وئیلي شي نوبيائي معرب كړونو، ،ماحشون، ،ترينه جوړشو (۲۰)

دعبدالعزيز بن ابي سلمه ﷺ انتقال په ۱۶۴هجري کښې شوي دې (۱۳)

```
حواله با له)__
تهذیب التهذیب ج ۱۸ص ۳٤٤)_
```

حواله با لا)_ حواله يا لا)_

تقريب التهذيب ص ٣٥٧ رقم ٤١٠٤)_

الثقات لابن حبان ج ٧ ص١١١)_

⁾ تهذیب الکمال ج ۱۸ص ۱۵۶)_

⁾ پورتنئ حوا له)_

التاريخ الكبير ج٤ ص١٣ رقم ١٥٣٠)_

^{٬٬)} اوگوری تقریب التهذیب ص ۳۵۷ رقم ۲۰۰۴)، والمغنی فی ضبط انسماء الرجال ص۶۷٫۶۸)_ ") او گورئ تهدیب الکمال ج ۱۸ ص۱۵۵) وسیر اعلام النبلا ، ج ۲ص ۳۱۰ __

[&]quot;) الكاشف ج ١ ص٤٥٥). رقم)(٣٣٩٥).

© الزهرى: دوى محمد بن مسلم بن شهاب زهرى گيند دى، د دوى حالات په ،، بده الوي.. ددريم حديث د لاندې تير شوى دى . ()

جعيسى بن طلحه أدوى ابوم حمد عيسى بن طلحه بن عبيد الله قرشى تيمى مدنى يُمثير دى. د دوى حالات په، ، كتاب العلم ، باب الفليا وهو واقف على الدابة و فيدها "كنبي تير شوى دى، "

@عبدالله بين عمسوو : د حضرت عبدالله بين عمسرو بين العباص الم حالات به كتبار الإيمان ، باب المسلم من سلم المسلمون من لساله ويده ، دلاندي تير شوى دى (٢)

• الجعزة .. كښى الف لام يا خو دجنس دپاره دې، لهذا هره يوه جمره ترې نه مراد كيىدى شى، اويا دعهد دپاره دې نومراد ترينه جمرة العقبه ده خكه چه كله، ،الجمرة ، ،مطلق اوئيلى شى نو ددې اطلاق په جمرة العقبه باندې كيږي . . ⁴).

په ترجمة البا ب باندې اشكالات: ځنی حضراتو په ترجمة الباب باندې دا اشكال كړې دې چه په حديث باب كښې خو دا مذكور نه دې چه دا سوال درمې په حالت كښې شوى وو، بلكه په دې كښې خو صرف دومره خبره ده چه هغوى ،، جمرة ،، سره ولاړ وو د ددې جواب دا وركړې شوې دې چه امام بخارى پي اكثر د عموم نه تمسك (استدلال) كوي، او ، ، سوال عند الجمرة ،، عمام دې برابره ده كه د استخال بالرمى په حالت كښى وى او كه د هغې نه دفاريد لو په حالت كښى وى ، ځكه په ترجمة الباب باندې هيڅ اشكال نشته . (٥)

امام اسماعيلى گفته به ترجمة الباب باندې دا اشكال كړى دې چه په ترجمة الباب كښي چه دكم خائ تصريح شوى ده ، ددې د ذكر هيڅ فانده نشته ، خكه چه په بسوال او جواب كښې دخائ د تحصيص څه معنى ده ؟ بيا خو امام بخارى گفته له ، بياب السعوال والمسعول على مطارحلة .. او ، بياب السعوال وم النحر .. هم قانمول پكاروو ، د علامه اسماعيلى گفته داوينه چه ،، د ترجمة الباب هيڅ فانده نشته ، ، صحيح نه ده . خكه چه ددې فواند مو نړه رومبى ذكر كړى د ترجمة الباب هيڅ فانده نشته ، ، صحيح نه ده . خكه چه ددې فواند مو نړه رومبى ذكر كړى دى . البته دوى په امام بخارى داخبره لازمه كړه چه دوى له دا نور ابواب هم قائمول پكاروو له لهذا د ، . باب السعوال والمسعول على الراحلة . . دمضمون ترجمه په ، باب الفتيا وهو واقف على الدالة وغيرها . سره منعقده كړى شوه . او ، ، باب السوال پوم النحر . ترجمه واقعى چه اهم ده ، كمى ته

ا) کشف الباری (ج ۱ص۳۲۶)_ از کشف الباری (ج ۱ س۳۲۶)_

^{&#}x27;) کشف الباری ج ۳ص ٤٠٢)_

^{ً)} کشف الباری (ج ۱ ص۶۷۹)_ ٔ) عمدة القاری (ج ۲ ص۱۹۸)_

^د) فتع الباری (ج آص۲۲۳)_

چه هغوی اشاره هم او کړه . ځکه کیدی شی چه چا داخیال کړې ووچه یوم النحر دخوراك ځکاك او دا لوبو ورځې وې، لهذا په دې ورځ په تعلیم او تعلم کښې مشغولتوب نه دې پکار، نو امام بخاري وکته کچرې داترجمه قائمه کړي وه نو ونیلي شوی به ووچه امام بخاری دا خبره ښکاره کړه چه په دې ورځ کښې علم حاصلول جانز دي اګر که دا دخوراك څکاك او د لوبو پر تو ورځي دي، بلکه د لوبو توقو په ځائ دعلم په حصول کښې مشغوله اوسیدل ډیر غوره

قوله: فَقَالَ رَجُكَ يَارَسُولَ اللَّهِ نَعُرْتُ قَبْلَ أَنْ أَرْمِي. قَالَ «ارْمِ وَلاَ حَرَجَ». قَالَ آخُرُقا رَسُولَ اللَّهِ حَلَقْتُ قَبْلَ أَنْ أَنْحَرَ قَالَ «الْحَرُولَا حَرَجَ». فَهَا سُبِلَ عَنْ شَيءٍ قَلِهَ مَلاَ أَخْرَالاً قَالَ افْعَلُ وَلاَ حَرَجَ : يو كس تبوس اوكهو چه يارسول الله تلظ ما درمى نه مخكبى قربانى اوكهد، نو هغوى ورته اوفرمانيل چه اوس رمى اوكه، هيخ حرج نشته، يو بل كس ترينه تبوس اوكه و چه يارسول الله. ما دقربانى نه مخكبنى حلق اوكه لو، نو هغوى ورته اوفرمانيل چه اوس قرباني اوكه، هيڅ حرج نشته: دهغوى نه چه دڅه څيز دتقديم اوتاخير په باره كښې تبوس اوكړي شو نو هغوي ورته اونيل چه، ، اوس اوكه، هيڅ حرج نشته،

دى، فليراجع اليه. رك

دحدیث په ترجمة الباب با ندې انطباق : روستو اشارة تیرشو چه اما م بخاری کینی د ، دایت النبی صل الله علیه وسلم عند الجمرة و دویسٹل ، د عموم نه ترجمه ثابته کړې ده چه هغوی جمرة سره وو برابره ده چه رحمی کښی مشغول وواو که درمی نع فارغ شوی وو، والله اعلم بر

ر (۴۷) باب: قَوْلِ اللَّهِ تَعْالَى (وَمَا أُوتِيتُمُمِ مِنَ الْعِلْمِ الْأَقْلِيلاً) دسابق باب سره منا سبت: په دواړه بابونو کښي مناسبت داسي دی چه په دواړو کښي سوال کول ذکر کړی شوی دی. البته په ډومبي باب کښې مسئول ذکر کړې شوی دی او

سانل ته دده د علم ضرورت دی، او په دې بآب کښې مسئول آمذ کور نه دې د آ، آ د توجمة الباب مقصد : علامه عینی پیشه فرمانی چه دامام بخاری مقصد دادې چه خنی علوم داسي دی چه په هغې باندې الله تعالی انبیاء او ملاتکو ته هم اطلاع نه ده ورکړی و آ ددې تانید ددینه کیږي چه کله د یهودیانو وړاندې هغوې دا آیت «وما او تیتم من العلم الا قلیلا» مباراه اولوستلو (ق) نو هغوی یهودیانو تپوس او کړو چه دا خطاب صرف زمونږ د پاره دې یا تا

⁾ پورتنئ حواله)_

⁾ بورسی عرب ...) اوگورئ کشف الباری (ج ۳ص ۵۰،۵۰۱)کتاب العلم وهو واقف علی الدابة وغیرها)_

^{ً)} عمدة القارى ج ٢ص ١٩٩)_

⁾ بورتنئ حواله)_

^د) الاسراء (۸۵٪)__

سو هم په دې کښې دا خل يې ؟ نو تاسو ورته او فرمائيل چه ، ، بل لحن والتعر لم لو و من العلم الا و هم په دې کښې ده خلام و د السکال دې چه داباب خو په . ، کتاب الايمان ، کښې خدکر کول پکار دی ځکه چه دادې تعلق دا اعتقادی مسائلو سره دې . ليکن داهم ښکار و ده خد دې تعلق د کتاب العلم سره هم دې خکه امام بخاری گښتوداپه ، ، کتاب العلم سره هم دې خکه امام بخاری کتاب العلم ، کښې د کرکړې دي . حضرت شيخ الهند گښتو فرمائي چه امام بخاری دااوونيل چه سړی له پکار دی چه تواضع اختيار کړی او دخلاف تواضع کارونو به خان بېچ کړی . خکه چه د ټولو مخلوقاتو علم چه رايوخې کړی شی نو بيا هم هغه قليل دې نو ديويو کس دعلم قلت او سپکوالی پيژندل هيڅ ګران نه دی . حکماء دا وينا کړی ده چه يوسړې څومره هم لوئ اوغټ عالم شی خو بالبداهت دهغه جهل دهغه دعلم نه ډير زيات وي . يعنی د سړی علم متناهی او دهغه جهل غير متناهی دې ، لهذا علماء له پکارونو نه احتراز اوکړی . د .)

په مذکوره باب او د تیر شوی باب په مینځ کښې فرق: ددې نه پس پود شې چه شیخ الهند کمينځ فرمانی چه روستو یوباب تیرشوې دې، ، باب ما یستحب للعالم اذاسئل اې الناس اعلم اف کلا العلم الحالم الحالم اذاسئل اې الناس اعلم اف کل العلم الحالم الحوث کبنې ددې بافرق کبنې د افرق کیدی شوی چه په تیرشوی باب یعنی ، ، مایستحب للعالم، نه داتواضع مسنونه طریقه کې شوی ده او په دې باب کښې امام بخاری کمینځ ددې علت طرف ته اشاره کېې ده ، یعنی تواضع ځکه اختیارول پکاردي چه دسړي علم څوم ره هم زیات وی دهغې هیڅ حثییت نشته ، الله تعالی ټولو مخلوقاتو ته خطاب کوی «وما او تیتم من العلم الا کی دوم کو دیوکس دیم کیاب دی دوم کاب دی دوم کاب دی دوم کاب دې دو دیوکس دیم به حثییت وی ؟

داهم ممکن ده چه اما م بخاری ددې باب نه د تواضع تعلیم او تبلیغ ورکړی وي اود ، ، با به ما پستحب للعالم نه ادب خودلی وی ، یعنی چه ډیر علماء راجمع شوی وی او اتفاقاً په کښې دیو کس نه دا تپوس اوکړی شی چه . اي الناس اعلم ۴ ، ، نوعالم به څنګه جواب ورکوي، نو دحدیث نه دا معلومه شوه چه الله تع حواله کول پکاردی او داسی ونیل پکاردی . الله اعلم ... یعنی الله تعالی ښه پوهیری چه څوك لونی عالم دی

يعنى الله تعالى بنه پوهيږي چه څوك لوني عالم دى. حضرت شيخ الحديث كتابخ فرمانى چه د ترجمه اولى نه مراد او غرض دعلماء د پاره تواضع ده. يعنى د يو عالم د پاره دامناسب نه دى چه هغه خپل خان په خپله اعلم الناس اوګنړى. اګرچه واقعى هغه اعلم وى خكه چه حضرات انبياء گاره خپلو امتونو په مقابله كنبى اعلم دى، بياهم د وى حضراتو ته د ، . اي الناس اعلم، په جواب كنبى ، ، الله اعلم، ، ويلو

^{ً)} عمدة القارى ج ٢ص١٩٩)__ ً) الابواب والتراجم ص٥٨)__

رجال الحديث

آسس بن حفص: دوى ابومحمد قيس بن حفص بن القعقاع التميمى الدارمى البصرى وكليه بن المسلمين الدارمى البصرى وكليه دوى د اسماعيل بن عليه، عبدالواحد بن زياد، هشيم بن بشير، معتمر بن سليما ن، عبدالوارث بن سغيد، يزيد بن زريع اود ابو عوانه وينه نهز نه روايت حديث كړى دې اود دووي نه روايت كونكوكښي اصام بخارى، اصام ابوداود، اصام احمد بن الحسن الترمذى، ابوزرعه، ابوحاتم، يعقوب بن سفيان، عبدالعزيز بن معاويه اوفضل بن محمد شعراني منطوري بن منطوري بن معاويه اوفضل بن محمد شعراني منطوري بن معاويه اوفضل بن محمد شعراني منطوري بن منطوري

امام ابن معین ﷺ فرمائی چه:،، ثقة..(^ه) امام دارقطنی ﷺ فرمائی: ثقة..(^۲)

الكنز المتوارى ج ٢ص ٣٨١، ٣٨١)_

⁾ قوله ... عن عبدالله ي مسلم الماحديث، اخرجه البخار مى ايضا قى صحيحه ج ٢ص ٢٥٩ كتأب التعديد ... عن عبدالله ورض الله عنه :..اللاعديث، اخرجه البخار مى ايضا قى صحيحه ج ٢ص ٢٥٩ كتاب الاعتصام التفسير. سورة الا سراء، باب : ((ويسئلونك عن الروح))، رقم ٢٤٧١). ج ٢ ص ١٩٦٧). ج ٢ ص ١٩١١) كتاب بالكتاب والسنة، باب ما يكره من كثرة السنوال وتكلف ما لا يعنيه. رقم (٧٤٩٧). و باب قول الله تعالى ((إنما قولنا لشيء)) رقم (٧٤٤٧).ومسلم فى صحيحه، قى كتاب صفات العنا فقين باب سوال اليهود النبي صلى الله عليه وسلم عن الروح وقو له تعالى : ((يسئلونك عن الروح)) رقم (٧٠٤١_٢٥٩).

^{ً)} تهذيب الكمال ج ٢٤ص٢١)، رقم (٨٩٩)_

⁾ د شيوخو اود تلامذ ه د تفصيل د پاره اوګورئ تهذيب الکمال ج ٢٤ص ٢٢٠٣)_

⁽) تهذیب الکمال ج ۲۶، ص۲۳)__

^{ً)} نهذیب الکمال ج ۸ص ص ۳۹۰)_

امام عجلى يُحليك فرمائي . ١٧ باس به .(١) امام ابو حاتم يُعليك فرمائي . . هين . . ٢)

عبدالواحد : دوی عبدالو احد بن زیاد عبدی بصری گیلی دی، ددوی حالات به کتاب الایمان ، باب الجهاد من الایمان ، دلاندې تیر شوی دی «۱»

الاعمس سليمان بن مهران : دوى أمام أبو محمد سليمان بن مهران اسدى كوفى
المعروف بالاعمش مئلة دى، د دوى حالات په كتاب الإيمان. . باب ظلم دون ظلم . . دلاندي
تير شوى دى . . ^.

ير کري دي. (ابرا هيم : دوی مشهور امام او فقيه ابراهيم بن يزيد بن قيس بن اسود نخعی ﷺ دې، د دوی حالات هم په کتاب الايمان، ،پاب ظلم دون ظلم، دلاندې تير شوی دې . ()

⑥ علقمه : دې د کوفې مشهور تابعی فقیه اوامام ابو شبل علقمه بن قیس بن عبدالله بن مالك نخعی کوفی ﷺ دې .ددوی حالات هم په کتاب الایمان، باب ظلم دون ظلم ،دلاندې تیر شوی دی . رن

🕝 عبدالله ﷺ دوی مشهور صحابی حضرت عبدالله بن مسعود ﷺ دی، د دوی حالات هم په کتاب الایمان، ، باب ظلم دون ظلم، ، دلاندې تیر شوی دی، (۱۰)

. قوله: قــال: بينــا انا امشي مع النبي صلى الله عليه وســلـم فــي خــرب المدينــه: حضرت عبدالله بن مسعود الثال فرمائي چه يو خلي زه نبي كريم تلائل سره دمديني منوري په

^{ً)} تهذیب الکمال ج ۲۶ ص۲۳)_ ایستندید (۱)

ا) پورتنئ حواله) -

^{ً)} الثقات لابن حبان ج ٩ ص ١٥)_ 1) نقريب التهذيب ص ٤٥۶. رقم.٥٥٤٩)_

⁾ کفریب انتهدیب عن ۱۳۰۰ رخم.۱۰ ۱۳۵۰_ د) اوګورئ، تحریر تقریب التهذیب ج ۳ص۱۸۷رقم، ۵۵۶۹__

مُ اوګورئ حاشية السبط ابن العحمي على الكاشف خ ٢ص١٣٩.رقم ٤٥٩٩)_

۷) کشف الباری ج۲ص۲۰۱)_

م) کشف الباری ج ۲ص ۲۵۱) _

^{&#}x27;) کشف الباری ج ۲ص۲۵۳)_ '') کشف الباری ج ۲ص ۲۵۶)_

^{&#}x27;') كشف الباري ج ٢ص ٢٥٧)_

2

كهندراتو باندى تيريدم

غړب: دخاء معجمې دفتحې سره اود ، ، راء ، ، دکسرې سره راځي. دامفرد هم استعماليږي اود ، خربة ، د جمع پله طور هم مستعمل دي لکه ، ، کلمه ، ،او ، کلم ، ، ١٠ دا لفظ خُرْبُ «بَكسر الخاء المعجمة وبَفَتح الراء المهملّة» هم ضبط كرى شوي دي. ١٠ ددي معنى ويرانه اوكهندر راخى، پەصحىح بخارى كښى پەدېمقام كښى خو دالفظ هم دغه شان دې يعني، خرب. البته په نو رو مقاماتو كښي، أحرث. واقع شوى دي. ن هم دغه شان په صحیّع مسلم کښې هم، ،حرث، . واقع شوي دې . (۱ البّه ددې په یو طریق کښې . ، نخل . راغلي دې . (۱) په دې ټولو روایاتو کښې تطبیق داسې کیدې شي چه هغه ځای په اصل کښې كهنه آپاتې شوى وو،بيا روستو په كښې كرونده وغيره هم كو لې شوه اوخنى خلقو پكښې د کهجورو ونې هم کرلې وې. اودکهنډر ځني نښې پکښې هم باقي پاتي شوي وې. والله اعلم. **قوله: وهويتوك على عسيب معه:**هغوى د كهجورې دونې په يوه لښتې باندې اړخ لگولي وو، علامه صنعاني مُثلِي فرماني جه د كهجوري ښاخ ته. سعف. ونيلي شي.بيا پد،،سغف،،کښې چددجرړې کمه حصه پرته دچوړا، وي هغې ته،،کرب، ونيلي شې ۱۰۰ او ددينه بره حصه په کمه چه د کهٔ جورې پانړې نه وي هغې ته، عسيب، ونيلي شي. () خنی حضرات واني چه عسيب د کهجورې هغه ښاخ دې چه دهغې نه پانړې صفا کړې شي ()

قوله: فېرېنفر من اليېود :نو هغوي ديهوديانو په يو ډلې باندې تيرشو ، دېخاري شريف په نو رو مقاماتو كنبي داسي دى، مرينفر من اليهود ،، البته دكتياب التفسير په طريق كنبي داسې دی ..ادمر الیهود،، 🐧 دطبري په يو روايت کښي ،،ادمروناعل يهود،، راغلې دې. 🖒

^{ً)} اوګورئ عمدۃ القاری ج ۲ص۲۰۰)_

⁾ فتح الباري ح اص ٣٢٤. وعمدة القاري ج ٢ص ٢٠٠)_

⁾ روستو مونږ. ددې حديث تخريج کړې دې فليراجع اليه.)_

⁾ صحيح مسلم كتاب صفات المتأفقين باب سوال اليهود النبي صلى الله عليه وسلم عن الروح رقم (۷۰۶۰). (۲۰۶۰)_

⁾ پورتنی حواله، رقم ۲۰۶۱)_

^{&#}x27;) عمدة القارى ج ٢ص ٢٠٠<u>) _</u>

ا مسده اساری ج اس ۱۰۱۰ و قائده ادکهجرری و نه انخلة اتنه : جذع النخلة، پوستکی اوریشی، لیف :

الا پورتنی حواله) و قائده ادکهجرری و نه انخلة اتنه : جذع النخلة، پوستکی اوریشی، لیف :

دنیاخ دکټ کولو نه پس چه کمه حصه دتنی سره باقی پاتی شی، کرناف دنیاخ دجرړی بلنه حصه

کرب دنیاخ نری حصه عسیب پوره بناخ سعف پانړی خوص اوګوری القاموس الوحید اد

کهجوری غنجقه کیاسه، قنو، عذق، کهجوری چه خه سره انختی وی شماریخ ددی مفرد

شمروخ یا شمراخ راخی، بیا دکهجورو ترتیب دادی طلح، بلح، بسر، زهو، معو، رطب، تمر،

شمروخ یا شمراخ راخی، او دکهجوره ترتیب دادی طلح، بلح، بسر، زهو، معو، رطب، تمر،

⁾ صحيح بخاري ج٢ص ٧٤٦ كتاب التفسير سورة بني اسرائيل باب: ويسئلونك عن الروح رقم ٤٧٢١) °) تفسير الطبري - ١٥ص٤٧) تحت تفسير قوله تعالى: ويسئلوناك عن الروح)_

په دې دواړو رواياتو کښې تطبيق په داسې طريقه کيدې شي چه په لاره کښې يې ملاقمات شوې وي ، يعني ديو طرف نه حضور مبارك صحابه كرامو سره روان وو او دبل طرف نه يهودي راراوان وو،

فَقَالَ بِمُضْهُ وَلِيَعْضِ سَلُوهُ عَنِ الرَّوجِ. وَقَالَ بِعْضُهُمْ لِأَتَّنَا أَلُوهُ لاَ يَهِي عُفِيهِ بِشَىءَ تَكْرُهُونَهُ. فَقَالَ بِمُضُهُمْ لَنَسُأَلَنَهُ. فَقَامَ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَقَالَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ، مَا الرُّوحُ فَسَكَتَ. فَقُلْتُ إِنَّهُ يُوحَى إِلَيْهِ. فَقُمْتُ، فَلَمَّا الْجَلَى عَنْهُ، قَالَ (وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوجِ قُلِ الرَّوحُ مِنْ أَمُورَبِّي وَمَا

أُوتُوامِرِ ﴾ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً ﴾.

يهوديانو کښې ځني کسانو ځنو ته اوونيل چه دروح په باره کښې سوال اوکړې ، په دوي كښې ځني خلفو اوليل چه ددوي نه سوال مه كوي، هسې نه چه دوي په جواب كښي داسې خبره اوکړي چه دهغي دوجې تاسو ته خفګان يا شرمندګې درورسي، خنو اوليـل چـه مونږه خوبه خامخا تپوس كوو، چنانچې په دې كښې يوكس اودريدو اووئيل ، اې ابو القاسم، روح څه څيز دې؟ نو هغوي خاموشه شو ، نوما اوونيل چه په تاسو باندي وحي نازليږي .نو زداودريدم، بيا چه كله دوحى اثرات ختم شو نو هغوى اوفرمائيل «وَيَسْأَلُونَكَ)) يعنى داخلق تاسونه دروح په باره کښې سوال کوي نو تاسو ورته اووانې چه روح ځما درب حکم دې اودې خلقو ته لږ شان علم ملاوشوي دي.

واقعه مذکوره په مدینه منوره کښې شوي وه اوکه په مکه مکرمه کښې ؟ ددې حدیث نه معلوميږي چه داواقعه په مدينه منوره كښې شوى ده، حلانكه دامام احمد او دامام ترمذي رحمسالله د روايتونو نهمعلوميږي چهداواقعه پهمكهمكرمه كښې شوي ده،ځكه چه حضرت ابن عباس اللهاندروايت دي:

. ، قالت قريش ليهود : اعطونا شيا نسال عنه هذا لرجل. فقال : سلوة عن الروح. فانزل الله تعالى (﴿ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِدَ بِي وَمَا أُوتُوامِنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً › . قالو ١ اوتينياً علما كبيدا. اوتينيا التوراة. ومن أولي التوراة فقد اولي حقداً كشدا، فانزلت : ((قُلْ لُوكان الْبَعْرُ مِدَادًا لِكَلِمْتِ رَتِي لَنفِل الْبَعْرُ ...) الى آخرالاية (١) اللفظ للترمذي

يعني قريشو يهودو ته درخواست كړې ووچه مونږه له څه داسې ځيز راكړې چه دهغې تبوس مونوه د رحضورمبارك نداوكرو) نو يهوديا نو اونيل چد، ،روح ، باره كبني تري نه سُوَّالَ اوكَرِيُّ. نو الله تعالى آيت نازل كرو ((يستلونك)) يعنى داخلق تاسونه دروخ پــــــــاره كبنى تِيُوسٌ كوى نو تاسو ورته اوفرمائي چه روح ځما درب حكم دي، اوتاسو ته خو لږ شان علم دركري شوبدي يهودو اونيل چه مونزه له خو ډير علم راكړي شوي دي، مونز ه له خو تورات هم راكړي شوى دې اوجا له جه توراة وركړي شوى دې نو هغوى ته خير كشير وركړي شوى دې، رخکه چه په دې کښې حکمت آو دعقل خبرې دې او چا ته چه دحکمت آو د عقل

⁽⁾ جامع الترمذي، أبواب التفسير، ومن سورة بني أسرائيل ، وقم ٢١٤٠)، ومستدالامام أحمدج ١ص ٢٥٥). رقم (۲۳۰۹)_

خبرې ورکړې شي نو هغوى ته خير کثير ورکړې شي.، نو دا آيت نازل شو. «گُللُوگانَاللَهُـرُ مِدَادًا........) يعني تاسو اووائي چه که سمندر زما درب د کلماتو دليکلو دپارهم سياهي جو ړه کړې شي نو سمندر به ختم شي خو زمِا درب کلما ت به ختم نه شي،،

ددې روايت نه معلوميږي چه دا واقعه په مکه مکرمه کښې شوی ده ، او ددې تانيد ددې نه کېږي چه د اآيت دسوره بني اسرائيل دې ، او په مکه مکرمه کښې پازل شوی دې ، (۱

یږی په دایت دسوره بهی سرسیان دی ، رپه کات کرد کی کرد کازل شوی وی، حافظ ابن کثیر کلی و مانی چه درې داجواب کیدلې شی چه د ا آیت مکرر نازل شوی وی، یوځل په مندینه منوره کښی او یوځل په مکه مکرمه کښی، (۲) مګر د حافظ ابن القیم د رانی مطابق د اواقعه هم په مدینه منوره کښی شوی ده، ځنګه چه دصحیح بخاری روایت ناطق دی، هغوی فرمانی که چرې د اواقعه په مکده مکرمه کښی شوی وی ، او حضور مبارك له ددې متعلق علم ورکړې شوې وو ، نو هغوی بددیهودیانو په سوال باندې خاموشی ولی اختیاروله دی جه تراوله ۲۰ بلکه فور ا به هغوی جواب ورکړې و و ، ستاسو خاموشی اختیارول دی خبرې دلیل دی چه تر اوسه پورې ددې متعلق هغوی ته علم نه وو و رکړې سوی، (۲) لیکن حقیقت دادې چه په مکیة النزول کیدو باندې دلالت کونکی د ټو لو روایتو رد ممکن نه دې، خکه چه داروایات کم از کم حسن ضرور دې، بلکه حافظ ابن حجر

مريد فرمائي چد،، رجاله رجال مسلم،، (أ)

پاتى شو دا آبن القيم اعتراض نوداهغى جواب حافظ ابن كثير كين كو و كړى دى چه كله دنبى الله م تلقي م كله دنبى الله منظار كنبى منظي نه بد مدينه منوره كنبى دوباره سوال اوشو نو هغوى دمزيد بيان په انتظار كنبى خامو شه شنو چه شايد ددې متعلق څه تفصيلى بيان راشى، ليكن د الله تعالى دطرفنه فرستى دا اوئيل چه تاسو هم دا آيت اولولى : (ق) اويا دې دصحيح بخارى روايت له ترجيح وركړى شى، چنانچه حافظ ابن حجر سخار فرمانى كه چرې دا جمع ممكن وى نو فيها والافعاق الصحيح اصح ... ز) والله اعلم

خلاصه د کلام: بهرحال خلاصه داشوه چه د صحیحینو دروایت نه خو دامعلومیوي چه داواقعه به کلام: بهرحال خلاصه داشوه چه د صحیحینو دروایت نه خوم چه په مسند احمد داواقعه په مدینه منوره کښي شوې ده او ابن عباس تلگه دروایت نه کوم کده، او دا آیت مکیة الزول دي، اوس به یا خو د ترجیح طریقه اختیارولي شي، لکه څنګه چه حافظ ابن القیم گریکا داطریقه اختیار کړې ده، اویابه دا جمع کولي شي اود تعدد نزول قول به اختیارولي شي، حافظ ابن القیم گریکا دام خیره هه کولي شي دابن عباس تلگه

 ⁾ اوګورئ الجامع لا حکا م القران للقر طبی ج ۱۰ص۲۰۳. تفسیر سورة بنی اسرائیل)_

⁾ اوگورئ تفسير ابن كثير ج ٣ص ٤٠). سورة الا سراء. ويسئلو نك عن الروح)_

⁾ أوكورئ كتا ب الروح لابن القيم ص٣۶۶)_

[،] ر توری - به تاری خین از از مین) . ۲) فتح الباری ج ۸ص ۲۰۱ ، کتاب التفسیر، باب : ویسئلونک عن الروح)_ در در در در از در التفسیر، این در در التفادی عن الروح)_

م او تحوری تفسیر ابن کثیر ج ۳ص ۴۰ _

⁾ فتح الباری ج ۸ص ^{٤٠١} _

روایات دیر مضطرب دی (۱ اوس یا خوبه داونیلی شنی چه ددوی دا شاگردانو بیانات مختلف اومتعدد دی. گویا مختلف اومتعدد دی. گویا مطلب داشو چه چنیله ددوی اقوال مختلف اومتعدد دی. گویا مطلب داشو چه چونکه دحضرت ابن عباس گاگا په بیاناتو کښی اختلاف دی لهذا ددی په مقابله کښی به دحضرت عبدالله ابن مسعود گاگاروایت ،کم چه په صحیحنو کښی دی، راجح وی والعلم عندالله سیمانه وتعالی

دروح متعلق يو څو مباحث بعث اول دلته کښې ډومبې بحث دادې چه يهوديانو دکم ۲. روح . متعلق سوال کړې وو دهغې نه څه مراد دې ؟ په دې کښې اختلاف دې .

© د ټولونه مشهور قول دادې چه د . . روح حيّات . . متعلق سوال شوی وو ، امام فخرالدين رازی . قاضی ابوبکر بن العربی رحمهاالله هم داقول اختيار کړې دې ، علامه خطابی اوعلامه کرمانی رحمهاالله داکثروعلماؤ نه دانقل کړی دی ،

ر خنی د چهدد ، ، روح انسانی ، ، متعلق سوال شوی وو ، په ، ، روح حیات . . او ، ، روح انسانی ، ، کښې فرق واضح دې . ، روح حیات . ، عام دې ددې نه مراد دهر ژوندی مخلوق روح دې ، برابره ده چه هغه دانسان روح وی او که دڅه بل مخلوق روح وی . اوروح انسانی خاص دې ددې نه مراد صرف دانسان روح دې . ځنی حضرات وائي چه دحضرت جبرانیل علیه السلام روح مراددې ، ۞ خنی حضرات وائی چه دحضرت عیسی علیه السلام

وسی کو کنی حضرات وانی چه ددې نه مراد قرآن شریف دې، ﴿ ځنو ترې نه، وحی، مراد ﴿ خنی حضرات وانی چه ددې نه مراد یوه مخصوصه فرشته ده چه دقیامت په ورځ به په صف کښې یواخې ولاړه وې، ﴿ یوقول دادې چه ددې نه مراد یوه مخصوصه فرشته ده . دهغې به یوولس زره وزرې او مخونه و ی ، ﴿ یوقول دادې چه ددې نه مراد یوه فرشته ده چه دهغې به اویاز ره ژبې وی اودیوقول مطابق اویا زره مخونه به نی وی، په هر منځ به نی اویا زره ژبې وی، اودهرې ژبې به زر لغته وی، هغه فرشته به د الله تعالی تسبیح کوی اودهرې تسبیح نه به یو ه فرشته پیدا کیږي، چه هغه به نوروفرشتو سره آلوځی . هم دغه شان یو قول دادې چه یوه فرشته ده چه دهغې دواړه خپې به په آخرې زمکه کښې وی اوسر به نې عرش سره لکی،

 ق یو قول دادې چه دروح نه مراد دبنیادمانو په شان یومخلوق مراد دې چه هغې ته.، روح ووئیلي شي، دامخلوق خوراك څكاك كوې، د آسمان نه چه كله هم فرشته راكوځیګي، نو داروح هم ورسره لاتدې راځي،

پې پوټول دادې چه ددينه دملانکو يو خاص صنف مراد دي. چه خوراك ځكاك كوى . دلته كښې دې دا خبره واضحه وى چه دروح متعلق چه څومره هم اقوال نقل شو . نو دا په هغه صورت كښې دې چه په قرآن كريم كښې وارد شوى . ، روح . ، دتتبع ،تلاش په معنى كښې

⁾ كتاب الروح لابن القيم ص٣۶۶)_

شى، خصوصا په «وَيُسْتَلُونَكَ عَنِ الرُّوْجِ *» والاآيت كښې چه كم روح راغلى دې دهغې په باره كښې دا اقوال نه دى « ، په دې اقوالو كښې د ټولو نه مشهور قول دومبى قول دې. اود اكثرو علماز هم دارانې ده چه دحضور اكرم ناتل نه د روح دحقيقت په باره كښې سوال شوى وو.

دهافظ ابن القيم گيتا و ائي : حافظ ابن القيم گيتا فرماني چه په آيت کښې دروح نه روح دهافظ ابن القيم گيتا و ائي : حافظ ابن القيم گيتا فرماني چه په آيت کښې دروح نه روح ده وخه ددوې نه درو خه نه د و د د چه دروح نه مراد يو ه لونې فرشته ده چه دهغې په باره کښې الله تعالى خبر ورکړې دې چه هغه به دقيامت په ورخ نورو فرشتو سره ولاړه وي، د بنيادمانو ارواح ترينه مراد نه دى، ددې وجه داده چه يهوديانو کم سوال کړې و د دهغې مبنى داوه چه هغوى دداسې څيز په باره کښې تپوس کول غوښتل چه دهغې علم د و حې الهي نه بغير ممکن نه وو ، اوهغه هم هغه روح دې چه دهغې نه صرف الله تعالى واقف دى، حلانکه د بنيادمانو روحونه څه د عيب څيز نه دې، اومختلف خلقو اومختلفو مذهبونو والا په دې بان پدې بان پې کلام کړې دې، لهذا د بنيادمانو دارواحومتعلق جواب ورکول د نبوت

دىنبونەنەدە.(') حاصل داچەدابن القيم كَشْلا پەنيىز دلتىد ، ،روح ، ،نەمرادىيو فرشتەدد. چەدھغى ذكر الله تِعالى پەر،<u>يۇمَرْقُۇمُرالرُوْمُ وَالْمَالْمِ</u>كُةُ صَفَّا الْمَسَنَدِينِينَ إِلَى إِلْهِمْ الْمَالْمُوْمُ الْمَالِدُوْنِ رَبِيْمُ اللهِمُ اللهِمُ

کښې کړې دې . (⁸) د دانم باندې تبصوه : دحافظ ابن القيم پښځ خبره په ظاهره باندې ډيره د دافظ ابن القيم پښځ خبره په ظاهره باندې ډيره مضبوطه ده ، بياهم على الاطلاق ددينه انکارکول چه دروح نه مراد ، ، روح حيات ، يا روح انسانې نه دې ، مشکل دى ، آخر په دې کښې څه د تعجب خبره ده چه که فلاسفه ، حکماؤ ، اومختلفو ډلو او اهل مذهبو دروح متعلق کلام کړې دې نوکه ديونبې نه داسوال اوشي نوڅه په اوکسل اوپه کمان باندې مبني وي ، اونبي چه کمه خبره کړې دهغه ثابته اوواضحه او مستحکم وي لهذا عين ممکن دې چه سوال دروح انساني يا دروح حيات متعلق وي، او ددې نوعيت څه دې ؟ چنانچه د بعضو داروح په بدن انسانې کښې څنګه ځانې شوي دې ؛ اوددې نوعيت څه دې ؟ چنانچه د بعضو اهل نظرو دارانې ده چه امتزاج الروح پالبدن په باره کښې سوال دو (⁸)

دونه بحث: دونه بحث دادې چه نبي اکړم نظم ته ددې سوال جواب ورکړې شوې وواو که نه ؟ نويو جماعت واني چه حضورا کړم نظم ته دروح حقيقت نه ووبيان شوې، چنانچه ابن بطال پينځ دمهلې پښتو نه نقل کړي دي

 ⁾ اوګورئ فتح الباری ج ۸ص ۴۰۲) _

⁾ او گوری کتاب الروح ص۳۶۳. ۳۶۴<u>)_</u>

[&]quot;) سورة النباء\٣٨)_

⁾ سورة القدر \£)_

^{(م}) کتاب الروح ص۳)__

⁾ اوګورئ فتح الباری ج ۸ص٤٠٠)_

. . هذا يدل حل ان من العلم اشياء لم يطلح الله عليها لبياً. ولا خيره ، ارادالله تعالى ان يختبر خلاة فيوقفهم على العجز عن علم ما لا يدركون حتى يخطرهم الى دد العلم اليه ، الا تسمع قوله تعالى «(ولا يُحِيطُونَ بَعَى وَمِنْ عِلْمِهَ إِلَا بِمَا شَاءً *)، فعلم الروح مبالم يشاء تعالى ان يطلع عليه احد من خلقه . ، ،

. يعنى حضور نبى اكرم تخام جد دالله حبيب او دمخلوق سرداردې. دهغوى مقام اومرتبه ددې خبرې نه ډيره اوچته ده چه هغوى. .روح . او نه پيژنى،او دا كيدي هم شى، اوالله تعالى په خپل ارشاد سره لوئ احسان ظاهر كړو . اوالله تعالى هغوى له د داسى داسى كارونو علم وركړو چه دهغى علم ددينه مخكنبي هغوى ته نه وو . او په هغوى باننړى دالله تعالى لوئ فضل دې . . اكثر علماء وائى چه آيت كنبى د دې خبرې هيڅ دليل نشته چه د روح علم نه شى كيدې اوند د دې خبرې څه دليل شته چه حضور اكرم تخام نه دوو علم نه وو وركړې شوى .. دامام ابوالقاسم سهيلى گينځ رجحان هم دې طرف ته دې. ۲٦

اسام ابوالمانسم شهیدی هید راجامان هم دې طرف نه دې. ۱ **دریم بحث** : دلته دریم بحث دادې چه هغوی دیهودیانودسوال جواب ورکړو اوکه نه؟ په دې. نشم راختلاف دی :

- بى خنى حضرات وانى چە يهرديانو على وجە التعنت سوال كړې وو . تحقيق نى مقصود نەوو بلكە د حضوراكرم ﷺ تنگول نى مقصد وو . خكە تاسوجواب ورنكرو . . ")

خنی حضرات وانی چه تاسوجواب ورکړو، په داسې تو ګه چه الله تعالی هغوی ته اوونيل «قلل الزّوْمُون اَلْمِرَدِّيْ)) يعنی تاسو اووای چه، روح ، زمادرب حکم دی، اود ، امر ، ، نه مرادشريعت دې، مطلب دادې چه د هغه امر د جنس نه ده د څه د پاره چه تاسو مبعوث کړې شوی وې، يعنی

^{ً)} اوګورئ شرح ابن بطال ج ۱ص ۲۰۴) _

⁾ عمدة القارى ج ٢ص ٢٠١)...

⁾ اوګورئ الروض الانف ج ۱ص۱۹۷)-

اً) اوګورئ الروض الانف ج ۱ص۱۹۷)-

پودینی اوشرعی څیزدې چه دهغې حقیقت دطبعیت، فلسفه،قیاس اورائې نه معلومول ممکن نه دی بلکه ددین په ذریعه په دهغې حقیقت معلومه ولې شی، تاسوپه دین کښې داخل شئ،نوتاسوته به پخپله ددې حقیقت معلوم شی ، ۱ نودقرآن اوحدیث نه معلومیږي چه، ، روح، ، قبض کولې شی، اوعذاب ورته ورکولې شی اوهغه ته در دهم رسی، جنت ته هم لیگلی شی اوهلته به خونداومزې اخلی، او دغه شان نورهم

ډير اوصاف په نصوصوکېنې واردشوی دی، (۱) ددې نه دا معلومه شوه چې روح يو سپک جسم دې، حضرات علما ، محققين فرمانی چې روح هغه سپک جسم دې چې د انسان په بدن کښې داسې خور شوې دې لکه څنګه چې د ګلاب اوبه په ګلاب کښې خورې شوې وي او دهغې خوشبو په هغې کښې خوروشوې وي (۱)

د الله يور بعث دلته يوربحث صمنى شانتى دې چې الله تعالى فرمانى تُلْيالزُومُ مِينَ اَمْدِرَقَى دلته د امر زوردې قران كريم د الله تعالى د پاره د امر سره سره خلق هم ثابت كړې دې ارشاد دې په يوادا و مانوم د .

روه معلى ورطور ۲٪ خلق او امر كنبي څه فرق دې؟ لنډه دا اوګنړه چې دې كنبي اختلاف دې ابن ابي حاته كينه د سفيان بن عييند كينه كنه نقل كړې دى الغلق ما دون العرش والامرما فوق ذلك (أ)

دغه شان ابن ابي حاتم د سفيان بن عيينه نه نقل کړې دې الخلق هوالخلق والامرهوالکلام زن په دې دواړو تفسيرونو کښې لفظي فرق دې معنې د دواړو يوه ده،مطلب دادې چې د امر تعلق د بره عرش سره دې د الله تعالى د طرف نه حکم رازي،او د خلق تعلق لاتدې سره دې، لاتدې ټول صرف مخلوقات دى.

امام غز الى يَعْتَلَتُ فرمائى قالاجسام ذوات الكبية والبقادير من عالم الخلق وكل موجود منزة عن الكبية والبقدار فانه من عالم الامزر ً

يعني د عالم خلق تعلق د هغې جسمونو سره دې چې کميت او مقدار والادي او عالم امر تعلق هغه موجوداتو سره دې چې د کميت او مقدار نه خالي وي

معه موجود تو سرده ې چې د صفيف او سامه او سامه د د پې په واسطه سره پيدا شوې دې لهذا شيخ عربي محي الدين فرمائي چې عالم خلق هغه د ي چې په واسطه سره پيدا شوې دې لهذا څوک چې انه تعالى لفظ کن سره پيدا کړل هغه د عالم امر څيز دې او کوم څيز چې بل خيز نه پيدا شوې دې هغه د عالم خلق څيز دې ۴۰

⁾ پورتنئ حواله) -۲.

⁾ پورتنئ حواله)_) النفسير الكبير للرازى(٢١/٤٤) وكتاب الروح لابن القيم(ص٤٢٢)-

العراف4/4-

⁾ الاغراف1/20-*) الدر المنثور(٩٢/٢) سورة اعراف-

⁾ حواله بالا

⁾ احياء علوم الدين(١٣٥٤)كتاب ذم الغرور-

م الفتوحات المكية (١٧٥/٣) السوال الثالث والخمسون ومائة)-

حضرت تهانوي ﷺ د صوفياؤ حضراتو نه نقل کړې دی چې د عالم امر تعلق مجرداتو سره دې،دې نه دا مطلب اووتلو چې عالم خلق د مادياتو نه دې()

علَّامد شبير احمد عشَمَاني مُنكِّ فرماني حِي لفظ آمر يه قرآنكنيي شل خاينو كنس راغلي دې او ددې په معنی کښې علماو ډيرې خبرې کړې دی خو زمونږ مطلب د سورة اعراف ددې آيت الاله الغلق والامر طرف ته توجه راړول دی چې کوم ځانې امر د علق په مقابله کښې ايښودې دې چې د هغې نه مونړ په دې نتيجه رسيدلې يو چې د الله تعالى په نيز دوه مدونه جدا جدا دي يو امر بل علق

په دواړو کښې څه فرق دې؟: دا مونږ د مخکښې آيتونو نه په آسانئ سره پيژنو،اول ئي اوفرمانيل اِنَّ رَبَّكُمُ اللهُ الَّذِي عَلَقَ النَّامُوتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ الَّامِ ()

ربي شکه ستاسو رب الله دې چا چې آسمانونه او زمکې په شپږ ورځو کښې پيدا کړل، دا خو خلق شو په مينځ کښې د استواء على العرش ذكر كولو سره چې، شان حكمراني ظاهره وي ونى فرمائيل چى كَغُثِى الْيُلَ النَّهَارَيَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالقَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنَّجُوْمَ مُسَخَّرت بِأَمْرِهِ * ``(`` يَعنى دا مخلُّوقات به يو معين نظام باندي چلول چي هغي ته تدبير او تُصُريف وٺيلي شي دا

امر شو.

دغه شان به سوره طلاق كنبى ارشاد دى الله الذي عَلَق سَبْعَ سَمُوْتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَ "يَتَغَلُّ الأمرُ

ګویا د دنیا مثال د یو غټې کارخانې دې چې په هغې کښې مختلف قسم مشینونه لږیدلې وي، څوک کپړا جوړه وی څوک اوړه آغړی څوک کتابونه چلماپ کوی څوک په ښارونو کښې رنرا رسوي څوک پکي چلوي وغيره

پُدهر يو مشين کښې ډيرې پورزې دی چې د مشين غرض وغايت لحاظ کولو سره يو مقرره اندازه باندې لګولې شي بيا ټولې پرزې راجمع کولو سره مشين فټ کړي شي. چې کله ټول مشينونه فت شي او تيار شي بيا د اليكترك بجلي، خزاني نه هر مشين تمجد آجد آلارو سره کرنټ پريښودلې شي. په يو وخت کښې ولاړ مشينونه د خپل جوړخت مطابق په تاويدو او کار کولو کښي لګيا شي، بجلي هر يو مشين او هر يو پرزې لره په يو خاص ساخت او مقصد مطابق تاوه وئي، تر دې چې کومه لږه او ډيره بجلي د رنړا په ليمپونو او قمقمو کښي رسولي شي نو هلته رسيدلو سره هم د دغي قمقمو رنګ دهنګ اختياره وي ددې مثال نه دا خبره ښکاره کيږي چې د مشين دهانچه تيارول ددې پرزو ته صحيح ترتيب

") مسائل السلوك على هامش بيان القران تحت آية "الا له الخلق والامر")-

^{ً)} الاعراف/۵۴-

^{ً)} حواله بالا

ا) الطلاق/۱۲–

ورکول او بيا فټ کول د يو سلسلې کار دې چې د هغې د پوره کولو نه پس د مشين چالو کولو د پاره د يو بل څيز ،بجلی يا اسټېم(لوګي) د هغې د خزانې نه د راوړلو ضرورت وی. داسې اوګنړه الله تعالى ړومېې د آسمان او زمکې ټول مشينونه پيدا کړل چې هغې ته خلق ونيلې شَي. هره وړه غټه پورزه يې د صحيح اندازې مطابق تياره کړه چې هغې ته تقدير وليلې شوې دې او ټولې پرزې نې يوځانې کړې او مشين نې فټ کړو چې هغې ته تصور يا تسويه

ونيلي شي خلقنكم ثم صوردكم (١٠) و فاذا سويته ركادا ټول د افعال خلق په زمره كښي وو.

اوس ضرورت وو چې کوم مشين په کوم کار کښې لګول وو نو اودې لګولې شي، د مشين د چالو کولو د پاره د آمر الهي بجلي پريښودې شوه او کيدې شي ددې تعلق اسم باري سره وي الخالقالهاري البصور ﴿ ﴾ أو حديث كبني دي فلق الحبة وبرا النسبة ﴿ ﴾

سوره حدید کښی دی من قبل ان دبراها رئای النفوس کها هومروی من این مهاس وقتاد والحسن () مطلب د هغه ځالتې نه حکم اوشو چې ځا نو فورا روان شو ،او دې امر الهي ته نې اوفرمانيل إِثْمَاآمُرُةً إِذَآ آرَادَ شَيْعًا أَن يَقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ۞ ٢٠ بل خانى كښى ډير په وضاحت سره امر كن خلق جسد باندې مرتب کولو سره ارشاد اوشو ·خَلْقَهُ مِنْ تُرَابٍ نُمَّوقًالَ لَهُكُنْ فَيَكُونُ۞ ·^،بلکه د تلاش نه ښکاريږي چې په قرآن کريم کښې کن فيکون چې څومره ځايونو کښې راغلې دې عموما د خلق او ابداع ذكر كولو نه پس راغلي دي چې د هغې نه دا خيال كيږي چې كلمه كن خطاب د خلق ندپس د تدبير او تصرف وغيره د پاره وي

بهرحال د آمر معنى دلته د حكم ده او هغه حكم دغه دې چې كوم لفظ كن سره تعبير كړې شوې دې او لفظ کن جنس کلام نه چې د الله تعالى صفت قديم دې څنګه چې مونږ د هغه ټول صفات مثلا حيات،سمع،بصر،وغيره بلا کيف منو نو کلام الله او کلمة الله متعلق هم دغه مسلک منل یکار دی.

خلاصه دا شوه چې دروح سره په قرآن کښې اکثر ځايونو کښې د امر لفظ استعمال شوې دې مثلا قُلِ الرُّوْمُ مِنْ أَمُودَيِّنَ نَ

^{ً)} الاعراف/١١-

⁾ ص/٧٢-

ا) الحشر / ٢٤ -

⁾ صعيح البخاري (٢٨/١) كتاب الجهاد والسير باب فكاك الاسير رقم(٣٠٤٧) من قول سيدنا على لكانت

⁾ الحديد/٢٢ –) انظر الدر المنثور (۱۷۶/۶و۱۷۷)-

۱) یس/۸۲–

^م) ال عمران/٥٩-

^{&#}x27;) بنی اسرائیل/۸۵-

ا و وَكُذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا لَلِكَ رُوحًا مِنْ أَمُونًا * ن او كُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِةٍ عَلَى مَنْ يَشَاءً مِنْ عِبَادِج ن او : يُنَزِّلُ المَلْكَةُ

بِالرَّوْجِ مِنْ أَمْرِةٍ عَلَى مَنْ يَشَاءُمِنْ عِبَادِةٍ "

او مخکښې تير شوې دی چې د روح مېدا د الله تعالى صفت قديمه کلام دې چې د صفت _{علم} وحيات لاندي دي، محويا هم دغه حيثيت لحاظ ساتلو سره انعت فيه من روحي كښي خپل خان طرف ته منسوب کړې دې ځکه چې د کلام او امر نسبت د متکلم او آمر نه د صادر او مصدور وی د مخلوق او د خالق نه وی ځکه الاله الخلق والامر کښې ئې امر د خلق مقابله کښې اولګولورځ والله اعلم

قوله: قــال الاعمش :هكذا في قراءتنـاً: امام اعمش يُؤيني فرماني چي زمونږ قراءت

مطلبُ دادې چې دې آيت کښې متواتر او مشهور قراءت ·وَمَٱلْوَيْنُتُمْ مِنَ الْعِلْمِ الَّاقَلِيْلَاه ·دي خو د امام اعمش ميني قراءت ومااوتوا د صيغه غائب سره دي

شارحينو ښكاره كړې ده چې دا قراءت نه د قراءات سبعو نه دې او نه څه مشهور قراءت دې (⁶)والله اعلم بالصواب

٨٠: باب: مَنُ تَرُكَ بَعْضَ الإخْتِيارِ هَنَافَةً أَنُ يَقْصُرُ فَهُمُ بَعُضِ النَّاسِ عَنْهُ فَيَقَعُوا فِي أَشَدَّمِنْهُ

په دې ترجمه كښې د الاختيار نه المختار يعني الشئ المختاريا فعل المختار مراد دې، مطلب د ترجمة البأب دادي

مطنب د ترجمه بېب د دې. دا باب د هغه کس په بیان کښې دې چې خپل بعضې مستحب عمل یا قول ددې وجه پریږدی. چې د بعضې خلقو څ قل کم وی نو په دې عمل یا خبره به پوه نه شی بیا به د دې نه په سخته

خبره سبي وسدي. مخکښې باب سوه مناسبت: د دې باب مخکښې باب سره مناسبت دا شان دې چې مخکښې باب کښې د سوال کونکی د سوال جواب د څه چکمت د وجه ورنه کړې شو، دلته هم د بعضې اعمال مختاره او مستحبه د پریښودلو ذکر دی (۷

۱) الشوري/۵۲_

^{ً)} المومن/١٥ –

⁾ التحل/٢-

⁾ الزوح في القران (ص١٠٨-١١١) مطبوعه در ضمن مجموعه "اتاليفات عثماني"')_) فتح الباري (۲۲۴/۱) وعمدة القاري (۲۰۲/۲)_

⁾ عمدة القارى(٢٠٢/٢)-

^{ً)} حواله بالا

د ترجمة الباب مقصد: د امام بخاری مقصد دادې که چرې يو مستحب عمل کولو د وجه د خلقو په غلط فهمئ کښې د غورزيدلو ويره وي نو دا مستحب پريښودل پکار دي.ځکه د مستحب پريښودلو سره به زيات نه زيات دا اوشي چې اجروثواب به نه ملاويکي. او دخلقو په مسئله کښې غورزيدل ډيره ګرانه ده چې څه عملي يا علمي غلطئ کښې مبتلا شي او دا غلطی به راروانه وی،چنانچه د نبی کریم کا اراده وه چی د ابراهیم ایم په شان د کعبی جوړنه اوکړي خو ددې ويرې ئې پريښوده چې قريش به وائي چې زمونږ څيزونه ورانه وي او خپل څيز ترې جوړه وي

د ترجمة الباب مقصد: باندي يو اشكال او د هغي جواب دلته يو سوال دا پيدا كيري چې ددې ترجمة الباب تعلق خوكتاب العلم سره او ئه شو ځكه دې كښي خود اعمالو د پريښودلو ذكردې ددې جواب دادې چې تعليم څنګه تولي وي دغه شان فعلي هم وي،استاذان عالمان د خلقو هر قسم اصلاح کوي، څنګه چې د هغوي علمونو ته ترقي ورکوي دغه شان د هغوي اعمال هم برآبره وي،لهذا كه د اعمالو د صحيح كولو ضرورت راشي او اصلاح په عملي صورت كښې د اختيارولو تقاضا كوي او خطره دا وي چې د بعضي اعمال اختيارولو سره موجوده خلق په غلطئ كبني غورزيدلي شي نواصلاح كونكوله پكاردي چي هغه داسي مستحب عمل بريږدي خلاصه دا آشوه چې کله تعليم قولي وي او کله عملي،که عملي تعليم کښې په يو خاص مسئله کښې دا خطره وې چې خلق به غلط فهمئ کښې مبتلا شي.نو دا کول نه دی پکار بلکه پریښودل پکار دی (۱)

د بعضي علماؤ د کلام نه دا معلوميږي چې دلته من ترګ بعض الاختيار کښې اقوالو او افعال

دواره داخل دي.

در د ما د ا شو چې بعضې افعال ددې خطرې د وجه پريښودلې شي چې څوک په غلط فهمي کښې راګير نه شي، او بعضې اقوال ددې وجه بيان نه کړې شي چې اوريدونکې به په غلط فهمي کښې اوغورزيګي، دواړه پريښودلې شي، مختار او خوښ چې څنګه افعال وي

دغه شان اقوال هم وي

بعضي علموند داسي وي چې د عوامو په مخکښې د بيانولو نه وي که بيان کړې شي نو عوام به غلط فهمئ كښې اوغورزيكى،نو هلته دې چپوالې اوشي. (^)

[١٢٤] حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِمْرَابِيلَ عَنْ أَبِي إِمْحَاقَ عَنِ الأَمْوَدِ قَالَ قَالَ لِي ابْنُ الزُّيْنِرِكَ انْتُ عَائِمَةُ ثُورً اللَّهُ كَثِيرًا فَمَا حَدَّثَنَّكَ فِي الْكَعْبَةَ فَلْتُ قَالَتْ لِي قَالَ النَّبِي صلى الله عليه وسلَّم- « يَاعَائِكَهُ، لَوْلاَ قَوْمُكِ حَدِيثٌ عَهْدُهُمْ- قَالَ ابْنُ الزُّيُّكِ بِكُفْرٍ - لَنَقَفْتُ الْكَعْبَةَ فَجَعَلْتُ لَمَا بَابِيْنِ بَابَّ يَمْخُلُ النَّاسُ، وَيَابٌ يَخْرُجُونَ ». فَقَعَلَهُ الْمِنُ الزُّبَيُّرِ _ [۱۵۰۶ ـ ۱۵۰۹، ۲۱۸۸، ۴۲۱۴، ۴۸۱۶]

⁾ الكنز المتوارى على لامع الدراري(٣٨٣/٢)-

^{ً)} حواله بالا

رجال الحديث

ن عبيدالله بن موسى: دا عبيدالله بن موسى بن باذام عبسى كوفى الله دوى ددوى حالات د

كتاب الايمان باب الايمان واول النبي رص : بنى الاسلام على حسس لاندى تير شوى دى (' ،

اسرائیل دا مشهور محدث اسرائیل بن یونس بن ابی اسحاق همدانی سبیعی کونی رئید دی دده کنیت ابویوسف دی دوی د عیسی بن یونس رور دی (*)

دوی د خپل نیکه ابواسحاق سبیعی نه علاوه زیاد بن علاقه، زیدبن جبیر، عاصم بن بهدله، عاصم الاحول، سماک بن حرب، امام اعمش، عثمان بن ابی زرعه، مجزاة بن زاهراسلمی،

موسی بن ابی عائشه او هشام بن عروه هنیخ وغیره نه د حدیث روایت کوی دده به ابوداود دد نه روایت کوی دده خونی مهدی، ابوداود طیالت کوی نضربن شمیل، ابوداود طیالسی، ابوالولید طیالسی، عبدالرزاق صنعانی، وکیع، یحیی بن آدم، محمد بن اسحاق، ابوغسان نهدی، ابونعیم او علی بن الجعد هنیخ وغیره ډیر حضرات شامل دی ک

عيسى بن يونس كولية فرمائى چى ماته إسرائيل بيان اوكرو كنت احفظ حديث إلى اسحاق كما احفظ السودة من القران ()

امام احمد كولي بدده به حافظه حيرانه كيدلو او فرمائيل بدئي كان شيخنا لقة رئ

يحيى ابن معين فرمائي ثقة را

امام عجلي يُونين فرماني كو**ن ثقة** ئ

ابوحاتم مُولِيد فرمائي ثقة صدوق من اتقن اصحاب إلى اسحاق ﴿

ابن سعد مولي فرمائي وكان تقة حدث عنه الناس كثيرا ومنهم من يستضعفه

امام احمد مُرَّتُكُ نه ابوطالب تبوس اوكړو ايهما اثبت:شريك او اسمائيل؟ نو وني فرمانيل اسمائيل كان يودى ما سمة كان اثبت من شريك بيا هغوى تبوس اوكړو من احب اليك: يونس او اسمائيل في اي

۱) کشف الباری (۶۳۶/۱)-

^{ً)} تهذيب الكمال(٥١٥/٢) رقم(٤٠٢)-

⁾ تهذيب الكمال(٥١٥/٢)-

^{ً)} تهذيب الكمال(٥١٩/٢)-

^ن) حواله بالا

م) تهذيب الكمال(٥٢١/٢)-

۲) حواله بالا

م) تهذيب الكمال(٥٢١/٢)-

^{°)} الطبقات(۲/۲/۲)-

اسحاق؟ نو وئى فرمائيل اسمائيل : الانه كان صاحب كتاب ن

هر کله کچې د آمام احمد *گوشته* نه تپوس او کړې شو که چرې اسرائيل يو حديث کښي متفرد وي که نه کښو فره او او السائل او او العدو هنځ

نو حجت دې که نه؟ نو وني فرمائيل اسمائيل ثبت الحديث () منه نور نور الم

عیسی بن یونس کوش فرماتی چی زموند ملکری سفیان او شریک په مینخ کنبی چی کله به د ابواسحاق سبیعی کشته د احادیثو باره کنبی اختلاف رالو نو خما والد یونس بن ابی اسحاق طرف ته به راغلو، هغه به وئیل چی خما خوی اسرائیل ته لا شی فهوادوی منه منی اتقن لها منی کام امونیلی شد و حدثناحدیث ای اسحاق قال: سلومنها اسمائیل فائه

اثبت نيه منی ()

وحفُ السَّارِي

امام عبدالرحمن بن مهدي پينځ فرماني چې زه د ابواسحاق سبيعي حديثونه د سفيان په طريق سره ځکه نه روايت کوم چې ما دې رواياتو سلسله کښې د سفيان ثورې په ځاني په اسرائيل باندې بهروسه کړې ده ځکه چې اسرائيل دې رواياتو له پورا روايت کوي (۹)

امام عبدالرحمن بن مهديﷺ فرمائي چې اسمائيل في اين اسحاق اثبت من شعبة والثورى (٪) يعني اسرائيل د ابواسحاق په رواياتونو كښې د شعبه او ثوري رحمهمالله نه زيات قوي دې

محمد بن عبدالله بن نمير مُراثية فرماني ثقة رئ

امام ترمذي يُعليك فرماني اسمائيل ثبت فحديث الى اسحاق ()

دغه شان يعقوب بن شيبه ويله فرمائي صالح الحديث وفي حديثه لين ()

أن تهذيب الكمال(٥١٩/٢)-أن تهذيب الكمال(٥٢٠/٢)-أن الكامل(٤٢٢/١)-أن الكامل(٤٣٢/١)-أن الكامل(٤٣٣/١)-أن حواله بالا أن تهذيب التهذيب(٤٣٣/١)-أن تواله بالا

^{ً)} تهذیب التهذیب(۲۶۲/۱)-ٔ () حواله بالا

دغه شان هغوی فرمانی تقدّ صدوق ولیس فی الحدیث بالدّوی ولا بالسالط () الدّاری می کرد از این از این اللّه از در در می کرد از دری او درد

دغه شانّ ابنّ حزم پکتي اسرائيل ئې مطلقاً ضعيف ګرخولي دې او دده رواياتو کښې ئې ډير روايات رد کړې دی.(۲)

دغه شان على بن المديني فرمائي اسمائيل ضعيف ()

اسرائيل بن يونس گينگه به باره كبني چې دذكر شوې حضراتو په كلام كبني غور او كړې شي نو معلوميږي چې يا خو جرح مبهم ده څنگه چې د على بن المديني، يعقوب بن شببه يا د ابن حزم كلام دى، او ترڅو چې د يحيى القطان كينگ د كلام تعلق دې نو حافظ كينگ د هغې په باره كبنې تفصيل ذكر كړې دې چې هغې سره د اسرائيل لمن بالكل صفا كيږي چنانچه هغوى فرمائي: وقد بحثت عن ذلك فوجت الامام ابا بكرين اې خيشه قد كشف علة ذلك وابانها بها فيه الشقام لبن الصف قال ابن اي خيشه في تاريخه قبل ليحيى بن معين: ان اسمائيل دوى عن اي يحيم القتات ثلاثم اثه

وعن ابراهیم بن مهاجر ثلاثباتة یعنی مناکیر ققال لمیوت آل منها ()

مطلب دادې چې ما د امام يحيى القطار کيله د کلام وجه د پيدا کيدلو کوشش اوکړو. چنانچه ماته دا وجه د امام ابوبکر بن ابي خينه موکله د کلام به معلومه شوه ، هغوى چې کومه وجه بيان کړې ده د هغې نه هر انصاف خوښوونکې کس مطمئن کيدې شي، چنانچه هغوى فرماني چې امام يحيي ابن معين کيله چه چا اووئيل چې اسرائيل د ابويحيي القتات نه درې سوه او ابراهيم بن مهاجر نه درې سوه منکر احاديث نقل کړې دي، ابن معين جواب ورکړو چې دا خرابوالي د اسرائيل د وجه نه نه دې بلکه د ابراهيم بن مهاجر او ابويحيي القتات د وجه نه راغلي دي.

حافظ آبن حجر فرمائی: خبره حقیقت کښې هم دغه ده چې کومه ابن معین کیلیا فرمانی لهذا د ابن القطان کیلیا کیلیا د ابن القطان کیلیا کیلیا د ابن القطان کیلیا کیلیا

صفحه بين طبروهند م نورو مصفر مو د تصفيف باره حيثي بعضره دو لو سره ليسكي: "وبعد ثبوت ذلك واحتجاج الشيخين به لا يجهل من متاخر لا غبرة له بحقيقة من تقدمه ان يطلق على

اس اثيل الفعف ديرد الاحاديث الصحيحة التى يرويها دائما، لاستنادة الى كون القطان كان يحمل عليه من غير

۱) تهذیب التهذیب(۲۶۲/۱)-

^{ً)} تهذيب الكمال(٢٤٣/١)-

ς تهذيب الكمال (Δ۲۲/۲)-

¹) هدی الساری(ص ۳۹۰)-²) هدی الساری(ص ۳۹۰)-

إن يعرف وجه ذلك الحمل ن

مطلب دادې چې کله دجرح او تعديل علماؤ توثيقات مخبنې ته راغلل اود شيخينو د دوى نه احتجاج هم ثابت شو نو يو داسې متاخر سړې د پاره چې هغه ته د خپلو متقدمينو په باره کنې پوره علم نه وى نو هغوى باندې د هغوى کښې پوره علم نه وى نو هغوى باندې د هغوى صحيح روايات رد کول بالکل نا مناسبه ده. په دې سلسله کښې د ابن القطان د قول نه استناد هم فائده مند نه دې هرکله چې هغه د ابن القطان د قول صحيح محمل نه پيژني خافظ ذهبي هم ډير په زور دار انداز سره د هغوى دفاع کړې ده چنانچه ونې فرمائيل

امراتيل اعتبده البخارى ومسلم في الاصول وهوفي الثبت كلاسطوانة قلايلتفت ال تضميف من ضعفه ز) يعنى به اسرائيل باندې امام بخارى او امام مسلم يكو به اصولو كښي احتجاج كړى دى نه چې په متابعاتو او فروعو كښى . هغوى په ثقه او ثبت كيدلو كښى د اسطوانة رستنې ، په شان دې لهذا دوى ضعيف كنړلو و الاكلام ته بالكل توجه پكار نه ده

دغه شانه حافظ ابن حجر گند فرمائي ثقة تكلم نيه بلاحجة رك

وسماع اسمائيل من إلى اسحاق في عاية الاتقان للزومه ايا الانه جداد وكان عصيصابه رم

يعني د اسرائيل د ابواسحاق نه سماع ډيره مضبوطه ده ځکه چې هغه به هر وخت ابواسحاق سره وو ،او ځکه چې هغه د هغوي نيکه وو او هغه سره خاص کړې شوې وو .

ابن عدى د دوى يو خو روايات چې منكر به گڼړلې كيدل، د نقل كولو نه پس ليكى : دامهائيل بن يوس بن إلى اسحاق وغيرهم وقد حدث عنه بن يونس بن إلى اسحاق وغيرهم وقد حدث عنه الاهمة، دام يونس بن إلى اسحاق الدي قد مدت الاهمة، دام يتخلف احدى الدواية عنه وه نه الاهمة، دام يتخلف احدى الدوايات اكر چې د ابو استحاق نه وى يا د بل نه ، ټهيك دى. دده نه لوئي لوئي امامانو راويت كړې دې، چا د هغه د رواياتو نه انكار نه دې كړې ددا حديثونه چې كوم ما ذكر كړل دده د منگرترين رواياتو نه كنړلې شى خو حقيقت دادې چې دا هم احستلې شى

دغه شأن عفوى مخكبني فرمائى: وسائرما ذكرت من حديثه ومالم اذكرة كلها محتبلة وحديثه عامتها محتبلة وحديثه عامتها مستقيبة وهومن اطل الصدق والحفظ زأ

^{ً)} حواله بالا

^{ً)} ميزان الاعتدال(٢٠٩/١)-

^{ُ)} تقریب التهذیب(ص ۱۰۶) رقم(۲۰۱)-ُ) فتع الباری (۳۵۱/۱) کتاب الوضوء باب:اذا القی علی ظهر المصلی قذر او جیفة لم تفسد علیه صلاته)-

في الكامل(١/١٤٤)-

⁾ الكامل لابن عدى(٢۶/١)-

يعنی ددوی ټول احاديث کوم چه ما ذکر کړل يا مې نه دی ذکرکړی ټول د قبلولو قابل دی. ددوی اکثر احاديث صحيح دی، دې په صدق او حفظ سره د متصف رواتو ځينې دې.

دغه شان هغوى فرماني ولاسمائيل الحمار كثيرة غيرما ذكرته واضعافها عن الشيوخ الذاين يروى عنهم

وحديثه الغالب عليه الاستقامة وهومهن يكتب حديثه ويحتجهه

یعنی د اسرائیل چې کوم راویات ما ذکر کړل د دې نه علاوه ډیر اجادیث دی بلکه د دې نه څخ چنده زیات روایات هغه د خپل شیوخو نه نقل کوی،ددوی ډیر احادیث ټهیک دی او هغوی د هغه راویانو نه دې د چا احادیث چې لیکلې شی او د چا د روایاتو نه چې استدلال او احتجاج کیږي

اسرائيل بن يُونس مُنْ الله على المجرني كنبي بيدا شوي وو، او ١٤٠ه يا ١٤١ه يا ١٢٢ه كنبي

د هغوي انتقال اوشور^٢ رحمه الله تعالى رحمة واسعة

ابواسحاق دا مشهور تابعی ابواسحاق عمروبن عبدالله بن عبیدسبیعی کوفی کید دی.د دوی حالات د کتاب الایمان باب الصلوقامن الایمان د لاندی تیر شوی دی آ

والاسود:دا مشهور تابعی اسودبن یزیدبن قیس نخعی کوفی ای د دوی کنیت ابوعمرو یا ابوعبدالرحمان دیره

بوصرو یه بوعبد،ترحصان دې د دوی د عبدالرحمن بن یزید رور ، د علقمه بن قیس وراره او ابراهیم نخعی ماما دې دوی په عمر کښی د خپل ترهٔ نه زیات وو ، د⁶،

دوی د آبوبکرصدیق، حضرت عمر، حضرت علی، حضرت عبدالله بن مسعود، حضرت حذیفه، حضرت بلال، حضرت عائشه، حضرت ابومحذوره او حضرت ابوموسی اشعری الله وغیره نه د حدیثوروایت کړې دی،

د دوی نه روایت کوونکو کبیم دده ځوئې عبدالرحمن، رور عبدالرحمن بن یزید، وراره ابراهیم نخعی، عمارة بن عمیر، ابواسحاق سبیعی، ابوبرده بن ابی موسی، محارب بن وثار او اشعث بن ابی الشعثاء مید وغیره دی ()

حضرت عائشه دلائم فومانی ما بالعراق رجل اکرم علی من الاسود ژگیعنی کپه عراق کښی خما په نیز د اسود نه څوک زیات قابل د احترام نشته

^{ً)} حواله بالا

^{ً)} تهذيب الكمال(٢/٤/٢)-

^{ً)} كشف البارى(٣٧٠/٢)-

أ) تهذيب الكمال(٢٣٣/٣)-

د) تهذیب الاسماء واللغات(۱۲۲/۱) ث) تهذیب الکمال(۲۳۳/۳-۲۳۴)-

^{&#}x27;) طبقات ابن سعد(۷۳/۶)-

عمارة بن عميريکيگ فرمانی ماکانالاسودالاراههامنالوهبان () يعنی د اسود د عبادت گزارئ او د دنيا ندمخ اړولو دا حالت وو گويا چې هغه د دنيا پريښودونکو راهبانو نه وو

امام عجلي يُربين فرماني كوفي جاهلي، لقة، رجل صالح ن

یعنیٰ دې د کوفې دې. دجاهلیت زمانه نې کتلې ده، نقة او نیک سړې دې[.] ابراهیم نخع*ې پیمان* دوی لره د عبدالله بن مسعود تاشی هغه شاګردانو او ملګرو کښې شمیر کړې دې چاته چې د فتوی ورکولو اجازت وور^۲)

امام ابن حبان فرمائي كان تقيها (اهدار)

امام احمد ويلي فرماني تقة من اهل الخير المام يحيى ويلي فرماني ثقة (

امام نووى كينية ليكى قال احمدين حنهل: هوثقة من اهل الخيروا تفقوا على توثيقه وجلالته رئ

حافظ ذهبي يُمَثِيرُ فرماني وهونظير مسروق في الجلالة والعلم والثقة والسن يضرب لعبادتهما المثل (٢)

ابن سعد پکشی فرمانی وکا**ن لقة** وله احادیث صالحة ن^خ اسود بن یزید پ_{کشی} عابد ، زاهد او شپه رن_وونکې بزرګ وو ، ددوی د عبادت دا شان وو چې په

اسود بن يزيد تقته عابد، زاهد او شپه رنړونځي بزرت وو.ددوي د عبادت دا سان وو چې په رمضان کښې به په دوو شپو کښې او په غير رمضان کښې به په شپږو شپو کښې د قرآند ختم کولو عادت وو. او روزانه به نې او وه سوه رکعاته کول. ')

په دې هم خلقو وئيل چې اسود په خپل خاندان کښې د ټولو نه کم عبادت کوونکې ګڼلې شود '') او دغه وجد ده چې خلقو به وئيل آل الأسود اهل الجنة ر" يعني د اسود خاندان والاجنتيان دي د اسود بن يزيد دوفات په سلسله کښې د علماؤ نه ډيرې خبرې منقول دي خو بيا هم حافظ

ذهبي فرماني چې د ټولو نه راجح کار د ۷۵ه دې (۱^۲)رحمة الله تعالى رحمة واسعة.

') تعليقات تهذيب الكمال(٢٣٥/٣)-

ً) تهذيب التهذيب(٣٤٣/١)-

ً) حواله بالا

أ) الثقات لابن حبان(۲۱/٤)-

^د) تهذيب الكمال (٢٤ ٤/٣)-

م حواله بالا

۲) تهذیب الاسماء واللغات(۱۲۲/۱)-

٨ سير أعلام النبلاء (٥٠/٤)-

١) طبقات ابن سعد(٧٥/۶)-

) طبعات ابن سعد(۱۵۱/۶)-۱۰ سیر اعلام النبلاء(۵۱/۶)-

) شير (عدم التبددر ۱۲۲/۱) ") تهذيب الاسماء واللغات(۱۲۲/۱)-

۱٬۲) عمدة القارى(۲۰۲/۲)-

") سيراعلام النبلاء (٥٣/٤)-

@ابن الزبيو دا حضرت عبدلله بن الزبير بن العوام تلاق دي، ددوى حالات روستو باب الم من كنب مل النبي علام د لاندي تير شوي دي

وعائشه دا ام المومنين صديقة بنت صديق حضرت عائشه بنت ابوبكر الصديق الم ده.

ددوی حالات د پدهالوم. د دويم حديث لاندې مختصر راغلې دی. ``

قوله: قال:قال لي ابر زبير: كانت عائشة تسر اليك كثيرا فما حدثتك في

الکعیة؟:اسود فرمانی چی ابن زبیر ﷺ ماته اوفرمانیل چی حضرت عانشهﷺ متاته ډیر و راز خبری کولی،هغوی تاسو ته د کعبی په باره کښی څه اوفرمانیل؟

حُضُرتُ عَبدالله بن الربير د حضرت عائشه الله خوريي وو او هغوي سماع هم كړې وه بيا به اسود بن يزيد کيله به د حضرت عائشه الله علوم حاصولولو د پاره ډير هغوي طرف ته تلو راتلو، ځكه به نې هغه ته ډيرې خبرې د خلقو په غير موجود ګئ كښې كولې، او غالباً هم په دې

خصوصیت سره حضرتابن الزبیر اللي تسمالیك كثیرا: فرمائیلی دی

عبدالله بن زبير تاتو چې د اسو د کو که که بدوس او کړو نو دا د هغه و خت خبره ده چې کله عبدالله بن زبير د کعبي د نوې جوړيدلو آراده کړې وه، صورت دا شو چې يزيد بن معاويه د طرف نه د حصين بن نمير يو غې لښکر د عبدالله بن الزبير د ښکته کولو د پاره مکې طرف ته راروان شو، محرم ۲۴ هجرتي په آخره کښي مکې ته راورسيدو تقريبا ۲۴ اورځې نې محاصره او کړه د د هغې نه پس چې کله د يزيد مرگ واقع شو نو دا لښکر واپس لاړلو، د يزيد نه پس د هغه خوې معاويه بن يزيد خليفه شو، چې څلور مياشتي پس مې شو، پيا مروان حاکم جوړ شو لس مياشتي ژوندې وو هغه هم مړ شو، دهغې نه پس د هغه خوي عبدالملک بن مراون خليفه جوړ شو او هغه بيا په ټولو ښارونو رو رو قبضه او کړه او مکه مکرمي ته نې حجاج بن يوسف ثقفي اوليپلو، هغه عبدالله بن الزبير تاتي شهيد کړلو او دغه شان په بيت الله شريف او مکه مغطمه بايدې د عبدالملک قبضه اوشوله،

د اهل شام دې حملي دوران کښې هغوی د بیت الله شریف نه ګیرچاپیره په دیوالونو باندې منجنیق لګولو سره کانړی او اور اوورولو،چې د هغې نه کعبې تعمیر او غلاف ته نقصان اورسیدلو.

چې کله دحصين بن نمير محاصره ختمه شوه او عبدالله بن زبير ته لګ آرام ميلاؤ شو نو هغوى د کعبې د نوې جوړيدلو اراده اوکړله او دې سلسله کښې تې مشورې اوکړې بعضې خوددوى هم خيال وو خو د ډيرو حضراتو رائې وه چې بيت الله دې په خپل حال پريښودې شي. د حضرت ابن عباس گاله هم دا رائې وه او د دغه خلقو وينا وه چې د کوم عمارت د اطرافو نه حضوراکرم کاللم طواف اوکړو او چې په کومه د هغوى نظر پريوتلو نو په هغې کښې د تېديلي او نکړى شي،بلکه صحيح والي او مرمت دې اوکړې شي.

^{&#}x27;) كشف البارى(٢٩١/١)-

خلقو ته چې کله ویره اوشوه نو عبدالله بن زبیر په خپله لاس کښې کوداله واخستله او بره اوختلو او په خپل لاس ئې كانړى راغورزول شروع كړل،چې كله خلقو اوكتل چې هغوى ته څه نقصان اونه رسيدلو نو نور ورسره هم شامل شول د هغې نه پس ئې كعبة الله د بنياده پورې اوكنستلو، او د حضرت ابراهم ۱۹۸۶ سينادونه تلاش كړې شول چې ميلاؤ هم شول.حضرت ابن ۱۱ د د سيد د سيال تر د اسمال كړي شول چې ميلاؤ هم شول.حضرت ابن الزبير هم د هغي مطابق تعمير أوكرلور`،

حضرت ابن الزبير خو چونکه صرف خپل تائيد مقصود وو ځکه نې د اسودبن يزيدگينځ نه تپوس او کړو چې حضرت عانشه نام څه بيان کړې وو؟

چنانچه ابن الزبير د کعبي جوړيدل د حضورياک تا پر په خوښه باندې اوکړل دروازې تي لاندې کړې، دوه دروازې ني کړې او د حطيم حصه نې د کعبې په جوړولو کښې دننه واخستله

د حضرت عبدالله بن الزبير المائخ نه پس هر كله چي د عبدالملک د سِپه سالار حجاج بن يوسف غلبه اوشوه نو هغه د عبدالملک په حکم سره بيت الله شريف وران کړو او دوباره نې د قريشو

د جوړولو مطابق کړو.

عبدالملک بن مروان ته د حضورپاکﷺ ارشاد نه وو رسیدلی روستو چی هغه ته علم اوشو نو افسوس نی اوکړو او وني وئيل وددنا انا ترکناه وما تول من ذلك يعنی کاش چې مونږ کعبه

چې څنګه عبدالله اېن زېير ناتی کړې وه، هم هغه حال کښې مو پريښودې وه؛ روستو بيا عباسي خليفه مهدې د امام مالک سره مِشوره اوکړه چې کعبه بيا د سره د عبدالله أَبَنَ الزَّبِيرِ دَ تَعْمَيْرِ مَطَابِقَ جَوْرٍه كَهِي،امام مَالَكَ ذَيْرَ حَكِّيمًانَهُ مُشُورَه وركَّرِه او وني فرمائيل الى اكمة ان يتخذها البلوك لعبة يعني ماته دا اندازه ده چې بادشاهان او مالداران به بیت الله شریف د لوبو څیز اوګنړی چې یو ته د ابن الزبیر تعمیر خوښ رازی آو بل ته به د حجاج، او دریم ته به یو بل صورت خوښ راتلي شي، دغه شان به کعبې نه د لوبو چیز جوړ شي، چنانچه خلیفه مهدي خپله اراده ختمه کړه()

ق**وله: قلت : قالت لي:** ما ورته اوني «اسود بن يزيد اوونيل، چې ماته حضرت عانشه م^{اينو} دا بيان کړېدې

د ابن ابی شیبه موانی روایت دی قلت : لقدحد شفی حدیثا کثیرا انسیت بعضه وانا اذکر بعضه قال: ای

ابن الزيرمانسيت اذكرتك قلت:قالتن

مطلب دادې چې اسود فرماني چې حصرت عانشه الله ماته ډير حديثونه واورول، په هغې کښې بعضې ماته څه ياد دې او څه ما هير کړې دې ابن الربير الله ورته اوفرمانيل چې ته وايا ،چې څه هيره وې زه به درته يادوم بيا اسود دا ذکر شوې حديث ذکر کړو

[&]quot;) الكامل في التاريخ (٣١٤/٣-٣٥٤) والبداية والنهاية (٢٥٠/٨-٣٥١) صحيح مسلم كتاب الحج باب نقض الكعبة وبيّانها رقم(٣٢٤٥) وفتح العلهم(٣٤٤/٣-٣۶۶)-

⁾ البداية والنهاية [٨/٢٥٠)-

[&]quot;) انظر فتح الباري(١/٢٢٤)-

حديث مهدهم کښې په حديث باندې تنوين دې او په عهدهم کښې عهد مرفوع دې چې د حديث صفة مشبه فاعل دې (۱)

قوله: <u>قــال ابر _ الزبيريكفر:</u> ابن زبير ت*اثاؤ ا*وفرمانيل يعنى د كفر زمانه اوسه پورې لاتير. شوي نه ده،

حضرت ابن الزبير چې دلته راتلو سره د بکنی کومه لقمه ورکړه نو د هغې څه مطلب دې؟ علامه کرمانی صاحب فرمانی چې ددې مطلب یا خو دادې چې کله حدیث عهدهم پورې اسود اورسیدلو نوابن الزبیر بکنی وئیلو سره دحدیث دباقی حصی د ختمیدلوطرف ته اشاره او کړله، یا دا مطلب دې چې اسود اول حدیث بیانولو سره د آخر حدیث طرف ته اشاره او کړله، او دا دغه شان ده ځنګه چې و نیلی شی تراحت الم ذلك الکتاب وئیلی دی، چې د هغې مقصد د پوره سورة د وئیلو خبر ورکوی، چې کله اسود د حدیث اوله حصه او نیله نبا زابن الزبیر ورته اوفرمائیل چې ددې آخری حصه دا ده. (۲)

خو نزدې خبره داده چې کله اسود الولا تومك حديث عهدهم پورې حديث او فرمائيلو نو دهغه د مخکښې لفظ په باره کښې څه شک شان اوشو هغوى په دې باندې او نختل،ابن الزبير دې موقع کښې اووئيل چې مخکښې لفظ بکني،دې دا لفظ هغوى ته ياد نه وو.

آیا په دې روایت کښې آدراج دې؟: دا روایت مستخرج اسماعیلې کښې دې په هغې کښې دی چه ایا په دې روایت کښې دی چې اسود او ونیل حدثتنی حدیثا حفظت اولمونسیت آخی، اسماعیلی هغې لره د زهیر بن معاویة من لهاسحای په طریق سره نقل کړې دې اودا نې د اسرائیل د باب په روایت باندې غوره ګرخولی دې، د د اسماعیلی ددې روایت نه د رومبي احتمال ستاننه کیږي چې اسود صرف اوله حصه واوروله نه ، خکه چې هغه ورته یاده نه وه. خو هم داسود روایت مخکښې مصنف په کتاب الحج، او کتاب التمني، کښې نقل کړې

^{&#}x27;) فتح البارى(١/٢٢٤)-

[&]quot;) شرّح الكرماني(١٥٢/٢)-

^{ً)} فتح الباري(٢٢٥/١)-

اً) صحيح البخاري (٢١٥/١) كتاب الحج باب فضل مكة وبنيانها رقم (١٥٨٤) _

في صحيح البخاري (١٠٧٥/٢-١٠٨٤) كتاب التمني باب ما يجوز من اللو رقم (٧٢٤٣)-

جامع ترمذي "،كښې هم دغه روايت د اسود بن يزيد نه منقول دې آو په دې ټولو كښې مكمل حديث هم دده نه منقول دې البته په دې ټولو کښې د بکفر په ځانې بالجاهلية لفظ دې ددې نه د دويم احتمال تانيد کيږي چې اسود ته پوره روايت ياد وو او هم هغوي پوره روايت

که د اسماعیلي روایت صحیح اوګنړلي شي نو ونیلي به شي چې د اسود په نورو روایاتو کښې ادراج دې یعني یو حصه یو رواي د اسود نه واوریده او نقل نې کړه او دویمه حصه د

ابن الزبير نه روايت شوې ده چې هغه يو راوي په ادراج سره نقل کړې دهٔ

که د اسماعیلی روایت صحیح اونه ګڼړلې شي یا دا اوونیلې شي چې نسیت آخرا صرف یو نيمه كلمه ده پوراً باقي حصه نه ده نو بيّا به دا ونيلې شي چې ټول روايت هم اسود نقل كړې دې او دا هم دهغه د مروياتو نه دې ځوالله اعلم

قوله: لنقضت الكعبة فجعلت لها بابير . بأب يدخل الناس وبأب يخرجون ففعله

<u>اير . الزيير:</u> نو ما به کعبه غورزولې وه بيا به ما دهغې دوه دروازې جوړې کړې وې په يو دروازه به خلق داخليدل او په يو دروازې به خلق وتل، چنانچه ابن الزيير هم دغه شان او کړل

د ابوذر په نسخه کښې دلته دواړو ځايونو کښې بهايا· منصوب واقع شوې دې نو په دې صورت کښې به دا د بابين نه بدل او محرزولې شي.

او باقي ټولو نسخو کښې باب د رفع سره دې چې په استيناف باندې محمول دې ^۵واشه اعلم د حديث باب د ترجمة الباب سره مطابقت: د حديث باب د ترجمة الباب سره مطابقت بالكل واضح دې چونکه قريش د کعبې شريفې په سلسله کښې ډير حساس او د هغې ډير عزت کوونکې وو او چونکه هغوی نو مسلم وو اسلام ته نوي نوې راغلې وو،نو دهغوی په زړه کښې دا خيال راتلې شو چې حضور گله د کعبې په تعمير کښې چې بدلې راوستلو نو ددې د پاره چې د قريشو د پاسه هغوي ته او چتوالي حاصل شي او ددې نه بيا فتنه جوړيدلې شوه، نو حضور گلم د دغې ويرې د وجه دا كار پريښودلو. (^۲) والله أعلم

[]] صحيح مسلم كتاب الحج باب جدر الكعبة وبابها رقم(٣٢٤٩)-) سنن نسائي كتاب المناسك باب بناء الكعبة رقم(٢٩٠٥)-

[&]quot;) جامع الترمذي ابواب الحج باب ما جاء في كسر الكعبة رقم(٨٧٥)-

^{&#}x27;) فتح الباري (٢٢٥/١)-^د) فتحَ االبارى(٢٢٥/١)-

⁾ حراله بالا

وم-پاپ: مَنْ خَصَّ بِالْعِلْمِ قَوْمًا دُونَ قَوْمِكَ اهِيَةً أَنْ لاَيُفُهُمُوا دا باب د هغه کس په باره کښې دې چې علم يو جماعت سره خاص کوی، بل جماعت ته هغه علم نه ښاني ددې ويرې چې دا دويم جماعت پوه نه شي دلته ددن د غير په معني باندې دې د ادون په معني کښې نا ()

مخکښې باب سره مناسبت: د دې باب مناسبت مخکښې باب سره ډير واضح دې چې په مخکښې باب سره دير واضح دې چې په مخکښې باب کښې د خلقو د کم فهمئ په وجه بعضې اعمال مختاره،مستحبه او امور مباحه پريښودل ذکر وو،او په دې باب کښې هم د دغې ويرې نه څه خلقو ته علمي خبرې نه ښودل مذکور دي، ٢

سوون مد تور دی در البا او مخکښې باب ګښې او دې باب ګښې فرق امام بخارې په دې باب نه مقصد د ترجمة الباب او مخکښې باب ګښې او دې باب ګښې فرق امام بخارې په دې دې باب نه دا فرمانيل غواړی چی د حاضرينو د پوهې په اعتبار سره خبره کول پکار دی او د هغوی د عقل او پوهې په اعتبار سره خبره کول پکار نه دی چی د هغوی د سوچ د دا نړې نه باهر وی او هغوی څه غلط فهمی کښې مبتلا شی، لهذا که څه پټ علوم وی چې د دا نرې نه بانول پکار نه دی، بلکه چې هر چا په مخکښې بيانول پکار نه دی، بلکه چې څوک ددې اهل وی عقل مند وی د هغی مخکښې دې بيان کړې شی،دغه شان که يو سړې يو خاص جماعت ته علم اوښائی نورو ته نې اونه ښائی ددې ويرې چې هغوی به پوهه نه شی،نو په دې کښې دې کښې هيځ ګناه نشته،دا جائز دی.

حضرت شیخ الحدیث گیلی فرمائی چې ددې باب مقصود دادې که یو شیخ یو عقل مند شام د د مند شام د علم حاصلولو موقع ورکړی او شام د د علم حاصلولو موقع ورکړی او نورو ته یو د کې د د دې اجازت دې او دا کتمان علم کښې نه راخې، او نه نورو له په دې باندې د اعتراض حق دې، چنانچه وئیلې شی چې د امام ابو د یفه کیلی به دو مجلسونه کیدل یو به عام مجلس و او بل مجلس کښې به صرف علماء او حافظان حاض پدل. (۲)

يو به عام مجلس وو آو بلَ مُجلس كَنِبَي بُه صرفٌ علماء أو حافظان حاضريدَل. ٢٠ دلته دا هم معلوميدل پكار دى چې اولني ترجمة الباب عام دې چې اقوال او افعالو دواړو ته شامل دې، او دا باب اقوالو سره خاص دې (٢)

مسمن دې د چې سو دو رو رو رو . حضرت انورشاه کشمیری صاحب که فرمانی چې ددې باب د ترجمه تعلق د شریف او وضیع په مینځ کښې فرق سره دې او د مخکښینی ترجمې تعلق د غبی او بلید ،او د ذکی او فطین په مینځ کښې فرق سره دې د)

ماسته دا ده چې حضرات علما کرامو لره د علمي يا يو مسئلې د بيان په وخت کښې د

⁾ فتح الباري(٢٢٥/١) وعمدة القاري(٢٠٤/٢)-

ا) عمدة القاري(٢٠٤/٢)-

⁾ الكنز المتوارى(٣٨٥/٢)-

⁾ فتح البارى(٢٢٥/١)-

م فیض الباری(۲۲۳/۱)-

حاضرینو خیال ساتل پکار دی.که عقل نه لرونکی او غبی بلید قسم خلق وی نو د هغوی مخکښې دې علمی او باریکې مسئلې بیان نه کړې شی. دغه شان د شریف او وضیع په مینځ کښې د فرق هم خیال او ساتلې شی،

دغه وجه ده چې علما ، کرام خاص خاص څيزونه بيانول نه خوښه وي مثلا امام احمد ابن حنبل

به ددې احاديثو بيانول نه غوښتل چې د هغې نه به خموج ملى السلطان يعنى سلطان المسلمين خلاف د بغاوت مضمون معلوميدلو(''،

امام مالك مُركينة به احاديث صفات بيانول نه غوښتل (٢)

امام ابويوسف مُناف فرماني من تتبع غيب الحديث كذبر

د امام ابوحنيف المينية نه هم دا قسم قول منقول دي (") حضرت آبوهریره لطنز د حضورپاک نتایج نه د علم دوه لوښی اغستلی وو چې هغې کښې یو

لوښې هغوی په خلقو کښې خور کړو او دويم نې بيان نه کړوره حضرت انس بن مالک چې کله د حجاج ابن يوسف په مخکښې د عرنيينو حديث بيان کړو نو حسن بصري دا خوښ نه کړلو ځکه حجاج ابن يوسف دې حديث لره د وينې تويولو ذريعه

په دې سلسله کښې ضابطه دا ده چې کوم ځانې مراد نه وی او د ظاهر حدیث نه بدعت ته طاقت میلاویګی نو په داسې موقعو کښې حدیث پټول پکار دی چې اوریدونکې به صرف په ظاهر باندې عمل شروع کړي (۲)

[٢٧] وَقَالَ عَلِي حَدِّثُواْ النَّاسَ بِمَا يَعُوِفُونَ أَكْبُونَ أَنْ يُكَذَّبَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ

حضرت على للمُثَنَّةُ فرمائي چې خلقو ته د دين هغه خبرې وراوښايئ چې په کومو هغوی پوهيږي، آيا تاسو دا غواړني چې الله او د هغه رسول او نه منگې شي؟

پدالله او پدرسول به ځکه دروغ وليلې کيږي چې دا خپره د هغوي په عقل راغلې هم نه ده، دا د هغوی د پوهې د دانرې نه بهر ده نو هغوی به دا ناممکن ګنړی او انکار به کوی، که دغه خبره الله طرف ته منسوب وي نو دا الله تعالى باندې به دروغ أوليلي شي او كه حضورپاك ﷺ طرف ته منسوب وي نو د هغوي به تكذيب لازم راځي.

^{ً)} فتح الباري(١/٢٢٥)-

^{ً)} حواله سابقه

[&]quot;) المحدث الفاضل بين الراوي والواعي(ص٥٤٢) فقره(٧٤٩) الكفاية في علم الرواية(ص١٤٢) جامع بيان العلم وفضله (۱۰۳۳/۲) رقم (۱۹۸۶)-

⁾ فتَع المغيث للسخاوي (١٠/٤)-

⁾ صحيح البخاري(٢٣/١)كتاب العلم باب حفظ العلم رقم(١٢٠)_

⁾ فتح الباري(٢٢٥/١)-

^{ً)} حواله بالا

د آدم ابن ابی ایاس په کتاب کتاب العلم او د ابونعیم د مستخرج په روایاتو کښې نوره هم اضافه ده ودعواماینکرون زیعنی چې کوم معروف نه وی او د چا په پوه کښې چې شک وی نو هغه پریږدنې

ددې اثر نه دا معلوميږي چې متشابهات د عام خلقو په مخکښې بيانول پکار نه دی.

د حضرت عبدالله بن مسعود ارشاد دي ماانت بمحدث توماحديثا لاتبلغه مقولهم الاكان ليعلهم فتنة زيعني هر كله چي تاسو چاته يو داسي حديث وراوروني چې كوم خائي ته د هغوي عقل نهرسيږي نو د هغه د پاره به دا د امتحان ذريعه جوړيږي

دغه شأن حضرت عروه پینی فرمانی ماحداثت احدا بیش من العلم قط لم بیلغه عقله الاکان ضلالا علیم کیعنی چی ماکله هم چاسره د هغه د عقل نه اوچته خبره کړې ده نو هغه د هغه د پاره په غلطئ او کمراهئ کښې د غورزیدلو وجه جوړه شوه

حضرت ابوهریره تاین فرمائی تقدمدنتکم باحادیث لوحدثت بها زمن عبرلشهینی بالدوق رقمی یعنی مما تاسو ته هغه احادیث اورولی دی که چری ما د حضرت عمر تاین به دور کینی دا احادیث اورولی وو نو هغوی به خِما په درې سره خبر اخستلی

قوله: حَدَّثَنَا عُبَيْلُ اللَّهِ بُرُ مُوسَى عَرُ مُعُرُّوفِ بُر خَرَّبُوذِ عَرُ أَبِي الطُّفَيُلِ عَرُ عَلِي بِذَلِكَ: دا د حضرت على الله د ذكر شوى اثر سند دى د ابوذر په روايت كښى سند د نور كله په شان مخكښى دى، او د كشمينى په روايت كښى دا تول اثر سره د سنده

غورزیدلی دې او د باقی حضراتو په نسخو کښې اول متن دې او روستو سند ذکر دې ⁽⁶ **متن په سند باندې د مخکښی والی څه وجه ده**؟: علامه کرمان*ۍ گنتا* ددې ډیرې نکتې ذکر کړې دی یو دا چې حدیث مرفوع او په اثر د صحابی کښې د فرق ظاهرولو دپاره ئې داسې

دوّيمه وجه دا هم ممکنه ده چې امام بخاري دې اثر لره د ترجمه جز جوړول غواړي،ځکه ئې د سند نهمخکښي متن ذکر کړو.

دريمه احتمال لرونکې وجه دا آبيان کړې ده چې چونکې په دې سند کښې معروف بن خربوذ ضعيف دې،نو د دې ضعيف راوی د ضعف د وجه دا فرق کړې شوې دې. يا مقصود تفنن او تنوع دې څه بل زياتي کار په نظر کښې نشتهر')

^{&#}x27;) فتح البارى(٢٢٥/١)-

⁾ مقدمة صحيح المسلم باب نهى عن الحديث بكل ما سمع رقم(١٣) وجامع بيان العلم وفضله(٥٣٩/١) رقم(٨٨٨)-

^{ً)} جامع بيان العلم وفضله(٥٣٩/١)رقم(٨٨٩)-

⁾ جامع بيان العلم وفضله(١٠٠٣/٢) رقم(١٩١٣)-

^د) فتح الباری(۲۲۵/۱)-

م شرح الكومانى(١٥٥/٢)-

رجال العديث

①عبيدالله بن موسى: دا عبيده الله بن موسى باذام عبسى كوفى كلي دوى حالات د كتاب الايان وقول النبي 機 بن موسى د لاندى تير شوى دى ()

©معروف ابن خوبوذ:دا معروف بن خربوذ ربقتهٔ الغاء البعجية وتشديد الراء البقترحة بعدها باء موحدة مضبومة ديمدها واو ساكنة وآخرة ذال معجية مكى مولى عثمان ديداً ددوى شمير صغارتا بعينو كنبي كيري: ")

دوی د حضرت ابوالطَّفيل عامر بن واثله ليشي الله عبدالله بن بريده ان كان محفوظا، ابوجعفر محمد بن عباس المنظم الموجعفر محمد بن عباس المنظم المنظ

دده نه روایت کوونکو کښې ابوداود طیالسي، ابوعاصم النبیل، عبیدالله بن موسی، فضل بن موسی سینائی، وکیع بن الجراح او ابوبکر بن عیاش وغیره حضرات دی ()

امام ابن معين فرمائي ضعيف"

امام احمد پښځ فرماني ما ادرې کيف حديثه؟ رايعني ماته معلومه نه ده چې د هغوي حديثونه د کومي درجي دي؟

امام عقبلي المنه دوى په كتاب الضعفاء كنبي ذكر كړې دى او وئيلې دى لايتابع على حديثه ولا يعرف الايه رئ

يروا د هغې ابن حيان کتاب الضعفا، کښې نقل کړې دی چې ده به کتابونه اخستل او د هغې ده به کتابونه اخستل او د هغې د د به نې آوه م سره نه به نې آوهم سره د د د د د د بانچه بيا به نې توهم سره روايت کولور^

---خو حافظ ﷺ فرماني چې د معروف بن خربوذ په روايت کښې دا خبره نه معلوميږي، ممکنه ده چې ابن حبان د بل چا حالات ده هغه نوم سره او ترجمې لاندې ذکر کړې وي(۱)

⁾ كشف الباري (۶۳۶/۱)-

⁾ تهذيب الكمال(٢٤٣/٢٨)-

^۲) هدى السارى(£ £ £)-

^{ً)} تهذيب الكمال(٢٨/٢٨)-

د) تهذیب الکمال(۲۸/۲۸)-

ع حواله بالا)-

v) كتاب الضعفاء للعقيلي (٢٢٠/٤)-

^{^)} تهذيب التهذيب(٤/٢٢٠)-

^{*)} حواله بالا.قال الدكتور في تعليقاته على تهذيب الكمال(٢٤٥/٢٨) كذا قال الحافظ ولم تقف عليه في المطبوع من "المجروحين")-

ددې په مقابله کښې ساجي کيا فرماني صدوق ن امام ابوحاتم يلي فرمائي يكتب حديثه ز ابن حبان دوی په کتاب الثقات کښې ذکر کړې دی () حافظ ابن حجر فرمائي صدوق ديباوهم وكان اعباديا،علامة 🖒

حافظ ذهبي فرماني مدوق شيعي ٢٠

حاصله داده چې معروف بن خرېو ذ اکثرو حضراتو کمزورې ګڼړلې دې خو بيا هم څو حضراتو

په نرم انداز کښکې د دوی تعدیل کړې دې. ددوی احادیث ډیر کم دی (بمبیا امام بخاری خو صرف دغه یو اثر نقل کړې دې چې په هغې کښې د ده واسطه نشته ، دې نه علاوه د ده نه نې بل ځانې کښې روايت اخستې نه دې () او امام مسلم. امام ابوداود او امام ابن ماجه شيخ هم د ده صرف د يو حديث اخراج کړې دې

سمعت ابا الطفيل يقول: رايت رسول الله يطوف بالبيت ديستلم الركن بمحجن معه ديقبل المحجن ﴿

راللقظ لبسلي تُويا امام بخاري ﷺ دده نه مرفوع روايت نقل كړې نه دې ورسره ورسره متن مخكښې كولو اوسند روستوكولوسره نې دا اشاره هم اوكړه چې په دې سندكښې څه ضعف دې او امام مسلم

كمينة هم دده حديث استشهاداً نقل كرى دى، اصالة نار ، والله اعلم (رحمه الله تعالى رحمة واسعة) وحضوت ابوالطفيل: دا حضرت ابوالطفيل عامر بن واثله بن عبدالله بن عمر بن جحش

ليشي الله دي بعضي حضراتو دده نوم د عامر په ځانې عمرو ښودلې دې خو صحيح خبره هم

دوی د غزوه احد په کال باندې پیدا شوې وو ،او د حضورپاک نه څ د ژوند نه ئې تقریبا اته کاله

^{ً)} تهذیب التهذیب(۲۳۱/۱۰)-

⁾ تهذيب الكمال(٢٨/٢٨)-

⁷) الثقات لابن حيان(٣٩/٥)-

⁾ تقريب التهذيب(٤٠٠ص)رقم(٤٧٩١)-

۵) ميزان الاعتدال(٤/٤ ٤١) رقم(٨٥٥٥)-

م حواله بالا)_

^۷) هدى السارى(ص \$ \$ \$)-

معیح مسلم کتاب الحج باب حواز الطواف علی بعیر وغیره..رقم(۳۰۷۷) وسنن ابی داود کتاب المناسك باب الطواف الواجب رقم(١٨٧٩) وسنن ابن ماجه كتاب المناسك باب من استلم الركن بمعجنه رقم(۲۹٤۹)-

١) تعليقات الكاشف(٢٨٠/٢) رقم(٥٥٥١)-

^{&#}x27;) تهذيب الكمال(٢٩/١٤)-

دوي د حضور کاللہ نه علاوه د حضرت ابويكر،حضرت عمر. حضرت على، حضرت معاذبن حل او حضرت عبدالله بن مسعود وغيره نه روايت د حديث نقل كړې دي.

او دّده نه روایت کونکو کښي حبیب ابن ابي ثابت،امام زهري. ابوالزییر مکي، علي بن زید بنّ جدعان، عبدالله ابن عثمان بن خشيم. معروف بن خربوذ. سعيد الجريري او فطر بن

خليفه وغيره نه علاوه ډير حضرات دي٠٠)

حضّرت ابوالطفيل للشُّرَّكِ به كوفه كښي اوسدلو،بيا مكه ته راغلو اوهم هلته كښي وفات شود؟، حضرت آبوالطفيل لئاتلؤ د حضرت على لئاتئو د خاص مينه كوونكي نه دې او د هغوی د خصوصی اصحابو نه وو،هغوی سره په ټولو معرکو کښي شريک وو.د حضرت ابويکر او حضرت عمر الله فضل او كمال لي منلو.او حضرت عثمان الشيخ سره به ني مينه كوله.خو بيا هم حضرت على الأثنؤ به ئى مقدم كولور أن

د حضرت على الله او اهل بيت سره د ميلاودو او ربط لرلو په وجه خوارج دده نه خفا او په ده باندې ئى مختلف قسم الزامونه لكول.^د،

حافظ ذهبي وميني نقل كوى وكان ابوالطفيل ثقة فياينقله صادقاعالها شاعها فارسا عبوده وطويلا وشهد معملحهوبه (١

يعني دوي په نقل كښي ثقه او معتمد وو رشتوني وو عالم شاعر او شهوار وو. عمر ني ډير آومندلو، او حضرت على لائت سره په ټولو جنګونو کښې شريک وو^٠

حضرت ابوالطفيل هغه آخري صحابي دي چې د هغه د وفات سره په دنيا کښي د حضرات صحابه كرام تؤكئة دور ختم شو ٧٠٠

ددوي نه تقریبا شل احادیث مروي دي.^مچې ده هغې نه په بخاري کښي صرف يو حديث دې او په مسلم شریف کښې دوه روایتونه دی 🖒

ابن عبدالبر*ئينية* فرماني چې دده نه څلور احاديث مروی دی (`)غالبًا چې ددوی مراد په اصول سته کښي روايت کړې شوې احاديث دي،چې ټول څلور دي.''›

⁾ حواله بالا

⁾ تهذيب الكمال(١٤٧٩)-

^{ً)} حواله بالا

⁾ الاستيعاب بهامش الاصابة (١١٧/٤)-

أ) تهذيب التهذيب(٨٢/٥)-

⁾ سير اعلام النبلاء (٢/٧٤)-

⁾ سيراعلام النبلاء (٤٤٧/٢)-

⁾ الكامل لابن عدى(٨٧/٥)-

⁾ خلاصة الخزرجي (ص١٨٤٥) وذخائر المواريث (٩۶/٢)-) تعليقات معجم الصحابة (٣٨٨٤/١١)-

[&]quot;) ذخائر المواريث (٩۶/٣)-

د اصح قول په اعتبار سره ددوی وفات په ۱۱۰ هجرنی کښې اوشو(۱٫۰هـو)الله عنه دارضاه.

ام مفرت على المائز: حضرت على المائزة تذكره به دى جلد كنبى به باب الله من كلب مل

النبى الله لاندى تيره شوى ده

(١٢٨) حَدَّثَنَا أَمْحَاقُ بَرْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا مُعَاذُبُنُ هِفَامِ قَالَ حَدَّثِينَ أَبِي عَنُ قَتَادَةً قَالَ حَدَّثَنَا أَنْسُ بُنُ مَالِكِ أَنَّ النَّبِي - صلى الله عليه وسلم - وَمُعَاذُ رَدِيغُهُ عَلَ الرَّحْلِ قَالَ هَيْامُعَاذُ بُنِ جَبِّلِ». قَالَ لَبُيْكَ يَارَسُولَ اللَّهِ وَسَعْدَيْكَ. قَالَ «يَامُعَادُ». قَالَ لَبَيْكَ يَارَسُولَ اللَّهُ وَسَعُدُنْكَ. لَلاَثًا.

ت المسين يورون بعدونسين الآوادية والمساق الله المساق الله الله الله الله عن الله المساق الله الله عن الله المؤ عَلَى النَّارِ». قَالَ يَارَسُولَ اللّهِ، أَفَلاَ أَعْبَرُهِ النَّاسَ فَيَسْتَبْثِيرُواقَالَ «إِذَا يَتَكِلُوا». وَأَخْبَرَهِمَا مُعَاذَّعِنْدَمُوْتِهِ تَأْكُمُنَا

رجال الحديث

اسحاق بن ابراهیم: دا د فقه او حدیث مشهور امام اسحاق بن ابراهیم بن مخلد حنظلی استاق بن ابراهیم بن مخلد حنظلی استام المام المام

الله سنبر الدستواني بصري معاذ بن هشام بن ابي عبد الله سنبر الدستواني بصري مياد ديري

دوى د اشعث بن عبدالملك، بكير بن ابى السميط، شعبه بن الحجاج، عبدالله بن عون، يحيى بن العلا الرازى او خپل پلار هشام الدستوائي پين ندروايت كوي.

او دده نه امام احمد، اسحاق بن راهویه، علی بن المدینی، عمرو بن علی الصیرفی، محمد بن بشار بندار، عبیدالله بن عمر القواری، بکربن خلف، ابراهیم بن عرعره، ابوسعید الاشج، نصر بن علی، ابوهشام الرفاعی، یزید بن سنان او زید بن اخرم ﷺ وغیره حضراتو نه علاوه نور ډیر حضرات روایت کوی گ

امام يحيى بن معين فرمائي صدوق وليس بحجة ٠٥

امام يحيى بن معين الميلية فرمائي ثقة ن

دغه شان هغوی فرمائی لیس پذاك القوی ر^م

⁾ سير اعلام النبلاء (٢٧٠/٣)-) كشف الباري (٣٧١/٣)-

⁾ تهذيب الكمال(١٣٩/٢٨)-") تهذيب الكمال(١٣٩/٢٨)-

ا) تهذيب الكمال(٢٨/ ١٤٠-١٤١)-

ئم تهذیب الکمال(۲۲/۲۵)-م تهذیب التهذیب(۱۹۷/۱۰)-

^{°)} حواله بالا

```
ابن فانع ملا فرماني كقلامامون أ
```

حافظ ذهبي تنظ فرماني صدوق صاحب مديث ومعرفة ن

حافظ ذهبي تلك دده د تذكري په شروع كښې ليكي معادين هشام اين ابي ميدالله ين ستيم الامام المحدث الثقة الممرى فر

حافظ ابن حجر بُلِيلا فرمائي صدوق ديماوهم ن

ابن عدى فرمائي ولبعاذين هشام عن ابيه عن قتاد لاحديث كثير ولبعاذ من خير ابيه احاديث صالحة وهو ربهايغلط فالش بعداالش وارجوانه مدوق ن

ابن حبان دوی په کتاب الثقات کښې د کر کړې دی او ليکلې دی وکان من المتقنون (۲ حاصله داده چي د ابن معين دا قول دده باره کښي مختلف دي کله په ثقه ونيلو سره ني توثيق کړې دې او کله د اصدوق وليس پحجة د توثيق سره سره ني د هغه درجه هم اوچته ښودلې ده چې هغه حجت نه دې.ابن قانع ابن دهبي او ابن حبان انتخام د دوې توثيق کړې دې خو بيا هم که چرې دې کښې څه کمزوري وي نو هم قابل د تحمل او احتجاج دي.حضرات شيخين په دوي اعتماد کړې دې اګرچې امام بخاري ترې زيات حديثونه اخستې نه دي ()

سهجرني كښې ددوي وفات اوشو ،^) رحمه الله تعالى رحمة واسعة

ابی دا معاذبن هشام پلار هشام بن عبدالله سنبر دستوانی بصری کند دی. د دوی حالات د كتاب الإيبان باب زيادة الايبان ونقصانه دلاندي تير شوي دى (١٠)

المام قتاده بن دعامه سدوسي بصرى كينودي. د دوى حالات د كتاب الايان باب من الايهانان يحب لاغيه مايحب لنفسه د لاندې تير شوې دى (١٠)

⑥انس بن مالک للگو: د حضرت انس بن مالک للگو حالات هم د کتاب الایهان باب من الایهان ان يعبلاغيه مايعبلنفسه د لاندې تير شوې دی(۱۱)

⁾ حواله بالا) ميزان الاعتدال(١٣٣/٤) رقم(٨٤١٥)-) سيراعلام النبلاء (٢٧٢/٩)-) تقريب التهذيب(ص٥٣۶)رقم (٨٤١٥)-ن) الكامل(٤٣٤/٥)-) الثقات لابن حبان(١٨٤،١٨٨/٩)-) هدى السارى(ص \$ \$ \$)-

⁾ سير اعلام النبلاء (٢٧٢/٩)-) كشف الباري(٤٥۶/٢)-

⁾ كشف الباري(٣/٢)-(۶/۲) کشف الباری(۶/۲)-

قوله: ان النبي تاللم ومعاذ رديفه على الرحل قال: يا معاذبين جيل: حضورياک تاللم اوفرمانيل: اي معاذ بن جبل: دغه وخت معاذ ثالثا حضور تاللم پسې شاته په سورلئ ناست وو،

رویف یاردف هغه کس ته و نیلی شی چې په یو سورلنی کښې چا پسې شاته سور وی (` مارد د مارا اطلات تحد از شری دی یک

رحل په اصل کښې د اوښ کجاوې ته والي ()خو دلته د رحل اطلاق تجوزاً شوې دې ځکه چې د کتاب الجهاد په روايت کښې راروان دی چې حضورپاک کال په يو خر باندې سور وو او معاذ څاڅ هغوی پسې شاته سور وو ، ددغې خر نوم عفير بهالعين البهبلة والقاء مصغول و د ح) د حافظ ابن الصلاح رانې ډاده چې دا دواړه واقعې جدا جدا دی، په يو کښې د سورلي خناور

اوښ وو او په بل کښم خرر^۳) خو امام نووی پښلو فرمانۍ چې کیدیشی چې واقعه یوه وی او علىالرحل معنی علىقدرموخر. الرحل وی ^{(۵})

دې نه پس دا زده کړه چې په بخاری شریف کښې خو دی علیحماریقال له:عقیر، ^۲، خو په مسند احمد کښې نیقال لهیعقور دوېر *۴*

په دې سلسله کښې عبدوس او اېن القيم رحمهمالله رائي خو داده چې دا دواړه د يو خر دوه نومونه دی. خو د حافظ دمياطي ﷺ رائي دا ده چې دا دواړه جدا جدا خرونه وو،يو مقوقس د هديې په طور راليږلې وو،او يو فروه بن عمر (^والله اعلم

يا معاذ ابن جَبَل كَنْبَى آبَن خُو په آتفاق سره منصوب دې البته معاذ باندې په نصب وئيلې شي يا ضمه؟په دې كښې اختلاف دې ابن مالكريني د ضمې وئيلو قائل دې او ابن الحاصه الله و نتحي.

الحاجب کیلید دفتحی، د ضمی ونیلو وجه خو ښکاره ده چې دا منادی مفرد ده او منادی مفرد معرفي لره په علامت رفع سره مبني ګرخوي او د ضمه ونیلو وجه داده چې منادي ابن یا ابنة سره متصف کیدو

^{&#}x27;) مختار الصحاح(ص٢٤٠)-

يًا) الرحل:رحل البعير مختار الصحاح(ص٢٣٧) وانظر فتح الباري (٢٢٤/١)-

^{ً)} عن معاذ بن جبل لللفئر قال:كنت ردف النبي كالثيراً على الحمار يقال له عفير"صحيح البخاري(٢٠٠٨)كتاب الجهاد باب اسم الفرس والحمار رقم(٢٨٥٤)-

^{*)} شرح النووى على صحيح مسلم(4 \$ \$ \$) كتاب الايمان باب الدليل على ان من مات على التوحيد دخل الجنة قطعا)-

^ت) حواله بالا

م) صحيح البخاري(٢٠٠١) كتاب الجهاد باب اسم الفرس والحمار رقم(٢٨٥٢)-٢) مسند احمد(٢٣٨/٥)رقم(٢٢٤/٣)حديث معاذ بن جبل الأنشاء

م) فتح الباري (۵۹/۶)

سره راشی نو ددې استعمال ډير دې، او کثرت استعمال تخفيف غواړي، لهذا چونکه دا مفعول دې ددې حرکت اصليه فتحه ده، نو ځکه مو ورله تخفيفا فتحه ورکړه ()

مهمون دې د دې حرف مصيد مصاده ده و محاوی و ده مصاد به جو روم محاد بن جبل بن عمود بن اوس خورجی انصاری تایخ دې، د دوی کنیت ابوعبد الرحمن دې ()

حروجي المصاري الهو دې د دوي صيحه ېو طبه تر سان دې . د اتلس کالو په عمر کښې ئې اسلام راوړلو ، بيعت عقبه ثانيه ، غزوه بدر او نورو غزواتو کښې . حضور پاک ريم سره شريک شوې وو د)

دوى به د حضورياك الله نه روايت حديث كولو.

د دوی نه حضرت عبدالله بن عمر، حضرت عبدالله بن عباس، حضرت جابر،حضرت انس،حضرت ابوامامه، حضرت ابوثعلبه خشنی او حضرت عبدالرحمن بن سعره شخش نه علاوه په تابعینو کنبی ابوالاسوددؤلی، کثیربن مره، ابووائل، ابن ابی لیلی، عمرو بن میمون، ابومسلم خولائی، مسروق او عبدالرحمن بن عنم شخ وغیره نه علاوه ډیر حضرات د حدیثو روایت کوی در)

د حضرت معاذبن جبل شمير د صحابه په علماؤ کښې کيدلو، د حضورپاک ﷺ نه ددوی ډير د اتا ايتا د د

ستاب رسماني. حضور پاکﷺ اوفرمائيل چې قرآن د څلورو كسانو نه حاصل كړني.او بيا نې د عبدالله بن مسعود،سالم مولى ابى حذيقه، ابى بن كعب او معاذ بن جبل تاڭ نومونه نې واخستل. (مُ

د حصورياك تعظ ارشاد دي اعليهم بالحلال والحرام معاذين جبل ()

هغوى ارشاد اوفرمائيل تعمالرجل معاذبن جبل د

دغدشان هغوى كالله دا هم اوفرمائيل يامعادان لاحمك في الله ٢٠

سهل بن ابی حثمه الله فرمانی چی د حضوریاک الله په دور کښې فتوی ورکولو والاشپږ کسان وو، د مهاجرینو نه درې حضرت عمر، حضرت عثمان او حضرت علی الله او په انصارو کښې درې حضرت ابي بن کعب، حضرت معاذ او حضرت زید الله ()

 ⁾ اوضح المسالک(٧٩/٣)باب النداء الفصل الثاني فئ اقسام المنادي واحكامه،شرح الجامي(ص١٢٧) المنصوبات توابع المنادي)-

^{ً)} تهذيب الكمال(١٠٥,١٠۶/٢٨)-

^{ً)} تهذيب الكمال(١٠٧/٢٨)-

^{ً)} تهذيب الكمال(١٠٨،١٠٩/٢٨)-

هم صحيح البخاري(۵۳۷/۱)كتاب فضائل اصحاب النبي تَلِيْنِ باب مناقب معاذبن جبل،وقم(۳۸۰۶) م) جامع الترمذى ابواب المناقب،باب مناقب معاذبن جبل وزيد بن ثابت وابى بن كعب وابى عبيدة بن الحبراح تُلَّمِنُ رقم(۳۷۹۰.۳۷۹)-

Y جامع الترمذي ابواب المناقب.باب مناقب معاذ بن جبل..رقم(٣٧٩٥)-

م سنن النسائي كتاب السهو باب نوع آخر من الدعاء رقم(١٣٠٤)-

[&]quot;) سيراعلام النبلاء (٢٥٢/١)-

حضرت عمر نام و فرماني من اراد الفقه فليات معاذبن جبل 🖒

يو خل مدينه کښې دا واقعه اوشوه چې يو سړې تقريباً دوه کاله د کور نه غانب وو.د هغې نه پس چی کور ته راغلو نو ښځه ئې حامله وه.حضرت عمرگناتو هغه سنګساره کول اوغوښتل.حضرت معاذبن جبل اعتراض اوكړو أو وني فرمانيل چې دا ښخه خو سنگسار كولې شې خو چې ددې په خيټه كښې كوم بچې دې دا به وژلې نه شي؟ حضرت عمر څاڅ هغه پريښودله نو دې نه پس چې د هغې ځونې اوشو او د هغه مشابهت هم ددې خاوند سره وو. او د هغه مخکښنی غانښونه هم راوتلې وو .او دې سړي خپله هم اونې چې دا ځما خونې دې.په دى موقعه حضرت عمر تأتي أوفرمائيل عجزت النساء ان يلدن مثل معاذ الولا معاذ لهلك عمر يعنى ښځې د معاذ په شان شخصيت پيدا کولو نه عاجزې دي.که معاذ نه وو نو عمر به هلاک

شهر بن حوشب پینه فرماني چې كله به د حضورياك الله صحابه كرام خپل مينځ كښې خبرې کولمي او په هغوي کښې په معاذ بن جبل هم وو نو نورو حضراتو په هغوي ته د ويرې نه ډک نظرونو سره کتل ۲۰

حضرت ابن مسعود الله فرمائي ان معاذكان امة قانتا الله حنيفا ﴿ ﴾

چا اوئې چې دا صفت خو د ابراهيم,اغيگي، دې ان ابراهيم کان امة قانتا لله حنيفا ولم يك من البشركين ()

حضرت عبدالله بن مسعود اوفرمانل الامة: الذي يعلم الخيروية تم به .والقانت البطيع لله عزوجل وكذلك كان معاذ معلى اللخير، مطيعا لله عزوجل ولرسوله كالمرار ()

د حضورپاک پاهموی باندې دومره اعتماد وو چې ددې اندازه دې خبرې نه اولګوه چې کله هغوي گله د مکه مکرمه نه حنين طرف روان شول نو په دي موقع ني حضرت معاد کاڅو ددې وجه په مکه کښې پريښودلو چې هغوي به خلقو ته دين او قرآن ښانۍ 🖔

دغه شان حضورپاک کا هغوی لره په آخري عمر کښې د يمن قاضي او د دين رهنما جوړکړو او وېليږلور^،

^{′)} المستدرك للحاكم(٢٧١/٣)- وصححه ووافقه الذهبي)-) سيراعلام النبلاء (٢٥٢/١)-

[&]quot;) سيراعلام النبلاء(٥٣/١٥٤)-

⁾ تهذيب الاسماء واللغات (٩٩/٢)-

م النحل/١٢٠)-

⁾ تهذيب الاسماء واللغات(٩٩/٢)-

^۷) سيراعلام النبلاء(209/1)-

م تهذيب الاسماء واللغات(١٠٠/٢)-

د يمن نه د واپس کيدو نه يس د ابوبکر څاڅو په اجازت سره د جهاد په نيت سره شام ته لارلو، هلته طاعون عمواس د وجه وفات شور،

د وفات په وخت کښې د هغوی عمر ۳۳ يا ۳۴ کال وور^۱،

حضرت معاد نام باندى د طاعون اثر اوشو نو بار بار به بيهوشي راتله، ګوزاره كيدلو سره ثي اوفرمائيل رب غبق غبك، فوعزتك، الك لتعلم الى احبك رأيعني اي خما رب خما صرف ستا د جدائي غم دي.ستا د عزت دې قسم وي. تأته پته ده چې ځه تاسره محبت کوم

دغه شان په دې موقع ئي اوفرمانيل اللهمانك تعلم الى كنت الحافك، وانا اليوم ارجوك، الى لم اكن أحب الدنيا وطول الهقاء فيها لكرى الانهار،ولا لغرس الاشجار،لكن لظبا الهواجرومكابدة الساعات ومزاحمة العلماء بالركب عندحلق الذكرن

يعني اي الداتاته پته ده چې څه به ستانه ويريدم او نن څه ستانه د بخښې او كرم اميد ي د ما تانه د ډير عمر خواهش دې د پاره نه کوم چې نهرونه اوکنوم، اونې اولګوم، بلکه دا محبت د غرمې په ګرمئ کښې د تندې د پاره، د ژوند وختونه په ښه طريقه او پورا کوشش کولو د پاره او د ذکر وتعليم په دائره کښې د عالمانو ګونډو سره ګونډنې ميلاوول او کیناستلو د پاره دی ۲

-حضرت معاذ تالي نه تقريبا يو سل او اووه اويا احاديث نقل دى، چې په هغې كښې متفق عليه دوه حديثونه دى، او بخارى په دريو حديثو كښې او امام مسلم يو حديث نه متفرد دى ()

۱۸هجرنی په طاعون عمواس کښې ددوی وفات اوشود ۲ برض الله تعالىعنه و ارضاه

قوله: قال: لبيك يا رسول الله وسعديك،قال: يا معاذ،قال: لبيك يا رسول الله وسعديك ثلاثا: حضرت معاد تُناشئ عرض اوكرو لبيك يا رسول الله وسعديك ربا رسول الله خه حاضر يم او ستا د حكم پوره كولو د پاره تيار يم بيا هغوي ﷺ آواز اوفرمائيلو اې معاذ؛ هغوى عرض اوكرو لبيك يارسول الله وسعديك دغه شان دري بيري اوشول.

لييك: عربى كنبى ونيلى شى الله بالمكان يلب الهابا يو خانى مقيم كيدل او هغه بيا لازم گنرل، دغه شان دالب په خانى لب هم ونيلى شى () امام فرا مختلي فرمانى هم ددى نه د لبيك لفظ جوړ شوى دى چى د هغى معنى خه ستا

⁾ حواله بالا

^{ً)} حواله بالا

^{ً)} حواله بالا)-

⁾ تهذيب الاسماء واللغات(١٠٠/٢)-

ثم تهذيب الاسماء اللغات(٩٨/٢) وخلاصة الخزرجي(ص٣٧٩)-) سيراعلام النبلاء (٤٤١/١)-

⁾ مختار الصحاح (ص٥٨٩)-

تابعدار او حکم منلو باندی مقیم او او کلک ی

دا مفعول مطلق كيدو د وجه منصوب دي څنگه چې حمدا لله او شكرا لله كښې حمدا او شکرا منصوب دی آ)

البيك د تثنيي صيغه ده، د تاكيد د وجه دا تثنيه راوړلي شوه، نو گويا د البيك معنى الب لك البابابعد الباب والعامة بعد العامة ر

امام خليل نحوې پُرنځ فرمانۍ چې د الب يلب نه جوړ دي. وليلې شي دار فلان تلب داري يعني د فلانكي كور ځما كور ته مخامخ دې، لهذا د لبيك معنى شوه انا مواجهك بما تحب اجابة لك زُعيني ته چې د كوم څيز ځما نه غوښتنه كوې څه د هغې بالكل ستا د خوښې مطابق

مخكسي راتلو والايم ښكاره دې وي چې دا تثنيه په مثنى باندې دلالت كونكې نه ده بلكه په تكثير باندې دلالت د

دا هم ياد ساتئ چې دا لفظ هميشه د پاره ضمير مخاطب په طرف مضاف کيږي نه چې غالب طرف ته، ماكر شاذ طريقي سره (٢)

سعديك: سعد اسعا يعني د مساعده او اعانت په معنى باندې دې ګويا د اسعدك اسعادابعد

اسعاد معنی کښې دې، او مفعول مطلق بنياد باندې منصوب دې ^۷، حضورپاک ﷺ دومره اهتمام سره دوه درې پيرې چې معاذ تائي ته آواز ورکړو نو په اصل کښې هغوی دا غوښتل چې هغه د دوی د خبرې د آورېدو او د پوهيدلو د پاره پوره د زړه او روح سره متوجّه شي،چې کله معاد نام پوره طور سره متوجه شو نو هغه وخت هغوي مخکښې او فرمائيل **قوله**. قـال: مـا من احديشهد ان لا اله الا الله وان محمدا رسول الله صد<u>قـا</u>

مر قلبه الاحرمه الله على النار حضورباك رفي اوفرمائيل جي كوم سرى به رستونى زړه سره ددې خبرې ګواه<u>ې ورکړي چې</u> د الله نه سوا بل څوک معبود نشته او دا چې محمد ﷺ د الله تعالى رسول دى، په هغه باندې به الله تعالى د جهنم اور حرام كړى.

صدقا ٔ دصادقا و معنی سره دی د من قلبه تعلق صدقا سره هم کیږی او مطلب به وی چې هغه سړې به په ژبه سره د شهادت تلفظ کوي او په زړه سره ددې تصديق کوي، او دا هم

⁾ حواله بالا ً) حواله بالا

^{ً)} حواله بالا

^{ً)} حواله بالا

²) المعجم المفصل في الاعراب للاستأذ طاهر يوسف الخطيب(٣٨٢/٣)-

م حواله بالا

[&]quot;) مختار الصحاح(ص ٢٩٩٠) والمعجم المفصل في الاعراب(٣٣٨/٣)-

ممکن ده چې ددې تعلق پشهد سره وي. يعني په زړه سره رشتونې ګواهي ورکوي په دې کښي اولني احتمال بهټر دې ()

دلته دا خَبْره زده کړه چې د صدق اطلاق په افعالو او اقوالو دواړو باندې کيږي،اقوال صادته هغه اقوال دی چې د واقع مطابق وی او افعال صادقه هغه افعال دی چې خوښکړې شوې وي.دلته دواړه معني يعني استقامت قولي او فعلي مراد دې ۲

شوې وی. دلته دواړه معنی یعنی استفامت فولی او فعلی مراد دې() د حدیث باب نه موجئو استدلال او دهغې ود: ددې حدیث نه مرجنه دلیل نیولې دې چې دایمان نمر د د داڅنونه د د درنشته

نه پس د بل څیز ضرورت نشته. خوارجو دا قسم احادیث رد کړل او اهل سنة والجماعة ټول احادیث په خپل ځانې باندې ایږدی او ټول منی او دهغې مناسبه معنی وانی ، ددې حدیث هم ډیرې معنې بیان کړې شوې دی. ① یو معنی دا بیان کړې شوې ده چې دا اګرچې مطلق دې چې کوم سړې د توحید او رسالت ګواهی ورکوی هغه به جهنم ته نه ځی خو بیا هم دا حکم په حقیقت کښې مقید دې مامن احد پشهد ، بتانیا سره ، یعنی چې کوم سړې توحید او رسالت ګواهنی سره توبه اوباسی او دې دنیا نه رخصت شی نو هغه باندې به اور حرام وي

ې د معنی دا هم بیان کړې شوې ده چې دا او دا قسم چې څومره احادیث راغلي دی هغه ټول د فرانضو او احکامو د نازلیدو نه مخکنې راغلی دی،لهذا د فرانضو نازلیدو نه پس صرف شهادتین بس نه دې، په فرانضو او احکامو باندې په هم عمل کول وي

ههدوین بین ده وی در صور و ده و دا روایات خو د ابوهریره او حضرت ابو موسی دی جواب باندې اعتراض دې ځکه چې دا روایات خو د ابوهریره او حضرت ابو موسی اشعری ۱۳۵۵ نه هم مروی دی.۲

دحضّرت ابوهریاه گلگو په اسلام کښی روستوالی او د ابوموسی اشعری گلگو منحکښی والی د ابوهریره گلگو د اسلام راوړلو په کال باندې معروفه ده،دغه وخت د ډیرو فرانضو نازیلیدنه شوی وه.

٠ يو معنى دا هم وئيلې شوې ده چې دا حكم د غالب احوالو په اعتبار سره دې ځكه چې موحد عام طور تابعداري كوي او د ګناه نه خان بچ كوي

٠ يو مطلب دا بيان کړې شوې دې چې حرمه الله على النار نه مراد د هميشه د پاره حراموالي دې،نه چې صرف داخيليدنه.

 و مطلب دا بیان کړې شوې دې چې تحمیم على الثار نه مراد فى الجملة حرام والې دې ځکه چې حدیث د شفاعت نه معلومیږي چې د مومن د سجدې ځایونه به اور نه خوري، او دغه شان ژبه هم چې په څه سره هغه د توحید ګواهي ورکړې ده.

⁽⁾ فتح الباري(٢٠٧/١) وعمدة القارى(٢٠٧/١)-

^{ً)} فتح البارى(٢٢۶/١)-

^T) صحيح المسلم كتاب الايمان باب الدليل على ان من مات على التوحيد دخل الجنة قطعارقم(١٤٧) ولايوموسى اشعرى مسند احمد(٢٠٤١١/٤) رقم(١٩٩٢۶)و(١٩٩٥)-

 یو مطلب دا بیان کړې شوې دې چې دلته د النار نه مراد د جهنم هغه طبقه ده چې کومه
 د کافرانو د پاره تیاره شوې ده.نه چې هغه طبقه چې کومه د ګناهګار اهل توحید د پاره تیاره شوې ده.

② حضرت حسن بصري کيني ان ذلك لين قال الكلية وادى حقها وفريضتها يعنى دا حكم د هغه كس د پاره دې چې دې كلمې ونيلو نه پس ددې حقوق او فرانص هم په خانې راوړي ‹ (،

﴿ يو مطلب دا هم كيدې شي چې ددې كلمي تاثير په حقيقت كښې هم دغه دې چې اور به حرام كړې شي په دې شرط چې د دې كلمي تاثير په حقيقت كښې هم دغه دې چې اور به حرام كړې شي په دې شرط چې څه مانع موجود نه وي، كه څه مانع وي نو ددې كلمي به بيا دا اثر نه وي، او كړې ده خو رخ وي هغه طرف ته رواني وي ليكن كه څوك بند اولكوي نو او درېږي او چې هغه بند لرې كړېشي نو بيا په خپل رخ باندې رواني شي، دغه شان ددې كلمي خاصيت دې چې په هغه به جهنم حرام كړي او جنت ته به ني بوځي، په دې شرط چې دې خاصيت لره بندولو والا څه څيز يا عمل ظاهر نه شي، كه يو عمل داسي ښكاره شي او هغه طاقتور وي نو ددې خاصيت به منع كړى او چې كله ددې عمل اثر ختم شي نو ددې كلمي اثر خاصيت به ښكاره شي.

م کې د ملې سلې و ته تا پيدې بېدار سلي او د اثر د ختميدو دوه صورتونه دی.يو صورت دادې چې الله تعالى ئې په خپل کړم سره لرې کړې او دويم صورت دادې چې سړې به عذاب او څکې او د سزا څکلو نه پس به هغه روکاوټ

ختم شي بهرحال ددې كلمي اثر به خامخا ښكاره كيږي والله سمحانه وتعالى اعلم

قوله: قال: يا رسول الله افلا اخبر به الناس فيستبشرو؟: حضرت معاذ لَيْتُو عرض او كير على الله الله الله الله الله الله الله عرض الله على الله على عرض الله عرض ا

قوله: قَال: اذًا يتكلوا: هغوى ارشاد اوفرمائيل چې بيا به خلق په اعتماد كولوسره په اعمالو كڼې كولسره په

په عامو نسخو کښې نيستېشهوا د نون حذف سره دې او د ابوذر په سمخه کښې نيستېشهون[.] په اثبات دنون دې

په اولنی صورت کښې نیسته ها د دان ناصبه مقدره د وجه منصوب دې او په دویم صورت کښې به تقدیری عبارت داسې وی فهم یسته هان د)

اذايتكلوا ان الحبرتهم يتكلوا به معنى باندې ده (")،

د اصیلی او کشمهینی نسخو مطابق دا لفظ 'یتکلوا' نون سره دې چې د هغې معنی انکار ده، مطلب دادې چې بیا به خو خلق د عمل نه انګار اوکړی ()

۱) عمدة القاري(۲۰۸٬۲۰۸/۲) رفتح الباري(۲۲۶٬۲۲۷/۱)-

⁾ فتح الباري(أ/٢٢٧٩ وتحفة الباري لشيخ الاسلام زكرياً الانصاري(١٤٣/١)-

[&]quot;) حوّاله بالا

^{ً)} حواله بالا

په مسند بزار کښې د حضرت ابوسعید خدری گند دا حدیث مروی دې چې حضوریاک گل یو ورځ اوفرمائیل من قال: لا الله الاالله دځل الجنة په دې باندې حضرت معاذ گند د حضوریاک گل د خلقو د خوشحالولو په غرض اجازت اوغوښتلو،نو هغوی اجازت ورکړو. هغه په خوشحالئ زر اوتلو. په لار کښې حضرت عمر گند سره میلاؤ شولو، هغوی تپوس او کړو څه خبره ده؟ حضرت معاذ گند ورته هغه خبره او کړه، حضرت عمر گند اوفرمائیل چې تندی مه کوه لر هسار شه، بیا هغه د حضوریاک کنل په خدمت کښې حاضر شو او تپوس نې او کړو چې اې د الله نبی کنل هم ستاسو راتې افضله ده،خو بیا هم خما رانې داده چې خلق دا خوشخبری واوری نو په اعتماد سره به کینی او عمل به نه کوی. هغوی کا اوفرمائیل چې هغوای سال اوفرمائیل چې هغوای پا وفرمائیل چې

قوله: واخبرهها معيا ذعن موته تأثميا: حضرت معاذ اللي د وفات په وخت کښي خان د ګناه نه بچ کولو په غرض خلقو ته ددې خبر ورکړو

موته کښې ضمير حضرت معاذ تاتو ته راجع دې،علامه کرماني کښځ فرماني چې دا احتمال هم دې چې ضمير حضورياک تا طرف ته راجع وي (آپه اول صورت کښې به عند موته مطلب دا وي تهل موت النبي تاليم مطلب دا وي تهل موت النبي تاليم س

دا خبره خود احتمال د حده پورې رشتیا ده خوبیا هم صحیح دلته اولنې صورت دې (م.خکه چې په مسند احمد کښې د جابر تا و د صحیح روایت دې هغوی فرمانی اخبرنامن شهد معاذا حین حضرته الوفاة یقول: اکشفواعنی سجف القبة احداثکم حدیثا سبعته من رسول الله لم پینعنی ان احداثکم الاان تتکوان (۲)

تاثم د باب تفعیل مصدر دې په دې کښې د سلب عن ماخذ یا خروج عن الشيء خاصیت ښکاریږي ګویا تاثما معنی خروجاعن الاثم دلا او مطلب به دا وی چې حضرت معاذ تا الله وفات په وخت کښې د وفات په وخت کښې د

په باب تفعل کښي د دخول في الشي و خاصيت معلوميږي، په دغه اعتبار سره تقديري عبارت به دا وي اغيريها معادعت موته مخافق الدخول في الاثم يعني په ګناه کښي د داخليد لو د ويره نه ئې

⁾ كشف الاستار عن زواند البزار(١٢/١) رقنم(٨)كتاب الايمان باب توحيد الله وسبحانه)-

⁾ شرح الكرماني(١٥٥/١)-

^{ً)} فتح البارى (٢٢٧/١)-

⁾ مسند احمد(۲۲۷/۵) رقم(۲۲٤۱۰)-

م) المستدى في تاج العروس (١٧٩/٨) مادة "اثم" "بتائم الرجل: تاب منه اي:من الاثم واستغفر منه وهو على السلب كانه سلب ذات الاثم بالتوبة والاستغفار او رام ذلك بهما وايضا فعل خرج به من الاثم كما يقال: تحرج اذا فعل فعلا خرج به من الحرج وفي حديث معاذ فاخبر بها عند موته تائما") -

د منع کولو باوجود حضرت معاذ تالئو دا حدیث د خلقو مخکښې ولې بیان کړو؟ دلته سوال پیدا کیږي چې کله حضورپاک تالئو حضرت معاذ تالئو ته دا فرمانیلې وو چې خلقو ته مه واید. که دې اوونیلو نو خلق به په دې باندې بهروسه او کړی نو حضرت معاذ تالئو ته کتمان علم ویره

ددې ډير جوابونه ورکړې شوې دی:

① قاضی عیاض فرمانی چی حضرت معاذ الله د حضوریاک الله منع کول په حرام والی باندې اونه ګڼړله، بلکه هغوی دا او ګڼړله چې په ما کښې د زیری کومه اراده پیدا شوې ده د هغې ختيميدل ئې مقصود دي. (١)

①کیدې شی چې د ابوهریره ﷺ هغه قصی (۲ رجي په هغې کښې حضورپاک ﷺ هغوی ته د زیری ور کولو اجازت ور کړې وو، د حضرت معاذ ﷺ ددې واقعې نه پس وی لهذا هغوی دغه واقعې لره ناسخه او خپله منسوخه اوګڼړله،او دغه شان نې په آخری وخت کښې نې دا حدیث د خاتر سرخک د دا د د خلقو په مخکښي نقل کړو

 کیدېشي چې د منع تعلق على وچه العموم وى د مخصوص خلقو په مخکښې د بيانيدلو نه منع نه وي(')

خوپه دې ټولو جوابونو باندې اعتراض دي

چنانچه په اُولنی جَواب اشکال دا دې چې کله په روايت کښې ښکاره منع موجود دهر ً)نو دا د عظيمت ماتولو باندې ولي واخستلي شو؟

دغه شان په دويم جوآب آشكال دادې چې راروان روايت نه دا په ذهن كښې راخي،چې د ابوهريره ناتل واقعه د معاد ناتل د واقعي نه محكنيي وه،ځكه چې د حضرت ابوهريره غاتل په حدُّيثُ كُنبَي دى چې حضورياك ﷺ هغوى ته ارشاد اوفرمائيلو چې لاړ شه؛ چې كوم خلق دې باغ نه بهر دي ټولو ته اطلاع ورکړه چې څوک لا اله الا الله يقين سره اووائي الله تعالى به هغه جنت ته داخله وي،هغوى د باغ نه وتلو کښې وو چې حضرت عمر اللي ورته لار کښې ميلاؤ شو،هغوی ته چې کله معلومه شوه نو ابوهريره تاڅنځ نې په زوره منع کړلو او د حضورياک ﷺ په خُدُمت كُنِّسي حَاضِر شو او وجه ني ورته أوښودله چې يا رسول الله؛ مكوه چې خلق عمل کوی!هسی نه خلق په دې باندې بهروسه شروع کړی،نو هغویﷺ اجازت ورکولو سره اوفرمائيل فخلهم ٢٠

⁾ فتح البارى(٢٢٨/١)-

⁾ صحيح مسلم كتاب الايمان باب الدليل على ان من مات على التوحيد دخل الجنة قطعا رقم(١٤٧)-ً) فتح الباري(١/٢٢٨)-

 ⁾ كما في روايت سابق "الا اني اخاف ان يتكلوا")-

هُ صحيح المسلم كتاب الايمان بأب الدليل على ان من مات على التوحيد دخل الجنة قطعا رقم (١٤٧)-

چنانچه روستو بیا هغوی هم دغه مفهوم او مضمون حضرت انس اللی ته په خطاب کښی اوفرمانیلو،په هغی کښی هغوی خلقو ته د اورولو حکم صرف دا چې ور ئې نه کړو بلکه د معاذ گره تبشیر جذبه نې هم یخه کړه،

ددې نه علاوه صرف د احتمال د وجه نسخ ثابتيږي ناد^۱ ،

اُو په دريم جواب اشكال دادې چې په مسند احمد كښې راغلې دى چې حضرت معاذ الله د خپل وفات په وخت كښې ارشاد اوفرمائيلو چې خلق ماته راوغواړني هر كله چې ټول راغلل نو هغوى دا حديث واورولورا)

لهذا دا به اوونیلې شی چې حضرت معاذ تا او او او او کنړله چې دا نهی تحریمی نه ده بلکه تنزیهی ده،او د منع کیدو وجه د سستوالی ویره ده،او سستوالی په شروع کښې وی،هرکله چې سړې د اعمالو شوقی او عادتی نه وی،او چې کله دا اعمالو عادی شی نو بیا سستوالې نه وی په خپله په هغه کښې د تابعدارنۍ شوق پیدا شی بیا یې په خپله کوي.

گویاً په شروع کښې د سستوالي ویړه وه، په اعمالو کښې د کموالي اندیښته وه، دې نه پس دا خطره ختمه شوه او معاد تاتو او معند علت باقی پاتی نه شو، لهذا که چرې دا حدیث بیان نه کړې شو نو د کتمان علم د ګناه خطره ده والمهاعلم یو اعتراض او د هغې جواب دلته د یو اعتراض حواب په خیال کښې راغلو، اعتراض دادې

يو اعتراض او د هغې جواب دلته د يو اعتراض جواب په خيال کښې راغلو، اعتراض دادې چې هر کله حضرت معاذ الله کتمان علم د ګناه نه د وتلو اراده او کړه او د هغې د وجې ئې حديث بيان کړو نو هغه ته دا خيال ولې رانغلو چې د حديث بيان کيدو په صورت کښې د حضورباک الله د صفا منع کولو مخالفت ګناه لارمېږي؟

نو ددې جواب دادې چې هغوی ته دا علم وو چې د حضورپاک گهر دا منع کول د اتکال په قید سره وو هرکله چې د قید یعنی سستو الی ختم شو ،نو مقید هم ختم شور آ ٍوالله اعلم.

(٧٧١) حَدَّنَهُ مُمَّدَّدُ قَالَ حَدَّنَهُ الْمُعُثَّرِهُ قَالَ سَمِعْتُ أَبِي قَالَ سَمِعْتُ أَنَّسا قَالَ ذُكِرَلِ أَنَّ النَّبِي - صلى الله عليه وسلم - قَالَ لِمُعَاذِ «مَنْ لَقِي اللَّهَ لاَيُسْمِكُ بِهِ شَيْشًا دَعَلَ الْجُنَّةَ». قَالَ الْأَلْثِيْرُ النَّاسَ قَالَ «لاَ، إِنِّي أَخَافُ أَنْ يَتَّكِلُوا»

ً) شرح الكرماني(١٥٤/٢)-

أ) قال السخاوى فى فتح العفيث(٥٢/٤ بحث الناسخ والمنسوخ) فقال الشافعى فيما رواه البيهقى فى السخال من طريقه ولا يستدل على الناسخ والمنسوخ الا بخير عن رسول الله كالله او بوقت يدل على ان احدها بعد الآخر او يقول من سمع الحديث يعنى من الصحابة او العامة الاجماع هو. كما قال المصنف اوضح أوشهر اذا النسخ لا يصار اليه باالاجتهاد والراى وانما يصار اليه عند معرفة التاريخ")-

⁾ عَن معاذبن جبل انه أذ حضر قال:أدخلو على الناس فادخلو عليه فقال:أنى سمعت رسول الله كالله يقول:من مات لا يشرك بالله شيئا جعله الله في الجنة وما كنت احدثكموه الاعند الموت.الشهيد على ذلك عويم وابوالدرداء فاتو اباالدرداء. فقال:صدق اخى،وما كان يحدثكم به الاعند موته مسنداحمد(٤٥٠/۶) رقم(٢٨٠٩٨) احاديث ابى الدرداء)

رجال الحديث

①مسدد:دا مسدد بن مسرهد بن مسربل بن مرعبل الاسدى البصرى ﷺ دي،ابوالحسن ددوی کنیت دی 🖒

منصور بن عبداً لله خالدي ددوي نسب نامه داسي ذكر كړې ده مسدد بن مسرهدين مسريل بن مغربل بن مرعِبل بن ارندل بن سرندل.بن غرندلَ بن ماسِّکُ بن مستور دالاسدي، ﴿ ٓ

خو حافظ دهبي کیلی فرمائي چې د نسب دا چلیدل میکر او عجیبه ده او ښکاري چې دا د ځاننه جوړه شوي ده، او منصور د اعتماد قابل نه دې (٦)،

بعضى خلقو ونيلى دى چى د هغوى نوم عبدالملك بن عبدالعزيز وورا مگويا مسدد لقب دى دوی د مهدی بن میمون، حمادبن زید، عبدالله بن یحیی بن ابی کثیر، هشیم، عبدالوارث، ابوعوانه، ابوالاحوص، معتمر، سفيان بن عيينه، فضيل بن عياض، يحيى القطان، عيسى بن يونس، وكيع او د هغوي والد الجراح بن مليح تيني وغيره نه روايت كوي.

دده نه روایت کوونکو کښي امام بخاري، امام آبوداود ،ابوذرعه، ابوحاتم، يعقوب بن سفيان الفسوى، يعقوب بن شيبه السدوسي، ابواسحاق، جوزجاني، محمد بن يحيى ذهلي او احمد بن عبدالله عجمي المنطخ وغيره حضرات دي^۵ ،

يحيى بن القطان فرمائي چې ځه د ده كور ته لاړ شم او ده ته حديثونه اوروم نو دې د هغې اهل دې (۲٫ امام احمدبن حنبل كينية فرماني مسدد صدوق، فهاكنت عنه فلا تعدر كيعني مسدد رشتوني دي دده نه چې څوک حديثونه ليکې نو بل چاته د تلو ضرورت نشته

امام يحيى بن معين ﷺ فرمائي (صلاق) ^دغه شان هغوي فرمائي (انه تعة تعة رُ امام نسائى مىلىد فرمائى لقة ز) امام عجلى مىلة فرمائى مسدد مى دائة زا

امام ابوحاتم والميكة فرمائى كان ثقة (")

```
') التاريح الكبير للبخاري(٧٢/٨) رقم(٢٢٠٩)-
```

۱ً) کتاب الجرح والتعدیل لابن ابی حاتم(۵۰۰/۸)رقم(۱۵۳۰۵)-

⁾ سيراعَلام النبلاء (٥٩٤/١٠) تهذيب التهذيب (١٠٩/١٠)-

⁾ سيراعلام النبلاء (١٠/٤٩٥)-

¹) تهذيب التهذيب(١٠٩/١٠)-

^۵) تهذيب الكمال(۲۷/۵۶ ٤ ، ٤ ٤ ٤) وسيراعلام النبلاء (٥٩١،٥٩٢/١٠)-

⁾ تهذيب الكمال(٤٤٩/٢٨)-

⁾ حواله بالا)-

م حواله بالا)-

^{ً)} حواله بالا)-

۱ حواله بالا) –

١١) تهذيب الكمال(٢٨/٢٨)-

'') الطبقات (ج٧ص٢٩٠)_

```
ابن قانع بميني فرمائى كان ثقة 🖒
                              امام ابن حبان مُنظِ دوى به كتاب الثقات كنبي ذكر كړى دى ١٠
             حافظ ذهبي فرماني الامام الحافظ الحجة .. احداعلام الحديث وكان من الاتبة الاثباتير
                                                    حافظ ابن حجر فرماني (لقة حافظ) رأ
                           په بصره کښې د ټولو نه مخکښې مسند ليکونکي هم دې ووا<sup>ه</sup>،
                          ۲۲۸ هجرئی کښې ددوي انتقال اوشور ۲۲۸ هجرئي کښې ددوي انتقال اوشور
 🕝 معتمر: دا ابو معتمر بن سليمان بن طرخان تيمي بصري الله دې ددوي لقب طفيل وو. د
 بنومره مولي وو، بنوتميم كښې د اوسيدو د وجه تيمي رابللې شو، ګني په حقيقت كښې د
                                                                       بنوتميم نه وو(<sup>۲</sup>)
 دوى د خپل پلار سليمان بن طرخان،منصور بن المعتمر، ايوب سختياني، حميد الطويل،
عمروبن ديناربصري، ليث بن ابي سليم، خالد الخذاء، اشعث بن عبدالملك، عاصم
                      الاحول، يونس بن عبيد او اسحاق بن سويد التيم وغيره نه روايت كوي
ددوي نه امام عبدالله بن مبارك، عبدالرزاق بن همام صنعاني، عبدالله بن مسلمه القعنبي،
امام اصمعی، یحیی بن یحیی نیسابوری. مسدد بن مسرهدً. محمدبن السلام البیکندی.
  ابوكريب محمد بن العلاء ابوسلمه بن اسماعيل اوامام احمد بن حنبل فينم وغيره روايت كوي ^
               امام يحيني بن معين فرماني القة (أ) ابوحاتم على فرمائي ,, لقة صدوق،، ون
قرة بن خالد كيني ومائي ,, ما معتبرعنها دون سليان التيبي، ، ـ ( ۱ ) يعني ,,معتمر ، . زمونو په
                                                    نيزدسليمان التيمي نه كم نه دي،، ـ
                                                  ابن سعد مين فرمائى ,, كان تقه،، (٢٠)
                                                           ) تهذيب التهذيب(١٠٩/١٠)-
                                                            اً) الثقات لابن حبان(٢٠٠/٩)-
                                                           ) سيراعلام النبلاء (٥٩١/١٠)-
                                                  ) تقريب التهذيب (ص٥٢٨) رقم (٤٥٩٨) -
                                                           م) تهذیب التهذیب(۱۰۹/۱۰)-
                                           ) التاريخ الكبير للبخاري(٧٢،٧٣/٨)رقم(٢٢٠٩)-
                                                            ) تهذيب الكمال(٢٨/٢٨)-
                                                        م تهذيب الكمال(٢٨/٢٥٣، ٢٥٠)-
                                                            ) تهذيب الكمال(٢٨/٢٨)-
                                         ) الجرح والتعديل (ج٨ص٤٤١)، رقم (١٥١٥٢)_
                                                                       '') حواله بالا _
```

امام عجلی میشی فرمائی ,, بسری ثقة،، _()

امام احمد كينية فرماني ,, ماكان احفظ معتبرين سلمان، قلما كنا نساله عن شي الاعند وفيه شي، ، ، ، ، ، ، حافظ ذهبي يُعَلِي فرمائي ,,احدالثقات الاعلام،، (٦)

دغه شان هغوى فرمائي ,,كان راسا في العلم والعبادة كأبيه، ، - , "بعني ,, دخپل و الدپشان دي هم په علم اوعبادت كښې فائق وو، ،_ حافظ ابن حجر پَيْنَيُّ فرماني ,,لُقة،،_(٥)

البته امام يحيني القطان يُمُثِيُّ فرمائي ,, اذاحدثكم المعتمريشيخ فاعهضوه، فانه سيخ الحفظ، _ (') يعنى ,,معتمرَّچى كله تاسوته حديث بيانوى نودې لره هغې نورو احاديثوسره موازنه كوئ،څكهچې دې دحافظه په اعتبار سره كمزورې دې،،۔

دغه شان ابن دحیه هم دامام ابن معین ﷺ نه نقل کړی دی ٫٫لیس بحجة، ٫٫٬

دغه شان ابن خراش وائي ,,صدوق ينطشي من حفظه، واذحدث من كتابه فهوثقة، ، _ ^) ليكن حافظ

ذهبي منه ده ده په باره كښى ددې قسمه اقوال نقل كولوسره فرمانى ، هولتقة مطلقا، () داعين ممكنه ده چې امام يحيى القطان كيستى دهغه صرف دحافظه په بنياد باندې دروايت شده احاديثويد باره كمبنى فرمائيلي وي، دامام يحيى بن معين ميل تبصره هم يه دي باندې محمول كولوشي ځكه چې په خپله هم دهغه نه ددۀ توثيق منقول دې. كوم چې مونږ ذكركړې دې ــُ

بيا حافظ ابن حجر يهي فرمائى ,,اكثرمااخهجه له الهخارى مهاتوبع عليه، واحتجهه الجماعة، (١٠٠٠ یعنی ,, امام بخاری پیشه چی دهغه نه کوم احادیث روایت کړی دی داکثرو متابعت موجود دې او دهغې سره ټولواصحاب اصول سته احتجاج کړې دې،، ّــ ابن حبان ﷺ هم دې په کتاب الثقات کښې ذکر کړې دې ـ (`)

ددة انتقال كال ۱۸۷ هجرې كښې شوې دې_(۲۰ سے رحمه الله تعالى رحمة واسعة

⁾ تهذیب التهذیب (ج۱۰ص۲۸)_

^{ً)} حواله بالا _

ميزان الاعتدال (ج عُص ٢٤٢)، رقم (٨۶٤٨)_

¹) الكاشف (ج ٣٢٧٩)، رقم (٥٥٤۶)_

م) تقریب التهذیب (ص۵۳۹)، رقم (۶۷۸۵)_

مُ تهذیب التهذیب (ج۱۰ص۲۲۸)_) ميزان الاعتدال (ج £ص١٤٢)، رقم (٨۶٤٨)_

م حواله بالا _

^{°)} حواله بالا_

^۱) هدى السارى (ص ^{‡ ‡ ‡})_

۱۱) الثقات لابن حبان (ج٧ص٥٢١. ٥٢٢)_

۱۲) تهذيب الكمال (ج۲۸ ص۲۵۵)

آبان دا دمتمربن سلیمان والد سلیمان بن طرخان () تیمی بصری کنت دی، اصلا قبیله تیم سره دده سره تعلق نعلق دی، اصلا قبیله تیم سره دده سره تعلق نعلق به دری کنبی پاتی شوی وو ددی وجی نه د. تیمی، نسبت سره مورف شور ()

دي دحضرت انس الله علاوه ابوعثمان نهدى، يزيد بن عبدالله بن الشخير، امام طاؤس، المحلز، يحيى بن يعمر، بكربن عبدالله المزنى، حسن بصرى، ثابت بنانى قتاده، رقبه بن المعلم يعلق وغيره نه روايت كوى _ المحلم يعلق وغيره نه روايت كوى _ المحلم على معتمد بن سليمان، شعبه بن الحجاج، المحتمد بن سليمان، شعبه بن الحجاج،

او د دوی نه روایت کونکوکنبی ابواسحاق سبیعی،معتمرین سلیمان،شعبه بن الحجاج، سفیان ثوری،حمادبن سلمه،یزیدبن زریع، عبدالله بن المبارک،هشیم بن بشیر، سفیان بن عیینه،اسماعیل بن علیه،یحیی القطان،محمد بن فضیل اویزیدبن هارون تُلَّام وغیره ډیر حضرات دی۔ ()

امام شعبه مُنْ في فرمائى ,,مارايت احدا اصدق من سيلهان التيمى، _ رَّ ، يعنى ,. مادسليمان تيمى ندلوئ خُوک صادق ند دې موندلې ، _

امام احمدبن حنبل،امام يحيى بن معين او امام نسائي ثَوْلَيُّ فرمائي • وثَقَة،، _ (^ق،

امام عجلي مُنتُخ فرماني ,, تابعی ثقة دکان من خیار اهل البصرة _ (' ، یعنی ,.دا تابعی اوثقه دې او د دوی شمیر داهل بصره په صالح ترین خلقو کښې کیږی، ، _

امام ابن سعد كيني فرمائي ,, وكان ثقة كثير الحديث،، . ()

سفيان ثورى مُحَيِّدُ فرمائى ,, حفاظ البصريين ثلاثة: سليان التيسى، وعاصم الاحول، وداود بن ان هند، وكان عاصم احقظهم، _ (^) يعنى ,, دبصرى اعلى ترين حافظ حديث درې دى يوسليمان تيمى، دويم عاصم الاحول، دريم داود بن ابى هند، بيا په دې ټولو كښى عاصم د ټولونه زيات احفظ دى، ، _

⁾ در, طرحان.. د تلفظ په سلسله کښې علامه مجد الدین فیروز آبادی او علامه زبیدی گیمینی فرمانی , (طرحان بالفتح ولاتف) انت (ولاتکسر.وان فعله السحدثون) والصواب : الاقتصار علی الفتح... تاج العروس (۲۳۲ کی ۲۹۰) کے حافظ ابن حجرگیمینی په هدی الساری کښې , طامه. باندې صرف کسره ضبط کړې ده او کورئ (۲۲۲) او حافظ مغلطانی گیمینی د ابوعلی جیانی گیمینی کتاب , , تقلید العهال. نه نقل کړۍ دی , , طرخان بکسرالطاء العهله ویقال : بضمها.. او کورئ اکسال تهذیب الکسال (چ کمس ۲۰۰) ال او کورئ تهذیب الکسال (۲۲ س۵)

⁾ او طوری محلیب المساق کی . ") دشیوخو او تلامذه دیاره او گورئ تهذیب الکمال (ج۱۲ص۸)_

⁾ تهذيب الكمال (ج١٢ص٨)_

في تهذيب الكمال (ج٢ ١ ص ٨)_ *

⁾ تهذيب الكمال (ج٢ اص٨)_

[&]quot;) الطبقات الكبرى (ح٢ص ٢٥٢)_) تهذيب الكسال (ج٢٢ص ٩). والجرح والتعديل (ج٤ص ١٢١)_.وقم (٥٥٥٨)_

ابن حبَّان كيني به كتاب الثقات كبني فرمائي .. كان من حباد اهل البصمة وصالعيهم ثقة، واتقانا، وحفظا، وسنة،، ﴿،

امام دارقطنی گینتهٔ دوی لره ثقه،، او رجل حافظ گرزولی دې٠٠٠ 🖒

حافظ ذهبي مُنتِيرً فرمائي ..الامام احدالاثبات،،_("،

حافظ ابن حجر كيني فرماني ,,لثقة عابد،،_"، البته امام يحيى بن معين ﷺ نه منقول دى چې دوى به تدليس كولو_ (٥٠

غالبا هم دا وجه ده چې امام بخاري ميميني فرماني .. وما روي عن الحسن وابن سيرين فهوصالح اذا

قال: سبعت اوقلت،،__(^۲)

سليمان تيمي ﷺ د پيرو تابعينونه روايت كوي. ليكن علماؤ ددې تصريح كړې ده چې ده ته ددوی نه سماع حاصله نه ده.دغه شان سلیمان تیمی دنافع، عطاء عکرمه،اوسعید بن المسيب نه چي کوم رواياتونه نقل کوي هغه مراسيل دي _ (^)

اودوى دحضرت انس اللا نه روايت كوى،نوحافظ ابن حجر مُريك ،بسليان عن ابي مجلزعن

انس،،په طريق سره مروى ديوروايت لاندې فرمائي :

و وقده تقدم في و وباب الحدد للعاطس و ولسليان التيمي حديث عن انس بلا واسطة ، وقد سمع من انس عدة احادیث،، وروی عن اصحابه عنه عدة احادیث و قیه دلالة علی انه لم یدلس،، $_{-}(^{\wedge})$

يعني ,,د سليمان تيمي يوحديث كوم چې هغه دحضرت انس ﴿ لَأُنَّوُ نه بلاواسطه نقل فرمائي ,, پاب الحبد للعاطس،، كښې تير شوې دې، دې دحضرت انس ﷺ نه بلا واسطه څو احاديث

رُواَیت کوی. اوډیر روایاتُونه هم دحضرت انس اللہ نه بالواسطه روایت کوی ـ اودا ددې خېرې دليل دې چې دې تدليس نه کوي،،_

. دوي تدليس _ على سبيل التسليم _ داسې ووچې علماؤ ددې تحمل کړې دې، دغه شان حافظ مزي پيځ ددوي دتدليس هړو څه ذکر نه دې کړې _

اكمال تهذیب الكمال لمغلطای (ج۶ص۷۰) و تهذیب التهذیب (ج٤ص۲۰۲)_

^{ً)} تعليقات تهذيب الكمال (ج١٢ص١٣)_ ") ميزان الاعتدال (ج٢ص٢١٢) رقم (٣٤٨١)_

ئ) تقریب التهذیب (ص۲۲۵)، رقم (۲۵۷۵)_

ثم كما في رواية الدوري عن ابن معين _ انظر تعليقات الكاشف (ج ١ص٤٤). رقم (٢١٠٢) _

التاريخ الكبير(ج ٤ص٢١) رقم (١٨٢٨). وفي تهذيب التهذّيب (ج ٤ص٢٠٢) : ..اذا قال :سمعت

۱) اوګورئ تهذیب التهذیب ح ۶ص۲۰۲۰۳)_

منح البارى (ج ۱ اص ۲۳). كتاب الاستندان باب آية الحجاب

دغه شان حافظ ابن حجر کیلیے هم په ..هدی الساری.. کښې چې په کوم فصل کښې متکل فپه رواة د بخاری ذکر کړی دی هغې کښې نې ددوی تذکره نه ده کړې _

حافظ ابن حجر ميريك دى لره به خبله رساله .. تعريف اهل التقديس بمراتب الموصوفين بالتدليس، کښي ,,په مرتبه ثانيه، ،کښې ذکر کړې دی.او دا مرتبه دهغې حضراتو دپاره مخصوص ده كومو چى به ډير كم تدليس كولو ، او انمه ددوى دندليس تحمل كولوسره ددوى داحاديثويه

خېلو کتابونو کښې تخريج کړې دي ۔ () د دوی مناقب ېې شميره دی، د تفصيلي حالاتواو واقعاتو د پاره کتب سير اوخاص طور باندې "حلية الاولياء، () ته مراجعت او کړئ _

۱۴۳هجرې کښې هغوي وفات شوې دې _ (۲) رحمه الله تعالى رحمة داسعة

@ حضوت انس الشؤاد حضرت انس الملؤ حالات دكتاب الايمان، ١٠٠ باب من الايمان ان يحب لاغيه ما يحبالنفسه،،لاندې تيرشوي دي _(^).

قوله: قَالَ ذُكِرَ لِي أَنَّ النَّبِي -صلى الله عليه وسلم-قَالَ لِمُعَاذِ: حضرت انس و مائی چې ماته بيان شو چې حضور ناپيم حضرت معاذ اللي ته اوفرمانيل

دلته "ذكهل،، دمجهول صيغه ده، حافظ مُنظيٍّ فرمائي چې دحضرت انس كَلْتُلْوَته چا بيان كړو ؟ په يو طريق كښې هم ماته ددې صراحت ملاؤ نشو^(٥) دغه شان شاته دحضرت جابر شخ روايت تيرشوې دې،چې په هغې كښې هغه فرمائي ,, اځېرنا من شهد معاذا حين حضرته الوقا ة.....،، () په دې کښې هم د ,, من شهد،، مصداق څوک دې ؟ يقيني طور باندې معلوم نه دى، بِخبله براه راست دى دواړو حضراتو دحضرت معاذ اللي نددې حديث سماع معلومه نه ده، خُكُه چِي دّحضرت معّاد اللَّهُ انتقال په وخت شام كنبي كيدويه دغه وخت كنبي حضرت انس الليخ او حضرت جابر الليخ په مدينه منوره کښې وو ـ (٧)

البته دصحيح بخارى به كتاب الجهاد كبنى هم داسى يوروايت دحضرت معاذ المنوي نه مروى دي دمشهور مخضرمينونه دي كوم چې دهغوى نه عمروبن ميمون اودي مسلم نقل كوى، (أ) دې دمشهور مخضرمينونه

⁾ اوكورئ تعريف اهل التقديس بمراتب الموصوفين بالتدليس (ص١٣و٣٣) وتعليقات الكاشف (ج ۱ص٤٤). رقم (۲۱۰۲)_

⁾ اوګورئ حليه الاولياء (ج۳ص۲۷_۳۷<u>)</u>_

⁾ الكاشف (ج اص ٤٤١). رقم (٢١٠٢)_

^{ً)} کشف الباری (ج۲ص۶)_

⁾ فتح البارى (ج١ص٢٢٧)_

⁾ مسند احمد (ج۵ص۲۳۷)، رقم (۲۲٤۱۰)_

⁾ فتع البارى (ج ا ص٢٢٧)__

⁾ صحيح البغاري (ج ١ص ٤٠٠). كتاب الجهاد باب اسم الفرس والحمار. رقم (٢٨٥٤)_

دي، دغه شان امام نساني په سنن کبري کښي هم داسې قسمه روايت دحضرت معاذ ظافونه حضرت عبدالرحمن بن سمره ظافون تلاو نوي دا ددې دواړو روايتونونه استيناس کيديشي چې دلته حضرت انس اودغه شان دحضرت جابروړاندې نقل کولووالا عمروبن ميمون يا

غَبْدَالرحمن بن سَمره كَنِبَي به يووى _ أَ قوله: <u>مُرُ لَقِي اللَّهَ لاَيُمْهُ لَكُ بِهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ :</u> كوم سرى چى الله تعالى سره په دى حال كښى ملاؤ شى چى الله تعالى سره نى هيڅ څيزهم شريك نه نى جوړكړې نوهغه به جنت كښى داخليږى

بعضى حضرات وائى چى .. من لقى الله، نه مراددى .. من لقى الاجل الذى قدرة الله، يعنى البوت،، گويا دلقاء الله نه .. مرگ، مراد دى، داهم امكان دى چى . لقاء الله .. نه بعث . . يا ، رؤيت بارى ، مراد وى (آ) يعنى په كومه ورخ چى به دوباره ژوندى راپاسى . يا په كومه ورخ باندې چې به دالله تعالى رؤيت حاصليږى اوهغه كله شرك نه وى كړې نوهغه به جنت كښى داخليږى بيا دلته .. لايشك په شيئا،، كښى صرف په نفى اشتراك باندې اكتفاكړى شوى ده . داثبات توحيد ذكرنه دى كړې ، ليكن اقتضاء دلته .. توحيد . ملحوظ دې . دغه شان . توحيد . . سره سره اثبات رسالت او نورضروريات هم لزوما ملحوظ دى .

او دا داسې دي څنګه چې ونيلې کيږي ,,من توضاصحت صلاته،،_

اوددې مطّلب دا وی چُي چَا اُودُسُ اُوکَرُو اُودُنوروشرانطولحاظ نی هم اوساتی نوددهٔ مونخ به درست وی _

اوس به دمذکوره عبارت مطلب داوی چې دکوم سړی مرګ په داسې حال کښې راغلې وی چې هغه په هغې ټولوامورو باندې ايمان لری په کوموچې ايمان لرل ضروری وی نوهغه به جنت ته داخليري _ (^۱)

دلته د , وحل الجنة،، الفاظ دی، چې په کوم کښې د جنت د دخول عمومی خبر دې، که قبل التعذیب داخل وی او که بعد التعذیب، او ددې نه رومبی حدیث کښې , حمه الله علی النار،، الفاظ وونو هلته هغه مشهور اشکال راپیښ شوې وو د کوم تقریر چې مونږ کړې دې او وئیلې مو دی چې دې حدیث نه مرجنو استدلال کړې دې او ددې تردیدهم په تفصیل سره راغلې دې، لیکن دا اشکال به په دې حدیث باندې نه کیږي $_{-}$ (ه والله اعلم

ر) اوگورئ سنن النسانی الکبری (ج^۶۶ص۲۷۹). کتاب عمل الیوم واللیلة.باب ثواب من کان یشهد ان الا اله الا الله.رقم (۱۰۹۷۵_۱۰۹۷)_

^{ً)} فتع الباري (ج اص۲۲۷ و۲۲۲۸)_

⁾ قتع الباری (ج۱ص۲۲۷و۲۲۸)_]) فتع الباری (ج۱ص۲۲۲و۲۲۸)_

أ) فتح الباري (ج١ص٢٢٨)_

م فتح الباری (ج ۱ ص۲۲۸)_

اَكِثْيِمُ النَّــاسِ: حضرت معاذ ﷺ عرض اوكړوچې زهٔ هغې خلقوته

قوله قَـال «لاً»: نوهغوى او فرمائيل نه، يعنى خلقوته داخوشخبرى مه اوروه،

<u>اَخَـافُ أَنُ يَتَّكِلُوا » :</u> ماته ويره ده چې هغوى به په دې باندې تكيه اولګوى اوکبنی به۔

په بعضونسيخوکښي د ۱٫۱٫۰، لفظ موجود نه دې اوعبارت داسې دي ۷۰۰ اعاف ان پېکلوا،، په دې صورت کښې ياد ساتل پکار دي چې مطلب هم هغه دې کوم چې مونو شاته بيان کړې دې , يعنى، ، لا،، مستقل جمله ده او , اعاف ان يتكلوا،، جمله استينافيه ده _او مطلب دى ,,

وتهشهم، فال اخاف ان يتكلوا ١٠_()

دا خبره دحسن بن سفيان په مسندکښې په وضاحت سره راغلي ده. چې دهغې الفاظ دي "قال :لادعهم فلينتا فسوالي الاعبال، فاني اخاف ان يتكلوا،، ﴿ يعني ,,هغوى ته خوشخبري مه أوروه بلکه هغوی لره په اعمالوکښې ديوبل نه مخکښې کيدو ته پريګده،ځکه چې ماته ويره ده،چې هغوي به خوشخېري اوريدو سره په دې باندې تکيه اولګوي اوکيني به...

دحديث باب دترجمة الباب سره مناسبت : دمذكوره باب لاندې د دواړو حديثونو دترجمة الباب سره مطابقت بلكل واضح دي چې په هغې كښې دحضور اكرم ر الله عضرت معاد بن جبل ﷺ لره دعلم خبره ښودل اوبيا دعاموخلقو دښودنې نه منع کول مذکور دي _والله سمحاته وتعالىاعلم

.ه -باب:الْحَيَـاءِفِي الْعِلْم

د وحيا ، ، سره متعلق جمله امور مونږ په تفصيل سره شآته ذکر کړی دی۔ 🖰 باب سابق سره مناسبت : ددي باب دسابق باب سره مناسبت دا دې چې سابقه باب کښې

ذكردي چې په مخصوص حالت كښي ديوعلم خاص خاص خلقوسره تخصيص كيدشي ـ اوس په دې باب کښې امام بخاري کيلتا تنبيه کول غواړي چې کوم يو کس دا او کنړي چې دا علم دچاسره خاص دي، نودتپوس كولو نه دې حيا نه كوي چې دحيا دوجې نه كيني، بلكم ده لره پکار دی چې په هرصورت کښې دامور دینیه او امور دنیآویه متعلق سوال کوی اوپه دې

سلسله کښې دې د حيا نه کار نه اخلي ـ (*) والله اعلم_

مقصد دترجمة الباب المام بخارى ددى ترجمه نه څه بيانول غوښتل غواړى ؟

۱) فتح الباري (ج۱ص۲۲۸)_

^{ً)} فتع البارى (ج ١ ص٢٢٨)_

⁾ او كورئ كشف البارى (ج ١ص ٤٧١- ٤٧٩) كتاب الايمان باب امور الايمان

⁾ اوګورئ عمدۃ القاری (ج۲ص۲۰)_

كشف البّارى عن كتاب العلم

عام شارحین حافظ ابن حجراً علامه سندهی آ شاه ولی الله کیلی آ وغیره رائی دا ده چی امام بخاری کی و کی امام بخاری کی و کی الله کیلی دیا امام بخاری کی و کی العلم مذمت بیانول غواری او دا ښودل غواری چی علم کښی حیا نه ده کول پکار، خکه څوک چی په علم کښی حیا کوی هغه دعلم نه محرومی پی، د امام مجاهد اثر او بیا دحضرت ام سلمه کی اوایت او دحضرت ابن عمر کی واقعه ددی حیا دمنموم کیدو باندې دال دی۔

دستوم میدو باددی داردی خود ابن بطال، کرمانی، شیخ الاسلام زکریا انصاری، علامه عینی او حضرت کشمیری پینی و را رائی دا ده چی دلته د امام بخاری پینی غرض تفصیل دی چی بعضومواقعو کنبی حیا کول مذموم ده اوترک حیا محمود دی او په بعضی مقاماتو کنبی ترک حیا مذموم ده اوحیا کول

حمود ده _

چرته چې استعمال حيا مطلوب وي اوممدوح وي دهغې داثبات دپاره دحضرت ام سلمه نه او د مضرت ام سلمه نه او د مضرت ابن عمر نه او د مضرت ابن عمر نه او د مصرد دي او چرته چې ترک حيا مطلوب او محمود دي هلته د حضرت ابن ه نه او د امام مجاهد کښتو اثر نړې د کړکړې دې ـ

حضرت شیخ الهند من اله الهند من اله اله الهند معلومیوی چی عدم استحباب اواستحباب اواستحباب مقصود دی، کما مرح به ثمه نی هم اونه وئیل، په ظاهره باندی معلومیوی چی عدم استحباب مقصود دی، کما مرح به الاعلام اوقول دم جاهد منظم اوقول دم باندی معلومیوی چی ده ما ظاهره ده، خو د تامل نه پس دامعلومیوی چی د مولف په ذهن کښی ددی څه تفصیل شته، ددې اشار اتونه ښودل غواړی، خکه نی د ترجمه سره دحکم تصریح نه ده فرمانیلی، ارشاد ۱۰ ان الله لا یستحی من الحق ، سراسر حق او مسلم دی، خودمؤلف مقصود دا دی چی ددې معنی دا ده چی په وجه دحیا دعلم او تفقه نه محرومه پاتی نشی، دا مطلب نه دی چی جیا دی نه کوی او د تعلیم او تعلم په وخت دی حیا خاته نه پریږدی، چی څه وئیل غواړی بغیر دسوچ او فکر نه دی وائی، ، _

خلاصه دا چې په ترجمة الباب "العياعلى العلم،، كښې دوه خبرې قابل لحاظ دى، اصل دا چې دحيا دوجې نه دعلم اوتعلم نه محروم پاتې نشي اوپه دې كښې چاته تامل نشي كيدې، ددې دتائيد دپاره مزلف "ترجمه،، لاندې دمجاهد منظيم اثر اودحضرت صديقه اثر اوراد واوپودې باندې ننې قناعت او كړو۔

دونُم دا چې په تعلیم اوتعلم کښې حتی الوسع حیا کول مستحسن دی، یعنی مواقع حیا کښې خوهرګز دې داسې نه کوی چې دعلم نه محروم پاتي شی خودمحرومي نه دبچکیدوسره څومره چې حیا کولوشی نودامستحسن دی ، العیاء من الایمان، او ۱۰ العیاء عیرکله، په دې

') فتع البارى (ج ١ص٢٢٩)_

⁾ حاشية السندى على صحيح البخارى (ج ١ص٧١)_

⁾ أ) شرح تراجم ابواب صحيح البخاي (ص۱۶)_

⁾ او کموریٰ شرح صحیح البخاری لابن بطال (ج۱ص۲۱۰)_ وشرح الکرمانی (ج۲ص۱۶۰)_ و تحفهٔ الباری (ج۱ص۱۶۵) _ وعمدة القاری (ج۲ص۲۰) وفیض الباری (ج۲ص۲۲)_

جز، کښې قدرې خفاء ده او دمولف دطرز نه معلوميږی چې مقصود اصلی ددې جزء بيان کول دی۔

اوپه دې باب کښې نې دوه حديثونه بيان کړې دې. هغه دواړه ددې جز، دليلونه دې په اول حديث کښې چې کوم ححضرت ام سليم نځه قصه مذکور ده دهغې نه خوبالبداهت دحيا ثبوت دوباره او دريم باره کيږي، او ګورئ ام سليم چې حاضره شوه اوقبل السوال نې چې کوم غرض او کړو. يا رسل الله، ان الله لا يستحيى من الحق، داحيا نه ده نوڅه دې ؟ حضرت ام سلمه خخ نه نسبت دې .. قفطت امر سلمة وجهها، نوهغوى اوفرمائيل ۱۰ تريت پينګ فيم يشههها والدها، او الله د .. تريت پينګ فيم يشبهها والدها، د تعليم او تعلم فرض چې څنګه کيدې شوادا، نې کړو اومقصود لره نې فوت کيدو ته پرې نه خود د تعليم او تعلم فرض چې څنګه کيدې شوادا، نې کړو اومقصود لره نې فوت کيدو ته پرې نه خود استحيا فام هم ده چې ددې باب نه پس دويم باب .. من استحيا فام هم په په يا د محضرت على نځ و واي ترک کولوکني څه حرج بيان کړې دې _چې دهغې نه معلوميږي چې په وجه دحيا نه دسؤال ترک کولوکني څه حرج نشته، البته پکاردې چې دبل چا په وسطه سره دحکم شرعى نه ځان خبر کړې شي، دعلم نه محرومه پاتي نشي -

قوله: وَقَالَ خُجَاهِدٌ لاَ يَتَعَلَّمُ الْعِلْمَ مُسْتَحُن وَلاَ مُسْتَكُيدٌ: امام مجاهد مُسَلَّة فرمانى حيا كولو والاعلم نشى حاصلولي أو دتكبر كولو والآ-

امام مجاهدبن جبر مكى ويلي حالات هم په كتاب العلم كښى ,,پاب الفهم العلم، لاتدي

⁾ الابواب والتراجم (ص۵۹او^{۶۰})-

تیرشوی دی

ىيرسوي دى . . . دامام مجاهد رحمة الله ددى اثر تخريع . دامام مجاهد ئينين مذكوره اثر لره ابو نعيم تمنيني په ..

حلية الاولياء، امام دارمي كيني بدخيل .. ستن، كنبي عبدالغنى بن سعيد كنني به .. ادب المحدث، كنبي او امام بيهقي كيني به ١٠ المدخل، كنبي موصولاتخريج كري دي - ()

همانه انتها و امام بیهمان دید په استان است. **د مذکو ره اثر مطلب** دامام مجاهد نمای مذکوره اثرمطلب واضحه دې چې کوم سړی کښې. حیا وی یا تکبر وی هغه علم نشی حاصلولي ـ

د. حيا،، مطلب دا دې چې طالب علم په خپل زړه کښې دا اوګنړې چې که ما دسوال اوکړو نو خلق به څه واني چې ده ته خوڅه هم نه دې معلوم. ده ته خو دا وړه شان خبره هم نه ده معلومه_ اومتکبره سړې دا فکر کوي اوهو: که زهٔ سوال کوم نودخلقویه وړاندې به زما سپکاوې وي اوزهٔ به سپک اوګنړلې شم. حالانکه زما په وړاندې دنور خلقو څه حیثیت دې

علامه عينى يُولِيُّ فرمائى ,,وللعلم آفات، فاعظمها: الاستنكاف، وثبرته: الجهل والنلق في الديباوالا خرة،،_ (٢) يعنى ,,علم سره ډير آفتونه لكيدلى دى. به دې كښې د ټولونه لوى آفت تكبر دې او ددې نتيجه جهالت سره سره په دنيا او آخرت كښې ذلت ظاهريږي، ._

امام ابوحنيفه نُحِيَّتُكِ نه چا تپوس اوكړو چې دا عظيم علم تاسو خَنگه حاصل كړو؟ نو ونى فرمائيل .. ما بخلت بهلافادة ولااستتكفت من الاستفادة، _رًً، يعنى ..ما نورو ته علمى فائده رسولوكښى بخل نه دى كړې او نه ما دبل چانه په استفاده كولوكښى عار نه دې اوكنړلو،.. قولمه: وَقَالَتُ عَالُشَةُ نِعْمَ النِّسَاءُ لِنَسَاءُ الأَنْصَارَ لَمُركَمُنْعُهُنَّ الْحَيَاءُ أَنُ يَتَفَقَّهُنَ

<u>في اللّايور :</u> حضرت عائشه ﷺ فرماني چې دانصارو زنانه څه ډيرېښې دی ددين دپوهې په سلسله کښې هغوی لره حيا نه مانع کيږي _

دحضرت عانشه نظی مختصر حالات د,,بده الوس، په دویم حدیث سره تیرشوی دی _ (ق د حضرت عائشه نظی دمذ کوره اثر تخویج : دي اثر لره امام مسلم پینی په خپل ,,صحیح،، کښي (ک , امام ابوداود کینی په خپل سنن کښې ()

۱) اوګورئ کشف الباری (ج۳ص ۳۰۷)_

^{ً)} اوكورئ حلية الاولياء لَّبِي نعيم (ج٣ص٢٨٧)_ وسنن الدارمي (ج١ص١٤٧) المقدمة. باب البلاغ عن رسول الله صلى الله عليه وسلم وتعليم السنن. رقم (٥٥١) _ وتغليق التعليق (ج٢ص٩٣)_

رًا) عمدة القارى ج٢ص ٢١٠)_

⁾ عمدة القاری ج۲ص ۲۱۰)_ م) کشف الباری (ج ۱ص۲۹۱)_

[&]quot;) سنن أبى داود، كتاب الطهارة، باب الاغتسال من المحيض. رقم (٣١٦)_

آمام ابن ماجه پینځ په خپل سنن کښي (۱. امام احمد پینځ په خپل ..مسند .. کښي (۱ او امام عبدالرزاق صنعاني پینځ په ..مصنف .. کښي (۱ موصلا تخریج کړې دي ـ ۱

دهذگوره اثارو دترجمة الباب سره مطابقت دري دوارو آثارو مطابقت دترجمة الباب سره واضحه دي چي دعلم په سلسله کښي حيا لره مانع نه دی جوړول پکار ، نودغه شان دامام مجاهد پيته اثر په دي خبره باندې دليل دي چي کوم سړي حيا لره مانع جوړه وي نوهغه به علم حاصل نه کړي، لهذا د طلب علم په سلسله کښي ترک حيا مطلوب او محمود ده _

دغه شان دخضرت عانشه رها اثر په ښکاره طور باندې دلالت کوي چې دعلم اوفقه حاصلولو په سلسله کښې حیا مانع ګرزول صحیح نه دی، څنګه چې دانصارو زنانو تعریف اومدحه په دې سلسله کښې کړې شوې ده چې هغوی په طلب علم کښې دترک حیا نه کار اخستې دې، کوم چې په دې ځې کښې محمود اومطلوب دې د (ه)

, نعم، فعل مدح دې، او دې سره کله تا ه تانیث لګوی کوم چې ددې فعل دکیدو دلیل اوعلامت دې اوکله ددې دغیر منصرف کیدو دوجې نه تا و دتانیث نه بغیر استعمالیږی، ګویا چې په دې کښې دحرف مشابهت پیدا کیږی، ودلته دحضرت عائشه تاتی کلام کښې په دې دویمی طریقې سره , نعمالنسام استعمال شوې دې _(۲) والله علم _

[٣٠٠] حَدَّثَنَا كُمَّدُ مُنُ لُسلامِ قَالَ أَخْبَرَنَا أَلُومُعَا وِيَّةَ قَالَ حَدَّثَنَا هِضَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ زَئِنَبَ ابْنَةِ أُوْسِلَيْةَ عَنْ أُمِّرِسَلَيَةَ (/قَالَتْ جَاءَتْ أُمُّسْلَيْدِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ-صلى الله عليه وسلم-

ا) سنن ابن ماجه، كتاب الطهارة،باب في الحائض كيف تغتسل ؟ رقم (۶٤٢)_

ل) مسند احمد (ج۶ص۱۶۸)، رقم (۲۵۱۶۰)_

[&]quot;) مصنف عبدالرزاق (ج اص ۲۱٪). كتاب الحيض، رقم (۱۲۰۸)_ أي مزيد تفصيل دپاره اوګورئ تغليق التعليق (ج٢ص٩٥و ۴٤)_

⁾ مزید تفصیل دپاره او دوری د ^د) عمدة القاری ج۲ص ۲۱۰)_

⁾ عمدہ القاری ج۲ص ۲۱۰)_ ') عمدہ القاری ج۲ص ۲۱۰)_

[&]quot;) قوله: ام سلمه رضى الله عنها: احديث اخرجه البخارى ايضا فى صحيحه (ج ١ص٤٤) كتاب الغسل (الوضوه)،باب اذا احتلمت المراة رقم (٢٨٧)، و(ج ١ص٤٩٤ و٤٤٩) كتاب احاديث الانبياء باب: واذ قال ربحك للملا نكة انى جاعل فى الارض خليفة) رقم (٢٣٢٨) و(ج٢ص٠٠٠) _كتاب الادب،باب التبسم والضحك، رقم (٤٩٩١) و(ج٢ص٤٠٥) حتاب الادب،باب مالايستحيامن الحق للتفقه فى الدين، رقم (٤٩١٩) و (ج٢ص٤٠٤) و وجرب الغسل على المراة بخروج المنى منها، رقم (٢٤١٨) _ وصلم فى صحيحه، فى كتاب العيس،باب وجوب الغسل على المراة بخروج المنى منها، رقم (٨١٢) _ والترمذى فى منامها مايرى الرجل،وقم (١٩٢١) _ والنسائى فى سننه الصغرى،فى كتاب الطهارة، باب غسل المراة ترى فى منامها ما يرى الرجل، رقم (١٩٧١). وفى سننه الكبرى، فى كتاب الطهارة، باب ايجاب الغسل على المراة اذا احتلمت ورات الماء، رقم (١٩٧١). وابن ماجه فى سننه، فى كتاب الطهارة باب في المراة ترى فى منامها مايرى الرجل،وقم (قم (٢٠١) _ وابن ماجه فى سننه، فى كتاب الطهارة باب فى المراة ترى فى منامها مايرى الرجل،وقم (قم (٢٠١)) _ واحد فى مسنده (ج٤ص٤٠) مسنده (ج٤ص٤٠) مسنده (ج٤ص٤٠) مسنده (ج٤ص٤٠) مسنده المسلمة، وقم (٢٠١٤) __

فَقَالَتْ يَارَسُولَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لاَ يَمْتَعْمِى مِنَ الْحَقِّ، فَهَلَ عَلَى الْمَرْأَقِ مِنْ عُسُلِ إِذَا احْتَلَمَتُ قَالَ النَّبِي-صلى الله عليه وسلم-«إِذَارَاتِ الْمَاءَ». فَفَظَّتْ أَمْ سَلَمَةً-تَغْمِى وَجْهَهَا- وَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَتَعْتَلِمُ الْمُرْأَةُ قَالَ «نَعْمُ تَوْبَتْ يَمِينُكِ فَبِمِ يَضْهِهُ اللَّهُ وَلَهُ مَا

رجال الحديث

① محمد بن سلام : دا ابو عبدالله محمد بن سلام بن الفرج السلمى البيكندى وكيو دي، ددة حالات به كتاب الايبان وباب قول النبى صلى الله عليه وسلم: اذا اعلم مهالله، وان المعرفة فعل القلب لاندي تيرشوى دى _ ()

بوصدویه اعمش، شعبه بن الحجاج، هشام بن عروه، یحیی بن سعیدالاتصاری، ابواسحاق شیبانی اوابومالک اشجعی گنتم وغیره حضراتونه روایت کوی _ شیبانی اوابومالک اشجعی گنتم وغیره حضراتونه روایت کوی _

اوددهٔ نه روایت کونکوکښې ددوی شیخ ابن جریج، اعمش، یحیی بن سعید القطان، احمد بن حنبل، یحیی بن معین، ابوبکربن ابی شیبه، عثمان بن ابی شیبه، اوخیشمه، قتیبه بن سعید، احمد بن منیع، صدقة بن الفضل او سعید بن منصور کی فیره دی _ (⁷)

امام احمد او اُمام اُبَن معین نه تپوس اوکړې شوچي ابومعاویه اوپه جریرکښې څوک زیات . ستاسو په نزدډیر قوی دې او خوښ دي ؟ وئې فرمائیل داعمش داحادیثوپه سلسله کښې . ابومعاویه زمونږ په نزد ډیرخوښ دې _ (*)

امام اعمش وكلي ابومعاويه ته خطاب كولوسره فرماني ,, اماانت، ققد ربطت راس كيسك،، _ (^) يعنى تا خودخپلى تيلى خله په مظبوطيا سره تړلى ده، ، كويا چې دقوت حفظ طرف ته اشاره ده.

امام شعبه بمینی فرمانی ,,هذا صاحب الامیش فاع فولا،،_(^۲) یعنی دا د اعمش خاص شاگرد دی، دهٔ لره بند اوپیژنی، ،_

يحتى دن مستسل حاص عود دې دو موجه اوپيري. ابونعيم پخته فرمانى چې ابومعاويه دې د اعمش سره شل كالوپورې وو_ (') په خپله ابومعاويه الضرير پخته فرمانى ,,الهمهاء كانواعلى عيالاعتدالاعش،،_(^

> ۱) کشف الباری (ج۲ص۹۳)_ ۲، برزی ۱۱ (۱۰ ۸ میر ۱۳۷۰)

مُ تعذيب الكمال (ج٢٥ص ١٣١)_

^{&#}x27;) تعذیب الکمال (ج۲۵ص ۱۲۳او ۱۲۴)_ ''

[&]quot;) مشيوً خُواو تلامذه وتفصيل دپاره اوګورئ تعذيب الکمال (ج٢٥ص ٢٤١و١٢٨)_ ") تعذيب الکمال (ج٢٥ص ١٦٨)_

فم تعذيب الكمال (ج٢٥ص ١٣١)_

مُ تعذیب الکمال (ج۲۵ص ۱۳۱)_ ۲) تعذیب الکمال (ج۲۵ص ۱۳۱)_

یعنی.. د اعمش سره دحدیثونوپه سلسله کښی بیناګان حضرات هم زما محتاج وو... امومعاویه به فرمانۍ ل

. كل حديث اقرل ليه: ١٠ فهوم أحفظته من في البحدث، وما قلت: ١٠ وذكر فلان،، فهومالم أحفظه من فيه، وقرئ على من كتاب، فعرفته، فحفظته مباقري ملى،، _ (')

یعنی ..کله چې د ..حدثنا، الفظ سره حدیث بیان کومه نوددې مطلب دادې چې ما دغه حدیث براه راست دمحدث د ژبې نه اوریدلې دې او چې کله زهٔ د ..ذکره فلان، وثیلو سره روایت کوم نو ددې مطلب دا دې چې ما دغه حدیث براه راست نه دې اوریدلې، زما دوړاندې دیو کتاب نه لوستې شوې دې، اوما هغې لره یاد کړې دې،،۔

احمد بن عمر الوكيعى مُحَيِّدَة فرمانى , ما ادر كنا احداكان اعلم با حاديث الاحب من إلى معادية ، ، _ `` امام عجلى مُحَيِّدَة فرمانى , , كن لقة ميرى الارجاء، وكان لين القول فيه ، ، _ ``

امام نسائى كيلي فرمائى ,, ثقة،، رُبُ

ابن خراش فرمائی ,,صدوق، وهونی الاعبش ثقة، ولی غیر به فیصلهاب،، (^ه) یعنی ,,دې صدوق دې، داعمش په احادیثو کښې ثقه دې، ددهٔ نه علاوه د باقی حضراتوروایتونو کښې څه اضطراب موندې شی _،،

ابن حبان مُشِيَّة فرمائي ,,كان حافظا متقنا، ولكنه كان مرجنًا،،_(١)

یعقوب بن شیبه پیشتی فرمائی ,, کان من الثقات، و دبها دلس دکان یری الادجاء ۰۰_() یعنی ,,هغه دثقاتونه دې، کله تدلیس هم کوی، هغه د ارجاء قائل وو،،۔

امام ابوداود مُرَثِينَة فرمائى ,,كان مرجئا،، _^ بلكه هغه فرمائى ,,ابومعاوية رئيس المرجئة بالكوفة،، _^ أ

^ا) تعذيب الكمال (ج٢٥ص ١٣٢)_

⁾ سير اعلام النبلاء (ج ٩ص٧٤)_

النبلاء (ج) سير اعلام النبلاء (ج)

۹ص۷۶)_

¹⁾ تعذيب الكمال (ج٢٥ص ١٣٢)_

م) تعذيب الكمال (ج٢٥ص ١٣٢)_

۲۵ تعذیب الکمال (ج۲۵ص ۱۳۲)_

^{^)} تعذيب الكمال (ج٢٥ص ١٣٢<u>)</u>_

^{&#}x27;) تعذيب الكمال (ج ٢٥ص ١٣٢)_

حافظ ذهبي كيني ودة به تذكره كنبي ليكي ..الامام الحافظ العجةاحد الاعلام،،_^ دغه شان هغه فرمائي ..محبدين حازم الضهير؛ لتقة ثبت،،_`،

ابن مسعود مُوسِّة فرمانی ,,وكان **ثقة كثير**الحديث،يدلس،وكان مرجتًا،،_^رً

· حاصل دټولو اقوالو دآدي چې ابو معاويه محمد بن حازم الضريرثقه او متقن راوي دي، دامام اعمش په احاديثوكښي دهغه درجه ډيره لويه ده. اوچې كله دنورو حضراتونه كوم

رواياتونه نقل کوي نوپه کښې هم غلطي کوي _ په دهٔ باندې چې بعضې حضراتو کوم کلام کړې دې دهغې حاصل دا دې چې دې دمرجنة بلکه .. راس المرجئة،، نه وو ، كله تدليس هم كوى او داعمش نه علاوه د باقى حضراتوپه رواياتو لګ

کمزورې وو_ ليكن عام محديثينوددهٔ روايات قبول كړي دي _ ددې وجه داده چې .. راس الموجئة،، كيدو

باوجود ددهٔ داسې يو روايات هم مروى نه دې كوم نه چې دهغه دارجاء دبدعت ترويج كيږي ـ ترکومې پورې چې د تدليس تعلق دې، نو اول خو دې ډير تدليس نه کوي اوبيا ددة شمير په لوئ ائمه حدیث کښې دې دچاچه معمولی تدلیس نه علماء صرف نظر کړې دې ـ (*)

ترکوم ځې پورې چې د نورو حضراتو په رواياتو کښې اضطراب اود کمزورې تعلق دې.نو په دې سلسله کښې حافظ ابن حجر گڼځ فرماني چې امام بخاري پښځ اول خو دهغوي په احاديثو باندې اعتماد کړې دې کوم چې داعمش نه مروي دي، البته داعمش نه علاوه هشام بن عروه نه يوڅواحاديث ئي اغستي دي، خودهغي متابعات موجود دي، اود بريد بن ابي برده نه ئي هم يوحديث اغستي دي، دهغي متابعت هم موجود دي_ (^ه)

هم دا وجه ده چې حافظ دهبي گڼلتا دهغه په باره کښې په واضحه طورباندې ليکلي دي چې "

ثقة ثبت ماعلبت فيه مقالا يوجب وهنه مطلقا،،_(')

يعني ,,دې ثقه اوثبت دې،ماته د د ځ په باره هيځ داسې کلام معلوم نه دې کوم چې مطلق دهغه كمزوري لره مستوجب وي_

په ۱۹۴ ه يا ۱۹۵ ه ددهٔ انتقال شوې دې _ (۲) رحمه الله تعالى رحمة واسعة _

⁾ سير اعلام النبلاء (ج9ص٧٣)_

⁾ ميزان الاعتدال (ج ٣ص٥٣٣)، رقم (٧٤۶۶)_

⁾ طبقات ابن سعد (ج۶ص۳۹۲)_

أو او المورئ تعريف أهل التقديس بمراتب الموصوفين بالتدليس (ص٣۶)_

م اوګورئ هدې السارې (ص٤٣٨)_ م ميزان الاعتدال (ج٣ص٥٣٣). رقم (٧٤۶۶)_

۷) سير اعلام النبلاء (ج٩ص٧٧)_

🕝 هشام : دا هشام بن عروه بن الزبير بن العرام قرشي مدني كُتُلِيُّ دي. ددة تفصيلي حالات

رد کتاب الایمان ۱۰۰ باب حسن اسلام البرم،، لاندی تیر شوی دی _ (۱)

ق ابيه ، عووة بن الزبير،: دا حضرت عروة بن الزبير بن العوام قرشي اسدي مدني يُنظُ دي، ددة

تفصیلی حالات هم په کتاب الایبان، باب حسن اسلام البوم،، لاندې تیرشوي دي ۔(۲)

⑥ زينب بنت ام سلمة دا دحضور اكرم 微 ربيبه . حضرت ام سلمه 常 لور ، زينب ، بنت ابى سلمه عبدالله بن عبدالاسدبن هلال مخزوميه قرشيه ش د - (٢)

په حبشه کښي ددې ولادت شوې وو آوددې نوم بره کيخودې شوې وو . حضوراکرم ﷺ په ..زينب، سره بدل کړو۔ (*)

دا دحضور آکرم تلط نه علاوه حضرت زینب بنت جحش. حضرت عانشه. حضرت ام سلمه. حضرت ام حبیبه او حضرت حبیبه بنت ام حبیبه رضی الله عنهن نه روایت کوی _

او دې نه روایت کونکوکښې امام شعبی.حمیدبن نافع مدنی.عبیدالله بن عبد الله بن عتبه بن مسعود. عروه بن الزبیر، علی بن الحسین،قاسم بن محمد، ابوسلمه بن عبدالرحمن بن عوف، دهغوی خوی ابوعبیده بن عبدالله بن زمعه، ابوقلابه جرمی کلیب بن وائل،عمروبن شعیب او عراک بن مالک 3 وغیره دی $\frac{6}{12}$

ددې شميريه دمدينه منورې په فقيه ښځو کښې کيدولو۔

ابورافع الصائغ فرمائى ,, كنت اذا ذكرت امراة تقيهة بالبدينة ذكرت زينب بنت بى سلبة، وهي مدائى ,, وهي يومثرا اقته امراة بالبدينة، ، _ ' '

يو عجيبه خصوصيت ني دابيان شوې دې چې کله به حضوراکرم کلم غسل دپاره به تشريف يوړو نو حضرت ام سلمه گلم به خپلې لور ته اونيل چې حضور اکرم نلم له ورشه ، هلته به هغه داخله شوه نو نبي نيايم به ورته په مخ باندې داوبو خاسکې ور اوشيندل اوبيا به ني واپس کړه _ ونيلې کيږي چې هغه معمره اوضعيفه شوې وه ليکن دهغې دمخ په خکله اوزارځي کښې څه فرق راغلې نه وو _ ()

ر در می کسی د کسی دهغی براه راست روایت صرف یودی، او په مسلم کښې یو حدیث په صحیح بخاری کښې دهغې براه راست روایت صرف یودې، او په مسلم کښې یو حدیث متفرددې،البته بالواسطه ډیر روایات دې، په اصول سته کښې دهغې روایات موجود دی()

⁾ کشف الباری (ج۲س۴۳۶)_

^۲) كشف البارى (ج٢ص٤٣۶)_

رق و المحمد الم

⁾ تهذيب الكمال (ج ٣٥٥ ص ١٨٥). ومعرفة الصحابة لابي نعيم (ج ٢٥ص ٢٣٩)، رقم (٣٨٨٤) _

م د شیوخواو رواه دباره او مورئ تهذیب الکمال (ج۳۵ص۱۸۵)_

⁾ الاصابة (ج £ ص٣١٧) __ المسابة (ج £ ص٣١٧) __

^۷) الاصابة (ج £ص۲۲۷) _ ^۸) اوگورئ عمدة القاری (ج ۲ص۲۱۱<u>) _</u> وقال الخزرجی فی ... [بقیه حاشیه په راروانه صفحه..

په ۷۳ کښې دهغې انتقال اوشو . حضرت ابن عمر ﷺ ددې په جنازه کښې حاضر شوې وو د ` ، رښالله عنهاوارضاها

 ام سلمه 微節: دحضرت ام سلمه 微節 حالات هم په کتاب العلم کښې ,,باب العظة والعلم بالليل، لاندې تيرشوي دي _

قوله: قَالَتُ جَاءَتُ أُمُّسُلَيْمِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ-صلى الله عليه وسلم: حضرت ام سلم في الله عليه وسلم: حضرت ام سلمه في الما الله عليه وسلم:

مسعد (۱۹۱۶ ترمانی چې ام سیم حصورا نرم ۱۹۶۶ ترم اراغله _ **حضرت ام سلیم رض الله عنه**ا : دا ام سلیم بنت ملحان دحضرت انس رض، والده ده ددې دنام*ی* باره کښی مختلف اقوال دی :

بعضور سهله، ونيلي دي، بوضور رميله، بعضو «رميثة، بعضو « رميصاء، بعضو» عميصاء، بعضو» عميصاء، بعضو» عميصاء، بعضو و ونيلي دي آل عميصاء، بعضو و ونيلي دي آل عميصاء، بعضو و النيقة، ونيلي دي آل بعضو ونيلي دي قليلي دي چي « النيفه، اوانيشه، دواړه نومونه محرف دي، صحيح انيسه، دي آل بياد بعضو حضراتومثلا ابن عبد البر، عبدالحق او قاضي عباض حتمي راي دا ده چي دحضرت انس رض، دمور نوم « مليكه،، دي، امام نووي سلا دي قول لره صحيح گرزولي دي اوابن سعد، ابن منده او ابن الحصار المنظم جزما وانيلي دي چي « دا « مليكه،، دحضرت انس الله د نيا نوم دي امام الحرمين اودعبدالغني المنظم دكلام نه هم دامستفادكيري - () « .

ددې دويم قول تائيد دابوالشيخ ,, فوائدالعواقيين،، ديوروايت نه هم كيږي، چې په هغې كښې حضرت انس ﷺ وماني ,,ارسلتني جدل الياليي ﷺ،واسهامليكة،، _^^

او د رومېنې قول تانيد دصحيح بخاري وغيره ددې روايت نه کيږي کوم چې ,, مالك عن اسحاق بن عبدالله بن اي طلحة عن انس بن مالك،، په طريق سره مروى دې په دې روايت كښې دى،، ان جدته مليكة دعت رسول الله کالله المعام صنعته له، فاكل منه، ثم قال :قوموا فلاصل لك، قال

بقيه حاشيه د تيرمخ] الخلاصة (ص٤٩١): صحابية لهافى البخارى حديثان ومسلم فرد حديث , ,كذا قال. ولم احد فى صحيح البخارى من روايتها عن النبى كُلِيُّمُ مباشرة الا حديثا واحدا.كما قال العينى رحمه الله. وهو حديث: نهى رسول الله كُلِّهُمُ عن الدباء والعنتم والقبر والعزفت صحيح البخارى (ج ١ص٩٤٤) كتاب المناقب. باب قول الله تعالى: (ياايها الناس انا خلفاكم من ذكروانش وقم (٣٤٩٢)_ أ) تهذيب الكمال (ج٣٥ص/١٤)_

⁾ أَ وَكُورِيْ تَهذَيْبُ الكَمَالُ (جِ٣٥٥)، والاصابة (جِءُص٤٤١). وفتح البارى (ج١ص٤٨٩) كتاب الصلاة.باب الصلاة على الحصير_

⁾ او گورئ تعلیقات تقزیب التهذیب (ص۷۵۷)، رقم (۸۷۳۷)

نح البارى (ج ١ص ٤٨٩) كتاب الصلاة باب الصلاة على العصير_
 نم فتح البارى (ج ١ص ٤٨٩) كتاب الصلاة باب الصلاة على العصير_

انس: فقيت الى حصير لنا قد اسود من طول ماليس، فنضعته بهاء فقام رسول الله نظيم وصففت، واليتيم وراء والعجوز من وراثنا، دراً

ددې روایت په سند کښې اسحاق بن عبدالله بن ابی طلحه دحضرت انس الله وراره دې، ځکه چې عبدالله بن ابی طلحه دام سلیم خوې او دحضرت انس اخیافی رور دې، کې په روایت کښې .. جدته، ضمیر شارحینو د.,اسحاق، ، طرفته راګرزلودې، کې لهذا ، ملیکه، . داسحاق بن عبدالله بن ابی طلحه نیه شوه اوهم دا دحضرت انس الله مورام سلیم ده خکه چې هم دا روایت ..سفیان بن عیدیده من اسحاق بن عبدالله بن ابی طلحة عن انس، په طریق نه مختصرا مروی

دى، ، په كوم كښي چې دى ,,صففت انا ويتيم فيينتا خلف النبي تايي، وامي امرسليم خلفتا، ١٠٠٠ ،

حافظ ابن حجر می ای خوامای چی دوارو روایاتونو لره که یوه قصه او گرزو نوابیا خو دامتعین ده چی ملیکه داسحاق نیا ده او دحضرت انس ای مورد ده،خو دلته د واقعی د تعدد امکان ده چی ملیکه داسحاق نیا ده او دحضرت انس ای مورد ده خوام دخضرت ام سلیم د هم شته دی چی حضور اکرم نام الله دعوت و اقعه مستقله دعوت په بنا باندی مستقل واقعه مستقله شوه او ملیکه کیدل ددی خبری منافی نه دی چی داسحاق نیه یعنی شوه او دحضرت انس د نیا نوم ملیکه کیدل ددی خبری منافی نه دی چی داسحاق نیه یعنی

دحضرت انس د والدي نوم مليكه وي _ (^۵) والله اعلم

حضرت ام سلیم فی دحضور اکرم نظم ندروایت کوی_

اوددي نه په ورایت کونکو کښي حضرت انس، حضرت عبدالله عباس الله انه علاوه عمرو بن عاصم انصاري اوابوسلمه بن عبدالرحمن بن عوف الله عدد ()

دحضرت ام سَلّيم نكّاح په جاهليت كَنبي دمّالكّ بن النضر سره شوى وه، دحضرت انس الله دولات نه بعد دا او ددى قوم مسلمان شو، دى خپل خاوندته هم داسلام دعوت وركړو خو هغه خفا شواوشام ته لاړو او هلته مړشو۔ (/)

ددې نه پس آبوطلحه هغې ته دنکاخ پیغام پیش کړو، حضرت ام سلیم ددې په جواب کښې اونیل که چرې اسلام دې را ورو نونکاح به اوشي هغې مزید تبلیغ هم کړې دې ابوطلحه دڅه فکر دپاره مهلت طلب کړو اوبیا په رضا اوپه رغبت سره مسلمان شو، دغه شان دام سلیم نکاح دحضرت ابوطلحه سره اوشوه _ ^

⁾ صحيح بخارى (ج ١ ص ٥٥). كتاب الصلاة باب الصلاة على الحصير رقم (٣٨٠)_

⁾ فتح البارى (ج١ص٤٨٩)__

^{°)} فتع البارى (ج ۱ص ٤٨٩)__

اً) صَعيح البخاري (ج١ص١٠١)_ كتاب الاذان، باب المراة وحدها تكون صفا.رقم (٧٤٧)_

مُ اوګوری فتح الباری (ج۱ص۴۸۹)_

عُ تفصيل دياره او موري تهديب الكمال (ج ٣٥ص ٣٣٤). ومعرفة الصحابة لابي نعيم (ج٥ص٣٤٧)_

[&]quot;) تهدیب الکمال (ج۳۵ص۳۶۶). والاصابة (ج ٤ص ۴۶۱)_ ") حواله جات بالا _ او دغه شان او گورئ معرفة الصحابة لابي نعبم (ج۵ص۳۴۷)_

دهغوی سره ئی یوخوی پیداشوی وو.اوڅه بیماری دوجی نه وفات شو.حضرت ام سلیم دکمال صبر، زبردست حکمت او مصلحت نه کار واغستلواوبیا روستوئی خپل خاوند خبر کړو، حضرت ابوطلحه چی کله حضور اکرم ﷺ ته دا واقعه بیان کړه نونبی کریم ﷺ دی دواړو دپاره دبرکت دعا اوکړه،چی دوی نه لس ځامن پیداشو،کوم چی ټول په ټوله حاملین علم او قرآن وو۔ ۱۰

صما روسراوود د ،) حضور نبی اکرم ﷺ ددوی سره ډیر خصوصی تعلق وو ، نبی کریم ﷺ وخت په وخت ددوی کور ته تللو _ ۱)

دحضرت ام سليم الله الله المنبى حضور تلك ارشاد فرمائيلي دي .. دخلت الجنة فرايت امراة ال

طلحة، و ') يعني , زه جنت ته داخل شوم نوهلته ما دابوطلحه نبخه ام سليم اوليدله.

دحضرت ام سلیم گانی نه تقریبا خورلس احادیث مروی دی، په دې کښې دود متفق علیه دی اوپه دې کښې یوحدیث کښې امام بخاری اوپه دوه حدیثونه کښې امام مسلم متفرد دې (٪ دحضرت عثمان گانی په دورخلافت کښې ددې انتقال اوشو_ (^روض الله عنها وارضاها

قوله: فَقَالَتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لاَ يَسْتَعْيِي مِرَ الْحَقِّ : حضرت ام سليم ظَهُا عرض اوكرو يا رسول الله ! يقينا ألله تعالى دحق خبري نه شرميږي نه _

,,حيا،، يو نفساني تغيراوعاجزي ده كوم چې يوسړي ته هغه وخت لاحق كيږي كله چې دۀ ته

⁾ نا تهديب الكمال (ج ٢٥ص ٣۶۶)، والاصابة (ج ٤ص ٤۶١)_

^{ً)} الاصابة (ج ٤ص ٤٦)_

^{ً)} الاصابة (ج ٤ص٤١)_

⁾ معرفة الصحابة لابى نعيم (ج۵ص۳۵۸)_.دغه شان اوګورئ صحيح مسلم.کتاب الفضائل.باب طيب عرقه صلى الله عليه وسلم والتبرک به.رقم (۶۰۵۵_۴۰۵۵)_

دم او الاورئ صحيح مسلم. كتاب جهاد باب غزوة النساء مع الرجال. رقم (٤٥٨٠)_

[ً] معرفة الصحابة لابي نعيم (ج٥ص٣٤٨)_

۷ خلاصة الخزرجی (ص۹۹۸)_

م) تقریب التهذیب (ص۷۵۷)، رقم (۸۷۳۷)_

ديوعيب يا قابل مذمت څيز دلاحق کيدوويره وي

اوظاهره ده چې آلله تعالى د داسې قسمه تغیر او آنکسار نه منزه اوباک دې. دې وجې علما ، د داسې قسمه نصوصوتوجیهات اوتاویلات کړي دي

نوددې يو تاويل دا شوې دې.. ان الله لايستۍ من العق، : ان الله لاينځ من بيان العق، ، رځ، په معنی کښې دې.مطلب دا دې چې الله عزوجل حق ضرور بيانوی. ددې پيانول نه پريږدی _

يو مطلب دا بيان شوې دي .. ان الله لايام ډېالحيام ل الحق ولايپيمه،، _ '') يعنى الله تعالى دحق په سلسله کښې نه دحيا حکم ورکوي اونه ددې اجازت ورکوي _

پ وئیلې کیدیشی چې په دې کښې خودالله تعالی نه دحیا نغی کړې شوې ده نو لهذا دتوجیه اودتاریل څه ضروت دې ؟

خو دا وئيل درست نه دى خكه چې چرته مونې .. ان الله لايستعيى من الحق، وائيلوسره دالله تعالى دحق نه دحيا نغى كړې ده هلته دې نه داهم لازم راخى .. ان الله يستنى من الماطل، يعنى الله تعالى دحق دحيا نه خونغى نه كوى البته دباطل نه حيا فرمانى. گويا كه ديوجهت نه نغى ده نوعي جهت نه اثبات دې او داثبات په صورت كنبي توجيه او دتاويل ضرورى دې .. ، ، البته دا وئيلي كيديشى چې الله تعالى لره دكومي حيا اثبات كيږي، ددې دتوجيه ضرورت نشته. خكه دې لره او ددې پشان نورو نصوصولره په ظاهر باندې كيخودلي شى. په داسې موقعه باندې تول اشكال دې وجې نه كيږي چې مونې صفات حق لره په صفات خلق باندې قياس كوو ، داڅه ضروى دى چې په مخلوق كنبي حيا دتغير نفسانى نوم دې نودالله تعالى حيا دې هم دغه دغير والله اعلم

حيا دې هم د عه ناغير وي: نين بينې د ووونتيې سپير واساسم حضرت ام سليم څان د کلام دخپل مخکښې سوال دتمهيد دپاره کړې وو. هغه چې دځه متعلق سوال کول غواړی دهغې متعلق تپوس کولونه شرميږي. دې وچې نه هغې تمهيدا دا اونيل چې الله تعالى دخق خبرې نه حيا نه کوي. مونږ دالله تعالى مخلوق يو حق خبرې دپاره

يو سوال کووچې دهغې تعلق دحيا سره دې ـ " **قولم**: <u>فَهَلُ عَلَى الْمَرُأَ قِمِر ُ غُسُلِ إِذَا احْتَلَمَتْ؟: آيا په ښخوباندې غسل واجب دې که چرې هغې ته احتلام وی ؟</u>

..احتلام.، دباب افتعال مصدر دي. كوم چي ,,دحلم.، ربضم الحاء المهملة وسكون الامي ندماخوذ

⁾ اوگورئ شرح النووی علی صحیح مسلم (ج اص۱٤۶)، کتاب الحیض، باب وجوب الغسل علی المراة

يخروج المنى منها_ وعمدة القارى (ج٢ص٣٦)__) اوكورى شرح النووى على صحيح مسلم (ج١ص١٤٦). كتاب الحيض، باب وجوب الغسل على العراة ١٧٥٧ - ١٠٠٠ - ١٠٠٠ / ١٧٠٧

یخروج المنی منهآ_ وعمدة القاری (ج۲م۲۳]_]) شرح النووی علی صحیح مسلم (ج۲ص۱۹۶)_ _

⁾ سرح بمودی علی صحیح می می از المسلم. [) اوگورئ فتع البادی (ج 1 ص ۳۸۹) کتاب الغسل. باب اذا احتملت العراة _

^ل) فتع الباری (ج ۱ ص ۲۲۹)_

دې،.. حلم،. په اصل کښې خوب ته وائيلې کيږي 🖒 خودلته د..خوب،، يا ..حلم.. ن "جماع.. مراد ده (٬)، دام سليم دا حديث امام احمد پي في نقل کړې دې او الفاظ نې دا دي ..يا رسول الله، ارايت اذا رات المراة ان روجها يجامها في المنام، اتفتسل ٢٠٠٠،

قوله: قَالَ النَّبِي - صلى الله عليه وسلم - «إذا رَأْتِ الْمَاءَ»: حضور اكرم تلم اوفرمانيل او اکله چې اوبه يعني مني اوګوري ـ

دلته د , ,ماء ، ، نه منی مراد ده _()

بيا دلته د., رؤيت مام،، قيد ئې دې دپاره لګولې دې چې خوب ليدونکې کله په خوب کښې انزال اوګوري خو بکښې انزال نه وي شوې، په داسې صورت کښې په اتفاق سره غسل واجب نه دې، دغسل دپاره د ترې ليدلوشرط لګولې شوې دې، کوم چې دانزال ديقيني کيدله دليا دې د ه.

ايا په ښځو کښې مني نه وي؟: دې حديث نه صفا معلومه شوه چې په ښځوکښې مني وي، دجمهورو فقهاء هم دا راي ده _

اودفلاسفه دیوجماعت په ښځوکښې دمنې دوجود منکر دی، دارسطو وینا ده چې په ښځوکښې منې نه وی البته دحیض په وینه کښې د تولید قوت وی _{د ۱}۰) ښځوکښې منې نه وی البته دحیض په وینه کښې د تولید قوت وی _{د ۱}۰) دغه شان ابن سینا وانی چې په ښځوکښې یو قسم رطوبت وی، په هغې باندې دمنې تعریف

لیکن په اطباء او په فلاسفه کښې محققین ددې خبرې قائل دی چې په ښخو کښې مني وی ۸ ایا ښځو ته احتلام کیدیشی؟ حافظ ابن حجر ﷺ فرمانی چې دابراهیم نخعي ﷺ نه د

احتلام نساء نه انكار منقول دي_ (٠)

حافظ فرماني چې امام نووي المرچه دامام نخعي دې انکارلره مستبعد ګرزلودي. بياهم ابن ابي شيبه په سند جيد سره دې لره روايت کړې دي. را ۱،

⁾ اوگورئ شرح المهذب (ج٢ص١٣٩) باب ما يوجب الغسل

⁾ فتح الباري (ج ١ ص ٣٨٩) كتاب الغسل.باب اذا احتلمت المراة _

^{ً)} مسند احمد (ج۶ص۳۷۷)، رقم (۲۷۶۵۹)_

أ) فتح البارى (ج ١ص ٣٨٩) كتاب الغسل باب اذا احتلمت المراة _

⁽م) الاستذكار لابن عبدالبر (ج ١ص٣٣٤). باب غسل البراة اذا رات في المنام مثل مايري الرجل _

مُ) اوګورئ السعاية (ج١ص٣٠۶) بيان موجبات الغسل _

م حواله سابقه

۱) فتح الباري (جضص۳۸۸)_

أ - آخرج ابن ابي شيبه في مصنفه (ج ١ص٤٠٠ في العراة ترى في منامها مايري الرجل. رقم ٨٨٥). قال : حدثنا جرير عن مغيرة قال: كان ابراهيم ينكر احتلام النساء _

نوله: . فَغَطَّتْ أَمُّ سَلَمَةً - تَغْنِم رَوُجُهُهَا: پس حضرت اه سلمه پټ کړو، يعنی خپل منځ لره -مطلب دا دې چې دحضرت ام سليم سوال آودحضور اکړه پره چواب آوريدو سره حضرت امه سلمه ﷺ دخيا دوجي نه مخ پټ کړو ۔

په دې حديث کښې دحضرت ام سلمه نځا ذکردې. اودمسلم شريف په روايت کښې دی چې دې په موقعه كښې حضرت عانشه څخ موجوده وه.اوهغې ونيلې وو..ياامرسليم، فضحتالنسام

را، د،خلیوتون

قاضي عياضٍ گيني فرماني چې دصحيح بخاري روايت راجح دې او دا دحضرت او سلمه ﷺ

ر مستند البر گښته د ذهلی گښته نه نقل کړی دی چې دواړه روایاتونه صحیح دی. د دواړو حدیثونو په مینځ کښې دجمع او تطبیق دوجې ولیلي شوی دی.چې دا دواړه مستقل حدیشونه دې. او داهم مېکنه ده چې په دې مجلس کښې دواړه ازواج مظهرات موجودې وې او دواړد. دې. نکیر کړې وی ـ (۱)

بيا دې حديث لره امام مسلم کيلي دحضرت انس ناځې په مسانيد کښې هم ذکرکړې دې - ر.٠ په دې بنياد باندې بعضي حضراتو دا وليلي دي چې په دغه مجلس کښي حضرت انس هم

خو حافظ ابن حجر پريني فرمالي چې حضرت انس ناتئ هلته موجود نه وو، البته هغوي

cدا حدیث دخپلی مور ام سلیم نه اوریدلی وو۔ cدغه شان په مسند احمد کښې هم د حضرت ابن عمر په مسانيد کښې هم دا حديث مذكور

دي ٧ حافظ مينية دلته هم دا خبره كري ده چي هغوي دا حديث يا خو دام سليم نه اوريدلي دى يا ئى دېل چانە _ ^،

وَ اللَّهِ وَقَالَتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَتَعْتَلِمُ الْمِزْأَةُ قَالَ «نَعَمْ: حضرت ام سليم فَيُ عرض او کړويا رسول الله. آيا ښځو ته هُم احتلام کيږي؟ نو نبي کريم تَنَهُم اوفر مانيل او: ا دې نه معلومه شوه چې حضرت ام سلمه څڅو ته پته نه وه او ظاهره هم دا ده چې هغې ته

[]] صحيح مسلم.كتاب الحيض. باب وجوب الغسل على المراة بخروج المني منها. رقم (٧٠٩)_

فتح البارى (ج ١ص ٣٨٨)_. كتاب الغسل، باب اذا احتلمت المراة

فتح البارى (ج١ص ٣٨٨)_. كتاب الغــل. باب اذا احتلمت العراة _ واو جزالمـــالك (ج ١ ص٤٤٥). كتاب الطَّهارة. باب غسل البراة اذا رات في العنام مثل ما يرى الرجل _

^{ً)} صحيح مسلم.كتاب الحيض، باب وجوب الغسل على المرأة بخروج المنى منها، رقم (٧٠٩__٧١١)_

⁾ فتح الباري (ج ١ص ٣٨٨). و او جز المسالك (ج ١ص ٥٤٤)_

^{&#}x27;) فتع الباري (ج ١ص٣٨٨). و او جز المسالك (ج ١ ص٥٤٤)_

⁾ مسند احمد (ج۲ص۹۰) مسند عبدالله بن عمر کافت رقم (۵۶۳۹)_) فتح الباري (ج اص ٣٨٨). و او جز المسالک (ج ١ص٥٤٥)_

داصورت نه وو پیس شوی _

ایا ازواج مطهرات ته احتادم کیدلو که نه؟ اوس دلته دا مسئله پینبه شوه چی آیا ازواج مطهراتو تداختلام کیدیشی که نه؟

مسهرانو مه میدیسی می مدند. علامه سیوطی میشو دقرطبی میشوند نه نقل کړی دی چې دحضرت عائشه او دحضرت ام سلمه پای انکار ددې خبرې ثبوت دې چې په ښځو کښې احتلام ډیرقلیل الوقوع دې . ()

سامه العاد ددې حبرې بوت دې چې په بستو نسبې محدم پرير عبن کې دې د . علامه سيوطي کښتو فرمائی چې زما په نيزظاهره دا ده چې دحضرات ازواج مطهرات ته د احتلام وقوع نه کيږي، ځکه چې احتلام د شيطاني اثر نتيجه ده، دحضور ۴ د د کريم او د نبې کريم ۴ د رکت دوجې نه دوي د شيطاني اثرات نه محفوظه کړې شوې وې، څنګه چې په

ريم الها البار عند در الله عند داوي دسيساني الرات نه محفوظ کړې شوې دې ـ د ، د

عُلامه سیوَطَی فُرمانی چی ما شیخ ولی الدین لره لیدلی و چکی فرَمانیلی زموند په بعضی اصحاب درس کښی مذاکره کوله او وئیل ئی چی ازواج مطهرات نه داحتلام وقوع نه کیږی ځکه چی هغوی د بیداری او یا دخوب په حالت کښی دنبی کریم ﷺ نه علاوه د بل چا اطاعت نه کوی او شیطان د نبی کریم ﷺ شکل او صورت اختیارولی نشی _ دی خبری

اوريدلو سره ماته ډيره خوشحالي اوشوه _ (۲) دغه شان علامه سيوطي کښځ په يو بل ځانې کښې فرمانيلې دی چې دې امر نه څه مانع دې چې دا دحضور ښې کريم کښځ د ازواجومطهراتو خصوصيت وي ؟ (۲)

چې دا دحصور نبي کريم ۱۵٪ د ارواجومطهرانو حصوصيت وي ۱۱) خو علامه زرقاني ﷺ فرمائي چې دلته مانع دا دې چې خصوصيات د احتمال په بنا باندې ۲

نه ثابتیری _ (۱) دغه شان حافظ مل الدین عالم محمد کیمید کی در هفیم قابل نظیر خکیم

دغه شان حافظ ولی الدین عراقی گینه چې کومه خبره کړې ده هغه هم قابل نظر ده ځکه چې داحتلام وجه صرف هغه نه ده کومه چې هغه بیان کړې ده بلکه کله منی د وعا، د ډکیدو دوجې نه هم کیږی. اوکله ددې وجه بله خبره هم کیدیشی، بعضې علما، چې دعدم احتلام کوم قول اختیار کړې دې هغه صرف د حضراتوانبیا، کرامو په باره کښې دې – ۲٫

علامه عبدالحی لگهنوی گنته فرمانی چی په دی سلسله کښی قول محقق دا دی چی په دی مقام کښی قول محقق دا دی چی په دی مقام کښی نه خو دا دعوی کیدیشی چی حضرات ازواج مطهرات نه مطلق احتلام نفی او کړی شی او نه دا دعوی کیدیشی چی دهغوی نه وقوع احتلام ممنوع دی، بلکه داسی دی اوئیلی شی چی حضرات مطهرات چونکه امهات المؤمنین دی او دمسلمانانو دپاره حرام دی نو الله عزوجل خپل دنسمن ابلیس لره دخلقوشکل شباهت اختیارلوسره په دوی باندې نه مسلط

^{&#}x27;) زهر الربى على المجتبى (ج ١ص٢٤). كتاب الطهارة، باب غسل المراة ترى فى منامها مايرى الرجل _ ') حواله بالا _

^{ً)} حواله بالا _

^{اً}) تنویر العوالک (ص ۷۱) کتاب الطهارة. باب غسل العراة اذا رات فی العنام مثل مایری الرجل _ ^{دم} شرح الزرقانی علی العة طا (ج ۱۰۳ س۱۰). غسل العراة اذا رات مثل مایری الرجل _

^{&#}x27;) حواله بالا _

کوي اوپه دې مخصوص صورت کښې دوي نه داحتلام وقوع نه کیږي. بیاهم دوي نه دمطلق احتلام نفي كول دعدم وقوع نشته دى ١٠٠ والله اعلم

<u>تولە: تَربَتُ يَمينُكِ:</u>ستا ښې لاس دې په خاوره کړړ شي ـ

داحمله بددعائيه ده. بياهم دا صرف دزجر دياره استعمال شوي ده، ددې حقيقي معني

قوله: فَبِهَ يُشْبِهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللهِ وَلَا وَلَا مَا اللَّهُ مَشَابِهِ كَيْرِي؟!

يعني که دښځې مني نه وه نو بيا به بچې دښځې مشابه نه وو. دې نه معلوميږي چې د مشابهت سبب دا منی ده _

د ولد د مشابهت سبب او ددهٔ د تذ کیر او تا نیث سبب : په صحیح بخاری کښې دحضرت انس ﷺ روايت دې چې كله حضرت عبدالله بن سلام ﷺ ته دحضور ﷺ مدينه منوره ته دتشريف راؤړلو علم اوشو نوهغه دنبي کريم ﷺ په خدمت کښې حاصر شواو عرض ئې اوكړو چې څه ستاسونه يو دري تپوسونه كول غواړم، او دهغې جواب هم ښي وركولې شي-په دغه درې سوالونو کښې يوسوال داوو ., ما بال الولدينزم ال ابيه، او ال امه ؟،، يعني ماشوم خپلى موريا پلار تەمائل يعنى دھغوى سرەمشابە ولى وى؟.،

په دې باندې حضوراكرم ﷺ ارشاد اوفرمانيلو واماالولد فاذا سېتي ماءالوجل ماءالمواة

نزع الولد، وادْسبق ماء البراة ماء الرجل نزعت الولد،،_(^) یعنی , کله چې دسړي مني دښځې دمنې نه سابقه وي نو هغه ماشوم خپل طرف ته راکاږي او چِي كله دښځي مني د سړى دمنې نه سبقت او كړى نو هغه ماشوم خَپل طرف ته راكاږي، ، ـ په صحيح مسلم کښي دحضرت عائشه ﷺ نه مرفوع روايت دي ,, اذاعلاماؤها ماءالرجل اشهه الولداخواله، واذا علاماء الرجل ماءها اشيه اعبامه،،_()

يعني «کله چې دښځي مني دسړي په مني باندې غالب راشي نو ماشوم د ميندو مشابه وي أوكله چې دسري مني دنښځي په منيي باندي غالب راشي نو ماشوم دخپل ترونو مشابه وي،، بره دحضرت عبدالله بن سلام الله الله دحديث نه معلومه شوه چي سبب دمشابهت , سبق،، أود حضرت عانشه و الله المحمديث نه معلومه شوه چي سبب مشابهت ، غلبه، ده -بياامام مسلم مسلم مسلم و حضرت ثوبان الله الله مدانقل كړى دى:

.. ماء الرجل ابيش، وماء المراة اصفى، فإذا اجتبعا فعلا متى الرجل متى البراة اذكرا بإذن الله، واذاعلا متى

ً) السعاية (ج١ص٣٠٩)_

ً) صحيح مسلم، كتاب الحيض، باب وجوب الغسل على البراة بخروج البنى منها، رقم (٧١٥) _

⁾ اومحوري الاستذكار (ج أص ٣٣٩). وعارضة الاحوذي (ج أص ١٨٨). واوجزالمسالك (ج أص ٤٤)_ ً) اوګورئ صعیح البخاری (ج ۱ص۵۶۱). کتاب مناقب الانصار. باب (بلا ترجمة. بعد باب قول النبی صلى الله عليه وسلم: اللهم امض لا صحابي هجرتهم.. ومرثيته لمن مات بمكة). رقم (٢٩٣٨)_

البراة منى الرجل آتثا باذن الله ...،،،، رن

یعنی .. دسړی منی سپینه دد او دښځی منی زیړه دد، کله چې دواړه جمع شی او دسړی منی دښځی په منی باندې غالب راشی نو دالله په حکم سره ماشوم مذکرپیداشی او چې کله دښځی منی دسړی په منی باندې غالب راشی نو دالله په حکم سره ماشوم مؤنث پیداشی ... بعینه هم د داسې مضمون روایت په لفظ ..ملو، سره امام احمد مختله دحضرت ابن عباس تاله نه هم نقل کړی دی .. یلتق الباءان، فاذاعلاماه الرجل ماء البراقاذ کړت، واذاعلا ماء البراق ماه الرجل آتت رقواړه اوبه یوخې کیږی . کله چې دسړی اوبه دښځې په اوبوباندې غالبه راشی نو ښځه مؤنده او خېګوی او چې کله د ښځې اوبه دسړی په اوبوباندې غالبه راشی نو ښځه مؤنده او خېګوی ...

دې دواړو حديثونو نه معلوميږي چې مذكراو دمؤنث كيدو سبب ..غلبه، ، وي _

دلته چې کوم اشکال کیږي دهغې حاصل دا دې چې دولد سبب مشابهت للا عمام اوالاخوال , سبق، دې که ,,علو. ، ؟

بيا دا , علو ، ، سبب , داذكار ، ، اود , ايناث ، ، دى كه سبب دمشابهت؟

ددې جواب دا دې چې دحضرت عبدالله بن سلام په روايت کښې , سبق، په خپلې معنی باندې دې بعد کښې , دڅه تاويل ضرورت نشته، دغه شان حضرت ثوبان او دحضرت ابن عباس تلگه په روايتونو کښې هم , معلو، په خپل اصل معنى يعنى دغلبه په معنى کښې دې , په دې کښې هم دڅه تاويل حاجت نشته دې . (

دې مبني هم د حدوين - بد حدو دې ... البته دحضرت عائشه النه په په په په په کوم .. علو ، ، مذکوره ده هغه هم د .. سبق ، په معنی کښې دې ، اوس به معنی دا شی چې کله دسړی منی په رحم کښې دښځی دمنې نه سبقت اوکړی نوماشوم به د خپلوترونو مشابه کیږی او که چرې دښځې منی دسړی دمنې نه سبقت اوکړی نو ماشوم دخپل ماماګانو مشابه وي _

هم.. سبق ، سبب دمشابهت دې ، ددې تائيد د شرح مشكل الآثار كښې دحضرت ام سلمه الله د روايت نه كيږى ، چې په كښې دحضوراكرم نالله ارشاد منقول دې ,,اى النطقتين سهقت ال الرحم غلبت على الشهه،، _ (٢) يعنى ,, په دواړو نطفو كښې چې كوم يوهم رحم طرف ته سبقت اوكړى نوهغه دمشابهت په سلسله كښى غالب راځي ،، _

ر کون کې د د د د د کراو مؤنث تعلق دې نو دهغې وجه په رحم کښې دننه , علو ، . يعنی غلبه ده . نو په دې کښې دننه که چرې دسړی منی دښځې په منې باندې غالبه شی نوماشوم

⁾ صحيح مسلم. كتاب الحيض، باب بيان صفة منى الرجل، وان الولد مخلوق من مانيهما. رقم (٧١٦)_) مسند احمد (ج اص ٧٧٤)، مسند عبدالله بن عباس كالتخر، رقم (٢٤٨٣)_

^{ً)} شرح مشكل الاثار (ج٢ص٨٨). باب بيان مشكل ما روى عن رسول الله تَكُلُّمُ في ماء الرجل وماء العواة. رقم (٢۶۶٢)_

ددوار و قسمه حديثونولره ميلاولونه دلته ډير صورتونه پيدا کيږي

🕕 گسبق، ، او .. علو ، ، دواړه دسړي دپاره وي نو بچې به مذکر وي او دپلار مشابه به وي ـ

🕝 ..سبق. . او .. علو . . دواړه دښځې دپاره وي نو بچې به مؤنث وي او دمور مشابه به وي ـ

🕜 سبق لماء الرجل او علولماء المراة وي نو بچې به مؤنث وي او دپار مشابه به وي ـ

ی سبن سه روز قار و دمور مشابه ⊙ د دې برعکس سبق لما ، المراة او علولما ، الرجل وی نو بچې به مذکر وی او دمور مشابه به وي _

⑥_که چرې يوته هم سبقت حاصل نشي، بلکه ددواړو اوبو يوځې خارج شي. ليکن علولماء الرجل وي نو بچې به مذکروي اود مور پلار دواړو پشان به وي _

اروم وي يو بېچې بېدمند موري او مورو کړي. (6 _ که چرې يو ته هم سبقت حاصل نشۍ لپکن علو ماء المراة لره حاصل وی نو بچې به مونث وی او دمور پلار دواړو پشان به وی ـ ()

د حافظ ابن حجر گنته تسامع: په دې مقام کښې حافظ ابن حجر گنتي چې کوم تقرير کړې دې هغه و م تقرير کړې دې هغه و اسم هغه واضح دې او دهغې حاصل هم دا دې کوم چې مونږ ذکر کړې دې ـ بياهم هغه چې په خپل عبارت کښې کومه تفريع ذکر کړې ده نوهغه مختل محسوس کيږي، چنانچه دهغه مذکوره اشکال جواب د علامه قرطبي گنته نه نقل کوي اوفرمالي:

٠٠ قال القراطبي: يتعين تاويل حديث ثوبان بان المراد بالعلو: السبق،،_

يعني ,, دحضرت ثوبان گُلگئي په حديث كښې داتاويل متعين دې چې په دې كښې د ,,علو،،نه مراد ,,سبق،، دې _

دى نه يس فرمائى والذى يظهر: ماقدمته_وهوتاويل العلوق حديث عائشه_واما حديث ثوبان فيهتى العلوقيه على تقاهد واما حديث ثوبان فيهتى العلوقيه على تقاهد العادقية على العلوقية على ال

په دې باندې تفريعا فرمائى : فيكون السبق علامة التذكيرو التأنيث؛ والعلوعلامة الشهه، فيرتفع

^{&#}x27;) اوكورئ فتح البارى (ج٧ص ٢٧٢) كتاب مناقب الانصار باب (بلا نرجمة) بعد باب قول النبى تَلْكُلُمُ , و اللهم امض لا صحابى هجرتهم.. ومرثيه لمن مات بعكة _ او اوكورئ مشكل الاثار (ج٧ص ٨٥-٩١). باب بيان مشكل ما روى عن رسول الله تَلْمُنْكُمُ في ماء الرجل وماء السراة. وفي عمل كل واحد منها في الولد الذي بعلق منها _

الاشكال، وكان البراد بالعلو الذي يكون سهب الشهه بحسب الكاثرة، بحيث يصير الآخر، مفهورا فيه، فزيق ما الله من ال

یصلالشهه،،_(') یعنی بس .. ستی،،

يعنی بس .. سبق ، ، به دتذکير اوتانيث علامت وی او ..علو ، . دمشابهت سبب ، داسې به اشکال ختم شی، ګوياچې , علو ، ، مراد ده کوم نه چې به مشابهت حاصليږی دې هغه ,.علو ، ، مراد ده کومه چې کثرت يعني غلبه سره وی _ په داشان چې دويمې اوبه په دې کښې مغموره او ډوبې شي ، دې نه به مشابهت حاصليږي ، ، _

خو په ادنی تامل سره به ظاهره شی چې دا تفریع صحیح نه ده او که دا به څګنه صحیح کیدی خو په ادنی تامل سره به ظاهره شی چې دا تفریع صحیح نه ده او که دا به څګنه صحیح کیدی شی حالانکه حافظ میشی د .. علو .. د تاویل قائل دې او دې لره دسبق په معنی باندې اخلی او په حدیث دعائشه کی کاکنبې دمشابهت ذکردې نه چې د تذکیر او تانیث ؟!

لهذاه ٔ حافظ ابن حبر مُهُمَّدُ داشان پکار دې چې چرته چرته , سبق، ، وي هلته دې .. علو.. کړی شي او چرته چرته چې ,. علو، ، وي هلته دې ,. سبق. کړې شي او په آخره کښې دې ,سبب الشبه. ، لره دې ,,سبب تذکيروالتانيث, کړې شي، نو عبارت په دا شان وي _

٠٠ فيكون العلوعلامة التذ كير والتانيث ، والسبق علامة الشبه، فيرتفع الاشكال، وكان المواد بالسبق

الذى يكون سبب التذكير والتانيث بحسب الكثرة، ، _ () والله سبحانه وتعالى اعلم.

د علامه قوطبي گيليد د تاويل موجو حيت : اوس مخكبني تيرشو چې علامه قرطبي گيليد فرمائي چې په حديث دحضرت ثوبان كبني ., علو،، لره د,,سبق،، په معنى كبني اخستل متعين دى ..(*)

ددې تاويل نتيجه به دا راوزي چې دهغوي په نيز دحضرت عائشه گڼځاروايت اصل دې، ددې مطابق ,علو ، ، دمشابهت سبب دې او , سبق ، د تذکير اوتانيث _

دى تأويل سره هم الحرجي اصل اشكال ختميري، بياهم دامرجوح دى، خكه چى دقرطبى مميلة قول لره اختيارولو سره به صرف دحضرت عائشه في يو روايت په خپل اصل باندې پاتي كبرى، باقى دحضرت عبدالله بن سلام، دحضرت ثوبان او دحضرت ابن عباس رضى الله تعالى عنهم اجمعين په ټولو رواياتونوكښى به توجيه كول غواړى، دحضرت عبدالله بن سلام

^{&#}x27;) فتح الباری (ج۷ص۲۷۳)_

⁾ قال العثماني رحمه الله تعالى : , ,وفى العبارة قلب واختلال مع وضوح المقصود. لان قوله : فيكون السبق علامة التذكير والتانيث.. الى آخر، لايصح تفريعه على قوله السابق، والصحيح _ والله اعلم _ ان يكتب ,, العلو.. موضع ,, السبق.. ,و ,,السبق.. موضع ,, العلو.. فى التغريع، وكذافى قوله : وكان المراد بالعلو الذى يكون سبب الشبه بحسب الكثرة الخ، الظاهران يكتب ,,يكون سبب التذكير والتانيث.. فتامل وحقق _.. فتح الملهم (ج٣ص٢٠). كتاب العيض. باب وجوب الغسل على المراة بخروج المنى منها _ مطبوعة دار احياء التراث العربي بيروت الطبع الاولى ١٤٢٤هم _ ٢٠٠٤م _

لهَذَا په يو روآيت كَبْنِي توجيه كول اوديّ لره مصروف عن الظّاهر محرزول آسان ديّ.ددې په

مقابله کښې چې يو لره اصل جوړ کړې شي او ټولو لره دظاهر نه اخواکړې شي _ والله املم _ **د ترجمة الباب سره دحديث مطابقت** : دباب په شروع کښې کوم ځې کښې چې د ترجمة الباب مقصد د کرشوې دې هلته دحضرت ام سلمه څاڅ دحديث مناسبت هم ضمنا راغلي وو _ علم المار د نحون کو درې بارون څخ د دليانا د کې دې حي امارونوا يې کتيه دحيا في العلم

عام شارحینوچونکه ددې باب غرض دا بینان کړې دې چې امام بخاری پیکی دحیا قی العلم مذمت بیانول غواړی او دا ښودل غواړی چې په علم کښې حیا نه ده پکار ، ځکه چې څوک په علم کښې حیاکوی نو هغه دعلم نه محرومه پاتي کیږي _

دحضرت ام سلمه ﷺ دا حدیث اودحضرت عبدالله بن عمر ﷺ واقعه ددې حیا په مذموم کیدلو باندې دال دي _ (')

ابن بطال، کرمانی، شیخ الاسلام زکریا انصاری، علامه عینی او دحضرت کشمیری مینم په به بند نیزد امام بخاری پیش غرض بیان تفصیل دی چی په بعضی مواقعو کنبی حیا کول مذموم دی او په بعضی کنبی ترک حیا مذموم ده، دغه شان په بعضی مقامات کنبی حیا کول محمود ده او په بعضی کنبی ترک حیا محمود ده -

دحضرت ام سلمه او دحضرت عبدالله بن عمر 衛裔 دروايتونو نه استعمال دحيا مطلوب اوممدوح كيدل ثابت كړې شوې دې _ (′)

حضرت شیخ الهند گینگ چې څه ارشاد فرمانیلي دې دهغې حاصل دا دې چې په ترجمة الباب , , الحیا، في العلم، ، کښې دوه خبرې قابل لحاظ دی، اول داچې په وجه دحیا دعلم او تعلم نه محرومه نشي دویم دا چې په تعلیم او تعلم کښې حتی الوسع حیا کول مستحسن دی یعنی په مواقع د حیا کښې خو داهر ګزنه دی کول پکارچې دعلم نه محرومه پاتې شي، مګردمحرومې نه دبچکیدو سره سره څومره حیاچې کیدیشي مستحسن ده _

په حدیث دام سلیم کښې قبل السوال , یا رسول الله ان الله لایستعیم من العق ، وئیل هم دحیا دلیل دی ، دحضرت ام سلمه نی آت نسبت مذکور دې , فقطت ام سلمه تعنی وجهها ، به دې کښې هم دحیا یومظهردې ، دحضور اکرم نا الله , . تربت پیینك ، ، فرمائیل ، په دې کښې دحیاې ښوى نهایت لطیفه خوشبوده مگر په دې حالت کښې د تعلیم او تعلم فرض څنګه چې کیدې شوه ادا ، نې او فرمائیل او مقصود لره دفوت کیدو ته پري نه خودو _ (۲) والله اعلم _

⁾ اوګورئ فنح الباری (ج۱ص۲۲۹). وحاشیة السندی علی البخاری (ج۱ص۷۱). وشرح تراجم ابواب البخاری (ص۱۶)_

⁾ اوګورئ شرح ابن بطال (ج ۱ص ۲۱۰). وشرح الکرمانی (ج۲ص ۱۶۰) وغیرہ ____۔ ** سند م

^{ً)} الابواب والنراجم (ص٥٩و ٤٠)_

[٣٣١] حَدَّنَهُ المُتَمَاعِيلُ قَالَ حَدَّنِي مَالِكُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَا وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حَمْرَ () أَنَّ رَمُولَ اللَّهِ-صلى الله عليه وسلم-قال «إنَّ مِنَ الشَّجْرِ شَجْرَةً لاَيَسْقُطُ وَرَقُهَا، وَهِي مَثَلُ الْمُسْلِمِ، حَدِّهُ وَفِي مَا هِي ». فَوَقَعَ النَّاسُ فِي شَحْرِ الْبَادِيَةِ، وَوَقَعَ فِي نَفْيِ أَفَهَ اللَّمْلَةُ. قَالَ عَبْدُ اللَّهِ فَاسْتَخْيَيْتُ. فَقَالُوا يَارِسُولَ اللَّهِ، أَخْبِرُنَا بِهَا . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ-صلى الله عليه وسلم- «هِي النَّفَلَةُ». قَالَ عَبْدُ اللَّهِ فَتَدَّلُتُ أَبِي مِنَا وَقَعَ فِي نَفْيِي فَقَالَ لأَنْ تَكُونَ فُلْتَمَا أَحْبُ إلَى عِرْ فَي أَنْ يَكُونَ لِي كَنْ الْحَكَلُوكَ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى ال

رجال العديث

روسماعیل : دا ابوعبدالله اسماعیل بن ابی اویس عبدالله بن عبدالله بن اویس بن مالک بن ابی عامر اصبحی مدنی ﷺ دی _ ددوی حالات په کشف الباری کنبی کتاب الایمان ۱۰ پاپ تفاضل المالایمان الاعمال ۱۰ پاپ تفاضل العمال ۱۰ پاپ تیرشوی دی _ ۲)

صفائل المام دارالحجرة مالك بن انس بن مالك بن ابي عامرين عمرو الصبحي • الله ملك : دا امام دارالحجرة مالك بن انس بن مالك بن ابي عامرين عمرو الصبحي

المدنى يُخلِيُ دي _ ددوى حالات هم په کتاب الايمان ,, باب من الدين القهار من الفاتن ، الاندې تيرشوې دى _ ‹ ¸ ،

@ عبدالله بن دينار ويلك دا بو عبدالرحمن عبدالله بن دينار قرشي عدوي مدنى ويليد دي

ددوى حالات د كتاب الايمان: باب أمور الايمان،، لاندې مختصر، أاود كتاب العلم، باب قول المحدث: حدثنا أو أخبرنا وأنهانا، لاندې په تفصيل سره تيرشوى دى (٥)

قوله: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ: يعنى رسول الله تَهُمُّ اوفرمائيل بيشكه به ونوكنبي يوه ونه داسي ده چي دهغي پانړې غورزيږي نه، هغه دمسلمان په شان ده، ماته اووايي چې كومه يوه اونه ده ؟خلق دځنګل ونو طرف ته لاړل زما په زړه كښي راغلل

^{ً)} قوله ,, عبدالله بن عمر,, وقد سبق تخريج هذا الحديث فى كتاب العلم. باب قول المحدث : حدثنا او اخبرنا وانبانا كشف البارى (ج٣ص٢٤/و١٢٥)_

^{ٍّ)} كُشفُ البارى (ج٢ص١١٣_١١٥)_

^{ً)} کشف الباری (ج۲ص۸۰و۸۱)_ ٔ) کشف الباری (ج۱ ص۶۸۵)_

⁾ کشف الباری (ج۱ ص۱۲۵)_ *) کشف الباری (ج۱ ص۱۲۵)_

م) کشف الباری (ج ۱ص۶۳۷) _

چې هغه د کهجوړې ونه ده _

عبدالله بن عمر الله فرماني چې زه شرميدم، نوخلقو عرض اوكړويا رسول الله : تاسوددې په باره كنبي مونرته اواني رسول الله على ارشاد اوفرمائيل چي هغه دكهجوري ونه ده _

عبدالله بن عمر تلاي وماني چي ماخپل والدصاحب ته اوونيل چي زما په زړه کښي داخبره راغلي وه، نوهغوي اوفرمائيل چې که تا دا وئيلي وو نوماته به په دې خبره ډيره خوشحالي شوي وه چې ماته دومره دومره ملاؤ شوې وه _

دا حديث مخکښي دکتاب العلم په شروع کښې تيرشوي دي او مونږ ډيرپه تفصيل سره ددې

تشریح کړې ده _ (¹) د حديث باب دترجمة الباب سره مطابقت : حضرت ګنګوهی کیلیځ فرمانی چې دحضرت عمر ناتی ارشاد ,, لان تکون تلتها احبال، ، کنبی ترجمة الباب طرف ته اشاره ده چی حضرت عمر ناتی دخپل خوی په استحیاء باندی نکیراو کړو او دهغوی په سکوت باندې خوشحاله نه شور ، دا خبره نوروشراحو هم وئيلي ده _

علامه سندهي مُرتيعً فرماني ,, ويفهم ان الحياء في العلم لاينه غي، من حديث ابن عبر ريَّةً ، بسبب قول عبر رض الله عنه،، _ (")

يعنى ,, د حضرت ابن عمر للله دحديث نه معلوميږي چې په علم کښې حياکول مناسب نه دى، څنګه چې دحضرت عمر اللئځ د قول نه معلوميږي،،_

دغه شان حافظ يَشِينُهُ فرماني : ١٠ وانها تاسف عبر النُّليُّوعلى كون ابنه لم يقل ذلك لتظهر فضيلته، فاستلزم حياؤة تفويت ذلك، وقد، كان يهكنه إذا استحيا اجلالا لهن هوا كبرمنه ان يذ كر ذلك لغيرة سراليغبر عنه، فيجبع بين الخصلتين، ولذا عقبه المصنف بهاب من استحيا فا مرغيرة بالسؤال،،__(,

يعنيي ,, حضرت عمر الله يدي خبره باندي افسوس اوشوچي دهغوي صاحبزاده جواب ور نه کړو، که چرې جوآب ئې ورکړې وونو دهغه فصيلت به ظاهرشوې وو، دهغه دحيا دوجې نه دافضيلت پاتي شو، بياكه هغه ته په مجلس كښي دمشرانودوجي حيا لاحقه شوي وي بياهم ممكنه وه چي چاته ني په پټه باندې ونيلي وي، دغه شان دحيا په تقاضي باندې به هم عمل شوې وو اودجواب ورکولو فصیلت به هم حاصل شوې وې ـ ددې نکته په پیش نظرمولف وړاندې باب قائم کړو ،،۔

حَضْرتَ شَيخ الهَند يَّوْلُهُ فرمائى چى : ,, دمؤلف غرض هم دا دې چې ابن عمر كوم دحيادوجي نه سكوت اوفرمائيلواوجواب نې ورنه كړو دا حيا هم مستحسن ده، دا هغه حيا نه ده كومه چې د ,, ان الله لايستحيم من الحق،، يا ,, لايتعلم العلم مستحى ولا مستكبر،، مخالفه وى،ددې

') فتع الباری (ج1ص ۲۳۰<u>) _</u>

⁾ كشف البارى (ج٣ص١٢٤_١٣٣)_

لامع الدراري (مع الكنزالمتواري في معادن لامع الدراري وصحيح البخاري) (ج٢ص ٣٩٠)_

حاشية السندي على صحيح البخاري (ج ١ص٧١)_

مخالف صرف هغه ده کوم چې په وجه دحیاباندې علم ترک کړی شی، دچانه سوال نه کوی او دعلم ننه معرومه پاتې شي . دحضرت ابن عمرپه سکوت گښې ددې احتمال نشته، اول خوداسکوت عن الجواب دې، عن السؤال نه دې، دویم ابن عمرته پته وه چې کوم واقعی جواب دې دا به په هرحال کښې ښې کړیم ۱۳ ارشاد فرمانی، کوم چې به ټولوته معلومه شي ـ باقي دحضرت عمر ۱۳ ارشاد، نوهغه صرف خپل مسرت قلبي ظاهره وي. ددې نه دابن عمردسکوت کراهیت اوهغه هم شرعي ګڼړل مستبعدده، کهاقال بعض الاعلام، والله علم، ، _ ()،

٥١ = بابُمَنِ اسْتَحْيَـا فَأَمَرَ غَيْرَهُ بِالسُّوَالِ

دباب سابق سره مناسبت : ددې باب دسابق سره مناسبت واضّحه دې چې سابق باب کښې دحيافي العلم کراهت مذکور وو او په دې باب کښې دامذکوردی چې که په ملازمت حيا سره مقصود حاصل شي نو په داسې حيا کښې ټول خير مقصود حاصل شي نو په داسې حيا کښې ټول خير خير دي - (^۲)

یعنی , ددینه رومبی باب کښی ذکرشوچی چرته دحیا دوجی نه دعلم دمحرومی اندیښنه وی هلته دحیا فی السؤال کراهت دې،البته که چرې دحیاالتزام کولوسره دمحرومی اندیښنه نه وی بلکه مقصود حاصلیږی نوبیا په داسې حیاکښې څه کراهت نشته،ځکه چې حیا خو سراس خبردی،،۔

حضرت شيخ الهند كيلي فرمائي چي , په وجه دحيا په ترک سوال کښي هم څه حرج نشته دي، البته دا پکاردي چې په دويمي واسطې سره دحکم شرعي نه واقف شي، دعلم نه محرومه نشي،، ـ ()

حسی است. حضرت شاه صاحب گنگ فرمانی چې دمؤلف غرض ددې امرجواز ښودل دی که چرې دسوال مقصود حاصليږي نوپه داسې کولو کښې څه حرج نشته چې بل چا په ذريعه سوال کولوسره علم حاصل کړې شي ـ ٥٠،

حاصٰل داچّی ؒ اُمَام بخاری په ماقبل کښې دحیافی العلم مسئله بیان کړې وه،اوس امام بخاری کیلئے ښودل غواړی چې که څوک ډیرباحیا وی اوپخپله دتپوس کولو همت نه لری نودې

الابواب والتراجم (٤٠)_

^۲) او گورئ لامع الدراری (ج۲ص۳۹۱ ۲۹۲)_

⁾ لامع الدراري مع الكنزالمتواري (ج٢ص٣٩١ر٣٩)_

الابواب والتراجم (ص٤٠) تحت , باب الحياء في العلم.._

^{نم} شرح تراجم ابواب البخاری (ص۱۶)_

نه دې غافله اوجاهل پاتې نشی بلکه دچا بې تلکفه په ذریعه باندې دې مسئله معلومه کړې شي. دی دپاره چې سړې دعلمي او عملي غلطي نه بچ پاتې شي ـ والله علم.

[١٣٧] حَذَٰنَنَا مُسَلَّدُهُ فَالَ حَدَّنَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دَاوُدُ عَنِ الْأَخْمَثِي عَنْ مُنْذِرِ القَّذِي عَنْ فُمَّيَا ابْنِ الْعَنَفِيَّةِ عَنْ عَلَى ﴿ مُ قَالَ كُنْتُ رَجُلاً مَذَّاءُ فَأَمْرُتُ الْبِقْدَادُ أَنْ يَسْأَلَ النَّبِي -صلى الله عليه وسلم - فَسَأَلَهُ فَقَالَ «فِيهِ الْوُصُوءُ»

رجال الحديث

مسدد دا مسدد بن مسرهد بن مسربل بن مرعبل الأسدى البصرى وتشاء دي، ددة مختصر حالات پد. كتاب الايسان، ۱۹۰۰ من الايسان ان يعب لاغيه ما يعب لنفسه، ، سرده آ، او دغه شان تفصيلا په كتاب العلم كنبي , , باب من عص بالعلم قوما ددن قوم كراهية ان لا يفهوا، ، سره تيرشوي دى ـ

پ عدبالمع بني (ويد : دا ابوعبد الرحمن عبد الله بن داود بن عامر بن الربيع الهمداني ثم الشعبي

→ عبدالله بن داود : دا ابوعبد الرحمن عبد الله بن داود بن عامر بن الربيع الهمداني ثم الشعبي
المعروف بالخريبي دي _اصلا دكوفي دي، دبصره په محله , خربيد، كبني ئي سكونت
اختيار كړي وو، دي وجي نه د , خربي، به نسبت سره ډيرمعروف دي _ ()
اختيار كړي وو، دي وجي نه د , خربي، اله سبت الله عبد المحدد و الحد في الحد المحدد و الحد في الحد و الح

احیار مړې وو دی ویځې ده ۱۳ برې مالد، توربن یزید، آلحسن بن صالح، سفیان دې د اسرائیل بن یونس، اسماعیل بن ابی خالد، توربن یزید، آلحسن بن صالح، سفیان ثوری، امام اعمش، شریک بن عبدالله نخعی، قاضی عافیه، امام اوزاعی، عبدالملک بن جریج، فضیل بن غزوان، فطربن خلیفه، مسعربن کدام اوهشام بن عروه المنظم، وغیره حضراتونه روایت حدیث کوی ـ

ددوى نه روايت كونكوكنبي بشربن الحارث الحافى، زيدبن اخزم الطائى، سفيان بن عيينه، الحسن بن صالح بن حى ردهومن شيوخه)، عباس بن عبدالعظيم العنبرى، على بن المدينى، عمروبن على الصيرفى، عمروبن محمدالناقد، محمدبن بشاربندار، محمدبن الفضل عارم السدوسى، محمدبن يحيى الذهلى، مسددبن مسرهداونصربن على الحهضمى شيئيم وغيره

أ قوله : , , عن على : الحديث، اخرجه البخارى فى صحيحه (ج ١ص٣٠) فى كتاب الوضوء، باب من لم يرالوضوء الابن المخرجين : من القبل والدبر، رقم (١٧٨). و (ج ١ص٤) فى كتاب الفسل (الوضوء) باب غيل المنخي المخرجين : من القبل والدبر، رقم (١٩٨٩). و (ج ١ص٤) فى كتاب العلمين، باب المذى، رقم (١٩٩٧). والنسائى فى سننه، فى كتاب الطهارة، باب ماينقض الوضوء وما لاينقض الوضوء من الدنى، رقم (١٥٣١) و (١٥٣) و (١٥٣) و النيم، باب الوضوء من المذى، رقم (١٩٣١) و كتاب الغلل والتيم، باب الوضوء من الدنى، رقم (١٩٤٣) و (١٩٤٨) و المدى، وابو داود فى سننه، فى كتاب الطهارة، باب ماجاء فى المنى والمذى، رقم (١٩٤١) و وابن ماجه فى سننه، فى حاب الطهارة، باب ماجاء فى المنى والمذى، رقم (١٩٤١) و وابن ماجه فى سننه، فى كتاب الطهارة باب الوضوء من المذى، رقم (١٩٤١) و واحمد فى مسنده (ج١ص٨٥) رقم (١٩٤٢) و (٨٩٨) و (٨٩٨) و (٨٩٨).

^{ً)} كشف البارى (ج ٢ص٢)_ ً) اوگورئ تهذيب الكمال (ج ١٤ص٥٨ و ٤٥٩)_

```
لوئ لوئ محدثین دی _ (`)
```

امام يحيى بن معين مُريك فرمائي ,, ثقة، صدوق، مامون،، _(`)

امام سعد مُسَيِّة فرمائي ,,كان تقة داسكا،،_()

امام دارمی ﷺ فرمانی چی ماد یحیی بن معین ﷺ نه د عبدالله بن داود خریبی په باره

کښې تپوس اوکړونوهغوی اوفرمائيل ,,**تقة**مامون،، مابيا تپوس اوکړوچې ابو عاصم النبيل

څنګه دې ؟ نواوفرمائيل ئي ٠٠ **ثنة ..** ما ترې نه دا دريافت کړل چې په دې دواړوکښې کوم يوستاسوپه نيز ډير خوښ دي ؟ نواوفرمائيل ئي ,, تقتان،،_ر*،

ليكن امام دارمي كوات فرمائي ,,الخريس اعلى،، _،

امام ابوزرعه او امام نسائی مُحَيِّدُ فرمائی ,, ثقة،،_ (٢)

امام دارقطني بحشة فرمائي ووثقة زاهده، والريح

ابن قانع مِيد فرمائي ,,كان تقد،، _^)

ابن حبان مين دي به كتاب الثقات كنبى ذكر كړې دي د٠٠

حافظ ابن حجر مُشلة فرمائني ,,ثقة عابد،، رائعة

حافظ ذهبي مُعَلَّةٌ فرمائي ,,لتقة،حجة،صالح،،_(١١)

ابن عيينه ويَرَات فرمائي ,, ذاك احدالاحدين، _ (١٦) يعنى هغه به يواخو كبنسي يواخي دي _ يوخل ئى اوفرمائيل ,, ذاك شيخنا القديم،، _(١٣)

) تهذيب الكمال (ج ١٤ ص٤٦) _ اً) طبقات ابن سعد (ج٧ص٢٩٥)_

) تاریخ عثمان بن سعد الدارمی (ص۱۸۲)، رقم (۶۵۳_۶۵۵) _

^{تم} حواله بالا

عُ) تهذيب الكمال (ج ٤ اص٤٤) والجرح والتعديل (ج ٥ص٥٥).رقم (٧٥٥٥)_

() تهذيب الكمال (ج ٤٤ ص ٤٤٦) وقال أيضا: , ,من الرفعاء الثقات.. انظرسنن الدار قطني (ج ١ص١٧٢). . كتاب الطهارة. باب احاديث القهقة في الصلاة وعللها. رقم (٤٧)_

^) تهذیب التهذیب(ج۵ص۲۰۰)_

ُ) كتاب الثقات لابن حبان (ج٧ص ٤٠)_

) تقریب التهذیب (ص۳۰۱)،رقم (۳۲۹۸)_ ً) الكاشف (ج ١ص ٥٤٩). رقم (٢٧٠٦)_

٬۱ تهذیب التهدیب(ج۵ص۲۰۰)_

ً) حواله بالا

⁽⁾ دشيوخو اوتلامذه د تفصيل دپاره اوګورئ تهذيب الکمال (ج ۱۴ ص ٤٥٩ ـ ٤٤١) _

ابوحاتم مُوطِيّة فرمائي ووكان يعيل الى الراى، وكان صدوقا،، _(')

امام وكيع مينية فرماني ,,النظرال وجه عبدالله بن داودهبادة،، ورن

عبدالله بن داود خريبي مسلم دامام ابوحنيفه مسلم په شاګردانوکښې دې، هغه دامام اعظم

ډيرمداح وو ، چنانچه دهغوي قول دې .. مايقع لي ايونيځة الاحاسداو جاهل،، _ (ً)

يوځل دهغوی په وړاندې چا دامام ابوحنيفه _رح، تذکره کولو سره اوونيل چې امام ابوحنيفه دهيرو مسائلونه رجوع کړې ده،مقصد نې دا وو چې رجوع کول دناپختګې علامه ده _ ليکن

خريبي المنظمة فورا جواب وركرور انهايرها القليه اذا تساع علمه، رأي خريبي المنظمة المنظمة المنظمة المنظمة المنظمة

یعنی , فقیه هغه وخت رجوع کوی کله چی دهغه په علم کښی وسعت راخی،،۔ عبدالله بن داود خریبی میشید دامام ابو حنیفه میشی په خدماتو، خصوصا د سنن وفقه دحفاظت خدمت په بنیاد باندی به نی وائیل , یچپ علی اهل الاسلام ان یدهوالله لای حنیفة لی صلاحه،،۔ ٥ یعنی, په اهل اسلام باندی واجب دی چی په خپلومونځونو کښی دامام ابوحنیفه دپاره دالله

تعالى نەدعا غواړى،، _ عبدالله بن داود خريبي گئيلة ډيرپه مشكله حديثونه اورول _ ()

قاضى يحيى بن اكثم من له له نمي يوخل په ليدلوسره أووينل چې تهٔ ما كله اوليدلې نوما عزم او كړو چې تاته به حديث نه اوروم - ()

يوځل ابرآلعينا ، هغوى لره دحديث اوريدلودپاره راغللو . نوهغوى ترې نه تپوس اوكړو چې څخه راغلي يې ؟ نوهغه جواب وركړوچې دحديث اوريدولو دپاره راغلي يم ، نووې فرمائيل چې لاړشه اوږومبې قرآن زدة كړة بيا راشه ، ابوالعينا ، اوفرمائيل چې ما قرآن زده كړې دې فورا ئې ترې نه امتحان وافستلو ، نوهغه فورا جواب وركړو ، نوبيا ئې اوفرمائيل چې لاړ شه اوفرائض زدة كړه نوبيا ئې اوفرمائيل چې لاړ شه وافستلو ، دې نه پس ئي ورته اوئيل چې اوس , عربيت ، زدة كړه جواب ئې وركړو چې دقرآن كريم او د فرائض نه وړاندې مې د , عربيت ، ، علم حاصل كړې دې ، فورا ئې سوال ور واچولو ، ابوالعينا ، ددې جواب هم ښه كافى شافى وركړو ـ په آخركښى اوفرمائيل , لرحداث احدا لحداثتك ، كه چې ما چاته حديث اورولونو تاته به مې ضرور اورولې وې - ()

^{′)} الجرح والتعديل (ج۵ص۵۵). رقم (۷۵۵۵)_ ^۲) تذكرة الحفاظ (ج۱ص۳۸)_

⁾ للدورة المحاول (باحل ۱۳۰۸)_) سير اعلام النبلاء (ج۶ص ٤٠٢)_

ا) تذكرة العفاظ (ج اص٣٣٨)_

⁾ كذكرة العصاط (ج. الملكة ١٠٠٠)_ *) الاكمال لابن ماكولا _(ج٣ص٢٨٥و ٢٨٦)_

⁾ تذكرة العافظ (ج اص٣٣٨)، رقم (٣٢٠) _

^{ً)} حواله بالا _

^{^)} حواله بالا_

عبدالله بن داود خریبی کیشتر ۲۲ ۱هجری کښې پیداشوې وواوپه ۲۱۳ هجری کښې وفات

دامام مسلم پر شوانده سواباقي اصحاب اصول خمسه هم دهغوي دحديثو تخريج کړې دي _ (٢, رحبه الله تعالى رحبة واسعة

الاعمش دا ابومحمدسليمان بن مهران الاسدى الكوفى المعروف بالاعمش معلي دى _

ددوی حالات په کتاب الايمان، ، و و الله دون ظلم، الاندې تيرشوې دي _ (٦)

@ منذ ر الثورى : دا ابويعلى منذربن يعلى الثوري الكوفي والله دي . (*)

دي د محمدبن الحنفية، الحسن بن محمدبن الحنفية، الربيع بن خثيم، سعيدبن جبير، عاصم بن ضمرة المتناخ ندروايت كوى_

اوددهٔ نه سفيان ثوري،امام اعمش،فطربن خليفه، الحجاج بن ارطاة، جامع بن ابي راشد اومحمدبن سوقه التيخ وغيره روايت كوي_ ٥٠ ـ

ابن سعد مُنظة فرماني چي ,, ثقة، قليل الحديث،، رن

امام يحيى بن معين، عجلي او ابن خراش ﷺ فرماني ,,ثقة،،_(٧

حافظ ذهبي مُولِيَّة فرمائي ,, ولتوه،، ^) حافظ ابن حجر مُرلِيَّة فرمائي ,, لتقة،،_ ^) ابن حبان ﷺ دى په كتاب الثقات كښى ذكركړې دې _ (۱۰)

محمدبن الحنفيه مُرَيُّكُ سره دومره پاتې شوې ووچې دهغوي صاحبزاده وائي ,, لقد غلبناهنا

التبطى ملى ايينا،، (١١) يعنى دا نبطى زمونږ په والد باندې زمونږ نه غالب راغللو_

اصحاب اصول سته ددهٔ روایت اخستی دی _ (۱۲) رحمه الله تعالی رحمه واسعة .

^{ً&#}x27;) تهذيب الكمال (ج ٤ ١ص٤٤)_ ً) حواله بالا

اً) کشف الباری (ج۲ص۲۵۱)_) تهذيب الكمال (ج٢٨ص٥١٥) _

م) دشيوخواوتلامذه تفصيل دپاره اوګورئ تهذيب الکمال (ج۲۸ص۵۱۶)_) الطبقات لابن سعد (ج۶ص۳۱۰)_

⁾ الجرح والتعديل (ج ٨ص ٢٧۶)، رقم (١٤٤٠٠)

⁾ الكاشف (ج٢ص٢٩٤)، رقم (٥٥٣٥)_

^{ً)} تقريب التهذيب (ص٥٣٤)، رقم (٤٨٩٤) ً ') الثقات لابن حبان (ج٧ص ٤٨٠)_

[٬]۱ تهذیب الکمال (ج۸۲ص۵۱۶و۵۱۷)_

[٬]۱ تهذیب الکمال (ج۸۲ص۵۱۷)_

 محمد بن الحنفيه : دې د حضرت على بن ابى طالب كرم الله وجهه صاحبزاده محمد بن على بن ابى طالب رحمة الله دې، ابوالقاسم ددة كنيت دې، ابوعبدالله هم ورته وئيلې كيږى، "ابن الحنفية، ، نوم سره معروف دې _ (')

حنفية به اصل كي ددوى د مور نسبت دي. چه دهغي تعلق د بنو حنيفه سره وو. دهغي اصل نوم خوله بنت جعفر بن قيس دي. په جنګ يمامه كي قيد شوي راوستلي شوې وه (٢) دي دخپل والد حضرت على الله بن عباس دي دخپل والد حضرت على الله بن عباس دي دخښرت عماربن ياسر الله بن عباس الله دده نه روايت كوي. او دده نه روايت كونكو كښي دده خوي ابراهيم بن محمد بن الحنفية اوحسن بن محمد بن العنفية اوحسن بن محمد بن العنفية عمران محمد بن العنفية عون بن محمد بن العنفية بنه علاوه سالم بن ابى الجعد، عبدالله بن محمد بن العنفية بنه علاوه سالم بن ابى الجعد، عبدالله بن محمد بن على بن على بن ابى طالب، بن ابى طالب، ورباح، عمروبن دينار، ابوجعفر محمد بن على بن ابى طالب، اوده وورارة محمد بن على بن ابى طالب، محمد بن قيس بن مخرمه محمد بن اوده ورداد وورارة محمد بن عمر بن على بن ابى طالب، محمد بن قيس بن مخرمه محمد بن

نشرالهمداني،منذربن يعلى الثورى اومنهال بن عمرو المنظر وغيره حضرات دى ـ ر^٣) ددة نوم اوكنيت حضرت على المنظر دحضور نبى كريم الطال به اجازت اخستوسره محمد او ابوالقاسم ايخودې وو، چنانچه دحضرت على المنظر نه روايت دې ,,قلت: يا رسول الله، ان ولديل

مولودبعدك اسيه باسهك واكنيه بكنيتك؟ قال: ثعم،،_ر، ً، يعنى ,, يارسول الله ! كه ستاسونه پس خما كوم نوى پيدا كيدونكى وى نوستاسوپه نوم ورته نوم كيكدم اوستاسو په كنيت ورته كنيت كيكدم ؟ نونبى تييُلامِ ورته اوفرمائيل چې هاؤ.؛

آجازت دی،،۔ امام عجلی ﷺ فرمائی، تابی ثقة،کان رجلاصالحا،،_(^۵)

امام عجلی پرین و رمانی، تابی تقهه ۱۵ رجد صانعه، _ر ابراهیم بن عبدالله بن الجنید پُرین فرمانی

لاتعلم احدا استدعن على عن التي صلى الله عليه وسلم اكتولا اصح مها استدم محدون العنفية، و ' ،) يعنى , محمد بن الحنفية كوم چى دحضرت على الله الله يا الله الله سره دحضور اكرم الله الله يوكن به واسطه سره دحضور اكرم الله الله وايات بيانوى مونود ده نه اوچت به كثرت اوصحت كنبى څوك نه دې موندلي _

يوكس محمد بن الحنفية ته اووئيل ,, ما بال ابيك كان يرمى بك في مرام لايرمى فيها الحسن

^۱) تهذیب الکمال (ج۲۶ص ۴۷ ۱او ۱۹۸)_

⁾ بورتنئ حواله_ `) پورتنئ حواله_

⁾ پورسی طوب __ کا دشیوخواوتلامذه تفصیل دپاره او گورئ تهذیب الکمال (ج۲۶ص ۱٤۸ او ۱٤۹)_

^د) تهذیب الکمال (ج۲۶ص۱٤۹)_

^{ً)} حواله بالا _

والعسين؟،، يعني ,, څه خبره ده چې ستا والدتالره په داسې داسې مشکل مهماتو کښې ليږي چرته چې حسن اوحسين نه ليږي ؟، ،

نوپه دې باندې هغه جواب ورکړو ۱۰۰ لانهماکانا عديه و کنتيده، قکانيتو آلييد لامن عديه،، _ () يعني .. خکه چې هغوى دواړه دهغه د پاره درخسار حيثيت لرى او خه دلاس حيثيت لرم او دا فطرى خبره ده چې دخپل رخسارو بچکول په لاسونوسره کيږي،، _

ابن سعد ميد فرماني ,,كان كثيرالعلم، ورعا،، _ ()

ابن حبان دې په کتاب الثقات کښې ذکر کړې دې او ليکلی دی ,,کان من افاضل اهل بيته،، ، ، ، دې د حضرت ابوبکرصديق المالئ په دورخلافت کښې پيداشوې دې، ديوبل قول مطابق دحضرت عمر المالئ په عهد خلافت کښې پيداشوې دې، په بچپن کښې ئې دحضرت عمر المالئ زيارت هم کړې دې _

په تاریخ وفات کښې نې ۷۳هجری ، ۸۱هجری ، ۸۲هجری، ۹۲هجری، او۹۳هجری، مختلف اقوال ملاویږی ـ ر^۴، رحیه الله تعالى رحیة واسعة.

حضوت على 問意: دحضرت على بن ابى طالب كرم الله تعالى وجهه حالات په كتاب العلم
 ..باب اثم من كذب على النبى صلى الله عليه وسلم، سره تير شوى دى _

قوله: قَالَ كُنْتُ رَجُلاً مَنَّاءً: حضرت على ﴿ فَرَعَانَى حِي مانه به به كثرت سره مذى خارج كيدله _

.مذی، هغه اوبه دی کومې چې دخپلې ښځې سره دملاعت او دمینې په وخت خارج کیږی ه م د ثلاثی مجرد نه دا مندی پیندی منیا اود ثلاثی مزید نه دباب افعال او دباب تغیل نه استعمالیږی، په معنی د, خرج منه المذی مناء: بروزن شداد، کثیر المذی سړی ته وائیلې کیږی ـ ()

بیا لفظ ..مذی، . دمیم په فتحه، د ذال په سکون اودیاء مخففه سره لوستلي کیږی، بعضي حضراتو..مذی، ، په وزن د..غنی، ، یعنی دمیم په فتحه، او دذال په کسره او په یا ء مشدده سره ضبط شوې دې،ددې ړومبي ضبط افصح او اعلی دې _ . '')

^{&#}x27;) نهذیب الکمال (ج۲۶ص۱۵۲)_

^{ً)} الطبقات لابن سعد (ج۵ص۱۱۶)_

أ) كتاب الثقات لابن حبان (ج٥ص٣٤٧)_

^{ً)} تهذيب التهذيب (ج٩ص ٣٥^٦) _

۵۱ النهایة لابن الاثیر (ج۹ص۳۵۴_

^{ً)} ناج العروس (ج · ,وس ۳۳۹) مادة , ,وندی.._ ۲) ناج العروس (ج · ۱ص۳۳۹) مادة , ,وندی.._

قوله: فَأُمْرُتُ الْمِقْدَادَ أُنْ يَسُأَلَ النَّبِي صلى الله عليه وسلم فَسَأَله: بس مامقداد بن الاسود ته حکم ورکړوچې حضور اکرم کالله نه ددې حکم دریافت کړی. نوهغوی دریافت کړو۔

مخکښې په کتاب الغسل کښې روايت رروان دي. په هغې کښې دی ..قامرت رجلا، ۱، ۱۰ هغې کښې دی ..قامرت رجلا، ۱، ۱۰ هغې کښې درجل مبهم نه هم دا حضرت مقداد بن الاسود المتخدم مراد دې ـ (۱)

دحضور اکرم ﷺ نه دمذی په باره کښې سوال کو لو والا څوک وو ۲ بیا دلته سانل حضرت

دسنن نسکانی په یو روایت کښې سائل ني حضرت عمار الاتو ګرزولي شوې دې ـ ۲۰ او دابن حیان ۵۰ طحاوی ۵۰ اوداسماعیلی ۲۰ په روایتونوکښې دی چې په خپله حضرت علی

ابن حبان مُشِیَّ دا درې واړه روایاتونه داسې جمع کړي دي چې حضرت علي ﷺ رومبې په خپله سوال کړې دې بيانې حضرت عمار ته دتپوس کولو وينا کړې ده،اوبيا ني حضرت مقداد ته حکم کړې دې اوبيا ئې په خپله تپوس کړې دې _ (^>

حافظ مُنْ فَلَهُ فرمائي چې دا دتطبيق مناسب دي،بياهم چونکه په بعضي طرقو کښې دحضرت على الله الستحياء مذكور ده، ددې وجې نه په خپله دحضرت على الله تپوس كول به په مجاز باندې حمل کیږي او وئیلې کیږي به چې چونکه آمر حضرت علي اللي و، ددې وجې بعضې راویانو حضرت علی گائی دسوال کولونسبت کړې دې _په دې جواب باندې نووی او

اُسماعیلی رحمهماالله جزم کړې دې ـ (^)

حضرت عَلَى ثُلَثُو حَضِرتٌ مُقَدَّادُ اوحضرت عمار ثُلَثُهُ كَسِي هريوته حكم وركړې وو ددې تانید ددې روایت نه کیږي کوم چې امام عبدالرزاق صنعاني کورځ په خپل .. مصنف،، کښې نقل کړي دی:

,, عائش بن ائس اخو سعد بن ليث قال: تذاكر على بن إن طالب وعبار بن ياسر والبقداد بن الاسود: المذي، فقال على: ان رجل مذاع، فاسالوا رسول الله صلى الله عليه وسلم عن ذلك، فإني استحيى إن اساله

[]] صحيح البخاري (ج ١ص ١ ٤)، كتاب الغسل. باب غسل المذي والوضوء منه _

[&]quot;) فتح البَّاري (ج ١ص ٣٧٩)). كتاب الغسل باب غسل المذي والوضوء منه _

[&]quot;) سنّن النساني. كتاب الطهارة، باب ما ينقض الوضوء وما لاينقض الوضوء من المذي، رقم (١٥٤ و ١٥٥)__ ") الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان (ج٣ص١٤٣). ذكرايجاب الوضوء على المذى والاغتسال على المنى.

⁾ شرح معاني الاثار.كتاب الطهارة.باب الرجل يخرج من ذكره المذي.كيف يفعل؟ رقم (٢٠١٠) _

⁾ فتح الباري (ج ١ص ٣٨٠). كتاب الغسل.باب غسل المذي والوضوء منه _) الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان (ج٣ص١٥٣ و ١٩٤)_

م) فتح الباري (ج ١ ص ٣٨٠)). كتاب الغَّسل.باب غسل المذي والوضوء منه _

اُبن بشكوالْ رَبِيرُ وَ حَضَرت مقداد الله الشرائل كيدلولره صحيح ترزولي دي _ ٢٠

شوي دي، البته سوال هم مقداد كړې وو ر "، والله اعلم. دا هم ممكن ده چې كله داسوال نبي كريم 讀 نه حضرت مقداد او كړونو حضرت على هم همتيار كولوم على دياك سور شيخا مين تيا الياط داد دو لوموني سال اليك

همت اوکړو او دمسنلي دنزاکت په پیش نظرمزید تسلی اواطمینان دپاره هغوی سوال اوکړو_ ق**وله: فَقَــاَلَ «فِیهِ الْوُضُوءُ»:** نبی کریم نظم ارشاد اوفرمانیلو، دمدې دوجې نه اودس دې

یعنی په خروج دمذې باندې اودس واجب دې، ددې دوجې نه غسل نه دې واجب _ په خروج دمذې صورت کښې به جميع ذکر وينځلې کيږي يا به موضع اصابت وينځل کافي

په خروج دمدی صورت کښې به جمیع دکر وینخلې کیږی یا به موضع آصابت۔ وینخل کافی وی؟ دعلماء پددې خبردباندې اجماع ددچې په خروج دمدی فقط موجب داودس دی _ . } البتد اختلاف یددې خبرد کښې ,دی چې په خروج دمذې دو چې نه صرف مرضع اصابت ، نیخا

البته اختلاف په دې خبره کښې دې چې په خروج دمذي دوجې نه صرف موضع اصابت وينځل پکاردې او که دذکر سره انثيين هم وينځل پکار دي ؟ او الماد د ميلوند او انهيين هم وينځل پکار دي ؟

امام زهری ﷺ فرمانی چې په خروج دمدی صورت کښې به جميع ذکر وينځل واجب دی، صرف موضع اصابت وينځل کافي نه دی _ (°)

دامام مالك أود امام أحمد رحمهاالله هم يويو روايت هم دادي_ (

دامام مالک او دامام احمد رحمهاالله يوبل روايت دادې چې د کرسره سره دانتيينو وينځل هم واجب دي، هم دا دامام اوزاعي مملخ راي هم ده .. (٧)

دامام ابوحنيفه، دامام شافعي او دجمهوروعلماؤ مذهب دادې چې په خروج دمذي صورت

^{&#}x27;) الىصنف لعبد الرزاق _ ج\ص100، رقم (٥٩٧) _ نيزدي سراوگورئ سنن النسانى.كتاب الفسل والتيمم من المجتبى، الوضوء من العذي. رقم (٤٣۶) _

⁾ فتّح البارى (ج اص ٣٨٠))، كتاب الغسل باب غسل المذى والوضوء منه _

⁾ حواته باد_ ⁴) اوجزالمـــالک (ج ۱ص٤٧٣). كتاب الطهارة. باب الوضوء من المذى _

⁾ اوجرائے۔۔۔۔ س کی برائی ہے۔ ''م عمدۃ القاری (ج ۳س ۲۱۹) کتاب الوضوء. باب غسل المدنّی والوضوء منہ _

فمُ المغنى لابنَ قِدَامة(ج ١ص ١١) باب ماينقض الطهارة _والاستذكار(ج ١ص ٢٨٤) باب الوضوء من العذى ') نيل الاوطار (ج ١ص٢٧) باب ماجاء فى العذى _

کښي به صرف هم موضع اصابت وينځلي کيږي. ذکراو انثيين هريولره به دعدم اصابت په صورت کښې په دوينځلوضرورت نه وي 🐪

ذكر اوانثيين دغسل دقائلينواستدلال دحضرت رافع بن خديج على روايت نه دي .

و وان عليا امرعها دا ان يسال دسول الله صلى الله عليه وسلم عن الهذى، فقال: يغسل منه اكيرة ويتوضأ ، · ^{(*} ، .. يعنى حضرت على الشرخ حضرت عمار الشرخ ته حكم وركروچي درسول الله على نه دمدي په باره كښي تيوس او كړة .. نوهغوى او فرمانيل چي ذكر او ددې ګيرچاپيره مقامات دې او ينځلې شی اواو د س دی او کری شی ۰۰ ـ

دغه شان د ابوداودپه يو روايت کښې دي .,ليغسل ذکرهوانثييه،،_("،

دحضرت عبدالله بن سعد انصاري المنتخ به روايت كنبي دي .. فتغسل من ذلك فرجك والثييك رأى يعنى ته به دمذى دوجي نه خپل شرمګاد او انثيين وينځي...

په شرح معاني الآثار كښي دحضرت عمر الله اثر نه هم دا حضرات استدلال كوي ..اذاوجمت الهاء فاغسل فهجك وانثييك،، $_{-}$ $_{0}$ يعنى ,, كله چې مذې اومومې نو ته خپل شرمگاه

د جمهورو دلائل : ① په سنن نسائي کښي دحضرت ابن عباس ﷺ نه مروي دي:

ور تذاكر على والبقداد وعمارقعال النبي صلى الله عليه وسلم: ذالك البذي، إذا وجدة احدكم قليغسل ذلك منه، وليتوضأ وضؤة للصلاة (¹)

یعنی .. حضور اکرم کا او فرمائیل دامذی دد. کله چی په تاسوکښي څوک مذی بیامومی نو دا دې اوينځي او دمانځه دپاره چې څنګه آودس کيږي دغه شان اودس دې او کړي،،۔

ن په سنن نسآئي کښي اوپه مصنف عبدالرزاق کښي دحصرت ابن عباي الانظ روايت دي، په كوم كښى چى حضورا كرم تايم فرمائيلى دى:

. • ذاك المذى، اذا وجد احد كم فليفسل ذلك منه، وليتوضأ وضوَّة للصلاة، أو كوضوتُه للصلاة ، ._ (^

⁾ عمدة القارى (ج٣ص٢١٩). نيز د تفصيل دپاره اوګورئ احکام الاحکام شرح عمدة الاحکام (ج ١ص٤٣) كتاب الطهارة باب في المذي وغيره _ وشرح النووي على صعيع مسلم (ج آص١٤٣) كتاب الطهارة، باب المذى _

[&]quot;) سنن النسائي. كتاب الطهارة،باب ماينقض الوضوء ومالاينقض الوضوء من العذي. رقم (100) _ وانظر السنن لابي داود، كتاب الطهارة، باب في المذي، رقم (٢٠٧_٢٠)_

آ) السنن لابي داود، كتاب الطهارة، باب في المذي، رقم (٢٠٨)_

[&]quot;) السنن لابي داود. كتاب الطهارة. باب في المذي،رقم (٢١١)_ ثم شرح معانى الآثار، كتاب الطهارة. باب الرجل يخرج من ذكره المذى كيف يفعل. رقم (١٤) _

مُ سننَ النساني، كتاب الطهارة، باب الوضوء من المذي، وقم (٤٣۶)_ ") سنن النساني. كتاب الطهارة. باب الوضوء من العذي رقم (٤٣۶)_والعصنف لعبدالرزاق الصنعاني (ج ۱ص۱۵۵). رقم (۵۹۷) _

٠٠ يعنى دامدى ده. په تاسوكښې چاته دې سره مخكښې والي اوشى نو..دې لره دې ، .اوينځي اودمونځ دپاره چې څنګه اودس كوى دغه شان دې مكمل اودس اوكړى - ٠٠

ددې حديث داوريدو نه پس ابن جرير دحصور کا دارشاد .. فيفسل ذلك منه،، په باره كښي دعطا و پیلین نه تپوس او کوونو امام عطاء کیلی جواب او کوو. حیث المذی منه ققط،، () مطلب داچی په کوم خانی کښی مذی لګیدلی وی صرف هم هغه خانی وینځل پکاردی یا جمیع ذکر لره؟ نوعطاء ورتمجواب ورکړوچی چرته مذی لګیدلی وی صرف هغه خای لره دی اوینځی 🕜 ـ په شرح معانی الآثار کښې د حضرت علی کُانُونه مروی دی 🛚

، كنت رجلا مذاء، وكانت عندى بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم، فارسلت الى رسول الله صلى الله عليه وسلم، فقال: توضا واغسله،، _ ()

يعنى ،, رَهْ پَه كثرت مذى په عارضه كښې مبتلا اووم، چونكه ماسره درسول الله ﷺ صاحبزادى وه دې وجې ما بل څوك دمسئلي دريافت كولودپاره حضورښي اكرم ﷺ ته اوليږولو، نوهغوى اوفرمائيل چې بس اودس اوكړة او ,,هغې لره، ، اوينځه، ، _

@ به مصنف عبد الرزاق كنبي دحضرت ابن عباس تها في قتوى ده ,,....من المني الغسل، ومن المذى والودى: الوضوء يغسل حشفته ويتوضاء، ٥٦٠

حافظ ابن عبد الر وترالل فرمائي : ١٠ واما معنى غسل الذكر من المذى ، فاندير يدغسل مخرجه ومامس الاذى منه، وهذا الاصح عندى في النظر، ، _ رأ ،

يعنى ,, غسل الذكرمن المدّى،، نه مرادمخرج دمدى لره اوكوم كوم خي كښې چې مذى لګیدلی وی هغی لره وینځل دی، هم دا زماپه نیزعقلی اعتبار سره اصح دی_

دجمهورو دطرف نه مخالفينو ته جواب ترکوم ځې پورې چې دهغې رواياتوتعلق دې په کوم كښې چې ، وذكر ، سره د , انتيين ، ، لره دوينځلو ذكردې نوجمهور په نيزدا ياخوپه استحباب باندې مخمول دی _ ^۵۰,

ياداحكم علاجًا دې، څنګه چې امام طحاوي کيليه تصريح کړې ده چې داوبو دجهړكاؤ دې وجي نه تقلص کيږي او دخروج مدى انقطاع کيږي _(', رېې کې د د د د د د کې و کې په عام طورباندې خلقودا ګڼړل چې دمذې معامله د پوجواب دا هم ورکړې شوې دې چې په عام طورباندې خلقودا ګڼړل چې دمذې معامله د پېول.، نه اخف ده،نودومره احتياط به نې نه کولوڅومره چې پکاردې، دې وجې نه

-) اوكورئ الاستذكار (ج ١ص ٢٨٢). باب الوضوء من المذي، والتمهيد لابن عبدالبر (ج ٢١ص ٢٠٥)_) شرح معانى الآثار. كتآب الطهارة باب الرجل يخرج من ذكره المذى كيف يفعل ؟ رقم (۵) _
 -) مصنّف عبد الرزاق (ج ١ص١٥٩) كتاب الطهارة، باب المذى، وقم (٤١٠)) التمهيد لابن عبد البر (ج٢١ص٢٩٨)_
 - ^د) المغنى لابن قدامة (ج١ص٢١٢) باب ماينقض الطهارة_
 - مُ شرح معانى الآثار كُتاب الطهارة،باب الرجل يخرج من ذكره المذى كيف يفعل ؟

حضوراکرم نکا په دې کښې دشدت حکم ورکړوچې .ذکر . .سره . انثیین . لره هم اوینځی () ابن رسلان کیک فرمانی چې جمهورو اصل موجب لره کتلی دی. ځکه چې اصل موجب خو. خروج خارج . دې نولهذاددې حکم به بل محل طرف ته متجاوز کیږی نه بلکه صرف مخرج سره به متعلق وي _ ()

ددې خبرې تانید دجمهورو د ورکړې شوی دلانلونه کیږی په کوم کښې چې د.. افسله،،،^{(۲}). الفاظ دی، دکوم ضمیرچې د..مذی.. طرف ته واپس ګرزی _

د خروج مذی په صورت کښې داوبو استعمال ضروری دې که استجمار بالاحجار کافی دی؟ په دې مسئله کښې اختلاف دې چې په خروج دمذی صورت کښې ددې د تطیهردپاره داوبواستعمال ضروری دی که یا داحجار استعمال کافی دې ـ

داحنافوپه نيزداحجار استعمالولوباندې اكتفاكول جانزدي درگ

دشوافع په نيزدواړه اقوال دى _امام نووى کينځ په شرح دصحيح مسلم کښې دا قول راجح. ګرزولي دې چې داوبواستعمال ضروري دي _ (٩)

اوپه المجموع، ، كښي دويم قول يعني اكتفابالاحجار لره قول اصح ګرزولي دې _ () دحنابله په نيز يو روايت د اكتفا بالاحجار دې () يوروايت په ,,ضح، ، باندې داكتفادې

د ځاېنه په نير يو روايت د اخت بارځاو دې () (^اويوروايت دادې چې غسل ضروري دې ـ ()

دمالکیه په نیزهم دوآه اقوال دی،البته ابن عبدالبر ﷺ دا قول راجح ګرزولې دې چې ,,غسل،،ضروری دې_ (') والله اعلموعلمهاتمواحکم_

٥٢=بابذِكْرِ الْعِلْمِ وَالْفُتْيَا فِي الْمَسْجِيرِ

دباب سابق سره مناسبت : په دې باب کښې اوپه سابق باب کښې مناسبت داسې دې چې په باب سابق کښې سوال مذکوردې، اوپه

والوضوء منه _

^{&#}x27;) مرقاة المفاتيح (ج ١ص٣٣٥) باب مايوجب الوضوء _

⁾ اوجزالمسالک (ج ۱ ص ٤٧٥)__

^{ً)} اوجزالمسالک (ج۱ص٤٧۵)_

⁾ اوجزالمسالک (ج۱ص۴۷۳ و ۷۷۴)_ هم میلانی در از محمد در از ۱۹۸۵ (۱۶۲۸) کتاب الحیض باب

نمرح النووى على صحيح مسلم (ج١ص١٤٣) كتاب الحيض، باب المذى _

مُ المجمّوع شرح المهذب (ج٢ص٤٤) باب الاستطابة _

[·] كَا رَجِ السالك (ج اس٤٧٤)، وفتح الباري لابن رجب (ج اص٣٠٥)، كتاب الغسل بباب غسل المذي

م المجموع (ج٢ص ٥١٠)، باب ازالة النجاسة، وفتح البارى لابن رجب (ج١ص٥٠٥)_

⁾ المجموع (ج ٢ص ٤ ٤ ١) باب الاستطابة _

⁾ او كورى الاستذكار (ج ١ص ٢٨٤) كتاب الطهارة باب الوضوء من المذى ___

دې باب کښې د ۱۰۰ اهلال للحج، سوال مذکور دې، په دواړوکښې دامرديني متعلق استفسار دى د ر . () دى . () دې . () د د . د كول غواړى كور چې امام بخارى كڼلې دهغه خلقو ترديد كول غواړى كوم چې وائي چې په جمات كښې مباحثه كولر په صورت كښې به رفع صوت لارميږي، په دې سلسله كښې د احضرت توقف كوى، امام بخارى كڼلې په جواز باندې متنبه كولوسره دهغوى تر دىد كې . ()

مرديد تويي الهندرحمة الله فرمائى: " افتاء وتعليم وقضاء فى المسجد كښى تنگى حضرت شيخ الهندرحمة الله فرمائى: " افتاء وتعليم وقضاء فى المسجد كښى تنگى اودكراهت كمان دى، دبعضى اكابرواقوال هم دتنگى طرف ته مشيردى رى، دمولف كمان ين نيريه دى اموروكښى توسع مستحسن ده، ځكه ئى دلته هم او په ابوابو دقضاء كښى هم توسع كړى ده _ والله اعلم، _ رى،

حَاصَلُ دَاچِي بعضي سلفوبه ونيل چې جماتونه دمونخونو او د ذکرا ذکار دپاره وضع کړې شوی دی تعليم او تبليغ دجمات دوضع نه خلاف دی، نيزپه جمات کښې چې کله ماشومان سبق وائي نو شور او شغړپ کيږي، مباحثه کيږي، آوازونه او چت کيږي، نو جمات لره دداسې شور شغړپ نه پاکول پکاردي _

چنانچه اشهب مُوَيِّدُ نقل كوى: • وسئل مالك عن رفع الصوت في البسجد في العلم وغيرة، قال لاخير في ذلك في العلم ولافي غيرة، لقد اردكت الناس قديما يعيبون ذلك على من يكون في مجلسه، ومن كان يكون في ذلك مسجدة كان يعتذر منه، وانا أكرة ذلك، ولا ارى فيه غيرا، ، _ (^۵)

مسبودان پیمارات اداک گرای ادا که که چه تروس او کری شوچی په جمات کښی دعلم وغیره مذاکره یعنی , امام مالک گرای ادا که که چه تروس او کری شوچی په جمات کښی دعلم وغیره مذاکره سره اواز او چتول څنګه دی ؟ نووی فرمانیل چی که علم وی یا نور څد په دې که هیڅ غیر نشته دی، ما په قدیمه زمانه کښی خلق لیدل چی په کوم مجلس کښی به داسی کیدل نوهغوی به نه خوښول او که چرته به داسی په جمات کښی به کیدل نوهغوی به اعتذار کولو، زه په خپله دانه خوښوک ویم، ، _

امام بخّاري ﷺ ددغه حضراتو ترديد كوي اوفرماني چې علم خوپخپله يومخصوص ذكر دې_

۱) عمدة القارى (ج۲ص۲۱۷)_

^{ً)} فتع الباری (ج آص ۲۳۰) _

آ) چنانچه به صحیح بخاری شریف کتاب الصلاة باب رفع الصوت فی السساجد، رقم (٤٧٩) کنبی دی
 ر, عن السائب بن یزید قال: کنت قائما فی المسجد، فعصنیی رجل فنظرت، فاذا عدر بن الخطاب، فقال
 :اذهب فاتنی بهذین، فجئته بهما، قال: من انتما، اومن این انتما؟ قالا: من اهل الطائف، قال: لو کنتمامن اهل
 البلد لاوجعتکما، ترفعان اصواتکما فی مسجدرسول الله صلی الله علیه وسلم، مراح

الابواب والتراجم (ص٤٠)_

⁽م جامع بيان العلم وفضله (ج1ص ٥٥٤)،باب جامع في آداب العالم والمتعلم. فصل في رفع الصوت في المسجد وغيرذلك من آداب العلم، رقم (١٩٤٤<u>)</u>

أهام ابوحنيفه يوخلي به جمات كنبي خيل اصحابوسره به درس تدريس كنبي مصروفه ووچي دسفيان بن عيينه گيلي تيريدل هلته اوشو. نووي وئيل .. يا اباحنيفة، هذا في المسجد! والموت لاينها ان يوفع فيذه، يعنى اي ابوحنيفه ، به جمات كنبي دا خنگه آوازونه دى؟ : دلته خو آواز او يوتول نه دى بكار !! امام ابوحنيفه گيليا اوفرمائيل .. دمه، فانهم لايفقهون الابهذا، .. در د

بوغون دای په خپل حالسم بو حیسه وی وروناین بیدهم معمور په بود و به سام در په خپل حال در در در در در داخلق هم داسی علم او فقد حاصله وی دوی لره هم داسی په علم کنبی مناسبت پیداکیږی _ ځکه چې کله دیوبل په مقابله کنبی په جوش کنبی وی نوهریوکس به خپل قوت فکریه پوره طریقی سره استعماله وی او قاعده دا ده کله چې داسې خبره شروع شی نویه دې کنبی جسمانی طاقت شامل شی او په مزه مزه خبره کولویه خې آوازونه او چت شی _

[177] حَدَّثَنِي قُتَيْبَةُ بُنُ سَعِيدِ قَالَ حَنَاثَنَا اللَّيْكُ بُنُ سَعْدِ قَالَ حَذَّثَنَا تَافِعٌ مَوْلَى عَبْدِ اللَّهِ مُولَى الْمَسْدِ فَالَ حَذَّثَنَا تَافِعٌ مَوْلَى عَبْدِ اللَّهِ مُولَى الْمَسْدِ عُرَرًا. أَنَّ دَجُلاَ قَامَوْنِ الْمَسْدِ وَهُلَا اللَّهِ مِنْ أَيْنِ أَهْلَ اللَّهِ عَلَى الله عليه وسلم - « مُهلَ أَهْلَ اللَّهِ مِنْ أَيْنِ وَمُهلَ أَهْلُ عَلَيه وسلم - مُهلَ أَهْلُ الْمَسْدِيةِ مِنْ وَمُهلَ أَهْلُ الْمَالِقَةِ وَمُهلَ أَهْلُ اللَّهُ عَلَيه وسلم - قَالَ « وَمُهلُ أَهْلُ الْمَهُ وَلَهُ مَنْ وَمُولَ اللَّهِ عليه وسلم - قَالَ « وَمُهلُ أَهْلُ الْمُتَنِ مِنْ الله عليه وسلم - قَالَ « وَمُهلُ أَهْلُ الْمُتَى مِنْ اللّهُ عَلَيه وسلم - قَالَ « وَمُهلُ أَهْلُ الْمُتَنِ مِنْ اللّهُ عليه وسلم - قَالَ « وَمُهلُ أَهْلُ الْمُتَنِ مِنْ يَعْلَى اللّهُ عليه وسلم - قَالَ « وَمُهلُ أَهْلُ الْمُتَنِ مِنْ اللّهُ عليه وسلم - قَالَ « وَمُهلُ أَهْلُ الْمُتَنِ مِنْ وَمُنْ وَمِنْ وَمُنْ وَمِنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمِنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمِنْ وَمُنْ وَمُونُ وَمُنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمُونُ وَمُنْ وَمُونُ وَمُنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمُنْ وَمُونُ وَمُنْ وَالْمُنْ وَالْمُنْ وَمُونُونُ وَمُونُ وَمُونُ وَمُونُ وَمُونُ وَمُنْ وَمُونُ وَمُونُ وَمُونُ وَالْمُنْ وَمُونُونُ وَمُونُ وَالْمُونُ وَمُونُ وَمُونُ وَالْمُونُ وَالْمُونُ وَالْمُونُ وَالْمُونُ و

⁾ جامع بيان العلم وفضله (ج اص٥٥٥) باب جامع في آداب العالم والمتعلم، فصل في رفع الصوت في المسجد وغيرذلك من آداب العلم، رقم (٩٢٥)_

<sup>\[
\</sup>begin{align*}
\)
\text{ Eq. 6. 30 a.e.lib no saq. 1. Ilect.p. 1. Ideq. 1. Jail. 2. Despet (\$\text{Pl. 1. Sign.} \)
\text{ To Eq. 6. 30 a.e.lib no saq. 1. Ilect.p. 1.

رجال المديث

① قتيبه بن سعيد : دا ابورجاء قتيبه بن سعيدبن جميل بن طريف ثقفي كيني دي ـ دده حالات

په کتاب الایمان، باب افشاء السلام من الاسلام، ، سره تیر شوی دی ـ (۱) حصاله شده مروم ما از از از ایم می بروی بروی میشود در دری دالات به کتاب رید و الدی برد

اللیث بن سعد: دا امام لیث بن سعد مصری گرای دې _ ددۀ حالات په کتاب .. په ۱ الوی، د د دړۀ حالات په کتاب .. په ۱ الوی، د د ریم حدیث سره تیرشوی دی _ ()

﴿ نَافَعُ مُولَى عَبِدَاللهُ بِنَ عَمُو : دا دمديني منوري مشهور عالم اومفتىٰ نافع مولى عبدالله بن عمر القرشي العدوى العمري مُثيد دى _ أ

طالقان سره وور؟ بهرحال په يو غزوه کښې دې قيدې راغللې وواوحضرت عبدالله بن عمر ناتش دې واخستلو_(^دې دده د پلار د نوم په باره کښې هم ډير اقوال دی، بعضو,, هرمز،، اوبعضو,, کاؤس،، ښودلې

دې (۲) د حضرت عبدالله بن عمر شه راوی دې، ددوی نه علاوه دحضرت عانشه، حضرت ابوهیږی د حضرت عبدالله بن عمر شه راوی دې، ددوی نه علاوه دحضرت ام سلمه، حضرت ابوهیږه، دحضرت رافع بن خدیث کوی دغه شان دحضرت بن عمر زوجه صفیه بنت ابی عبید اودحضرت ابن عمر دصاحبزاد کانو سالم، عبدالله اوعبیدالله نه هم روایت کوی _

اوددهٔ نه روایت کونکو کښی امام زهری، ایوب سختیانی،عبدالله بن عمر، عبیدالله بن عبدالله بن عمر،زیدبن واقد،حمیدالطویل،ابن جریج،امام مالک،صالح بن کیسان، ابن عون، یحیی بن سعید، موسی بن عقبه،اسماعیل،بن امیه، ایوب بن موسی،یونس بن

۱) کشف الباری (ج۲ص۱۸۹)_ ۲) کشف الباری (ج۱ص ۳۲۶)_

⁾) اوګورئ تهذیب الکمال (ج۲۹ص۲۹۸)_

⁾ تهذيب الكمال (ج٢٩ ص٢٩٨)_ اً) تهذيب الكمال (ج٢٩ ص٢٩٨)_

أ قال النووى في تهذيب الاسماء واللغات (ج٢ص١٢٣). وقم (١٨٧) :,, سبى وهو صغير فاشتراه ابن عمر... وقال ابن ابن جاتم في الجرح والتعديل (ج٨ص٥١٧) رقم (١٥٧٧-٢٠٧٠): ,, اصابه ابن عمر في بعض غزواته... والله اعلم

يزيد جويريه بن اسماء ليث بن سعد، محمدبن عجلان، ابن ابي ذهب.ضحاك بن عثمان. سليمان بن موسى، بردبن سنان.ابن ابي رواد ، عبدالرحمن بن السراج،عبيدالله بن الاخنس. محمدين اسحاق،اسامه بن زيد،عمرين محمد،صخرين جويريه،همام بن يحيى،هشام بن عد الیث بن ابی سلیم حجاج بن ارطاة اشعث بن سوار اسحاق بن آبی فرود، ابومعشرنجيج،عبدالله بن نافع اوعثمان البرى المنظم وغيره بي شميره حضرات دى _ (`)

ابن سعد مُنظِيَّ فرماني .. كان تقة كثير الحديث، يرأ

امام بخارى مُسِينة فرمائي .. اصح الاسانيد: مالك عن نافع عن ابن عمر، ، _ `` امام مالک مُرثة فرماني چې کله زه نافع لره دحضرت عبدالله بن عمر الله نه روايت کول اورم نوبيا ماته په دې خبرې باند ې هيڅ پرواه نه وي چې داما دبل چانه اوريدلې نه دې _ ()

عجلى بَرَيْدٍ فرمائى .. مدنى تابى، ثقة،، _ ٥٠

ابن خراش وانی "ثقةنبیل،،_`\مام نسانی ﷺ فرمانی و **ثقة**،،_'\ ابن عيينه مُحِينة فرمائي ,,اىحديث اوثق من حديث نافع ؟،،،^

احمدبن صالح مصرى مُنِيَّة فرماني ,, كان نافع حافظا ثبتا، له شان، وهواكبر من عكممة عند اهل

خليلي مُنْ يَعْدَ فرماني :,, نافع من اثهة التابعين بالهدينة، امام في العلم، متفق عليه، صحيح الرواية، منهم من يقدمه على سالم، ومنهم من يقارنه به، ولا يعرف له خطا في جبيع ما روالا، ، _ (`` ،

يعنى ... نافع دمدينى دائمه تابعينو كښې دې، په علم كښې متفق عليه امام دې، صحيح روايت كونكې دې بعضي حضرات دې دسالم نه هم وړاندې كوى اوبعضې ئې دهغه همسر گرزوي، دده په ټولورواياتونو كښې څه غلطى اونه موندلې شوه،،۔

امام نووي فرماني پيجة ,,اجمعواعلى توثيقه،،_('')

() شيوخواوتلامذه تفصيل دپاره اوګورئ تهذيب الكمال(ج٢٩٨_٣٠٣). وسيراعلام النبلاء (ج۵ص٩٥_٩٧) ً) تهذيب الكمال (ج٢٩ص٣٠٣)_

") حواله بالا _

') حواله بالا_ نُ تهذيب الكمال (ج٢٩ص٢٠٤)_

> ً) حواله بالا_ ") حواله بالا _

^) كتاب الجرح والتعديل لابن ابى حاتم (ج٨ص٥١٧).رقم (١٥٣٧٧-٢٠٠٠) _ (م ٢٠٤٥) تهذيب التهذيب (ج ١٠ص ١٤٤)، وتعليقات تهذيب الكمال (ج ٢٩ص ٣٠٠)_

") تهذیب التهذیب (ج ۱۰ ص ۱۵ ۱ ۱ ۱ ۴ ۴) _

") - تهذيب الاسماء واللغات (ج٢ص ١٢٤(، رقم (١٨٧)_

حافظ ذهبي بكتليج فرمائي .. الامام، البقتي، الثبت، حالم البدينة،، _ (`)

دغه شان هغه فرمانی . • ، وقول میمون بن مهران : كبن و ذهب عقله، قول شأذ، بل اتفقت الامة على اند

حجة مطلقا،، رُن

دې چې نافع مطلقاً حجت دېّ. َ ـَ ابن حبان پيت دې په کتاب الثقات کښي ذکر کړې دې ـ (۲) دنافع مولی عبدالله بن عمر پيت وفات داصح قول مطابق ۱۱۷ هجری کښې شوې دې ـ (۴) رحبه الله تعالى رحبة واسعة

@حضوت عبد الله بن عمو الله و عصرت عبدالله بن عمر الله على حالات به كتاب الإيمان، , باب الايمان وِقول النبي صلى الله عليه وسلم: بني الاسلام على حسس،، لاندې تيرشوي دي _ (٥)

قوله: أَنَّ رَجُلاً قَامَ فِي الْمَسْجِينِ عصرت عبدالله بن عمر الله وماني چي يوسړي په جمات کښی اوردیدلو_

هم دا مقصودبالترجمة دې چې يوسړې په جمات کښې اورديدلو اوهغه دحضور کلي نه سوال او کړو_ داسړې څوک ووچا هم دده نوم نه دې ذکرکړې _ (٠)

د. مسجد، نه مراد مسجد نبوی دی (۲) ، حافظ آبن حجر کالی فرمانی چی ددی نه معلومیدی چې دمواقبت حج په باره په حديث کښې مذکورسوال دمدينې منورې نه دسفرکولونه

ق**وله**: فَقُلَّا <u>لَ يَارَسُولَ اللَّهِ،مِنْ أَيْرَى</u> تَأْمُرُنَا أَ<u>نُ نُهلَ :</u>عرض نبي اوكړو يارسول الله ا تاسومون ته د كوم خاى نه د تلبيه كوستكو أود احرام تركوحكم راكوي ؟

قوله: فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ-صلى الله عليه وسلم-«يُهلُ أَهُلُ الْمَدِينَةِ مِرْ

 قال الحافظ.,, لم اقف على اسم هذا الرجل.. (فتح البارى ج اص ٢٣٠). وقال ايضا: ,, لم يسم هذا الرجل.._ (هدى السارى ص ٣٩٠)_

^{&#}x27;) سير اعلام النبلاء (ج۵ص٩٥)_

^{ً)} سیراعلام النبلاء (ج۵ص۱۰۱)_

^{ً)} كتاب الثقات لابن حبان (ج۵ص٤۶٧)_

[&]quot;) سیراعلام (ج۵ص۱۰۱)_

^د) کشف الباری (ج ۱ص۶۳۷)_

[&]quot;) فتح الباری (ج ۱ ص ۲۳۰) _

اَلْحُكَيْفَةِ، وَيَّهِلُ أَهُلُ الشَّاْمِ مِنَ الْجُحْفَةِ، وَيُهِلُ أَهْلُ نَمْدٍ مِنْ قَرْنِ »: رسول الله على اوفرمانيل اهل مدينه به دذوالحليفه نه تلبيه لولى او احرام به تړى، او اهل شام به د جحفه نه احرام تړى او اهل نجد به دقرن نه احرام تړى _

. خوالحليفه : دتصغير سره، يعنى دحاء به ضمه سره، او دلام به فتحه سره دى، دى نه پس ياء مثناة من تحت ساكنه دى، دى نه يس فاء مفتوح ده، او يه آخره كښى تاء مدوره ده _ (')

مثناة من تحت ساكنه دې، دې نه پس فاء مفتوح ده،اوپه آخره كښې تاء مدوره ده _ (`) ذوالحليفه دمدينې منورې په جنوب كښې شپږ يا اووه ميلا يعنى ٩ كلوميټرلرې ديوځې نوم دې،ننسبا ورته "بئر على،، يا "آبار على،، وائپلې كيږي _ (`)

الجحفه : ححقه: بالضم، ثم السكون، والقاء_

اهل شام اواهل مصرکه په مدینه منوره نه تیریږی نو دوی دپاره میقات جحفه دې اوکه په مدینه منوره تیریږی نو داهل مدینه دپاره میقات ذوالحلیفه دې $\binom{7}{1}$

دا جحفه دمدینه منورې نه د شپږ مراحلوپه فاصله باندې مقام ٫٫ رابغ، ، نه جنوب مشرق طرفته تقریبا څلیریش کلومیټرباندې واقع دې _ ر^{*}) _

ددې اصل نوم ,, مهيعه، ، (بفتح الييم وسكون الهاء وفتح الياء البثناة من تحت، بعدها عين مهملة مفتوحة، وبعدها تاء مدودة) وو ، يوقوم دغلته راغللو او آباد شو ، سيلاب راغللوهغوى ئي ټول غرق كړل دې وجي نه دهغوى نوم ,,جحفه، ،كيخودلي شو _(⁶)

قرن : قرن ربفتح القاف وسكون الراء المهملة، وبعدها نون

دا د اهل نجد ميقات دې، دې ته قرن المنازل هم وئيلې کيږي، دمکه مکرمه نه اتيه کلوميټره لرې دې _(`) په دې کښې ,,راء، ، باندې فتحه لوستل غلط دی (`) ، ,, قرن ، , بفتح الراء، ، ياخوديمن يوه قبيله ده ، دحصرت اويس قرني گيلتي تعلق ددې قبيلې سره وو _(^)

ياُخُوديمُن يوه قبيلهُ ده، دُحضَّرت اويس قَرني مُنْكُ تعلقُ ددى قبيلي سرهُ ووَ ۗ (^) قوله: . وقَالَ ابْنُ عُمُرَويَزُ عُمُونَ أَنَّ رَسُّولَ اللَّهِ-صلى الله عليه وسلم-قَالَ « وَمُهْلَ أَهْلُ الْيَمَر. مِنُ يَلَمُلَمَ» . وَكَانَ ابْنُ عُمَرَيَقُولَ لَمُ أَفْقَهُ هَذِهِ مِنُ

⁾ انظر معجم البلدان (ج٢ص٢٩٥)_

⁾ معجم البلدان (ج٢ص٢٩٥). واطلس الحديث النبوى (ص١٥٠)_

⁾ معجم البلدان (ج٢ص١١١) _

^{ً)} معجم البلدان ﴿جَ٢ص١١١) واطلس الحديث النبوى (ص١٥٠)_

^{لم} معجم البلدان (ج ٢ص٢١١) .وعمدة القارى (ج ٢ص٢٥). والفتح الريانى (ج ١١ص١٥٥). كتاب الحج والعمرة. ابواب الاحرام ومواقيته. وصفته. واحكامه. باب مواقيت الاحرام المكانية _

⁾ معجم البلدان (ج ٤ ص ٣٣١) واطلس الحديث النبوى (ص ١٥٠)_

⁾ فنع البارى (ج اص ٢٣٠) _

⁾ اوگورئ المجموع شرح المهذب (ج٧ص ١٧٠). كتاب الحج، باب المواقيت

رَسُولِ اللَّهِ - صلى الله عليه وسلم: حضرت ابن عمر ﷺ فرمانی چې خلق وائی چې رسول الله ﷺ اوفرمانيل چې اهل يعن دې ديلملم نه احرام تړی - حضرت ابن عمر ﷺ فرماني ايد و ديوهه شوی -

فرمانۍ ل به چې زۀ دحضورا کړم ناه په دې خبره باندې نه اووم پوهه شوې _ پلملم : دې ته الملم هم ونیلې کیږی، دا دمکه مکرمه نه جنوب طرف ته په سل کلومیټرفاصله باندې واقع دی _ ‹ ′ .

د موالیت آهرآم تحدید : حضرت ابن عمر شا په دې حدیث کښې په جزم سره ددریو موالیت آهرآم تحدید : حضرت ابن عمر شا په دې حدیث کښې په جزم سره ددریو مواقیتوذکر کړې دې. دامد عرق. ذکرني بلکل نه دې کړې. یلملم کوم چې داهل یمن میقات دې دهغنی تذکره په لفظ .. زعم. سره ده، حضرت ابن عمر شا په خپل دې روایت که خوفرماني چې حضور شا د. یلملم. . کومه تذکره کړې ده په هغنې زه پوهه نه شومه، او په بل روایت کښې دی چې هغه دحضور شا نه په دې باره گښې اوریدلی هم نه دی، البته دنورو نه ني اوریدلی دی _

چنانچه دمؤطا په روايت كښې دى,, قال عبدالله: وبلغنى ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: ويهل اهل الله عليه وسلم قال: ويهل اهل اليين من يلهلم، _ (٢)

صحيح مسلم اوبه سنن نسائي كښې يو روايت دي ,, وذكهل __ولم اسمع_انه قال: ويهل اهل البيم مسلم ، _ رحم انه قال : ويهل اهل البين من يلملم، ، _ رحم ،

ددې ټولو رواياتونونه معلوميږي چې حضرت ابن عمر گانا دحضور کان نه ددرې مواقيتوپه باره کښې د ددرې مواقيتوپه باره کښې د دورې مواقيتوپه باره کښې د معغوى کان نه نه وروايدلي وو، او ديلملم په باره کښې د هغوى کان ان الصحابي هم وواوريدلي ياخوديو بل صحابي عن الصحابي هم صحيح او حجت دې، دې وجې نه وئيلي کيږي چې په دې حديث کښې هغه د څلورو مواقيتو ذکر کوي _

دحضرت ابن عباس تگاروايت په صحيح بخاري کښې موجود دي :

,,ان النبى صلى الله عليه وسلم وقت لاهل المدينة ذالحليقة ، ولاهل الشام الجحقة ، ولاهل تجدوّن المتأزل، ولاهل اليمن يلملم، هم لهن ولمن الى عليهن من غيرهن، مهن از اد الحجو العمرة ، رع ... *

یعنی .. حضور تهی داهل مدینه دپاره ذوالحلیفه. داهل شام دپاره جحفه، داهل نجد دپاره قرن المنازل او داهل یمن دپاره یلملم میقات مقرر کړو،دادې دغه علاقودباشندګانو دپاره هم میقاتونه دی اودهغه خلقودپاره هم کوم چې دحج اوعمره دپاره په علاقوباندې راځي،

 ^{)،} معجم البلدان (ج۵ص ۱ ٤٤)، واطلس الحديث النبوى (ص٣٧٩)_

^{°)} مؤطأ أمام مالك بشرح اوجزالمسالك. كتاب العج.باب مواقيت الاهلال.رقم (٧١ _٧٢)_

^{*}) صحيح 'صــلم، كتاب الحج،باب مواقيت الحج. رقم (٢٨٠٩)_ وسنن النُسانى، كتاب المناسك،باب ميقات الهل نجد،رقم (٢۶٥۶)_

⁾ صحيح البخاري (ج ١ص٢٠٤).كتاب الحج. باب مهل اهل مكة للحج والعمرة. رقم (١٥٢٤)_

اګرچه ددغه علاقو اوسیدونکي نه وي. .

داهل عواق ميقات حافظ ابن عبدالبر ميلي فرمائي چي دذوالحليفه، جحفه. قرن المنازل او د يلملم په ميقات كيدو باندې خو د ټولو اتفاق دې _

آلبته داهلّ عراق دميقات په باره کښّی داهل عُلمواختلاف دی چی ددوی میقات کوم دی ؟ او داچا مقرر کړې دې ؟ آیا حضور اکرم گلا په خپله باندې مقرر کړې ووکه حضرت عمر گلا مقرر کړې وو_

امام ابوحنيفه، سفيان ثوری،امام مالک او ددوی ټول اصحاب وائی چې دعراق او دغه طرف ته دمشرق ميقات ,, ذات عرق، ،دې _

او امام شافعی او «دیو قول مطابق» سفیان ثوری رحمهاالله فرمانی چی که چرې اهل عراق به دمقام "عقیق» ، نه احرام اوتړی نو دابه ډیره بهتره او اولی وی ـ (`)

په دې کښې بعضې حضرات واني چې داهل عراق دميقات .. ذات عرق، تعيين خوحضرت عمر النو کړې دې، ځکه چې عراق دهغوي په زمانه کښې فتح شوې وو، دحضور تره په زمانه کښې د مسلمانانو په لاس کښې نه وو۔

کښې دمسلمانانو په لاس کښې نه وو ـ چنانچه حضرت عبدالله بن عمر الله که چې داهل عراق دميقات په باره کښې تپوس اوکړې شونو وفرې مائيل , لاعماق يومندن، (۲) چې . په هغه زمانه کښې عراق دمسلمانانوسره نو وو ـ ، ،

ليكن نور حضرات واثى چى ,, ذات عرق، ، تعيين په خپله حضور ﷺ فرمانيلى دې، چنانچه دحضرت عانشه ﷺ نه مروى دى :

ووان رسول الله صلى الله عليه وسلم وقت لاهل العراق ذات عرق،، _(")

یعنی ,, حَصُور اکرم ﷺ داهل عراق دپاره ذات عرق میقات مقرر فرمانیلی دی،،۔ دغه شان حضرت ابن عباس ﷺ نه هم مروی دی:

وقت رسول الله صلى الله عليه وسلم لاهل المدينة ذا الحليفة، ولاهل الطائف قرن، وهى نجد، ولاهل الشامر الجحفة، ولاهل اليسن يلملم، ولاهل العواق ذات عرق،، _ ر*،

المجمعة ورهن المنطق المستون والمستون المستون المستون

^۱) الاستذكار لابن عبدالبر(ج٣ص ٣٣٤). كتاب الحج، باب مواقيت الاهلال. والمجموع (ج٧ص ١٧١و١٧٢)_ ^۷) مسند احمد (ج٢ص ١٤٠). وقم (۶۲۵۷). ومصنف ابن ابى شيبة (ج٨ص ٣۶٤) كتاب المناسك وباب في مواقيت الحج، وقم (١٤٢۶٣)_

") سنن ابي داود. كتاب المناسك، باب في المواقيت رقم (١٧٣٩)_

) اخرجه ابن عبدالبربسنده في التمهيد، انظرفتع المالك بتبويب التمهيد لابن عبدالبر (ح٥ص٣١١)، كتاب العجباب مواقيت الاهلال _____ ترکوم ځې پورې چې دحضرت ابن عمر ﷺ دروايت تعلق دې په کوم کښې چې .. لاعمالق يومئن، فرمائيلي وو، دكوم نه چې دا په پوهه كښې راتلل چې د .. ذات عرق. . تحديد او توقیت دحضور نبي کريم کالله دطرف نه نه ووشوې، نو ددې په باره کښې ونیلې کیدشي چې حضرت ابن عمر کالله چونکه دحضور کالله نه نه دی اوریدلي، او دغه وخته پورې عراق هم نه ووفتح شوې ځکه هغوی قیاس اوکړو اوونې فرمانیل .. لاعماتی یومثنه، ګنی ونیلې کیدې شوچې په دغه زمانه کښې خو ..دشام.، علاقه هم نه وه فتح شوې. ددې باوجود هغوی د,,شام،، اودمصر،، اوسيدونكو دپاره د ,,جحفه،، توقيت اوفرمانيلو_ دغه شان په يوحديث کښې ارشاد دې:

 منعت العراق درهمها وتفيزها ومنعت الشام مديها ودينا رها، ومنعت مصرار دبها و دينا رها، _ () یعنی " اهل عراق خپل درهم اوقفیزایسارکړل او اهل شام خپل مدی اودینار ایسارکړل او مصرخپل اردب او دینار ایسار کړل، ، اردب، مدی اوقفیز دمختلف پیمانو نومونه دی<u>.</u>

ظاهره ده چې په هغه زمانه کښې شام اوعراق نه وو فتح شو ،ابن عبدالبرې پينځ فرماني چې دلته

"منعت،، د " ستينع،، په معني كښې دې رلم ، ګوياحضور اكرم ﷺ قبل از فتح دا پيشين ګویانې فرمانیلی دی چې آننده به بیا روستو عراق اوشام داسلامي حکومت په نګرانې به کیږي۔ ددې وضاحت دا دې چې دحضوراکرم ﷺ په زمانه کښې عراق اوشام نه ووفتح شوي، خوښي كريم الله يه دې حديث كښى اوفرمائيل چې عراق اوشام اومصر به جزيه وركول ختم كړي. ددې مطلب شارحينو دا بيان کړې دې چې دا ممالک به مفتوح شي او دهغې ځاې خلق به اسلام راوړي، ځکه دهلته نه به دجزيه راتلل بندشي _ دويم مطلب دابيان شوي دې چې داممالک به داسلامي حکومت په نګرانې کښې راشي، البته په آخرزمانه کښي به دعجمو اودكفارو غلبه به شي، دعراق اوشام ندچې كومه جزيه راتلله هغه به ندراخي _ (٦) بهرصورت په دې حديث کښې حضور اکرم که دطرف نه دا پيشين ګوي اموندلې شوې چې عراق او مصراً وشام به داسلامی حکومت به زیر نگرانی کښی راشی _

دغه شان به نبي كريم ر الله دعراق اوشام دياره قبل از فتح مواقيت هم مقرر فرمانيلي، خكه چې دغه علاقي داهل اسلام په لاس کښې عنقريب راتلونکې وې_

⁾ صحيح مسلم، كتاب الفتن. باب الا تقوم الساعة حتى يحسرالفرات عن جبل من ذهب. رقم (٧٢٧٧). وسنن أبي داود. كتاب الخراج والفي. والامارة. باب في ايقاف ارض اسواد وارض العنوة. رقم (٣٠٣٥). ومسند احمد (ج٢ص٢٤٢)، مسند ابى هريرة رضى الله عنه، رقم (٧٥٥٥) _) فتح المالك (ج۵ص ۳۱۰و ۳۱۱). كتاب الحج باب مواقبت الاهلال_) او گورئ شرح النووی علی صحیح مسلم (ج۲ص۳۹۱). کتاب الفتن _

يكود خاې پورې چې داماد شافعى پيخ د.. عقيق، ، نه احرام تړل افضل ګرزولو تعلق دې ، نود دې وجې نه يوخوهغه حديث دې كوم چې دحضرت ابن عباس تگان نه مروى دې .. وقت رسول انه صلى انه عليه وسلم لاهل الشارق العقيق، ، () يعنى .. حضور اكرم تلك داهل مشرق د پاره عقيق .. ميقات مقرر كړى دى .. .

يتفيون، هيدا معرر ترې دي. ليکن د دې مطلب دا نه دې چې ..ذات عرق. . ميقات نه دې. بلکه د امام شافعی سره سره د ټولو اهل علمو په نيز.. ذات عرق. ، ميقات دې. البته .. عقيق. ، چونکه دې نه لګ لرې دې لهذا احتياط هم په دې کښي دې چې .. دعقيق. . نه احرام اتړلې شي. . ()

عهدا اختیاضه په دې کښې دې چې .. دعقیون. نه احرام انړلې سی ـ ۱) ارجمهور دا مذکوره حدیث ضعیف کرزوی () او دهغه احادیثونه استدلال کوی په کوم کښې

چې د.. ذات عرق ، تصريح راغلي ده _ د هو اقيت پد باره کښې په تفصيلات انشاء الله په کتاب الحج کښې راشي _

والله سيحاته وتعالى اعلم وعلمه اتم واحكم.

٥٣ - باب: مَنُ أَجَابَ السَّابِلَ بِأَكْثَرَ مِمَّا سَأَلَهُ

ډياب سابق سره مناسبت : په دواړو بابونوکښې مناسبت بالکل واضح دې چې په هرياب کښي سوال کول او جواب ورکول مذکور دی۔ ئ

دَتُوجُمة البابِ مقصدُ : ابن منيريُئِيَّةُ فرماني چې دترجمة الباب مقصد په دې خبره بآندې تنبيه كول چې جواب دسانل دسوال مطابق كيدل ضروري نه دي . (^۸)

^{&#}x27;) سنن ابي داود. كتاب المناسك، باب في المواقيت. رقم (١٧٤٠)_

^{ً)} المجموع (ج٧ص١٧٢) كتاب الحج.باب المواقيت _ وفتح المالك (جـ2ص ٣١١)_

آ قال الزيلعي في نصب الراية (ج آت ١٤). (١٤٩٣ و ٣٩٤٤): ,, قال آبن القطان في كتابه: هذا حديث الخاف ان يكون منقطعا. قان محمد بن على بن عبدائه بن عباس انما عهد يروى عن ابيه عن جده ابن عباس. كماجا، ذلك في صحيح مسلم. في صلاته عليه السلام من الليل _ وقال مسلم في كتاب التمييز: لاتعلم له ساعا من جده. ولا انه لقيه. ولم يذكر البخارى ولاابن ابي حاتم انه يروى عن جده. وذكرانه يروى عن اييه. _ انتهى

وقال النووي في المجموع (ج٧ص١٤٩) :

^{, ,}رواه ابوداو والترمذي. وقال : حديث حسن. وليس كما قال. فانه من رواية يزيد بن ابي زياد.وهوضعيف باتفاق المحدثين.._

وقال الحافظ في التلخيص الحبير(ج٣صـ٩٤٤). كتاب الحج باب المواقيت. رقم (٩٧١) : , , قلت في نقل الاتفاق نظر. ويعرف ذلك من ترجمة _ وله علة اخرى وقال مسلم في الكني : لايعلم له سماع من جده يعني محمد بن على..-

اً) عملة القارى (ج٢ص٢٢) _

⁾ العتواري (ص۶۶<u>)_</u>

دامام بخاری کنیځ مقصد دا دې که چرې څوک سائل سوال اوکړی نو په جواب کښې مزید اضافه اوکړې شی نو داجانز دی. بلکه په بعضې وختونو کښې انسب اوپه بعضې وختونو ک. . . .

مثلاً په یوه مسئله کښې تفصیلات دی او ددتفصیلاتو دذکرکولونه بغیردا ویره وی چې

مستفتی به په غلطی کښی پر یوځی نو دې لر د بیانول مناسب دی ۔ او که چرې دا خطره وی چې مستفتی به غلط مطلب اخستو سره به خپل مقصد حل کوی نو دمستلې شقونولږد واضحه کول پکار دی. چې هغه دا اونه وانی چې ما ددې لفظ نه دا مطلب ګنه له روو .

يو اشكال اودهني جواب دلته يواشكال دا كيږي چې ډيرو اصوليينو دا قاعده بيان كړي ده چې جواب دسوال مطابق پكاردې _دلته په ظاهره دامام بخاري گيني ترجمة ددې قاعدې

ددې جواب دادې چې داصوليينو دکلام دا مطلب نه دې چې په دې باندې اضافه اونه کړې شی، بلکه مطلب دا دی چی په جواب کښې دسوال ټولی خبرې راشی. يوڅيز دې پاتې نشی () امام بخارۍ پښځ د کتاب العلم په اخيره کښې دا ترجمه منعقد کولوسره دې خبرې طرف ته اشاره كړي ده چې ما دعلم دترغيب او تحريض اوددې مسائلوسره متعلق ضرورت اوحاجت نه زیات تراجم منعقد کړی دی ۲۰ والله اعلم

[١٣٣]حَذَّتَكَ ٱدَمُوقَالَ حَدَّتَكَاابُنُ أَبِي ذِنْهِ عَنْ نَافِيمِ عَنِ ابْنِ عُمَرَا مْ عَنِ النَّبِي -صلى الله عليه وسلد-. وَعَرِنِ الزُّهْوِي عَنْ سَالِمِ عَنِ الْبُنِ عُمَرَعَنِ النَّبِي - صلى الله عليه وسلم-

⁾ الكنزالمتوارى في معادن لامع الدرارى (ج٢ص ٣٩٤)_

⁾ حواله بالا

⁾ او تحوری فتح الباری (ج اص ۲۳۱)، والکنزالمتواری (ج ۲ص ۳۹۵)

⁾ قوله :,, عن ابن عمر رضى الله عنهما..: الحديث. آخرجه البخاري آيضافي كتاب الصلاة باب الصلاة باب الصلاة في القميص والسراويل والتبان والقباء. رقم (٣۶٤). وفي كتاب الحج. باب مالايلبس المحرم من الثياب. رقم (١٥٤٢). وجزاء الصيد. باب ماينهي من الطيب للمحرمة. رقم (١٨٣٨). وباب لبس الخفين للمحرم اذالم يجد التعلين.رقم (١٨٤٢). وفي كتاب اللباس، باب لبس القميص.رقم (٥٧٩٤).وباب البرانسُ. رقم (٥٨٠٣). وباب السراويل. رقم (٥٨٠۵). وباب العمائم. رقم (٥٨٠۶). وباب الثوب المرعفر. رقم (١٨٤٧) وباب النعال السبتية، رقم (٥٨٥٧)_ ومسلم في صحيحه، في كتاب الحج باب مايباح للمحرم بحج اوعمرة لبسه ومالايباحرقم (٢٧٩١_٢٧٩٢)_ والنساني في سننه في كتاب المناسك. بآب النهي عن الثياب المصبوغة بالورس والزعفران في الاحرام رقم (٢۶۶٧) وباب النهي عن لبس القبيص في الاحرام. وقم (٢٤٧٤). وباب النهى عن لبس السراويل في الاحرام. وقم (٢٤٧١).وباب النهي عن ان تنتقب المرأة الحرام. رقم (٢۶٧٤). وباب النهى عن لبس البرانس في الاحرام. رقم (٢۶٧٥و(٢۶٧۶).وباب النهي عن لبس العمامة في الاحرام. رقم (٢٤٧٧م٢٤٧٧). وباب النهى عن لبس الخفين في الاحرام. رقم (٢٤٧٩). وياب قطعهما اسفل من الكعبين. رقم (٢۶٨١). وباب النهى عن ان ... [بقيه حاشيه به راروانه صفحه..

أَنْ رَجُلاً سَأَلَهُ مَا يَلْبَسُ الْمُحْوِمُ فَقَالَ « لَا يُلْبَسِ الْقَبِيصَ وَلاَ الْعِمَامَةَ وَلاَ السَّرَاوِيلَ وَلاَ البُرْلُكَ وَلاَ تُوْبَا مَنَّهُ الْوَرْسُ أُو الزَّعْفَرَانُ، فَإِنْ لَمْ يَهِدِ النَّفْلَيْنِ فَلْيَلْبَسِ الْخَفْيْنِ وَلَيْفَطَعُهُمَا حَتَّى يَكُونَا تَعْتَ الْكَعْبَيْنِ».

[207, 1941, 1941, 6441, 1046, 1946, 1946, 1946, 1966, 1066]

رجال العديث

- ① ادم : دا آدم بن ابن ایاس خراسانی مروزی پینیا دې.ددوی حالات په کتاب الایمان، .. پاپ السمامن سلمالهسلمون من اسانه ویده ۱۵، لاندې تیر شوی دی _ (')
- ابن ابى ذنب: دا محمدبن عبدالرحمن بن المغيره بن الحارث بن ابى ذنب القرشى
 العامرى المدنى ﷺ دې، ددوى حالات په دې جلد كتاب العلم .. باب حفظ العلم،، سره
 تيرشوى دى _
 - نا فع : دانافع مولى عبدالله بن عمر رح دي، ددوى حالات تيرشوى حديث سره تيرشوى دى
- ﴿ الزَّهُوى : دَا اَمَامَ مَحَمَدُ بَنَ مَسَلَمَ بِنَ عَبِيدَاللهُ المَعْرُوكَ بَابِنِ شَهَابِ الزَّهْرِي كُوكُ دَدَهُ حالات,بدء الوحي، ، ددريم حديث په ضمن كنبي تيرشوى دى _ ()
- ⑥ سالم : دا سالم بن عبدالله بن عمربن الخطأب ثلاثة دي، ددة حالات په کتاب الايمان،,, باب : الحياء من الايمان، لاندې تير شوی دی _ (ً)
- حضوت عبد الله بن عمو الله الله : دحضرت عبدالله بن عمر الله الات به كتاب الإيمان، , بهاب الايسان وقول النهومل الله على الاسلام على خس، د لاندې تيرشوى دى رئم
- د حدیث دسند وضاحت دلته دصحیح بخاری دوه نسخی دی : په یو کښې دی , حدثنا آدم، قالحدثنا اپي دتب، عن داقع عن عبر، عن النبي صلى الله عليه وسلم، وابن اپي دتب، عن الزهري عن سالمعن ابن عبر عن النبي صلى الله عليه وسلم،)

دلته .. واين إن دني، كوم چې دوباره راغلې دې ددې عطف په روستو, حدثنا اين اي دني،، باندې دې اومطلب دا دې چې آدم بن ابي اياس دا حديث هم د ابن ابي دنب نه په دوو سندونو

بقيه حاشيه د تيرمخ إتلبس المحرمة القفازين، رقم (٢٢٨٢) _ وابوداود في سننه في كتاب المناسك، باب مايلبس المحرم، رقم (١٨٢٣ _ ١٨٢٨) والترمذي في جامعه، في كتاب الحج، باب ماجاء فيما لايجوزللمحرم لبسه، رقم(٨٣٣) _ وابن ماجه في سننه في كتاب المناسك، باب مايلبس المحرم من الثياب، رقم (٢٩٣١- ٢٩٣٠)، وباب السراويل والخفين للمحرم رقم (٢٩٣٢)

⁾ کشف الباری (ج ۱ ص۲۷۸)_

^{ً)} کشف الباری (جُ ۱ص۳۲۶)_

اً) کشف الباری (ج۲ص ۱۲۸، ۱۲۹)_

⁾ كشف البارى (ج ١ ص ٢٣٧)_

سره اوريدلي دي _

دویمه نسخه هغه ده کومه چې په متن کښې مذکور ده، یعني ..حدثنا آدم، قال:حدثنا اېن اړ د تب، عن ناقع، عن ابن عبر، عن النبي صلى الله عليه وسلم، وعن الزهرى، عن سألم، عن ابن عبر، عن النبي دتب، عن ناقع، عن ابن عبر، عن النبي صلى الله عليه وسلم،

صلىاللەعلىدوسلم...،،،، ـ

په دې کښي ..عن الزمری،، عطف په ..عن ناه۶،،باندې دې. ګويا دابن ابی ذئب د نوم ئې دوبار د اسا أعادهٔ نه ده کړې _ ر') حاصل داچې دا حدیث د ابن ابي ذنب شیخ شیخ البخاري په عن دوو سندونو سره روایت

کوی، یو..عن افاع عن این عبر، اودویم سنددې ..عن الزهری عن سالم این عبر، دویم سند د پومبی سند پومبی سند په مقابله کښې یو درجه نازل دې، اګرچه د دواړو سندونو په جلیل القدر کیدو کښې څه

قوله: أَنَّ رَجُلاً سَأَلَهُ: يو كس دهغوى نه تبوس او كرو_

دا سړې څوک وو؟ حافظ ﷺ فرمائي ,,لماتف على اسمه،، ٢٠٠ زة ددة دنوم نه واقفه نه شومه _ قوله: <u>مَا يَلْبُسُ الْمُحْرِمُ فَقَالَ «لاَ يَلْبَسِ الْقَبِيصَ وَلاَ الْعِمَا</u> مَةَ وَلاَ السَّرَاوِيلَ وَلاَ الْيُرْنُسَ وَلاَ ثَوْبًا مَسَّهُ الْوَرْسُ أَوِ الزَّعْفَرَانُ، فَإِنْ لَمْ يَجِي النَّعْلَيْنِ فَلْيَلْسِ ٱلْخُفَّيْنَ وَلَيْقُطَعُهُمَا حَتَّى يَكُونَا تَحْتَ الْكَعْبَيْنِ» :كوم سرى جى احرام اوتړى هغه به څه اغوندى ؟ نبى كريم ﷺ ارشاد اوفرمائيلو: محرم به نه قميص اغوندى نه پټكې، نه پائجامه، نه هغه جامې کوم سره چې ټوپې ګنډلې شوی وی، نه هغه کپړه په کومه کښې چې ورس یا زعفران وی، بیا که چرې پښپوکولودپاره څپلئ نه ملاویږی نو موزې دې د ګیټونه لاندې کټ کړې او په پښپودې کړي _

دحضُور اكرمٌ ﷺ فصيح أو بليغ جواب : سائل دلته دحضور اكرم ﷺ نه دملبوساتو په باره تپوس كړې ووچې هغه كوم لباس دې چې محرم ئې اچولې شي ؟ ليكن رسول الله ن عمر ملبوسات د دواؤ وجونه ذكركرو_

يو خوددې وجې نه چې د کوم څيزداچولواجازت وي نو دهغې په اچولوکښي څه حرج نشته دې اودکوم داچولوچې اجازت نشته دې دهغې په اچولوکښې ضرروی،نوښې کريم که دا اوښودل چې دجلب منفعت نه دفع ضرر مقدم دې،لهذا غيرملبوسات يعني هغه لباس كوم چې نەدى اغوستل پكار . دهغې پەبارە سوال كول پكاردى _

^{&#}x27;) اوګورئ فتح الباری (ج۱ص۲۳۱) _ ') فتح الباری (ج۱ص۲۳۱)_

دريمه وجه داده چې دملبوساتو خوهډوځه حدنشته دې، او غيرملبوسات محددو دی، يعنی دکوم څيز چې اجازت نشته دې دکوم څيز چې اجازت نشته دې هغه محدود دی، لهذا حضوراکرم نظم محدود بيان کړه ـ اوکله چې دا معلومه شوه چې فلانکې غلانکې څيز استعمالول ناجانزدی نو معلومه شوه چې باقی ټول څيزونه استعمالول جائزدی، يعنی مذکورات ناجائزاو غيرمذکورات جائز۔

جروری یعنی مد تورات به براه مطابقت : دلته دروایت دترجمة الباب سره مطابقت هم را دروایت دترجمة الباب سره مطابقت هم را دروایت دترجمة الباب سره مطابقت هم را اوتو ، چې سرائل خوصرف دجائز ملبوسات سوال کړې وواوحضور اکرم گل ملبوسات اوغیر ملبوسات یعنی د کوم دا اغستو، اچولو، اجازت نشته دی دمنطوق حدیث نه بیان کړه اومبلوسات یعنی د کومود اچولوچې اجازت دې دمفهوم حدیث نه بیان اوفرمائیل د (')

يوست . دحديث باب نه مستنبط قاعده : په حديث باب كيلي حضور اكرم ﷺ چې دكوموڅيزونوته منع كړې ده هغه درې څيزونه دى :

۵ ۳۰ و ۱۳۵۰ کوم چې دسرېټولودپاره دی، لکه عمامه بېټکې، اوددې په حکم کښې آړیې هم ده، ددې استعمال جائز نه دې ـ تړېې هم ده، ددې استعمال جائز نه دې ـ

و دويمه هغه آنواع دلباس كوم چې دبدن متعلق كنډلې شوى وى،لكه سراويل ډېرتوك، و دويمه هغه آنواع دلباس كوم چې دبدن د وضع قميص، برنس وغيره اوددې په حكم كښې به هغه ټول لباس راشى كوم چې دبدن د وضع اوهيئت مطابق كنډلې شوې وى، كه هغې ته دهرچاپه ژبه كښې هرڅه وانى ـ

ر دریمه نوعه داچې که محرم نعلین اغستې شی، دخفین اجازت نشته دې، ځکه چې خفین ساتر کعب وی، دې نه معلومه شوه چې کوم یوڅیزهم ساتر کعب وی دهغې داستعمال اجازت به نه وی، لهذاکه چرې بوټان څپلې ساتر کعب وی نودهغې اجازت به هم نه وی ـ (۱)

البونس : يشم الهاء والنون واسكان الواء_

⁾ اوگورئ عمدة القاري (ج٢ص٢٢)_

^{&#}x27;) فتع البارى (ج١ص٢٣١)_

[&]quot;) عمدة القارى (ج٢ص٢٢)_

⁾ عند العادي (ج٠ص ٢٠٠)_) اوگورئ تهذيب الاسماء واللغات (ج٣ص١٤). وعمدة القارى (ج٢ص ٢٢١)_

برنس داسې کپړې ته واني دکومې سر چې دې سره يوځاې وي، که هغه چغه وي، که هغه برساتی وی یا زره وغیره .. (). دهغه شان یوخاص قسم ټوپې ته هم ..برنس، وائی.په صدر ا . اد اسلام کښې په عبادو خلقو اچولې 🖒

الورس درير رنګ يوګيا رواښنه دی.په يمن کښې پيداکيږي،دکپړو رنګ کولوکښې ترې كاراخستي شي . ٢٠، دحديث باب سره متعلقه نور فقهي احكام به په تفصيل سره انشاء الله

په کتاب الحج کښې راشي _ بواعت اختتام : حافظ ابن حجر پينيل فرمانيلي دي چې امام بخاري پينيلا د..کتاب العلم.. په آخيره کښې داحديث ذکرکړې دې چې په کښې .. وليقطعهها حتى يکونا تحت الکعبين،، داقطع داختتام کتاب باندې او په نهايت باندې دال دې - ن حضرت شیخ العدیّت مولّاتاً محمد زکریا صاحب کیلیم فرمانی چی امام بخاری کیلیم دهر,کتاب، په آخیره کښې دانسان دزندګې په اختتام یعنی دمرګ طرف ته اشاره کوی. دلته هم دمحرم دلباس ذكر دې كوم چې دمړي دكفن مشابه دې _ (۵) والله سمحانه و تعالى اعلم.

هذا آخىما اردنا ايرادة في شهر كتاب العلم من الجامع الصحيح لامامر البخاري رحبه الله تعالى وبه تم المجلد الرابع من كتاب ، وكشف الهارى عما في صحيح الهخارى،، ويليه_باذن الله تعالى المجلد الخامس، واوله: كتاب الوضور.. والحمد لله الذي بنعبته تتم الصالحات، والصلاة والسلام الاتمان الأكبلان على افضل الكائنات، وعلى آله واصحابه ومن تبعهم باحسان، مادامت الارضون والسهاوات_

⁾ تهذيب الاسماء واللغات (ج٣ص٢٢) _

^{ً)} عمدة القارى (ج٢ص٢٢١)_

[&]quot;) تهذيب الاسماء واللغات (ج £ص١٤٨). وعمدة القارى (ج٢ص٢٢٢)_

⁾ فنح البارى (ج١٣ص٥٤٣) آخرالكتاب_

^د) الكَّنز المتوارى (ج٢ص٣٩۶) _

«مصادر ومراجع» 🕮 🖊

- _{ا ...} الإبواب والتراجم لصحيح البخارى ـ حضرت شيخ الهنن مولاناً محبود حسن صاحب ديوبندى، رحمة الله عليه، المتوقى ١٣٨ه أدار وتاليفات اشرفيه ملتان ـ
- م_ الاہواب والتراجم لصحیح البخاری _ حضرت شیخ الحدیث مولاناً محمد زکریاً صاحب کالدہلوی، رحمه الله تمائی، متو فی ۱۳۰۲ همطابق ۱۹۸۲ مر _ ایچ ایم سعید کمپنی، کرائی۔
- الآثار (كتاب الآثار) _ امام ابو حنيفه نعبان بن ثابت، رحبة الله عليه، متوفى ١٥٠ هروايت: امام محمد بن الحسن الشيبان. رحبة الله عليه، متوفى ١٨٣هـ، مكتبه امداديه ملتان _
- م. الآثار البرقوعة (سيع رسائل) امام ابو الحسنات عبد التى بن عبد الحليم اللكنوى. رحمة الله عليه. متوفى ١٣٠٤ها بيج ايم سعيد كمپنى كرايق-
- هـ الاجوبة المرضية فيما سثل (السخاوى) عنه من الاحاديث النبوية _ حافظ شمس الدين محمد بن عبدالرحين السخاوى، رحمة الله عليه، المتوفى ٩٠٢ هـ تحقيق : دكتور محمد اسحاق محمد ابراهيم -دارالراية، الرياض و جدة طبح او ١٤١٨هـ
- ٧_ الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان _ امام ابو حاتم محيد بن حبان البسق، رحيه الله تعالى البتوقي rar_مؤسسة الرسالة ، يوروت.
- 1_ احكام الاحكام، شرح عبدة الاحكام امام تق الدين ابو الفتح الشهير بأبن دقيق العيد، رحبة الله عليه، مترفي 24.4 دار الكتب العلية بيرون، طبع ثماني ١٣٠٣هم - ٢٠٠٥م -
- عليه، متوقى 24ء دارالد تبالعليه بايروق، طبح الكام الهاء منافر -م احكام القرآن، امام ابو بكر احمد بن على الرازى الجصاص، رحمه الله تعالى، متوفى 24، دار الكتاب العربي بيروت -
- مرك القرآن حضرت مولانا ظفر احيد صاحب عثبان، رحيه الله تعالى، البتوفي عهد ادارة القرآن كرايي
- ١٠ اختصار علوم الحديث ابو الفداء عباد الدين اسباعيل بن شهاب الدين عبر البعروف باين كثير.
 رحبه الله تعالى، البتوق عن هداد التراث القاهرة ١٩١٠ هـ / ١٩٤٩ مـ
- ... اا - الاذكار مع الفتوحات الربانية - امام ابو زكريا محيى الدين يحيى بن شرف النووى، رحمه الله تعالى. المتدة الاسلامية الاسلامية -
- 11. ارشاد السارى شرح صحيح البخارى. ابو العباس شهاب الدين احيد القسطلاق. رحيه الله تعالى. متوفى 147ء، البطيعة الكبرى الأميرية. مصر، طبع سادس 1474هـ
- ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء _ حضرت شاه ولى الله محدث دهلوى، رحبه الله تعالى، البتوق ١/١١ هـ سهدل اكداري لا هور -
- از الة الخفاء عن خلافة الخلفاء مترجم _ حضرت شاه ولى الله محدث دهلوى، رحبه الله تعالى، البتوق ٢١/١ هذا المراق ..

- 10- اسد الفاية في معرفة المبحاية. عز الدين ايو الحسين عل بن محبد الجزرى البعروف يأبن الإثير. رحبه الله تعالى البتوق+40 ه. دار الكتب العلبية ييروت.
- ١٦- اشعة اللبعات. شيخ عبد الحق محد ث دهلوى، رحبه الله تعالى. المتوفى ١٩٥٢ هـ مكتبه لوريه رضويه سكهر بهاكستان.
- 4 الاصابة فى تهييز الصحابة شهاب الدين ابو الفضل احبد بن على العسقلائى البعروف بأبن حجر. رحبه الله تعالى البتوق 81 م ـ دارالفكر بيروت ـ
- ۱۸- اصول كافى _ محمد بين يعقوب الكليفى. متوقى ۲۳۰ هـ دارالكتب الاسلامية. تهران. طبع ثالث ۱۳۸۸ هـ ۱۱- اطلس الحديث النبوى من الكتب الصحاح الستة. دكتور شوقى ابو خليل. دارالفكر دمشق. طبع رابع ۱۳۲۱ هـ ۲۰۰۵ م _
- الاعتبار في الناسخ والمنسوخ في الحديث، الحافظ ابو بكر محمد بن موسى الحازمي الهمداني، رحمه الله
 تعائي، المتوفي ۵۸۷ ه. تحقيق: احمد طنطاوي دار ابن حزم _ الطبعة الاولي ۱۳۲۲ هـ ۲۰۰۱م _
- 71 ـ الاعتصائم. امام ابو اسحاق ابر اهيم بن موسى بن محمد اللخنى الشاطبى، رحمه الله تعالىٰ. المتوتىٰ 44 ه. دارالفكر، يودوت ـ
- rr. اعلام الحديث، امأم ابو سليمان حبد بن محمد الخطابي، رحمه الله تعالى ، متوفى ٢٨٨ ه. مركز احياء التراث الاسلامي. جامعة ام القرئ، مكة مكرمة .
 - ٣٠ اعلاء السنن، علامه ظفر احمد عثماني، رحمه الله تعالى ، متوفى ١٣٩٢ هـ ادارة القرآن كراجي -
- rr اكبال تهذيب الكبال، علامه علاء الدين مغلطاى بن قليج بن عبد الله البكجرى الحنفى. رحمه الله. المتوقى 20 هـ الفاروق الحديثة للطباعة و النشر . طبع إول 1777هم / 1979م _
- ه ٣- الاكبال في رفع الارتياب عن المؤتلف و المختلف في الاسباء والكنى و الالقاب، الامير الحافظ ابو نصر على بن هبة الله المعروف بابن ماكولا، رحمه الله، المتوفى 2010، محمد امين دمج، بيروت.
- ٢٦- الفية الحديث حافظ جلال الدين عبد الرحين سيوطى رحيه الله تعالى متوفى ١١١ه. تصحيح وتشريح : هيخ احيد محيد شارك .
- 12. الالباع قاض عياض بن موسى اليحصبى رحبه الله تعالى . متوقى 277 ه تحقيق و تعليق : احبد فريد البويدي. دارالكتب العلبية - , بيروت . طبع أول 1770هـ 2007م _
- ـ الاموال (كتأب الاموال) امام ابو عبد القاسع بن سلام رحمه الله تعالى . متوفى ٢٢٣ هـ دار الكتب العلبية بيروت. طبح اول ١٢٥٧ هـ
- . و . الامر (كتّاب الامر) امام محمل بن ادريس الشافق رحمه الله تعالى ، متوفى ٢٠٠ ه. دار المعرفة. بيزوت ٣٣٠ هـ ١٤٠
- -r- الانساب. أبو سعد عبد الكريم بن محمد بن منصور السبعاق، رحبه الله تعالى ، متوفئ 44 هـ. دار الجنان، بيروت، طبح أول ١٢٠٨هـ/ ١٨٩م _
- اح. اوجز البسالک ان مؤطأ مالک، شیخ الحدیث حضرت مولانا زکریا کاندهلوی رحمه الله تعالی، متوفی ۱۳۰۲ هـ، مطابق ۱۹۸۳ مر، اداره قالیفات اشرفیه ملتان _ و بتحقیق الدکتور تق الدین الندوی حقظه الله تعالی، دارالقلی، دهشق، طبح اول ۱۳۲۲هـ ۱۰۰۲مر _

- 7-. بدائع المنائع في ترتيب الشرائع، ملك العلباء علاء الدين ابو بكر بن مسعود الكاسال، رحبه الله تعانًا، متر في مده. ايج ابير سعيد كبولي كرائي.
- ٣- بن اية البجتهن و لهاية البقتصد _ حلامه قاطئ ابو الولين معبد بن احبن بن رشن قرطي، متو في 2000. شركة و مطبعة مصطفى البائي الحلبي مصر طبح خامس 2111 همطاً بي 2111 مر _
- ٣- البداية و النهاية _ حافظ عباد الدين ابو القداء اسباعيل بن عبر البعووف بابن كثير رحبه الله تعالىًا . متوفّا 22 هـ مكتبة البعار ف بيورون. طبع ثان 122 مـ
- ه البضاعة المزجاة لمن يطألح المشكاة (مطبوعه مع المرقأة) _ مولاناً عبد الحليم چشتى حفظه الله تعالىٰ _ مكتبه امداديه ملتأن_
- rr بيان القرآن _ حكيم الامت حضرت مولانا اشر ف عل صاحب تهانوى رحبه الله تعالى . متوفى rr ه _ شيخ غلام على إينل سنز لاهور_
- 2- تاج العروس من جواهر القاموس، ابو الغيض سيد محمد بن محمد المعروف بالمرتضى الزبيدى. رحمه الله تعالى متوقى ۱۲۰۵هـ دار مكتبة الحياة، بهروت_
- ٣- تأريخ ابن الاثير (الكامل في التأريخ) ابو الحسن عز الدين على بن محمد بن الاثير الجزري رحمه الله تعانى . متوفى * ٣ ه. دارالكتاب العربي ، بيروت .
- r ـ تأريخ الامم و الملوك (تأريخ الطبري). اماًم محمد بن جرير الطبرى، رحمه الله ، المتوقى ٢١٠ هـ. مؤسسة الاعلى للمطبوعات. يورون، طبخ رابع ١٢٠٠ه هـ ١٨١٦مر
- تأريخ ابن خلدون (كتاب العبر، وديوان البيتدا و الخبر، في ايام العرب والعجم و البربر، ومن
 عاصرهم من ذوي السلطان الاكبر) علامه عبد الرحين بن محمد بن خلدون الحضر في البغربي رحمه الله
 تعالى متوقى ۱۸۸۸ مؤسسة الإعلى للبطبوعات، بيبروت.
- ا تأريخ الاسلام _ حافظ شمس الدين ابو عبل الله محمد بن احمد بن عثمان الذهبي رحمه الله تعالى . متوفّى 24 ه. تحقيق : عبر عبل السلام تدمري. دار الكتاب العربي، بيزوت. طبح اول ١٣٠٠ هـ ١٩٠٠ مر _
- ٢٦- تأريخ بغداد أو مدينة السلام حافظ أحمد بن على المعروف بالخطيب البغدادي. رحمه الله تعالى! .
- متوفئ ٣٣هددار الكتاب العربي بيروت. ٣- تاريخ الخلفاء - حافظ جلال الدين عبد الرحين السيوطي رحيه الله تعالى . متوفى ٩١١ ه. مؤسسة الكتب
- الثقافية، بيروت، طبع ثالث ١٦١ه ١٨٨٠ مر . ٢٣- تأريخ عثمان بن سعيد الدار عي رحبه الله تعالى ، متوفى ١٢٨ه . عن ابن زكريا يحيى بن معين ، المتوفى ٢٣٣
- ۱۳۰ تاریخ حصون برن سفیدا نزداری رحیه الله تعالی ، متوق ۴۸۰ ه ، عن این ز نر پا پخیف بین معین ، البتوق ۳۳۳ ه ، دار البامون للتراث ، ۱۳۰۰ هـ
- ه ۱ التاریخ الکبیر ـ امام محید بن اسباعیل البخاری رحیه الله تمالی ، متو قا۲۵۰ هـ دار الکتب العلییة بیروت ۲۷ ـ تحریر تقریر التهایب، دکترر بشار عواد معروف و الشیخ شعیب الارنؤوط ، مؤسسة الرسالة ، طبع اول ۱۲۱ هـ ۱۲۲۵ م ـ
- 24. تحقة الأشراف بمعرفة الأطراف. أبو الحجاج جمال الدين يوسف بن عبد الرحمن البزى، رحبه الله تعالى متوفى 174هـ البكتب الإسلامي بيزوت، طبع دوم 167 ه مطابق 1841 م _

٨٦ - تحفة البارى بشرح صحيح البخارى. شيخ الاسلام إلى يحيى زكريا بن محمد الالصارى، رحمه الله

تعالى المتوفى ١٦١ه. دار الكتب العلمية، دار ابن حزم بيدوت، طبع اول١٢٢٥هـ ١٠٠٢م-

٩٦ تذكرة الحفاظ، حافظ ابو عبد الله شبس الدين محيد بن احيد بن عثبان الذهبي، رحيه الله تعالى،
 مترق ٩١١ه. دائرة البعار ف العثبانية، الهند.

مورات التناوع المعدول المهارية التهذيب محمد بن طلعت، مكتبه اهواء السلف، الرياض، طبع أول ١٣٦٥ ه

- ۱۳۰۸ . اقد ترجمان السنة - حضرت مولانا بدر عالم مير ثهى، رحبه الله تعالى ، متوفى ۱۳۸۵ . دار الاشاعت ، کراتی -استان استان می استان میراند و استان الاستان الاستان المستان ال

er ـ تَعريف اهل التقديسُ بَمرا تب البوصوفين بالتَّدليس ـ حافظ احبَد بن على البعروف بأبن حجر العسقلاق، حبه الله تعالى ، متوقع 8.01 ـ تحقيق : عاصم عبدالله القريوق الزرقاء ، الاردن-

عد تعليقات تقريب التهذيب شيخ محمد عوامة حفظه الله تعالى، دار الرشد حلب ١٢٠١ هـ

۵۷ - تعلیقات جامع بیان العلم و فضله - ابو الاشبال الزهیری. دار ابن الجوزی، طبع را بع ۱۲۱۹ هـ -

ه ـ تعليقات تهذيب الكهال ـ دكتور بشار عواد معرو ف حفظه الله تعالى ـ مؤسسة الرسالة ، طبخ اول ١٣١٣ هـ ٢ هـ تعليقات الرفع و التكميل ـ شيخ عبد الفتاح ابو غدة رحبه الله تعالى ، متوفى ١٢١٤ هـ مكتب المطبوعات الاسلامية ، حلب طبح سوم ١٠٠١ هـ ١١٨٨ مر ـ

هـ تعليقات الكاشف للذهبي، شيخ محمد عوامة / شيخ احمد محمد نمر الخطيب حفظهماً الله. مؤسسة دار
 القبلة / مؤسسة علوم القرآن، طبخ اول۱۳۱۳ هـ ۱۹۲۰ مر _

ه - تعليقات لامخ الدراري. شيخ الحديث مولاناً محمد زكرياً الكاندهلوي، رحمه الله تعالى . متوفى ١٠٥٣ ه/ ١٨٨٣ م. كشمير بكذيو جنبوث بأزار فيصل آباد _

١٠- تعليقات معجم الصحابة - جماعة من العلماء والمحققين، مكتبه نزار مصطفى الباز، مكة المكرمة - الرياض
 ١١ - تغليق التعليق، حافظ احمد بن على المعروف بأبن حجر رحمه الله تعالى، متوفى ٥٢٢ هـ. المكتب الإسلامي، ودار عبار -

٣- تفسير الطبري (جامع البيان عن تاويل آي القرآن)، امام ابو جعفر محمد بن جرير الطبري، رحمه
الله تعالى متوقى ۱۳۵، مركز البحوث و الدراسات العربية و الاسلامية بدار هجر _ القاهرة ١٣٦١هـ ١٣٥٠هـ _

س- تفسير القرآن العظيم. حافظ ابو الفداء عباد الدين اسباعيل بن عبر بن كثير الدمشق. رحبه الله تعانى، متوفىً عدده، دار احياء الكتب العربية_

٧٧ - تفسيد القرطبي (الجامع لاحكام القرآن). امام ابو عبد الله مِحيد بين احيد الانصاري القرطبي. رحيه الله تعالى متوفى ١٤ هـ دار الفكر ، بيزوت ـ

۵۱ـ التفسير الكبير. (تفسير الرازى او مفاتيح الغيب). الامام ابو عبدالله فخر الدين محبد بن عبر الرازى، رحبه الله تعالى، متوفى ۱۰۲هـ مكتب الاعلام الإسلامي، ايران_

٣٦. التقسير البظهرى _ قاض محيث ثناء الله القان فق، رحيه الله تعانى، ١٣٥٠ هـ حافظ كتب خانه كوثفه _ ٤٢. تقريب التهاييب، حافظ احيد بن حل البعروت بأبن حجر العسقلان، رحيه الله تعانى ، متوق ٢٥٨ هـ . وار الرهيد حلب ٢٠٦١ هـ ـ

- ٣- التقريب و التوسير لبعرفة سنن البشير النذير رمع تدريب الراوى) امأم ابو زكرياً متى الدين يحيى بن غرف النووى. رحبه الله تعانّ. متوق ٢-٣ هـ البكتبة العلبية. البدينة البنورة-
- y _ تقرير بخارى شريف _ حضرت شيخ الحديث مولاناً محمد زكرياً كاندهلوى. رحمه الله تعالل متوفى 1914 هـ مكتبة الشيخ كراجى _
- ه_ التقويد والإيضاً 7 لها اطلق و اخلق من كتاب ابن الصلاح. حافظ ابو الفضل زين الدين عبد الرحيم. بن الحسين العراق. رحبه الله تعالى، متوفى ٥٠٠ همكتبه سلفيه من ينه منوره ـ طبع او ١٣٨٠ هـ
- التقييد والايضاح لها اطلق و اغلق من كتاب ابن الصلاح. حافظ عراق. رحمه الله تعالى. تحقيق : دكتور اسامه بن عبد الله خياط. دار البشائر الاسلامية. طبح اول ۱۳۰۰ هـ ۲۰۰۲ م _
 - ال تكلية فتح الملهم . حضرت مولانا محمد تقى عشانى صاحب مد ظلهم . مكتبه دار العلوم كوابى -
- تكلية فتح الملهم. حضرت مولاناً محمل تق عثماً في صاحب مد ظلهم . دار احياء التراث العربي، بدروت، طبخ إلى ۱۳۲۲ هـ ۱۳۶۱م -
- -11ء التلخيص العبيد في تخريج احاديث الرافعي الكبير، حافظ ابن حجر عسقلاني رحبه الله، متوفي الاهده. دار نشر الكتب الاسلامية لاهور، و دار الكتب العلمية، بهروت ١٢١١ه-
- س. تلخيص البستدرك (البطبوع بذيل البستدرك). حافظ هس الدين محبد بن احبد عثمان الذهبي رحبه اللاتعالى، متوفحه هد دار الفكو بيزوت -
- ع.. التمهيد ليا في البؤطا من المعاني و الاسانيد، حافظ ابو عبر يوسف بن عبد الله بن محمد ابن عبد البر البالكي، وحمه الله تعانى، مترق arm هـ، المكتبة التجارية، مكة المكرمة.
- ۵ ـ تنوير الحلك في امكان رؤية النبي و الملك (ضنن : الحاوى للفتاوى للسيوطي) حافظ جلال الدين عبد الرحين السيوطي رحيه الله تعالى، متوفى 41 همكتبه نوريه رضويه فيصل آباد-
- تنوير الحوالك شرح مؤطأ امام مالك. حافظ خلال الدين عبد الرحين السيوطى رحيه الله تعالى، مثوثى الله هذار الكتب العلبية بيودت-
- 42_ توضيح الافكار لبعان تنقيح الانظار، امام محمد بن اسباعيل المعروف بالامير الصنعاني رحبه الله تعالى مترفي ۱۱/۱۲ هـ دار الكتب العلبية، طبح اول ۱۳۱۷ هـ ۱۳۱۵ مـ
- تهذيب التهذيب. حافظ أحيد بن عل البعروت بابن حجر العسقلاني، رحيه الله تعال ، متوقّ Aor هـ دارُ ةاليعار ف النظامية، حيدر آباد الدكن ١٢٦٥هـ -
- 41 تهذيب سنن ان داود. حافظ شمس الدين ابو عبد الله محبد بن ان بكر البعروف بأبن القيم، رحمه
 الله، البتوق انده، مطبعة انصار السنة البحيدية، ١٣٢٤هـ ١٣٢٨م.
- مد تهذيب الكبال، حافظ جبال الدين ابو الحجاج يوسف بن عبد الرحين البزى، رحيه الله تعالى، متوقىً 27 هـ م سبة الوسالة، طبع إول، ١٣١٢ هـ
- رو القارى مولانا نور الحق بن شيخ عبد الحق محدث دهلوى رحبه الله تعالى، متوفى ١٠٤٢هـ، مطبع على، لكهنو-على، لكهنو-

- سد الثقات (كتاب الثقات). حافظ ابو حاتم محمد بن حبان بستى. رحمه الله، متوفى ۲۵۲ هـ. دائرة المعارف العثمانية. حيدر آباد. ۲۳۳ هـ
- تمد جامع الاصول من حديث الرسول، علامه مجد الدين ابو السعادات الببارك بن محبد بن الاثير الجزرى، رحبه الله، تعالى متوفى ٢٠١هـ دار الفكر ، بيروت.
 - جامع البيان عن تاويل آى القرآن (ديكفت تفسير الطبرى)
- مرح جامع بينان العلم و فضله. حافظ ابو عبر إيرسف بن عبد الله بن محمد بن عبد البر المألك، رحمه الله
 تعال، متوقى ٣٠هـ دار ابن الجوزى، طبع وابع ١٩١٨ مـ ١٩١٨ م.
- هد جا مع الترمذي (سنن الترمذي). امام ابو عيسى محمد بن عيسى بن سورة الترمذي. رحمه الله تعالى . متوفى 211ه. ايج ايم سعيد كميني / دار احياء التراث العربي / دار السلام _
 - الجامع لاحكام القرآن (ديكف تفسير القرطبي)
- ٨٦ الجامع لأخلاق الراوى و آداب السامع _ حافظ ابو بكر احين بن على بن ثابت الخطيب البغدادي. رحيه الله تعالى البتوقي ٣٣ هدار الكتب العلبية، يدرون، طبع اول ١٩٢٢هـ ١٩١٩م _ _
- عد الجرح والتعديل. امام ابو محمد عبد الرحين بن إن حاتم محمد ادريس الرازي. رحمه الله تعالى . المتوفئ arrz دار الكتب العلمية بريروت، طبح إول، ۴۲۲ هـ ۲۰۰۱م _
- ٨٠ جعة الوسائل في شرح الشبائل، امام نور الدين على بن سلطان القارى، رحيه الله تعالى . البتوفي ١٠١٣. ه. اداره تاليفات اخرفيه ملتان.
- ٨٩- الجوهر النق (بلايل السنن الكبرى للبيهق) _ حلامه علاء الدين على بن عثمان المارديني. الشهير بأبن التركماني رحيه الله تعالى البتوقي ١٥٠٥هـ نشر السنة ملتان _
- ++ حاُشية سبط ابن العجم على الكاشف_ امام برهان الذين ابو الوقاء ابراهيم بن محمد سبط ابن العجم، الحلبي، رحمه الله تعالى البتوقي ١٨٨هـ شركة دار القبلة، مؤسسة علوم القرآن، طبح اول ١٣٣٣هـ ١٨٣٩م _
- ال- حاشية النسندى على البخارى، امام ابو الحسن نور الدين محمد بن عبد الهادى السندى، رحمه الله تعالى متوقى ١١١٨ه، قديم كتب خانه _
- rr ـ الحاوى الكبير. امام ابو الحسن على بن محمد حبيب الباوردى، رحيه الله تعالى، متوفَّى ron ه دار الفكر . rrr هـ rrr مر
- 47- الحادى للفتادى _ حافظ جلال الدين عبد الرحس بن ابي بكر السيوطى، رحبه الله تعالى، متوفّى 811 هـ مكتبه توريه رشويه فيصل آباد_
- ٣- حلية الاولياء حافظ ابو نعيم احبل بن عبل الله بن احبل الاصبهائي. رحبه الله تعالى، متوفى ٢٠٠ هـ دارالفكر بيروت.
- 40 ـ خلاصة تذهيب تهذيب الكمال (خلاصة الخزرى) علامه صفى الدين الخزرى، رحمه الله تعالى. متوفًّا 417 هـ كربعه، مكتب البطبوعات الاسلامية، بحلب _
- ١١- الدراية في تخريج احاديث الهداية. حافظ احمد بن على المعروف بابن حجر العسقلاني. رحمه الله
 تماني، متوفي ١٩٠٠ه، دار نشر الكتب الإسلامية لاهور.

- يه_ الدر البختاًر، علامه علاء الدين محبل بن على بن محبل الحصكق. رحبه الله تعالى . متوفّى ١٩٨٨ هـ. مكتبه رغيديه كوثته _
- به ـ الدر المنثور في التفسيد بألباً ثور ـ حافظ جلال الديين عبد الرحين السيوطي ، رحيه الله تعالى، متوفّى ١١١هـ موسسة الرسالة ـ
- 14_ ذخائر البواريث في الدلالة على مواضع المديث _ علامه عبد الفتى بن اسباعيل بن عبد الفتى النابلسي. رحبه الله تعالى متوفى 147 هـ دار البعرفة بيورت _ دار الكتب العلبية بيزرت _
- ١٥٠ رد البحثار على الدر البختار ، علامه محمد امين بن عمر بن عبد العزيزعابدين شامى، رحمه الله.
 من في ١٣٥١هـ مكتبه رشيديه ، كوثشه _
 - ١٠١_ حياء بينهم، حضرت مولانا محمد نافع صاحب، مد ظلهم، تخليقات، لاهور-
- ١٠- الرسالة المستطرفة لبيان مشهور كتب السنة المشرفة _ علامه محين بن جعفر الكتأني، رحبه الله
 تمانى، مترؤنه ١٣٠٥ه، مير محين كتب خانه كرائي _
- ۱۰۲ رسالة شرح "تراجم ا بواب البخارى، (مطبوعه مع صحيح بخارى)، حضرت مولاناً شاه ولى الله دهلوى. رحمه الله، متد في ۱۵/۱ ه. قديمى كتب خانه كراجى ـ
- ة+. الروح (كتاب الروح) حاً فظ شمس الدين ابو عبد الله محمد بن ابي بكر البعروف بابن القيم، رحمه الله تعالى مترة (ان ه، مكتبه لصير، مصر -
- ٢٠١١ ـ الروح في القرآن وتاليفات عفياني) حضرت شيخ الإسلام علامه شبير احبد عشباني. رحبه الله تعالى. متوفي ١٣٣١ هادارة اسلاميات لاهور ـ
- الماروح المعانى في تفسير القرآن العظيم و السبع المثاني، ابو الفضل شهاب الدين سيد محبود آلوسي بغدادي، رحبه الله تعالى، متوفى ١٠٤١ه، مكتبه امداديه، ملتان -
- . الروض الانف _ امام ابو القاسم عبد الرحين بن عبد الله السهيل, رحبه الله تعالى. متوفّى ۵۸۱ هـ مكتبه في ۵۸۱ مـ مكتبه في ، قدم مكتبه في مكتبه
- ++- زاد البعاد من هدى خير العباد، حافظ شمس الدين ابو عبد الله بن إني بكر البعروف بأبن القيم. رحيه الله، متوقى:21هـ مؤسسة الرسالة _
- اا- زهر الربي عل المجتمى (مع سنن النسائي) حافظ جلال الدين عبد الرحمن السيوطي، رحمه الله تعالى،
 متوفى الله ه. قديمي كتب خانه كراي _
- III. السعاية في كشف ما في هر ح الوقاية. علامه ابو الحسنات عبد الحق بن عبد الحليم اللكنوى، رحمه الله تعالى، متوقى ١٣٠ه، سهيل اكيلى لا هور-
- III. سنن ابن ماجه. امام ابو عبد الله محيد بن يزيد مأجه، رحيه الله تعالى، متوفّى ۲27 ه. قديمي كتب خانه / دارالكتاب البصري قاهره / دارالسلام-
- III _ سنن إلى داؤذ. امام ابو داؤد سليمان بن الاشعث السجستان. رحبه الله تعالى، متوفَّىٰ 120 هـ. الحجّ ايم سعير كبيني / دار احياء السنة النبوية / دار السلام_

۱۱۲ سنن الدار قطنى. حافظ ابو الحسن على بن عبر الدارقطني، رحبه الله تعالى ، متوفى ٢٨٥ ه. دار نشر الكتب الاسلامية لاهور ـ

111 سنن الدارمي، امام ابومحس عبد الله بن عبد الرحين الدارمي، رحيه الله تعالى، متوفى ٢٥٥ ه. قديس كتب خاله كرايي.

III. السنن الصفرئ للنسائي، امام ابو عبدالرحين احيد بن شعيب النسائي، رحيه الله تعالى ، متوفى ٢٠٠٠ ه. قديعي كتب خانه كراجي / دار السلام رياض.

111. السنن الكبرئ للنسائي، امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعيب النسائي، رحمه الله تعالى ، متوفى ٥٣٠٠. نشر السنة ، منتان_

IIA. السنن الكبرى للبيهق، اماًم حافظ ابو بكر احيد بن الحسين بن عل البيهق، رحيه الله تعالى ، متوثى 20هم. نشر السنة، ملتان ـ

ا الله سور اعلام النبلام. حافظ ابو عبد الله شس الدين محبد بن احبد بن عثبان الذهبي، رحبه الله تعالى . متر في الاست الرسالة _

rr- السيرة العلبية (انسان العيون في سيرة الامين والبامون). علامه على بن برهان الدين الحلي. رحيه الله. البتوفي ١٠٠هم المكتبة الإسلامية، بيزروت.

ا تا السيرة النبوية. الامأم ابو محمل عبل الملك بن هشام المعافري، رحمه الله تعالى. متوق ٣٣ هـ، مكتبه فاروقيه ملتان-

rrr_ سيرت المصطفى _ حضرت علامه محمد ادريس كاندهلوى،رحمه الله تعالى. متوفى rrr هـ، مكتبه عثمانيه لاهور-

شرح تراجم ابواب البخاري (ديكه ي رساله شرح تراجم ابواب البخاري) _

rrr. شرح شرح نخبة الفكر ، علامه نور الدين على بن سلطان القارى ، رحبه الله تعالى ، متوقى ١٠١٢ ه تحقيق: محب نزار تعيم و هيثم نزار تعيم ، دار الارقم -

١٢٧ شرح شيخ الاسلام فأرسى (مطبوعه مع تيسير القاري)

۵۱ـ هرح صحیح البخاری (لابن بطأل) امام ابو الحسن عل بن خلف بن عبد الملک المعروف بابن
 بطال، حیه الله تعالى، مترق ۴۲۱ همکتبة الرشد، الر باض ۴۲۰ هم ۲۰۰۰ مـ

rrı. شرح العقائد النسفية - علامه سعد الدين مسعود بن عبر التفتأزان ، رحبه الله تعالى، متوفى ٥١١ هـ -مكتبه حبيبيه كوثنه-

ـ 112 هر ح الكرماني (الكواكب الدراري) علامه شبس الديين محبد بن يوسف بن على الكرماني. رحبه الله تمالًا، متدة (٢٨عه دار احياء التراث العربي _

171. شرح مشكل الآثار . أشام أبو جعفر أحيل بن محيل سلامة الطحاوى. رحيه الله تعالى البتوفي ٢٢١ هـ. مؤسسة الرسالة ١٢١٥ هـ ١٩١٥ م -

179 شرح معانى الآثار امام ابو جعفر احب بن محبد بن سلامة الطحادى الحتنى رحبه الله. المتوفى 171 ه. حد حجب لاام بأخ كوابئ-

كثفالبارى

شرح معاني الآثار مع نشر الازهار

٣٠ ـ هرح البهذب (البجبوع). امام ابو زكر يا متى الدين يحيى بن شرف النووى، رحبه الله تعالى، متوثى ٢٢هـ شركة من علباء الازهر ، دار الفكر بيوروت.

m. شرح البواهب اللدنية، علامه معبد بن عبد الباق بن يوسف الزرقاق البصرى البالكي،رحبه الله تمالي، متوق ۱۲۳ هـ دار الكتب العلبية، بيروت، طبع إلى ۱۲۲ هـ ۱۲۹۱ مر

٣٦ ـ شرح النووى عل صحيح مسلم . امام ابو زكرياً معى الدين يحييغ بين شرف النووى، رحبه الله تعالىٰ . البتو في ٤٢ ه. قديم كتب خانه كراجي _

۱۳۲ شروط الاثبة الخبسة للحارمي، حافظ ابو بكر محبد بن موسى بن عشبان الحارمي، رحبه الله تعالى، متوفى ۱۵۲ ه تعليقات علامه زاهد الكوثري، رحبه الله تعالى، متوفى ۱۲۱ ه و تعليقات شيخ عبد الفتاح ابو غدة، رحبه الله تعالى، متوفى ۱۲۱هـ

رضين: ثلاث رسائل في علوم الحديث) مكتب المطبوعات الاسلامية بحلب

rrr. الشيائل الهجهدية مع جمع الوسائل. امام ابو عيسى محمد بن عيسى بن سورة الترمذي رحبه الله تعالى البتوقى 21هـ ادارة تأليفات اشرفيه ملتأن _

صحيح ابن حبان _ (ديكه الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان)

m_ الصحيح للبخارى، أمام ابو عبدالله محبد بن اسمعيل البخارى، رحبه الله تعالى ، المتوفى rar هـ . قديسى كتب خانه، كرايى / دار السلام، رياض، و بتحقيق محبد نزار تبيم و هيشم نزار تبيم، دار الارقم بن اني الارقم _

٫٫٫٫٫۱ الصحيح لهسلم. امام مسلم بن الحجاج القشيوى النيسابوري. رحبه الله تعالى ، متوقى ٢٦١ ه. قديعي كتب خانه، كو ايج / دار السلام -

rz. الضعفاء الكبير (كتاب الضعفاء الكبير)، امام ابو جعفر محمد بن عمرو بن موسى بن حماد العقيل البكي رحيه الله تعالى، مترق arr ، دارالكتب العربية، بينوت ـ

٣٦٨ ـ الضوء اللامع في اعيان القرن التاسع. امام ابو عبد الله محيد بن عبد الرحس السخاوى، رحيه الله تعالى، متوفى ١٩٠٣ ـ منشورات دار مكتبة الحياة، بيروت.

١٣٩_ الطبقات الكبرى. امام ابو محمد بن سعد، رحمه الله. المتوفى ٢٢٠هـ، دار صادر بندوت.

طبقات المدلسين (ديكهي تعريف اهل التقديس بمراتب الموصوفين بالتدليس)

٠٥١ ظفر الاماني، امام ابو الحسنات عبد الحي بن عبد الحليم اللكنوى، رحبه الله تعالى، متوفى ١٣٠٢ ه مكتب البطبوعات الاسلامية بحلب، طبع ثالث ١٣١٨هـ

ra عارضة الاحوذي. أمام ابو بكر محيد بن عبد الله، البعروف بأبن العربي، رحيه الله تعالى، متوفى aorr البطيعة البصرية بألاز هر-

١٣٦ عقود الجواهر الهنيفة في ادلة ملاهب الامامر إلى حنيفة مها وافق فيه الاثبة الستة او احدهم، علامه سيد محمد بين محمد الحسيني، المعروف بالمرتض الزبيدي، رحمه الله تعالى، متوفى ١٣٥٥هـ التج ايم سعيد كميني كراش. ١٣٢ - علوم الحديث (مقدمه ابن الصلاح) امام حافظ لق الدين أبو عبرو عثبان بن عبد الرحس البعرون بأبن الصلاح، رحبه الله تعالى، متوفى ٦٢٣ ه تحقيق نور الدين عتر حفظه الله تعالى، دار الفكر، تصوير ٢٥٩ هـ ١٨١٦مر.

rrr عبدة القارى، امام بدر الدين ابو محبل محبود بن احبل العينى، رحبه الله تعالى، متوفى 100 هـ، ادار 8 الطباعة البنيرية_

rsa فتح البارى. حافظ احين بن عل البعرون بابن حجر العسقلاني، رحيه الله تعالى ، متوفّى ٢٥٠ ه. دار الفكر بيروت_

٢٨١ فتح القدير ، امام كمال الدين محمد بن عبدالواحد البعروف بأبن الهمام ، رحمه الله تعالى ، متوفى ٢١١ ه. مكتبه رشيديه ، كوثشه_

ـ ۱۳۱۵ فتح المالک بتبویب التمهید لابن عبد البر عل مؤطأ مالک. حافظ ابو عمر یوسف بن عبد الله بن محمد بن عبد البر المالک، رحمه الله تعالیٰ ، متوفیٰ ۲۳ همر تب : دکتور مصطفی صمیدة ، دار الکتب العلمية . بیروت، طبح اول ۱۲۱۸ هـ ۱۲۱۸ مر

٣١٨. فتح البقيث ، شرح القية الحديث اماًم ابو عبد الله معبد بن عبد الرحمن السخاوى، رحبه الله تعالى متوقى ١٩٠ه هذار الامام الطبرى، الطبعة الثانية ١٩١٣هـ ١٩٨٩م _

١٣١ء فتح البغيث، أماً مر حافظ أبو الفضل زين الدين عبد الرحيم بن الحسين العراق، رحبه الله تعالى . مترفي ١٨٩ه دار الجيل بيروت.

هٔ ۱۰ قتح الملهم، شیخ الاسلام علامه شبیر احین عثبانی، رحیه الله تعالی، متوفی ۱۳۲۹ هـ، مکتبة العجاز حیدری کراهی ـ مکتبه دارا لعلوم کراهی ـ دار احیاء التراث العربی، بربروت ـ

ا ١٥٠ الفتوحات الربائية شرح الإذكار النواوية. شيخ محمد بن علان الصديق. رحمه الله تعالى . متوفى ١٠٥٤ الما المكتبة الاسلامية ـ

۱۵۲ ـ فقه اهل العراق و حديثهم (مقامة نصب الراية) علامه محين زاهن الكوثري، رحيه الله تعالى . متوفیًا ۱۵۲۱ه مكتب البطيوعات الإسلامية بحلب

rar _ فقه اللغة و سر العربية _ امأم ابو منصور عبد الملك بن محمد بن اسماعيل الثمالي. المتوقى ٢٦٩ هـ. قديمي كتب خانه كراي-

۱۵۲ فيض البارى، امام العصر علامه محمد الورشاة كشميرى، رحمه الله تعالى متوقى ۱۳۵۲ هـ رباني بكلهد دهل_

00 _ القاموس الهجيط. اماًم مجد الداين محمد بن يعقوب الفيزوز آبادى، رحبه الله تعالى . متوفى ∆44 هـ دار الفكر بيزوت ۱۲۵هـ ۱۲۹۵م - ۱۲۹۵م _

161 _ القاموس الوحيد، مولاناً وحيد الزمان بن مسيح الزمان قاسعى كيرا نوى. رحمه الله تعالى، متوفّى 181 هـ / 1410 هـ . ادارة اسلاميات لاهور - كراجي -

عه_ الكاشف لللاهمي. شبس الدين ابر عبد الله محيد بن احيد بن عثيان الذهبي. رحيه الله تعالى . مترق 14. هـ شركة دار القبلة / مؤسسة علوم القرآن، طبح اول ۱۲۲ هـ ۱۲۲۲ مـ

١٨٨. الكاغف عن حقّائق السنن. (شرح الطيبي) امام هرف الدين حسين بن محمد بن عبد الله الطيبي،

رحمه الله تعالى ، متوفي ٢٠٠ ه. ادار قالقوآن كواس.

الكامل في التاريخ (ديكف تاريخ ابن الاثير)

بور ـ الكامل في ضعفاء الرجال. امام حافظ ابو احين عبن الله بن عنى الجرجاني رحيه الله تعالى، متوفى 170 * هـ دار الفكر ، بدروت ـ

كتاب الآثار (ديكفية: الآثار)

کتاب الاتار (دیسمھے: الاتار) کتاب الام (دیسکھٹے: الام)

كتاب الاموال (ديكهش : الاموال)

كتأب الموح (ديكه الروح)

، ۱۳ کتابت حدیث عهد رسالت و عهد صحایه میں، حضرت مولانا مفتی محمد رفیع عثمانی صاحب دامت ب کاتمر ادارة البحارف کر ای۔

ا۱۱ــ الكاشف عن حقائق غوامض التغزيل وعيون الاقاويان في وجوة القاويل، الأمام جار الله محمود بن عمر الزمفضرى، البتوقى ۱۸مه. دار الكتاب العربي، بيروت، لبنان_

٣٣- كفف الإستار عن زوائد البزار عل الكتب الستة، امام ثور الدين عل بن إني بكر الهيشي ، رحبه الله تعالى متد ذايمه هم من سسة الرسالة، طبح أول ١٠٥٥هـ

٣٣ - كشف الأسوار على شرح البنار، امام ابو البركات عبد الله احبد بن محبود البعروف بحافظ الدين النسق. رحبه الله تعالى متوقع ١٨ه. الصدف يبلشرز كراس-

ه ۲۱ کشف الباری، شیخ الحدیث حضرت مولاناً سلیم الله خان صاحب مدظلهم. مکتبة فاُروقیه، کراچی -۲۲ کشف الخفاء و مزیل الالباس عباً اشتهر من الاحادیث عل السنة الناس. شیخ اسباعیل بن محمد العجلونی، رحبه الله تعالی، متوفی ۱۱۳ هـ، دار احیاء التراث العربی، بیروت-

۲۷ کشف الظنون عن اسامی الکتب و الفنون، ملاکاتب چلپی مصطفی بن عبد الله المعرو ف بحای خلیفة. متوفی ۱۹۵۲ مکتبة المثنی بغداد، آفسٹ فولو استنبول.

٣٨ ــالكفاية في علم الرواية. امام حافظ ابو بكر احبد بن على البعروت بالخطيب البغدادي، رحبه الله تعالى، مترفي ٣٣هـــ دار الكتب العلبية بغروت ١٢٩هـ ١٣٨٨م ــ

١٣١- كفاية المحتفظ، امام ابو اسحاق ابراهيم بن اسباعيل بن عبد الله، المعروف بأبن الاجدابي الطرابلس، رحيه الله تعالى، متوفي ١٠٥ ه تقريباً-

10- كنزالعبال في سنن الاقوال و الافعال. علامه علاء الدين عل متقى بن حسام الدين الهندي البرهان. رحيه الله تعالى متوفى 141هـ مكتبة التراث الاسلامي، حلب-

..... الكفي والأسباء زكتاب الكفي والاسباء) امام حافظ ابو بشر محمد بن احمد بن حياد الدولاني، رحمه الله تعالى متوفى 110. المكتبة الاثرية، تصوير حيدر آباد الدكن- سا- الكوكب الدرى، حضرت مولانا رشيد احمد كنگوهي، رحمه الله تعالى، متوفى ٢٣٣هـ ادارة القرآن كراتشي الكواكب الدراري (ديكيئے، هر ح الكر ماني)

ur ـ لامع الدرارى، حضرت مولانا مفتى رشيد احبد كنكوهى، رحبه الله تعالى ، متوفى ١٣٢٢ هـ، مكتبه امداديه مكة مكرمة ـ كشبير بكايو، جنيون بازار، فيصل آباد ـ

الله الميزان، امام حافظ احب بن عل المعروف بابن حجر العسقلاني، رحبه الله تعالى، متوقى ۱۶۸ه. متحقق المداد الميزا تحقيق: شيخ عبد الفتاح ابو غده.. رحمه الله تعالى ، متوفى ۱۶۱۱ هـ، دار البشائر الاسلامية، طبع اول. ۱۳۲۲هـ ۱۶۲۰م.

11ء ـ لقط الدرر حاشية تزهة النظر. شيخ عبن الله بن حسين خاطر السبين العدوى (من علماء القرن الرابع عشري مصطفى الياني مصر ١٣٥٦ هـ

١٤٦ - المؤطأ. امام مالك بن انس، رحمه الله تعالى، المتوفى ١٤٩ه. دار احياء التراث العربي -

البؤطأ ليحيد، اماًم محيد بن الحسن الشيباق، رحيه الله تعانّ ، متوفّى ١٨٣ هذور محيد اصح البطابه كراجى ١٤٤ ـ البتوارى على تراجم ابواب البخارى، علامه ناُصر الدين احيد بن محيد البعروف بأبن البنور. الإسكندراني، رحيه الله تعانى ، متوفّى ١٨٣ هـ، مظهرى كتب خانه كراجى.

۱۱۸ مجدع الزوائد، اماً مر نور الدين على بن إني يكرى الهيشق، رحيه الله تعالى متوفى ۱۸۸ دار الفكر . بيزوت الهجدوع (ديكفش : شرح الههذب)

14- المحدث الفاصل بين الراوى و الواعى، قاض الحسن بن عبد الرحين الرامهر مزى، رحيه الله تعاًلّ . متوقّ ا ١٣٠٩ دار الفكر بيروت طبح ثالث ١٠٠٢ هـ ١٩٨٧ مر _

۱۸۰۰ المحلّى، علامه ا يو محمد، على بن احمد بن سعيد بن حزم رحمه الله تعالى . متوقى ۲۵۲هـ المكتب التجارى پيروت / دارالكتب العلمية بيروت.

۱۸۱ مختار الصحاح - امام محبد بن إني بكر بن عبد القادر الرازى، رحبه الله تعالى ، متوفى ٦٦٦ هـ سع بعد -دار المعارف مصر -

۱۸۷ ـ البراسيل (مع سنن ابي داود) امامر ابو داود سليمان بن الاشعث السجستاني. رحمه الله تعالى . متوفّى ۴۵٪ ها اينج ايمر سعيد كمهني كراتي ـ

۱۸۰۳ مو قاة البقاتيج (شرح مشكوة البصابيج). علامه نور الدين عل بن سلطان القارى رحيه الله تعالىٰ . متوفى ۱۰۶۳ هـ امداديه ملتأن و دارالكتب العلبية بوروت.

۱۸۷ مسائل السلوک (مطبوعه مع بیان القرآن) حکیم الامت حضرت مولانا اشرف علی تهانوی قدس الله روحه. متوفی ۱۲۷۱ ه. شیخ خلام علی اینلسنز کرایی۔

۵۸ الهستدرک عل الصحیحیین، حافظ ابو عبد الله محبد بن عبد الله الحاکم النیسابوری،رحبه الله تعالیٰ ، متوفی ۲۰۵ ه. دار الفکر ، بدوت ـ

ил _ مستد اني داؤد الطيألسي. حافظ سليمان بن داؤد بن الجارود البحروث بأني داود الطيألسي رحبه الله تعالى متوقى arer دار البحرفة بخدوت - 812 مسئل احبل. اماكر احيل بن حنيل، وحيه الله تعالى ، متوفى 1871 البكتب الاسلامى. دار صاحر ، بهتوت بيت الافكار الدوليه الرياض 171 هـ 1812 مر

۱۱۸ ــ مستن الحميدى، اماًم ابو بكر عبن الله بن الزبور الحبيدى، رحبه الله تعالى، متوقَّ ۲۱۹ هـ، المكتبة. السلقية، مدينة منورة.

1118 م مشكاة السماييح. شيخ ابو عبد الله ولى الدين الخطيب محمد بن عبد الله ، رحمه الله تعالى، متوفى 212 ه سك بعد. قديمى كتب خانه كراجي-

+1-مصباً > اللغات، مولاناً ابو الفضل عبن الحفيظ البلياءي، رحبه الله تمانئ، متوفّى ٢١١ هـ، مكتبه برهان. دهل ١١١- البصنف لابن ابى خيبة. حافظ عبن الله بن محبن بن ابى خيبة البعروث بابي بكر بن ابى خيبة. رحبه الله تعانى. متوفى ٢١٥ هـ. النار السلفية بعبثى الهنن. طبح دور ١٢١ هـ ١١٨ مر - و بتحقيق الشيخ محبن عوامة. حقظه الله. المجلس العلى دار قرطبة. بيتروت، طبح اول ١٢١٠ م ٢٠٠١م.

- المصنف امام عبد الرزاق بن همام الصنعان رحيه الله تعالى متوفى ٢١١هـ مجلس على. كرابى -١٣- المطالب العالية، يزواند المسانيد الثمانية، حافظ احيد بن على المعروف بأبن حجر العسقلاني، رحيه

nr- المطالب العالية، بزواتُ المسانيد الثبانية ، حافظ أحمد بن عن المعروف بابن حجر العسعد ف: رحمه إلله تعالى، المتوفى ۵۵مه ، دار الباز ، مكة المكرمة ـ

۱۲۳ ـ معارف القرآن _ مفتى اعظم پاكستان حضرت مولانا مفتى محيد شفيع صاحب. رحيه الله تعالى . متوفى ۱۲۲۱ هـ ۱۹۷۲ ه. ادارة البعارف كرايى-

ه ۱۵ معجم البلدان ، علامه ابو عبد الله يأتوت حبوى رومي، رحبه الله تعالى، متوفى ۳۲ ه. دار احياء التراث العربي، بعروت ــ

٢١١ معجم الصحابة. امام حافظ ابو الحسين عبد البأق بن قائع البغدادى. رحبه الله تعالى البتوق ٢٥١ه. مكتبه نزار مصطفى لباز. مكة المكرمة، الرياض، الطبعة الإولى ١٢١٨هـ

194 المعجم المقصل

١٩٨٠ معجم مقياييس اللغة. امام احيل بن فارس بن زكرياً القزويتى الوازى، رحيه الله تعالى. متوفى ٢١٥ه. دار الفكر ويووت

١١١٠ البعجم الوسيط، دكتور ابراهيم الس، دكتور عبدالحليم منتصر، عطية الصوالح، محمد خلف الله
 إحين، مجمع اللغة العربية، دمشق _

ro. معرفة الصحاية، الامام الحافظ ابو تعيم احيد بن عبد الله الاصبهان. رحيه الله تعالى البتوني arr ه. دا، الكتب العلبية، يوروت، لبنان، الطبعة الاولى rror_a (rr. و ror-a .r-

ror-البغني في ضبط اسهاء الرجال. علامه محمد طاهر الفتني، رحمه الله تعالى ، متوفى ۱۸۹ هـ. دار نشر الكتب الاسلامية لاهور-

ror_ مقدمة لامع الدرارى _ حضرت شيخ الحديث مولاناً محيد زكرياً صاحب كاندهلوى، رحيه الله تعالى . متوفى ١٩٨٦ هـ ١٩٨٦ م مكتبه امداديه مكه مكرمه _ كشبير بكابهر چنيوث بأزار فيصل آباد.

- مقدمه نصب الرايه (ديكه فقه اهل العراق وحديثهم)
- ٢٠٠٠ ألمواهب اللدنية بالمنح المحمدية رمع شرحه للزرقائي، حافظ شهأب الداين أحمد بن محمد العسقلاني البصري الشافعي، رحيه الله تعالى، الهتوني ٩٢٢ هذار الكتب العلبية بريروت ١٢١٤ هـ ١٩٩١ مر ـ
- ٢٠٥ الموضوعات، امام ابو الفرج عبد الرحين ابن الجوزي. رحيه الله تعالى، المتوفى ٥١٤ ه. قرآن محل, اردو بازار کراہی۔
- ٢٠٧٠ ميزان الاعتدال في نقد الرجال. حافظ شبس الدين محيد احيد بن عثبان الذهبي، رحيه الله تعالى. متوفي ٤٨٨ ه. دار احياء الكتب العربية, مصر ، ١٢٨٢ هـ
- ٢٠٠-النبراس شرح شرح العقائد _ علامه عبد العزيز بن احبد الفرهاري، رحبه الله تعالىٰ ، متوفى ١٣٢٩ هـ کے بعد۔ مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ۔
- ٢٠٨ ـ نزهة النظر في توضيح نخبة الفكر ، حافظ ابو الفضل احبد بن على بن حجر العسقلاني، رحبه الله تعاليًا . متوفي ٨٥٢ه. الوحيم اكبيري
- ٢٠٩ نصب الراية، حافظ جمال الدين عبد الله بن يوسف الزيلى، رحمه الله تعالى، المتوفى ٢٣ ه. تحقيق شيخ محمد عوامة حفظه الله، مؤسسة الريان، بيروت/دار القبلة للثقافة الاسلامية، جدة، الطبعة الاولى. ١٣١٨ هـ ١٩٩٧ مر ـ
- ٢١٠ النكت على مقدمة ابن الصلاح ، حافظ ابو الفضل احبد بن على بن جحر العسقلاني . رحبه الله تعالى! متوفى ٨٥٢هـ، دار الراية الرياض، طبع ثاني ١٢٠٨ هـ ١٩٩٨ مر
- ٢١١ النهاية في غريب الحديث و الاثر، علامه مجد الدين ابو السعادات المبارك بن محمد ابن الاثير الجزري، رحمه الله تعالى، متوفى ٢٠٦ هـ، دار احياء التراث العربي بيروت. دار المعرفة بيروت. طبع اول ١٢٢٢ ه - ۲۰۰۱ مر
- rir . فيأت الأعيان، قاض شبس الدين احمد بن محمد المعروف بأبن خلكان، رحمه الله تعالى، متوفى ١٧٨ ه، دار صادر ،بعروت۔
- rr_ الهداية. امام برهان الدين ابو الحسن على بن ابى بكر البرغينان، رحيه الله تعالى، متوفى ar هادارة القرآن كراي، المصبأح.
- ٢٣ _ هذى السارى (مقدمة فتح الباري)، حافظ ابو الفضل احبد بن على بن حجر العسقلاني، رحبه الله تعالى، متوفى ١٥٠ه دار الفكر بيروت.
- ris _ هيع الهوامع، علامه جلال الدين عبد الرحين بن إلى بكر السيوطى رحبه الله تعالى، متوفى اله ه. منشورات الرضي. قعر، ايران-